तारीख़ी सहाइफ़

असल इब्रानी और अरामी मतन से नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

बार _____ दुवुम

The Historical Books. Joshua to Esther in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew and Aramaic
Urdu Geo Version (Devanagari) (beta version 150122)
© 2012 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broad Street, # 169, Glen Allen, Virginia 23060
United States of America

http://urdugeoversion.com

जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़-ए नाशिरीन, जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स, एल-एल-सी महफ़ूज़ हैं

यशूअ

रब यशूअ को राहनुमाई की ज़िम्मादारी सौंपता है

1 1 रब के ख़ादिम मूसा की मौत के बाद रब
मूसा के मददगार यशूअ बिन नून से हमकलाम
हुआ। उस ने कहा, 2 “मेरा ख़ादिम मूसा फ़ौत हो गया
है। अब उठ, इस पूरी क़ौम के साथ दरया-ए-यर्दन
को पार करके उस मुल्क में दाख़िल हो जा जो मैं
इस्राईलियों को देने को हूँ। 3 जिस ज़मीन पर भी तू
अपना पाँओ रखेगा उसे मैं मूसा के साथ किए गए
वादे के मुताबिक़ तुझे दूँगा। 4 तुम्हारे मुल्क की सरहदें
यह होंगी : जुनूब में नजब का रेगिस्तान, शिमाल में
लुबनान, मशरिक़ में दरया-ए-फ़ुरात और मग़रिब में
बहीरा-ए-रूम। हित्ती क़ौम का पूरा इलाक़ा इस में
शामिल होगा। 5 तेरे जीते जी कोई तेरा सामना नहीं
कर सकेगा। जिस तरह मैं मूसा के साथ था, उसी
तरह तेरे साथ भी हूँगा। मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, न
तुझे तर्क करूँगा।

6 मज़बूत और दिलेर हो, क्यूँकि तू ही इस क़ौम
को मीरास में वह मुल्क देगा जिस का मैं ने उन के
बापदादा से क़सम खा कर वादा किया था। 7 लेकिन
ख़बरदार, मज़बूत और बहुत दिलेर हो। एहतियात
से उस पूरी शरीअत पर अमल कर जो मेरे ख़ादिम
मूसा ने तुझे दी है। उस से न दाईं और न बाईं तरफ़
हटना। फिर जहाँ कहीं भी तू जाए कामयाब होगा।
8 जो बातें इस शरीअत की किताब में लिखी हैं वह
तेरे मुँह से न हटें। दिन रात उन पर ग़ौर करता रह
ताकि तू एहतियात से इस की हर बात पर अमल कर
सके। फिर तू हर काम में कामयाब और ख़ुशहाल
होगा।

9 मैं फिर कहता हूँ कि मज़बूत और दिलेर हो। न
घबरा और न हौसला हार, क्यूँकि जहाँ भी तू जाएगा
वहाँ रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ रहेगा।”

मुल्क में दाख़िल होने की तय्यारियाँ

10 फिर यशूअ क़ौम के निगहबानों से मुख़ातिब
हुआ, 11 “ख़ैमागाह में हर जगह जा कर लोगों को
इत्तिला दें कि सफ़र के लिए खाने का बन्द-ओ-बस्त
कर लें। क्यूँकि तीन दिन के बाद आप दरया-ए-यर्दन
को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करेंगे जो रब
आप का ख़ुदा आप को विरसे में दे रहा है।”

12 फिर यशूअ रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले से मुख़ातिब हुआ, 13 “यह बात याद रखें जो
रब के ख़ादिम मूसा ने आप से कही थी, ‘रब तुम्हारा
ख़ुदा तुम को दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर
का यह इलाक़ा देता है ताकि तुम यहाँ अम्न-ओ-
अमान के साथ रह सको।’ 14 अब जब हम दरया-ए-
यर्दन को पार कर रहे हैं तो आप के बाल-बच्चे और
मवेशी यहीं रह सकते हैं। लेकिन लाज़िम है कि आप
के तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह हो कर
अपने भाइयों के आगे आगे दरया को पार करें। आप
को उस वक़्त तक अपने भाइयों की मदद करना है
15 जब तक रब उन्हें वह आराम न दे जो आप को
हासिल है और वह उस मुल्क पर क़ब्ज़ा न कर लें
जो रब आप का ख़ुदा उन्हें दे रहा है। इस के बाद ही
आप को अपने उस इलाक़े में वापस जा कर आबाद
होने की इजाज़त होगी जो रब के ख़ादिम मूसा ने आप
को दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर दिया था।”

16 उन्हों ने जवाब में यशूअ से कहा, “जो भी हुक्म
आप ने हमें दिया है वह हम मानेंगे और जहाँ भी हमें
भेजेंगे वहाँ जाएंगे। 17 जिस तरह हम मूसा की हर
बात मानते थे उसी तरह आप की भी हर बात मानेंगे।
लेकिन रब आप का ख़ुदा उसी तरह आप के साथ हो
जिस तरह वह मूसा के साथ था। 18 जो भी आप के
हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके आप की वह तमाम

बातें न माने जो आप फ़रमाएँगे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। लेकिन मज़बूत और दिलेर हों!”

यरीहू शहर में इस्राईली जासूस

2 1 फिर यशूअ ने चुपके से दो जासूसों को शित्तीम से भेज दिया जहाँ इस्राईली ख़ैमागाह थी। उस ने उन से कहा, “जा कर मुल्क का जाइज़ा लें, ख़ासकर यरीहू शहर का।” वह रवाना हुए और चलते चलते एक कस्बी के घर पहुँचे जिस का नाम राहब था। वहाँ वह रात के लिए ठहर गए। 2 लेकिन यरीहू के बादशाह को इत्तिला मिली कि आज शाम को कुछ इस्राईली मर्द यहाँ पहुँच गए हैं जो मुल्क की जासूसी करना चाहते हैं। 3 यह सुन कर बादशाह ने राहब को ख़बर भेजी, “उन आदमियों को निकाल दो जो तुम्हारे पास आ कर ठहरे हुए हैं, क्यूँकि यह पूरे मुल्क की जासूसी करने के लिए आए हैं।”

4 लेकिन राहब ने दोनों आदमियों को छुपा रखा था। उस ने कहा, “जी, यह आदमी मेरे पास आए तो थे लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि कहाँ से आए हैं। 5 जब दिन ढलने लगा और शहर के दरवाज़ों को बन्द करने का वक़्त आ गया तो वह चले गए। मुझे मालूम नहीं कि किस तरफ़ गए। अब जल्दी करके उन का पीछा करें। ऐन मुमकिन है कि आप उन्हें पकड़ लें।” 6 हक़ीक़त में राहब ने उन्हें छत पर ले जा कर वहाँ पर पड़े सन के डंठलों के नीचे छुपा दिया था। 7 राहब की बात सुन कर बादशाह के आदमी वहाँ से चले गए और शहर से निकल कर जासूसों के ताक़्क़ुब में उस रास्ते पर चलने लगे जो दरया-ए-यर्दन के उन कम-गहरे मक़ामों तक ले जाता है जहाँ उसे पैदल उबूर किया जा सकता था। और जूँ ही यह आदमी निकले, शहर का दरवाज़ा उन के पीछे बन्द कर दिया गया।

8 जासूसों के सो जाने से पहले राहब ने छत पर आ कर 9 उन से कहा, “मैं जानती हूँ कि रब ने यह मुल्क आप को दे दिया है। आप के बारे में सुन कर हम पर दहशत छा गई है, और मुल्क के तमाम बाशिन्दे हिम्मत हार गए हैं। 10 क्यूँकि हमें ख़बर मिली है कि आप के मिस्र से निकलते वक़्त रब ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम का पानी किस तरह आप के आगे ख़ुश्क कर दिया। यह भी हमारे सुनने में आया है कि आप ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में रहने वाले दो बादशाहों सीहोन और ओज के साथ क्या कुछ किया, कि आप ने उन्हें पूरी तरह तबाह कर दिया। 11 यह सुन कर हमारी हिम्मत टूट गई। आप के सामने हम सब हौसला हार गए हैं, क्यूँकि रब आप का ख़ुदा आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ुदा है। 12 अब रब की क़सम खा कर मुझ से वादा करें कि आप उसी तरह मेरे ख़ानदान पर मेहरबानी करेंगे जिस तरह कि मैं ने आप पर की है। और ज़मानत के तौर पर मुझे कोई निशान दें 13 कि आप मेरे माँ-बाप, मेरे बहन-भाइयों और उन के घर वालों को ज़िन्दा छोड़ कर हमें मौत से बचाए रखेंगे।”

14 आदमियों ने कहा, “हम अपनी जानों को ज़मानत के तौर पर पेश करते हैं कि आप महफ़ूज़ रहेंगे। अगर आप किसी को हमारे बारे में इत्तिला न दें तो हम आप से ज़रूर मेहरबानी और वफ़ादारी से पेश आएँगे जब रब हमें यह मुल्क अता फ़रमाएगा।”

15 तब राहब ने शहर से निकलने में उन की मदद की। चूँकि उस का घर शहर की चारदीवारी से मुल्हिक़ था इस लिए आदमी खिड़की से निकल कर रस्से के ज़रीए बाहर की ज़मीन पर उतर आए। 16 उतरने से पहले राहब ने उन्हें हिदायत की, “पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ चले जाएँ। जो आप का ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह वहाँ आप को ढूँड नहीं सकेंगे। तीन दिन तक यानी जब तक वह वापस न आ जाएँ वहाँ छुपे रहना। इस के बाद जहाँ जाने का इरादा है चले जाना।”

17 आदमियों ने उस से कहा, “जो क़सम आप ने हमें खिलाई है हम ज़रूर उस के पाबन्द रहेंगे। लेकिन शर्त यह है 18 कि आप हमारे इस मुल्क में आते वक़्त क़िर्मिज़ी रंग का यह रस्सा उस खिड़की के सामने बांध दें जिस में से आप ने हमें उतरने दिया है। यह भी लाज़िम है कि उस वक़्त आप के माँ-बाप, भाई-

बहनें और तमाम घर वाले आप के घर में हों। 19 अगर कोई आप के घर में से निकले और मार दिया जाए तो यह हमारा क़ुसूर नहीं होगा, हम ज़िम्मादार नहीं ठहरेंगे। लेकिन अगर किसी को हाथ लगाया जाए जो आप के घर के अन्दर हो तो हम ही उस की मौत के ज़िम्मादार ठहरेंगे। 20 और किसी को हमारे मुआमले के बारे में इत्तिला न देना, वर्ना हम उस क़सम से आज़ाद हैं जो आप ने हमें खिलाई।”

21 राहब ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही हो।” फिर उस ने उन्हें रुख़्सत किया और वह रवाना हुए। और राहब ने अपनी खिड़की के साथ मज़कूरा रस्सा बांध दिया।

22 जासूस चलते चलते पहाड़ी इलाक़े में आ गए। वहाँ वह तीन दिन रहे। इतने में उन का ताक़्क़ुब करने वाले पूरे रास्ते का खोज लगा कर ख़ाली हाथ लौटे। 23 फिर दोनों जासूसों ने पहाड़ी इलाक़े से उतर कर दरया-ए-यर्दन को पार किया और यशूअ बिन नून के पास आ कर सब कुछ बयान किया जो उन के साथ हुआ था। 24 उन्हों ने कहा, “यक़ीनन रब ने हमें पूरा मुल्क दे दिया है। हमारे बारे में सुन कर मुल्क के तमाम बाशिन्दों पर दहशत तारी हो गई है।”

इस्राईली दरया-ए-यर्दन को उबूर करते हैं

3 1 सुब्ह-सवेरे उठ कर यशूअ और तमाम इस्राईली शित्तीम से रवाना हुए। जब वह दरया-ए-यर्दन पर पहुँचे तो उसे उबूर न किया बल्कि रात के लिए किनारे पर रुक गए। 2 वह तीन दिन वहाँ रहे। फिर निगहबानों ने ख़ैमागाह में से गुज़र कर 3 लोगों को हुक्म दिया, “जब आप देखें कि लावी के क़बीले के इमाम रब आप के ख़ुदा के अह्द का सन्दूक़ उठाए हुए हैं तो अपने अपने मक़ाम से रवाना हो कर उस के पीछे हो लें। 4 फिर आप को पता चलेगा कि कहाँ जाना है, क्यूँकि आप पहले कभी वहाँ नहीं गए। लेकिन सन्दूक़ के तक़रीबन एक किलोमीटर पीछे रहें और ज़्यादा क़रीब न जाएँ।”

5 यशूअ ने लोगों को बताया, “अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें, क्यूँकि कल रब आप के दरमियान हैरतअंगेज़ काम करेगा।”

6 अगले दिन यशूअ ने इमामों से कहा, “अह्द का सन्दूक़ उठा कर लोगों के आगे आगे दरया को पार करें।” चुनाँचे इमाम सन्दूक़ को उठा कर आगे आगे चल दिए। 7 और रब ने यशूअ से फ़रमाया, “मैं तुझे तमाम इस्राईलियों के सामने सरफ़राज़ कर दूँगा, और आज ही मैं यह काम शुरू करूँगा ताकि वह जान लें कि जिस तरह मैं मूसा के साथ था उसी तरह तेरे साथ भी हूँ। 8 अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले इमामों को बता देना, ‘जब आप दरया-ए-यर्दन के किनारे पहुँचेंगे तो वहाँ पानी में रुक जाएँ’।”

9 यशूअ ने इस्राईलियों से कहा, “मेरे पास आएँ और रब अपने ख़ुदा के फ़रमान सुन लें। 10 आज आप जान लेंगे कि ज़िन्दा ख़ुदा आप के दरमियान है और कि वह यक़ीनन आप के आगे आगे जा कर दूसरी क़ौमों को निकाल देगा, ख़्वाह वह कनआनी, हित्ती, हिव्वी, फ़रिज़्ज़ी, जिर्जासी, अमोरी या यबूसी हों। 11 यह यूँ ज़ाहिर होगा कि अह्द का यह सन्दूक़ जो तमाम दुनिया के मालिक का है आप के आगे आगे दरया-ए-यर्दन में जाएगा। 12 अब ऐसा करें कि हर क़बीले में से एक एक आदमी को चुन लें ताकि बारह अफ़राद जमा हो जाएँ। 13 फिर इमाम तमाम दुनिया के मालिक रब के अह्द का सन्दूक़ उठा कर दरया में जाएंगे। और जूँ ही वह अपने पाँओ पानी में रखेंगे तो पानी का बहाओ रुक जाएगा और आने वाला पानी ढेर बन कर खड़ा रहेगा।”

14 चुनाँचे इस्राईली अपने ख़ैमों को समेट कर रवाना हुए, और अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले इमाम उन के आगे आगे चल दिए। 15 फ़सल की कटाई का मौसम था, और दरया का पानी किनारों से बाहर आ गया था। लेकिन जूँ ही सन्दूक़ को उठाने वाले इमामों ने दरया के किनारे पहुँच कर पानी में क़दम रखा 16 तो आने वाले पानी का बहाओ रुक गया। वह उन से दूर एक शहर के क़रीब ढेर बन गया जिस का नाम

आदम था और जो ज़र्तान के नज़्दीक है। जो पानी
दूसरी यानी बहीरा-ए-मुर्दार की तरफ़ बह रहा था वह
पूरी तरह उतर गया। तब इस्राईलियों ने यरीहू शहर के
मुक़ाबिल दरया को पार किया। 17 रब का अह्द का
सन्दूक़ उठाने वाले इमाम दरया-ए-यर्दन के बीच में
ख़ुश्क ज़मीन पर खड़े रहे जबकि बाक़ी लोग ख़ुश्क
ज़मीन पर से गुज़र गए। इमाम उस वक़्त तक वहाँ
खड़े रहे जब तक तमाम इस्राईलियों ने ख़ुश्क ज़मीन
पर चल कर दरया को पार न कर लिया।

यादगार पत्थर

4 1 जब पूरी क़ौम ने दरया-ए-यर्दन को उबूर कर
लिया तो रब यशूअ से हमकलाम हुआ, 2 “हर
क़बीले में से एक एक आदमी को चुन ले। 3 फिर इन
बारह आदमियों को हुक्म दे कि जहाँ इमाम दरया-
ए-यर्दन के दरमियान खड़े हैं वहाँ से बारह पत्थर
उठा कर उन्हें उस जगह रख दो जहाँ तुम आज रात
ठहरोगे।”

4 चुनाँचे यशूअ ने उन बारह आदमियों को बुलाया
जिन्हें उस ने इस्राईल के हर क़बीले से चुन लिया था
5 और उन से कहा, “रब अपने ख़ुदा के सन्दूक़ के
आगे आगे चल कर दरया के दरमियान तक जाएँ।
आप में से हर आदमी एक एक पत्थर उठा कर अपने
कंधे पर रखे और बाहर ले जाए। कुल बारह पत्थर
होंगे, इस्राईल के हर क़बीले के लिए एक। 6 यह
पत्थर आप के दरमियान एक यादगार निशान रहेंगे।
आइन्दा जब आप के बच्चे आप से पूछेंगे कि इन
पत्थरों का क्या मतलब है 7 तो उन्हें बताना, ‘यह
हमें याद दिलाते हैं कि दरया-ए-यर्दन का बहाओ रुक
गया जब रब का अह्द का सन्दूक़ उस में से गुज़रा।’
यह पत्थर अबद तक इस्राईल को याद दिलाते रहेंगे
कि यहाँ क्या कुछ हुआ था।”

8 इस्राईलियों ने ऐसा ही किया। उन्हों ने दरया-ए-
यर्दन के बीच में से अपने क़बीलों की तादाद के
मुताबिक़ बारह पत्थर उठाए, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह रब ने यशूअ को फ़रमाया था। फिर उन्हों ने
यह पत्थर अपने साथ ले कर उस जगह रख दिए जहाँ
उन्हें रात के लिए ठहरना था। 9 साथ साथ यशूअ ने
उस जगह भी बारह पत्थर खड़े किए जहाँ अह्द का
सन्दूक़ उठाने वाले इमाम दरया-ए-यर्दन के दरमियान
खड़े थे। यह पत्थर आज तक वहाँ पड़े हैं। 10 सन्दूक़
को उठाने वाले इमाम दरया के दरमियान खड़े रहे
जब तक लोगों ने तमाम अह्काम जो रब ने यशूअ
को दिए थे पूरे न कर लिए। यूँ सब कुछ वैसा ही
हुआ जैसा मूसा ने यशूअ को फ़रमाया था।

लोग जल्दी जल्दी दरया में से गुज़रे। 11 जब सब
दूसरे किनारे पर थे तो इमाम भी रब का सन्दूक़
ले कर किनारे पर पहुँचे और दुबारा क़ौम के आगे
आगे चलने लगे। 12 और जिस तरह मूसा ने फ़रमाया
था, रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के
मर्द मुसल्लह हो कर बाक़ी इस्राईली क़बीलों से पहले
दरया के दूसरे किनारे पर पहुँच गए थे। 13 तक़रीबन
40,000 मुसल्लह मर्द उस वक़्त रब के सामने यरीहू
के मैदान में पहुँच गए ताकि वहाँ जंग करें। 14 उस
दिन रब ने यशूअ को पूरी इस्राईली क़ौम के सामने
सरफ़राज़ किया। उस के जीते जी लोग उस का यूँ
ख़ौफ़ मानते रहे जिस तरह पहले मूसा का।

15 फिर रब ने यशूअ से कहा, 16 “अह्द का सन्दूक़
उठाने वाले इमामों को दरया में से निकलने का हुक्म
दे।” 17 यशूअ ने ऐसा ही किया 18 तो जूँ ही इमाम
किनारे पर पहुँच गए पानी दुबारा बह कर दरया के
किनारों से बाहर आने लगा।

19 इस्राईलियों ने पहले महीने के दसवें दिन [p]दरया-
ए-यर्दन को उबूर किया। उन्हों ने अपने ख़ैमे यरीहू
के मशरिक़ में वाक़े जिल्जाल में खड़े किए। 20 वहाँ
यशूअ ने दरया में से चुने हुए बारह पत्थरों को खड़ा
किया। 21 उस ने इस्राईलियों से कहा, “आइन्दा जब
आप के बच्चे अपने अपने बाप से पूछेंगे कि इन

---

[p]यानी अप्रैल में।

पत्थरों का क्या मतलब है 22 तो उन्हें बताना, ‘यह
वह जगह है जहाँ इस्राईली क़ौम ने ख़ुश्क ज़मीन पर
दरया-ए-यर्दन को पार किया।’ 23 क्यूँकि रब आप के
ख़ुदा ने उस वक़्त तक आप के आगे आगे दरया का
पानी ख़ुश्क कर दिया जब तक आप वहाँ से गुज़र न
गए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम
के साथ किया था जब हम उस में से गुज़रे। 24 उस
ने यह काम इस लिए किया ताकि ज़मीन की तमाम
क़ौमें अल्लाह की क़ुदरत को जान लें और आप हमेशा
रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें।”

5 1 यह ख़बर दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में आबाद
तमाम अमोरी बादशाहों और साहिली इलाक़े
में आबाद तमाम कनआनी बादशाहों तक पहुँच गई
कि रब ने इस्राईलियों के सामने दरया को उस वक़्त
तक ख़ुश्क कर दिया जब तक सब ने पार न कर
लिया था। तब उन की हिम्मत टूट गई और उन में
इस्राईलियों का सामना करने की जुरअत न रही।

जिल्जाल में ख़तना

2 उस वक़्त रब ने यशूअ से कहा, “पत्थर की
छुरियाँ बना कर पहले की तरह इस्राईलियों का
ख़तना करवा दे।” 3 चुनाँचे यशूअ ने पत्थर की
छुरियाँ बना कर एक जगह पर इस्राईलियों का ख़तना
करवाया जिस का नाम बाद में ‘ख़तना पहाड़’ रखा
गया। 4 बात यह थी कि जो मर्द मिस्र से निकलते
वक़्त जंग करने के क़ाबिल थे वह रेगिस्तान में चलते
चलते मर चुके थे। 5 मिस्र से रवाना होने वाले इन
तमाम मर्दों का ख़तना हुआ था, लेकिन जितने लड़कों
की पैदाइश रेगिस्तान में हुई थी उन का ख़तना नहीं
हुआ था। 6 चूँकि इस्राईली रब के ताबे नहीं रहे थे
इस लिए उस ने क़सम खाई थी कि वह उस मुल्क
को नहीं देखेंगे जिस में दूध और शहद की कस्रत
है और जिस का वादा उस ने क़सम खा कर उन
के बापदादा से किया था। नतीजे में इस्राईली फ़ौरन
मुल्क में दाख़िल न हो सके बल्कि उन्हें उस वक़्त
तक रेगिस्तान में फिरना पड़ा जब तक वह तमाम मर्द
मर न गए जो मिस्र से निकलते वक़्त जंग करने के
क़ाबिल थे। 7 उन की जगह रब ने उन के बेटों को
खड़ा किया था। यशूअ ने उन ही का ख़तना करवाया।
उन का ख़तना इस लिए हुआ कि रेगिस्तान में सफ़र
के दौरान उन का ख़तना नहीं किया गया था।

8 पूरी क़ौम के मर्दों का ख़तना होने के बाद वह
उस वक़्त तक ख़ैमागाह में रहे जब तक उन के ज़ख़्म
ठीक नहीं हो गए थे। 9 और रब ने यशूअ से कहा,
“आज मैं ने मिस्र की रुस्वाई तुम से दूर कर दी है।”
[q]इस लिए उस जगह का नाम आज तक जिल्जाल
यानी लुढ़काना रहा है।

10 जब इस्राईली यरीहू के मैदानी इलाक़े में वाक़े
जिल्जाल में ख़ैमाज़न थे तो उन्हों ने फ़सह की ईद
भी मनाई। महीने का चौधवाँ दिन था, 11 और अगले
ही दिन वह पहली दफ़ा उस मुल्क की पैदावार में
से बेख़मीरी रोटी और अनाज के भुने हुए दाने खाने
लगे। 12 उस के बाद के दिन मन का सिलसिला ख़त्म
हुआ और इस्राईलियों के लिए यह सहूलत न रही।
उस साल से वह कनआन की पैदावार से खाने लगे।

फ़रिश्ते से यशूअ की मुलाक़ात

13 एक दिन यशूअ यरीहू शहर के क़रीब था।
अचानक एक आदमी उस के सामने खड़ा नज़र आया
जिस के हाथ में नंगी तलवार थी। यशूअ ने उस के
पास जा कर पूछा, “क्या आप हमारे साथ या हमारे
दुश्मनों के साथ हैं?”

14 आदमी ने कहा, “नहीं, मैं रब के लश्कर का
सरदार हूँ और अभी अभी तेरे पास पहुँचा हूँ।”

यह सुन कर यशूअ ने गिर कर उसे सिज्दा किया
और पूछा, “मेरे आक़ा अपने ख़ादिम को क्या
फ़रमाना चाहते हैं?”

---

[q]लफ़्ज़ी तर्जुमा : लुढ़का कर दूर कर दी है।

15 रब के लश्कर के सरदार ने जवाब में कहा,
“अपने जूते उतार दे, क्यूँकि जिस जगह पर तू खड़ा
है वह मुक़द्दस है।” यशूअ ने ऐसा ही किया।

यरीहू की तबाही

6 1 उन दिनों में इस्राईलियों की वजह से यरीहू के
दरवाज़े बन्द ही रहे। न कोई बाहर निकला,
न कोई अन्दर गया। 2 रब ने यशूअ से कहा, “मैं
ने यरीहू को उस के बादशाह और फ़ौजी अफ़सरों
समेत तेरे हाथ में कर दिया है। 3 जो इस्राईली जंग
के लिए तेरे साथ निकलेंगे उन के साथ शहर की
फ़सील के साथ साथ चल कर एक चक्कर लगाओ
और फिर ख़ैमागाह में वापस आ जाओ। छः दिन
तक ऐसा ही करो। 4 सात इमाम एक एक नरसिंगा
उठाए अह्द के सन्दूक़ के आगे आगे चलें। फिर
सातवें दिन शहर के गिर्द सात चक्कर लगाओ। साथ
साथ इमाम नरसिंगे बजाते रहें। 5 जब वह नरसिंगों
को बजाते बजाते लम्बी सी फूँक मारेंगे तो फिर तमाम
इस्राईली बड़े ज़ोर से जंग का नारा लगाएँ। इस पर
शहर की फ़सील गिर जाएगी और तेरे लोग हर जगह
सीधे शहर में दाख़िल हो सकेंगे।”

6 यशूअ बिन नून ने इमामों को बुला कर उन से
कहा, “रब के अह्द का सन्दूक़ उठा कर मेरे साथ
चलें। और सात इमाम एक एक नरसिंगा उठाए
सन्दूक़ के आगे आगे चलें।” 7 फिर उस ने बाक़ी
लोगों से कहा, “आएँ, शहर की फ़सील के साथ
साथ चल कर एक चक्कर लगाएँ। मुसल्लह आदमी रब
के सन्दूक़ के आगे आगे चलें।”

8 सब कुछ यशूअ की हिदायात के मुताबिक़ हुआ।
सात इमाम नरसिंगे बजाते हुए रब के आगे आगे
चले जबकि रब के अह्द का सन्दूक़ उन के पीछे
पीछे था। 9 मुसल्लह आदमियों में से कुछ बजाने वाले
इमामों के आगे आगे और कुछ सन्दूक़ के पीछे
पीछे चलने लगे। इतने में इमाम नरसिंगे बजाते रहे।
10 लेकिन यशूअ ने बाक़ी लोगों को हुक्म दिया था
कि उस दिन जंग का नारा न लगाएँ। उस ने कहा,
“जब तक मैं हुक्म न दूँ उस वक़्त तक एक लफ़्ज़
भी न बोलना। जब मैं इशारा दूँगा तो फिर ही ख़ूब
नारा लगाना।” 11 इसी तरह रब के सन्दूक़ ने शहर
की फ़सील के साथ साथ चल कर चक्कर लगाया।
फिर लोगों ने ख़ैमागाह में लौट कर वहाँ रात गुज़ारी।

12–13 अगले दिन यशूअ सुब्ह-सवेरे उठा, और
इमामों और फ़ौजियों ने दूसरी मर्तबा शहर का चक्कर
लगाया। उन की वही तर्तीब थी। पहले कुछ मुसल्लह
आदमी, फिर सात नरसिंगे बजाने वाले इमाम, फिर
रब के अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले इमाम और
आख़िर में मज़ीद कुछ मुसल्लह आदमी थे। चक्कर
लगाने के दौरान इमाम नरसिंगे बजाते रहे। 14 इस
दूसरे दिन भी वह शहर का चक्कर लगा कर ख़ैमागाह
में लौट आए। उन्हों ने छः दिन तक ऐसा ही किया।

15 सातवें दिन उन्हों ने सुब्ह-सवेरे उठ कर शहर
का चक्कर यूँ लगाया जैसे पहले छः दिनों में, लेकिन
इस दफ़ा उन्हों ने कुल सात चक्कर लगाए। 16 सातवें
चक्कर पर इमामों ने नरसिंगों को बजाते हुए लम्बी सी
फूँक मारी। तब यशूअ ने लोगों से कहा, “जंग का
नारा लगाएँ, क्यूँकि रब ने आप को यह शहर दे दिया
है। 17 शहर को और जो कुछ उस में है तबाह करके
रब के लिए मख़्सूस करना है। सिर्फ़ राहब कस्बी
को उन लोगों समेत बचाना है जो उस के घर में हैं।
क्यूँकि उस ने हमारे उन जासूसों को छुपा दिया जिन
को हम ने यहाँ भेजा था। 18 लेकिन अल्लाह के लिए
मख़्सूस चीज़ों को हाथ न लगाना, क्यूँकि अगर आप
उन में से कुछ ले लें तो अपने आप को तबाह करेंगे
बल्कि इस्राईली ख़ैमागाह पर भी तबाही और आफ़त
लाएँगे। 19 जो कुछ भी चाँदी, सोने, पीतल या लोहे
से बना है वह रब के लिए मख़्सूस है। उसे रब के
ख़ज़ाने में डालना है।”

20 जब इमामों ने लम्बी फूँक मारी तो इस्राईलियों
ने जंग के ज़ोरदार नारे लगाए। अचानक यरीहू की
फ़सील गिर गई, और हर शख़्स अपनी अपनी जगह
पर सीधा शहर में दाख़िल हुआ। यूँ शहर इस्राईल
के क़ब्ज़े में आ गया। 21 जो कुछ भी शहर में था

उसे उन्हों ने तलवार से मार कर रब के लिए मख़्सूस किया, ख़्वाह मर्द या औरत, जवान या बुज़ुर्ग, गाय-बैल, भेड़-बकरी या गधा था।

22 जिन दो आदमियों ने मुल्क की जासूसी की थी उन से यशूअ ने कहा, “अब अपनी क़सम का वादा पूरा करें। कस्बी के घर में जा कर उसे और उस के तमाम घर वालों को निकाल लाएँ।” 23 चुनाँचे यह जवान आदमी गए और राहब, उस के माँ-बाप, भाइयों और बाक़ी रिश्तेदारों को उस की मिलकियत समेत निकाल कर ख़ैमागाह से बाहर कहीं बसा दिया। 24 फिर उन्हों ने पूरे शहर को और जो कुछ उस में था भस्म कर दिया। लेकिन चाँदी, सोने, पीतल और लोहे का तमाम माल उन्हों ने रब के घर के ख़ज़ाने में डाल दिया। 25 यशूअ ने सिर्फ़ राहब कस्बी और उस के घर वालों को बचाए रखा, क्यूँकि उस ने उन आदमियों को छुपा दिया था जिन्हें यशूअ ने यरीहू भेजा था। राहब आज तक इस्राईलियों के दरमियान रहती है।

26 उस वक़्त यशूअ ने क़सम खाई, “रब की लानत उस पर हो जो यरीहू का शहर नए सिरे से तामीर करने की कोशिश करे। शहर की बुन्याद रखते वक़्त वह अपने पहलौठे से महरूम हो जाएगा, और उस के दरवाज़ों को खड़ा करते वक़्त वह अपने सब से छोटे बेटे से हाथ धो बैठेगा।”

27 यूँ रब यशूअ के साथ था, और उस की शुहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

अकन का गुनाह

7 1 लेकिन जहाँ तक रब के लिए मख़्सूस चीज़ों का ताल्लुक़ था इस्राईलियों ने बेवफ़ाई की। यहूदाह के क़बीले के एक आदमी ने उन में से कुछ अपने लिए ले लिया। उस का नाम अकन बिन कर्मी बिन ज़ब्दी बिन ज़ारह था। तब रब का ग़ज़ब इस्राईलियों पर नाज़िल हुआ।

2 यह यूँ ज़ाहिर हुआ कि यशूअ ने कुछ आदमियों को यरीहू से अई शहर को भेज दिया जो बैत-एल के मशरिक़ में बैत-आवन के क़रीब है। उस ने उन से कहा, “उस इलाक़े में जा कर उस की जासूसी करें।” चुनाँचे वह जा कर ऐसा ही करने लगे। 3 जब वापस आए तो उन्हों ने यशूअ से कहा, “इस की ज़रूरत नहीं कि तमाम लोग अई पर हम्ला करें। उसे शिकस्त देने के लिए दो या तीन हज़ार मर्द काफ़ी हैं। बाक़ी लोगों को न भेजें वर्ना वह ख़्वाह-म-ख़्वाह थक जाएंगे, क्यूँकि दुश्मन के लोग कम हैं।” 4 चुनाँचे तक़रीबन तीन हज़ार आदमी अई से लड़ने गए। लेकिन वह अई के मर्दों से शिकस्त खा कर फ़रार हुए, 5 और उन के 36 अफ़राद शहीद हुए। अई के आदमियों ने शहर के दरवाज़े से ले कर शबरीम तक उन का ताक़्क़ुब करके वहाँ की ढलान पर उन्हें मार डाला। तब इस्राईली सख़्त घबरा गए, और उन की हिम्मत जवाब दे गई।

6 यशूअ ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़ों को फाड़ दिया और रब के सन्दूक़ के सामने मुँह के बल गिर गया। वहाँ वह शाम तक पड़ा रहा। इस्राईल के बुज़ुर्गों ने भी ऐसा ही किया और अपने सर पर ख़ाक डाल ली। 7 यशूअ ने कहा, “हाय, ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़! तू ने इस क़ौम को दरया-ए-यर्दन में से गुज़रने क्यूँ दिया अगर तेरा मक़्सद सिर्फ़ यह था कि हमें अमोरियों के हवाले करके हलाक करे? काश हम दरया के मशरिक़ी किनारे पर रहने के लिए तय्यार होते! 8 ऐ रब, अब मैं क्या कहूँ जब इस्राईल अपने दुश्मनों के सामने से भाग आया है? 9 कनआनी और मुल्क की बाक़ी क़ौमें यह सुन कर हमें घेर लेंगी और हमारा नाम-ओ-निशान मिटा देंगी। अगर ऐसा होगा तो फिर तू ख़ुद अपना अज़ीम नाम क़ाइम रखने के लिए क्या करेगा?”

10 जवाब में रब ने यशूअ से कहा, “उठ कर खड़ा हो जा! तू क्यूँ मुँह के बल पड़ा है? 11 इस्राईल ने गुनाह किया है। उन्हों ने मेरे अह्द की ख़िलाफ़वरज़ी की है जो मैं ने उन के साथ बांधा था। उन्हों ने मख़्सूसशुदा चीज़ों में से कुछ ले लिया है, और चोरी करके चुपके से अपने सामान में मिला लिया है।

12 इसी लिए इस्राईली अपने दुश्मनों के सामने क़ाइम
नहीं रह सकते बल्कि पीठ फेर कर भाग रहे हैं।
क्यूँकि इस हरकत से इस्राईल ने अपने आप को भी
हलाकत के लिए मख़्सूस कर लिया है। जब तक तुम
अपने दरमियान से वह कुछ निकाल कर तबाह न
कर लो जो तबाही के लिए मख़्सूस है उस वक़्त तक
मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। 13 अब उठ और लोगों को
मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर। उन्हें बता देना,
'अपने आप को कल के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करना, क्यूँकि रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि ऐ इस्राईल, तेरे दरमियान ऐसा माल है जो मेरे
लिए मख़्सूस है। जब तक तुम उसे अपने दरमियान
से निकाल न दो अपने दुश्मनों के सामने क़ाइम नहीं
रह सकोगे।'

14 कल सुब्ह को हर एक क़बीला अपने आप को
पेश करे। रब ज़ाहिर करेगा कि क़ुसूरवार शख़्स
कौन से क़बीले का है। फिर उस क़बीले के कुंबे
बारी बारी सामने आएँ। जिस कुंबे को रब क़ुसूरवार
ठहराएगा उस के मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने आएँ।
और जिस ख़ानदान को रब क़ुसूरवार ठराएगा उस के
मुख़्तलिफ़ अफ़राद सामने आएँ। 15 जो रब के लिए
मख़्सूस माल के साथ पकड़ा जाएगा उसे उस की
मिलकियत समेत जला देना है, क्यूँकि उस ने रब के
अह्द की ख़िलाफ़वरज़ी करके इस्राईल में शर्मनाक
काम किया है।"

16 अगले दिन सुब्ह-सवेरे यशूअ ने क़बीलों को
बारी बारी अपने पास आने दिया। जब यहूदाह के
क़बीले की बारी आई तो रब ने उसे क़ुसूरवार
ठहराया। 17 जब उस क़बीले के मुख़्तलिफ़ कुंबे
सामने आए तो रब ने ज़ारह के कुंबे को क़ुसूरवार
ठहराया। जब ज़ारह के मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने
आए तो रब ने ज़ब्दी का ख़ानदान क़ुसूरवार ठहराया।
18 आख़िरकार यशूअ ने उस ख़ानदान को फ़र्दन फ़र्दन
अपने पास आने दिया, और अकन बिन कर्मी बिन
ज़ब्दी बिन ज़ारह पकड़ा गया। 19 यशूअ ने उस से
कहा, "बेटा, रब इस्राईल के ख़ुदा को जलाल दो
और उस की सताइश करो। मुझे बता दो कि तुम ने
क्या किया। कोई भी बात मुझ से मत छुपाना।"

20 अकन ने जवाब दिया, "वाक़ई मैं ने रब इस्राईल
के ख़ुदा का गुनाह किया है। 21 मैं ने लूटे हुए माल में
से बाबल का एक शानदार चोग़ा, तक़रीबन सवा दो
किलोग्राम चाँदी और आधे किलोग्राम से ज़ाइद सोने
की ईंट ले ली थी। यह चीज़ें देख कर मैं ने उन का
लालच किया और उन्हें ले लिया। अब वह मेरे ख़ैमे
की ज़मीन में दबी हुई हैं। चाँदी को मैं ने बाक़ी चीज़ों
के नीचे छुपा दिया।"

22 यह सुन कर यशूअ ने अपने बन्दों को अकन के
ख़ैमे के पास भेज दिया। वह दौड़ कर वहाँ पहुँचे तो
देखा कि यह माल वाक़ई ख़ैमे की ज़मीन में छुपाया
हुआ है और कि चाँदी दूसरी चीज़ों के नीचे पड़ी है।
23 वह यह सब कुछ ख़ैमे से निकाल कर यशूअ और
तमाम इस्राईलियों के पास ले आए और रब के सामने
रख दिया। 24 फिर यशूअ और तमाम इस्राईली अकन
बिन ज़ारह को पकड़ कर वादी-ए-अकूर में ले गए।
उन्हों ने चाँदी, लिबास, सोने की ईंट, अकन के बेटे-
बेटियों, गाय-बैलों, गधों, भेड़-बकरियों और उस के
ख़ैमे ग़रज़ उस की पूरी मिलकियत को उस वादी में
पहुँचा दिया।

25 यशूअ ने कहा, "तुम यह आफ़त हम पर क्यूँ
लाए हो? आज रब तुम पर ही आफ़त लाएगा।" फिर
पूरे इस्राईल ने अकन को उस के घर वालों समेत
संगसार करके जला दिया। 26 अकन के ऊपर उन्हों
ने पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक वहाँ
मौजूद है। यही वजह है कि आज तक उस का नाम
वादी-ए-अकूर यानी आफ़त की वादी रहा है।

इस के बाद रब का सख़्त ग़ज़ब ठंडा हो गया।

अई की शिकस्त

8 1 फिर रब ने यशूअ से कहा, "मत डर और मत
घबरा बल्कि तमाम फ़ौजी अपने साथ ले कर
अई शहर पर हम्ला कर। क्यूँकि मैं ने अई के बादशाह,
उस की क़ौम, उस के शहर और मुल्क को तेरे हाथ

में कर दिया है। 2 लाज़िम है कि तू अई और उस
के बादशाह के साथ वह कुछ करे जो तू ने यरीहू
और उस के बादशाह के साथ किया था। लेकिन
इस मर्तबा तुम उस का माल और मवेशी अपने पास
रख सकते हो। हम्ला करते वक़्त शहर के पीछे घात
लगा।”
3 चुनाँचे यशूअ पूरे लश्कर के साथ अई पर हम्ला
करने के लिए निकला। उस ने अपने सब से अच्छे
फ़ौजियों में से 30,000 को चुन लिया और उन्हें रात
के वक़्त अई के ख़िलाफ़ भेज कर 4 हुक्म दिया,
“ध्यान दें कि आप शहर के पीछे घात लगाएँ। सब के
सब शहर के क़रीब ही तय्यार रहें। 5 इतने में मैं बाक़ी
मर्दों के साथ शहर के क़रीब आ जाऊँगा। और जब
शहर के लोग पहले की तरह हमारे साथ लड़ने के
लिए निकलेंगे तो हम उन के आगे आगे भाग जाएंगे।
6 वह हमारे पीछे पड़ जाएंगे और यूँ हम उन्हें शहर से
दूर ले जाएंगे, क्यूँकि वह समझेंगे कि हम इस दफ़ा
भी पहले की तरह उन से भाग रहे हैं। 7 फिर आप उस
जगह से निकलें जहाँ आप घात में बैठे होंगे और शहर
पर क़ब्ज़ा कर लें। रब आप का ख़ुदा उसे आप के
हाथ में कर देगा। 8 जब शहर आप के क़ब्ज़े में होगा
तो उसे जला देना। वही करें जो रब ने फ़रमाया है।
मेरी इन हिदायात पर ध्यान दें।”
9 यह कह कर यशूअ ने उन्हें अई की तरफ़ भेज
दिया। वह रवाना हो कर अई के मग़रिब में घात में
बैठ गए। यह जगह बैत-एल और अई के दरमियान
थी। लेकिन यशूअ ने यह रात बाक़ी लोगों के साथ
ख़ैमागाह में गुज़ारी। 10 अगले दिन सुब्ह-सवेरे यशूअ
ने आदमियों को जमा करके उन का जाइज़ा लिया।
फिर वह इस्राईल के बुज़ुर्गों के साथ उन के आगे
आगे अई की तरफ़ चल दिया। 11 जो लश्कर उस के
साथ था वह चलते चलते अई के सामने पहुँच गया।
उन्हों ने शहर के शिमाल में अपने ख़ैमे लगाए। उन
के और शहर के दरमियान वादी थी।
12 जो शहर के मग़रिब में अई और बैत-एल के
दरमियान घात लगाए बैठे थे वह तक़रीबन 5,000
मर्द थे। 13 यूँ शहर के मग़रिब और शिमाल में आदमी
लड़ने के लिए तय्यार हुए। रात के वक़्त यशूअ वादी
में पहुँच गया।
14 जब अई के बादशाह ने शिमाल में इस्राईलियों
को देखा तो उस ने जल्दी जल्दी तय्यारियाँ कीं।
अगले दिन सुब्ह-सवेरे वह अपने आदमियों के साथ
शहर से निकला ताकि इस्राईलियों के साथ लड़े।
यह जगह वादी-ए-यर्दन की तरफ़ थी। बादशाह को
मालूम न हुआ कि इस्राईली शहर के पीछे घात में
बैठे हैं। 15 जब अई के मर्द निकले तो यशूअ और
उस का लश्कर शिकस्त का इज़हार करके रेगिस्तान
की तरफ़ भागने लगे।
16 तब अई के तमाम मर्दों को इस्राईलियों का
ताक़्क़ुब करने के लिए बुलाया गया, और यशूअ
के पीछे भागते भागते वह शहर से दूर निकल गए।
17 एक मर्द भी अई या बैत-एल में न रहा बल्कि सब
के सब इस्राईलियों के पीछे पड़ गए। न सिर्फ़ यह
बल्कि उन्हों ने शहर का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया।
18 फिर रब ने यशूअ से कहा, “जो शम्शीर तेरे हाथ
में है उसे अई के ख़िलाफ़ उठाए रख, क्यूँकि मैं यह
शहर तेरे हाथ में कर दूँगा।” यशूअ ने ऐसा ही किया,
19 और जूँ ही उस ने अपनी शम्शीर से अई की तरफ़
इशारा किया घात में बैठे आदमी जल्दी से अपनी
जगह से निकल आए और दौड़ दौड़ कर शहर पर
झपट पड़े। उन्हों ने उस पर क़ब्ज़ा करके जल्दी से
उसे जला दिया।
20 जब अई के आदमियों ने मुड़ कर नज़र डाली
तो देखा कि शहर से धुएँ के बादल उठ रहे हैं।
लेकिन अब उन के लिए भी बचने का कोई रास्ता
न रहा, क्यूँकि जो इस्राईली अब तक उन के आगे
आगे रेगिस्तान की तरफ़ भाग रहे थे वह अचानक
मुड़ कर ताक़्क़ुब करने वालों पर टूट पड़े। 21 क्यूँकि
जब यशूअ और उस के साथ के आदमियों ने देखा
कि घात में बैठे इस्राईलियों ने शहर पर क़ब्ज़ा कर
लिया है और कि शहर से धुआँ उठ रहा है तो उन्हों
ने मुड़ कर अई के आदमियों पर हम्ला कर दिया।

22 साथ साथ शहर में दाख़िल हुए इस्राईली शहर से
निकल कर पीछे से उन से लड़ने लगे। चुनाँचे अई
के आदमी बीच में फंस गए। इस्राईलियों ने सब को
क़त्ल कर दिया, और न कोई बचा, न कोई फ़रार हो
सका। 23 सिर्फ़ अई के बादशाह को ज़िन्दा पकड़ा
और यशूअ के पास लाया गया।

24 अई के मर्दों का ताक़्क़ुब करते करते उन सब
को खुले मैदान और रेगिस्तान में तलवार से मार देने
के बाद इस्राईलियों ने अई शहर में वापस आ कर
तमाम बाशिन्दों को हलाक कर दिया। 25 उस दिन
अई के तमाम मर्द और औरतें मारे गए, कुल 12,000
अफ़राद। 26 क्यूँकि यशूअ ने उस वक़्त तक अपनी
शम्शीर उठाए रखी जब तक अई के तमाम बाशिन्दों
को हलाक न कर दिया गया। 27 सिर्फ़ शहर के मवेशी
और लूटा हुआ माल बच गया, क्यूँकि इस दफ़ा रब
ने हिदायत की थी कि इस्राईली उसे ले जा सकते हैं।

28 यशूअ ने अई को जला कर उसे हमेशा के लिए
मल्बे का ढेर बना दिया। यह मक़ाम आज तक वीरान
है। 29 अई के बादशाह की लाश उस ने शाम तक
दरख़्त से लटकाए रखी। फिर जब सूरज डूबने लगा
तो यशूअ ने अपने लोगों को हुक्म दिया कि बादशाह
की लाश को दरख़्त से उतार दें। तब उन्हों ने उसे
शहर के दरवाज़े के पास फैंक कर उस पर पत्थर का
बड़ा ढेर लगा दिया। यह ढेर आज तक मौजूद है।

ऐबाल पहाड़ पर अह्द की तज्दीद

30 उस वक़्त यशूअ ने रब इस्राईल के ख़ुदा की
ताज़ीम में ऐबाल पहाड़ पर क़ुर्बानगाह बनाई 31 जिस
तरह रब के ख़ादिम मूसा ने इस्राईलियों को हुक्म
दिया था। उस ने उसे मूसा की शरीअत की किताब
में दर्ज हिदायात के मुताबिक़ बनाया। क़ुर्बानगाह के
पत्थर तराशे बग़ैर लगाए गए, और उन पर लोहे का
आला न चलाया गया। उस पर उन्हों ने रब को भस्म
होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश कीं।

32 वहाँ यशूअ ने इस्राईलियों की मौजूदगी में पत्थरों
पर मूसा की शरीअत दुबारा लिख दी। 33 फिर बुज़ुर्गों,
निगहबानों और क़ाज़ियों के साथ मिल कर तमाम
इस्राईली दो गुरोहों में तक़्सीम हुए। परदेसी भी उन
में शामिल थे। एक गुरोह गरिज़ीम पहाड़ के सामने
खड़ा हुआ और दूसरा ऐबाल पहाड़ के सामने। दोनों
गुरोह एक दूसरे के मुक़ाबिल खड़े रहे जबकि लावी
के क़बीले के इमाम उन के दरमियान खड़े हुए। उन्हों
ने रब के अह्द का सन्दूक़ उठा रखा था। सब कुछ
उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब के ख़ादिम
मूसा ने इस्राईलियों को बरकत देने के लिए दी थीं।

34 फिर यशूअ ने शरीअत की तमाम बातों की
तिलावत की, उस की बरकात भी और उस की
लानतें भी। सब कुछ उस ने वैसा ही पढ़ा जैसा
कि शरीअत की किताब में दर्ज था। 35 जो भी हुक्म
मूसा ने दिया था उस का एक भी लफ़्ज़ न रहा जिस
की तिलावत यशूअ ने तमाम इस्राईलियों की पूरी
जमाअत के सामने न की हो। और सब ने यह बातें
सुनीं। इस में औरतें, बच्चे और उन के दरमियान रहने
वाले परदेसी सब शामिल थे।

जिबऊनी यशूअ को धोका देते हैं

9 1 इन बातों की ख़बर दरया-ए-यर्दन के मग़रिब
के तमाम बादशाहों तक पहुँची, ख़्वाह वह
पहाड़ी इलाक़े, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े या
साहिली इलाक़े में लुबनान तक रहते थे। उन की यह
क़ौमें थीं : हित्ती, अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी
और यबूसी। 2 अब यह यशूअ और इस्राईलियों से
लड़ने के लिए जमा हुए।

3 लेकिन जब जिबऊन शहर के बाशिन्दों को पता
चला कि यशूअ ने यरीहू और अई के साथ क्या किया
है 4 तो उन्हों ने एक चाल चली। अपने साथ सफ़र
के लिए खाना ले कर वह यशूअ के पास चल पड़े।
उन के गधों पर ख़स्ताहाल बोरियाँ और मै की ऐसी
पुरानी और घिसी फटी मश्कें लदी हुई थीं जिन की
बार बार मरम्मत हुई थी। 5 मर्दों ने ऐसे पुराने जूते
पहन रखे थे जिन पर जगह जगह पैवन्द लगे हुए थे।
उन के कपड़े भी घिसे फटे थे, और सफ़र के लिए जो

रोटी उन के पास थी वह ख़ुश्क और टुकड़े टुकड़े हो
गई थी। 6 ऐसी हालत में वह यशूअ के पास जिल्जाल
की ख़ैमागाह में पहुँच गए। उन्हों ने उस से और बाक़ी
इस्राईली मर्दों से कहा, “हम एक दूरदराज़ मुल्क से
आए हैं। आएँ, हमारे साथ मुआहदा करें।”
7 लेकिन इस्राईलियों ने हिव्वियों से कहा, “शायद
आप हमारे इलाक़े के बीच में कहीं बसते हैं। अगर
ऐसा है तो हम किस तरह आप से मुआहदा कर सकते
हैं?”
8 वह यशूअ से बोले, “हम आप की ख़िदमत के
लिए हाज़िर हैं।”
यशूअ ने पूछा, “आप कौन हैं और कहाँ से आए
हैं?” 9 उन्हों ने जवाब दिया, “आप के ख़ादिम आप
के ख़ुदा के नाम के बाइस एक निहायत दूरदराज़
मुल्क से आए हैं। क्यूँकि उस की ख़बर हम तक
पहुँच गई है, और हम ने वह सब कुछ सुन लिया है
जो उस ने मिस्र में 10 और दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में
रहने वाले दो बादशाहों के साथ किया यानी हस्बोन
के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज के
साथ जो अस्तारात में रहता था। 11 तब हमारे बुज़ुर्गों
बल्कि हमारे मुल्क के तमाम बाशिन्दों ने हम से कहा,
‘सफ़र के लिए खाना ले कर उन से मिलने जाएँ। उन
से बात करें कि हम आप की ख़िदमत के लिए हाज़िर
हैं। आएँ, हमारे साथ मुआहदा करें।’ 12 हमारी यह
रोटी अभी गर्म थी जब हम इसे सफ़र के लिए अपने
साथ ले कर आप से मिलने के लिए अपने घरों से
रवाना हुए। और अब आप ख़ुद देख सकते हैं कि यह
ख़ुश्क और टुकड़े टुकड़े हो गई है। 13 और मै की इन
मश्कों की घिसी फटी हालत देखें। भरते वक़्त यह
नई और लचकदार थीं। यही हमारे कपड़ों और जूतों
की हालत भी है। सफ़र करते करते यह ख़त्म हो गए
हैं।”
14 इस्राईलियों ने मुसाफ़िरों का कुछ खाना लिया।
अफ़सोस, उन्हों ने रब से हिदायत न माँगी। 15 फिर
यशूअ ने उन के साथ सुलह का मुआहदा किया और
जमाअत के राहनुमाओं ने क़सम खा कर उस की
तस्दीक़ की। मुआहदे में इस्राईल ने वादा किया कि
जिबऊनियों को जीने देगा।
16 तीन दिन गुज़रे तो इस्राईलियों को पता चला
कि जिबऊनी हमारे क़रीब ही और हमारे इलाक़े के
ऐन बीच में रहते हैं। 17 इस्राईली रवाना हुए और
तीसरे दिन उन के शहरों के पास पहुँचे जिन के
नाम जिबऊन, कफ़ीरा, बैरोत और क़िर्यत-यारीम
थे। 18 लेकिन चूँकि जमाअत के राहनुमाओं ने रब
इस्राईल के ख़ुदा की क़सम खा कर उन से वादा
किया था इस लिए उन्हों ने जिबऊनियों को हलाक
न किया। पूरी जमाअत राहनुमाओं पर बुड़बुड़ाने
लगी, 19 लेकिन उन्हों ने जवाब में कहा, “हम ने रब
इस्राईल के ख़ुदा की क़सम खा कर उन से वादा
किया, और अब हम उन्हें छेड़ नहीं सकते। 20 चुनाँचे
हम उन्हें जीने देंगे और वह क़सम न तोड़ेंगे जो हम ने
उन के साथ खाई। ऐसा न हो कि अल्लाह का ग़ज़ब हम
पर नाज़िल हो जाए। 21 उन्हें जीने दो।” फिर फ़ैसला
यह हुआ कि जिबऊनी लकड़हारे और पानी भरने
वाले बन कर पूरी जमाअत की ख़िदमत करें। यूँ
इस्राईली राहनुमाओं का उन के साथ वादा क़ाइम
रहा।
22 यशूअ ने जिबऊनियों को बुला कर कहा, “तुम ने
हमें धोका दे कर क्यूँ कहा कि हम आप से निहायत
दूर रहते हैं हालाँकि तुम हमारे इलाक़े के बीच में
ही रहते हो? 23 चुनाँचे अब तुम पर लानत हो। तुम
लकड़हारे और पानी भरने वाले बन कर हमेशा के
लिए मेरे ख़ुदा के घर की ख़िदमत करोगे।”
24 उन्हों ने जवाब दिया, “आप के ख़ादिमों को
साफ़ बताया गया था कि रब आप के ख़ुदा ने अपने
ख़ादिम मूसा को क्या हुक्म दिया था, कि उसे आप
को पूरा मुल्क देना और आप के आगे आगे तमाम
बाशिन्दों को हलाक करना है। यह सुन कर हम बहुत
डर गए कि हमारी जान नहीं बचेगी। इसी लिए हम ने
यह सब कुछ किया। 25 अब हम आप के हाथ में हैं।
हमारे साथ वह कुछ करें जो आप को अच्छा और
ठीक लगता है।”

26 चुनाँचे यशूअ ने उन्हें इस्राईलियों से बचाया, और
उन्हों ने जिबऊनियों को हलाक न किया। 27 उसी दिन
उस ने जिबऊनियों को लकड़हारे और पानी भरने
वाले बना दिया ताकि वह जमाअत और रब की उस
क़ुर्बानगाह की ख़िदमत करें जिस का मक़ाम रब को
अभी चुनना था। और यह लोग आज तक यही कुछ
करते हैं।

अमोरियों की शिकस्त

10 1 यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिद्क़ को
ख़बर मिली कि यशूअ ने अई पर यूँ क़ब्ज़ा
करके उसे मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया है जिस
तरह उस ने यरीहू और उस के बादशाह के साथ भी
किया था। उसे यह इत्तिला भी दी गई कि जिबऊन
के बाशिन्दे इस्राईलियों के साथ सुलह का मुआहदा
करके उन के दरमियान रह रहे हैं। 2 यह सुन कर वह
और उस की क़ौम निहायत डर गए, क्यूँकि जिबऊन
बड़ा शहर था। वह अहमियत के लिहाज़ से उन शहरों
के बराबर था जिन के बादशाह थे, बल्कि वह अई
शहर से भी बड़ा था, और उस के तमाम मर्द बेहतरीन
फ़ौजी थे।

3 चुनाँचे यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिद्क़ ने
अपने क़ासिद हब्रून के बादशाह हूहाम, यर्मूत के
बादशाह पीराम, लकीस के बादशाह यफ़ीअ और
इज्लून के बादशाह दबीर के पास भेज दिए। 4 पैग़ाम
यह था, “आएँ और जिबऊन पर हम्ला करने में मेरी
मदद करें, क्यूँकि उस ने यशूअ और इस्राईलियों के
साथ सुलह का मुआहदा कर लिया है।” 5 यरूशलम,
हब्रून, यर्मूत, लकीस और इज्लून के यह पाँच अमोरी
बादशाह मुत्तहिद हुए। वह अपने तमाम फ़ौजियों को
ले कर चल पड़े और जिबऊन का मुहासरा करके
उस से जंग करने लगे।

6 उस वक़्त यशूअ ने अपने ख़ैमे जिल्जाल में लगाए
थे। जिबऊन के लोगों ने उसे पैग़ाम भेज दिया, “अपने
ख़ादिमों को तर्क न करें। जल्दी से हमारे पास आ
कर हमें बचाएँ! हमारी मदद कीजिए, क्यूँकि पहाड़ी
इलाक़े के तमाम अमोरी बादशाह हमारे ख़िलाफ़
मुत्तहिद हो गए हैं।”

7 यह सुन कर यशूअ अपनी पूरी फ़ौज के साथ
जिल्जाल से निकला और जिबऊन के लिए रवाना
हुआ। उस के बेहतरीन फ़ौजी भी सब उस के साथ
थे। 8 रब ने यशूअ से कहा, “उन से मत डरना, क्यूँकि
मैं उन्हें तेरे हाथ में कर चुका हूँ। उन में से एक भी
तेरा मुक़ाबला नहीं करने पाएगा।” 9 और यशूअ ने
जिल्जाल से सारी रात सफ़र करते करते अचानक
दुश्मन पर हम्ला किया। 10 उस वक़्त रब ने इस्राईलियों
के देखते देखते दुश्मन में अब्तरी पैदा कर दी, और
उन्हों ने जिबऊन के क़रीब दुश्मन को ज़बरदस्त
शिकस्त दी। इस्राईली बैत-हौरून तक पहुँचाने वाले
रास्ते पर अमोरियों का ताक़्क़ुब करते करते उन्हें
अज़ीक़ा और मक़्क़ेदा तक मौत के घाट उतारते गए।
11 और जब अमोरी इस रास्ते पर अज़ीक़ा की तरफ़
भाग रहे थे तो रब ने आसमान से उन पर बड़े बड़े
ओले बरसाए जिन्हों ने इस्राईलियों की निस्बत ज़्यादा
दुश्मनों को हलाक कर दिया।

12 उस दिन जब रब ने अमोरियों को इस्राईल
के हाथ में कर दिया तो यशूअ ने इस्राईलियों की
मौजूदगी में रब से कहा,

“ऐ सूरज, जिबऊन के ऊपर रुक जा!
ऐ चाँद, वादी-ए-अय्यालोन पर ठहर जा!”

13 तब सूरज रुक गया, और चाँद ने आगे हरकत
न की। जब तक कि इस्राईल ने अपने दुश्मनों से पूरा
बदला न ले लिया उस वक़्त तक वह रुके रहे। इस
बात का ज़िक्र याशर की किताब में किया गया है।
सूरज आसमान के बीच में रुक गया और तक़रीबन
एक पूरे दिन के दौरान ग़ुरूब न हुआ। 14 यह दिन
मुन्फ़रिद था। रब ने इन्सान की इस तरह की दुआ न
कभी इस से पहले, न कभी इस के बाद सुनी। क्यूँकि
रब ख़ुद इस्राईल के लिए लड़ रहा था। 15 इस के बाद
यशूअ पूरे इस्राईल समेत जिल्जाल की ख़ैमागाह में
लौट आया।

पाँच अमोरी बादशाहों की गिरिफ़्तारी

16 लेकिन पाँचों अमोरी बादशाह फ़रार हो कर
मक़्क़ेदा के एक ग़ार में छुप गए थे। 17 यशूअ को
इत्तिला दी गई 18 तो उस ने कहा, “कुछ बड़े बड़े
पत्थर लुढ़का कर ग़ार का मुँह बन्द करना, और कुछ
आदमी उस की पहरादारी करें। 19 लेकिन बाक़ी लोग
न रुकें बल्कि दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके पीछे से
उन्हें मारते जाएँ। उन्हें दुबारा अपने शहरों में दाख़िल
होने का मौक़ा मत देना, क्यूँकि रब आप के ख़ुदा
ने उन्हें आप के हाथ में कर दिया है।” 20 चुनाँचे
यशूअ और बाक़ी इस्राईली उन्हें हलाक करते रहे,
और कम ही अपने शहरों की फ़सील में दाख़िल हो
सके। 21 इस के बाद पूरी फ़ौज सहीह-सलामत यशूअ
के पास मक़्क़ेदा की लश्करगाह में वापस पहुँच गई।

अब से किसी में भी इस्राईलियों को धमकी देने की
जुरअत न रही।

22 फिर यशूअ ने कहा, “ग़ार के मुँह को खोल कर
यह पाँच बादशाह मेरे पास निकाल लाएँ।” 23 लोग
ग़ार को खोल कर यरूशलम, हब्रून, यर्मूत, लकीस
और इज्लून के बादशाहों को यशूअ के पास निकाल
लाए। 24 यशूअ ने इस्राईल के मर्दों को बुला कर
अपने साथ खड़े फ़ौजी अफ़्सरों से कहा, “इधर आ
कर अपने पैरों को बादशाहों की गरदनों पर रख
दें।” अफ़्सरों ने ऐसा ही किया। 25 फिर यशूअ ने उन
से कहा, “न डरें और न हौसला हारें। मज़बूत और
दिलेर हों। रब यही कुछ उन तमाम दुश्मनों के साथ
करेगा जिन से आप लड़ेंगे।” 26 यह कह कर उस
ने बादशाहों को हलाक करके उन की लाशें पाँच
दरख़्तों से लटका दीं। वहाँ वह शाम तक लटकी
रहीं। 27 जब सूरज डूबने लगा तो लोगों ने यशूअ के
हुक्म पर लाशें उतार कर उस ग़ार में फैंक दीं जिस
में बादशाह छुप गए थे। फिर उन्हों ने ग़ार के मुँह को
बड़े बड़े पत्थरों से बन्द कर दिया। यह पत्थर आज
तक वहाँ पड़े हुए हैं।

मज़ीद अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा

28 उस दिन मक़्क़ेदा यशूअ के क़ब्ज़े में आ गया।
उस ने पूरे शहर को तलवार से रब के लिए मख़्सूस
करके तबाह कर दिया। बादशाह समेत सब हलाक
हुए और एक भी न बचा। शहर के बादशाह के साथ
उस ने वह सुलूक किया जो उस ने यरीहू के बादशाह
के साथ किया था।

29 फिर यशूअ ने तमाम इस्राईलियों के साथ वहाँ
से आगे निकल कर लिब्ना पर हम्ला किया। 30 रब
ने उस शहर और उस के बादशाह को भी इस्राईल
के हाथ में कर दिया। यशूअ ने तलवार से शहर के
तमाम बाशिन्दों को हलाक किया, और एक भी न
बचा। बादशाह के साथ उस ने वही सुलूक किया जो
उस ने यरीहू के बादशाह के साथ किया था।

31 इस के बाद उस ने तमाम इस्राईलियों के साथ
लिब्ना से आगे बढ़ कर लकीस का मुहासरा किया।
जब उस ने उस पर हम्ला किया 32 तो रब ने यह शहर
उस के बादशाह समेत इस्राईल के हाथ में कर दिया।
दूसरे दिन वह यशूअ के क़ब्ज़े में आ गया। शहर के
सारे बाशिन्दों को उस ने तलवार से हलाक किया,
जिस तरह कि उस ने लिब्ना के साथ भी किया था।
33 साथ साथ यशूअ ने जज़र के बादशाह हूरम और
उस के लोगों को भी शिकस्त दी जो लकीस की मदद
करने के लिए आए थे। उन में से एक भी न बचा।

34 फिर यशूअ ने तमाम इस्राईलियों के साथ लकीस
से आगे बढ़ कर इज्लून का मुहासरा कर लिया। उसी
दिन उन्हों ने उस पर हम्ला करके 35 उस पर क़ब्ज़ा
कर लिया। जिस तरह लकीस के साथ हुआ उसी
तरह इज्लून के साथ भी किया गया यानी शहर के
तमाम बाशिन्दे तलवार से हलाक हुए।

36 इस के बाद यशूअ ने तमाम इस्राईलियों के साथ
इज्लून से आगे बढ़ कर हब्रून पर हम्ला किया। 37 शहर
पर क़ब्ज़ा करके उन्हों ने बादशाह, इर्दगिर्द की
आबादियाँ और बाशिन्दे सब के सब तह-ए-तेग़ कर
दिए। कोई न बचा। इज्लून की तरह उन्हों ने उसे पूरे

तौर पर तमाम बाशिन्दों समेत रब के लिए मख़्सूस करके तबाह कर दिया।

38 फिर यशूअ तमाम इस्राईलियों के साथ मुड़ कर
दबीर की तरफ़ बढ़ गया। उस पर हम्ला करके 39 उस
ने शहर, उस के बादशाह और इर्दगिर्द की आबादियों
पर क़ब्ज़ा कर लिया। सब को नेस्त कर दिया गया,
एक भी न बचा। यूँ दबीर के साथ वह कुछ हुआ जो
पहले हब्रून और लिब्ना उस के बादशाह समेत हुआ
था।

40 इस तरह यशूअ ने जुनूबी कनआन के तमाम
बादशाहों को शिकस्त दे कर उन के पूरे मुल्क पर
क़ब्ज़ा कर लिया यानी मुल्क के पहाड़ी इलाक़े पर,
जुनूब के दश्त-ए-नजब पर, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े पर और वादी-ए-यर्दन के मग़रिब में वाक़े
पहाड़ी ढलानों पर। उस ने किसी को भी बचने न
दिया बल्कि हर जानदार को रब के लिए मख़्सूस
करके हलाक कर दिया। यह सब कुछ वैसा ही हुआ
जैसा रब इस्राईल के ख़ुदा ने हुक्म दिया था।

41 यशूअ ने उन्हें क़ादिस-बर्नीअ से ले कर ग़ज़्ज़ा
तक और जुशन के पूरे इलाक़े से ले कर जिबऊन
तक शिकस्त दी। 42 इन तमाम बादशाहों और उन
के ममालिक पर यशूअ ने एक ही वक़्त फ़त्ह पाई,
क्यूँकि इस्राईल का ख़ुदा इस्राईल के लिए लड़ा।

43 इस के बाद यशूअ तमाम इस्राईलियों के साथ
जिल्जाल की ख़ैमागाह में लौट आया।

शिमाली इत्तिहादियों पर फ़त्ह

11 1 जब हसूर के बादशाह याबीन को इन
वाक़िआत की ख़बर मिली तो उस ने मदून
के बादशाह यूबाब और सिम्रोन और अक्शाफ़ के
बादशाहों को पैग़ाम भेजे। 2 इस के इलावा उस
ने उन बादशाहों को पैग़ाम भेजे जो शिमाल में थे
यानी शिमाली पहाड़ी इलाक़े में, वादी-ए-यर्दन के
उस हिस्से में जो किन्नरत यानी गलील के जुनूब में
है, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में, मग़रिब में
वाक़े नाफ़त-दोर में 3 और कनआन के मशरिक़ और
मग़रिब में। याबीन ने अमोरियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों,
पहाड़ी इलाक़े के यबूसियों और हर्मून पहाड़ के दामन
में वाक़े मुल्क-ए-मिस्फ़ाह के हिव्वियों को भी पैग़ाम
भेजे।

4 चुनाँचे यह अपनी तमाम फ़ौजों को ले कर जंग
के लिए निकले। उन के आदमी समुन्दर के साहिल
की रेत की मानिन्द बेशुमार थे। उन के पास मुतअद्दिद
घोड़े और रथ भी थे। 5 इन तमाम बादशाहों ने इस्राईल
से लड़ने के लिए मुत्तहिद हो कर अपने ख़ैमे मरूम
के चश्मे पर लगा दिए।

6 रब ने यशूअ से कहा, “उन से मत डरना, क्यूँकि
कल इसी वक़्त तक मैं ने उन सब को हलाक करके
इस्राईल के हवाले कर दिया होगा। तुझे उन के घोड़ों
की कोंचों को काटना और उन के रथों को जला देना
है।” 7 चुनाँचे यशूअ अपने तमाम फ़ौजियों को ले कर
मरूम के चश्मे पर आया और अचानक दुश्मन पर
हम्ला किया। 8 और रब ने दुश्मनों को इस्राईलियों के
हवाले कर दिया। इस्राईलियों ने उन्हें शिकस्त दी
और उन का ताक़्क़ुब करते करते शिमाल में बड़े
शहर सैदा और मिस्रफ़ात-माइम तक जा पहुँचे। इसी
तरह उन्हों ने मशरिक़ में वादी-ए-मिस्फ़ाह तक भी
उन का ताक़्क़ुब किया। आख़िर में एक भी न बचा।
9 रब की हिदायत के मुताबिक़ यशूअ ने दुश्मन के
घोड़ों की कोंचों को कटवा कर उस के रथों को
जला दिया।

शिमाली कनआन पर क़ब्ज़ा

10 फिर यशूअ वापस आया और हसूर को अपने
क़ब्ज़े में ले लिया। हसूर उन तमाम बादशाहतों का
सदर मक़ाम था जिन्हें उन्हों ने शिकस्त दी थी।
इस्राईलियों ने शहर के बादशाह को मार दिया 11 और
शहर के हर जानदार को अल्लाह के हवाले करके
हलाक कर दिया। एक भी न बचा। फिर यशूअ ने
शहर को जला दिया।

12 इसी तरह यशूअ ने उन बाक़ी बादशाहों के शहरों
पर भी क़ब्ज़ा कर लिया जो इस्राईल के ख़िलाफ़

मुत्तहिद हो गए थे। हर शहर को उस ने रब के
ख़ादिम मूसा के हुक्म के मुताबिक़ तबाह कर दिया।
बादशाहों समेत सब कुछ नेस्त कर दिया गया।
13 लेकिन यशूअ ने सिर्फ़ हसूर को जलाया। पहाड़ियों
पर के बाक़ी शहरों को उस ने रहने दिया। 14 लूट का
जो भी माल जानवरों समेत उन में पाया गया उसे
इस्राईलियों ने अपने पास रख लिया। लेकिन तमाम
बाशिन्दों को उन्हों ने मार डाला और एक भी न बचने
दिया। 15 क्यूँकि रब ने अपने ख़ादिम मूसा को यही
हुक्म दिया था, और यशूअ ने सब कुछ वैसे ही किया
जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

16 यूँ यशूअ ने पूरे कनआन पर क़ब्ज़ा कर लिया।
इस में पहाड़ी इलाक़ा, पूरा दश्त-ए-नजब, जुशन
का पूरा इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी इलाक़ा,
वादी-ए-यर्दन और इस्राईल के पहाड़ उन के दामन की
पहाड़ियों समेत शामिल थे। 17 अब यशूअ की पहुँच
जुनूब में सईर की तरफ़ बढ़ने वाले पहाड़ ख़लक़ से
ले कर लुबनान के मैदानी इलाक़े के शहर बाल-जद
तक थी जो हर्मून पहाड़ के दामन में था। यशूअ ने
इन इलाक़ों के तमाम बादशाहों को पकड़ कर मार
डाला। 18 लेकिन इन बादशाहों से जंग करने में बहुत
वक़्त लगा, 19 क्यूँकि जिबऊन में रहने वाले हिव्वियों
के इलावा किसी भी शहर ने इस्राईलियों से सुलह न
की। इस लिए इस्राईल को उन सब पर जंग करके ही
क़ब्ज़ा करना पड़ा। 20 रब ही ने उन्हें अकड़ने दिया
था ताकि वह इस्राईल से जंग करें और उन पर रहम
न किया जाए बल्कि उन्हें पूरे तौर पर रब के हवाले
करके हलाक किया जाए। लाज़िम था कि उन्हें यूँ
नेस्त-ओ-नाबूद किया जाए जिस तरह रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

21 उस वक़्त यशूअ ने उन तमाम अनाक़ियों को
हलाक कर दिया जो हब्रून, दबीर, अनाब और उन
तमाम जगहों में रहते थे जो यहूदाह और इस्राईल
के पहाड़ी इलाक़े में थीं। उस ने उन सब को उन
के शहरों समेत अल्लाह के हवाले करके तबाह कर
दिया। 22 इस्राईल के पूरे इलाक़े में अनाक़ियों में से
एक भी न बचा। सिर्फ़ ग़ज़्ज़ा, जात और अश्दूद में
कुछ ज़िन्दा रहे।

23 ग़रज़ यशूअ ने पूरे मुल्क पर यूँ क़ब्ज़ा किया
जिस तरह रब ने मूसा को बताया था। फिर उस ने
उसे क़बीलों में तक़्सीम करके इस्राईल को मीरास
में दे दिया। जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में अम्न-ओ-
अमान क़ाइम हो गया।

मूसा की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

12 1 दर्ज-ए-ज़ैल दरया-ए-यर्दन के मशरिक़
में उन बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें
इस्राईलियों ने शिकस्त दी थी और जिन के इलाक़े पर
उन्हों ने क़ब्ज़ा किया था। यह इलाक़ा जुनूब में वादी-
ए-अर्नोन से ले कर शिमाल में हर्मून पहाड़ तक था,
और उस में वादी-ए-यर्दन का पूरा मशरिक़ी हिस्सा
शामिल था।

2 पहले का नाम सीहोन था। वह अमोरियों का
बादशाह था और उस का दार-उल-हकूमत हस्बोन
था। अरोईर शहर यानी वादी-ए-अर्नोन के दरमियान
से ले कर अम्मोनियों की सरहद दरया-ए-यब्बोक़
तक सारा इलाक़ा उस की गिरिफ़्त में था। इस में
जिलिआद का आधा हिस्सा भी शामिल था। 3 इस
के इलावा सीहोन का क़ब्ज़ा दरया-ए-यर्दन के पूरे
मशरिक़ी किनारे पर किन्नरत यानी गलील की झील
से ले कर बहीरा-ए-मुर्दार के पास शहर बैत-यसीमोत
तक बल्कि उस के जुनूब में पहाड़ी सिलसिले पिसगा
के दामन तक था।

4 दूसरा बादशाह जिस ने शिकस्त खाई थी बसन
का बादशाह ओज था। वह रफ़ाइयों के देओक़ामत
क़बीले में से बाक़ी रह गया था, और उस की हुकूमत
के मर्कज़ अस्तारात और इद्रई थे। 5 शिमाल में उस
की सल्तनत की सरहद हर्मून पहाड़ थी और मशरिक़
में सल्का शहर। बसन का तमाम इलाक़ा जसूरियों
और माकातियों की सरहद तक उस के हाथ में
था और इसी तरह जिलिआद का शिमाली हिस्सा
बादशाह सीहोन की सरहद तक।

6 इस्राईल ने रब के ख़ादिम मूसा की राहनुमाई में
इन दो बादशाहों पर फ़त्ह पाई थी, और मूसा ने यह
इलाक़ा रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
के सपुर्द किया था।

यशूअ की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

7 दर्ज-ए-ज़ैल दरया-ए-यर्दन के मग़रिब के उन
बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें इस्राईलियों ने यशूअ
की राहनुमाई में शिकस्त दी थी और जिन की
सल्तनत वादी-ए-लुबनान के शहर बाल-जद से ले
कर सईर की तरफ़ बढ़ने वाले पहाड़ ख़लक़ तक
थी। बाद में यशूअ ने यह सारा मुल्क इस्राईल के
क़बीलों में तक़्सीम करके उन्हें मीरास में दे दिया
8 यानी पहाड़ी इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी
इलाक़ा, यर्दन की वादी, उस के मग़रिब में वाक़े
पहाड़ी ढलानें, यहूदाह का रेगिस्तान और दश्त-
ए-नजब। पहले यह सब कुछ हित्तियों, अमोरियों,
कनआनियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबूसियों
के हाथ में था। ज़ैल के हर शहर का अपना
बादशाह था, और हर एक ने शिकस्त खाई : 9 यरीहू,
अई नज़्द बैत-एल, 10 यरूशलम, हब्रून, 11 यर्मूत,
लकीस, 12 इज्लून, जज़र, 13 दबीर, जिदर, 14 हुर्मा,
अराद, 15 लिब्ना, अदुल्लाम, 16 मक़्क़ेदा, बैत-एल,
17 तफ़्फ़ूअह, हिफ़र, 18 अफ़ीक़, लश्शरून, 19 मदून,
हसूर, 20 सिम्रोन-मरोन, अक्शाफ़, 21 तानक, मजिद्दो,
22 क़ादिस, कर्मिल का युक़्निआम, 23 नाफ़त-दोर
में वाक़े दोर, जिल्जाल का गोइम 24 और तिर्ज़ा।
बादशाहों की कुल तादाद 31 थी।

कनआन के बाक़ी इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करने का हुक्म

13 1 जब यशूअ बूढ़ा था तो रब ने उस से
कहा, “तू बहुत बूढ़ा हो चुका है, लेकिन
अभी काफ़ी कुछ बाक़ी रह गया है जिस पर क़ब्ज़ा
करने की ज़रूरत है। 2–3 इस में फ़िलिस्तियों के तमाम
इलाक़े उन के शाही शहरों ग़ज़्ज़ा, अश्दूद, अस्क़लून,
जात और अक़्रून समेत शामिल हैं और इसी तरह
जसूर का इलाक़ा जिस की जुनूबी सरहद वादी-ए-
सैहूर है जो मिस्र के मशरिक़ में है और जिस की
शिमाली सरहद अक़्रून है। उसे भी मुल्क-ए-कनआन
का हिस्सा क़रार दिया जाता है। अव्वियों का इलाक़ा
भी 4 जो जुनूब में है अब तक इस्राईल के क़ब्ज़े में
नहीं आया। यही बात शिमाल पर भी सादिक़ आती
है। सैदानियों के शहर मआरा से ले कर अफ़ीक़ शहर
और अमोरियों की सरहद तक सब कुछ अब तक
इस्राईल की हुकूमत से बाहर है। 5 इस के इलावा
जबलियों का मुल्क और मशरिक़ में पूरा लुबनान
हर्मून पहाड़ के दामन में बाल-जद से ले कर लबो-
हमात तक बाक़ी रह गया है। 6 इस में उन सैदानियों
का तमाम इलाक़ा भी शामिल है जो लुबनान के
पहाड़ों और मिस्रफ़ात-माइम के दरमियान के पहाड़ी
इलाक़े में आबाद हैं। इस्राईलियों के बढ़ते बढ़ते मैं
ख़ुद ही इन लोगों को उन के सामने से निकाल दूँगा।
लेकिन लाज़िम है कि तू क़ुरआ डाल कर यह पूरा
मुल्क मेरे हुक्म के मुताबिक़ इस्राईलियों में तक़्सीम
करे। 7 उसे नौ बाक़ी क़बीलों और मनस्सी के आधे
क़बीले को विरासत में दे दे।”

यर्दन के मशरिक़ में मुल्क की तक़्सीम

8 रब का ख़ादिम मूसा रूबिन, जद और मनस्सी के
बाक़ी आधे क़बीले को दरया-ए-यर्दन का मशरिक़ी
इलाक़ा दे चुका था। 9–10 यूँ हस्बोन के अमोरी
बादशाह सीहोन के तमाम शहर उन के क़ब्ज़े में
आ गए थे यानी जुनूबी वादी-ए-अर्नोन के किनारे
पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के शहर
से ले कर शिमाल में अम्मोनियों की सरहद तक।
दीबोन और मीदबा के दरमियान का मैदान-ए-मुर्तफ़ा
भी इस में शामिल था 11 और इसी तरह जिलिआद,
जसूरियों और माकातियों का इलाक़ा, हर्मून का
पहाड़ी इलाक़ा और सल्का शहर तक बसन का सारा
इलाक़ा भी।

12 पहले यह सारा इलाक़ा बसन के बादशाह ओज
के क़ब्ज़े में था जिस की हुकूमत के मर्कज़ अस्तारात

और इद्रई थे। रफ़ाइयों के देओक़ामत क़बीले से सिर्फ़ ओज बाक़ी रह गया था। मूसा की राहनुमाई के तहत इस्राईलियों ने उस इलाक़े पर फ़त्ह पा कर तमाम बाशिन्दों को निकाल दिया था। 13 सिर्फ़ जसूरी और माकाती बाक़ी रह गए थे, और यह आज तक इस्राईलियों के दरमियान रहते हैं।

14 सिर्फ़ लावी के क़बीले को कोई ज़मीन न मिली, क्यूँकि उन का मौरूसी हिस्सा जलने वाली वह क़ुर्बानियाँ हैं जो रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए चढ़ाई जाती हैं। रब ने यही कुछ मूसा को बताया था।

रूबिन का क़बाइली इलाक़ा

15 मूसा ने रूबिन के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया। 16 वादी-ए-अर्नोन के किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के शहर से ले कर मीदबा 17 और हस्बोन तक। वहाँ के मैदान-ए-मुर्तफ़ा पर वाक़े तमाम शहर भी रूबिन के सपुर्द किए गए यानी दीबोन, बामात-बाल, बैत-बाल-मऊन, 18 यहज़, क़दीमात, मिफ़ात, 19 क़िर्यताइम, सिब्माह, ज़िरत-उस-सहर जो बहीरा-ए-मुर्दार के मशरिक़ में वाक़े पहाड़ी इलाक़े में है, 20 बैत-फ़ग़ूर, पिसगा के पहाड़ी सिलसिले पर मौजूद आबादियाँ और बैत-यसीमोत। 21 मैदान-ए-मुर्तफ़ा के तमाम शहर रूबिन के क़बीले को दिए गए यानी अमोरियों के बादशाह सीहोन की पूरी बादशाही जिस का दार-उल-हकूमत हस्बोन शहर था। मूसा ने सीहोन को मार डाला था और उस के साथ पाँच मिदियानी रईसों को भी जिन्हें सीहोन ने अपने मुल्क में मुक़र्रर किया था। इन रईसों के नाम इवी, रक़म, सूर, हूर और रबा थे। 22 जिन लोगों को उस वक़्त मारा गया उन में से बलआम बिन बओर भी था जो ग़ैबदान था। 23 रूबिन के क़बीले की मग़रिबी सरहद दरया-ए-यर्दन थी। यही शहर और आबादियाँ रूबिन के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ दी गईं, और वह उस की मीरास ठहरीं।

जद के क़बीले का इलाक़ा

24 मूसा ने जद के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया। 25 याज़ेर का इलाक़ा, जिलिआद के तमाम शहर, अम्मोनियों का आधा हिस्सा रब्बा के क़रीब शहर अरोईर तक 26–27 और हस्बोन के बादशाह सीहोन की बादशाही का बाक़ी शिमाली हिस्सा यानी हस्बोन, रामत-उल-मिस्फ़ाह और बतूनीम के दरमियान का इलाक़ा और महनाइम और दबीर के दरमियान का इलाक़ा। इस के इलावा जद को वादी-ए-यर्दन का वह मशरिक़ी हिस्सा भी मिल गया जो बैत-हारम, बैत-निम्रा, सुक्कात और सफ़ोन पर मुश्तमिल था। यूँ उस की शिमाली सरहद किन्नरत यानी गलील की झील का जुनूबी किनारा था। 28 यही शहर और आबादियाँ जद के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ दी गईं, और वह उस की मीरास ठहरीं।

मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से का इलाक़ा

29 जो इलाक़ा मूसा ने मनस्सी के आधे हिस्से को उस के कुंबों के मुताबिक़ दिया था 30 वह महनाइम से ले कर शिमाल में ओज बादशाह की तमाम बादशाही पर मुश्तमिल था। उस में मुल्क-ए-बसन और वह 60 आबादियाँ शामिल थीं जिन पर याईर ने फ़त्ह पाई थी। 31 जिलिआद का आधा हिस्सा ओज की हुकूमत के दो मराकिज़ अस्तारात और इद्रई समेत मकीर बिन मनस्सी की औलाद को उस के कुंबों के मुताबिक़ दिया गया। 32 मूसा ने इन मौरूसी ज़मीनों की तक़्सीम उस वक़्त की थी जब वह दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू शहर के मुक़ाबिल था।

33 लेकिन लावी को मूसा से कोई मौरूसी ज़मीन नहीं मिली थी, क्यूँकि रब इस्राईल का ख़ुदा उन का मौरूसी हिस्सा है जिस तरह उस ने उन से वादा किया था।

कनआन की तक़्सीम

14 1 इस्राईल के बाक़ी साढ़े नौ क़बीलों को
दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में यानी मुल्क-ए-
कनआन में ज़मीन मिल गई। इस के लिए इलीअज़र
इमाम, यशूअ बिन नून और क़बीलों के आबाई
घरानों के सरबराहों ने 2 क़ुरआ डाल कर मुक़र्रर
किया कि हर क़बीले को कौन कौन सा इलाक़ा मिल
जाए। यूँ वैसा ही हुआ जिस तरह रब ने मूसा को
हुक्म दिया था। 3–4 मूसा अढ़ाई क़बीलों को उन की
मौरूसी ज़मीन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में दे चुका
था, क्यूँकि यूसुफ़ की औलाद के दो क़बीले मनस्सी
और इफ़्राईम वुजूद में आए थे। लेकिन लावियों
को उन के दरमियान ज़मीन न मिली। इस्राईलियों ने
लावियों को ज़मीन न दी बल्कि उन्हें सिर्फ़ रिहाइश के
लिए शहर और रेवड़ों के लिए चरागाहें दीं। 5 यूँ उन्हों
ने ज़मीन को उन ही हिदायात के मुताबिक़ तक़्सीम
किया जो रब ने मूसा को दी थीं।

कालिब हब्रून पाने की गुज़ारिश करता है

6 जिल्जाल में यहूदाह के क़बीले के मर्द यशूअ के
पास आए। यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी का बेटा कालिब भी उन
के साथ था। उस ने यशूअ से कहा, “आप को याद
है कि रब ने मर्द-ए-ख़ुदा मूसा से आप के और मेरे
बारे में क्या कुछ कहा जब हम क़ादिस-बर्नीअ में थे।
7 मैं 40 साल का था जब रब के ख़ादिम मूसा ने मुझे
मुल्क-ए-कनआन का जाइज़ा लेने के लिए क़ादिस-
बर्नीअ से भेज दिया। जब वापस आया तो मैं ने मूसा
को दयानतदारी से सब कुछ बताया जो देखा था।
8 अफ़्सोस कि जो भाई मेरे साथ गए थे उन्हों ने लोगों
को डराया। लेकिन मैं रब अपने ख़ुदा का वफ़ादार
रहा। 9 उस दिन मूसा ने क़सम खा कर मुझ से वादा
किया, ‘जिस ज़मीन पर तेरे पाँओ चले हैं वह हमेशा
तक तेरी और तेरी औलाद की विरासत में रहेगी।
क्यूँकि तू रब मेरे ख़ुदा का वफ़ादार रहा है।’ 10 और
अब ऐसा ही हुआ है जिस तरह रब ने वादा किया
था। उस ने मुझे अब तक ज़िन्दा रहने दिया है। रब
को मूसा से यह बात किए 45 साल गुज़र गए हैं।
उस सारे अर्से में हम रेगिस्तान में घूमते फिरते रहे हैं।
आज मैं 85 साल का हूँ, 11 और अब तक उतना ही
ताक़तवर हूँ जितना कि उस वक़्त था जब मैं जासूस
था। अब तक मेरी बाहर निकलने और जंग करने
की वही क़ुव्वत क़ाइम है। 12 अब मुझे वह पहाड़ी
इलाक़ा दे दें जिस का वादा रब ने उस दिन मुझ से
किया था। आप ने ख़ुद सुना है कि अनाक़ी वहाँ बड़े
क़िलाबन्द शहरों में बसते हैं। लेकिन शायद रब मेरे
साथ हो और मैं उन्हें निकाल दूँ जिस तरह उस ने
फ़रमाया है।”

13 तब यशूअ ने कालिब बिन यफ़ुन्ना को बरकत दे
कर उसे विरासत में हब्रून दे दिया। 14–15 पहले हब्रून
क़िर्यत-अर्बा यानी अर्बा का शहर कहलाता था। अर्बा
अनाक़ियों का सब से बड़ा आदमी था। आज तक
यह शहर कालिब की औलाद की मिलकियत रही
है। वजह यह है कि कालिब रब इस्राईल के ख़ुदा
का वफ़ादार रहा। फिर जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में
अम्न-ओ-अमान क़ाइम हो गया।

यहूदाह की सरहदें

15 1 जब इस्राईलियों ने क़ुरआ डाल कर मुल्क
को तक़्सीम किया तो यहूदाह के क़बीले
को उस के कुंबों के मुताबिक़ कनआन का जुनूबी
हिस्सा मिल गया। इस इलाक़े की सरहद मुल्क-ए-
अदोम और इन्तिहाई जुनूब में सीन का रेगिस्तान था।
2 यहूदाह की जुनूबी सरहद बहीरा-ए-मुर्दार के
जुनूबी सिरे से शुरू हो कर 3 जुनूब की तरफ़ चलती
चलती दर्रा-ए-अक़्रब्बीम पहुँच गई। वहाँ से वह सीन
की तरफ़ जारी हुई और क़ादिस-बर्नीअ के जुनूब में से
आगे निकल कर हस्रोन तक पहुँच गई। हस्रोन से वह
अद्दार की तरफ़ चढ़ गई और फिर क़र्क़ा की तरफ़
मुड़ी। 4 इस के बाद वह अज़्मून से हो कर मिस्र की
सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र तक पहुँच गई जिस के

साथ साथ चलती हुई वह समुन्दर पर ख़त्म हुई। यह यहूदाह की जुनूबी सरहद थी।

5 मशरिक़ में उस की सरहद बहीरा-ए-मुर्दार के साथ
साथ चल कर वहाँ ख़त्म हुई जहाँ दरया-ए-यर्दन
बहीरा-ए-मुर्दार में बहता है।

यहूदाह की शिमाली सरहद यहीं से शुरू हो कर
6 बैत-हुज्लाह की तरफ़ चढ़ गई, फिर बैत-अराबा
के शिमाल में से गुज़र कर रूबिन के बेटे बोहन
के पत्थर तक पहुँच गई। 7 वहाँ से सरहद वादी-ए-
अकूर में उतर गई और फिर दुबारा दबीर की तरफ़
चढ़ गई। दबीर से वह शिमाल यानी जिल्जाल की
तरफ़ जो दर्रा-ए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल है मुड़ गई
(यह दर्रा वादी के जुनूब में है)। यूँ वह चलती चलती
शिमाली सरहद ऐन-शम्स और ऐन-राजिल तक पहुँच
गई। 8 वहाँ से वह वादी-ए-बिन-हिन्नूम में से गुज़रती
हुई यबूसियों के शहर यरूशलम के जुनूब में से आगे
निकल गई और फिर उस पहाड़ पर चढ़ गई जो
वादी-ए-बिन-हिन्नूम के मग़रिब और मैदान-ए-रफ़ाईम
के शिमाली किनारे पर है। 9 वहाँ सरहद मुड़ कर
चश्मा बनाम निफ़्तूह की तरफ़ बढ़ गई और फिर
पहाड़ी इलाक़े इफ़्रोन के शहरों के पास से गुज़र कर
बाला यानी क़िर्यत-यारीम तक पहुँच गई। 10 बाला से
मुड़ कर यहूदाह की यह सरहद मग़रिब में सईर के
पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़ गई और यारीम पहाड़
यानी कसलून के शिमाली दामन के साथ साथ चल
कर बैत-शम्स की तरफ़ उतर कर तिम्नत पहुँच गई।
11 वहाँ से वह अक्रून के शिमाल में से गुज़र गई
और फिर मुड़ कर सिक्करून और बाला पहाड़ की
तरफ़ बढ़ कर यब्निएल पहुँच गई। वहाँ यह शिमाली
सरहद समुन्दर पर ख़त्म हुई।

12 समुन्दर मुल्क-ए-यहूदाह की मग़रिबी सरहद थी।
यही वह इलाक़ा था जो यहूदाह के क़बीले को उस
के ख़ानदानों के मुताबिक़ मिल गया।

हब्रून और दबीर पर फ़त्ह

13 रब के हुक्म के मुताबिक़ यशूअ ने कालिब बिन
यफ़ुन्ना को उस का हिस्सा यहूदाह में दे दिया। वहाँ
उसे हब्रून शहर मिल गया। उस वक़्त उस का नाम
क़िर्यत-अर्बा था (अर्बा अनाक़ का बाप था)। 14 हब्रून
में तीन अनाक़ी बनाम सीसी, अख़ीमान और तल्मी
अपने घरानों समेत रहते थे। कालिब ने तीनों को
हब्रून से निकाल दिया। 15 फिर वह आगे दबीर के
बाशिन्दों से लड़ने चला गया। दबीर का पुराना नाम
क़िर्यत-सिफ़र था। 16 कालिब ने कहा, “जो क़िर्यत-
सिफ़र पर फ़त्ह पा कर क़ब्ज़ा करेगा उस के साथ मैं
अपनी बेटी अक्सा का रिश्ता बांधूँगा।” 17 कालिब
के भाई ग़ुतनीएल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा कर
लिया। चुनाँचे कालिब ने उस के साथ अपनी बेटी
अक्सा की शादी कर दी।

18 जब अक्सा ग़ुतनीएल के हाँ जा रही थी तो उस
ने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत पाने
की दरख़्वास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई।
कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” 19 अक्सा ने जवाब
दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आप
ने मुझे दश्त-ए-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे
चश्मे भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब ने उसे अपनी
मिलकियत में से ऊपर और नीचे वाले चश्मे भी दे
दिए।

यहूदाह के क़बीले के शहर

20 जो मौरूसी ज़मीन यहूदाह के क़बीले को उस
के कुंबों के मुताबिक़ मिली 21 उस में ज़ैल के शहर
शामिल थे। जुनूब में मुल्क-ए-अदोम की सरहद
की तरफ़ यह शहर थे : क़ब्ज़िएल, इदर, यजूर,
22 क़ीना, दीमूना, अदअदा, 23 क़ादिस, हसूर,
इतनान, 24 ज़ीफ़, तलम, बालोत, 25 हसूर-हदत्ता,
क़रियोत-हस्रोन यानी हसूर, 26 अमाम, समा,
मोलादा, 27 हसार-जद्दा, हिश्मोन, बैत-फ़लत,
28 हसार-सूआल, बैर-सबा, बिज़्योतियाह, 29 बाला,

इय्यीम, अज़म, 30 इल्तोलद, कसील, हुर्मा, 31 सिक़्लाज, मदमन्ना, सन्सन्ना, 32 लबाओत, सिल्हीम, ऐन और रिम्मोन। इन शहरों की तादाद 29 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

33 मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में यह शहर थे : इस्ताल, सुरआ, अस्ना, 34 ज़नूह, ऐन-जन्नीम, तफ़्फ़ूअह, ऐनाम, 35 यर्मूत, अदुल्लाम, सोका, अज़ीक़ा, 36 शारैम, अदितैम और जदीरा यानी जदीरतैम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

37 इन के इलावा यह शहर भी थे : ज़नान, हदाशा, मिज्दल-जद, 38 दिलआन, मिस्फ़ाह, युक़्तिएल, 39 लकीस, बुस्क़त, इज्लून, 40 कब्बून, लहमास, कितलीस, 41 जदीरोत, बैत-दजून, नामा और मक़्क़ेदा। इन शहरों की तादाद 16 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

42 इस इलाक़े में यह शहर भी थे : लिब्ना, इतर, असन, 43 यिफ़्ताह, अस्ना, नसीबब, 44 क़ईला, अक्ज़ीब और मरेसा। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

45 इन के इलावा यह शहर भी थे : अक्रून उस के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों और दीहातों समेत, 46 फिर अक्रून से ले कर मग़रिब की तरफ़ अश्दूद तक तमाम क़स्बे और आबादियाँ। 47 अश्दूद ख़ुद भी उस के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों और दीहातों समेत इस में शामिल था और इसी तरह ग़ज़्ज़ा उस के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों और दीहातों समेत यानी तमाम आबादियाँ मिस्र की सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र और समुन्दर के साहिल तक।

48 पहाड़ी इलाक़े के यह शहर यहूदाह के क़बीले के थे : समीर, यत्तीर, सोका, 49 दन्ना, क़िर्यत-सन्ना यानी दबीर, 50 अनाब, इस्तमोह, अनीम, 51 जुशन, हौलून और जिलोह। इन शहरों की तादाद 11 थी, और उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ भी उन के साथ गिनी जाती थीं।

52 इन के इलावा यह शहर भी थे : अराब, दूमा, इशआन, 53 यनूम, बैत-तफ़्फ़ूअह, अफ़ीक़ा, 54 हुम्ता, क़िर्यत-अर्बा यानी हब्रून और सीऊर। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस में गिनी जाती थीं।

55 इन के इलावा यह शहर भी थे : मऊन, कर्मिल, ज़ीफ़, यूत्ता, 56 यज़्रएल, युक़्दिआम, ज़नूह, 57 क़ैन, जिबिआ और तिम्नत। इन शहरों की तादाद 10 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

58 इन के इलावा यह शहर भी थे : हल्हूल, बैत-सूर, जदूर, 59 मारात, बैत-अनोत और इल्तक़ोन। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

60 फिर क़िर्यत-बाल यानी क़िर्यत-यारीम और रब्बा भी यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में शामिल थे। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

61 रेगिस्तान में यह शहर यहूदाह के क़बीले के थे : बैत-अराबा, मिद्दीन, सकाका, 62 निब्सान, नमक का शहर और ऐन-जदी। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी जाती थीं।

63 लेकिन यहूदाह का क़बीला यबूसियों को यरूशलम से निकालने में नाकाम रहा। इस लिए उन की औलाद आज तक यहूदाह के क़बीले के दरमियान रहती है।

इफ़्राईम और मनस्सी की जुनूबी सरहद

16 1 क़ुरआ डालने से यूसुफ़ की औलाद का इलाक़ा मुक़र्रर किया गया। उस की सरहद यरीहू के क़रीब दरया-ए-यर्दन से शुरू हुई, शहर के मशरिक़ में चश्मों के पास से गुज़री और रेगिस्तान

में से चलती चलती बैत-एल के पहाड़ी इलाक़े तक
पहुँची। 2 लूज़ यानी बैत-एल से आगे निकल कर
वह अर्कियों के इलाक़े में अतारात पहुँची। 3 वहाँ
से वह मग़रिब की तरफ़ उतरती उतरती यफ़लीतियों
के इलाक़े में दाख़िल हुई जहाँ वह नशेबी बैत-हौरून
में से गुज़र कर जज़र के पीछे समुन्दर पर ख़त्म हुई।
4 यह उस इलाक़े की जुनूबी सरहद थी जो यूसुफ़
की औलाद इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीलों को
विरासत में दिया गया।

इफ़्राईम का इलाक़ा

5 इफ़्राईम के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़
यह इलाक़ा मिल गया : उस की जुनूबी सरहद
अतारात-अद्दार और बालाई बैत-हौरून से हो कर
6–8 समुन्दर पर ख़त्म हुई। उस की शिमाली सरहद
मग़रिब में समुन्दर से शुरू हुई और क़ाना नदी के
साथ चलती चलती तफ़्फ़ूअह तक पहुँची। वहाँ से
वह शिमाल की तरफ़ मुड़ी और मिक्मताह तक पहुँच
कर दुबारा मशरिक़ की तरफ़ चलने लगी। फिर वह
तानत-सैला से हो कर यानूह पहुँची। मशरिक़ी सरहद
शिमाल में यानूह से शुरू हुई और अतारात से हो कर
दरया-ए-यर्दन के मग़रिबी किनारे तक उतरी और फिर
किनारे के साथ जुनूब की तरफ़ चलती चलती नारा
और इस के बाद यरीहू पहुँची। वहाँ वह दरया-ए-
यर्दन पर ख़त्म हुई। यही इफ़्राईम और उस के कुंबों
की सरहदें थीं।

9 इस के इलावा कुछ शहर और उन के गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियाँ इफ़्राईम के लिए मुक़र्रर की
गईं जो मनस्सी के इलाक़े में थीं। 10 इफ़्राईम के
मर्दों ने जज़र में आबाद कनआनियों को न निकाला।
इस लिए उन की औलाद आज तक वहाँ रहती है,
अलबत्ता उसे बेगार में काम करना पड़ता है।

मनस्सी का इलाक़ा

17 1 यूसुफ़ के पहलौठे मनस्सी की औलाद
को दो इलाक़े मिल गए। दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ में मकीर के घराने को जिलिआद और बसन
दिए गए। मकीर मनस्सी का पहलौठा और जिलिआद
का बाप था, और उस की औलाद माहिर फ़ौजी थी।
2 अब क़ुरआ डालने से दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में
वह इलाक़ा मुक़र्रर किया गया जहाँ मनस्सी के बाक़ी
बेटों की औलाद को आबाद होना था। इन के छः
कुंबे थे जिन के नाम अबीअज़र, ख़लक़, अस्रीएल,
सिकम, हिफ़र और समीदा थे।

3 सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलिआद बिन
मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं थे बल्कि सिर्फ़
बेटियाँ। उन के नाम महलाह, नूआह, हुज्लाह,
मिल्काह और तिर्ज़ा थे। 4 यह ख़वातीन इलीअज़र
इमाम, यशूअ बिन नून और क़ौम के बुज़ुर्गों के पास
आईं और कहने लगीं, “रब ने मूसा को हुक्म दिया
था कि वह हमें भी क़बाइली इलाक़े का कोई हिस्सा
दे।” यशूअ ने रब का हुक्म मान कर न सिर्फ़ मनस्सी
की नरीना औलाद को ज़मीन दी बल्कि उन्हें भी।
5 नतीजे में मनस्सी के क़बीले को दरया-ए-यर्दन के
मग़रिब में ज़मीन के दस हिस्से मिल गए और मशरिक़
में जिलिआद और बसन। 6 मग़रिब में न सिर्फ़ मनस्सी
की नरीना औलाद के ख़ानदानों को ज़मीन मिली
बल्कि बेटियों के ख़ानदानों को भी। इस के बरअक्स
मशरिक़ में जिलिआद की ज़मीन सिर्फ़ नरीना औलाद
में तक़्सीम की गई।

7 मनस्सी के क़बीले के इलाक़े की सरहद आशर से
शुरू हुई और सिकम के मशरिक़ में वाक़े मिक्मताह
से हो कर जुनूब की तरफ़ चलती हुई ऐन-तफ़्फ़ूअह
की आबादी तक पहुँची। 8 तफ़्फ़ूअह के गिर्द-ओ-
नवाह की ज़मीन इफ़्राईम की मिलकियत थी, लेकिन
मनस्सी की सरहद पर के यह शहर मनस्सी की अपनी
मिलकियत थे। 9 वहाँ से सरहद क़ाना नदी के जुनूबी
किनारे तक उतरी। फिर नदी के साथ चलती चलती
वह समुन्दर पर ख़त्म हुई। नदी के जुनूबी किनारे पर
कुछ शहर इफ़्राईम की मिलकियत थे अगरचे वह
मनस्सी के इलाक़े में थे। 10 लेकिन मज्मूई तौर पर
मनस्सी का क़बाइली इलाक़ा क़ाना नदी के शिमाल

में था और इफ़्राईम का इलाक़ा उस के जुनूब में। दोनों क़बीलों का इलाक़ा मग़रिब में समुन्दर पर ख़त्म हुआ। मनस्सी के इलाक़े के शिमाल में आशर का क़बाइली इलाक़ा था और मशरिक़ में इश्कार का।

11 आशर और इश्कार के इलाक़ों के दर्ज-ए-
ज़ैल शहर मनस्सी की मिलकियत थे : बैत-शान,
इब्लीआम, दोर यानी नाफ़त-दोर, ऐन-दोर, तानक
और मजिद्दो उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों
समेत। 12 लेकिन मनस्सी का क़बीला वहाँ के
कनआनियों को निकाल न सका बल्कि वह वहाँ
बसते रहे। 13 बाद में भी जब इस्राईल की ताक़त बढ़
गई तो कनआनियों को निकाला न गया बल्कि उन्हें
बेगार में काम करना पड़ा।

इफ़्राईम और मनस्सी मज़ीद ज़मीन का तक़ाज़ा करते हैं

14 यूसुफ़ के क़बीले इफ़्राईम और मनस्सी दरया-ए-
यर्दन के मग़रिब में ज़मीन पाने के बाद यशूअ के पास
आए और कहने लगे, “आप ने हमारे लिए क़ुरआ
डाल कर ज़मीन का सिर्फ़ एक हिस्सा क्यूँ मुक़र्रर
किया? हम तो बहुत ज़्यादा लोग हैं, क्यूँकि रब ने
हमें बरकत दे कर बड़ी क़ौम बनाया है।”

15 यशूअ ने जवाब दिया, “अगर आप इतने ज़्यादा
हैं और आप के लिए इफ़्राईम का पहाड़ी इलाक़ा
काफ़ी नहीं है तो फिर फ़रिज़्ज़ियों और रफ़ाइयों के
पहाड़ी जंगलों में जाएँ और उन्हें काट कर काश्त के
क़ाबिल बना लें।”

16 यूसुफ़ के क़बीलों ने कहा, “पहाड़ी इलाक़ा
हमारे लिए काफ़ी नहीं है, और मैदानी इलाक़े में
आबाद कनआनियों के पास लोहे के रथ हैं, उन
के पास भी जो वादी-ए-यज़्रएल में हैं और उन के
पास भी जो बैत-शान और उस के गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियों में रहते हैं।”

17 लेकिन यशूअ ने जवाब में कहा, “आप इतनी
बड़ी और ताक़तवर क़ौम हैं कि आप का इलाक़ा
एक ही हिस्से पर महदूद नहीं रहेगा 18 बल्कि जंगल
का पहाड़ी इलाक़ा भी आप की मिलकियत में
आएगा। उस के जंगलों को काट कर काश्त के
क़ाबिल बना लें तो यह तमाम इलाक़ा आप ही
का होगा। आप बाक़ी इलाक़े पर भी क़ब्ज़ा करके
कनआनियों को निकाल देंगे अगरचे वह ताक़तवर
हैं और उन के पास लोहे के रथ हैं।”

बाक़ी सात क़बीलों को ज़मीन मिलती है

18 1 कनआन पर ग़ालिब आने के बाद
इस्राईल की पूरी जमाअत सैला शहर में
जमा हुई। वहाँ उन्हों ने मुलाक़ात का ख़ैमा खड़ा
किया।

2 अब तक सात क़बीलों को ज़मीन नहीं मिली थी।
3 यशूअ ने इस्राईलियों को समझा कर कहा, “आप
कितनी देर तक सुस्त रहेंगे? आप कब तक उस
मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेंगे जो रब आप के बापदादा
के ख़ुदा ने आप को दे दिया है? 4 अब हर क़बीले
के तीन तीन आदमियों को चुन लें। उन्हें मैं मुल्क
का दौरा करने के लिए भेज दूँगा ताकि वह तमाम
क़बाइली इलाक़ों की फ़हरिस्त तय्यार करें। इस के
बाद वह मेरे पास वापस आ कर 5 मुल्क को सात
इलाक़ों में तक़्सीम करें। लेकिन ध्यान रखें कि जुनूब
में यहूदाह का इलाक़ा और शिमाल में इफ़्राईम और
मनस्सी का इलाक़ा है। उन की सरहदें मत छेड़ना!
6 वह आदमी लिख लें कि सात नए क़बाइली इलाक़ों
की सरहदें कहाँ कहाँ तक हैं और फिर इन की
फ़हरिस्तें पेश करें। फिर मैं रब आप के ख़ुदा के हुज़ूर
मुक़द्दस क़ुरआ डाल कर हर एक की ज़मीन मुक़र्रर
करूँगा। 7 याद रहे कि लावियों को कोई इलाक़ा नहीं
मिलना है। उन का हिस्सा यह है कि वह रब के इमाम
हैं। और जद, रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले
को भी मज़ीद कुछ नहीं मिलना है, क्यूँकि उन्हें रब
के ख़ादिम मूसा से दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में उन
का हिस्सा मिल चुका है।”

8 तब वह आदमी रवाना होने के लिए तय्यार हुए
जिन्हें मुल्क का दौरा करने के लिए चुना गया था।

यशूअ ने उन्हें हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़र
कर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बनाएँ। जब फ़हरिस्त
मुकम्मल हो जाए तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर
मैं सैला में रब के हुज़ूर आप के लिए क़ुरआ डाल
दूँगा।” 9 आदमी चले गए और पूरे मुल्क में से गुज़र
कर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बना ली। उन्हों ने
मुल्क को सात हिस्सों में तक़्सीम करके तमाम
तफ़्सीलात किताब में दर्ज कीं और यह किताब सैला
की ख़ैमागाह में यशूअ को दे दी। 10 फिर यशूअ ने
रब के हुज़ूर क़ुरआ डाल कर यह इलाक़े बाक़ी सात
क़बीलों और उन के कुंबों में तक़्सीम कर दिए।

बिनयमीन का इलाक़ा

11 जब क़ुरआ डाला गया तो बिनयमीन के क़बीले
और उस के कुंबों को पहला हिस्सा मिल गया।
उस की ज़मीन यहूदाह और यूसुफ़ के क़बीलों के
दरमियान थी। 12 उस की शिमाली सरहद दरया-ए-
यर्दन से शुरू हुई और यरीहू के शिमाल में पहाड़ी
ढलान पर चढ़ कर पहाड़ी इलाक़े में से मग़रिब की
तरफ़ गुज़री। बैत-आवन के बयाबान को पहुँचने पर
13 वह लूज़ यानी बैत-एल की तरफ़ बढ़ कर शहर
के जुनूब में पहाड़ी ढलान पर चलती चलती आगे
निकल गई। वहाँ से वह अतारात-अद्दार और उस
पहाड़ी तक पहुँची जो नशेबी बैत-हौरून के जुनूब
में है। 14 फिर वह जुनूब की तरफ़ मुड़ कर मग़रिबी
सरहद के तौर पर क़िर्यत-बाल यानी क़िर्यत-यारीम
के पास आई जो यहूदाह के क़बीले की मिलकियत
थी। 15 बिनयमीन की जुनूबी सरहद क़िर्यत-यारीम के
मग़रिबी किनारे से शुरू हो कर निफ़्तूह चश्मा तक
पहुँची। 16 फिर वह उस पहाड़ के दामन पर उतर आई
जो वादी-ए-बिन-हिन्नूम के मग़रिब में और मैदान-ए-
रफ़ाईम के शिमाल में वाक़े है। इस के बाद सरहद
यबूसियों के शहर के जुनूब में से गुज़री और यूँ वादी-
ए-हिन्नूम को पार करके ऐन-राजिल के पास आई।
17 फिर वह शिमाल की तरफ़ मुड़ कर ऐन-शम्स के
पास से गुज़री और दर्रा-ए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल
शहर जलीलोत तक पहुँच कर रूबिन के बेटे बोहन
के पत्थर के पास उतर आई। 18 वहाँ से वह उस
ढलान के शिमाली रुख़ पर से गुज़री जो वादी-ए-यर्दन
के मग़रिबी किनारे पर है। फिर वह वादी में उतर कर
19 बैत-हुज्लाह की शिमाली पहाड़ी ढलान से गुज़री
और बहीरा-ए-मुर्दार के शिमाली किनारे पर ख़त्म हुई,
वहाँ जहाँ दरया-ए-यर्दन उस में बहता है। यह थी
बिनयमीन की जुनूबी सरहद। 20 उस की मशरिक़ी
सरहद दरया-ए-यर्दन थी। यही वह इलाक़ा था जो
बिनयमीन के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़
दिया गया।

21 ज़ैल के शहर इस इलाक़े में शामिल थे : यरीहू,
बैत-हुज्लाह, इमक़-क़सीस, 22 बैत-अराबा, समरैम,
बैत-एल, 23 अव्वीम, फ़ारा, उफ़्रा, 24 कफ़र-उल-
अम्मोनी, उफ़्नी और जिबा। यह कुल 12 शहर थे।
हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के
साथ गिनी जाती थीं। 25 इन के इलावा यह शहर
भी थे : जिबऊन, रामा, बैरोत, 26 मिस्फ़ाह, कफ़ीरा,
मौज़ा, 27 रक़म, इर्फ़एल, तराला, 28 ज़िला, अलिफ़,
यबूसियों का शहर यरूशलम, जिबिआ और क़िर्यत-
यारीम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के
गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं। यह तमाम शहर बिनयमीन और उस के
कुंबों की मिलकियत थे।

शमाऊन का इलाक़ा

19 1 जब क़ुरआ डाला गया तो शमाऊन के
क़बीले और उस के कुंबों को दूसरा हिस्सा
मिल गया। उस की ज़मीन यहूदाह के क़बीले के
इलाक़े के दरमियान थी। 2 उसे यह शहर मिल
गए : बैर-सबा (सबा), मोलादा, 3 हसार-सूआल,
बाला, अज़्म, 4 इल्तोलद, बतूल, हुर्मा, 5 सिक़्लाज,
बैत-मर्कबोत, हसार-सूसा, 6 बैत-लबाओत और
सारूहन। इन शहरों की तादाद 13 थी। हर शहर
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं। 7 इन के इलावा यह चार शहर भी शमाऊन

के थे : ऐन, रिम्मोन, इतर और असन। हर शहर
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ उस के साथ गिनी
जाती थीं। 8 इन शहरों के गिर्द-ओ-नवाह की तमाम
आबादियाँ बालत-बैर यानी नजब के रामा तक उन
के साथ गिनी जाती थीं। यह थी शमाऊन और उस के
कुंबों की मिलकियत। 9 यह जगहें इस लिए यहूदाह
के क़बीले के इलाक़े से ली गईं कि यहूदाह का
इलाक़ा उस के लिए बहुत ज़्यादा था। यही वजह
है कि शमाऊन का इलाक़ा यहूदाह के बीच में है।

ज़बूलून का इलाक़ा

10–12 जब क़ुरआ डाला गया तो ज़बूलून के क़बीले
और उस के कुंबों को तीसरा हिस्सा मिल गया। उस
की जुनूबी सरहद युक़्निआम की नदी से शुरू हुई और
फिर मशरिक़ की तरफ़ दबासत, मरअला और सारीद
से हो कर किस्लोत-तबूर के इलाक़े तक पहुँची।
इस के बाद वह मुड़ कर मशरिक़ी सरहद के तौर
पर दाबरत के पास आई और चढ़ती चढ़ती यफ़ीअ
पहुँची। 13 वहाँ से वह मज़ीद मशरिक़ की तरफ़
बढ़ती हुई जात-हिफ़र, एत-क़ाज़ीन और रिम्मोन से
हो कर नेआ के पास आई। 14 ज़बूलून की शिमाली
और मग़रिबी सरहद हन्नातोन में से गुज़रती गुज़रती
वादी-ए-इफ़्ताह-एल पर ख़त्म हुई। 15 बारह शहर उन
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत ज़बूलून की
मिलकियत में आए जिन में क़त्तात, नहलाल, सिम्रोन,
इदाला और बैत-लहम शामिल थे। 16 ज़बूलून के
क़बीले को यही कुछ उस के कुंबों के मुताबिक़ मिल
गया।

इश्कार का इलाक़ा

17 जब क़ुरआ डाला गया तो इश्कार के क़बीले
और उस के कुंबों को चौथा हिस्सा मिल गया। 18 उस
का इलाक़ा यज़्रएल से ले कर शिमाल की तरफ़
फैल गया। यह शहर उस में शामिल थे : कसूलोत,
शूनीम, 19 हफ़ारैम, शियून, अनाख़रत, 20 रब्बीत,
क़िसियोन, इबज़, 21 रैमत, ऐन-जन्नीम, ऐन-हद्दा और
बैत-फ़स्सीस। 22 शिमाल में यह सरहद तबूर पहाड़
से शुरू हुई और शख़सूमा और बैत-शम्स से हो
कर दरया-ए-यर्दन तक उतर आई। 16 शहर उन
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत इश्कार की
मिलकियत में आए। 23 उसे यह पूरा इलाक़ा उस के
कुंबों के मुताबिक़ मिल गया।

आशर का इलाक़ा

24 जब क़ुरआ डाला गया तो आशर के क़बीले
और उस के कुंबों को पाँचवाँ हिस्सा मिल गया।
25 उस के इलाक़े में यह शहर शामिल थे : ख़िल्क़त,
हली, बतन, अक्शाफ़, 26 अलम्मलिक, अमआद
और मिसाल। उस की सरहद समुन्दर के साथ साथ
चलती हुई कर्मिल के पहाड़ी सिलसिले के दामन में से
गुज़री और उतरती उतरती सैहूर-लिब्नात तक पहुँची।
27 वहाँ वह मशरिक़ में बैत-दजून की तरफ़ मुड़ कर
ज़बूलून के इलाक़े तक पहुँची और उस की मग़रिबी
सरहद के साथ चलती चलती शिमाल में वादी-ए-
इफ़्ताह-एल तक पहुँची। आगे बढ़ती हुई वह बैत-
इमक़ और नईएल से हो कर शिमाल की तरफ़ मुड़ी
जहाँ काबूल था। 28 फिर वह इब्रून, रहोब, हम्मून
और क़ाना से हो कर बड़े शहर सैदा तक पहुँची।
29 इस के बाद आशर की सरहद रामा की तरफ़ मुड़
कर फ़सीलदार शहर सूर के पास आई। वहाँ वह हूसा
की तरफ़ मुड़ी और चलती चलती अक्ज़ीब के क़रीब
समुन्दर पर ख़त्म हुई। 30 22 शहर उन के गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियों समेत आशर की मिलकियत में
आए। इन में उम्मा, अफ़ीक़ और रहोब शामिल थे।
31 आशर को उस के कुंबों के मुताबिक़ यही कुछ
मिला।

नफ़्ताली का इलाक़ा

32 जब क़ुरआ डाला गया तो नफ़्ताली के क़बीले
और उस के कुंबों को छटा हिस्सा मिल गया।
33–34 जुनूब में उस की सरहद दरया-ए-यर्दन पर
लक़्कूम से शुरू हुई और मग़रिब की तरफ़ चलती

चलती यब्निएल, अदामी-नक़ब, ऐलोन-ज़ाननीम और हलफ़ से हो कर अज़्नूत-तबूर तक पहुँची। वहाँ से वह मग़रिबी सरहद की हैसियत से हुक़्क़ोक़ के पास आई। नफ़्ताली की जुनूबी सरहद ज़बूलून की शिमाली सरहद और मग़रिब में आशर की मशरिक़ी सरहद थी। दरया-ए-यर्दन और यहूदाह [r]उस की मशरिक़ी सरहद थी। 35 ज़ैल के फ़सीलदार शहर नफ़्ताली की मिलकियत में आए : सद्दीम, सैर, हम्मत, रक़्क़त, किन्नरत, 36 अदामा, रामा, हसूर, 37 क़ादिस, इद्रई, ऐन-हसूर, 38 इरून, मिज्दल-एल, हुरीम, बैत-अनात और बैत-शम्स। ऐसे 19 शहर थे। हर शहर के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ भी उस के साथ गिनी जाती थीं। 39 नफ़्ताली को यही कुछ उस के कुंबों के मुताबिक़ मिला।

दान का इलाक़ा

40 जब क़ुरआ डाला गया तो दान के क़बीले और उस के कुंबों को सातवाँ हिस्सा मिला। 41 उस के इलाक़े में यह शहर शामिल थे : सुरआ, इस्ताल, ईर-शम्स, 42 शालब्बीन, अय्यालोन, इत्ला, 43 ऐलोन, तिम्नत, अक्रून, 44 इल्तक़िह, जिब्बतून, बालात, 45 यहूद, बनी-बरक़, जात-रिम्मोन, 46 मे-यर्क़ून और रक़्क़ून उस इलाक़े समेत जो याफ़ा के मुक़ाबिल है। 47 अफ़्सोस, दान का क़बीला अपने इस इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब न हुआ, इस लिए उस के मर्दों ने लशम शहर पर हम्ला करके उस पर फ़त्ह पाई और उस के बाशिन्दों को तलवार से मार डाला। फिर वह ख़ुद वहाँ आबाद हुए। उस वक़्त लशम शहर का नाम दान में तब्दील हुआ। (दान उन के क़बीले का बाप था।) 48 लेकिन यशूअ के ज़माने में दान के क़बीले को उस के कुंबों के मुताबिक़ मज़कूरा तमाम शहर और उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ मिल गईं।

यशूअ को भी ज़मीन मिलती है

49 पूरे मुल्क को तक़्सीम करने के बाद इस्राईलियों ने यशूअ बिन नून को भी अपने दरमियान कुछ मौरूसी ज़मीन दे दी। 50 रब के हुक्म पर उन्हों ने उसे इफ़्राईम का शहर तिम्नत-सिरह दे दिया। यशूअ ने ख़ुद इस की दरख़्वास्त की थी। वहाँ जा कर उस ने शहर को अज़ सर-ए-नौ तामीर किया और उस में आबाद हुआ।

51 ग़रज़ यह वह तमाम ज़मीनें हैं जो इलीअज़र इमाम, यशूअ बिन नून और क़बीलों के आबाई घरानों के सरबराहों ने सैला में मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर क़ुरआ डाल कर तक़्सीम की थीं। यूँ तक़्सीम करने का यह काम मुकम्मल हुआ।

पनाह के छः शहर

20 1 रब ने यशूअ से कहा, 2 “इस्राईलियों को हुक्म दे कि उन हिदायात के मुताबिक़ पनाह के शहर चुन लो जिन्हें मैं तुम्हें मूसा की मारिफ़त दे चुका हूँ। 3 इन शहरों में वह लोग फ़रार हो सकते हैं जिन से कोई इत्तिफ़ाक़न यानी ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ हो। यह उन्हें मरे हुए शख़्स के उन रिश्तेदारों से पनाह देंगे जो बदला लेना चाहेंगे। 4 लाज़िम है कि ऐसा शख़्स पनाह के शहर के पास पहुँचने पर शहर के दरवाज़े के पास बैठे बुज़ुर्गों को अपना मुआमला पेश करे। उस की बात सुन कर बुज़ुर्ग उसे अपने शहर में दाख़िल होने की इजाज़त दें और उसे अपने दरमियान रहने के लिए जगह दे दें। 5 अब अगर बदला लेने वाला उस के पीछे पड़ कर वहाँ पहुँचे तो बुज़ुर्ग मुल्ज़िम को उस के हाथ में न दें, क्यूँकि यह मौत ग़ैरइरादी तौर पर और नफ़रत रखे बग़ैर हुई है। 6 वह उस वक़्त तक शहर में रहे जब तक मक़ामी अदालत मुआमले का फ़ैसला न कर दे। अगर अदालत उसे बेगुनाह क़रार दे तो वह

---

[r]यहाँ यहूदाह का मतलब मुल्क-ए-बसन हो सकता है जो मनस्सी के इलाक़े में था लेकिन जिस पर यहूदाह के क़बीले के मर्द याईर ने फ़त्ह पाई थी।

उस वक़्त के इमाम-ए-आज़म की मौत तक उस शहर में रहे। इस के बाद उसे अपने उस शहर और घर को वापस जाने की इजाज़त है जिस से वह फ़रार हो कर आया है।”

7 इस्राईलियों ने पनाह के यह शहर चुन लिए : नफ़्ताली के पहाड़ी इलाक़े में गलील का क़ादिस, इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में सिकम और यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में क़िर्यत-अर्बा यानी हब्रून। 8 दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में उन्हों ने बसर को चुन लिया जो यरीहू से काफ़ी दूर मैदान-ए-मुर्तफ़ा में है और रूबिन के क़बीले की मिलकियत है। मुल्क-ए-जिलिआद में रामात जो जद के क़बीले का है और बसन में जौलान जो मनस्सी के क़बीले का है चुना गया।

9 यह शहर तमाम इस्राईलियों और इस्राईल में रहने वाले अजनबियों के लिए मुक़र्रर किए गए। जिस से भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ उसे इन में पनाह लेने की इजाज़त थी। इन में वह उस वक़्त तक बदला लेने वालों से महफ़ूज़ रहता था जब तक मक़ामी अदालत फ़ैसला नहीं कर देती थी।

लावियों के शहर और चरागाहें

21 1 फिर लावी के क़बीले के आबाई घरानों के सरबराह इलीअज़र इमाम, यशूअ बिन नून और इस्राईल के बाक़ी क़बीलों के आबाई घरानों के सरबराहों के पास आए 2 जो उस वक़्त सैला में जमा थे। लावियों ने कहा, “रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था कि हमें बसने के लिए शहर और रेवड़ों को चराने के लिए चरागाहें दी जाएँ।” 3 चुनाँचे इस्राईलियों ने रब की यह बात मान कर अपने इलाक़ों में से शहर और चरागाहें अलग करके लावियों को दे दीं।

4 क़ुरआ डाला गया तो लावी के घराने क़िहात को उस के कुंबों के मुताबिक़ पहला हिस्सा मिल गया। पहले हारून के कुंबे को यहूदाह, शमाऊन और बिनयमीन के क़बीलों के 13 शहर दिए गए। 5 बाक़ी क़िहातियों को दान, इफ़्राईम और मग़रिबी मनस्सी के क़बीलों के 10 शहर मिल गए।

6 जैर्सोन के घराने को इश्कार, आशर, नफ़्ताली और मनस्सी के क़बीलों के 13 शहर दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाक़ा था जो दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में मुल्क-ए-बसन में था।

7 मिरारी के घराने को उस के कुंबों के मुताबिक़ रूबिन, जद और ज़बूलून के क़बीलों के 12 शहर मिल गए।

8 यूँ इस्राईलियों ने क़ुरआ डाल कर लावियों को मज़कूरा शहर और उन के गिर्द-ओ-नवाह की चरागाहें दे दीं। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था।

क़िहात के घराने के शहर

9–10 क़ुरआ डालते वक़्त लावी के घराने क़िहात में से हारून के कुंबे को पहला हिस्सा मिल गया। उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों के यह शहर दिए गए : 11 पहला शहर अनाक़ियों के बाप का शहर क़िर्यत-अर्बा था जो यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में है और जिस का मौजूदा नाम हब्रून है। उस की चरागाहें भी दी गईं, 12 लेकिन हब्रून के इर्दगिर्द की आबादियाँ और खेत कालिब बिन यफ़ुन्ना की मिलकियत रहे। 13 हारून के कुंबे का यह शहर पनाह का शहर भी था जिस में हर वह शख़्स पनाह ले सकता था जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था। इस के इलावा हारून के कुंबे को लिब्ना, 14 यत्तीर, इस्तिमूअ, 15 हौलून, दबीर, 16 ऐन, यूत्ता और बैत-शम्स के शहर भी मिल गए। उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों के कुल 9 शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए। 17–18 इन के इलावा बिनयमीन के क़बीले के चार शहर उस की मिलकियत में आए यानी जिबऊन, जिबा, अनतोत और अल्मोन। 19 ग़रज़ हारून के कुंबे को 13 शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए। 20 लावी के क़बीले के घराने क़िहात के बाक़ी कुंबों को क़ुरआ डालते

वक़्त इफ़्राईम के क़बीले के शहर मिल गए। 21 इन में
इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े का शहर सिकम शामिल
था जिस में हर वह शख़्स पनाह ले सकता था जिस
से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर
जज़र, 22 क़िब्ज़ैम और बैत-हौरून। इन चार शहरों
की चरागाहें भी मिल गईं। 23–24 दान के क़बीले ने
भी उन्हें चार शहर उन की चरागाहों समेत दिए यानी
इल्तक़िह, जिब्बतून, अय्यालोन और जात-रिम्मोन।
25 मनस्सी के मग़रिबी हिस्से से उन्हें दो शहर तानक
और जात-रिम्मोन उन की चरागाहों समेत मिल गए।
26 ग़रज़ क़िहात के बाक़ी कुंबों को कुल 10 शहर
उन की चरागाहों समेत मिले।

जैर्सोन के घराने के शहर

27 लावी के क़बीले के घराने जैर्सोन को मनस्सी के
मशरिक़ी हिस्से के दो शहर उन की चरागाहों समेत
दिए गए : मुल्क-ए-बसन में जौलान जिस में हर वह
शख़्स पनाह ले सकता था जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर
पर हलाक हुआ था, और बइस्तराह। 28–29 इश्कार
के क़बीले ने उसे चार शहर उन की चरागाहों समेत
दिए : क़िसियोन, दाबरत, यर्मूत और ऐन-जन्नीम।
30–31 इसी तरह उसे आशर के क़बीले के भी चार
शहर उन की चरागाहों समेत दिए गए : मिसाल,
अब्दोन, ख़िल्क़त और रहोब। 32 नफ़्ताली के क़बीले
ने तीन शहर उन की चरागाहों समेत दिए : गलील का
क़ादिस जिस में हर वह शख़्स पनाह ले सकता था
जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर
हम्मात-दोर और क़र्तान। 33 ग़रज़ जैर्सोन के घराने को
13 शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए।

मिरारी के घराने के शहर

34–35 अब रह गया लावी के क़बीले का घराना
मिरारी। उसे ज़बूलून के क़बीले के चार शहर उन की
चरागाहों समेत मिल गए : युक़्निआम, क़र्ता, दिम्ना
और नहलाल। 36–37 इसी तरह उसे रूबिन के क़बीले
के भी चार शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए :
बसर, यहज़, क़दीमात और मिफ़ात। 38–39 जद के
क़बीले ने उसे चार शहर उन की चरागाहों समेत दिए
: मुल्क-ए-जिलिआद का रामात जिस में हर वह शख़्स
पनाह ले सकता था जिस से कोई ग़ैरइरादी तौर पर
हलाक हुआ था, फिर महनाइम, हस्बोन और याज़ेर।
40 ग़रज़ मिरारी के घराने को कुल 12 शहर उन की
चरागाहों समेत मिल गए।

41 इस्राईल के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में जो लावियों के
शहर उन की चरागाहों समेत थे उन की कुल तादाद
48 थी। 42 हर शहर के इर्दगिर्द चरागाहें थीं।

अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया

43 यूँ रब ने इस्राईलियों को वह पूरा मुल्क दे दिया
जिस का वादा उस ने उन के बापदादा से क़सम खा
कर किया था। वह उस पर क़ब्ज़ा करके उस में
रहने लगे। 44 और रब ने चारों तरफ़ अम्न-ओ-अमान
मुहय्या किया जिस तरह उस ने उन के बापदादा से
क़सम खा कर वादा किया था। उसी की मदद से
इस्राईली तमाम दुश्मनों पर ग़ालिब आए थे। 45 जो
अच्छे वादे रब ने इस्राईल से किए थे उन में से एक
भी नामुकम्मल न रहा बल्कि सब के सब पूरे हो गए।

मशरिक़ी क़बीलों को घर वापस जाने की इजाज़त

22 1 फिर यशूअ ने रूबिन, जद और मनस्सी के
आधे क़बीले के मर्दों को अपने पास बुला
कर 2 कहा, “जो भी हुक्म रब के ख़ादिम मूसा ने आप
को दिया था उसे आप ने पूरा किया। और आप ने मेरी
हर बात मानी है। 3 आप ने काफ़ी अर्से से आज तक
अपने भाइयों को तर्क नहीं किया बल्कि बिलकुल
वही कुछ किया है जो रब की मर्ज़ी थी। 4 अब रब
आप के ख़ुदा ने आप के भाइयों को मौऊदा मुल्क दे
दिया है, और वह सलामती के साथ उस में रह रहे हैं।
इस लिए अब वक़्त आ गया है कि आप अपने घर
वापस चले जाएँ, उस मुल्क में जो रब के ख़ादिम मूसा
ने आप को दरया-ए-यर्दन के पार दे दिया है। 5 लेकिन
ख़बरदार, एहतियात से उन हिदायात पर चलते रहें

जो रब के ख़ादिम मूसा ने आप को दे दीं। रब अपने ख़ुदा से प्यार करें, उस की तमाम राहों पर चलें, उस के अह्काम मानें, उस के साथ लिपटे रहें, और पूरे दिल-ओ-जान से उस की ख़िदमत करें।” 6 यह कह कर यशूअ ने उन्हें बरकत दे कर रुख़्सत कर दिया, और वह अपने घर चले गए।

7 मनस्सी के आधे क़बीले को मूसा से मुल्क-ए-बसन में ज़मीन मिल गई थी। दूसरे हिस्से को यशूअ से ज़मीन मिल गई थी, यानी दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में जहाँ बाक़ी क़बीले आबाद हुए थे। मनस्सी के मर्दों को रुख़्सत करते वक़्त यशूअ ने उन्हें बरकत दे कर 8 कहा, “आप बड़ी दौलत के साथ अपने घर लौट रहे हैं। आप को बड़े रेवड़, सोना, चाँदी, लोहा और बहुत से कपड़े मिल गए हैं। जब आप अपने घर पहुँचेंगे तो माल-ए-ग़नीमत उन के साथ बाँटें जो घर में रह गए हैं।”

9 फिर रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के मर्द बाक़ी इस्राईलियों को सैला में छोड़ कर मुल्क-ए-जिलिआद की तरफ़ रवाना हुए जो दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में है। वहाँ उन के अपने इलाक़े थे जिन में उन के क़बीले रब के उस हुक्म के मुताबिक़ आबाद हुए थे जो उस ने मूसा की मारिफ़त दिया था।

मशरिक़ी क़बीले क़ुर्बानगाह बना लेते हैं

10 यह मर्द चलते चलते दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में एक जगह पहुँचे जिस का नाम गलीलोत था। वहाँ यानी मुल्क-ए-कनआन में ही उन्हों ने एक बड़ी और शानदार क़ुर्बानगाह बनाई। 11 इस्राईलियों को ख़बर दी गई, “रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले ने कनआन की सरहद पर गलीलोत में क़ुर्बानगाह बना ली है। यह क़ुर्बानगाह दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में यानी हमारे ही इलाक़े में है!”

12 तब इस्राईल की पूरी जमाअत मशरिक़ी क़बीलों से लड़ने के लिए सैला में जमा हुई। 13 लेकिन पहले उन्हों ने इलीअज़र इमाम के बेटे फ़ीन्हास को मुल्क-ए-जिलिआद को भेजा जहाँ रूबिन, जद और मनस्सी का आधा क़बीला आबाद थे। 14 उस के साथ 10 आदमी यानी हर मग़रिबी क़बीले का एक नुमाइन्दा था। हर एक अपने आबाई घराने और कुंबे का सरबराह था। 15 जिलिआद में पहुँच कर उन्हों ने मशरिक़ी क़बीलों से बात की। 16 “रब की पूरी जमाअत आप से पूछती है कि आप इस्राईल के ख़ुदा से बेवफ़ा क्यूँ हो गए हैं? आप ने रब से अपना मुँह फेर कर यह क़ुर्बानगाह क्यूँ बनाई है? इस से आप ने रब से सरकशी की है। 17 क्या यह काफ़ी नहीं था कि हम से फ़ग़ूर के बुत की पूजा करने का गुनाह सरज़द हुआ? हम तो आज तक पूरे तौर पर उस गुनाह से पाक-साफ़ नहीं हुए गो उस वक़्त रब की जमाअत को वबा की सूरत में सज़ा मिल गई थी। 18 तो फिर आप क्या कर रहे हैं? आप दुबारा रब से अपना मुँह फेर कर दूर हो रहे हैं। देखें, अगर आप आज रब से सरकशी करें तो कल वह इस्राईल की पूरी जमाअत के साथ नाराज़ होगा। 19 अगर आप समझते हैं कि आप का मुल्क नापाक है और आप इस लिए उस में रब की ख़िदमत नहीं कर सकते तो हमारे पास रब के मुल्क में आएँ जहाँ रब की सुकूनतगाह है, और हमारी ज़मीनों में शरीक हो जाएँ। लेकिन रब से या हम से सरकशी मत करना। रब हमारे ख़ुदा की क़ुर्बानगाह के इलावा अपने लिए कोई और क़ुर्बानगाह न बनाएँ! 20 क्या इस्राईल की पूरी जमाअत पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल न हुआ जब अकन बिन ज़ारह ने माल-ए-ग़नीमत में से कुछ चोरी किया जो रब के लिए मख़्सूस था? उस के गुनाह की सज़ा सिर्फ़ उस तक ही मह्दूद न रही बल्कि और भी हलाक हुए।”

21 रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के मर्दों ने इस्राईली कुंबों के सरबराहों को जवाब दिया, 22 “रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा, हाँ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा हक़ीक़त जानता है, और इस्राईल भी यह बात जान ले! न हम सरकश हुए हैं, न रब से बेवफ़ा। अगर हम झूट बोलें तो आज ही हमें मार डालें! 23 हम ने यह क़ुर्बानगाह इस लिए नहीं

बनाई कि रब से दूर हो जाएँ। हम उस पर कोई भी क़ुर्बानी चढ़ाना नहीं चाहते, न भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, न ग़ल्ला की नज़रें और न ही सलामती की क़ुर्बानियाँ। अगर हम झूट बोलें तो रब ख़ुद हमारी अदालत करे। 24 हक़ीक़त में हम ने यह क़ुर्बानगाह इस लिए तामीर की कि हम डरते हैं कि मुस्तक़बिल में किसी दिन आप की औलाद हमारी औलाद से कहे, 'आप का रब इस्राईल के ख़ुदा के साथ क्या वास्ता है? 25 आख़िर रब ने हमारे और आप के दरमियान दरया-ए-यर्दन की सरहद मुक़र्रर की है। चुनाँचे आप को रब की इबादत करने का कोई हक़ नहीं!' ऐसा करने से आप की औलाद हमारी औलाद को रब की ख़िदमत करने से रोकेगी। 26 यही वजह है कि हम ने यह क़ुर्बानगाह बनाई, भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ या ज़बह की कोई और क़ुर्बानी चढ़ाने के लिए नहीं 27 बल्कि आप को और आने वाली नस्लों को इस बात की याद दिलाने के लिए कि हमें भी रब के ख़ैमे में भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की क़ुर्बानियाँ और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाने का हक़ है। यह क़ुर्बानगाह हमारे और आप के दरमियान गवाह रहेगी। अब आप की औलाद कभी भी हमारी औलाद से नहीं कह सकेगी, 'आप को रब की जमाअत के हुक़ूक़ हासिल नहीं।' 28 और अगर वह किसी वक़्त यह बात करे तो हमारी औलाद कह सकेगी, 'यह क़ुर्बानगाह देखें जो रब की क़ुर्बानगाह की हू-ब-हू नक़ल है। हमारे बापदादा ने इसे बनाया था, लेकिन इस लिए नहीं कि हम इस पर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ज़बह की क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ बल्कि आप को और हमें गवाही देने के लिए कि हमें मिल कर रब की इबादत करने का हक़ है।' 29 हालात कभी भी यहाँ तक न पहुँचें कि हम रब से सरकशी करके अपना मुँह उस से फेर लें। नहीं, हम ने यह क़ुर्बानगाह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें और ज़बह की क़ुर्बानियाँ चढ़ाने के लिए नहीं बनाई। हम सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा की सुकूनतगाह के सामने की क़ुर्बानगाह पर ही अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करना चाहते हैं।"

30 जब फ़ीन्हास और इस्राईली जमाअत के कुंबों के सरबराहों ने जिलिआद में रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले की यह बातें सुनीं तो वह मुत्मइन हुए। 31 फ़ीन्हास ने उन से कहा, "अब हम जानते हैं कि रब आइन्दा भी हमारे दरमियान रहेगा, क्यूँकि आप उस से बेवफ़ा नहीं हुए हैं। आप ने इस्राईलियों को रब की सज़ा से बचा लिया है।"

32 इस के बाद फ़ीन्हास और बाक़ी इस्राईली सरदार रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले को मुल्क-ए-जिलिआद में छोड़ कर मुल्क-ए-कनआन में लौट आए। वहाँ उन्हों ने सब कुछ बताया जो हुआ था। 33 बाक़ी इस्राईलियों को यह बात पसन्द आई, और वह अल्लाह की तम्जीद करके रूबिन और जद से जंग करने और उन का इलाक़ा तबाह करने के इरादे से बाज़ आए। 34 रूबिन और जद के क़बीलों ने नई क़ुर्बानगाह का नाम गवाह रखा, क्यूँकि उन्हों ने कहा, "यह क़ुर्बानगाह हमारे और दूसरे क़बीलों के दरमियान गवाह है कि रब हमारा भी ख़ुदा है।"

यशूअ की आख़िरी नसीहतें

23 1 अब इस्राईली काफ़ी देर से सलामती से अपने मुल्क में रहते थे, क्यूँकि रब ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हम्लों से महफ़ूज़ रखा। जब यशूअ बहुत बूढ़ा हो गया था 2 तो उस ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों, सरदारों, क़ाज़ियों और निगहबानों को अपने पास बुला कर कहा, "अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। 3 आप ने अपनी आँखों से देखा कि रब ने इस इलाक़े की तमाम क़ौमों के साथ क्या कुछ किया है। रब आप के ख़ुदा ही ने आप के लिए जंग की। 4 याद रखें कि मैं ने मशरिक़ में दरया-ए-यर्दन से ले कर मग़रिब में समुन्दर तक सारा मुल्क आप के क़बीलों में तक़्सीम कर दिया है। बहुत सी क़ौमों पर मैं ने फ़त्ह पाई, लेकिन चन्द एक अब तक बाक़ी रह गई हैं। 5 लेकिन रब आप का ख़ुदा आप के आगे आगे

चलते हुए उन्हें भी निकाल कर भगा देगा। आप उन
की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे जिस तरह रब आप
के ख़ुदा ने वादा किया है।
6 अब पूरी हिम्मत से हर बात पर अमल करें जो
मूसा की शरीअत की किताब में लिखी हुई है। न दाईं
और न बाईं तरफ़ हटें। 7 उन दीगर क़ौमों से रिश्ता
मत बांधना जो अब तक मुल्क में बाक़ी रह गई हैं।
उन के बुतों के नाम अपनी ज़बान पर न लाना, न
उन के नाम ले कर क़सम खाना। न उन की ख़िदमत
करना, न उन्हें सिज्दा करना। 8 रब अपने ख़ुदा के
साथ यूँ लिपटे रहना जिस तरह आज तक लिपटे रहे
हैं।
9 रब ने आप के आगे आगे चल कर बड़ी बड़ी
और ताक़तवर क़ौमें निकाल दी हैं। आज तक आप
के सामने कोई नहीं खड़ा रह सका। 10 आप में से
एक शख़्स हज़ार दुश्मनों को भगा देता है, क्यूँकि रब
आप का ख़ुदा ख़ुद आप के लिए लड़ता है जिस तरह
उस ने वादा किया था। 11 चुनाँचे सन्जीदगी से ध्यान
दें कि आप रब अपने ख़ुदा से प्यार करें, क्यूँकि आप
की ज़िन्दगी इसी पर मुन्हसिर है। 12 अगर आप उस
से दूर हो कर उन दीगर क़ौमों से लिपट जाएँ जो
अब तक मुल्क में बाक़ी हैं और उन के साथ रिश्ता
बांधें 13 तो रब आप का ख़ुदा यक़ीनन इन क़ौमों को
आप के आगे से नहीं निकालेगा। इस के बजाय यह
आप को फंसाने के लिए फंदा और जाल बनेंगे। यह
यक़ीनन आप की पीठों के लिए कोड़े और आँखों
के लिए काँटे बन जाएंगे। आख़िर में आप उस अच्छे
मुल्क में से मिट जाएंगे जो रब आप के ख़ुदा ने आप
को दे दिया है।
14 आज मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ किसी न किसी
दिन दुनिया के हर शख़्स को जाना होता है। लेकिन
आप ने पूरे दिल-ओ-जान से जान लिया है कि जो भी
वादा रब आप के ख़ुदा ने आप के साथ किया वह
पूरा हुआ है। एक भी अधूरा नहीं रह गया। 15 लेकिन
जिस तरह रब ने हर वादा पूरा किया है बिलकुल
उसी तरह वह तमाम आफ़तें आप पर नाज़िल करेगा
जिन के बारे में उस ने आप को ख़बरदार किया है
अगर आप उस के ताबे न रहें। फिर वह आप को
उस अच्छे मुल्क में से मिटा देगा जो उस ने आप को
दे दिया है। 16 अगर आप उस अह्द को तोड़ें जो उस
ने आप के साथ बांधा है और दीगर माबूदों की पूजा
करके उन्हें सिज्दा करें तो फिर रब का पूरा ग़ज़ब
आप पर नाज़िल होगा और आप जल्द ही उस अच्छे
मुल्क में से मिट जाएंगे जो उस ने आप को दे दिया
है।”

अल्लाह और इस्राईल के दरमियान अह्द की तज्दीद

24 1 फिर यशूअ ने इस्राईल के तमाम क़बीलों
को सिकम शहर में जमा किया। उस
ने इस्राईल के बुज़ुर्गों, सरदारों, क़ाज़ियों और
निगहबानों को बुलाया, और वह मिल कर अल्लाह
के हुज़ूर हाज़िर हुए। 2 फिर यशूअ इस्राईली क़ौम
से मुख़ातिब हुआ। “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘क़दीम ज़माने में तुम्हारे बापदादा दरया-ए-फ़ुरात
के पार बसते और दीगर माबूदों की पूजा करते थे।
इब्राहीम और नहूर का बाप तारह भी वहाँ आबाद
था। 3 लेकिन मैं तुम्हारे बाप इब्राहीम को वहाँ से
ले कर यहाँ लाया और उसे पूरे मुल्क-ए-कनआन
में से गुज़रने दिया। मैं ने उसे बहुत औलाद दी। मैं
ने उसे इस्हाक़ दिया 4 और इस्हाक़ को याक़ूब और
एसौ। एसौ को मैं ने पहाड़ी इलाक़ा सईर अता किया,
लेकिन याक़ूब अपने बेटों के साथ मिस्र चला गया।
5 बाद में मैं ने मूसा और हारून को मिस्र भेज
दिया और मुल्क पर बड़ी मुसीबतें नाज़िल करके
तुम्हें वहाँ से निकाल लाया। 6 चलते चलते तुम्हारे
बापदादा बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पहुँच गए। लेकिन मिस्री
अपने रथों और घुड़सवारों से उन का ताक़्क़ुब करने
लगे। 7 तुम्हारे बापदादा ने मदद के लिए रब को
पुकारा, और मैं ने उन के और मिस्रियों के दरमियान
अंधेरा पैदा किया। मैं समुन्दर उन पर चढ़ा लाया,
और वह उस में ग़र्क़ हो गए। तुम्हारे बापदादा ने

अपनी ही आँखों से देखा कि मैं ने मिस्रियों के साथ
क्या कुछ किया।
तुम बड़े अर्से तक रेगिस्तान में घूमते फिरे।
8 आख़िरकार मैं ने तुम्हें उन अमोरियों के मुल्क में
पहुँचाया जो दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में आबाद थे।
गो उन्हों ने तुम से जंग की, लेकिन मैं ने उन्हें तुम्हारे
हाथ में कर दिया। तुम्हारे आगे आगे चल कर मैं ने
उन्हें नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया, इस लिए तुम उन के
मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। 9 मोआब के बादशाह
बलक़ बिन सफ़ोर ने भी इस्राईल के साथ जंग छेड़ी।
इस मक़सद के तहत उस ने बलआम बिन बओर
को बुलाया ताकि वह तुम पर लानत भेजे। 10 लेकिन
मैं बलआम की बात मानने के लिए तय्यार नहीं था
बल्कि वह तुम्हें बरकत देने पर मज्बूर हुआ। यूँ मैं ने
तुम्हें उस के हाथ से महफ़ूज़ रखा।
11 फिर तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके यरीहू के
पास पहुँच गए। इस शहर के बाशिन्दे और अमोरी,
फ़रिज़्ज़ी, कनआनी, हित्ती, जिर्जासी, हिव्वी और
यबूसी तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ते रहे, लेकिन मैं ने उन्हें
तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया। 12 मैं ने तुम्हारे आगे ज़म्बूर
भेज दिए जिन्हों ने अमोरियों के दो बादशाहों को
मुल्क से निकाल दिया।
यह सब कुछ तुम्हारी अपनी तलवार और कमान से
नहीं हुआ बल्कि मेरे ही हाथ से। 13 मैं ने तुम्हें बीज
बोने के लिए ज़मीन दी जिसे तय्यार करने के लिए
तुम्हें मेहनत न करनी पड़ी। मैं ने तुम्हें शहर दिए जो
तुम्हें तामीर करने न पड़े। उन में रह कर तुम अंगूर
और ज़ैतून के ऐसे बाग़ों का फल खाते हो जो तुम ने
नहीं लगाए थे'।"
14 यशूअ ने बात जारी रखते हुए कहा, "चुनाँचे रब
का ख़ौफ़ मानें और पूरी वफ़ादारी के साथ उस की
ख़िदमत करें। उन बुतों को निकाल फैंकें जिन की
पूजा आप के बापदादा दरया-ए-फ़ुरात के पार और
मिस्र में करते रहे। अब रब ही की ख़िदमत करें!
15 लेकिन अगर रब की ख़िदमत करना आप को बुरा
लगे तो आज ही फ़ैसला करें कि किस की ख़िदमत
करेंगे, उन देवताओं की जिन की पूजा आप के
बापदादा ने दरया-ए-फ़ुरात के पार की या अमोरियों
के देवताओं की जिन के मुल्क में आप रह रहे हैं।
लेकिन जहाँ तक मेरा और मेरे ख़ानदान का ताल्लुक़
है हम रब ही की ख़िदमत करेंगे।"
16 अवाम ने जवाब दिया, "ऐसा कभी न हो कि हम
रब को तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करें। 17 रब
हमारा ख़ुदा ही हमारे बापदादा को मिस्र की ग़ुलामी
से निकाल लाया और हमारी आँखों के सामने ऐसे
अज़ीम निशान पेश किए। जब हमें बहुत क़ौमों में से
गुज़रना पड़ा तो उसी ने हर वक़्त हमारी हिफ़ाज़त
की। 18 और रब ही ने हमारे आगे आगे चल कर
इस मुल्क में आबाद अमोरियों और बाक़ी क़ौमों
को निकाल दिया। हम भी उसी की ख़िदमत करेंगे,
क्यूँकि वही हमारा ख़ुदा है!"
19 यह सुन कर यशूअ ने कहा, "आप रब की
ख़िदमत कर ही नहीं सकते, क्यूँकि वह क़ुद्दूस और
ग़यूर ख़ुदा है। वह आप की सरकशी और गुनाहों
को मुआफ़ नहीं करेगा। 20 बेशक वह आप पर
मेहरबानी करता रहा है, लेकिन अगर आप रब को
तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा करें तो वह आप
के ख़िलाफ़ हो कर आप पर बलाएँ लाएगा और आप
को नेस्त-ओ-नाबूद कर देगा।"
21 लेकिन इस्राईलियों ने इसरार किया, "जी नहीं,
हम रब की ख़िदमत करेंगे!" 22 फिर यशूअ ने कहा,
"आप ख़ुद इस के गवाह हैं कि आप ने रब की
ख़िदमत करने का फ़ैसला कर लिया है।" उन्हों
ने जवाब दिया, "जी हाँ, हम इस के गवाह हैं!"
23 यशूअ ने कहा, "तो फिर अपने दरमियान मौजूद
बुतों को तबाह कर दें और अपने दिलों को रब
इस्राईल के ख़ुदा के ताबे रखें।" 24 अवाम ने यशूअ
से कहा, "हम रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करेंगे और
उसी की सुनेंगे।"
25 उस दिन यशूअ ने इस्राईलियों के लिए रब से
अह्द बांधा। वहाँ सिकम में उस ने उन्हें अह्काम
और क़वाइद दे कर 26 अल्लाह की शरीअत की

किताब में दर्ज किए। फिर उस ने एक बड़ा पत्थर ले कर उसे उस बलूत के साय में खड़ा किया जो रब के मक़्दिस के पास था। 27 उस ने तमाम लोगों से कहा, “इस पत्थर को देखें! यह गवाह है, क्यूँकि इस ने सब कुछ सुन लिया है जो रब ने हमें बता दिया है। अगर आप कभी अल्लाह का इन्कार करें तो यह आप के ख़िलाफ़ गवाही देगा।”

28 फिर यशूअ ने इस्राईलियों को फ़ारिग़ कर दिया, और हर एक अपने अपने क़बाइली इलाक़े में चला गया।

यशूअ और इलीअज़र का इन्तिक़ाल

29 कुछ देर के बाद रब का ख़ादिम यशूअ बिन नून फ़ौत हुआ। उस की उम्र 110 साल थी। 30 उसे उस की मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया, यानी तिम्नत-सिरह में जो इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में जास पहाड़ के शिमाल में है।

31 जब तक यशूअ और वह बुज़ुर्ग ज़िन्दा रहे जिन्हों ने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था जो रब ने इस्राईल के लिए किया था उस वक़्त तक इस्राईल रब का वफ़ादार रहा।

32 मिस्र को छोड़ते वक़्त इस्राईली यूसुफ़ की हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। अब उन्हों ने उन्हें सिकम शहर की उस ज़मीन में दफ़न कर दिया जो याक़ूब ने सिकम के बाप हमोर की औलाद से चाँदी के सौ सिक्कों के बदले ख़रीद ली थी। यह ज़मीन यूसुफ़ की औलाद की विरासत में आ गई थी।

33 इलीअज़र बिन हारून भी फ़ौत हुआ। उसे जिबिआ में दफ़नाया गया। इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े का यह शहर उस के बेटे फ़ीन्हास को दिया गया था।

क़ुज़ात

जुनूबी कनआन पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

1 [1] यशूअ की मौत के बाद इस्राईलियों ने रब
से पूछा, “कौन सा क़बीला पहले निकल कर
कनआनियों पर हम्ला करे?” [2] रब ने जवाब दिया,
“यहूदाह का क़बीला शुरू करे। मैं ने मुल्क को उन
के क़ब्ज़े में कर दिया है।”

[3] तब यहूदाह के क़बीले ने अपने भाइयों शमाऊन
के क़बीले से कहा, “आएँ, हमारे साथ निकलें ताकि
हम मिल कर कनआनियों को उस इलाक़े से निकाल
दें जो क़ुरआ ने यहूदाह के क़बीले के लिए मुक़र्रर
किया है। इस के बदले हम बाद में आप की मदद
करेंगे जब आप अपने इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने के
लिए निकलेंगे।” चुनाँचे शमाऊन के मर्द यहूदाह के
साथ निकले। [4] जब यहूदाह ने दुश्मन पर हम्ला किया
तो रब ने कनआनियों और फ़रिज़्ज़ियों को उस के
क़ाबू में कर दिया। बज़क़ के पास उन्हों ने उन्हें
शिकस्त दी, गो उन के कुल 10,000 आदमी थे।

[5] वहाँ उन का मुक़ाबला एक बादशाह से हुआ
जिस का नाम अदूनी-बज़क़ था। जब उस ने देखा कि
कनआनी और फ़रिज़्ज़ी हार गए हैं [6] तो वह फ़रार
हुआ। लेकिन इस्राईलियों ने उस का ताक़्क़ुब करके
उसे पकड़ लिया और उस के हाथों और पैरों के
अंगूठों को काट लिया। [7] तब अदूनी-बज़क़ ने कहा,
“मैं ने ख़ुद सत्तर बादशाहों के हाथों और पैरों के
अंगूठों को कटवाया, और उन्हें मेरी मेज़ के नीचे गिरे
हुए खाने के रद्दी टुकड़े जमा करने पड़े। अब अल्लाह
मुझे इस का बदला दे रहा है।” उसे यरूशलम लाया
गया जहाँ वह मर गया।

[8] यहूदाह के मर्दों ने यरूशलम पर भी हम्ला किया।
उस पर फ़त्ह पा कर उन्हों ने उस के बाशिन्दों को
तलवार से मार डाला और शहर को जला दिया। [9] इस
के बाद वह आगे बढ़ कर उन कनआनियों से लड़ने
लगे जो पहाड़ी इलाक़े, दश्त-ए-नजब और मग़रिब
के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में रहते थे। [10] उन्हों ने हब्रून
शहर पर हम्ला किया जो पहले क़िर्यत-अर्बा कहलाता
था। वहाँ उन्हों ने सीसी, अख़ीमान और तल्मी की
फ़ौजों को शिकस्त दी। [11] फिर वह आगे दबीर के
बाशिन्दों से लड़ने चले गए। दबीर का पुराना नाम
क़िर्यत-सिफ़र था।

[12] कालिब ने कहा, “जो क़िर्यत-सिफ़र पर फ़त्ह
पा कर क़ब्ज़ा करेगा उस के साथ मैं अपनी बेटी
अक्सा का रिश्ता बांधूँगा।” [13] कालिब के छोटे भाई
ग़ुतनीएल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया।
चुनाँचे कालिब ने उस के साथ अपनी बेटी अक्सा
की शादी कर दी। [14] जब अक्सा ग़ुतनीएल के हाँ
जा रही थी तो उस ने उसे उभारा कि वह कालिब
से कोई खेत पाने की दरख़्वास्त करे। अचानक वह
गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?”
[15] अक्सा ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक
चीज़ से नवाज़ें। आप ने मुझे दश्त-ए-नजब में ज़मीन दे
दी है। अब मुझे चश्मे भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब
ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचे वाले
चश्मे भी दे दिए।

[16] जब यहूदाह का क़बीला खजूरों के शहर से
रवाना हुआ था तो क़ीनी भी उन के साथ यहूदाह के
रेगिस्तान में आए थे। (क़ीनी मूसा के सुसर यित्रो की
औलाद थे)। वहाँ वह दश्त-ए-नजब में अराद शहर
के क़रीब दूसरे लोगों के दरमियान ही आबाद हुए।

[17] यहूदाह का क़बीला अपने भाइयों शमाऊन के
क़बीले के साथ आगे बढ़ा। उन्हों ने कनआनी शहर
सफ़त पर हम्ला किया और उसे अल्लाह के लिए
मख़्सूस करके मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया।
इस लिए उस का नाम हुर्मा यानी अल्लाह के लिए

तबाही पड़ा। 18 फिर यहूदाह के फ़ौजियों ने ग़ज़्ज़ा,
अस्क़लून और अक्क़ून के शहरों पर उन के गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियों समेत फ़त्ह पाई। 19 रब उन के
साथ था, इस लिए वह पहाड़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर
सके। लेकिन वह समुन्दर के साथ के मैदानी इलाक़े
में आबाद लोगों को निकाल न सके। वजह यह थी
कि इन लोगों के पास लोहे के रथ थे। 20 मूसा के वादे
के मुताबिक़ कालिब को हब्रून शहर मिल गया। उस
ने उस में से अनाक़ के तीन बेटों को उन के घरानों
समेत निकाल दिया।

21 लेकिन बिनयमीन का क़बीला यरूशलम के रहने
वाले यबूसियों को निकाल न सका। आज तक यबूसी
वहाँ बिनयमीनियों के साथ आबाद हैं।

शिमाली कनआन पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

22–23 इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीले बैत-एल पर
क़ब्ज़ा करने के लिए निकले (बैत-एल का पुराना नाम
लूज़ था)। जब उन्हों ने अपने जासूसों को शहर की
तफ़्तीश करने के लिए भेजा तो रब उन के साथ था।
24 उन के जासूसों की मुलाक़ात एक आदमी से हुई
जो शहर से निकल रहा था। उन्हों ने उस से कहा,
“हमें शहर में दाख़िल होने का रास्ता दिखाएँ तो हम
आप पर रहम करेंगे।” 25 उस ने उन्हें अन्दर जाने
का रास्ता दिखाया, और उन्हों ने उस में घुस कर
तमाम बाशिन्दों को तलवार से मार डाला सिवाए
मज़कूरा आदमी और उस के ख़ानदान के। 26 बाद में
वह हित्तियों के मुल्क में गया जहाँ उस ने एक शहर
तामीर करके उस का नाम लूज़ रखा। यह नाम आज
तक राइज है।

27 लेकिन मनस्सी ने हर शहर के बाशिन्दे न
निकाले। बैत-शान, तानक, दोर, इब्लीआम, मजिद्दो
और उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियाँ रह गईं।
कनआनी पूरे अज़्म के साथ उन में टिके रहे।
28 बाद में जब इस्राईल की ताक़त बढ़ गई तो
इन कनआनियों को बेगार में काम करना पड़ा।
लेकिन इस्राईलियों ने उस वक़्त भी उन्हें मुल्क से
न निकाला।

29 इसी तरह इफ़्राईम के क़बीले ने भी जज़र के
बाशिन्दों को न निकाला, और यह कनआनी उन के
दरमियान आबाद रहे।

30 ज़बूलून के क़बीले ने भी क़ित्रोन और नहलाल के
बाशिन्दों को न निकाला बल्कि यह उन के दरमियान
आबाद रहे, अलबत्ता उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

31 आशर के क़बीले ने न अक्को के बाशिन्दों
को निकाला, न सैदा, अहलाब, अक्ज़ीब, हिल्बा,
अफ़ीक़ या रहोब के बाशिन्दों को। 32 इस वजह से
आशर के लोग कनआनी बाशिन्दों के दरमियान रहने
लगे।

33 नफ़्ताली के क़बीले ने बैत-शम्स और बैत-
अनात के बाशिन्दों को न निकाला बल्कि वह भी
कनआनियों के दरमियान रहने लगे। लेकिन बैत-
शम्स और बैत-अनात के बाशिन्दों को बेगार में काम
करना पड़ा।

34 दान के क़बीले ने मैदानी इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने
की कोशिश तो की, लेकिन अमोरियों ने उन्हें आने
न दिया बल्कि पहाड़ी इलाक़े तक महदूद रखा।
35 अमोरी पूरे अज़्म के साथ हरिस पहाड़, अय्यालोन
और साल्बीम में टिके रहे। लेकिन जब इफ़्राईम और
मनस्सी की ताक़त बढ़ गई तो अमोरियों को बेगार
में काम करना पड़ा।

36 अमोरियों की सरहद दर्रा-ए-अक्रब्बीम से ले कर
सिला से परे तक थी।

रब का फ़रिश्ता इस्राईल को मलामत करता है

2 1 रब का फ़रिश्ता जिल्जाल से चढ़ कर बोकीम
पहुँचा। वहाँ उस ने इस्राईलियों से कहा, “मैं
तुम्हें मिस्र से निकाल कर उस मुल्क में लाया जिस का
वादा मैं ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया
था। उस वक़्त मैं ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ अपना
अहद कभी नहीं तोड़ूँगा। 2 और मैं ने हुक्म दिया, ‘इस
मुल्क की क़ौमों के साथ अहद मत बांधना बल्कि

उन की क़ुर्बानगाहों को गिरा देना।' लेकिन तुम ने
मेरी न सुनी। यह तुम ने क्या किया? 3 इस लिए अब
मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से नहीं
निकालूँगा। वह तुम्हारे पहलूओं में काँटे बनेंगे, और
उन के देवता तुम्हारे लिए फंदा बने रहेंगे।"
4 रब के फ़रिश्ते की यह बात सुन कर इस्राईली ख़ूब
रोए। 5 यही वजह है कि उस जगह का नाम बोकीम
यानी रोने वाले पड़ गया। फिर उन्हों ने वहाँ रब के
हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश कीं।

इस्राईल बेवफ़ा हो जाता है

6 यशूअ के क़ौम को रुख़्सत करने के बाद हर एक
क़बीला अपने इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना
हुआ था। 7 जब तक यशूअ और वह बुज़ुर्ग ज़िन्दा
रहे जिन्हों ने वह अज़ीम काम देखे हुए थे जो रब ने
इस्राईलियों के लिए किए थे उस वक़्त तक इस्राईली
रब की वफ़ादारी से ख़िदमत करते रहे। 8 फिर रब का
ख़ादिम यशूअ बिन नून इन्तिक़ाल कर गया। उस की
उम्र 110 साल थी। 9 उसे तिम्नत-हरिस में उस की
अपनी मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया। (यह शहर
इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में जास पहाड़ के शिमाल
में है।)
10 जब हमअसर इस्राईली सब मर कर अपने
बापदादा से जा मिले तो नई नस्ल उभर आई जो
न तो रब को जानती, न उन कामों से वाक़िफ़ थी
जो रब ने इस्राईल के लिए किए थे। 11 उस वक़्त
वह ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं।
उन्हों ने बाल देवता के बुतों की पूजा करके 12 रब
अपने बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया जो उन्हें
मिस्र से निकाल लाया था। वह गिर्द-ओ-नवाह की
क़ौमों के दीगर माबूदों के पीछे लग गए और उन
की पूजा भी करने लगे। इस से रब का ग़ज़ब उन पर
भड़का, 13 क्यूँकि उन्हों ने उस की ख़िदमत छोड़ कर
बाल देवता और अस्तारात देवी की पूजा की। 14 रब
यह देख कर इस्राईलियों से नाराज़ हुआ और उन्हें
डाकुओं के हवाले कर दिया जिन्हों ने उन का माल
लूटा। उस ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हाथ बेच
डाला, और वह उन का मुक़ाबला करने के क़ाबिल
न रहे। 15 जब भी इस्राईली लड़ने के लिए निकले तो
रब का हाथ उन के ख़िलाफ़ था। नतीजतन वह हारते
गए जिस तरह उस ने क़सम खा कर फ़रमाया था।
जब वह इस तरह बड़ी मुसीबत में थे 16 तो रब उन
के दरमियान क़ाज़ी बरपा करता जो उन्हें लूटने वालों
के हाथ से बचाते। 17 लेकिन वह उन की न सुनते
बल्कि ज़िना करके दीगर माबूदों के पीछे लगे और
उन की पूजा करते रहते। गो उन के बापदादा रब के
अह्काम के ताबे रहे थे, लेकिन वह ख़ुद बड़ी जल्दी
से उस राह से हट जाते जिस पर उन के बापदादा
चले थे। 18 लेकिन जब भी वह दुश्मन के ज़ुल्म और
दबाओ तले कराहने लगते तो रब को उन पर तरस
आ जाता, और वह किसी क़ाज़ी को बरपा करता
और उस की मदद करके उन्हें बचाता।
जितने अर्से तक क़ाज़ी ज़िन्दा रहता उतनी देर तक
इस्राईली दुश्मनों के हाथ से महफ़ूज़ रहते। 19 लेकिन
उस के मरने पर वह दुबारा अपनी पुरानी राहों पर
चलने लगते, बल्कि जब वह मुड़ कर दीगर माबूदों
की पैरवी और पूजा करने लगते तो उन की रविश
बापदादा की रविश से भी बुरी होती। वह अपनी
शरीर हरकतों और हटधर्म राहों से बाज़ आने के लिए
तय्यार ही न होते। 20 इस लिए अल्लाह को इस्राईल
पर बड़ा ग़ुस्सा आया। उस ने कहा, "इस क़ौम ने
वह अह्द तोड़ दिया है जो मैं ने इस के बापदादा से
बांधा था। यह मेरी नहीं सुनती, 21 इस लिए मैं उन
क़ौमों को नहीं निकालूँगा जो यशूअ की मौत से ले
कर आज तक मुल्क में रह गई हैं। यह क़ौमें इस
में आबाद रहेंगी, 22 और मैं उन से इस्राईलियों को
आज़मा कर देखूँगा कि आया वह अपने बापदादा
की तरह रब की राह पर चलेंगे या नहीं।"
23 चुनाँचे रब ने इन क़ौमों को न यशूअ के हवाले
किया, न फ़ौरन निकाला बल्कि उन्हें मुल्क में ही
रहने दिया।

अल्लाह इस्राईल को कनआनी क़ौमों से आज़माता है

3 1 रब ने कई एक क़ौमों को मुल्क-ए-कनआन
में रहने दिया ताकि उन तमाम इस्राईलियों को
आज़माए जो ख़ुद कनआन की जंगों में शरीक नहीं
हुए थे। 2 नीज़, वह नई नस्ल को जंग करना सिखाना
चाहता था, क्यूँकि वह जंग करने से नावाक़िफ़ थी।
ज़ैल की क़ौमें कनआन में रह गई थीं : 3 फ़िलिस्ती
उन के पाँच हुक्मरानों समेत, तमाम कनआनी, सैदानी
और लुबनान के पहाड़ी इलाक़े में रहने वाले हिव्वी
जो बाल-हर्मून पहाड़ से ले कर लबो-हमात तक
आबाद थे। 4 उन से रब इस्राईलियों को आज़माना
चाहता था। वह देखना चाहता था कि क्या यह मेरे
उन अह्काम पर अमल करते हैं या नहीं जो मैं ने मूसा
की मारिफ़त उन के बापदादा को दिए थे।

ग़ुतनीएल क़ाज़ी

5 चुनाँचे इस्राईली कनआनियों, हित्तियों, अमोरियों,
फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबूसियों के दरमियान ही
आबाद हो गए। 6 न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन क़ौमों
से अपने बेटे-बेटियों का रिश्ता बांध कर उन के
देवताओं की पूजा भी करने लगे। 7 इस्राईलियों ने
ऐसी हरकतें कीं जो रब की नज़र में बुरी थीं। रब को
भूल कर उन्हों ने बाल देवता और यसीरत देवी की
ख़िदमत की।

8 तब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उस
ने उन्हें मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-रिसअतैम
के हवाले कर दिया। इस्राईली आठ साल तक कूशन
के ग़ुलाम रहे। 9 लेकिन जब उन्हों ने मदद के लिए रब
को पुकारा तो उस ने उन के लिए एक नजातदहिन्दा
बरपा किया। कालिब के छोटे भाई ग़ुतनीएल बिन
क़नज़ ने उन्हें दुश्मन के हाथ से बचाया। 10 उस
वक़्त ग़ुतनीएल पर रब का रूह नाज़िल हुआ, और
वह इस्राईल का क़ाज़ी बन गया। जब वह जंग करने
के लिए निकला तो रब ने मसोपुतामिया के बादशाह
कूशन-रिसअतैम को उस के हवाले कर दिया, और
वह उस पर ग़ालिब आ गया।

11 तब मुल्क में चालीस साल तक अम्न-ओ-अमान
क़ाइम रहा। लेकिन जब ग़ुतनीएल बिन क़नज़ फ़ौत
हुआ 12 तो इस्राईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो
रब की नज़र में बुरा था। इस लिए उस ने मोआब के
बादशाह इज्लून को इस्राईल पर ग़ालिब आने दिया।
13 इज्लून ने अम्मोनियों और अमालीक़ियों के साथ
मिल कर इस्राईलियों से जंग की और उन्हें शिकस्त
दी। उस ने खजूरों के शहर पर क़ब्ज़ा किया, 14 और
इस्राईल 18 साल तक उस की ग़ुलामी में रहा।

अहूद क़ाज़ी की चालाकी

15 इस्राईलियों ने दुबारा मदद के लिए रब को
पुकारा, और दुबारा उस ने उन्हें नजातदहिन्दा अता
किया यानी बिनयमीन के क़बीले का अहूद बिन जीरा
जो बाएँ हाथ से काम करने का आदी था। इसी
शख़्स को इस्राईलियों ने इज्लून बादशाह के पास
भेज दिया ताकि वह उसे ख़राज के पैसे अदा करे।
16 अहूद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार बना ली
जो तक़रीबन डेढ़ फ़ुट लम्बी थी। जाते वक़्त उस
ने उसे अपनी कमर के दाईं तरफ़ बांध कर अपने
लिबास में छुपा लिया। 17 जब वह इज्लून के दरबार
में पहुँच गया तो उस ने मोआब के बादशाह को ख़राज
पेश किया। इज्लून बहुत मोटा आदमी था। 18 फिर
अहूद ने उन आदमियों को रुख़्सत कर दिया जिन्हों
ने उस के साथ ख़राज उठा कर उसे दरबार तक
पहुँचाया था। 19–20 अहूद भी वहाँ से रवाना हुआ,
लेकिन जिल्जाल के बुतों के क़रीब वह मुड़ कर
इज्लून के पास वापस गया।

इज्लून बालाख़ाने में बैठा था जो ज़्यादा ठंडा था
और उस के ज़ाती इस्तेमाल के लिए मख़्सूस था।
अहूद ने अन्दर जा कर बादशाह से कहा, “मेरी
आप के लिए ख़ुफ़िया ख़बर है।” बादशाह ने कहा,
“ख़ामोश!” बाक़ी तमाम हाज़िरीन कमरे से चले गए
तो अहूद ने कहा, “जो ख़बर मेरे पास आप के लिए

है वह अल्लाह की तरफ़ से है!” यह सुन कर इज्लून
खड़ा होने लगा, 21 लेकिन अहूद ने उसी लम्हे अपने
बाएँ हाथ से कमर के दाईं तरफ़ बंधी हुई तलवार
को पकड़ कर उसे मियान से निकाला और इज्लून
के पेट में धंसा दिया। 22 तलवार इतनी धँस गई कि
उस का दस्ता भी चर्बी में ग़ाइब हो गया और उस की
नोक टाँगों में से निकली। तलवार को उस में छोड़
कर 23 अहूद ने कमरे के दरवाज़ों को बन्द करके
कुंडी लगाई और साथ वाले कमरे में से निकल कर
चला गया।

24 थोड़ी देर के बाद बादशाह के नौकरों ने आ
कर देखा कि दरवाज़ों पर कुंडी लगी है। उन्हों ने
एक दूसरे से कहा, “वह हाजत रफ़ा कर रहे होंगे,”
25 इस लिए कुछ देर के लिए ठहरे। लेकिन दरवाज़ा
न खुला। इन्तिज़ार करते करते वह थक गए, लेकिन
बेसूद, बादशाह ने दरवाज़ा न खोला। आख़िरकार
उन्हों ने चाबी ढूँड कर दरवाज़ों को खोल दिया और
देखा कि मालिक की लाश फ़र्श पर पड़ी हुई है।

26 नौकरों के झिजकने की वजह से अहूद बच
निकला और जिल्जाल के बुतों से गुज़र कर सईरा
पहुँच गया जहाँ वह महफ़ूज़ था। 27 वहाँ इफ़्राईम के
पहाड़ी इलाक़े में उस ने नरसिंगा फूँक दिया ताकि
इस्राईली लड़ने के लिए जमा हो जाएँ। वह इकट्ठे हुए
और उस की राहनुमाई में वादी-ए-यर्दन में उतर गए।
28 अहूद बोला, “मेरे पीछे हो लें, क्यूँकि अल्लाह ने
आप के दुश्मन मोआब को आप के हवाले कर दिया
है।” चुनाँचे वह उस के पीछे पीछे वादी में उतर गए।
पहले उन्हों ने दरया-ए-यर्दन के कम-गहरे मक़ामों पर
क़ब्ज़ा करके किसी को दरया पार करने न दिया।
29 उस वक़्त उन्हों ने मोआब के 10,000 ताक़तवर
और जंग करने के क़ाबिल आदमियों को मार डाला।
एक भी न बचा।

30 उस दिन इस्राईल ने मोआब को ज़ेर कर दिया,
और 80 साल तक मुल्क में अम्न-ओ-अमान क़ाइम
रहा।

शम्जर क़ाज़ी

31 अहूद के दौर के बाद इस्राईल का एक और
नजातदहिन्दा उभर आया, शम्जर बिन अनात। उस ने
बैल के आँकुस से 600 फ़िलिस्तियों को मार डाला।

दबोरा नबिया और लश्कर का सरदार बरक़

4 1 जब अहूद फ़ौत हुआ तो इस्राईली दुबारा ऐसी
हरकतें करने लगे जो रब के नज़दीक बुरी थीं।
2–3 इस लिए रब ने उन्हें कनआन के बादशाह याबीन
के हवाले कर दिया। याबीन का दार-उल-हकूमत
हसूर था, और उस के पास 900 लोहे के रथ थे।
उस के लश्कर का सरदार सीसरा था जो हरूसत-
हगोइम में रहता था। याबीन ने 20 साल इस्राईलियों
पर बहुत ज़ुल्म किया, इस लिए उन्हों ने मदद के लिए
रब को पुकारा।

4 उन दिनों में दबोरा नबिया इस्राईल की क़ाज़ी
थी। उस का शौहर लफ़ीदोत था, 5 और वह ‘दबोरा
के खजूर’ के पास रहती थी जो इफ़्राईम के पहाड़ी
इलाक़े में रामा और बैत-एल के दरमियान था। इस
दरख़्त के साय में वह इस्राईलियों के मुआमलात
के फ़ैसले किया करती थी। 6 एक दिन दबोरा ने
बरक़ बिन अबीनूअम को बुलाया। बरक़ नफ़्ताली
के क़बाइली इलाक़े के शहर क़ादिस में रहता था।
दबोरा ने बरक़ से कहा, “रब इस्राईल का ख़ुदा आप
को हुक्म देता है, ‘नफ़्ताली और ज़बूलून के क़बीलों
में से 10,000 मर्दों को जमा करके उन के साथ तबूर
पहाड़ पर चढ़ जा! 7 मैं याबीन के लश्कर के सरदार
सीसरा को उस के रथों और फ़ौज समेत तेरे क़रीब
की क़ैसोन नदी के पास खैंच लाऊँगा। वहाँ मैं उसे
तेरे हाथ में कर दूँगा’।”

8 बरक़ ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ इस सूरत में
जाऊँगा कि आप भी साथ जाएँ। आप के बग़ैर मैं
नहीं जाऊँगा।” 9 दबोरा ने कहा, “ठीक है, मैं ज़रूर
आप के साथ जाऊँगी। लेकिन इस सूरत में आप को
सीसरा पर ग़ालिब आने की इज़्ज़त हासिल नहीं होगी

बल्कि एक औरत को। क्यूँकि रब सीसरा को एक
औरत के हवाले कर देगा।”

चुनाँचे दबोरा बरक़ के साथ क़ादिस गई। 10 वहाँ
बरक़ ने ज़बूलून और नफ़्ताली के क़बीलों को अपने
पास बुला लिया। 10,000 आदमी उस की राहनुमाई
में तबूर पहाड़ पर चले गए। दबोरा भी साथ गई।

11 उन दिनों में एक क़ीनी बनाम हिबर ने अपना
ख़ैमा क़ादिस के क़रीब ऐलोन-ज़ाननीम में लगाया
हुआ था। क़ीनी मूसा के साले होबाब की औलाद में
से था। लेकिन हिबर दूसरे क़ीनियों से अलग रहता
था।

12 अब सीसरा को इत्तिला दी गई कि बरक़ बिन
अबीनूअम फ़ौज ले कर पहाड़ तबूर पर चढ़ गया है।
13 यह सुन कर वह हरूसत-हगोइम से रवाना हो कर
अपने 900 रथों और बाक़ी लश्कर के साथ क़ैसोन
नदी पर पहुँच गया।

14 तब दबोरा ने बरक़ से बात की, “हम्ला के लिए
तय्यार हो जाएँ, क्यूँकि रब ने आज ही सीसरा को
आप के क़ाबू में कर दिया है। रब आप के आगे आगे
चल रहा है।” चुनाँचे बरक़ अपने 10,000 आदमियों
के साथ तबूर पहाड़ से उतर आया। 15 जब उन्हों ने
दुश्मन पर हम्ला किया तो रब ने कनआनियों के पूरे
लश्कर में रथों समेत अफ़्रा-तफ़्री पैदा कर दी। सीसरा
अपने रथ से उतर कर पैदल ही फ़रार हो गया।

16 बरक़ के आदमियों ने भागने वाले फ़ौजियों और
उन के रथों का ताक़्क़ुब करके उन को हरूसत-
हगोइम तक मारते गए। एक भी न बचा।

सीसरा का अन्जाम

17 इतने में सीसरा पैदल चल कर क़ीनी आदमी
हिबर की बीवी याएल के ख़ैमे के पास भाग आया
था। वजह यह थी कि हसूर के बादशाह याबीन के
हिबर के घराने के साथ अच्छे ताल्लुक़ात थे। 18 याएल
ख़ैमे से निकल कर सीसरा से मिलने गई। उस ने कहा,
“आएँ मेरे आक़ा, अन्दर आएँ और न डरें।” चुनाँचे
वह अन्दर आ कर लेट गया, और याएल ने उस पर
कम्बल डाल दिया।

19 सीसरा ने कहा, “मुझे प्यास लगी है, कुछ पानी
पिला दो।” याएल ने दूध का मश्कीज़ा खोल कर उसे
पिला दिया और उसे दुबारा छुपा दिया। 20 सीसरा ने
दरख़्वास्त की, “दरवाज़े में खड़ी हो जाओ! अगर
कोई आए और पूछे कि क्या ख़ैमे में कोई है तो बोलो
कि नहीं, कोई नहीं है।”

21 यह कह कर सीसरा गहरी नींद सो गया, क्यूँकि
वह निहायत थका हुआ था। तब याएल ने मेख़ और
हथोड़ा पकड़ लिया और दबे पाँओ सीसरा के पास
जा कर मेख़ को इतने ज़ोर से उस की कनपटी में
ठोंक दिया कि मेख़ ज़मीन में धँस गई और वह मर
गया।

22 कुछ देर के बाद बरक़ सीसरा के ताक़्क़ुब में
वहाँ से गुज़रा। याएल ख़ैमे से निकल कर उस से
मिलने आई और बोली, “आएँ, मैं आप को वह
आदमी दिखाती हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं।” बरक़
उस के साथ ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो क्या देखा कि
सीसरा की लाश ज़मीन पर पड़ी है और मेख़ उस की
कनपटी में से गुज़र कर ज़मीन में गड़ गई है।

23 उस दिन अल्लाह ने कनआनी बादशाह याबीन को
इस्राईलियों के सामने ज़ेर कर दिया। 24 इस के बाद
उन की ताक़त बढ़ती गई जबकि याबीन कमज़ोर
होता गया और आख़िरकार इस्राईलियों के हाथों
तबाह हो गया।

दबोरा और बरक़ का गीत

5 1 फ़त्ह के दिन दबोरा ने बरक़ बिन अबीनूअम
के साथ यह गीत गाया,

2 “अल्लाह की सताइश हो! क्यूँकि इस्राईल के
सरदारों ने राहनुमाई की, और अवाम निकलने के
लिए तय्यार हुए।

3 ऐ बादशाहो, सुनो! ऐ हुक्मरानो, मेरी बात पर
तवज्जुह दो! मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगी, रब
इस्राईल के ख़ुदा की मद्हसराई करूँगी।

4 ऐ रब, जब तू सईर से निकल आया और अदोम के
खुले मैदान से रवाना हुआ तो ज़मीन काँप उठी और
आसमान से पानी टपकने लगा, बादलों से बारिश
बरसने लगी।
5 कोह-ए-सीना के रब के हुज़ूर पहाड़ हिलने लगे,
रब इस्राईल के ख़ुदा के सामने वह कपकपाने लगे।

6 शम्जर बिन अनात और याएल के दिनों में सफ़र
के पक्के और सीधे रास्ते ख़ाली रहे और मुसाफ़िर उन
से हट कर बल खाते हुए छोटे छोटे रास्तों पर चल
कर अपनी मन्ज़िल तक पहुँचते थे।
7 दीहात की ज़िन्दगी सूनी हो गई। गाँव में रहना
मुश्किल था जब तक मैं, दबोरा जो इस्राईल की माँ
हूँ खड़ी न हुई।
8 शहर के दरवाज़ों पर जंग छिड़ गई जब उन्हों
ने नए माबूदों को चुन लिया। उस वक़्त इस्राईल के
40,000 मर्दों के पास एक भी ढाल या नेज़ा न था।
9 मेरा दिल इस्राईल के सरदारों के साथ है और उन
के साथ जो ख़ुशी से जंग के लिए निकले। रब की
सताइश करो!
10 ऐ तुम जो सफ़ेद गधों पर कपड़े बिछा कर उन
पर सवार हो, अल्लाह की तम्जीद करो! ऐ तुम जो
पैदल चल रहे हो, अल्लाह की तारीफ़ करो!
11 सुनो! जहाँ जानवरों को पानी पिलाया जाता है
वहाँ लोग रब के नजातबख़्श कामों की तारीफ़ कर
रहे हैं, उन नजातबख़्श कामों की जो उस ने इस्राईल
के दीहातियों की ख़ातिर किए। तब रब के लोग शहर
के दरवाज़ों के पास उतर आए।

12 ऐ दबोरा, उठें, उठें! उठें, हाँ उठें और गीत गाएँ!
ऐ बरक़, खड़े हो जाएँ! ऐ अबीनूअम के बेटे, अपने
क़ैदियों को बांध कर ले जाएँ!

13 फिर बचे हुए फ़ौजी पहाड़ी इलाक़े से उतर कर
क़ौम के शुरफ़ा के पास आए, रब की क़ौम सूरमाओं
के साथ मेरे पास उतर आई।
14 इफ़्राईम से जिस की जड़ें अमालीक़ में हैं
वह उतर आए, और बिनयमीन के मर्द उन के
पीछे हो लिए। मकीर से हुक्मरान और ज़बूलून से
सिपहसालार उतर आए।
15 इश्कार के रईस भी दबोरा के साथ थे, और उस
के फ़ौजी बरक़ के पीछे हो कर वादी में दौड़ आए।
लेकिन रूबिन का क़बीला अपने इलाक़े में रह कर
सोच-बिचार में उलझा रहा।
16 तू क्यूँ अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा
रहा? क्या गल्लों के दरमियान चरवाहों की बाँसरियों
की आवाज़ें सुनने के लिए? रूबिन का क़बीला अपने
इलाक़े में रह कर सोच-बिचार में उलझा रहा।
17 जिलिआद के घराने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़
में ठहरे रहे। और दान का क़बीला, वह क्यूँ बहरी
जहाज़ों के पास रहा? आशर का क़बीला भी साहिल
पर बैठा रहा, वह आराम से अपनी बन्दरगाहों के
पास ठहरा रहा,
18 जबकि ज़बूलून और नफ़्ताली अपनी जान पर
खेल कर मैदान-ए-जंग में आ गए।

19 बादशाह आए और लड़े, कनआन के बादशाह
मजिद्दो नदी पर तानक के पास इस्राईल से लड़े।
लेकिन वहाँ से वह चाँदी का लूटा हुआ माल वापस
न लाए।
20 आसमान से सितारों ने सीसरा पर हम्ला किया,
अपनी आसमानी राहों को छोड़ कर वह उस से और
उस की क़ौम से लड़ने आए।
21 क़ैसोन नदी उन्हें उड़ा ले गई, वह नदी जो क़दीम
ज़माने से बहती है। ऐ मेरी जान, मज़बूती से आगे
चलती जा!
22 उस वक़्त टापों का बड़ा शोर सुनाई दिया।
दुश्मन के ज़बरदस्त घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।

23 रब के फ़रिश्ते ने कहा, “मीरोज़ शहर पर लानत
करो, उस के बाशिन्दों पर ख़ूब लानत करो! क्यूँकि

वह रब की मदद करने न आए, वह सूरमाओं के
ख़िलाफ़ रब की मदद करने न आए।”

24 हिबर क़ीनी की बीवी मुबारक है! ख़ैमों में रहने
वाली औरतों में से वह सब से मुबारक है!
25 जब सीसरा ने पानी माँगा तो याएल ने उसे दूध
पिलाया। शानदार प्याले में लस्सी डाल कर वह उसे
उस के पास लाई।
26 लेकिन फिर उस ने अपने हाथ से मेख़ और अपने
दहने हाथ से मज़दूरों का हथोड़ा पकड़ कर सीसरा
का सर फोड़ दिया, उस की खोपड़ी टुकड़े टुकड़े
करके उस की कनपटी को छेद दिया।
27 उस के पाँओ में वह तड़प उठा। वह गिर कर
वहीं पड़ा रहा। हाँ, वह उस के पाँओ में गिर कर
हलाक हुआ।
28 सीसरा की माँ ने खिड़की में से झाँका और दरीचे
में से देखती देखती रोती रही, “उस के रथ के पहुँचने
में इतनी देर क्यूँ हो रही है? रथों की आवाज़ अब
तक क्यूँ सुनाई नहीं दे रही?”
29 उस की दानिशमन्द ख़वातीन उसे तसल्ली देती
हैं और वह ख़ुद उन की बात दुहराती है, 30 “वह
लूटा हुआ माल आपस में बाँट रहे होंगे। हर मर्द के
लिए एक दो लड़कियाँ और सीसरा के लिए रंगदार
लिबास होगा। हाँ, वह रंगदार लिबास और मेरी गर्दन
को सजाने के लिए दो नफ़ीस रंगदार कपड़े ला रहे
होंगे।”

31 ऐ रब, तेरे तमाम दुश्मन सीसरा की तरह हलाक
हो जाएँ! लेकिन जो तुझ से प्यार करते हैं वह पूरे
ज़ोर से तुलू होने वाले सूरज की मानिन्द हों।”

बरक़ की इस फ़त्ह के बाद इस्राईल में 40 साल
अम्न-ओ-अमान क़ाइम रहा।

मिदियानी इस्राईलियों को दबाते हैं

6 1 फिर इस्राईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो
रब को बुरा लगा, और उस ने उन्हें सात साल
तक मिदियानियों के हवाले कर दिया। 2 मिदियानियों
का दबाओ इतना ज़्यादा बढ़ गया कि इस्राईलियों ने
उन से पनाह लेने के लिए पहाड़ी इलाक़े में शिगाफ़,
ग़ार और गढ़ियाँ बना लीं। 3 क्यूँकि जब भी वह
अपनी फ़सलें लगाते तो मिदियानी, अमालीक़ी और
मशरिक़ के दीगर फ़ौजी उन पर हम्ला करके 4 मुल्क
को घेर लेते और फ़सलों को ग़ज़्ज़ा शहर तक तबाह
करते। वह खाने वाली कोई भी चीज़ नहीं छोड़ते
थे, न कोई भेड़, न कोई बैल, और न कोई गधा।
5 और जब वह अपने मवेशियों और ख़ैमों के साथ
पहुँचते तो टिड्डियों के दलों की मानिन्द थे। इतने मर्द
और ऊँट थे कि उन को गिना नहीं जा सकता था।
यूँ वह मुल्क पर चढ़ आते थे ताकि उसे तबाह करें।
6 इस्राईली मिदियान के सबब से इतने पस्तहाल हुए
कि आख़िरकार मदद के लिए रब को पुकारने लगे।
7–8 तब उस ने उन में एक नबी भेज दिया जिस ने
कहा, “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं ही
तुम्हें मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 9 मैं ने तुम्हें
मिस्र के हाथ से और उन तमाम ज़ालिमों के हाथ से
बचा लिया जो तुम्हें दबा रहे थे। मैं उन्हें तुम्हारे आगे
आगे निकालता गया और उन की ज़मीन तुम्हें दे दी।
10 उस वक़्त मैं ने तुम्हें बताया, ‘मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ। जिन अमोरियों के मुल्क में तुम रह रहे हो उन के
देवताओं का ख़ौफ़ मत मानना। लेकिन तुम ने मेरी न
सुनी’।”

रब जिदाऊन को बुलाता है

11 एक दिन रब का फ़रिश्ता आया और उफ़्रा में
बलूत के एक दरख़्त के साय में बैठ गया। यह
दरख़्त अबीअज़र के ख़ानदान के एक आदमी का
था जिस का नाम यूआस था। वहाँ अंगूर का रस
निकालने का हौज़ था, और उस में यूआस का बेटा

जिदाऊन छुप कर गन्दुम झाड़ रहा था, हौज़ में इस लिए कि गन्दुम मिदियानियों से महफ़ूज़ रहे। 12 रब का फ़रिश्ता जिदाऊन पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “ऐ ज़बरदस्त सूरमे, रब तेरे साथ है!”

13 जिदाऊन ने जवाब दिया, “नहीं जनाब, अगर रब हमारे साथ हो तो यह सब कुछ हमारे साथ क्यूँ हो रहा है? उस के वह तमाम मोजिज़े आज कहाँ नज़र आते हैं जिन के बारे में हमारे बापदादा हमें बताते रहे हैं? क्या वह नहीं कहते थे कि रब हमें मिस्र से निकाल लाया? नहीं, जनाब। अब ऐसा नहीं है। अब रब ने हमें तर्क करके मिदियान के हवाले कर दिया है।”

14 रब ने उस की तरफ़ मुड़ कर कहा, “अपनी इस ताक़त में जा और इस्राईल को मिदियान के हाथ से बचा। मैं ही तुझे भेज रहा हूँ।”

15 लेकिन जिदाऊन ने एतिराज़ किया, “ऐ रब, मैं इस्राईल को किस तरह बचाऊँ? मेरा ख़ानदान मनस्सी के क़बीले का सब से कमज़ोर ख़ानदान है, और मैं अपने बाप के घर में सब से छोटा हूँ।”

16 रब ने जवाब दिया, “मैं तेरे साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को यूँ मारेगा जैसे एक ही आदमी को।”

17 तब जिदाऊन ने कहा, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हो तो मुझे कोई इलाही निशान दिखा ताकि साबित हो जाए कि वाक़ई रब ही मेरे साथ बात कर रहा है। 18 मैं अभी जा कर क़ुर्बानी तय्यार करता हूँ और फिर वापस आ कर उसे तुझे पेश करूँगा। उस वक़्त तक रवाना न हो जाना।”

रब ने कहा, “ठीक है, मैं तेरी वापसी का इन्तिज़ार करके ही जाऊँगा।”

19 जिदाऊन चला गया। उस ने बकरी का बच्चा ज़बह करके तय्यार किया और पूरे 16 किलोग्राम मैदे से बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर गोश्त को टोकरी में रख कर और उस का शोरबा अलग बर्तन में डाल कर वह सब कुछ रब के फ़रिश्ते के पास लाया और उसे बलूत के साय में पेश किया।

20 रब के फ़रिश्ते ने कहा, “गोश्त और बेख़मीरी रोटी को ले कर इस पत्थर पर रख दे, फिर शोरबा उस पर उंडेल दे।” जिदाऊन ने ऐसा ही किया। 21 रब के फ़रिश्ते के हाथ में लाठी थी। अब उस ने लाठी के सिरे से गोश्त और बेख़मीरी रोटी को छू दिया। अचानक पत्थर से आग भड़क उठी और ख़ुराक भस्म हो गई। साथ साथ रब का फ़रिश्ता ओझल हो गया।

22 फिर जिदाऊन को यक़ीन आया कि यह वाक़ई रब का फ़रिश्ता था, और वह बोल उठा, “हाय रब क़ादिर-ए-मुतलक़! मुझ पर अफ़सोस, क्यूँकि मैं ने रब के फ़रिश्ते को रू-ब-रू देखा है।”

23 लेकिन रब उस से हमकलाम हुआ और कहा, “तेरी सलामती हो। मत डर, तू नहीं मरेगा।”

24 वहीं जिदाऊन ने रब के लिए क़ुर्बानगाह बनाई और उस का नाम ‘रब सलामत है’ रखा। यह आज तक अबीअज़र के ख़ानदान के शहर उफ़्रा में मौजूद है।

जिदाऊन बाल की क़ुर्बानगाह गिरा देता है

25 उसी रात रब जिदाऊन से हमकलाम हुआ, “अपने बाप के बैलों में से दूसरे बैल को जो सात साल का है चुन ले। फिर अपने बाप की वह क़ुर्बानगाह गिरा दे जिस पर बाल देवता को क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जाती हैं, और यसीरत देवी का वह खम्बा काट डाल जो साथ खड़ा है। 26 इस के बाद उसी पहाड़ी क़िले की चोटी पर रब अपने ख़ुदा के लिए सहीह क़ुर्बानगाह बना दे। यसीरत के खम्बे की कटी हुई लकड़ी और बैल को उस पर रख कर मुझे भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश कर।”

27 चुनाँचे जिदाऊन ने अपने दस नौकरों को साथ ले कर वह कुछ किया जिस का हुक्म रब ने उसे दिया था। लेकिन वह अपने ख़ानदान और शहर के लोगों से डरता था, इस लिए उस ने यह काम दिन के बजाय रात के वक़्त किया।

28 सुब्ह के वक़्त जब शहर के लोग उठे तो देखा
कि बाल की क़ुर्बानगाह ढा दी गई है और यसीरत
देवी का साथ वाला खम्बा काट दिया गया है। इन की
जगह एक नई क़ुर्बानगाह बनाई गई है जिस पर बैल
को चढ़ाया गया है। 29 उन्हों ने एक दूसरे से पूछा,
“किस ने यह किया?” जब वह इस बात की तफ़्तीश
करने लगे तो किसी ने उन्हें बताया कि जिदाऊन बिन
यूआस ने यह सब कुछ किया है।
30 तब वह यूआस के घर गए और तक़ाज़ा किया,
“अपने बेटे को घर से निकाल लाएँ। लाज़िम है कि
वह मर जाए, क्यूँकि उस ने बाल की क़ुर्बानगाह को
गिरा कर साथ वाला यसीरत देवी का खम्बा भी काट
डाला है।”
31 लेकिन यूआस ने उन से जो उस के सामने खड़े
थे कहा, “क्या आप बाल के दिफ़ा में लड़ना चाहते
हैं? जो भी बाल के लिए लड़ेगा उसे कल सुब्ह तक
मार दिया जाएगा। अगर बाल वाक़ई ख़ुदा है तो वह
ख़ुद अपने दिफ़ा में लड़े जब कोई उस की क़ुर्बानगाह
को ढा दे।”
32 चूँकि जिदाऊन ने बाल की क़ुर्बानगाह गिरा दी
थी इस लिए उस का नाम यरुब्बाल यानी ‘बाल उस
से लड़े’ पड़ गया।

जिदाऊन अल्लाह से निशान माँगता है

33 कुछ देर के बाद तमाम मिदियानी, अमालीक़ी
और दूसरी मशरिक़ी क़ौमें जमा हुईं और दरया-ए-
यर्दन को पार करके अपने डेरे मैदान-ए-यज़्रएल में
लगाए। 34 फिर रब का रूह जिदाऊन पर नाज़िल
हुआ। उस ने नरसिंगा फूँक कर अबीअज़र के
ख़ानदान के मर्दों को अपने पीछे हो लेने के
लिए बुलाया। 35 साथ साथ उस ने अपने क़ासिदों
को मनस्सी के क़बीले और आशर, ज़बूलून और
नफ़्ताली के क़बीलों के पास भी भेज दिया। तब वह
भी आए और जिदाऊन के मर्दों के साथ मिल कर उस
के पीछे हो लिए।
36 जिदाऊन ने अल्लाह से दुआ की, “अगर तू वाक़ई
इस्राईल को अपने वादे के मुताबिक़ मेरे ज़रीए बचाना
चाहता है 37 तो मुझे यक़ीन दिला। मैं रात को ताज़ा
कतरी हुई ऊन गन्दुम गाहने के फ़र्श पर रख दूँगा।
कल सुब्ह अगर सिर्फ़ ऊन पर ओस पड़ी हो और
इर्दगिर्द का सारा फ़र्श ख़ुश्क हो तो मैं जान लूँगा कि
वाक़ई तू अपने वादे के मुताबिक़ इस्राईल को मेरे
ज़रीए बचाएगा।”
38 वही कुछ हुआ जिस की दरख़्वास्त जिदाऊन ने
की थी। अगले दिन जब वह सुब्ह-सवेरे उठा तो ऊन
ओस से तर थी। जब उस ने उसे निचोड़ा तो इतना
पानी था कि बर्तन भर गया।
39 फिर जिदाऊन ने अल्लाह से कहा, “मुझ से ग़ुस्से
न हो जाना अगर मैं तुझ से एक बार फिर दरख़्वास्त
करूँ। मुझे एक आख़िरी दफ़ा ऊन के ज़रीए तेरी मर्ज़ी
जाँचने की इजाज़त दे। इस दफ़ा ऊन ख़ुश्क रहे और
इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी हो।” 40 उस रात
अल्लाह ने ऐसा ही किया। सिर्फ़ ऊन ख़ुश्क रही जबकि
इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी थी।

अल्लाह जिदाऊन के साथियों को चुन लेता है

7 1 सुब्ह-सवेरे यरुब्बाल यानी जिदाऊन अपने
तमाम लोगों को साथ ले कर हरोद चश्मे
के पास आया। वहाँ उन्हों ने अपने डेरे लगाए।
मिदियानियों ने अपनी ख़ैमागाह उन के शिमाल में
मोरिह पहाड़ के दामन में लगाई हुई थी।
2 रब ने जिदाऊन से कहा, “तेरे पास ज़्यादा लोग
हैं! मैं इस क़िस्म के बड़े लश्कर को मिदियानियों पर
फ़त्ह नहीं दूँगा, वर्ना इस्राईली मेरे सामने डींगें मार
कर कहेंगे, ‘हम ने अपनी ही ताक़त से अपने आप
को बचाया है!’ 3 इस लिए लश्करगाह में एलान कर
कि जो डर के मारे परेशान हो वह अपने घर वापस
चला जाए।” जिदाऊन ने यूँ किया तो 22,000 मर्द
वापस चले गए जबकि 10,000 जिदाऊन के पास
रहे।

4 लेकिन रब ने दुबारा जिदाऊन से बात की, “अभी
तक ज़्यादा लोग हैं! इन के साथ उतर कर चश्मे
के पास जा। वहाँ मैं उन्हें जाँच कर उन को मुक़र्रर
करूँगा जिन्हें तेरे साथ जाना है।” 5 चुनाँचे जिदाऊन
अपने आदमियों के साथ चश्मे के पास उतर आया।
रब ने उसे हुक्म दिया, “जो भी अपना हाथ पानी से
भर कर उसे कुत्ते की तरह चाट ले उसे एक तरफ़
खड़ा कर। दूसरी तरफ़ उन्हें खड़ा कर जो घुटने टेक
कर पानी पीते हैं।” 6 300 आदमियों ने अपना हाथ
पानी से भर कर उसे चाट लिया जबकि बाक़ी सब
पीने के लिए झुक गए।
7 फिर रब ने जिदाऊन से फ़रमाया, “मैं इन 300
चाटने वाले आदमियों के ज़रीए इस्राईल को बचा
कर मिदियानियों को तेरे हवाले कर दूँगा। बाक़ी
तमाम मर्दों को फ़ारिग़ कर। वह सब अपने अपने
घर वापस चले जाएँ।” 8 चुनाँचे जिदाऊन ने बाक़ी
तमाम आदमियों को फ़ारिग़ कर दिया। सिर्फ़ मुक़र्ररा
300 मर्द रह गए। अब यह दूसरों की ख़ुराक और
नरसिंगे अपने पास रख कर जंग के लिए तय्यार हुए।
उस वक़्त मिदियानी ख़ैमागाह इस्राईलियों के नीचे
वादी में थी।

मिदियानियों पर जिदाऊन की फ़त्ह

9 जब रात हुई तो रब जिदाऊन से हमकलाम हुआ,
“उठ, मिदियानी ख़ैमागाह के पास उतर कर उस पर
हम्ला कर, क्यूँकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूँगा। 10 लेकिन
अगर तू इस से डरता है तो पहले अपने नौकर फ़ूराह
के साथ उतर कर 11 वह बातें सुन ले जो वहाँ के
लोग कह रहे हैं। तब उन पर हम्ला करने की जुरअत
बढ़ जाएगी।”
जिदाऊन फ़ूराह के साथ ख़ैमागाह के किनारे के
पास उतर आया। 12 मिदियानी, अमालीक़ी और
मशरिक़ के दीगर फ़ौजी टिड्डियों के दल की तरह
वादी में फैले हुए थे। उन के ऊँट साहिल की रेत
की तरह बेशुमार थे। 13 जिदाऊन दबे पाँओ दुश्मन
के इतने क़रीब पहुँच गया कि उन की बातें सुन
सकता था। ऐन उस वक़्त एक फ़ौजी दूसरे को अपना
ख़्वाब सुना रहा था, “मैं ने ख़्वाब में देखा कि जौ की
बड़ी रोटी लुढ़कती लुढ़कती हमारी ख़ैमागाह में उतर
आई। यहाँ वह इतनी शिद्दत से ख़ैमे से टकरा गई
कि ख़ैमा उलट कर ज़मीनबोस हो गया।” 14 दूसरे ने
जवाब दिया, “इस का सिर्फ़ यह मतलब हो सकता है
कि इस्राईली मर्द जिदाऊन बिन यूआस की तलवार
ग़ालिब आएगी! अल्लाह उसे मिदियानियों और पूरी
लश्करगाह पर फ़त्ह देगा।”
15 ख़्वाब और उस की ताबीर सुन कर जिदाऊन
ने अल्लाह को सिज्दा किया। फिर उस ने इस्राईली
ख़ैमागाह में वापस आ कर एलान किया, “उठें! रब
ने मिदियानी लश्करगाह को तुम्हारे हवाले कर दिया
है।” 16 उस ने अपने 300 मर्दों को सौ सौ के तीन
गुरोहों में तक़्सीम करके हर एक को एक नरसिंगा
और एक घड़ा दे दिया। हर घड़े में मशअल थी।
17–18 उस ने हुक्म दिया, “जो कुछ मैं करूँगा उस
पर ग़ौर करके वही कुछ करें। पूरी ख़ैमागाह को घेर
लें और ऐन वही कुछ करें जो मैं करूँगा। जब मैं
अपने सौ लोगों के साथ ख़ैमागाह के किनारे पहुँचूँगा
तो हम अपने नरसिंगों को बजा देंगे। यह सुनते ही
आप भी यही कुछ करें और साथ साथ नारा लगाएँ,
‘रब के लिए और जिदाऊन के लिए’!”
19 तक़रीबन आधी रात को जिदाऊन अपने सौ मर्दों
के साथ मिदियानी ख़ैमागाह के किनारे पहुँच गया।
थोड़ी देर पहले पहरेदार बदल गए थे। अचानक
इस्राईलियों ने अपने नरसिंगों को बजाया और अपने
घड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 20 फ़ौरन सौ सौ के
दूसरे दो गुरोहों ने भी ऐसा ही किया। अपने दहने हाथ
में नरसिंगा और बाएँ हाथ में भड़कती मशअल पकड़
कर वह नारा लगाते रहे, “रब के लिए और जिदाऊन
के लिए!” 21 लेकिन वह ख़ैमागाह में दाख़िल न हुए
बल्कि वहीं उस के इर्दगिर्द खड़े रहे। दुश्मन में बड़ी
अफ़्रा-तफ़्री मच गई। चीख़ते चिल्लाते सब भाग जाने
की कोशिश करने लगे। 22 जिदाऊन के 300 आदमी
अपने नरसिंगे बजाते रहे जबकि रब ने ख़ैमागाह में

ऐसी गड़बड़ पैदा की कि लोग एक दूसरे से लड़ने लगे। आख़िरकार पूरा लश्कर बैत-सित्ता, सरीरात और अबील-महूला की सरहद तक फ़रार हुआ जो तब्बात के क़रीब है।

23 फिर जिदाऊन ने नफ़्ताली, आशर और पूरे मनस्सी के मर्दों को बुला लिया, और उन्हों ने मिल कर मिदियानियों का ताक़्क़ुब किया। 24 उस ने अपने क़ासिदों के ज़रीए इफ़्राईम के पूरे पहाड़ी इलाक़े के बाशिन्दों को भी पैग़ाम भेज दिया, “उतर आएँ और मिदियानियों को भाग जाने से रोकें! बैत-बारा तक उन तमाम जगहों पर क़ब्ज़ा कर लें जहाँ दुश्मन दरया-ए-यर्दन को पा-पयादा पार कर सकता है।”

इफ़्राईमी मान गए, 25 और उन्हों ने दो मिदियानी सरदारों को पकड़ कर उन के सर क़लम कर दिए। सरदारों के नाम ओरेब और ज़एब थे, और जहाँ उन्हें पकड़ा गया उन जगहों के नाम ‘ओरेब की चटान’ और ‘ज़एब का अंगूर का रस निकालने वाला हौज़’ पड़ गया। इस के बाद वह दुबारा मिदियानियों का ताक़्क़ुब करने लगे। दरया-ए-यर्दन को पार करने पर उन की मुलाक़ात जिदाऊन से हुई, और उन्हों ने दोनों सरदारों के सर उस के सपुर्द कर दिए।

इफ़्राईम नाराज़ हो जाता है

8 1 लेकिन इफ़्राईम के मर्दों ने शिकायत की, “आप ने हम से कैसा सुलूक किया? आप ने हमें क्यूँ नहीं बुलाया जब मिदियान से लड़ने गए?” ऐसी बातें करते करते उन्हों ने जिदाऊन के साथ सख़्त बह्स की। 2 लेकिन जिदाऊन ने जवाब दिया, “क्या आप मुझ से कहीं ज़्यादा कामयाब न हुए? और जो अंगूर फ़सल जमा करने के बाद इफ़्राईम के बाग़ों में रह जाते हैं क्या वह मेरे छोटे ख़ानदान अबीअज़र की पूरी फ़सल से ज़्यादा नहीं होते? 3 अल्लाह ने तो मिदियान के सरदारों ओरेब और ज़एब को आप के हवाले कर दिया। इस की निस्बत मुझ से क्या कामयाबी हासिल हुई है?” यह सुन कर इफ़्राईम के मर्दों का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

सुक्कात और फ़नूएल जिदाऊन की मदद नहीं करते

4 जिदाऊन अपने 300 मर्दों समेत दरया-ए-यर्दन को पार कर चुका था। दुश्मन का ताक़्क़ुब करते करते वह थक गए थे। 5 इस लिए जिदाऊन ने क़रीब के शहर सुक्कात के बाशिन्दों से गुज़ारिश की, “मेरे फ़ौजियों को कुछ रोटी दे दें। वह थक गए हैं, क्यूँकि हम मिदियानी सरदार ज़िबह और ज़ल्मुन्ना का ताक़्क़ुब कर रहे हैं।” 6 लेकिन सुक्कात के बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हम आप के फ़ौजियों को रोटी क्यूँ दें? क्या आप ज़िबह और ज़ल्मुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” 7 यह सुन कर जिदाऊन ने कहा, “जूँ ही रब इन दो सरदारों ज़िबह और ज़ल्मुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा मैं तुम को रेगिस्तान की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाह कर तबाह कर दूँगा।”

8 वह आगे निकल कर फ़नूएल शहर पहुँच गया। वहाँ भी उस ने रोटी माँगी, लेकिन फ़नूएल के बाशिन्दों ने सुक्कात का सा जवाब दिया। 9 यह सुन कर उस ने कहा, “जब मैं सलामती से वापस आऊँगा तो तुम्हारा यह बुर्ज गिरा दूँगा!”

मिदियानियों पर पूरी फ़त्ह

10 अब ज़िबह और ज़ल्मुन्ना क़र्क़ूर पहुँच गए थे। 15,000 अफ़राद उन के साथ रह गए थे, क्यूँकि मशरिक़ी इत्तिहादियों के 1,20,000 तलवारों से लेस फ़ौजी हलाक हो गए थे। 11 जिदाऊन ने मिदियानियों के पीछे चलते हुए ख़ानाबदोशों का वह रास्ता इस्तेमाल किया जो नूबह और युगबहा के मशरिक़ में है। इस तरीक़े से उस ने उन की लश्करगाह पर उस वक़्त हम्ला किया जब वह अपने आप को महफ़ूज़ समझ रहे थे। 12 दुश्मन में अफ़्रा-तफ़्री पैदा हुई और ज़िबह और ज़ल्मुन्ना फ़रार हो गए। लेकिन जिदाऊन ने उन का ताक़्क़ुब करते करते उन्हें पकड़ लिया।

13 इस के बाद जिदाऊन लौटा। वह अभी हरिस के दर्रा से उतर रहा था 14 कि सुक्कात के एक जवान

आदमी से मिला। जिदाऊन ने उसे पकड़ कर मज्बूर किया कि वह शहर के राहनुमाओं और बुज़ुर्गों की फ़हरिस्त लिख कर दे। 77 बुज़ुर्ग थे। 15 जिदाऊन उन के पास गया और कहा, “देखो, यह हैं ज़िबह और ज़ल्मुन्ना! तुम ने इन ही की वजह से मेरा मज़ाक़ उड़ा कर कहा था कि हम आप के थकेहारे फ़ौजियों को रोटी क्यूँ दें? क्या आप ज़िबह और ज़ल्मुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” 16 फिर जिदाऊन ने शहर के बुज़ुर्गों को गिरिफ़्तार करके उन्हें काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाह कर सबक़ सिखाया। 17 फिर वह फ़नूएल गया और वहाँ का बुर्ज गिरा कर शहर के मर्दों को मार डाला।

18 इस के बाद जिदाऊन ज़िबह और ज़ल्मुन्ना से मुख़ातिब हुआ। उस ने पूछा, “उन आदमियों का हुल्या कैसा था जिन्हें तुम ने तबूर पहाड़ पर क़त्ल किया?”

उन्हों ने जवाब दिया, “वह आप जैसे थे, हर एक शहज़ादा लग रहा था।”

19 जिदाऊन बोला, “वह मेरे सगे भाई थे। रब की हयात की क़सम, अगर तुम उन को ज़िन्दा छोड़ते तो मैं तुम्हें हलाक न करता।”

20 फिर वह अपने पहलौठे यतर से मुख़ातिब हो कर बोला, “इन को मार डालो!” लेकिन यतर अपनी तलवार मियान से निकालने से झिजका, क्यूँकि वह अभी बच्चा था और डरता था। 21 तब ज़िबह और ज़ल्मुन्ना ने कहा, “आप ही हमें मार दें! क्यूँकि जैसा आदमी वैसी उस की ताक़त!” जिदाऊन ने खड़े हो कर उन्हें तलवार से मार डाला और उन के ऊँटों की गरदनों पर लगे तावीज़ उतार कर अपने पास रखे।

जिदाऊन के सबब से इस्राईल बुतपरस्ती में उलझ जाता है

22 इस्राईलियों ने जिदाऊन के पास आ कर कहा, “आप ने हमें मिदियानियों से बचा लिया है, इस लिए हम पर हुकूमत करें, आप, आप के बाद आप का बेटा और उस के बाद आप का पोता।”

23 लेकिन जिदाऊन ने जवाब दिया, “न मैं आप पर हुकूमत करूँगा, न मेरा बेटा। रब ही आप पर हुकूमत करेगा। 24 मेरी सिर्फ़ एक गुज़ारिश है। हर एक मुझे अपने लूटे हुए माल में से एक एक बाली दे दे।” बात यह थी कि दुश्मन के तमाम अफ़राद ने सोने की बालियाँ पहन रखी थीं, क्यूँकि वह इस्माईली थे।

25 इस्राईलियों ने कहा, “हम ख़ुशी से बाली देंगे।” एक चादर ज़मीन पर बिछा कर हर एक ने एक एक बाली उस पर फैंक दी। 26 सोने की इन बालियों का वज़न तक़रीबन 20 किलोग्राम था। इस के इलावा इस्राईलियों ने मुख़्तलिफ़ तावीज़, कान के आवेज़े, अर्ग़वानी रंग के शाही लिबास और ऊँटों की गरदनों में लगी क़ीमती ज़न्जीरें भी दे दीं।

27 इस सोने से जिदाऊन ने एक अफ़ोद [s] बना कर उसे अपने आबाई शहर उफ़्रा में खड़ा किया जहाँ वह उस के और तमाम ख़ानदान के लिए फंदा बन गया। न सिर्फ़ यह बल्कि पूरा इस्राईल ज़िना करके बुत की पूजा करने लगा।

28 उस वक़्त मिदियान ने ऐसी शिकस्त खाई कि बाद में इस्राईल के लिए ख़तरे का बाइस न रहा। और जितनी देर जिदाऊन ज़िन्दा रहा यानी 40 साल तक मुल्क में अम्न-ओ-अमान क़ाइम रहा।

29 जंग के बाद जिदाऊन बिन यूआस दुबारा उफ़्रा में रहने लगा। 30 उस की बहुत सी बीवियाँ और 70 बेटे थे। 31 उस की एक दाश्ता भी थी जो सिकम शहर में रिहाइशपज़ीर थी और जिस के एक बेटा पैदा हुआ। जिदाऊन ने बेटे का नाम अबीमलिक रखा। 32 जिदाऊन उम्ररसीदा था जब फ़ौत हुआ। उसे अबीअज़रियों के शहर उफ़्रा में उस के बाप यूआस की क़ब्र में दफ़नाया गया।

33 जिदाऊन के मरते ही इस्राईली दुबारा ज़िना करके बाल के बुतों की पूजा करने लगे। वह बाल-

---

[s] आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमाम-ए-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इस से मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

बरीत को अपना ख़ास देवता बना कर 34 रब अपने
ख़ुदा को भूल गए जिस ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से
बचा लिया था। 35 उन्हों ने यरुब्बाल यानी जिदाऊन
के ख़ानदान को भी उस एहसान के लिए कोई
मेहरबानी न दिखाई जो जिदाऊन ने उन पर किया
था।

अबीमलिक बादशाह बन जाता है

9 1 एक दिन यरुब्बाल यानी जिदाऊन का बेटा
अबीमलिक अपने मामूओं और माँ के बाक़ी
रिश्तेदारों से मिलने के लिए सिकम गया। उस ने
उन से कहा, 2 “सिकम शहर के तमाम बाशिन्दों
से पूछें, क्या आप अपने आप पर जिदाऊन के 70
बेटों की हुकूमत ज़्यादा पसन्द करेंगे या एक ही
शख़्स की? याद रहे कि मैं आप का ख़ूनी रिश्तेदार
हूँ!” 3 अबीमलिक के मामूओं ने सिकम के तमाम
बाशिन्दों के सामने यह बातें दुहराईं। सिकम के लोगों
ने सोचा, “अबीमलिक हमारा भाई है” इस लिए वह
उस के पीछे लग गए। 4 उन्हों ने उसे बाल-बरीत
देवता के मन्दिर से चाँदी के 70 सिक्के भी दे दिए।

इन पैसों से अबीमलिक ने अपने इर्दगिर्द आवारा
और बदमआश आदमियों का गुरोह जमा किया।
5 उन्हें अपने साथ ले कर वह उफ़्रा पहुँचा जहाँ बाप
का ख़ानदान रहता था। वहाँ उस ने अपने तमाम
भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों को एक ही पत्थर
पर क़त्ल कर दिया। सिर्फ़ यूताम जो जिदाऊन का
सब से छोटा बेटा था कहीं छुप कर बच निकला।
6 इस के बाद सिकम और बैत-मिल्लो के तमाम लोग
उस बलूत के साय में जमा हुए जो सिकम के सतून
के पास था। वहाँ उन्हों ने अबीमलिक को अपना
बादशाह मुक़र्रर किया।

यूताम की अबीमलिक और सिकम पर लानत

7 जब यूताम को इस की इत्तिला मिली तो वह
गरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और ऊँची
आवाज़ से चिल्लाया, “ऐ सिकम के बाशिन्दो, सुनें
मेरी बात! सुनें अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आप
की भी सुने। 8 एक दिन दरख़्तों ने फ़ैसला किया कि
हम पर कोई बादशाह होना चाहिए। वह उसे चुनने
और मसह करने के लिए निकले। पहले उन्हों ने ज़ैतून
के दरख़्त से बात की, ‘हमारे बादशाह बन जाएँ!’
9 लेकिन ज़ैतून के दरख़्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं
अपना तेल पैदा करने से बाज़ आऊँ जिस की अल्लाह
और इन्सान इतनी क़दर करते हैं ताकि दरख़्तों
पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 10 इस के बाद
दरख़्तों ने अन्जीर के दरख़्त से बात की, ‘आएँ, हमारे
बादशाह बन जाएँ!’ 11 लेकिन अन्जीर के दरख़्त ने
जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना मीठा और अच्छा फल
लाने से बाज़ आऊँ ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ?
हरगिज़ नहीं!’ 12 फिर दरख़्तों ने अंगूर की बेल से
बात की, ‘आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 13 लेकिन
अंगूर की बेल ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना रस
पैदा करने से बाज़ आऊँ जिस से अल्लाह और इन्सान
ख़ुश हो जाते हैं ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ?
हरगिज़ नहीं!’ 14 आख़िरकार दरख़्त काँटेदार झाड़ी
के पास आए और कहा, ‘आएँ और हमारे बादशाह
बन जाएँ!’ 15 काँटेदार झाड़ी ने जवाब दिया, ‘अगर
तुम वाक़ई मुझे मसह करके अपना बादशाह बनाना
चाहते हो तो आओ और मेरे साय में पनाह लो। अगर
तुम ऐसा नहीं करना चाहते तो झाड़ी से आग निकल
कर लुबनान के देवदार के दरख़्तों को भस्म कर दे’।”

16 यूताम ने बात जारी रख कर कहा, “अब मुझे
बताएँ, क्या आप ने वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार
किया जब आप ने अबीमलिक को अपना बादशाह
बना लिया? क्या आप ने जिदाऊन और उस के
ख़ानदान के साथ अच्छा सुलूक किया? क्या आप
ने उस पर शुक्रगुज़ारी का वह इज़हार किया जिस
के लाइक़ वह था? 17 मेरे बाप ने आप की ख़ातिर
जंग की। आप को मिदियानियों से बचाने के लिए
उस ने अपनी जान ख़तरे में डाल दी। 18 लेकिन आज
आप जिदाऊन के घराने के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए
हैं। आप ने उस के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर

ज़बह करके उस की लौंडी के बेटे अबीमलिक को सिकम का बादशाह बना लिया है, और यह सिर्फ़ इस लिए कि वह आप का रिश्तेदार है। 19 अब सुनें! अगर आप ने जिदाऊन और उस के ख़ानदान के साथ वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया है तो फिर अल्लाह करे कि अबीमलिक आप के लिए ख़ुशी का बाइस हो और आप उस के लिए। 20 लेकिन अगर ऐसा नहीं था तो अल्लाह करे कि अबीमलिक से आग निकल कर आप सब को भस्म कर दे जो सिकम और बैत-मिल्लो में रहते हैं! और आग आप से निकल कर अबीमलिक को भी भस्म कर दे!" 21 यह कह कर यूताम ने भाग कर बैर में पनाह ली, क्यूँकि वह अपने भाई अबीमलिक से डरता था।

सिकम के बाशिन्दे अबीमलिक के ख़िलाफ़ हो जाते हैं

22 अबीमलिक की इस्राईल पर हुकूमत तीन साल तक रही। 23 लेकिन फिर अल्लाह ने एक बुरी रूह भेज दी जिस ने अबीमलिक और सिकम के बाशिन्दों में नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा कर दी। नतीजे में सिकम के लोगों ने बग़ावत की। 24 यूँ अल्लाह ने उसे इस की सज़ा दी कि उस ने अपने भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों को क़त्ल किया था। सिकम के बाशिन्दों को भी सज़ा मिली, क्यूँकि उन्हों ने इस में अबीमलिक की मदद की थी।

25 उस वक़्त सिकम के लोग इर्दगिर्द की चोटियों पर चढ़ कर अबीमलिक की ताक में बैठ गए। जो भी वहाँ से गुज़रा उसे उन्हों ने लूट लिया। इस बात की ख़बर अबीमलिक तक पहुँच गई।

26 उन दिनों में एक आदमी अपने भाइयों के साथ सिकम आया जिस का नाम जाल बिन अबद था। सिकम के लोगों से उस का अच्छा-ख़ासा ताल्लुक़ बन गया, और वह उस पर एतिबार करने लगे। 27 अंगूर की फ़सल पक गई थी। लोग शहर से निकले और अपने बाग़ों में अंगूर तोड़ कर उन से रस निकालने लगे। फिर उन्हों ने अपने देवता के मन्दिर में जश्न मनाया। जब वह ख़ूब खा पी रहे थे तो अबीमलिक पर लानत करने लगे। 28 जाल बिन अबद ने कहा, "सिकम का अबीमलिक के साथ क्या वास्ता कि हम उस के ताबे रहें? वह तो सिर्फ़ यरुब्बाल का बेटा है, जिस का नुमाइन्दा ज़बूल है। उस की ख़िदमत मत करना बल्कि सिकम के बानी हमोर के लोगों की! हम अबीमलिक की ख़िदमत क्यूँ करें? 29 काश शहर का इन्तिज़ाम मेरे हाथ में होता! फिर मैं अबीमलिक को जल्द ही निकाल देता। मैं उसे चैलेंज देता कि आओ, अपने फ़ौजियों को जमा करके हम से लड़ो!"

अबीमलिक सिकम से लड़ता है

30 जाल बिन अबद की बात सुन कर सिकम का सरदार ज़बूल बड़े ग़ुस्से में आ गया। 31 अपने क़ासिदों की मारिफ़त उस ने अबीमलिक को चुपके से इत्तिला दी, "जाल बिन अबद अपने भाइयों के साथ सिकम आ गया है जहाँ वह पूरे शहर को आप के ख़िलाफ़ खड़े हो जाने के लिए उकसा रहा है। 32 अब ऐसा करें कि रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत इधर आएँ और खेतों में ताक में रहें। 33 सुब्ह-सवेरे जब सूरज तुलू होगा तो शहर पर हम्ला करें। जब जाल अपने आदमियों के साथ आप के ख़िलाफ़ लड़ने आएगा तो उस के साथ वह कुछ करें जो आप मुनासिब समझते हैं।" 34 यह सुन कर अबीमलिक रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत रवाना हुआ। उस ने उन्हें चार गुरोहों में तक़्सीम किया जो सिकम को घेर कर ताक में बैठ गए।

35 सुब्ह के वक़्त जब जाल घर से निकल कर शहर के दरवाज़े में खड़ा हुआ तो अबीमलिक और उस के फ़ौजी अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। 36 उन्हें देख कर जाल ने ज़बूल से कहा, "देखो, लोग पहाड़ों की चोटियों से उतर रहे हैं!" ज़बूल ने जवाब दिया, "नहीं, नहीं, जो आप को आदमी लग रहे हैं वह सिर्फ़ पहाड़ों के साय हैं।" 37 लेकिन जाल को तसल्ली न हुई। वह दुबारा बोल उठा, "देखो, लोग दुनिया की

नाफ़ [t]से उतर रहे हैं। और एक और गुरोह रम्मालों के
बलूत से हो कर आ रहा है।” 38 फिर ज़बूल ने उस से
कहा, “अब तेरी बड़ी बड़ी बातें कहाँ रहीं? क्या तू
ने नहीं कहा था, ‘अबीमलिक कौन है कि हम उस के
ताबे रहें?’ अब यह लोग आ गए हैं जिन का मज़ाक़
तू ने उड़ाया। जा, शहर से निकल कर उन से लड़!”
39 तब जाल सिकम के मर्दों के साथ शहर से
निकला और अबीमलिक से लड़ने लगा। 40 लेकिन
वह हार गया, और अबीमलिक ने शहर के दरवाज़े
तक उस का ताक़्क़ुब किया। भागते भागते सिकम के
बहुत से अफ़राद रास्ते में गिर कर हलाक हो गए।
41 फिर अबीमलिक अरूमा चला गया जबकि ज़बूल
ने पीछे रह कर जाल और उस के भाइयों को शहर
से निकाल दिया।
42 अगले दिन सिकम के लोग शहर से निकल कर
मैदान में आना चाहते थे। जब अबीमलिक को यह
ख़बर मिली 43–44 तो उस ने अपनी फ़ौज को तीन
गुरोहों में तक़्सीम किया। यह गुरोह दुबारा सिकम को
घेर कर घात में बैठ गए। जब लोग शहर से निकले तो
अबीमलिक अपने गुरोह के साथ छुपने की जगह से
निकल आया और शहर के दरवाज़े में खड़ा हो गया।
बाक़ी दो गुरोह मैदान में मौजूद अफ़राद पर टूट पड़े
और सब को हलाक कर दिया। 45 फिर अबीमलिक
ने शहर पर हम्ला किया। लोग पूरा दिन लड़ते रहे,
लेकिन आख़िरकार अबीमलिक ने शहर पर क़ब्ज़ा
करके तमाम बाशिन्दों को मौत के घाट उतार दिया।
उस ने शहर को तबाह किया और खंडरात पर नमक
बिखेर कर उस की हत्मी तबाही ज़ाहिर कर दी।
46 जब सिकम के बुर्ज के रहने वालों को यह इत्तिला
मिली तो वह एल-बरीत देवता के मन्दिर के तहख़ाने
में छुप गए। 47 जब अबीमलिक को पता चला 48 तो
वह अपने फ़ौजियों समेत ज़ल्मोन पहाड़ पर चढ़
गया। वहाँ उस ने कुल्हाड़ी से शाख़ काट कर अपने
कंधों पर रख ली और अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया,
“जल्दी करो! सब ऐसा ही करो।” 49 फ़ौजियों ने भी
शाख़ें काटीं और फिर अबीमलिक के पीछे लग कर
मन्दिर के पास वापस आए। वहाँ उन्हों ने तमाम
लकड़ी तहख़ाने की छत पर जमा करके उसे जला
दिया। यूँ सिकम के बुर्ज के तक़रीबन 1,000 मर्द-
ओ-ख़वातीन सब भस्म हो गए।

अबीमलिक की मौत

50 वहाँ से अबीमलिक तैबिज़ के ख़िलाफ़ बढ़
गया। उस ने शहर का मुहासरा करके उस पर क़ब्ज़ा
कर लिया। 51 लेकिन शहर के बीच में एक मज़बूत
बुर्ज था। तमाम मर्द-ओ-ख़वातीन उस में फ़रार हुए
और बुर्ज के दरवाज़ों पर कुंडी लगा कर छत पर
चढ़ गए।
52 अबीमलिक लड़ते लड़ते बुर्ज के दरवाज़े के
क़रीब पहुँच गया। वह उसे जलाने की कोशिश करने
लगा 53 तो एक औरत ने चक्की का ऊपर का पाट
उस के सर पर फैंक दिया, और उस की खोपड़ी फट
गई। 54 जल्दी से अबीमलिक ने अपने सिलाहबर्दार
को बुलाया। उस ने कहा, “अपनी तलवार खैंच कर
मुझे मार दो! वर्ना लोग कहेंगे कि एक औरत ने मुझे
मार डाला।” चुनाँचे नौजवान ने अपनी तलवार उस
के बदन में से गुज़ार दी और वह मर गया। 55 जब
फ़ौजियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया है तो वह
अपने अपने घर चले गए।
56 यूँ अल्लाह ने अबीमलिक को उस बदी का बदला
दिया जो उस ने अपने 70 भाइयों को क़त्ल करके
अपने बाप के ख़िलाफ़ की थी। 57 और अल्लाह ने
सिकम के बाशिन्दों को भी उन की शरीर हरकतों की
मुनासिब सज़ा दी। यूताम बिन यरुब्बाल की लानत
पूरी हुई।

---

[t]मतलब ग़ालिबन कोह-ए-गरिज़ीम है।

तोला और याईर

10 1 अबीमलिक की मौत के बाद तोला बिन
फ़ुव्वा बिन दोदो इस्राईल को बचाने के
लिए उठा। वह इश्कार के क़बीले से था और इफ़्राईम
के पहाड़ी इलाक़े के शहर समीर में रिहाइशपज़ीर था।
2 तोला 23 साल इस्राईल का क़ाज़ी रहा। फिर वह
फ़ौत हुआ और समीर में दफ़नाया गया।

3 उस के बाद जिलिआद का रहने वाला याईर
क़ाज़ी बन गया। उस ने 22 साल इस्राईल की
राहनुमाई की। 4 याईर के 30 बेटे थे। हर बेटे का एक
एक गधा और जिलिआद में एक एक आबादी थी।
आज तक इन का नाम 'हव्वोत-याईर' यानी याईर
की बस्तियाँ है। 5 जब याईर इन्तिक़ाल कर गया तो
उसे क़ामोन में दफ़नाया गया।

इस्राईल दुबारा रब से दूर हो जाता है

6 याईर की मौत के बाद इस्राईली दुबारा ऐसी
हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। वह कई
देवताओं के पीछे लग गए जिन में बाल देवता,
अस्तारात देवी और शाम, सैदा, मोआब, अम्मोनियों
और फ़िलिस्तियों के देवता शामिल थे। यूँ वह रब
की परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ आए। 7 तब
उस का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उस ने उन्हें
फ़िलिस्तियों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया।
8 उसी साल के दौरान इन क़ौमों ने जिलिआद में
इस्राईलियों के उस इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिस
में पुराने ज़माने में अमोरी आबाद थे और जो दरया-
ए-यर्दन के मशरिक़ में था। फ़िलिस्ती और अम्मोनी
18 साल तक इस्राईलियों को कुचलते और दबाते
रहे। 9 न सिर्फ़ यह बल्कि अम्मोनियों ने दरया-ए-यर्दन
को पार करके यहूदाह, बिनयमीन और इफ़्राईम के
क़बीलों पर भी हम्ला किया।

जब इस्राईली बड़ी मुसीबत में थे 10 तो आख़िरकार
उन्हों ने मदद के लिए रब को पुकारा और इक़्रार
किया, "हम ने तेरा गुनाह किया है। अपने ख़ुदा
को तर्क करके हम ने बाल के बुतों की पूजा
की है।" 11 रब ने जवाब में कहा, "जब मिस्री,
अमोरी, अम्मोनी, फ़िलिस्ती, 12 सैदानी, अमालीक़ी
और माओनी तुम पर ज़ुल्म करते थे और तुम मदद के
लिए मुझे पुकारने लगे तो क्या मैं ने तुम्हें न बचाया?
13 इस के बावुजूद तुम बार बार मुझे तर्क करके दीगर
माबूदों की पूजा करते रहे हो। इस लिए अब से मैं
तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। 14 जाओ, उन देवताओं
के सामने चीख़ते चिल्लाते रहो जिन्हें तुम ने चुन लिया
है! वही तुम्हें मुसीबत से निकालें।"

15 लेकिन इस्राईलियों ने रब से फ़र्याद की, "हम से
ग़लती हुई है। जो कुछ भी तू मुनासिब समझता है
वह हमारे साथ कर। लेकिन तू ही हमें आज बचा।"
16 वह अजनबी माबूदों को अपने बीच में से निकाल
कर रब की दुबारा ख़िदमत करने लगे। तब वह
इस्राईल का दुख बर्दाश्त न कर सका।

इफ़्ताह क़ाज़ी बन जाता है

17 उन दिनों में अम्मोनी अपने फ़ौजियों को जमा
करके जिलिआद में ख़ैमाज़न हुए। जवाब में इस्राईली
भी जमा हुए और मिस्फ़ाह में अपने ख़ैमे लगाए।
18 जिलिआद के राहनुमाओं ने एलान किया, "हमें
ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो हमारे आगे चल कर
अम्मोनियों पर हम्ला करे। जो कोई ऐसा करे वह
जिलिआद के तमाम बाशिन्दों का सरदार बनेगा।"

11 1 उस वक़्त जिलिआद में एक ज़बरदस्त
सूरमा बनाम इफ़्ताह था। बाप का नाम
जिलिआद था जबकि माँ कस्बी थी। 2 लेकिन बाप
की बीवी के बेटे भी थे। जब बालिग़ हुए तो उन्हों ने
इफ़्ताह से कहा, "हम मीरास तेरे साथ नहीं बाँटेंगे,
क्यूँकि तू हमारा सगा भाई नहीं है।" उन्हों ने उसे भगा
दिया, 3 और वह वहाँ से हिज्रत करके मुल्क-ए-तोब
में जा बसा। वहाँ कुछ आवारा लोग उस के पीछे हो
लिए जो उस के साथ इधर उधर घूमते फिरते रहे।

4 जब कुछ देर के बाद अम्मोनी फ़ौज इस्राईल से
लड़ने आई 5 तो जिलिआद के बुज़ुर्ग इफ़्ताह को

वापस लाने के लिए मुल्क-ए-तोब में आए। 6 उन्हों ने
गुज़ारिश की, “आएँ, अम्मोनियों से लड़ने में हमारी
राहनुमाई करें।” 7 लेकिन इफ़्ताह ने एतिराज़ किया,
“आप इस वक़्त मेरे पास क्यूँ आए हैं जब मुसीबत
में हैं? आप ही ने मुझ से नफ़रत करके मुझे बाप के
घर से निकाल दिया था।”
8 बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हम इस लिए आप के
पास वापस आए हैं कि आप अम्मोनियों के साथ
जंग में हमारी मदद करें। अगर आप ऐसा करें तो
हम आप को पूरे जिलिआद का हुक्मरान बना लेंगे।”
9 इफ़्ताह ने पूछा, “अगर मैं आप के साथ अम्मोनियों
के ख़िलाफ़ लड़ूँ और रब मुझे उन पर फ़त्ह दे तो
क्या आप वाक़ई मुझे अपना हुक्मरान बना लेंगे?”
10 उन्हों ने जवाब दिया, “रब हमारा गवाह है! वही
हमें सज़ा दे अगर हम अपना वादा पूरा न करें।”
11 यह सुन कर इफ़्ताह जिलिआद के बुज़ुर्गों के
साथ मिस्फ़ाह गया। वहाँ लोगों ने उसे अपना सरदार
और फ़ौज का कमाँडर बना लिया। मिस्फ़ाह में उस ने
रब के हुज़ूर वह तमाम बातें दुहराईं जिन का फ़ैसला
उस ने बुज़ुर्गों के साथ किया था।

जंग से गुरेज़ करने की कोशिश

12 फिर इफ़्ताह ने अम्मोनी बादशाह के पास अपने
क़ासिदों को भेज कर पूछा, “हमारा आप से क्या
वास्ता कि आप हम से लड़ने आए हैं?” 13 बादशाह
ने जवाब दिया, “जब इस्राईली मिस्र से निकले तो
उन्हों ने अर्नोन, यब्बोक़ और यर्दन के दरयाओं के
दरमियान का इलाक़ा मुझ से छीन लिया। अब उसे
झगड़ा किए बग़ैर मुझे वापस कर दो।”
14 फिर इफ़्ताह ने अपने क़ासिदों को दुबारा
अम्मोनी बादशाह के पास भेज कर 15 कहा,
“इस्राईल ने न तो मोआबियों से और न अम्मोनियों
से ज़मीन छीनी। 16 हक़ीक़त यह है कि जब हमारी
क़ौम मिस्र से निकली तो वह रेगिस्तान में से गुज़र
कर बहर-ए-क़ुल्ज़ुम और वहाँ से हो कर क़ादिस
पहुँच गई। 17 क़ादिस से उन्हों ने अदोम के बादशाह
के पास क़ासिद भेज कर गुज़ारिश की, ‘हमें अपने
मुल्क में से गुज़रने दें।’ लेकिन उस ने इन्कार किया।
फिर इस्राईलियों ने मोआब के बादशाह से दरख़्वास्त
की, लेकिन उस ने भी अपने मुल्क में से गुज़रने की
इजाज़त न दी। इस पर हमारी क़ौम कुछ देर के
लिए क़ादिस में रही। 18 आख़िरकार वह रेगिस्तान
में वापस जा कर अदोम और मोआब के जुनूब में
चलते चलते मोआब के मशरिक़ी किनारे पर पहुँची,
वहाँ जहाँ दरया-ए-अर्नोन उस की सरहद है। लेकिन
वह मोआब के इलाक़े में दाख़िल न हुए बल्कि दरया
के मशरिक़ में ख़ैमाज़न हुए। 19 वहाँ से इस्राईलियों
ने हस्बोन के रहने वाले अमोरी बादशाह सीहोन को
पैग़ाम भिजवाया, ‘हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें
ताकि हम अपने मुल्क में दाख़िल हो सकें।’ 20 लेकिन
सीहोन को शक हुआ। उसे यक़ीन नहीं था कि वह
मुल्क में से गुज़र कर आगे बढ़ेंगे। उस ने न सिर्फ़
इन्कार किया बल्कि अपने फ़ौजियों को जमा करके
यहज़ शहर में ख़ैमाज़न हुआ और इस्राईलियों के साथ
लड़ने लगा।
21 लेकिन रब इस्राईल के ख़ुदा ने सीहोन और उस
के तमाम फ़ौजियों को इस्राईल के हवाले कर दिया।
उन्हों ने उन्हें शिकस्त दे कर अमोरियों के पूरे मुल्क
पर क़ब्ज़ा कर लिया। 22 यह तमाम इलाक़ा जुनूब में
दरया-ए-अर्नोन से ले कर शिमाल में दरया-ए-यब्बोक़
तक और मशरिक़ के रेगिस्तान से ले कर मग़रिब में
दरया-ए-यर्दन तक हमारे क़ब्ज़े में आ गया। 23 देखें,
रब इस्राईल के ख़ुदा ने अपनी क़ौम के आगे आगे
अमोरियों को निकाल दिया है। तो फिर आप का
इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का क्या हक़ है? 24 आप
भी समझते हैं कि जिसे आप के देवता कमोस ने
आप के आगे से निकाल दिया है उस के मुल्क पर
क़ब्ज़ा करने का आप का हक़ है। इसी तरह जिसे
रब हमारे ख़ुदा ने हमारे आगे आगे निकाल दिया है
उस के मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का हक़ हमारा है।
25 क्या आप अपने आप को मोआबी बादशाह बलक़
बिन सफ़ोर से बेहतर समझते हैं? उस ने तो इस्राईल

से लड़ने बल्कि झगड़ने तक की हिम्मत न की।
26 अब इस्राईली 300 साल से हस्बोन और अरोईर के
शहरों में उन के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत
आबाद हैं और इसी तरह दरया-ए-अर्नोन के किनारे
पर के शहरों में। आप ने इस दौरान इन जगहों पर
क़ब्ज़ा क्यूँ न किया? 27 चुनाँचे मैं ने आप से ग़लत
सुलूक नहीं किया बल्कि आप ही मेरे साथ ग़लत
सुलूक कर रहे हैं। क्यूँकि मुझ से जंग छेड़ना ग़लत
है। रब जो मुन्सिफ़ है वही आज इस्राईल और अम्मोन
के झगड़े का फ़ैसला करे!”
28 लेकिन अम्मोनी बादशाह ने इफ़्ताह के पैग़ाम पर
ध्यान न दिया।

इफ़्ताह की फ़त्ह

29 फिर रब का रूह इफ़्ताह पर नाज़िल हुआ, और
वह जिलिआद और मनस्सी में से गुज़र गया, फिर
जिलिआद के मिस्फ़ाह के पास वापस आया। वहाँ से
वह अपनी फ़ौज ले कर अम्मोनियों से लड़ने निकला।
30 पहले उस ने रब के सामने क़सम खाई, “अगर तू
मुझे अम्मोनियों पर फ़त्ह दे 31 और मैं सहीह-सलामत
लौटूँ तो जो कुछ भी पहले मेरे घर के दरवाज़े से
निकल कर मुझ से मिले वह तेरे लिए मख़्सूस किया
जाएगा। मैं उसे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
पेश करूँगा।”
32 फिर इफ़्ताह अम्मोनियों से लड़ने गया, और रब
ने उसे उन पर फ़त्ह दी। 33 इफ़्ताह ने अरोईर में
दुश्मन को शिकस्त दी और इसी तरह मिन्नीत और
अबील-करामीम तक मज़ीद बीस शहरों पर क़ब्ज़ा
कर लिया। यूँ इस्राईल ने अम्मोन को ज़ेर कर दिया।

इफ़्ताह की वापसी

34 इस के बाद इफ़्ताह मिस्फ़ाह वापस चला गया।
वह अभी घर के क़रीब था कि उस की इक्लौती
बेटी दफ़ बजाती और नाचती हुई घर से निकल आई।
इफ़्ताह का कोई और बेटा या बेटी नहीं थी। 35 अपनी
बेटी को देख कर वह रंज के मारे अपने कपड़े फाड़
कर चीख़ उठा, “हाय मेरी बेटी! तू ने मुझे ख़ाक में
दबा कर तबाह कर दिया है, क्यूँकि मैं ने रब के सामने
ऐसी क़सम खाई है जो बदली नहीं जा सकती।”
36 बेटी ने कहा, “अब्बू, आप ने क़सम खा कर
रब से वादा किया है, इस लिए लाज़िम है कि
मेरे साथ वह कुछ करें जिस की क़सम आप ने
खाई है। आख़िर उसी ने आप को दुश्मन से बदला
लेने की कामयाबी बख़्श दी है। 37 लेकिन मेरी एक
गुज़ारिश है। मुझे दो माह की मुहलत दें ताकि मैं
अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में जा कर अपनी
ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम करूँ।”
38 इफ़्ताह ने इजाज़त दी। फिर बेटी दो माह के लिए
अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में चली गई और
अपनी ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम किया। 39 फिर
वह अपने बाप के पास वापस आई, और उस ने
अपनी क़सम का वादा पूरा किया। बेटी ग़ैरशादीशुदा
थी।
उस वक़्त से इस्राईल में दस्तूर राइज है 40 कि
इस्राईल की जवान औरतें सालाना चार दिन के लिए
अपने घरों से निकल कर इफ़्ताह की बेटी की याद
में जश्न मनाती हैं।

इफ़्राईम का क़बीला इफ़्ताह पर हम्ला करता है

12 1 अम्मोनियों पर फ़त्ह के बाद इफ़्राईम के
क़बीले के आदमी जमा हुए और दरया-ए-
यर्दन को पार करके इफ़्ताह के पास आए जो सफ़ोन
में था। उन्हों ने शिकायत की, “आप क्यूँ हमें बुलाए
बग़ैर अम्मोनियों से लड़ने गए? अब हम आप को
आप के घर समेत जला देंगे!”
2 इफ़्ताह ने एतिराज़ किया, “जब मेरी और मेरी
क़ौम का अम्मोनियों के साथ सख़्त झगड़ा छिड़ गया
तो मैं ने आप को बुलाया, लेकिन आप ने मुझे उन के
हाथ से न बचाया। 3 जब मैं ने देखा कि आप मदद
नहीं करेंगे तो अपनी जान ख़तरे में डाल कर आप के
बग़ैर ही अम्मोनियों से लड़ने गया। और रब ने मुझे

उन पर फ़त्ह बख़्शी। अब मुझे बताएँ कि आप क्यूँ मेरे पास आ कर मुझ पर हम्ला करना चाहते हैं?”

4 इफ़्राईमियों ने जवाब दिया, “तुम जो जिलिआद में रहते हो बस इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीलों से निकले हुए भगोड़े हो।” तब इफ़्ताह ने जिलिआद के मर्दों को जमा किया और इफ़्राईमियों से लड़ कर उन्हें शिकस्त दी।

5 फिर जिलिआदियों ने दरया-ए-यर्दन के कम-गहरे मक़ामों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब कोई गुज़रना चाहता तो वह पूछते, “क्या आप इफ़्राईमी हैं?” अगर वह इन्कार करता 6 तो जिलिआद के मर्द कहते, “तो फिर लफ़्ज़ ‘शिब्बोलेत’ [u]बोलें।” अगर वह इफ़्राईमी होता तो इस के बजाय “सिब्बोलेत” कहता। फिर जिलिआदी उसे पकड़ कर वहीं मार डालते। उस वक़्त कुल 42,000 इफ़्राईमी हलाक हुए।

7 इफ़्ताह ने छः साल इस्राईल की राहनुमाई की। जब फ़ौत हुआ तो उसे जिलिआद के किसी शहर में दफ़नाया गया।

इब्ज़ान, ऐलोन और अब्दोन

8 इफ़्ताह के बाद इब्ज़ान इस्राईल का क़ाज़ी बना। वह बैत-लहम में आबाद था, 9 और उस के 30 बेटे और 30 बेटियाँ थीं। उस की तमाम बेटियाँ शादीशुदा थीं और इस वजह से बाप के घर में नहीं रहती थीं। लेकिन उसे 30 बेटों के लिए बीवियाँ मिल गई थीं, और सब उस के घर में रहते थे। इब्ज़ान ने सात साल के दौरान इस्राईल की राहनुमाई की। 10 फिर वह इन्तिक़ाल कर गया और बैत-लहम में दफ़नाया गया।

11 उस के बाद ऐलोन क़ाज़ी बना। वह ज़बूलून के क़बीले से था और 10 साल के दौरान इस्राईल की राहनुमाई करता रहा। 12 जब वह कूच कर गया तो उसे ज़बूलून के अय्यालोन में दफ़न किया गया।

13 फिर अब्दोन बिन हिल्लेल क़ाज़ी बना। वह शहर फ़िरआतोन का था। 14 उस के 40 बेटे और 30 पोते थे जो 70 गधों पर सफ़र किया करते थे। अब्दोन ने आठ साल के दौरान इस्राईल की राहनुमाई की। 15 फिर वह भी जाँ-ब-हक़ हो गया, और उसे अमालीक़ियों के पहाड़ी इलाक़े के शहर फ़िरआतोन में दफ़नाया गया, जो उस वक़्त इफ़्राईम का हिस्सा था।

सम्सून की पैदाइश की पेशगोई

13 1 फिर इस्राईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। इस लिए उस ने उन्हें फ़िलिस्तियों के हवाले कर दिया जो उन्हें 40 साल दबाते रहे। 2 उस वक़्त एक आदमी सुरआ शहर में रहता था जिस का नाम मनोहा था। दान के क़बीले का यह आदमी बेऔलाद था, क्यूँकि उस की बीवी बाँझ थी।

3 एक दिन रब का फ़रिश्ता मनोहा की बीवी पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “गो तुझ से बच्चे पैदा नहीं हो सकते, अब तू हामिला होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। 4 मै या कोई और नशाआवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक चीज़ खाना। 5 क्यूँकि जो बेटा पैदा होगा वह पैदाइश से ही अल्लाह के लिए मख़्सूस होगा। लाज़िम है कि उस के बाल कभी न काटे जाएँ। यही बच्चा इस्राईल को फ़िलिस्तियों से बचाने लगेगा।”

6 बीवी अपने शौहर मनोहा के पास गई और उसे सब कुछ बताया, “अल्लाह का एक बन्दा मेरे पास आया। वह अल्लाह का फ़रिश्ता लग रहा था, यहाँ तक कि मैं सख़्त घबरा गई। मैं ने उस से न पूछा कि वह कहाँ से है, और ख़ुद उस ने मुझे अपना नाम न बताया। 7 लेकिन उस ने मुझे बताया, ‘तू हामिला होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। अब मै या कोई और नशाआवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक चीज़

---

[u] यानी नदी।

खाना। क्यूँकि बेटा पैदाइश से ही मौत तक अल्लाह के लिए मख़्सूस होगा'।"

8 यह सुन कर मनोहा ने रब से दुआ की, "ऐ रब, बराह-ए-करम मर्द-ए-ख़ुदा को दुबारा हमारे पास भेज ताकि वह हमें सिखाए कि हम उस बेटे के साथ क्या करें जो पैदा होने वाला है।" 9 अल्लाह ने उस की सुनी और अपने फ़रिश्ते को दुबारा उस की बीवी के पास भेज दिया। उस वक़्त वह शौहर के बग़ैर खेत में थी। 10 फ़रिश्ते को देख कर वह जल्दी से मनोहा के पास आई और उसे इत्तिला दी, "जो आदमी पिछले दिनों में मेरे पास आया वह दुबारा मुझ पर ज़ाहिर हुआ है!"

11 मनोहा उठ कर अपनी बीवी के पीछे पीछे फ़रिश्ते के पास आया। उस ने पूछा, "क्या आप वही आदमी हैं जिस ने पिछले दिनों में मेरी बीवी से बात की थी?" फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "जी, मैं ही था।" 12 फिर मनोहा ने सवाल किया, "जब आप की पेशगोई पूरी हो जाएगी तो हमें बेटे के तर्ज़-ए-ज़िन्दगी और सुलूक के सिलसिले में किन किन बातों का ख़याल करना है?"

13 रब के फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "लाज़िम है कि तेरी बीवी उन तमाम चीज़ों से पर्हेज़ करे जिन का ज़िक्र मैं ने किया। 14 वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए। न वह मै, न कोई और नशाआवर चीज़ पिए। नापाक चीज़ें खाना भी मना है। वह मेरी हर हिदायत पर अमल करे।"

15 मनोहा ने रब के फ़रिश्ते से गुज़ारिश की, "मेहरबानी करके थोड़ी देर हमारे पास ठहरें ताकि हम बकरी का बच्चा ज़बह करके आप के लिए खाना तय्यार कर सकें।" 16 अब तक मनोहा ने यह बात नहीं पहचानी थी कि मेहमान असल में रब का फ़रिश्ता है। फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "ख़्वाह तू मुझे रोके भी मैं कुछ नहीं खाऊँगा। लेकिन अगर तू कुछ करना चाहे तो बकरी का बच्चा रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश कर।"

17 मनोहा ने उस से पूछा, "आप का क्या नाम है? क्यूँकि जब आप की यह बातें पूरी हो जाएँगी तो हम आप की इज़्ज़त करना चाहेंगे।" 18 फ़रिश्ते ने सवाल किया, "तू मेरा नाम क्यूँ जानना चाहता है? वह तो तेरी समझ से बाहर है।" 19 फिर मनोहा ने एक बड़े पत्थर पर रब को बकरी का बच्चा और ग़ल्ला की नज़र पेश की। तब रब ने मनोहा और उस की बीवी के देखते देखते एक हैरतअंगेज़ काम किया। 20 जब आग के शोले आसमान की तरफ़ बुलन्द हुए तो रब का फ़रिश्ता शोले में से ऊपर चढ़ कर ओझल हो गया। मनोहा और उस की बीवी मुँह के बल गिर गए।

21 जब रब का फ़रिश्ता दुबारा मनोहा और उस की बीवी पर ज़ाहिर न हुआ तो मनोहा को समझ आई कि रब का फ़रिश्ता ही था। 22 वह पुकार उठा, "हाय, हम मर जाएंगे, क्यूँकि हम ने अल्लाह को देखा है!" 23 लेकिन उस की बीवी ने एतिराज़ किया, "अगर रब हमें मार डालना चाहता तो वह हमारी क़ुर्बानी क़बूल न करता। फिर न वह हम पर यह सब कुछ ज़ाहिर करता, न हमें ऐसी बातें बताता।"

24 कुछ देर के बाद मनोहा के हाँ बेटा पैदा हुआ। बीवी ने उस का नाम सम्सून रखा। बच्चा बड़ा होता गया, और रब ने उसे बरकत दी। 25 अल्लाह का रूह पहली बार महने-दान में जो सुरआ और इस्ताल के दरमियान है उस पर नाज़िल हुआ।

सम्सून की फ़िलिस्ती औरत से शादी

14 1 एक दिन सम्सून तिम्नत में फ़िलिस्तियों के पास ठहरा हुआ था। वहाँ उस ने एक फ़िलिस्ती औरत देखी जो उसे पसन्द आई। 2 अपने घर लौट कर उस ने अपने वालिदैन को बताया, "मुझे तिम्नत की एक फ़िलिस्ती औरत पसन्द आई है। उस के साथ मेरा रिश्ता बांधने की कोशिश करें।" 3 उस के वालिदैन ने जवाब दिया, "क्या आप के रिश्तेदारों और क़ौम में कोई क़ाबिल-ए-क़बूल औरत नहीं है? आप को नामख़्तून और बेदीन फ़िलिस्तियों के पास

जा कर उन में से कोई औरत ढूँडने की क्या ज़रूरत थी?” लेकिन सम्सून बज़िद रहा, “उसी के साथ मेरी शादी कराएँ! वही मुझे ठीक लगती है।”

4 उस के माँ-बाप को मालूम नहीं था कि यह सब कुछ रब की तरफ़ से है जो फ़िलिस्तियों से लड़ने का मौक़ा तलाश कर रहा था। क्यूँकि उस वक़्त फ़िलिस्ती इस्राईल पर हुकूमत कर रहे थे।

5 चुनाँचे सम्सून अपने माँ-बाप समेत तिम्नत के लिए रवाना हुआ। जब वह तिम्नत के अंगूर के बाग़ों के क़रीब पहुँचे तो सम्सून अपने माँ-बाप से अलग हो गया। अचानक एक जवान शेरबबर दहाड़ता हुआ उस पर टूट पड़ा। 6 तब अल्लाह का रूह इतने ज़ोर से सम्सून पर नाज़िल हुआ कि उस ने अपने हाथों से शेर को यूँ फाड़ डाला, जिस तरह आम आदमी बकरी के छोटे बच्चे को फाड़ डालता है। लेकिन उस ने अपने वालिदैन को इस के बारे में कुछ न बताया। 7 आगे निकल कर वह तिम्नत पहुँच गया। मज़कूरा फ़िलिस्ती औरत से बात हुई और वह उसे ठीक लगी।

8 कुछ देर के बाद वह शादी करने के लिए दुबारा तिम्नत गए। शहर पहुँचने से पहले सम्सून रास्ते से हट कर शेरबबर की लाश को देखने गया। वहाँ क्या देखता है कि शहद की मक्खियों ने शेर के पिंजर में अपना छत्ता बना लिया है। 9 सम्सून ने उस में हाथ डाल कर शहद को निकाल लिया और उसे खाते हुए चला। जब वह अपने माँ-बाप के पास पहुँचा तो उस ने उन्हें भी कुछ दिया, मगर यह न बताया कि कहाँ से मिल गया है।

10 तिम्नत पहुँच कर सम्सून का बाप दुल्हन के ख़ानदान से मिला जबकि सम्सून ने दूल्हे की हैसियत से ऐसी ज़ियाफ़त की जिस तरह उस ज़माने में दस्तूर था।

फ़िलिस्ती सम्सून को धोका देते हैं

11 जब दुल्हन के घर वालों को पता चला कि सम्सून तिम्नत पहुँच गया है तो उन्हों ने उस के पास 30 जवान आदमी भेज दिए कि उस के साथ ख़ुशी मनाएँ। 12 सम्सून ने उन से कहा, “मैं आप से पहेली पूछता हूँ। अगर आप ज़ियाफ़त के सात दिनों के दौरान इस का हल बता सकें तो मैं आप को कतान के 30 क़ीमती कुरते और 30 शानदार सूट दे दूँगा। 13 लेकिन अगर आप मुझे इस का सहीह मतलब न बता सकें तो आप को मुझे 30 क़ीमती कुरते और 30 शानदार सूट देने पड़ेंगे।” उन्हों ने जवाब दिया, “अपनी पहेली सुनाएँ।”

14 सम्सून ने कहा, “खाने वाले में से खाना निकला और ज़ोरावर में से मिठास।”

तीन दिन गुज़र गए। जवान पहेली का मतलब न बता सके। 15 चौथे दिन उन्हों ने दुल्हन के पास जा कर उसे धमकी दी, “अपने शौहर को हमें पहेली का मतलब बताने पर उकसाओ, वर्ना हम तुम्हें तुम्हारे ख़ानदान समेत जला देंगे। क्या तुम लोगों ने हमें सिर्फ़ इस लिए दावत दी कि हमें लूट लो?”

16 दुल्हन सम्सून के पास गई और आँसू बहा बहा कर कहने लगी, “तू मुझे प्यार नहीं करता! हक़ीक़त में तू मुझ से नफ़रत करता है। तू ने मेरी क़ौम के लोगों से पहेली पूछी है लेकिन मुझे इस का मतलब नहीं बताया।” सम्सून ने जवाब दिया, “मैं ने अपने माँ-बाप को भी इस का मतलब नहीं बताया तो तुझे क्यूँ बताऊँ?” 17 ज़ियाफ़त के पूरे हफ़्ते के दौरान दुल्हन उस के सामने रोती रही।

सातवें दिन सम्सून दुल्हन की इल्तिजाओं से इतना तंग आ गया कि उस ने उसे पहेली का हल बता दिया। तब दुल्हन ने फ़ुरती से सब कुछ फ़िलिस्तियों को सुना दिया। 18 सूरज के ग़ुरूब होने से पहले पहले शहर के मर्दों ने सम्सून को पहेली का मतलब बताया, “क्या कोई चीज़ शहद से ज़्यादा मीठी और शेरबबर से ज़्यादा ज़ोरावर होती है?” सम्सून ने यह सुन कर कहा, “आप ने मेरी जवान गाय ले कर हल चलाया है, वर्ना आप कभी भी पहेली का हल न निकाल सकते।” 19 फिर रब का रूह उस पर नाज़िल हुआ। उस ने अस्क़लून शहर में जा कर 30 फ़िलिस्तियों को मार डाला और उन के लिबास ले कर उन आदमियों

को दे दिए जिन्हों ने उसे पहेली का मतलब बता दिया था।

इस के बाद वह बड़े ग़ुस्से में अपने माँ-बाप के घर चला गया। 20 लेकिन उस की बीवी की शादी सम्सून के शहबाले से कराई गई जो 30 जवान फ़िलिस्तियों में से एक था।

सम्सून फ़िलिस्तियों से बदला लेता है

15 1 कुछ दिन गुज़र गए। जब गन्दुम की कटाई होने लगी तो सम्सून बकरी का बच्चा अपने साथ ले कर अपनी बीवी से मिलने गया। सुसर के घर पहुँच कर उस ने बीवी के कमरे में जाने की दरख़्वास्त की। लेकिन बाप ने इन्कार किया। 2 उस ने कहा, “यह नहीं हो सकता! मैं ने बेटी की शादी आप के शहबाले से करा दी है। असल में मुझे यक़ीन हो गया था कि अब आप उस से सख़्त नफ़रत करते हैं। लेकिन कोई बात नहीं। उस की छोटी बहन से शादी कर लें। वह ज़्यादा ख़ूबसूरत है।”

3 सम्सून बोला, “इस दफ़ा मैं फ़िलिस्तियों से ख़ूब बदला लूँगा, और कोई नहीं कह सकेगा कि मैं हक़ पर नहीं हूँ।” 4 वहाँ से निकल कर उस ने 300 लोमड़ियों को पकड़ लिया। दो दो की दुमों को बांध कर उस ने हर जोड़े की दुमों के साथ मशअल लगा दी 5 और फिर मशअलों को जला कर लोमड़ियों को फ़िलिस्तियों के अनाज के खेतों में भगा दिया। खेतों में पड़े पूले उस अनाज समेत भस्म हुए जो अब तक काटा नहीं गया था। अंगूर और ज़ैतून के बाग़ भी तबाह हो गए।

6 फ़िलिस्तियों ने दरयाफ़्त किया कि यह किस का काम है। पता चला कि सम्सून ने यह सब कुछ किया है, और कि वजह यह है कि तिम्नत में उस के सुसर ने उस की बीवी को उस से छीन कर उस के शहबाले को दे दिया है। यह सुन कर फ़िलिस्ती तिम्नत गए और सम्सून के सुसर को उस की बेटी समेत पकड़ कर जला दिया। 7 तब सम्सून ने उन से कहा, “यह तुम ने क्या किया है! जब तक मैं ने पूरा बदला न लिया मैं नहीं रुकूँगा।” 8 वह इतने ज़ोर से उन पर टूट पड़ा कि बेशुमार फ़िलिस्ती हलाक हुए। फिर वह उस जगह से उतर कर ऐताम की चटान के ग़ार में रहने लगा।

लही में सम्सून फ़िलिस्तियों से लड़ता है

9 जवाब में फ़िलिस्ती फ़ौज यहूदाह के क़बाइली इलाक़े में दाख़िल हुई। वहाँ वह लही शहर के पास ख़ैमाज़न हुए। 10 यहूदाह के बाशिन्दों ने पूछा, “क्या वजह है कि आप हम से लड़ने आए हैं?” फ़िलिस्तियों ने जवाब दिया, “हम सम्सून को पकड़ने आए हैं ताकि उस के साथ वह कुछ करें जो उस ने हमारे साथ किया है।”

11 तब यहूदाह के 3,000 मर्द ऐताम पहाड़ के ग़ार के पास आए और सम्सून से कहा, “यह आप ने हमारे साथ क्या किया? आप को तो पता है कि फ़िलिस्ती हम पर हुकूमत करते हैं।” सम्सून ने जवाब दिया, “मैं ने उन के साथ सिर्फ़ वह कुछ किया जो उन्हों ने मेरे साथ किया था।”

12 यहूदाह के मर्द बोले, “हम आप को बांध कर फ़िलिस्तियों के हवाले करने आए हैं।” सम्सून ने कहा, “ठीक है, लेकिन क़सम खाएँ कि आप ख़ुद मुझे क़त्ल नहीं करेंगे।”

13 उन्हों ने जवाब दिया, “हम आप को हरगिज़ क़त्ल नहीं करेंगे बल्कि आप को सिर्फ़ बांध कर उन के हवाले कर देंगे।” चुनाँचे वह उसे दो ताज़ा ताज़ा रस्सों से बांध कर फ़िलिस्तियों के पास ले गए।

14 सम्सून अभी लही से दूर था कि फ़िलिस्ती नारे लगाते हुए उस की तरफ़ दौड़े आए। तब रब का रूह बड़े ज़ोर से उस पर नाज़िल हुआ। उस के बाज़ूओं से बंधे हुए रस्से सन के जले हुए धागे जैसे कमज़ोर हो गए, और वह पिघल कर हाथों से गिर गए। 15 कहीं से गधे का ताज़ा जबड़ा पकड़ कर उस ने उस के ज़रीए हज़ार अफ़राद को मार डाला।

16 उस वक़्त उस ने नारा लगाया, “गधे के जबड़े से मैं ने उन के ढेर लगाए हैं! गधे के जबड़े से मैं ने

हज़ार मर्दों को मार डाला है!” 17 इस के बाद उस ने
गधे का यह जबड़ा फैंक दिया। उस जगह का नाम
रामत-लही यानी जबड़ा पहाड़ी पड़ गया।
18 सम्सून को वहाँ बड़ी प्यास लगी। उस ने रब को
पुकार कर कहा, “तू ही ने अपने ख़ादिम के हाथ से
इस्राईल को यह बड़ी नजात दिलाई है। लेकिन अब
मैं प्यास से मर कर नामख़्तून दुश्मन के हाथ में आ
जाऊँगा।” 19 तब अल्लाह ने लही में ज़मीन को छेदा,
और गढ़े से पानी फूट निकला। सम्सून उस का पानी
पी कर दुबारा ताज़ादम हो गया। यूँ उस चश्मे का
नाम ऐन-हक़्क़ोरे यानी पुकारने वाले का चश्मा पड़
गया। आज भी वह लही में मौजूद है।
20 फ़िलिस्तियों के दौर में सम्सून 20 साल तक
इस्राईल का क़ाज़ी रहा।

सम्सून ग़ज़्ज़ा का दरवाज़ा उठा ले जाता है

16 1 एक दिन सम्सून फ़िलिस्ती शहर ग़ज़्ज़ा में
आया। वहाँ वह एक कस्बी को देख कर
उस के घर में दाख़िल हुआ। 2 जब शहर के बाशिन्दों
को इत्तिला मिली कि सम्सून शहर में है तो उन्हों ने
कस्बी के घर को घेर लिया। साथ साथ वह रात के
वक़्त शहर के दरवाज़े पर ताक में रहे। फ़ैसला यह
हुआ, “रात के वक़्त हम कुछ नहीं करेंगे, जब पौ
फटेगी तब उसे मार डालेंगे।”
3 सम्सून अब तक कस्बी के घर में सो रहा था।
लेकिन आधी रात को वह उठ कर शहर के दरवाज़े
के पास गया और दोनों किवाड़ों को कुंडे और
दरवाज़े के दोनों बाज़ूओं समेत उखाड़ कर अपने
कंधों पर रख लिया। यूँ चलते चलते वह सब कुछ
उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हब्रून के
मुक़ाबिल है।

सम्सून और दलीला

4 कुछ देर के बाद सम्सून एक औरत की मुहब्बत
में गिरिफ़्तार हो गया जो वादी-ए-सूरिक़ में रहती थी।
उस का नाम दलीला था। 5 यह सुन कर फ़िलिस्ती
सरदार उस के पास आए और कहने लगे, “सम्सून
को उकसाएँ कि वह आप को अपनी बड़ी ताक़त
का भेद बताए। हम जानना चाहते हैं कि हम किस
तरह उस पर ग़ालिब आ कर उसे यूँ बांध सकें कि
वह हमारे क़ब्ज़े में रहे। अगर आप यह मालूम कर
सकें तो हम में से हर एक आप को चाँदी के 1,100
सिक्के देगा।”
6 चुनाँचे दलीला ने सम्सून से सवाल किया, “मुझे
अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। क्या आप को
किसी ऐसी चीज़ से बांधा जा सकता है जिसे आप
तोड़ नहीं सकते?” 7 सम्सून ने जवाब दिया, “अगर
मुझे जानवरों की सात ताज़ा नसों से बांधा जाए तो
फिर मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।”
8 फ़िलिस्ती सरदारों ने दलीला को सात ताज़ा नसें
मुहय्या कर दीं, और उस ने सम्सून को उन से
बांध लिया। 9 कुछ फ़िलिस्ती आदमी साथ वाले
कमरे में छुप गए। फिर दलीला चिल्ला उठी, “सम्सून,
फ़िलिस्ती आप को पकड़ने आए हैं!” यह सुन कर
सम्सून ने नसों को यूँ तोड़ दिया जिस तरह डोरी टूट
जाती है जब आग में से गुज़रती है। चुनाँचे उस की
ताक़त का पोल न खुला।
10 दलीला का मुँह लटक गया। “आप ने झूट बोल
कर मुझे बेवुक़ूफ़ बनाया है। अब आएँ, मेहरबानी
करके मुझे बताएँ कि आप को किस तरह बांधा जा
सकता है।” 11 सम्सून ने जवाब दिया, “अगर मुझे
ग़ैरइस्तेमालशुदा रस्सों से बांधा जाए तो फिर ही मैं
आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 12 दलीला
ने नए रस्से ले कर उसे उन से बांध लिया। इस मर्तबा
भी फ़िलिस्ती साथ वाले कमरे में छुप गए थे। फिर
दलीला चिल्ला उठी, “सम्सून, फ़िलिस्ती आप को
पकड़ने आए हैं!” लेकिन इस बार भी सम्सून ने रस्सों
को यूँ तोड़ लिया जिस तरह आम आदमी डोरी को
तोड़ लेता है।
13 दलीला ने शिकायत की, “आप बार बार झूट
बोल कर मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। अब मुझे बताएँ कि
आप को किस तरह बांधा जा सकता है।” सम्सून ने

जवाब दिया, “लाज़िम है कि आप मेरी सात ज़ुल्फ़ों को खड्डी के ताने के साथ बुनें। फिर ही आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 14 जब सम्सून सो रहा था तो दलीला ने ऐसा ही किया। उस की सात ज़ुल्फ़ों को ताने के साथ बुन कर उस ने उसे शटल के ज़रीए खड्डी के साथ लगाया। फिर वह चिल्ला उठी, “सम्सून, फ़िलिस्ती आप को पकड़ने आए हैं!” सम्सून जाग उठा और अपने बालों को शटल समेत खड्डी से निकाल लिया।

15 यह देख कर दलीला ने मुँह फुला कर मलामत की, “आप किस तरह दावा कर सकते हैं कि मुझ से मुहब्बत रखते हैं? अब आप ने तीन मर्तबा मेरा मज़ाक़ उड़ा कर मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद नहीं बताया।” 16 रोज़-ब-रोज़ वह अपनी बातों से उस की नाक में दम करती रही। आख़िरकार सम्सून इतना तंग आ गया कि उस का जीना दूभर हो गया। 17 फिर उस ने उसे खुल कर बात बताई, “मैं पैदाइश ही से अल्लाह के लिए मख़्सूस हूँ, इस लिए मेरे बालों को कभी नहीं काटा गया। अगर सर को मुंडवाया जाए तो मेरी ताक़त जाती रहेगी और मैं हर दूसरे आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।”

18 दलीला ने जान लिया कि अब सम्सून ने मुझे पूरी हक़ीक़त बताई है। उस ने फ़िलिस्ती सरदारों को इत्तिला दी, “आओ, क्यूँकि इस मर्तबा उस ने मुझे अपने दिल की हर बात बताई है।” यह सुन कर वह मुक़र्ररा चाँदी अपने साथ ले कर दलीला के पास आए।

19 दलीला ने सम्सून का सर अपनी गोद में रख कर उसे सुला दिया। फिर उस ने एक आदमी को बुला कर सम्सून की सात ज़ुल्फ़ों को मुंडवाया। यूँ वह उसे पस्त करने लगी, और उस की ताक़त जाती रही। 20 फिर वह चिल्ला उठी, “सम्सून, फ़िलिस्ती आप को पकड़ने आए हैं!” सम्सून जाग उठा और सोचा, “मैं पहले की तरह अब भी अपने आप को बचा कर बंधन को तोड़ दूँगा।” अफ़्सोस, उसे मालूम नहीं था कि रब ने उसे छोड़ दिया है। 21 फ़िलिस्तियों ने उसे पकड़ कर उस की आँखें निकाल दीं। फिर वह उसे ग़ज़्ज़ा ले गए जहाँ उसे पीतल की ज़न्जीरों से बांधा गया। वहाँ वह क़ैदख़ाने की चक्की पीसा करता था।

22 लेकिन होते होते उस के बाल दुबारा बढ़ने लगे।

सम्सून का आख़िरी इन्तिक़ाम

23 एक दिन फ़िलिस्ती सरदार बड़ा जश्न मनाने के लिए जमा हुए। उन्हों ने अपने देवता दजून को जानवरों की बहुत सी क़ुर्बानियाँ पेश करके अपनी फ़त्ह की ख़ुशी मनाई। वह बोले, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन सम्सून को हमारे हवाले कर दिया है।” 24 सम्सून को देख कर अवाम ने दजून की तम्जीद करके कहा, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन को हमारे हवाले कर दिया है! जिस ने हमारे मुल्क को तबाह किया और हम में से इतने लोगों को मार डाला वह अब हमारे क़ाबू में आ गया है!” 25 इस क़िस्म की बातें करते करते उन की ख़ुशी की इन्तिहा न रही। तब वह चिल्लाने लगे, “सम्सून को बुलाओ ताकि वह हमारे दिलों को बहलाए।”

चुनाँचे उसे उन की तफ़रीह के लिए जेल से लाया गया और दो सतूनों के दरमियान खड़ा कर दिया गया। 26 सम्सून उस लड़के से मुख़ातिब हुआ जो उस का हाथ पकड़ कर उस की राहनुमाई कर रहा था, “मुझे छत को उठाने वाले सतूनों के पास ले जाओ ताकि मैं उन का सहारा लूँ।” 27 इमारत मर्दों और औरतों से भरी थी। फ़िलिस्ती सरदार भी सब आए हुए थे। सिर्फ़ छत पर सम्सून का तमाशा देखने वाले तक़रीबन 3,000 अफ़राद थे।

28 फिर सम्सून ने दुआ की, “ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मुझे याद कर। बस एक दफ़ा और मुझे पहले की तरह क़ुव्वत अता फ़रमा ताकि मैं एक ही वार से फ़िलिस्तियों से अपनी आँखों का बदला ले सकूँ।” 29 यह कह कर सम्सून ने उन दो मर्कज़ी सतूनों को पकड़ लिया जिन पर छत का पूरा वज़न था। उन के दरमियान खड़े हो कर उस ने पूरी ताक़त से ज़ोर लगाया 30 और दुआ की, “मुझे फ़िलिस्तियों के साथ

मरने दे!” अचानक सतून हिल गए और छत धड़ाम से फ़िलिस्तियों के तमाम सरदारों और बाक़ी लोगों पर गिर गई। इस तरह सम्सून ने पहले की निस्बत मरते वक़्त कहीं ज़्यादा फ़िलिस्तियों को मार डाला।

31 सम्सून के भाई और बाक़ी घर वाले आए और
उस की लाश को उठा कर उस के बाप मनोहा की
क़ब्र के पास ले गए। वहाँ यानी सुरआ और इस्ताल
के दरमियान उन्हों ने उसे दफ़नाया। सम्सून 20 साल
इस्राईल का क़ाज़ी रहा।

मीकाह का बुत

17 1 इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में एक आदमी
रहता था जिस का नाम मीकाह था। 2 एक
दिन उस ने अपनी माँ से बात की, “आप के चाँदी के
1,100 सिक्के चोरी हो गए थे, ना? उस वक़्त आप ने
मेरे सामने ही चोर पर लानत भेजी थी। अब देखें, वह
पैसे मेरे पास हैं। मैं ही चोर हूँ।” यह सुन कर माँ ने
जवाब दिया, “मेरे बेटे, रब तुझे बरकत दे!” 3 मीकाह
ने उसे तमाम पैसे वापस कर दिए, और माँ ने एलान
किया, “अब से यह चाँदी रब के लिए मख़्सूस हो!
मैं आप के लिए तराशा और ढाला हुआ बुत बनवा
कर चाँदी आप को वापस कर देती हूँ।”

4 चुनाँचे जब बेटे ने पैसे वापस कर दिए तो माँ ने
उस के 200 सिक्के सुनार के पास ले जा कर लकड़ी
का तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाया। मीकाह
ने यह बुत अपने घर में खड़ा किया, 5 क्यूँकि उस
का अपना मक़्दिस था। उस ने मज़ीद बुत और एक
अफ़ोद [v] भी बनवाया और फिर एक बेटे को अपना
इमाम बना लिया। 6 उस ज़माने में इस्राईल का कोई
बादशाह नहीं था बल्कि हर कोई वही कुछ करता
जो उसे दुरुस्त लगता था।

7 उन दिनों में लावी के क़बीले का एक जवान
आदमी यहूदाह के क़बीले के शहर बैत-लहम में
आबाद था। 8 अब वह शहर को छोड़ कर रिहाइश
की कोई और जगह तलाश करने लगा। इफ़्राईम के
पहाड़ी इलाक़े में से सफ़र करते करते वह मीकाह
के घर पहुँच गया। 9 मीकाह ने पूछा, “आप कहाँ से
आए हैं?” जवान ने जवाब दिया, “मैं लावी हूँ। मैं
यहूदाह के शहर बैत-लहम का रहने वाला हूँ लेकिन
रिहाइश की किसी और जगह की तलाश में हूँ।”

10 मीकाह बोला, “यहाँ मेरे पास अपना घर बना
कर मेरे बाप और इमाम बनें। तब आप को साल में
चाँदी के दस सिक्के और ज़रूरत के मुताबिक़ कपड़े
और ख़ुराक मिलेगी।”

11 लावी मुत्तफ़िक़ हुआ। वह वहाँ आबाद हुआ,
और मीकाह ने उस के साथ बेटों का सा सुलूक
किया। 12 उस ने उसे इमाम मुक़र्रर करके सोचा,
13 “अब रब मुझ पर मेहरबानी करेगा, क्यूँकि लावी
मेरा इमाम बन गया है।”

दान का क़बीला ज़मीन की तलाश करता है

18 1 उन दिनों में इस्राईल का बादशाह नहीं
था। और अब तक दान के क़बीले को
अपना कोई क़बाइली इलाक़ा नहीं मिला था, इस
लिए उस के लोग कहीं आबाद होने की तलाश में
रहे। 2 उन्हों ने अपने ख़ानदानों में से सुरआ और
इस्ताल के पाँच तजरिबाकार फ़ौजियों को चुन कर
उन्हें मुल्क की तफ़्तीश करने के लिए भेज दिया।
यह मर्द इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में से गुज़र कर
मीकाह के घर के पास पहुँच गए। जब वह वहाँ रात
के लिए ठहरे हुए थे 3 तो उन्हों ने देखा कि जवान
लावी बैत-लहम की बोली बोलता है। उस के पास
जा कर उन्हों ने पूछा, “कौन आप को यहाँ लाया
है? आप यहाँ क्या करते हैं? और आप का इस घर
में रहने का क्या मक़्सद है?” 4 लावी ने उन्हें अपनी
कहानी सुनाई, “मीकाह ने मुझे नौकरी दे कर अपना
इमाम बना लिया है।” 5 फिर उन्हों ने उस से गुज़ारिश
की, “अल्लाह से दरयाफ़्त करें कि क्या हमारे सफ़र

---

[v] आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमाम-ए-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इस से मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

का मक़्सद पूरा हो जाएगा या नहीं?” 6 लावी ने उन्हें तसल्ली दी, “सलामती से आगे बढ़ें। आप के सफ़र का मक़्सद रब को क़बूल है, और वह आप के साथ है।”

7 तब यह पाँच आदमी आगे निकले और सफ़र करते करते लैस पहुँच गए। उन्हों ने देखा कि वहाँ के लोग सैदानियों की तरह पुरसुकून और बेफ़िक्र ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। कोई नहीं था जो उन्हें दबाता या उन पर ज़ुल्म करता। यह भी मालूम हुआ कि अगर उन पर हम्ला किया जाए तो उन का इत्तिहादी शहर सैदा उन से इतनी दूर है कि उन की मदद नहीं कर सकेगा, और क़रीब कोई इत्तिहादी नहीं है जो उन का साथ दे। 8 वह पाँच जासूस सुरआ और इस्ताल वापस चले गए। जब वहाँ पहुँचे तो दूसरों ने पूछा, “सफ़र कैसा रहा?” 9 जासूसों ने जवाब में कहा, “आएँ, हम जंग के लिए निकलें! हमें एक बेहतरीन इलाक़ा मिल गया है। आप क्यूँ झिजक रहे हैं? जल्दी करें, हम निकलें और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लें! 10 वहाँ के लोग बेफ़िक्र हैं और हमले की तवक़्क़ो ही नहीं करते। और ज़मीन वसी और ज़रख़ेज़ है, उस में किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। अल्लाह आप को वह मुल्क देने का इरादा रखता है।”

दान के मर्द मीकाह का बुत इमाम समेत छीन लेते हैं

11 दान के क़बीले के 600 मुसल्लह आदमी सुरआ और इस्ताल से रवाना हुए। 12 रास्ते में उन्हों ने अपनी लश्करगाह यहूदाह के शहर क़िर्यत-यारीम के क़रीब लगाई। इस लिए यह जगह आज तक महने-दान यानी दान की ख़ैमागाह कहलाती है। 13 वहाँ से वह इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुए और चलते चलते मीकाह के घर पहुँच गए।

14 जिन पाँच मर्दों ने लैस की तफ़्तीश की थी उन्हों ने अपने साथियों से कहा, “क्या आप को मालूम है कि इन घरों में एक अफ़ोद, एक तराशा और ढाला हुआ बुत और दीगर कई बुत हैं? अब सोच लें कि क्या किया जाए।”

15 पाँचों ने मीकाह के घर में दाख़िल हो कर जवान लावी को सलाम किया 16 जबकि बाक़ी 600 मुसल्लह मर्द गेट पर खड़े रहे। 17 जब लावी बाहर खड़े मर्दों के पास गया तो इन पाँचों ने अन्दर घुस कर तराशा और ढाला हुआ बुत, अफ़ोद और बाक़ी बुत छीन लिए। 18 यह देख कर लावी चीख़ने लगा, “क्या कर रहे हो!”

19 उन्हों ने कहा, “चुप! कोई बात न करो बल्कि हमारे साथ जा कर हमारे बाप और इमाम बनो। हमारे साथ जाओगे तो पूरे क़बीले के इमाम बनोगे। क्या यह एक ही ख़ानदान की ख़िदमत करने से कहीं बेहतर नहीं होगा?” 20 यह सुन कर इमाम ख़ुश हुआ। वह अफ़ोद, तराशा हुआ बुत और बाक़ी बुतों को ले कर मुसाफ़िरों में शरीक हो गया। 21 फिर दान के मर्द रवाना हुए। उन के बाल-बच्चे, मवेशी और क़ीमती माल-ओ-मता उन के आगे आगे था।

22 जब मीकाह को बात का पता चला तो वह अपने पड़ोसियों को जमा करके उन के पीछे दौड़ा। इतने में दान के लोग घर से दूर निकल चुके थे। 23 जब वह सामने नज़र आए तो मीकाह और उस के साथियों ने चीख़ते चिल्लाते उन्हें रुकने को कहा। दान के मर्दों ने पीछे देख कर मीकाह से कहा, “क्या बात है? अपने इन लोगों को बुला कर क्यूँ ले आए हो?” 24 मीकाह ने जवाब दिया, “तुम लोगों ने मेरे बुतों को छीन लिया गो मैं ने उन्हें ख़ुद बनवाया है। मेरे इमाम को भी साथ ले गए हो। मेरे पास कुछ नहीं रहा तो अब तुम पूछते हो कि क्या बात है?”

25 दान के अफ़राद बोले, “ख़ामोश! ख़बरदार, हमारे कुछ लोग तेज़मिज़ाज हैं। ऐसा न हो कि वह ग़ुस्से में आ कर तुम को तुम्हारे ख़ानदान समेत मार डालें।” 26 यह कह कर उन्हों ने अपना सफ़र जारी रखा। मीकाह ने जान लिया कि मैं अपने थोड़े आदमियों के साथ उन का मुक़ाबला नहीं कर सकूँगा, इस लिए वह मुड़ कर अपने घर वापस चला गया। 27 उस के बुत दान के क़ब्ज़े में रहे, और इमाम भी उन में टिक गया।

लैस पर क़ब्ज़ा और दान की बुतपरस्ती

फिर वह लैस के इलाक़े में दाख़िल हुए जिस के
बाशिन्दे पुरसुकून और बेफ़िक्र ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे।
दान के फ़ौजी उन पर टूट पड़े और सब को तलवार
से क़त्ल करके शहर को भस्म कर दिया। 28 किसी
ने भी उन की मदद न की, क्यूँकि सैदा बहुत दूर था,
और क़रीब कोई इत्तिहादी नहीं था जो उन का साथ
देता। यह शहर बैत-रहोब की वादी में था। दान के
अफ़राद शहर को अज़ सर-ए-नौ तामीर करके उस
में आबाद हुए। 29 और उन्हों ने उस का नाम अपने
क़बीले के बानी के नाम पर दान रखा (दान इस्राईल
का बेटा था)।
30 वहाँ उन्हों ने तराशा हुआ बुत रख कर पूजा के
इन्तिज़ाम पर यूनतन मुक़र्रर किया जो मूसा के बेटे
जैर्सोम की औलाद में से था। जब यूनतन फ़ौत हुआ
तो उस की औलाद क़ौम की जिलावतनी तक दान
के क़बीले में यही ख़िदमत करती रही।
31 मीकाह का बनवाया हुआ बुत तब तक दान में
रहा जब तक अल्लाह का घर सैला में था।

एक लावी की अपनी दाश्ता के साथ सुलह

19 1 उस ज़माने में जब इस्राईल का कोई
बादशाह नहीं था एक लावी ने अपने घर
में दाश्ता रखी जो यहूदाह के शहर बैत-लहम की
रहने वाली थी। आदमी इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े
के किसी दूरदराज़ कोने में आबाद था। 2 लेकिन एक
दिन औरत मर्द से नाराज़ हुई और मैके वापस चली
गई। चार माह के बाद 3 लावी दो गधे और अपने
नौकर को ले कर बैत-लहम के लिए रवाना हुआ
ताकि दाश्ता का ग़ुस्सा ठंडा करके उसे वापस आने
पर आमादा करे।
जब उस की मुलाक़ात दाश्ता से हुई तो वह उसे
अपने बाप के घर में ले गई। उसे देख कर सुसर इतना
ख़ुश हुआ 4 कि उस ने उसे जाने न दिया। दामाद को
तीन दिन वहाँ ठहरना पड़ा जिस दौरान सुसर ने उस
की ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 5 चौथे दिन लावी सुब्ह-
सवेरे उठ कर अपनी दाश्ता के साथ रवाना होने की
तय्यारियाँ करने लगा। लेकिन सुसर उसे रोक कर
बोला, “पहले थोड़ा बहुत खा कर ताज़ादम हो जाएँ,
फिर चले जाना।” 6 दोनों दुबारा खाने-पीने के लिए
बैठ गए।
सुसर ने कहा, “बराह-ए-करम एक और रात यहाँ
ठहर कर अपना दिल बहलाएँ।” 7 मेहमान जाने की
तय्यारियाँ करने तो लगा, लेकिन सुसर ने उसे एक
और रात ठहरने पर मज्बूर किया। चुनाँचे वह हार
मान कर रुक गया।
8 पाँचवें दिन आदमी सुब्ह-सवेरे उठा और जाने के
लिए तय्यार हुआ। सुसर ने ज़ोर दिया, “पहले कुछ
खाना खा कर ताज़ादम हो जाएँ। आप दोपहर के
वक़्त भी जा सकते हैं।” चुनाँचे दोनों खाने के लिए
बैठ गए।
9 दोपहर के वक़्त लावी अपनी बीवी और नौकर के
साथ जाने के लिए उठा। सुसर एतिराज़ करने लगा,
“अब देखें, दिन ढलने वाला है। रात ठहर कर अपना
दिल बहलाएँ। बेहतर है कि आप कल सुब्ह-सवेरे ही
उठ कर घर के लिए रवाना हो जाएँ।” 10–11 लेकिन
अब लावी किसी भी सूरत में एक और रात ठहरना
नहीं चाहता था। वह अपने गधों पर ज़ीन कस कर
अपनी बीवी और नौकर के साथ रवाना हुआ।
चलते चलते दिन ढलने लगा। वह यबूस यानी
यरूशलम के क़रीब पहुँच गए थे। शहर को देख कर
नौकर ने मालिक से कहा, “आएँ, हम यबूसियों के
इस शहर में जा कर वहाँ रात गुज़ारें।” 12 लेकिन
लावी ने एतिराज़ किया, “नहीं, यह अजनबियों का
शहर है। हमें ऐसी जगह रात नहीं गुज़ारना चाहिए
जो इस्राईली नहीं है। बेहतर है कि हम आगे जा कर
जिबिआ की तरफ़ बढ़ें। 13 अगर हम जल्दी करें तो
हो सकता है कि जिबिआ या उस से आगे रामा तक
पहुँच सकें। वहाँ आराम से रात गुज़ार सकेंगे।”
14 चुनाँचे वह आगे निकले। जब सूरज ग़ुरूब होने
लगा तो वह बिनयमीन के क़बीले के शहर जिबिआ

के क़रीब पहुँच गए 15 और रास्ते से हट कर शहर
में दाख़िल हुए। लेकिन कोई उन की मेहमान-नवाज़ी
नहीं करना चाहता था, इस लिए वह शहर के चौक
में रुक गए।
16 फिर अंधेरे में एक बूढ़ा आदमी वहाँ से गुज़रा।
असल में वह इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े का रहने
वाला था और जिबिआ में अजनबी था, क्यूँकि
बाक़ी बाशिन्दे बिनयमीनी थे। अब वह खेत में अपने
काम से फ़ारिग़ हो कर शहर में वापस आया था।
17 मुसाफ़िरों को चौक में देख कर उस ने पूछा, “आप
कहाँ से आए और कहाँ जा रहे हैं?” 18 लावी ने
जवाब दिया, “हम यहूदाह के बैत-लहम से आए हैं
और इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के एक दूरदराज़ कोने
तक सफ़र कर रहे हैं। वहाँ मेरा घर है और वहीं से
मैं रवाना हो कर बैत-लहम चला गया था। इस वक़्त
मैं रब के घर जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ जिबिआ में
कोई नहीं जो हमारी मेहमान-नवाज़ी करने के लिए
तय्यार हो, 19 हालाँकि हमारे पास खाने की तमाम
चीज़ें मौजूद हैं। गधों के लिए भूसा और चारा है, और
हमारे लिए भी काफ़ी रोटी और मै है। हमें किसी भी
चीज़ की ज़रूरत नहीं है।”
20 बूढ़े ने कहा, “फिर मैं आप को अपने घर में
ख़ुशआमदीद कहता हूँ। अगर आप को कोई चीज़
दरकार हो तो मैं उसे मुहय्या करूँगा। हर सूरत में
चौक में रात मत गुज़ारना।” 21 वह मुसाफ़िरों को
अपने घर ले गया और गधों को चारा खिलाया।
मेहमानों ने अपने पाँओ धो कर खाना खाया और
मै पी।

जिबिआ के लोगों का जुर्म

22 वह यूँ खाने की रिफ़ाक़त से लुत्फ़अन्दोज़ हो
रहे थे कि जिबिआ के कुछ शरीर मर्द घर को घेर
कर दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाने लगे। वह चिल्लाए,
“उस आदमी को बाहर ला जो तेरे घर में ठहरा हुआ
है ताकि हम उस से ज़ियादती करें!” 23 बूढ़ा आदमी
बाहर गया ताकि उन्हें समझाए, “नहीं, भाइयो, ऐसा
शैतानी अमल मत करना। यह अजनबी मेरा मेहमान
है। ऐसी शर्मनाक हरकत मत करना! 24 इस से पहले
मैं अपनी कुंवारी बेटी और मेहमान की दाश्ता को
बाहर ले आता हूँ। उन ही से ज़ियादती करें। जो जी
चाहे उन के साथ करें, लेकिन आदमी के साथ ऐसी
शर्मनाक हरकत न करें।”
25 लेकिन बाहर के मर्दों ने उस की न सुनी। तब
लावी अपनी दाश्ता को पकड़ कर बाहर ले गया
और उस के पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया। शहर के
आदमी पूरी रात उस की बेहुरमती करते रहे। जब
पौ फटने लगी तो उन्हों ने उसे फ़ारिग़ कर दिया।
26 सूरज के तुलू होने से पहले औरत उस घर के पास
वापस आई जिस में शौहर ठहरा हुआ था। दरवाज़े
तक तो वह पहुँच गई लेकिन फिर गिर कर वहीं की
वहीं पड़ी रही।
जब दिन चढ़ गया 27 तो लावी जाग उठा और सफ़र
करने की तय्यारियाँ करने लगा। जब दरवाज़ा खोला
तो क्या देखता है कि दाश्ता सामने ज़मीन पर पड़ी है
और हाथ दहलीज़ पर रखे हैं। 28 वह बोला, “उठो,
हम चलते हैं।” लेकिन दाश्ता ने जवाब न दिया। यह
देख कर आदमी ने उसे गधे पर लाद लिया और अपने
घर चला गया।
29 जब पहुँचा तो उस ने छुरी ले कर औरत की लाश
को 12 टुकड़ों में काट लिया, फिर उन्हें इस्राईल की
हर जगह भेज दिया। 30 जिस ने भी यह देखा उस ने
घबरा कर कहा, “ऐसा जुर्म हमारे दरमियान कभी
नहीं हुआ। जब से हम मिस्र से निकल कर आए
हैं ऐसी हरकत देखने में नहीं आई। अब लाज़िम है
कि हम ग़ौर से सोचें और एक दूसरे से मश्वरा करके
अगले क़दम के बारे में फ़ैसला करें।”

जिबिआ को सज़ा देने का फ़ैसला

20 1 तमाम इस्राईली एक दिल हो कर मिस्फ़ाह
में रब के हुज़ूर जमा हुए। शिमाल के दान
से ले कर जुनूब के बैर-सबा तक सब आए। दरया-ए-
यर्दन के पार जिलिआद से भी लोग आए। 2 इस्राईली

क़बीलों के सरदार भी आए। उन्हों ने मिल कर एक बड़ी फ़ौज तय्यार की, तलवारों से लेस 4,00,000 मर्द जमा हुए। 3 बिनयमीनियों को इस जमाअत के बारे में इत्तिला मिली।

इस्राईलियों ने पूछा, “हमें बताएँ कि यह हैबतनाक जुर्म किस तरह सरज़द हुआ?” 4 मक़्तूला के शौहर ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मैं अपनी दाश्ता के साथ जिबिआ में आ ठहरा जो बिनयमीनियों के इलाक़े में है। हम वहाँ रात गुज़ारना चाहते थे। 5 यह देख कर शहर के मर्दों ने मेरे मेज़बान के घर को घेर लिया ताकि मुझे क़त्ल करें। मैं तो बच गया, लेकिन मेरी दाश्ता से इतनी ज़ियादती हुई कि वह मर गई। 6 यह देख कर मैं ने उस की लाश को टुकड़े टुकड़े करके यह टुकड़े इस्राईल की मीरास की हर जगह भेज दिए ताकि हर एक को मालूम हो जाए कि हमारे मुल्क में कितना घिनौना जुर्म सरज़द हुआ है। 7 इस पर आप सब यहाँ जमा हुए हैं। इस्राईल के मर्दो, अब लाज़िम है कि आप एक दूसरे से मश्वरा करके फ़ैसला करें कि क्या करना चाहिए।”

8 तमाम मर्द एक दिल हो कर खड़े हुए। सब का फ़ैसला था, “हम में से कोई भी अपने घर वापस नहीं जाएगा 9 जब तक जिबिआ को मुनासिब सज़ा न दी जाए। लाज़िम है कि हम फ़ौरन शहर पर हम्ला करें और इस के लिए क़ुरआ डाल कर रब से हिदायत लें। 10 हम यह फ़ैसला भी करें कि कौन कौन हमारी फ़ौज के लिए खाने-पीने का बन्द-ओ-बस्त कराएगा। इस काम के लिए हम में से हर दसवाँ आदमी काफ़ी है। बाक़ी सब लोग सीधे जिबिआ से लड़ने जाएँ ताकि उस शर्मनाक जुर्म का मुनासिब बदला लें जो इस्राईल में हुआ है।”

11 यूँ तमाम इस्राईली मुत्तहिद हो कर जिबिआ से लड़ने के लिए गए। 12 रास्ते में उन्हों ने बिनयमीन के हर कुंबे को पैग़ाम भिजवाया, “आप के दरमियान घिनौना जुर्म हुआ है। 13 अब जिबिआ के इन शरीर आदमियों को हमारे हवाले करें ताकि हम उन्हें सज़ा-ए-मौत दे कर इस्राईल में से बुराई मिटा दें।”

लेकिन बिनयमीनी इस के लिए तय्यार न हुए। 14 वह पूरे क़बाइली इलाक़े से आ कर जिबिआ में जमा हुए ताकि इस्राईलियों से लड़ें। 15 उसी दिन उन्हों ने अपनी फ़ौज का बन्द-ओ-बस्त किया। जिबिआ के 700 तजरिबाकार फ़ौजियों के इलावा तलवारों से लेस 26,000 अफ़राद थे। 16 इन फ़ौजियों में से 700 ऐसे मर्द भी थे जो अपने बाएँ हाथ से फ़लाख़न चलाने की इतनी महारत रखते थे कि पत्थर बाल जैसे छोटे निशाने पर भी लग जाता था। 17 दूसरी तरफ़ इस्राईल के 4,00,000 फ़ौजी खड़े हुए, और हर एक के पास तलवार थी।

18 पहले इस्राईली बैत-एल चले गए। वहाँ उन्हों ने अल्लाह से दरयाफ़्त किया, “कौन सा क़बीला हमारे आगे आगे चले जब हम बिनयमीनियों पर हम्ला करें?” रब ने जवाब दिया, “यहूदाह सब से आगे चले।”

बिनयमीन के ख़िलाफ़ जंग

19 अगले दिन इस्राईली रवाना हुए और जिबिआ के क़रीब पहुँच कर अपनी लश्करगाह लगाई। 20 फिर वह हम्ला के लिए निकले और तर्तीब से लड़ने के लिए खड़े हो गए। 21 यह देख कर बिनयमीनी शहर से निकले और उन पर टूट पड़े। नतीजे में 22,000 इस्राईली शहीद हो गए।

22–23 इस्राईली बैत-एल चले गए और शाम तक रब के हुज़ूर रोते रहे। उन्हों ने रब से पूछा, “क्या हम दुबारा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हम्ला करो!” यह सुन कर इस्राईलियों का हौसला बढ़ गया और वह अगले दिन वहीं खड़े हो गए जहाँ पहले दिन खड़े हुए थे। 24 लेकिन जब वह शहर के क़रीब पहुँचे 25 तो बिनयमीनी पहले की तरह शहर से निकल कर उन पर टूट पड़े। उस दिन तलवार से लेस 18,000 इस्राईली शहीद हो गए।

26 फिर इस्राईल का पूरा लश्कर बैत-एल चला गया। वहाँ वह शाम तक रब के हुज़ूर रोते और रोज़ा रखते रहे। उन्हों ने रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ

और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करके 27 उस से
दरयाफ़्त किया कि हम क्या करें। (उस वक़्त अल्लाह
के अह्द का सन्दूक़ बैत-एल में था 28 जहाँ फ़ीन्हास
बिन इलीअज़र बिन हारून इमाम था।) इस्राईलियों
ने पूछा, “क्या हम एक और मर्तबा अपने बिनयमीनी
भाइयों से लड़ने जाएँ या इस से बाज़ आएँ?” रब ने
जवाब दिया, “उन पर हम्ला करो, क्यूँकि कल ही मैं
उन्हें तुम्हारे हवाले कर दूँगा।”

बिनयमीन का सत्यानास

29 इस दफ़ा कुछ इस्राईली जिबिआ के इर्दगिर्द घात
में बैठ गए। 30 बाक़ी अफ़राद पहले दो दिनों की
सी तर्तीब के मुताबिक़ लड़ने के लिए खड़े हो गए।
31 बिनयमीनी दुबारा शहर से निकल कर उन पर टूट
पड़े। जो रास्ते बैत-एल और जिबिआ की तरफ़ ले
जाते हैं उन पर और खुले मैदान में उन्हों ने तक़रीबन
30 इस्राईलियों को मार डाला। यूँ लड़ते लड़ते वह
शहर से दूर होते गए। 32 वह पुकारे, “अब हम उन्हें
पहली दो मर्तबा की तरह शिकस्त देंगे!”

लेकिन इस्राईलियों ने मन्सूबा बांध लिया था, “हम
उन के आगे आगे भागते हुए उन्हें शहर से दूर रास्तों
पर खैंच लेंगे।” 33 यूँ वह भागने लगे और बिनयमीनी
उन के पीछे पड़ गए। लेकिन बाल-तमर के क़रीब
इस्राईली रुक कर मुड़ गए और उन का सामना
करने लगे। अब बाक़ी इस्राईली जो जिबा के इर्दगिर्द
और खुले मैदान में घात में बैठे थे अपनी छुपने
की जगहों से निकल आए। 34 अचानक जिबिआ
के बिनयमीनियों को 10,000 बेहतरीन फ़ौजियों का
सामना करना पड़ा, उन मर्दों का जो पूरे इस्राईल
से चुने गए थे। बिनयमीनी उन से ख़ूब लड़ने लगे,
लेकिन उन की आँखें अभी इस बात के लिए बन्द थीं
कि उन का अन्जाम क़रीब आ गया है। 35 उस दिन
इस्राईलियों ने रब की मदद से फ़त्ह पा कर तलवार
से लेस 25,100 बिनयमीनी फ़ौजियों को मौत के घाट
उतार दिया। 36 तब बिनयमीनियों ने जान लिया कि
दुश्मन हम पर ग़ालिब आ गए हैं। क्यूँकि इस्राईली
फ़ौज ने अपने भाग जाने से उन्हें जिबिआ से दूर खैंच
लिया था ताकि शहर के इर्दगिर्द घात में बैठे मर्दों को
शहर पर हम्ला करने का मौक़ा मुहय्या करें। 37 तब
यह मर्द निकल कर शहर पर टूट पड़े और तलवार से
तमाम बाशिन्दों को मार डाला, 38–39 फिर मन्सूबे के
मुताबिक़ आग लगा कर धुएँ का बड़ा बादल पैदा
किया ताकि भागने वाले इस्राईलियों को इशारा मिल
जाए कि वह मुड़ कर बिनयमीनियों का मुक़ाबला
करें।

उस वक़्त तक बिनयमीनियों ने तक़रीबन 30
इस्राईलियों को मार डाला था, और उन का ख़याल
था कि हम उन्हें पहले की तरह शिकस्त दे रहे हैं।
40 अचानक उन के पीछे धुएँ का बादल आसमान
की तरफ़ उठने लगा। जब बिनयमीनियों ने मुड़ कर
देखा कि शहर के कोने कोने से धुआँ निकल रहा है
41 तो इस्राईल के मर्द रुक गए और पलट कर उन
का सामना करने लगे।

बिनयमीनी सख़्त घबरा गए, क्यूँकि उन्हों ने जान
लिया कि हम तबाह हो गए हैं। 42–43 तब उन्हों
ने मशरिक़ के रेगिस्तान की तरफ़ फ़रार होने की
कोशिश की। लेकिन अब वह मर्द भी उन का ताक़्क़ुब
करने लगे जिन्हों ने घात में बैठ कर जिबिआ पर
हम्ला किया था। यूँ इस्राईलियों ने मफ़रूरों को घेर
कर मार डाला। 44 उस वक़्त बिनयमीन के 18,000
तजरिबाकार फ़ौजी हलाक हुए। 45 जो बच गए वह
रेगिस्तान की चटान रिम्मोन की तरफ़ भाग निकले।
लेकिन इस्राईलियों ने रास्ते में उन के 5,000 अफ़राद
को मौत के घाट उतार दिया। इस के बाद उन्हों
ने जिदओम तक उन का ताक़्क़ुब किया। मज़ीद
2,000 बिनयमीनी हलाक हुए। 46 इस तरह बिनयमीन
के कुल 25,000 तलवार से लेस और तजरिबाकार
फ़ौजी मारे गए।

47 सिर्फ़ 600 मर्द बच कर रिम्मोन की चटान तक
पहुँच गए। वहाँ वह चार महीने तक टिके रहे। 48 तब
इस्राईली ताक़्क़ुब करने से बाज़ आ कर बिनयमीन
के क़बाइली इलाक़े में वापस आए। वहाँ उन्हों ने

जगह-ब-जगह जा कर सब कुछ मौत के घाट उतार दिया। जो भी उन्हें मिला वह तलवार की ज़द में आ गया, ख़्वाह इन्सान था या हैवान। साथ साथ उन्हों ने तमाम शहरों को आग लगा दी।

बिनयमीनियों को औरतें मिलती हैं

21 1 जब इस्राईली मिस्फ़ाह में जमा हुए थे तो सब ने क़सम खा कर कहा था, “हम कभी भी अपनी बेटियों का किसी बिनयमीनी मर्द के साथ रिश्ता नहीं बांधेंगे।” 2 अब वह बैत-एल चले गए और शाम तक अल्लाह के हुज़ूर बैठे रहे। रो रो कर उन्हों ने दुआ की, 3 “ऐ रब, इस्राईल के ख़ुदा, हमारी क़ौम का एक पूरा क़बीला मिट गया है! यह मुसीबत इस्राईल पर क्यूँ आई?”

4 अगले दिन वह सुब्ह-सवेरे उठे और क़ुर्बानगाह बना कर उस पर भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। 5 फिर वह एक दूसरे से पूछने लगे, “जब हम मिस्फ़ाह में रब के हुज़ूर जमा हुए तो हमारी क़ौम में से कौन कौन इजतिमा में शरीक न हुआ?” क्यूँकि उस वक़्त उन्हों ने क़सम खा कर एलान किया था, “जिस ने यहाँ रब के हुज़ूर आने से इन्कार किया उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।” 6 अब इस्राईलियों को बिनयमीनियों पर अफ़्सोस हुआ। उन्हों ने कहा, “एक पूरा क़बीला मिट गया है। 7 अब हम उन थोड़े बचे-खुचे आदमियों को बीवियाँ किस तरह मुहय्या कर सकते हैं? हम ने तो रब के हुज़ूर क़सम खाई है कि अपनी बेटियों का उन के साथ रिश्ता नहीं बांधेंगे। 8 लेकिन हो सकता है कोई ख़ानदान मिस्फ़ाह के इजतिमा में न आया हो। आओ, हम पता करें।” मालूम हुआ कि यबीस-जिलिआद के बाशिन्दे नहीं आए थे। 9 यह बात फ़ौजियों को गिनने से पता चली, क्यूँकि गिनते वक़्त यबीस-जिलिआद का कोई भी शख़्स फ़ौज में नहीं था।

10 तब उन्हों ने 12,000 फ़ौजियों को चुन कर उन्हें हुक्म दिया, “यबीस-जिलिआद पर हम्ला करके तमाम बाशिन्दों को बाल-बच्चों समेत मार डालो। 11 सिर्फ़ कुंवारियों को ज़िन्दा रहने दो।”

12 फ़ौजियों ने यबीस में 400 कुंवारियाँ पाईं। वह उन्हें सैला ले आए जहाँ इस्राईलियों का लश्कर ठहरा हुआ था। 13 वहाँ से उन्हों ने अपने क़ासिदों को रिम्मोन की चटान के पास भेज कर बिनयमीनियों के साथ सुलह कर ली। 14 फिर बिनयमीन के 600 मर्द रेगिस्तान से वापस आए, और उन के साथ यबीस-जिलिआद की कुंवारियों की शादी हुई। लेकिन यह सब के लिए काफ़ी नहीं थीं।

15 इस्राईलियों को बिनयमीन पर अफ़्सोस हुआ, क्यूँकि रब ने इस्राईल के क़बीलों में ख़ला डाल दिया था। 16 जमाअत के बुज़ुर्गों ने दुबारा पूछा, “हमें बिनयमीन के बाक़ी मर्दों के लिए कहाँ से बीवियाँ मिलेंगी? उन की तमाम औरतें तो हलाक हो गई हैं। 17 लाज़िम है कि उन्हें उन का मौरूसी इलाक़ा वापस मिल जाए। ऐसा न हो कि वह बिलकुल मिट जाएँ। 18 लेकिन हम अपनी बेटियों की उन के साथ शादी नहीं करा सकते, क्यूँकि हम ने क़सम खा कर एलान किया है, ‘जो अपनी बेटी का रिश्ता बिनयमीन के किसी मर्द से बांधेगा उस पर अल्लाह की लानत हो’।”

19 यूँ सोचते सोचते उन्हें आख़िरकार यह तरकीब सूझी, “कुछ देर के बाद यहाँ सैला में रब की सालाना ईद मनाई जाएगी। सैला बैत-एल के शिमाल में, लबूना के जुनूब में और उस रास्ते के मशरिक़ में है जो बैत-एल से सिकम तक ले जाता है। 20 अब बिनयमीनी मर्दों के लिए हमारा मश्वरा है कि ईद के दिनों में अंगूर के बाग़ों में छुप कर घात में बैठ जाएँ। 21 जब लड़कियाँ लोकनाच के लिए सैला से निकलेंगी तो फिर बाग़ों से निकल कर उन पर झपट पड़ना। हर आदमी एक लड़की को पकड़ कर उसे अपने घर ले जाए। 22 जब उन के बाप और भाई हमारे पास आ कर आप की शिकायत करेंगे तो हम उन से कहेंगे, ‘बिनयमीनियों पर तरस खाएँ, क्यूँकि जब हम ने यबीस पर फ़त्ह पाई तो हम उन के लिए काफ़ी औरतें हासिल न कर सके। आप बेक़ुसूर हैं, क्यूँकि

आप ने उन्हें अपनी बेटियों को इरादतन तो नहीं
दिया’।” 23 बिनयमीनियों ने बुज़ुर्गों की इस हिदायत
पर अमल किया। ईद के दिनों में जब लड़कियाँ नाच
रही थीं तो बिनयमीनियों ने उतनी पकड़ लीं कि उन
की कमी पूरी हो गई। फिर वह उन्हें अपने क़बाइली
इलाक़े में ले गए और शहरों को दुबारा तामीर करके
उन में बसने लगे। 24 बाक़ी इस्राईली भी वहाँ से चले
गए। हर एक अपने क़बाइली इलाक़े में वापस चला
गया। 25 उस ज़माने में इस्राईल में कोई बादशाह नहीं
था। हर एक वही कुछ करता जो उसे मुनासिब लगता
था।

रूत

इलीमलिक मोआब चला जाता है

1 1–2 उन दिनों जब क़ाज़ी क़ौम की राहनुमाई
किया करते थे तो इस्राईल में काल पड़ा।
यहूदाह के शहर बैत-लहम में एक इफ़्राती आदमी
रहता था जिस का नाम इलीमलिक था। काल की
वजह से वह अपनी बीवी नओमी और अपने दो बेटों
महलोन और किल्योन को ले कर मुल्क-ए-मोआब में
जा बसा।

3 लेकिन कुछ देर के बाद इलीमलिक फ़ौत हो गया,
और नओमी अपने दो बेटों के साथ अकेली रह गई।
4 महलोन और किल्योन ने मोआब की दो औरतों से
शादी कर ली। एक का नाम उर्फा था और दूसरी का
रूत। लेकिन तक़रीबन दस साल के बाद 5 दोनों बेटे
भी जाँ-ब-हक़ हो गए। अब नओमी का न शौहर और
न बेटे ही रहे थे।

नओमी रूत के साथ वापस चली जाती है

6–7 एक दिन नओमी को मुल्क-ए-मोआब में ख़बर
मिली कि रब अपनी क़ौम पर रहम करके उसे दुबारा
अच्छी फ़सलें दे रहा है। तब वह अपने वतन यहूदाह
के लिए रवाना हुई। उर्फा और रूत भी साथ चलीं।

जब वह उस रास्ते पर आ गईं जो यहूदाह तक
पहुँचाता है 8 तो नओमी ने अपनी बहूओं से कहा,
“अब अपने माँ-बाप के घर वापस चली जाएँ। रब
आप पर उतना रहम करे जितना आप ने मरहूमों और
मुझ पर किया है। 9 वह आप को नए घर और नए
शौहर मुहय्या करके सुकून दे।”

यह कह कर उस ने उन्हें बोसा दिया। दोनों रो पड़ीं
10 और एतिराज़ किया, “हरगिज़ नहीं, हम आप के
साथ आप की क़ौम के पास जाएँगी।” 11 लेकिन
नओमी ने इसरार किया, “बेटियो, बस करें और
अपने अपने घर वापस चली जाएँ। अब मेरे साथ
जाने का क्या फ़ाइदा? मुझ से तो मज़ीद कोई बेटा
पैदा नहीं होगा जो आप का शौहर बन सके। 12 नहीं
बेटियो, वापस चली जाएँ। मैं तो इतनी बूढ़ी हो चुकी
हूँ कि दुबारा शादी नहीं कर सकती। और अगर इस
की उम्मीद भी होती बल्कि मेरी शादी आज रात को
होती और मेरे हाँ बेटे पैदा होते 13 तो क्या आप उन
के बालिग़ हो जाने तक इन्तिज़ार कर सकतीं? क्या
आप उस वक़्त तक किसी और से शादी करने से
इन्कार करतीं? नहीं, बेटियो। रब ने अपना हाथ मेरे
ख़िलाफ़ उठाया है, तो आप इस लानत की ज़द में
क्यूँ आएँ?”

14 तब उर्फा और रूत दुबारा रो पड़ीं। उर्फा ने
अपनी सास को चूम कर अलविदा कहा, लेकिन
रूत नओमी के साथ लिपटी रही। 15 नओमी ने उसे
समझाने की कोशिश की, “देखें, उर्फा अपनी क़ौम
और अपने देवताओं के पास वापस चली गई है।
अब आप भी ऐसा ही करें।”

16 लेकिन रूत ने जवाब दिया, “मुझे आप को छोड़
कर वापस जाने पर मज्बूर न कीजिए। जहाँ आप
जाएँगी मैं जाऊँगी। जहाँ आप रहेंगी वहाँ मैं भी रहूँगी।
आप की क़ौम मेरी क़ौम और आप का ख़ुदा मेरा ख़ुदा
है। 17 जहाँ आप मरेंगी वहीं मैं मरूँगी और वहीं दफ़न
हो जाऊँगी। सिर्फ़ मौत ही मुझे आप से अलग कर
सकती है। अगर मेरा यह वादा पूरा न हो तो अल्लाह
मुझे सख़्त सज़ा दे!”

18 नओमी ने जान लिया कि रूत का साथ जाने का
पक्का इरादा है, इस लिए वह ख़ामोश हो गई और उसे
समझाने से बाज़ आई। 19 वह चल पड़ीं और चलते
चलते बैत-लहम पहुँच गईं। जब दाख़िल हुईं तो पूरे
शहर में हलचल मच गई। औरतें कहने लगीं, “क्या
यह नओमी नहीं है?”

20 नओमी ने जवाब दिया, “अब मुझे नओमी [w]मत
कहना बल्कि मारा, [x]क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे
सख़्त मुसीबत में डाल दिया है। 21 यहाँ से जाते वक़्त
मेरे हाथ भरे हुए थे, लेकिन अब रब मुझे ख़ाली हाथ
वापस ले आया है। चुनाँचे मुझे नओमी मत कहना।
रब ने ख़ुद मेरे ख़िलाफ़ गवाही दी है, क़ादिर-ए-
मुतलक़ ने मुझे इस मुसीबत में डाला है।”
22 जब नओमी अपनी मोआबी बहू के साथ बैत-
लहम पहुँची तो जौ की फ़सल की कटाई शुरू हो
चुकी थी।

रूत की बोअज़ से मुलाक़ात

2 1 बैत-लहम में नओमी के मरहूम शौहर का
रिश्तेदार रहता था जिस का नाम बोअज़ था।
वह असर-ओ-रसूख़ रखता था, और उस की ज़मीनें
थीं।
2 एक दिन रूत ने अपनी सास से कहा, “मैं खेतों में
जा कर फ़सल की कटाई से बची हुई बालें चुन लूँ।
कोई न कोई तो मुझे इस की इजाज़त देगा।” नओमी
ने जवाब दिया, “ठीक है बेटी, जाएँ।” 3 रूत किसी
खेत में गई और मज़दूरों के पीछे पीछे चलती हुई
बची हुई बालें चुनने लगी। उसे मालूम न था कि खेत
का मालिक सुसर का रिश्तेदार बोअज़ है।
4 इतने में बोअज़ बैत-लहम से पहुँचा। उस ने अपने
मज़दूरों से कहा, “रब आप के साथ हो।” उन्हों ने
जवाब दिया, “और रब आप को भी बरकत दे!”
5 फिर बोअज़ ने मज़दूरों के इंचार्ज से पूछा, “उस
जवान औरत का मालिक कौन है?” 6 आदमी ने
जवाब दिया, “यह मोआबी औरत नओमी के साथ
मुल्क-ए-मोआब से आई है। 7 इस ने मुझ से मज़दूरों
के पीछे चल कर बची हुई बालें चुनने की इजाज़त
ली। यह थोड़ी देर झोंपड़ी के साय में आराम करने
के सिवा सुब्ह से ले कर अब तक काम में लगी रही
है।”
8 यह सुन कर बोअज़ ने रूत से बात की, “बेटी,
मेरी बात सुनें! किसी और खेत में बची हुई बालें चुनने
के लिए न जाएँ बल्कि यहीं मेरी नौकरानियों के साथ
रहें। 9 खेत के उस हिस्से पर ध्यान दें जहाँ फ़सल
की कटाई हो रही है और नौकरानियों के पीछे पीछे
चलती रहें। मैं ने आदमियों को आप को छेड़ने से
मना किया है। जब भी आप को प्यास लगे तो उन
बर्तनों से पानी पीना जो आदमियों ने कुएँ से भर रखे
हैं।”
10 रूत मुँह के बल झुक गई और बोली, “मैं इस
लाइक़ नहीं कि आप मुझ पर इतनी मेहरबानी करें।
मैं तो परदेसी हूँ। आप क्यूँ मेरी क़दर करते हैं?”
11 बोअज़ ने जवाब दिया, “मुझे वह कुछ बताया गया
है जो आप ने अपने शौहर की वफ़ात से ले कर आज
तक अपनी सास के लिए किया है। आप अपने माँ-
बाप और अपने वतन को छोड़ कर एक क़ौम में
बसने आई हैं जिसे पहले से नहीं जानती थीं। 12 आप
रब इस्राईल के ख़ुदा के परों तले पनाह लेने आई
हैं। अब वह आप को आप की नेकी का पूरा अज्र
दे।” 13 रूत ने कहा, “मेरे आक़ा, अल्लाह करे कि मैं
आइन्दा भी आप की मन्ज़ूर-ए-नज़र रहूँ। गो मैं आप
की नौकरानियों की हैसियत भी नहीं रखती तो भी
आप ने मुझ से शफ़क़त भरी बातें करके मुझे तसल्ली
दी है।”
14 खाने के वक़्त बोअज़ ने रूत को बुला कर कहा,
“इधर आ कर रोटी खाएँ और अपना नवाला सिरके
में डुबो दें।” रूत उस के मज़दूरों के साथ बैठ गई,
और बोअज़ ने उसे जौ के भुने हुए दाने दे दिए।
रूत ने जी भर कर खाना खाया। फिर भी कुछ बच
गया। 15 जब वह काम जारी रखने के लिए उठी तो
बोअज़ ने हुक्म दिया, “उसे पूलों के दरमियान भी
बालें जमा करने दो, और अगर वह ऐसा करे तो उस
की बेइज़्ज़ती मत करना। 16 न सिर्फ़ यह बल्कि काम
करते वक़्त इधर उधर पूलों की कुछ बालें ज़मीन पर

---

[w]ख़ुशगवार, ख़ुशी वाली।

[x]कड़वी।

गिरने दो। जब वह उन्हें जमा करने आए तो उसे मत झिड़कना!”

17 रूत ने खेत में शाम तक काम जारी रखा। जब
उस ने बालों को कूट लिया तो दानों के तक़रीबन 13
किलोग्राम निकले। 18 फिर वह सब कुछ उठा कर
अपने घर वापस ले आई और सास को दिखाया।
साथ साथ उस ने उसे वह भुने हुए दाने भी दिए जो
दोपहर के खाने से बच गए थे। 19 नओमी ने पूछा,
“आप ने यह सब कुछ कहाँ से जमा किया? बताएँ,
आप कहाँ थीं? अल्लाह उसे बरकत दे जिस ने आप
की इतनी क़दर की है!”

रूत ने कहा, “जिस आदमी के खेत में मैं ने आज
काम किया उस का नाम बोअज़ है।” 20 नओमी
पुकार उठी, “रब उसे बरकत दे! वह तो हमारा
क़रीबी रिश्तेदार है, और शरीअत के मुताबिक़ उस
का हक़ है कि वह हमारी मदद करे। अब मुझे मालूम
हुआ है कि अल्लाह हम पर और हमारे मरहूम शौहरों
पर रहम करने से बाज़ नहीं आया!”

21 रूत बोली, “उस ने मुझ से यह भी कहा कि
कहीं और न जाना बल्कि कटाई के इख़्तिताम तक
मेरे मज़दूरों के पीछे पीछे बालें जमा करना।”

22 नओमी ने जवाब में कहा, “बहुत अच्छा। बेटी,
ऐसा ही करें। उस की नौकरानियों के साथ रहने का
यह फ़ाइदा है कि आप महफ़ूज़ रहेंगी। किसी और
के खेत में जाएँ तो हो सकता है कि कोई आप को
तंग करे।”

23 चुनाँचे रूत जौ और गन्दुम की कटाई के पूरे
मौसम में बोअज़ की नौकरानियों के पास जाती और
बची हुई बालें चुनती। शाम को वह अपनी सास के
घर वापस चली जाती थी।

रूत की शादी की कोशिशें

3 1 एक दिन नओमी रूत से मुख़ातिब हुई, “बेटी,
मैं आप के लिए घर का बन्द-ओ-बस्त करना
चाहती हूँ, ऐसी जगह जहाँ आप की ज़रूरियात
आइन्दा भी पूरी होती रहेंगी। 2 अब देखें, जिस
आदमी की नौकरानियों के साथ आप ने बालें चुनी हैं
वह हमारा क़रीबी रिश्तेदार है। आज शाम को बोअज़
गाहने की जगह पर जौ फटकेगा। 3 तो सुन लें, अच्छी
तरह नहा कर ख़ुश्बूदार तेल लगा लें और अपना सब
से ख़ूबसूरत लिबास पहन लें। फिर गाहने की जगह
जाएँ। लेकिन उसे पता न चले कि आप आई हैं। जब
वह खाने-पीने से फ़ारिग़ हो जाएँ 4 तो देख लें कि
बोअज़ सोने के लिए कहाँ लेट जाता है। फिर जब
वह सो जाएगा तो वहाँ जाएँ और कम्बल को उस के
पैरों से उतार कर उन के पास लेट जाएँ। बाक़ी जो
कुछ करना है वह आप को उसी वक़्त बताएगा।”

5 रूत ने जवाब दिया, “ठीक है। जो कुछ भी आप
ने कहा है मैं करूँगी।” 6 वह अपनी सास की हिदायत
के मुताबिक़ तय्यार हुई और शाम के वक़्त गाहने की
जगह पर पहुँची। 7 वहाँ बोअज़ खाने-पीने और ख़ुशी
मनाने के बाद जौ के ढेर के पास लेट कर सो गया।
फिर रूत चुपके से उस के पास आई। उस के पैरों से
कम्बल हटा कर वह उन के पास लेट गई।

8 आधी रात को बोअज़ घबरा गया। टटोल टटोल
कर उसे पता चला कि पैरों के पास औरत पड़ी है।
9 उस ने पूछा, “कौन है?” रूत ने जवाब दिया, “आप
की ख़ादिमा रूत। मेरी एक गुज़ारिश है। चूँकि आप
मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं इस लिए आप का हक़ है
कि मेरी ज़रूरियात पूरी करें। मेहरबानी करके अपने
लिबास का दामन मुझ पर बिछा कर ज़ाहिर करें कि
मेरे साथ शादी करेंगे।”

10 बोअज़ बोला, “बेटी, रब आप को बरकत दे!
अब आप ने अपने सुसराल से वफ़ादारी का पहले
की निस्बत ज़्यादा इज़हार किया है, क्यूँकि आप
जवान आदमियों के पीछे न लगीं, ख़्वाह ग़रीब हों
या अमीर। 11 बेटी, अब फ़िक्र न करें। मैं ज़रूर आप
की यह गुज़ारिश पूरी करूँगा। आख़िर तमाम मक़ामी
लोग जान गए हैं कि आप शरीफ़ औरत हैं। 12 आप
की बात सच है कि मैं आप का क़रीबी रिश्तेदार हूँ
और यह मेरा हक़ है कि आप की ज़रूरियात पूरी
करूँ। लेकिन एक और आदमी है जिस का आप से

ज़्यादा क़रीबी रिश्ता है। 13 रात के लिए यहाँ ठहरें!
कल मैं उस आदमी से बात करूँगा। अगर वह आप
से शादी करके रिश्तेदारी का हक़ अदा करना चाहे
तो ठीक है। अगर नहीं तो रब की क़सम, मैं यह ज़रूर
करूँगा। आप सुब्ह के वक़्त तक यहीं लेटी रहें।”
14 चुनाँचे रूत बोअज़ के पैरों के पास लेटी रही।
लेकिन वह सुब्ह मुँह अंधेरे उठ कर चली गई ताकि
कोई उसे पहचान न सके, क्यूँकि बोअज़ ने कहा था,
“किसी को पता न चले कि कोई औरत यहाँ गाहने
की जगह पर मेरे पास आई है।” 15 रूत के जाने से
पहले बोअज़ बोला, “अपनी चादर बिछा दें!” फिर
उस ने कोई बर्तन छः दफ़ा जौ के दानों से भर कर
चादर में डाल दिया और उसे रूत के सर पर रख
दिया। फिर वह शहर में वापस चला गया।
16 जब रूत घर पहुँची तो सास ने पूछा, “बेटी, वक़्त
कैसा रहा?” रूत ने उसे सब कुछ सुनाया जो बोअज़
ने जवाब में किया था। 17 रूत बोली, “जौ के यह
दाने भी उस की तरफ़ से हैं। वह नहीं चाहता था कि
मैं ख़ाली हाथ आप के पास वापस आऊँ।” 18 यह
सुन कर नओमी ने रूत को तसल्ली दी, “बेटी, जब
तक कोई नतीजा न निकले यहाँ ठहर जाएँ। अब यह
आदमी आराम नहीं करेगा बल्कि आज ही मुआमले
का हल निकालेगा।”

4 1 बोअज़ शहर के दरवाज़े के पास जा कर बैठ
गया जहाँ बुज़ुर्ग फ़ैसले किया करते थे। कुछ देर
के बाद वह रिश्तेदार वहाँ से गुज़रा जिस का ज़िक्र
बोअज़ ने रूत से किया था। बोअज़ उस से मुख़ातिब
हुआ, “दोस्त, इधर आएँ। मेरे पास बैठ जाएँ।”
रिश्तेदार उस के पास बैठ गया 2 तो बोअज़ ने शहर
के दस बुज़ुर्गों को भी साथ बिठाया। 3 फिर उस ने
रिश्तेदार से बात की, “नओमी मुल्क-ए-मोआब से
वापस आ कर अपने शौहर इलीमलिक की ज़मीन
फ़रोख़्त करना चाहती है। 4 यह ज़मीन हमारे ख़ानदान
का मौरूसी हिस्सा है, इस लिए मैं ने मुनासिब समझा
कि आप को इत्तिला दूँ ताकि आप यह ज़मीन ख़रीद
लें। बैत-लहम के बुज़ुर्ग और साथ बैठे राहनुमा इस के
गवाह होंगे। लाज़िम है कि यह ज़मीन हमारे ख़ानदान
का हिस्सा रहे, इस लिए बताएँ कि क्या आप इसे
ख़रीद कर छुड़ाएँगे? आप का सब से क़रीबी रिश्ता
है, इस लिए यह आप ही का हक़ है। अगर आप
ज़मीन ख़रीदना न चाहें तो यह मेरा हक़ बनेगा।”
रिश्तेदार ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं इसे ख़रीद
कर छुड़ाऊँगा।” 5 फिर बोअज़ बोला, “अगर आप
नओमी से ज़मीन ख़रीदें तो आप को उस की मोआबी
बहू रूत से शादी करनी पड़ेगी ताकि मरहूम शौहर की
जगह औलाद पैदा करें जो उस का नाम रख कर यह
ज़मीन सँभालें।”
6 यह सुन कर रिश्तेदार ने कहा, “फिर मैं इसे
ख़रीदना नहीं चाहता, क्यूँकि ऐसा करने से मेरी
मौरूसी ज़मीन को नुक़्सान पहुँचेगा। आप ही इसे
ख़रीद कर छुड़ाएँ।”
7 उस ज़माने में अगर ऐसे किसी मुआमले में कोई
ज़मीन ख़रीदने का अपना हक़ किसी दूसरे को
मुन्तक़िल करना चाहता था तो वह अपनी चप्पल
उतार कर उसे दे देता था। इस तरीक़े से फ़ैसला
क़ानूनी तौर पर तै हो जाता था। 8 चुनाँचे रूत के
ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार ने अपनी चप्पल उतार कर
बोअज़ को दे दी और कहा, “आप ही ज़मीन को
ख़रीद लें।” 9 तब बोअज़ ने बुज़ुर्गों और बाक़ी लोगों
के सामने एलान किया, “आज आप गवाह हैं कि मैं ने
नओमी से सब कुछ ख़रीद लिया है जो उस के मरहूम
शौहर इलीमलिक और उस के दो बेटों किल्योन और
महलोन का था। 10 साथ ही मैं ने महलोन की बेवा
मोआबी औरत रूत से शादी करने का वादा किया
है ताकि महलोन के नाम से बेटा पैदा हो। यूँ मरहूम
की मौरूसी ज़मीन ख़ानदान से छिन नहीं जाएगी,
और उस का नाम हमारे ख़ानदान और बैत-लहम के
बाशिन्दों में क़ाइम रहेगा। आज आप सब गवाह हैं!”
11 बुज़ुर्गों और शहर के दरवाज़े पर बैठे दीगर मर्दों
ने इस की तस्दीक़ की, “हम गवाह हैं! रब आप
के घर में आने वाली इस औरत को उन बरकतों
से नवाज़े जिन से उस ने राख़िल और लियाह को

नवाज़ा, जिन से तमाम इस्राईली निकले। रब करे कि
आप की दौलत और इज़्ज़त इफ़्राता यानी बैत-लहम
में बढ़ती जाए। 12 वह आप और आप की बीवी को
उतनी औलाद बख़्शे जितनी तमर और यहूदाह के
बेटे फ़ारस के ख़ानदान को बख़्शी थी।”
13 चुनाँचे रूत बोअज़ की बीवी बन गई। और रब
की मर्ज़ी से रूत शादी के बाद हामिला हुई। जब उस
के बेटा हुआ 14 तो बैत-लहम की औरतों ने नओमी
से कहा, “रब की तम्जीद हो! आप को यह बच्चा
अता करने से उस ने ऐसा शख़्स मुहय्या किया है
जो आप का ख़ानदान सँभालेगा । अल्लाह करे कि
उस की शुहरत पूरे इस्राईल में फैल जाए। 15 उस से
आप ताज़ादम हो जाएँगी, और बुढ़ापे में वह आप
को सहारा देगा। क्यूँकि आप की बहू जो आप को
प्यार करती है और जिस की क़दर-ओ-क़ीमत सात
बेटों से बढ़ कर है उसी ने उसे जन्म दिया है!”
16 नओमी बच्चे को अपनी गोद में बिठा कर उसे
पालने लगी। 17 पड़ोसी औरतों ने उस का नाम ओबेद
यानी ख़िदमत करने वाला रखा। उन्हों ने कहा,
“नओमी के हाँ बेटा पैदा हुआ है!”
ओबेद दाऊद बादशाह के बाप यस्सी का बाप
था। 18 ज़ैल में फ़ारस का दाऊद तक नसबनामा है
: फ़ारस, हस्रोन, 19 राम, अम्मीनदाब, 20 नह्सोन,
सल्मोन, 21 बोअज़, ओबेद, 22 यस्सी और दाऊद।

१-समूएल

हन्ना अल्लाह से बच्चा माँगती है

1 1 इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर रामाताइम-
सोफ़ीम यानी रामा में एक इफ़्राईमी रहता था
जिस का नाम इल्क़ाना बिन यरोहाम बिन इलीहू बिन
तूख़ू बिन सूफ़ था। 2 इल्क़ाना की दो बीवियाँ थीं।
एक का नाम हन्ना था और दूसरी का फ़निन्ना। फ़निन्ना
के बच्चे थे, लेकिन हन्ना बेऔलाद थी।
3 इल्क़ाना हर साल अपने ख़ानदान समेत सफ़र
करके सैला के मक़्दिस के पास जाता ताकि वहाँ
रब्ब-उल-अफ़्वाज के हुज़ूर क़ुर्बानी गुज़राने और उस
की परस्तिश करे। उन दिनों में एली इमाम के दो
बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास सैला में इमाम की ख़िदमत
अन्जाम देते थे। 4 हर साल इल्क़ाना अपनी क़ुर्बानी
पेश करने के बाद क़ुर्बानी के गोश्त के टुकड़े फ़निन्ना
और उस के बेटे-बेटियों में तक़्सीम करता। 5 हन्ना को
भी गोश्त मिलता, लेकिन जहाँ दूसरों को एक हिस्सा
मिलता वहाँ उसे दो हिस्से मिलते थे। क्यूँकि इल्क़ाना
उस से बहुत मुहब्बत रखता था, अगरचे अब तक रब
की मर्ज़ी नहीं थी कि हन्ना के बच्चे पैदा हों। 6 फ़निन्ना
की हन्ना से दुश्मनी थी, इस लिए वह हर साल हन्ना
के बाँझपन का मज़ाक़ उड़ा कर उसे तंग करती थी।
7 साल-ब-साल ऐसा ही हुआ करता था। जब भी वह
रब के मक़्दिस के पास जाते तो फ़निन्ना हन्ना को इतना
तंग करती कि वह उस की बातें सुन सुन कर रो पड़ती
और खा पी न सकती। 8 फिर इल्क़ाना पूछता, “हन्ना,
तू क्यूँ रो रही है? तू खाना क्यूँ नहीं खा रही? उदास
होने की क्या ज़रूरत? मैं तो हूँ। क्या यह दस बेटों
से कहीं बेहतर नहीं?”
9 एक दिन जब वह सैला में थे तो हन्ना खाने-पीने
के बाद दुआ करने के लिए उठी। एली इमाम रब
के मक़्दिस के दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठा था।
10 हन्ना शदीद परेशानी के आलम में फूट फूट कर रोने
लगी। रब से दुआ करते करते 11 उस ने क़सम खाई,
“ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, मेरी बुरी हालत पर नज़र डाल
कर मुझे याद कर! अपनी ख़ादिमा को मत भूलना
बल्कि बेटा अता फ़रमा! अगर तू ऐसा करे तो मैं उसे
तुझे वापस कर दूँगी। ऐ रब, उस की पूरी ज़िन्दगी
तेरे लिए मख़्सूस होगी! इस का निशान यह होगा कि
उस के बाल कभी नहीं कटवाए जाएंगे।”
12 हन्ना बड़ी देर तक यूँ दुआ करती रही। एली उस
के मुँह पर ग़ौर करने लगा 13 तो देखा कि हन्ना के
होंट तो हिल रहे हैं लेकिन आवाज़ सुनाई नहीं दे
रही, क्यूँकि हन्ना दिल ही दिल में दुआ कर रही थी।
लेकिन एली को ऐसा लग रहा था कि वह नशे में धुत
है, 14 इस लिए उस ने उसे झिड़कते हुए कहा, “तू
कब तक नशे में धुत रहेगी? मै पीने से बाज़ आ!”
15 हन्ना ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, ऐसी कोई बात
नहीं है। मैं ने न मै, न कोई और नशाआवर चीज़ चखी
है। बात यह है कि मैं बड़ी रंजीदा हूँ, इस लिए रब
के हुज़ूर अपने दिल की आह-ओ-ज़ारी [y]उंडेल दी है।
16 यह न समझें कि मैं निकम्मी औरत हूँ, बल्कि मैं
बड़े ग़म और अज़ियत में दुआ कर रही थी।”
17 यह सुन कर एली ने जवाब दिया, “सलामती से
अपने घर चली जा! इस्राईल का ख़ुदा तेरी दरख़्वास्त
पूरी करे।” 18 हन्ना ने कहा, “अपनी ख़ादिमा पर आप
की नज़र-ए-करम हो।” फिर उस ने जा कर कुछ
खाया, और उस का चिहरा उदास न रहा।

---

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी जान उंडेल दी है।

समूएल की पैदाइश और बचपन

19 अगले दिन पूरा ख़ानदान सुब्ह-सवेरे उठा। उन्हों
ने मक़्दिस में जा कर रब की परस्तिश की, फिर रामा
वापस चले गए जहाँ उन का घर था। और रब ने हन्ना
को याद करके उस की दुआ सुनी। 20 इल्क़ाना और
हन्ना के बेटा पैदा हुआ। हन्ना ने उस का नाम समूएल
यानी 'उस का नाम अल्लाह है' रखा, क्यूँकि उस ने
कहा, "मैं ने उसे रब से माँगा।"
21 अगले साल इल्क़ाना ख़ानदान के साथ मामूल
के मुताबिक़ सैला गया ताकि रब को सालाना क़ुर्बानी
पेश करे और अपनी मन्नत पूरी करे। 22 लेकिन हन्ना
न गई। उस ने अपने शौहर से कहा, "जब बच्चा दूध
पीना छोड़ देगा तब ही मैं उसे ले कर रब के हुज़ूर
पेश करूँगी। उस वक़्त से वह हमेशा वहीं रहेगा।"
23 इल्क़ाना ने जवाब दिया, "वह कुछ कर जो तुझे
मुनासिब लगे। बच्चे का दूध छुड़ाने तक यहाँ रह।
लेकिन रब अपना कलाम क़ाइम रखे।" चुनाँचे हन्ना
बच्चे के दूध छुड़ाने तक घर में रही।
24 जब समूएल ने दूध पीना छोड़ दिया तो हन्ना उसे
सैला में रब के मक़्दिस के पास ले गई, गो बच्चा अभी
छोटा था। क़ुर्बानियों के लिए उस के पास तीन बैल,
मैदे के तक़रीबन 16 किलोग्राम और मै की मश्क थी।
25 बैल को क़ुर्बानगाह पर चढ़ाने के बाद इल्क़ाना
और हन्ना बच्चे को एली के पास ले गए। 26 हन्ना ने
कहा, "मेरे आक़ा, आप की हयात की क़सम, मैं
वही औरत हूँ जो कुछ साल पहले यहाँ आप की
मौजूदगी में खड़ी दुआ कर रही थी। 27 उस वक़्त मैं
ने इल्तिमास की थी कि रब मुझे बेटा अता करे, और
रब ने मेरी सुनी है। 28 चुनाँचे अब मैं अपना वादा पूरा
करके बेटे को रब को वापस कर देती हूँ। उम्र भर
वह रब के लिए मख़्सूस होगा।" तब उस ने रब के
हुज़ूर सिज्दा किया।

हन्ना का गीत

2 1 वहाँ हन्ना ने यह गीत गाया,
"मेरा दिल रब की ख़ुशी मनाता है, क्यूँकि उस
ने मुझे क़ुव्वत अता की है। मेरा मुँह दिलेरी से अपने
दुश्मनों के ख़िलाफ़ बात करता है, क्यूँकि मैं तेरी
नजात के बाइस बाग़ बाग़ हूँ।

2 रब जैसा क़ुद्दूस कोई नहीं है, तेरे सिवा कोई नहीं
है। हमारे ख़ुदा जैसी कोई चटान नहीं है। 3 डींगें मारने
से बाज़ आओ! गुस्ताख़ बातें मत बको! क्यूँकि रब
ऐसा ख़ुदा है जो सब कुछ जानता है, वह तमाम
आमाल को तोल कर परखता है। 4 अब बड़ों की
कमानें टूट गई हैं जबकि गिरने वाले क़ुव्वत से
कमरबस्ता हो गए हैं। 5 जो पहले सेर थे वह रोटी
मिलने के लिए मज़दूरी करते हैं जबकि जो पहले
भूके थे वह सेर हो गए हैं। बेऔलाद औरत के सात
बच्चे पैदा हुए हैं जबकि वाफ़िर बच्चों की माँ मुरझा
रही है।

6 रब एक को मरने देता और दूसरे को ज़िन्दा होने
देता है। वह एक को पाताल में उतरने देता और
दूसरे को वहाँ से निकल आने देता है। 7 रब ही ग़रीब
और अमीर बना देता है, वही पस्त करता और वही
सरफ़राज़ करता है। 8 वह ख़ाक में दबे आदमी को
खड़ा करता है और राख में लेटे ज़रूरतमन्द को
सरफ़राज़ करता है, फिर उन्हें रईसों के साथ इज़्ज़त
की कुर्सी पर बिठा देता है। क्यूँकि दुनिया की बुन्यादें
रब की हैं, और उसी ने उन पर ज़मीन रखी है।

9 वह अपने वफ़ादार पैरोकारों के पाँओ महफ़ूज़
रखेगा जबकि शरीर तारीकी में चुप हो जाएंगे। क्यूँकि
इन्सान अपनी ताक़त से कामयाब नहीं होता। 10 जो
रब से लड़ने की जुरअत करें वह पाश पाश हो जाएंगे।
रब आसमान से उन के ख़िलाफ़ गरज कर दुनिया
की इन्तिहा तक सब की अदालत करेगा। वह अपने

बादशाह को तक़वियत और अपने मसह किए हुए ख़ादिम को क़ुव्वत अता करेगा।”

11 फिर इल्क़ाना और हन्ना रामा में अपने घर वापस
चले गए। लेकिन उन का बेटा एली इमाम के पास
रहा और मक़्दिस में रब की ख़िदमत करने लगा।

एली के बेटों की बेदीन ज़िन्दगी

12 लेकिन एली के बेटे बदमआश थे। न वह रब को
जानते थे, 13 न इमाम की हैसियत से अपने फ़राइज़
सहीह तौर पर अदा करते थे। क्यूँकि जब भी कोई
आदमी अपनी क़ुर्बानी पेश करके रिफ़ाक़ती खाने के
लिए गोश्त उबालता तो एली के बेटे अपने नौकर को
वहाँ भेज देते। यह नौकर सिहशाख़ा काँटा 14 देग में
डाल कर गोश्त का हर वह टुकड़ा अपने मालिकों
के पास ले जाता जो काँटे से लग जाता। यही उन
का तमाम इस्राईलियों के साथ सुलूक था जो सैला में
क़ुर्बानियाँ चढ़ाने आते थे। 15 न सिर्फ़ यह बल्कि कई
बार नौकर उस वक़्त भी आ जाता जब जानवर की
चर्बी अभी क़ुर्बानगाह पर जलानी होती थी। फिर वह
तक़ाज़ा करता, “मुझे इमाम के लिए कच्चा गोश्त दे
दो! उसे उबला गोश्त मन्ज़ूर नहीं बल्कि सिर्फ़ कच्चा
गोश्त, क्यूँकि वह उसे भूनना चाहता है।” 16 क़ुर्बानी
पेश करने वाला एतिराज़ करता, “पहले तो रब के
लिए चर्बी जलाना है, इस के बाद ही जो जी चाहे ले
लें।” फिर नौकर बदतमीज़ी करता, “नहीं, उसे अभी
दे दो, वर्ना मैं ज़बरदस्ती ले लूँगा।” 17 इन जवान
इमामों का यह गुनाह रब की नज़र में निहायत संगीन
था, क्यूँकि वह रब की क़ुर्बानियाँ हक़ीर जानते थे।

माँ-बाप समूएल से मिलने आते हैं

18 लेकिन छोटा समूएल रब के हुज़ूर ख़िदमत करता
रहा। उसे भी दूसरे इमामों की तरह कतान का
बालापोश दिया गया था। 19 हर साल जब उस की
माँ ख़ावन्द के साथ क़ुर्बानी पेश करने के लिए सैला
आती तो वह नया चोग़ा सी कर उसे दे देती। 20 और
रवाना होने से पहले एली समूएल के माँ-बाप को
बरकत दे कर इल्क़ाना से कहता, “हन्ना ने रब से बच्चा
माँग लिया और जब मिला तो उसे रब को वापस कर
दिया। अब रब आप को इस बच्चे की जगह मज़ीद बच्चे
दे।” इस के बाद वह अपने घर चले जाते। 21 और
वाक़ई, रब ने हन्ना को मज़ीद तीन बेटे और दो बेटियाँ
अता कीं। यह बच्चे घर में रहे, लेकिन समूएल रब के
हुज़ूर ख़िदमत करते करते जवान हो गया।

एली के बेटे बाप की नहीं सुनते

22 एली उस वक़्त बहुत बूढ़ा हो चुका था। बेटों
का तमाम इस्राईल के साथ बुरा सुलूक उस के कानों
तक पहुँच गया था, बल्कि यह भी कि बेटे उन औरतों
से नाजाइज़ ताल्लुक़ात रखते हैं जो मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर ख़िदमत करती हैं। 23 उस ने उन्हें
समझाया भी था, “आप ऐसी हरकतें क्यूँ कर रहे
हैं? मुझे तमाम लोगों से आप के शरीर कामों की
ख़बरें मिलती रहती हैं। 24 बेटो, ऐसा मत करना! जो
बातें आप के बारे में रब की क़ौम में फैल गई हैं
वह अच्छी नहीं। 25 देखें, अगर इन्सान किसी दूसरे
इन्सान का गुनाह करे तो हो सकता है अल्लाह दोनों
का दरमियानी बन कर क़ुसूरवार शख़्स पर रहम करे।
लेकिन अगर कोई रब का गुनाह करे तो फिर कौन
उस का दरमियानी बन कर उसे बचाएगा?”

लेकिन एली के बेटों ने बाप की न सुनी, क्यूँकि
रब की मर्ज़ी थी कि उन्हें सज़ा-ए-मौत मिल जाए।
26 लेकिन समूएल उन से फ़र्क़ था। जितना वह बड़ा
होता गया उतनी उस की रब और इन्सान के सामने
क़बूलियत बढ़ती गई।

एली के घराने को सज़ा मिलने की पेशगोई

27 एक दिन एक नबी एली के पास आया और
कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या जब तेरा बाप हारून
और उस का घराना मिस्र के बादशाह के ग़ुलाम थे
तो मैं ने अपने आप को उस पर ज़ाहिर न किया?
28 गो इस्राईल के बारह क़बीले थे लेकिन मैं ने मुक़र्रर
किया कि उसी के घराने के मर्द मेरे इमाम बन कर

क़ुर्बानगाह के सामने ख़िदमत करें, बख़ूर जलाएँ और मेरे हुज़ूर इमाम का बालापोश पहनें। साथ साथ मैं ने उन्हें क़ुर्बानगाह पर जलने वाली क़ुर्बानियों का एक हिस्सा मिलने का हक़ दे दिया। 29 तो फिर तुम लोग ज़बह और ग़ल्ला की वह क़ुर्बानियाँ हक़ीर क्यूँ जानते हो जो मुझे ही पेश की जाती हैं और जो मैं ने अपनी सुकूनतगाह के लिए मुक़र्रर की थीं? एली, तू अपने बेटों का मुझ से ज़्यादा एहतिराम करता है। तुम तो मेरी क़ौम इस्राईल की हर क़ुर्बानी के बेहतरीन हिस्से खा खा कर मोटे हो गए हो।'

30 चुनाँचे रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, वादा तो मैं ने किया था कि लावी के क़बीले का तेरा घराना हमेशा ही इमाम की ख़िदमत सरअन्जाम देगा। लेकिन अब मैं एलान करता हूँ कि ऐसा कभी नहीं होगा! क्यूँकि जो मेरा एहतिराम करते हैं उन का मैं एहतिराम करूँगा, लेकिन जो मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें हक़ीर जाना जाएगा। 31 इस लिए सुन! ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं तेरी और तेरे घराने की ताक़त यूँ तोड़ डालूँगा कि घर का कोई भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 32 और तू मक़्दिस में मुसीबत देखेगा हालाँकि मैं इस्राईल के साथ भलाई करता रहूँगा। तेरे घर में कभी भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 33 मैं तुम में से हर एक को तो अपनी ख़िदमत से निकाल कर हलाक नहीं करूँगा जब तेरी आँखें धुन्दली सी पड़ जाएँगी और तेरी जान हलकान हो जाएगी। लेकिन तेरी तमाम औलाद ग़ैरतबई मौत मरेगी। 34 तेरे बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास दोनों एक ही दिन हलाक हो जाएंगे। इस निशान से तुझे यक़ीन आएगा कि जो कुछ मैं ने फ़रमाया है वह सच है।

35 तब मैं अपने लिए एक इमाम खड़ा करूँगा जो वफ़ादार रहेगा। जो भी मेरा दिल और मेरी जान चाहेगी वही वह करेगा। मैं उस के घर की मज़बूत बुन्यादें रखूँगा, और वह हमेशा तक मेरे मसह किए हुए ख़ादिम के हुज़ूर आता जाता रहेगा। 36 उस वक़्त तेरे घर के बचे हुए तमाम अफ़राद उस इमाम के सामने झुक जाएंगे और पैसे और रोटी माँग कर इल्तिमास करेंगे, 'मुझे इमाम की कोई न कोई ज़िम्मादारी दें ताकि रोटी का टुकड़ा मिल जाए'।"

अल्लाह समूएल से हमकलाम होता है

3 1 छोटा समूएल एली के ज़ेर-ए-निगरानी रब के हुज़ूर ख़िदमत करता था। उन दिनों में रब की तरफ़ से बहुत कम पैग़ाम या रोयाएँ मिलती थीं। 2 एक रात एली जिस की आँखें इतनी कमज़ोर हो गई थीं कि देखना तक़रीबन नामुमकिन था मामूल के मुताबिक़ सो गया था। 3 समूएल भी लेट गया था। वह रब के मक़्दिस में सो रहा था जहाँ अह्द का सन्दूक़ पड़ा था। शमादान अब तक रब के हुज़ूर जल रहा था 4–5 कि अचानक रब ने आवाज़ दी, "समूएल!" समूएल ने जवाब दिया, "जी, मैं अभी आता हूँ।" वह भाग कर एली के पास गया और कहा, "जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आप ने मुझे बुलाया?" एली बोला, "नहीं, मैं ने तुम्हें नहीं बुलाया। वापस जा कर दुबारा लेट जाओ।" चुनाँचे समूएल दुबारा लेट गया।

6 लेकिन रब ने एक बार फिर आवाज़ दी, "समूएल!" लड़का दुबारा उठा और एली के पास जा कर बोला, "जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आप ने मुझे बुलाया?" एली ने जवाब दिया, "नहीं बेटा, मैं ने तुम्हें नहीं बुलाया। दुबारा सो जाओ।"

7 उस वक़्त समूएल रब की आवाज़ नहीं पहचान सकता था, क्यूँकि अभी उसे रब का कोई पैग़ाम नहीं मिला था। 8 चुनाँचे रब ने तीसरी बार आवाज़ दी, "समूएल!" एक और मर्तबा समूएल उठ खड़ा हुआ और एली के पास जा कर बोला, "जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आप ने मुझे बुलाया?" यह सुन कर एली ने जान लिया कि रब समूएल से हमकलाम हो रहा है। 9 इस लिए उस ने लड़के को बताया, "अब दुबारा लेट जाओ, लेकिन अगली दफ़ा जब आवाज़ सुनाई दे तो तुम्हें कहना है, 'ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम सुन रहा है'।"

समूएल एक बार फिर अपने बिस्तर पर लेट गया। 10 रब आ कर वहाँ खड़ा हुआ और पहले की तरह

पुकारा, “समूएल! समूएल!” लड़के ने जवाब दिया,
“ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम सुन रहा है।” 11 फिर
रब समूएल से हमकलाम हुआ, “देख, मैं इस्राईल
में इतना हौलनाक काम करूँगा कि जिसे भी इस की
ख़बर मिलेगी उस के कान बजने लगेंगे। 12 उस वक़्त
मैं शुरू से ले कर आख़िर तक वह तमाम बातें पूरी
करूँगा जो मैं ने एली और उस के घराने के बारे में
की हैं। 13 मैं एली को आगाह कर चुका हूँ कि उस
का घराना हमेशा तक मेरी अदालत का निशाना बना
रहेगा। क्यूँकि गो उसे साफ़ मालूम था कि उस के
बेटे अपनी ग़लत हरकतों से मेरा ग़ज़ब अपने आप
पर लाएँगे तो भी उस ने उन्हें करने दिया और न रोका।
14 मैं ने क़सम खाई है कि एली के घराने का क़ुसूर
न ज़बह और न ग़ल्ला की किसी क़ुर्बानी से दूर किया
जा सकता है बल्कि इस का कफ़्फ़ारा कभी भी नहीं
दिया जा सकेगा!”

15 इस के बाद समूएल सुब्ह तक अपने बिस्तर पर
लेटा रहा। फिर वह मामूल के मुताबिक़ उठा और रब
के घर के दरवाज़े खोल दिए। वह एली को अपनी
रोया बताने से डरता था, 16 लेकिन एली ने उसे बुला
कर कहा, “समूएल, मेरे बेटे!” समूएल ने जवाब
दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 17 एली ने पूछा, “रब
ने तुम्हें क्या बताया है? कोई भी बात मुझ से मत
छुपाना! अल्लाह तुम्हें सख़्त सज़ा दे अगर तुम एक
लफ़्ज़ भी मुझ से पोशीदा रखो।” 18 फिर समूएल ने
उसे खुल कर सब कुछ बता दिया और एक बात भी
न छुपाई। एली ने कहा, “वही रब है। जो कुछ उस
की नज़र में ठीक है उसे वह करे।”

19 समूएल जवान होता गया, और रब उस के साथ
था। उस ने समूएल की हर बात पूरी होने दी। 20 पूरे
इस्राईल ने दान से ले कर बैर-सबा तक जान लिया
कि रब ने अपने नबी समूएल की तस्दीक़ की है।
21 अगले सालों में भी रब सैला में अपने कलाम से
समूएल पर ज़ाहिर होता रहा।

4 1 यूँ समूएल का कलाम सैला से निकल कर पूरे
इस्राईल में फैल गया।

फ़िलिस्ती अह्द का सन्दूक़ छीन लेते हैं

एक दिन इस्राईल की फ़िलिस्तियों के साथ जंग
छिड़ गई। इस्राईलियों ने लड़ने के लिए निकल
कर अबन-अज़र के पास अपनी लश्करगाह लगाई
जबकि फ़िलिस्तियों ने अफ़ीक़ के पास अपने डेरे
डाले। 2 पहले फ़िलिस्तियों ने इस्राईलियों पर हम्ला
किया। लड़ते लड़ते उन्हों ने इस्राईल को शिकस्त दी।
तक़रीबन 4,000 इस्राईली मैदान-ए-जंग में हलाक
हुए।

3 फ़ौज लश्करगाह में वापस आई तो इस्राईल के
बुज़ुर्ग सोचने लगे, “रब ने फ़िलिस्तियों को हम पर
क्यूँ फ़त्ह पाने दी? आओ, हम रब के अह्द का
सन्दूक़ सैला से ले आएँ ताकि वह हमारे साथ चल
कर हमें दुश्मन से बचाए।”

4 चुनाँचे अह्द का सन्दूक़ जिस के ऊपर रब्ब-उल-
अफ़्वाज करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन
है सैला से लाया गया। एली के दो बेटे हुफ़्नी और
फ़ीन्हास भी साथ आए। 5 जब अह्द का सन्दूक़
लश्करगाह में पहुँचा तो इस्राईली निहायत ख़ुश हो
कर बुलन्द आवाज़ से नारे लगाने लगे। इतना शोर
मच गया कि ज़मीन हिल गई।

6 यह सुन कर फ़िलिस्ती चौंक उठे और एक दूसरे
से पूछने लगे, “यह कैसा शोर है जो इस्राईली
लश्करगाह में हो रहा है?” जब पता चला कि रब के
अह्द का सन्दूक़ इस्राईली लश्करगाह में आ गया
है 7 तो वह घबरा कर चिल्लाए, “उन का देवता उन
की लश्करगाह में आ गया है। हाय, हमारा सत्यानास
हो गया है! पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। 8 हम
पर अफ़्सोस! कौन हमें इन ताक़तवर देवताओं से
बचाएगा? क्यूँकि इन ही ने रेगिस्तान में मिस्रियों को
हर क़िस्म की बला से मार कर हलाक कर दिया था।
9 भाइयो, अब दिलेर हो और मर्दानगी दिखाओ, वर्ना
हम उसी तरह इब्रानियों के ग़ुलाम बन जाएंगे जैसे वह
अब तक हमारे ग़ुलाम थे। मर्दानगी दिखा कर लड़ो!”
10 आपस में ऐसी बातें करते करते फ़िलिस्ती लड़ने

के लिए निकले और इस्राईल को शिकस्त दी। हर तरफ़ क़त्ल-ए-आम नज़र आया, और 30,000 पयादे इस्राईली काम आए। बाक़ी सब फ़रार हो कर अपने अपने घरों में छुप गए। 11 एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीन्हास भी उसी दिन हलाक हुए, और अल्लाह के अह्द का सन्दूक़ फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में आ गया।

एली की मौत

12 उसी दिन बिनयमीन के क़बीले का एक आदमी मैदान-ए-जंग से भाग कर सैला पहुँच गया। उस के कपड़े फटे हुए थे और सर पर ख़ाक थी। 13–15 एली सड़क के किनारे अपनी कुर्सी पर बैठा था। वह अब अंधा हो चुका था, क्यूँकि उस की उम्र 98 साल थी। वह बड़ी बेचैनी से रास्ते पर ध्यान दे रहा था ताकि जंग की कोई ताज़ा ख़बर मिल जाए, क्यूँकि उसे इस बात की बड़ी फ़िक्र थी कि अल्लाह का सन्दूक़ लश्करगाह में है।

जब वह आदमी शहर में दाख़िल हुआ और लोगों को सारा माजरा सुनाया तो पूरा शहर चिल्लाने लगा। जब एली ने शोर सुना तो उस ने पूछा, “यह क्या शोर है?” बिनयमीनी दौड़ कर एली के पास आया और बोला, 16 “मैं मैदान-ए-जंग से आया हूँ। आज ही मैं वहाँ से फ़रार हुआ।” एली ने पूछा, “बेटा, क्या हुआ?” 17 क़ासिद ने जवाब दिया, “इस्राईली फ़िलिस्तियों के सामने फ़रार हुए। फ़ौज को हर तरफ़ शिकस्त माननी पड़ी, और आप के दोनों बेटे हुफ़नी और फ़ीन्हास भी मारे गए हैं। अफ़सोस, अल्लाह का सन्दूक़ भी दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है।”

18 अह्द के सन्दूक़ का ज़िक्र सुनते ही एली अपनी कुर्सी पर से पीछे की तरफ़ गिर गया। चूँकि वह बूढ़ा और भारी-भरकम था इस लिए उस की गर्दन टूट गई और वह वहीं मक़्दिस के दरवाज़े के पास ही मर गया। वह 40 साल इस्राईल का क़ाज़ी रहा था।

फ़ीन्हास की बेवा की मौत

19 उस वक़्त एली की बहू यानी फ़ीन्हास की बीवी का पाँओ भारी था और बच्चा पैदा होने वाला था। जब उस ने सुना कि अल्लाह का सन्दूक़ दुश्मन के हाथ में आ गया है और कि सुसर और शौहर दोनों मर गए हैं तो उसे इतना सख़्त सदमा पहुँचा कि वह शदीद दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो गई। वह झुक गई, और बच्चा पैदा हुआ। 20 उस की जान निकलने लगी तो दाइयों ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई करके कहा, “डरो मत! तुम्हारे बेटा पैदा हुआ है।” लेकिन माँ ने न जवाब दिया, न बात पर ध्यान दिया। 21–22 क्यूँकि वह अल्लाह के सन्दूक़ के छिन जाने और सुसर और शौहर की मौत के बाइस निहायत बेदिल हो गई थी। उस ने कहा, “बेटे का नाम यकबोद यानी ‘जलाल कहाँ रहा’ है, क्यूँकि अल्लाह के सन्दूक़ के छिन जाने से अल्लाह का जलाल इस्राईल से जाता रहा है।”

फ़िलिस्तियों में अह्द का सन्दूक़

5 1 फ़िलिस्ती अल्लाह का सन्दूक़ अबन-अज़र से अश्दूद शहर में ले गए। 2 वहाँ उन्हों ने उसे अपने देवता दजून के मन्दिर में बुत के क़रीब रख दिया। 3 अगले दिन सुब्ह-सवेरे जब अश्दूद के बाशिन्दे मन्दिर में दाख़िल हुए तो क्या देखते हैं कि दजून का मुजस्समा मुँह के बल रब के सन्दूक़ के सामने ही पड़ा है। उन्हों ने दजून को उठा कर दुबारा उस की जगह पर खड़ा किया। 4 लेकिन अगले दिन जब सुब्ह-सवेरे आए तो दजून दुबारा मुँह के बल रब के सन्दूक़ के सामने पड़ा हुआ था। लेकिन इस मर्तबा बुत का सर और हाथ टूट कर दहलीज़ पर पड़े थे। सिर्फ़ धड़ रह गया था। 5 यही वजह है कि आज तक दजून का कोई भी पुजारी या मेहमान अश्दूद के मन्दिर की दहलीज़ पर क़दम नहीं रखता।

6 फिर रब ने अश्दूद और गिर्द-ओ-नवाह के दीहातों पर सख़्त दबाओ डाल कर बाशिन्दों को परेशान कर दिया। उन में अचानक अज़ियतनाक फोड़ों की वबा

फैल गई। 7 जब अश्दूद के लोगों ने इस की वजह
जान ली तो वह बोले, “लाज़िम है कि इस्राईल के
ख़ुदा का सन्दूक़ हमारे पास न रहे। क्यूँकि उस का
हम पर और हमारे देवता दजून पर दबाओ नाक़ाबिल-
ए-बर्दाश्त है।”
8 उन्हों ने तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को इकट्ठा
करके पूछा, “हम इस्राईल के ख़ुदा के सन्दूक़ के
साथ क्या करें?”
उन्हों ने मश्वरा दिया, “उसे जात शहर में ले जाएँ।”
9 लेकिन जब अह्द का सन्दूक़ जात में छोड़ा गया तो
रब का दबाओ उस शहर पर भी आ गया। बड़ी अफ़रा-
तफ़री पैदा हुई, क्यूँकि छोटों से ले कर बड़ों तक सब
को अज़ियतनाक फोड़े निकल आए। 10 तब उन्हों ने
अह्द का सन्दूक़ आगे अक्रून भेज दिया।
लेकिन सन्दूक़ अभी पहुँचने वाला था कि अक्रून
के बाशिन्दे चीख़ने लगे, “वह इस्राईल के ख़ुदा का
सन्दूक़ हमारे पास लाए हैं ताकि हमें हलाक कर
दें!” 11 तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को दुबारा बुलाया
गया, और अक्रूनियों ने तक़ाज़ा किया कि सन्दूक़ को
शहर से दूर किया जाए। वह बोले, “इसे वहाँ वापस
भेजा जाए जहाँ से आया है, वर्ना यह हमें बल्कि पूरी
क़ौम को हलाक कर डालेगा।” क्यूँकि शहर पर रब
का सख़्त दबाओ हावी हो गया था। मोहलिक वबा
के बाइस उस में ख़ौफ़-ओ-हिरास की लहर दौड़ गई।
12 जो मरने से बचा उसे कम अज़ कम फोड़े निकल
आए। चारों तरफ़ लोगों की चीख़-पुकार फ़िज़ा में
बुलन्द हुई।

अह्द का सन्दूक़ इस्राईल वापस लाया जाता है

6 1 अल्लाह का सन्दूक़ अब सात महीने
फ़िलिस्तियों के पास रहा था। 2 आख़िरकार
उन्हों ने अपने तमाम पुजारियों और रम्मालों को
बुला कर उन से मश्वरा किया, “अब हम रब के
सन्दूक़ का क्या करें? हमें बताएँ कि इसे किस तरह
इस के अपने मुल्क में वापस भेजें।”
3 पुजारियों और रम्मालों ने जवाब दिया, “अगर
आप उसे वापस भेजें तो वैसे मत भेजना बल्कि क़ुसूर
की क़ुर्बानी साथ भेजना। तब आप को शिफ़ा मिलेगी,
और आप जान लेंगे कि वह आप को सज़ा देने से क्यूँ
नहीं बाज़ आया।”
4 फ़िलिस्तियों ने पूछा, “हम उसे किस क़िस्म की
क़ुसूर की क़ुर्बानी भेजें?”
उन्हों ने जवाब दिया, “फ़िलिस्तियों के पाँच
हुक्मरान हैं, इस लिए सोने के पाँच फोड़े और पाँच
चूहे बनवाएँ, क्यूँकि आप सब इस एक ही वबा
की ज़द में आए हुए हैं, ख़्वाह हुक्मरान हों, ख़्वाह
रआया। 5 सोने के यह फोड़े और मुल्क को तबाह
करने वाले चूहे बना कर इस्राईल के देवता का
एहतिराम करें। शायद वह यह देख कर आप, आप
के देवताओं और मुल्क को सज़ा देने से बाज़ आए।
6 आप क्यूँ पुराने ज़माने के मिस्रियों और उन के
बादशाह की तरह अड़ जाएँ? क्यूँकि उस वक़्त
अल्लाह ने मिस्रियों को इतनी सख़्त मुसीबत में डाल
दिया कि आख़िरकार उन्हें इस्राईलियों को जाने देना
पड़ा।
7 अब बैलगाड़ी बना कर उस के आगे दो गाएँ
जोतें। ऐसी गाएँ हों जिन के दूध पीने वाले बच्चे हों
और जिन पर अब तक जूआ न रखा गया हो। गायों
को बैलगाड़ी के आगे जोतें, लेकिन उन के बच्चों को
साथ जाने न दें बल्कि उन्हें कहीं बन्द रखें। 8 फिर रब
का सन्दूक़ बैलगाड़ी पर रखा जाए और उस के साथ
एक थैला जिस में सोने की वह चीज़ें हों जो आप
क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर भेज रहे हैं। इस के बाद
गायों को खुला छोड़ दें। 9 ग़ौर करें कि वह कौन सा
रास्ता इख़्तियार करेंगी। अगर इस्राईल के बैत-शम्स
की तरफ़ चलें तो फिर मालूम होगा कि रब हम पर
यह बड़ी मुसीबत लाया है। लेकिन अगर वह कहीं
और चलें तो मतलब होगा कि इस्राईल के देवता ने
हमें सज़ा नहीं दी बल्कि सब कुछ इत्तिफ़ाक़ से हुआ
है।”

10 फ़िलिस्तियों ने ऐसा ही किया। उन्हों ने दो गाएँ
नई बैलगाड़ी में जोत कर उन के छोटे बच्चों को कहीं
बन्द रखा। 11 फिर उन्हों ने अह्द का सन्दूक़ उस थैले
समेत जिस में सोने के चूहे और फोड़े थे बैलगाड़ी पर
रखा।
12 जब गायों को छोड़ दिया गया तो वह डकराती
डकराती सीधी बैत-शम्स के रास्ते पर आ गईं और
न दाईं, न बाईं तरफ़ हटीं। फ़िलिस्तियों के सरदार
बैत-शम्स की सरहद तक उन के पीछे चले।
13 उस वक़्त बैत-शम्स के बाशिन्दे नीचे वादी में
गन्दुम की फ़सल काट रहे थे। अह्द का सन्दूक़ देख
कर वह निहायत ख़ुश हुए। 14 बैलगाड़ी एक खेत तक
पहुँची जिस का मालिक बैत-शम्स का रहने वाला
यशूअ था। वहाँ वह एक बड़े पत्थर के पास रुक गई।
लोगों ने बैलगाड़ी की लकड़ी टुकड़े टुकड़े करके उसे
जला दिया और गायों को ज़बह करके रब को भस्म
होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया। 15 लावी के
क़बीले के कुछ मर्दों ने रब के सन्दूक़ को बैलगाड़ी
से उठा कर सोने की चीज़ों के थैले समेत पत्थर पर
रख दिया। उस दिन बैत-शम्स के लोगों ने रब को
भस्म होने वाली और ज़बह की क़ुर्बानियाँ पेश कीं।
16 यह सब कुछ देखने के बाद फ़िलिस्ती सरदार
उसी दिन अक्क़ून वापस चले गए। 17 फ़िलिस्तियों ने
अपना क़ुसूर दूर करने के लिए हर एक शहर के लिए
सोने का एक फोड़ा बना लिया था यानी अश्दूद,
ग़ज़्ज़ा, अस्क़लून, जात और अक्क़ून के लिए एक एक
फोड़ा। 18 इस के इलावा उन्हों ने हर शहर और उस
के गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों के लिए सोने का
एक एक चूहा बना लिया था। जिस बड़े पत्थर पर
अह्द का सन्दूक़ रखा गया वह आज तक यशूअ
बैत-शम्सी के खेत में इस बात की गवाही देता है।

अह्द का सन्दूक़ क़िर्यत-यारीम में

19 लेकिन रब ने बैत-शम्स के बाशिन्दों को सज़ा
दी, क्यूँकि उन में से बाज़ ने अह्द के सन्दूक़ में
नज़र डाली थी। उस वक़्त 70 अफ़राद हलाक हुए।
रब की यह सख़्त सज़ा देख कर बैत-शम्स के लोग
मातम करने लगे। 20 वह बोले, “कौन इस मुक़द्दस
ख़ुदा के हुज़ूर क़ाइम रह सकता है? यह हमारे बस
की बात नहीं, लेकिन हम रब का सन्दूक़ किस के
पास भेजें?” 21 आख़िर में उन्हों ने क़िर्यत-यारीम के
बाशिन्दों को पैग़ाम भेजा, “फ़िलिस्तियों ने रब का
सन्दूक़ वापस कर दिया है। अब आएँ और उसे अपने
पास ले जाएँ!”

7 1 यह सुन कर क़िर्यत-यारीम के मर्द आए और
रब का सन्दूक़ अपने शहर में ले गए। वहाँ उन्हों
ने उसे अबीनदाब के घर में रख दिया जो पहाड़ी पर
था। अबीनदाब के बेटे इलीअज़र को मख़्सूस किया
गया ताकि वह अह्द के सन्दूक़ की पहरादारी करे।

तौबा की वजह से इस्राईली फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह पाते हैं

2 अह्द का सन्दूक़ 20 साल के तवील अर्से तक
क़िर्यत-यारीम में पड़ा रहा। इस दौरान तमाम इस्राईल
मातम करता रहा, क्यूँकि लगता था कि रब ने उन्हें
तर्क कर दिया है। 3 फिर समूएल ने तमाम इस्राईलियों
से कहा, “अगर आप वाक़ई रब के पास वापस आना
चाहते हैं तो अजनबी माबूदों और अस्तारात देवी के
बुत दूर कर दें। पूरे दिल के साथ रब के ताबे हो
कर उसी की ख़िदमत करें। फिर ही वह आप को
फ़िलिस्तियों से बचाएगा।”
4 इस्राईलियों ने उस की बात मान ली। वह बाल
और अस्तारात के बुतों को फैंक कर सिर्फ़ रब की
ख़िदमत करने लगे। 5 तब समूएल ने एलान किया,
“पूरे इस्राईल को मिस्फ़ाह में जमा करें तो मैं वहाँ
रब से दुआ करके आप की सिफ़ारिश करूँगा।”
6 चुनाँचे वह सब मिस्फ़ाह में जमा हुए। तौबा का
इज़हार करके उन्हों ने कुएँ से पानी निकाल कर रब
के हुज़ूर उंडेल दिया। साथ साथ उन्हों ने पूरा दिन
रोज़ा रखा और इक़्रार किया, “हम ने रब का गुनाह
किया है।” वहाँ मिस्फ़ाह में समूएल ने इस्राईलियों
के लिए कचहरी लगाई।

7 फ़िलिस्ती हुक्मरानों को पता चला कि इस्राईली
मिस्फ़ाह में जमा हुए हैं तो वह उन से लड़ने के लिए
आए। यह सुन कर इस्राईली सख़्त घबरा गए 8 और
समूएल से मिन्नत की, “दुआ करते रहें! रब हमारे
ख़ुदा से इल्तिमास करने से न रुकें ताकि वह हमें
फ़िलिस्तियों से बचाए।” 9 तब समूएल ने भेड़ का
दूध पीता बच्चा चुन कर रब को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया। साथ साथ वह रब
से इल्तिमास करता रहा।

और रब ने उस की सुनी। 10 समूएल अभी क़ुर्बानी
पेश कर रहा था कि फ़िलिस्ती वहाँ पहुँच कर
इस्राईलियों पर हम्ला करने के लिए तय्यार हुए।
लेकिन उस दिन रब ने ज़ोर से कड़कती हुई आवाज़
से फ़िलिस्तियों को इतना दहशतज़दा कर दिया कि
वह दर्हम-बर्हम हो गए और इस्राईली आसानी से उन्हें
शिकस्त दे सके। 11 इस्राईलियों ने मिस्फ़ाह से निकल
कर बैत-कार के नीचे तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया।
रास्ते में बहुत से फ़िलिस्ती हलाक हुए।

12 इस फ़त्ह की याद में समूएल ने मिस्फ़ाह और शेन
के दरमियान एक बड़ा पत्थर नसब कर दिया। उस ने
पत्थर का नाम अबन-अज़र यानी ‘मदद का पत्थर’
रखा। क्यूँकि उस ने कहा, “यहाँ तक रब ने हमारी
मदद की है।” 13 इस तरह फ़िलिस्तियों को मग़लूब
किया गया, और वह दुबारा इस्राईल के इलाक़े में
न घुसे। जब तक समूएल जीता रहा फ़िलिस्तियों पर
रब का सख़्त दबाओ रहा। 14 और अक्क़ून से ले कर
जात तक जितनी इस्राईली आबादियाँ फ़िलिस्तियों
के हाथ में आ गई थीं वह सब उन की ज़मीनों समेत
दुबारा इस्राईल के क़ब्ज़े में आ गईं। अमोरियों के
साथ भी सुलह हो गई।

15 समूएल अपने जीते जी इस्राईल का क़ाज़ी और
राहनुमा रहा। 16 हर साल वह बैत-एल, जिल्जाल और
मिस्फ़ाह का दौरा करता, क्यूँकि इन तीन जगहों पर
वह इस्राईलियों के लिए कचहरी लगाया करता था।
17 इस के बाद वह दुबारा रामा अपने घर वापस आ
जाता जहाँ मुस्तक़िल कचहरी थी। वहाँ उस ने रब
के लिए क़ुर्बानगाह भी बनाई थी।

इस्राईल बादशाह का तक़ाज़ा करता है

8 1 जब समूएल बूढ़ा हुआ तो उस ने अपने दो बेटों
को इस्राईल के क़ाज़ी मुक़र्रर किया। 2 बड़े का
नाम योएल था और छोटे का अबियाह। दोनों बैर-
सबा में लोगों की कचहरी लगाते थे। 3 लेकिन वह
बाप के नमूने पर नहीं चलते बल्कि रिश्वत खा कर
ग़लत फ़ैसले करते थे।

4 फिर इस्राईल के बुज़ुर्ग मिल कर समूएल के पास
आए, जो रामा में था। 5 उन्हों ने कहा, “देखें, आप
बूढ़े हो गए हैं और आप के बेटे आप के नमूने पर
नहीं चलते। अब हम पर बादशाह मुक़र्रर करें ताकि
वह हमारी उस तरह राहनुमाई करे जिस तरह दीगर
अक़्वाम में दस्तूर है।”

6 जब बुज़ुर्गों ने राहनुमाई के लिए बादशाह का
तक़ाज़ा किया तो समूएल निहायत नाख़ुश हुआ।
चुनाँचे उस ने रब से हिदायत माँगी। 7 रब ने जवाब
दिया, “जो कुछ भी वह तुझ से माँगते हैं उन्हें दे दे।
इस से वह तुझे रद्द नहीं कर रहे बल्कि मुझे, क्यूँकि
वह नहीं चाहते कि मैं उन का बादशाह रहूँ। 8 जब
से मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया वह मुझे छोड़ कर
दीगर माबूदों की ख़िदमत करते आए हैं। और अब
वह तुझ से भी यही सुलूक कर रहे हैं। 9 उन की बात
मान ले, लेकिन सन्जीदगी से उन्हें उन पर हुकूमत
करने वाले बादशाह के हुक़ूक़ से आगाह कर।”

बादशाह के हुक़ूक़

10 समूएल ने बादशाह का तक़ाज़ा करने वालों को
सब कुछ कह सुनाया जो रब ने उसे बताया था।
11 वह बोला, “जो बादशाह आप पर हुकूमत करेगा
उस के यह हुक़ूक़ होंगे : वह आप के बेटों की भर्ती
करके उन्हें अपने रथों और घोड़ों को सँभालने की
ज़िम्मादारी देगा। उन्हें उस के रथों के आगे आगे
दौड़ना पड़ेगा। 12 कुछ उस की फ़ौज के जनरल और

कप्तान बनेंगे, कुछ उस के खेतों में हल चलाने और
फ़सलें काटने पर मज्बूर हो जाएंगे, और बाज़ को
उस के हथियार और रथ का सामान बनाना पड़ेगा।
13 बादशाह आप की बेटियों को आप से छीन लेगा
ताकि वह उस के लिए खाना पकाएँ, रोटी बनाएँ और
ख़ुश्बू तय्यार करें। 14 वह आप के खेतों और आप
के अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों का बेहतरीन हिस्सा
चुन कर अपने मुलाज़िमों को दे देगा। 15 बादशाह
आप के अनाज और अंगूर का दसवाँ हिस्सा ले कर
अपने अफ़सरों और मुलाज़िमों को दे देगा। 16 आप
के नौकर-नौकरानियाँ, आप के मोटे-ताज़े बैल और
गधे उसी के इस्तेमाल में आएँगे। 17 वह आप की
भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा तलब करेगा, और
आप ख़ुद उस के ग़ुलाम होंगे।

18 तब आप पछता कर कहेंगे, 'हम ने बादशाह का
तक़ाज़ा क्यूँ किया?' लेकिन जब आप रब के हुज़ूर
चीख़ते चिल्लाते मदद चाहेंगे तो वह आप की नहीं
सुनेगा।"

19 लेकिन लोगों ने समूएल की बात न मानी बल्कि
कहा, "नहीं, तो भी हम बादशाह चाहते हैं, 20 क्यूँकि
फिर ही हम दीगर क़ौमों की मानिन्द होंगे। फिर हमारा
बादशाह हमारी राहनुमाई करेगा और जंग में हमारे
आगे आगे चल कर दुश्मन से लड़ेगा।" 21 समूएल ने
रब के हुज़ूर यह बातें दुहराईं। 22 रब ने जवाब दिया,
"उन का तक़ाज़ा पूरा कर, उन पर बादशाह मुक़र्रर
कर!"

फिर समूएल ने इस्राईल के मर्दों से कहा, "हर एक
अपने अपने शहर वापस चला जाए।"

साऊल बाप की गधियाँ तलाश करता है

9 1 बिनयमीन के क़बाइली इलाक़े में एक
बिनयमीनी बनाम क़ीस रहता था जिस का
अच्छा-ख़ासा असर-ओ-रसूख़ था। बाप का नाम
अबीएल बिन सरोर बिन बकोरत बिन अफ़ीख़ था।
2 क़ीस का बेटा साऊल जवान और ख़ूबसूरत था
बल्कि इस्राईल में कोई और इतना ख़ूबसूरत नहीं
था। साथ साथ वह इतना लम्बा था कि बाक़ी सब
लोग सिर्फ़ उस के कंधों तक आते थे।

3 एक दिन साऊल के बाप क़ीस की गधियाँ गुम हो
गईं। यह देख कर उस ने अपने बेटे साऊल को हुक्म
दिया, "नौकर को अपने साथ ले कर गधियों को ढूँड
लाएँ।" 4 दोनों आदमी इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े और
सलीसा के इलाक़े में से गुज़रे, लेकिन बेसूद। फिर
उन्हों ने सालीम के इलाक़े में खोज लगाया, लेकिन
वहाँ भी गधियाँ न मिलीं। इस के बाद वह बिनयमीन
के इलाक़े में घूमते फिरे, लेकिन बेफ़ाइदा। 5 चलते
चलते वह सूफ़ के क़रीब पहुँच गए। साऊल ने नौकर
से कहा, "आओ, हम घर वापस चलें, ऐसा न हो कि
वालिद गधियों की नहीं बल्कि हमारी फ़िक्र करें।"

6 लेकिन नौकर ने कहा, "इस शहर में एक मर्द-ए-
ख़ुदा है। लोग उस की बड़ी इज़्ज़त करते हैं, क्यूँकि
जो कुछ भी वह कहता है वह पूरा हो जाता है। क्यूँ
न हम उस के पास जाएँ? शायद वह हमें बताए कि
गधियों को कहाँ ढूँडना चाहिए।"

7 साऊल ने पूछा, "लेकिन हम उसे क्या दें? हमारा
खाना ख़त्म हो गया है, और हमारे पास उस के लिए
तुह्फ़ा नहीं है।"

8 नौकर ने जवाब दिया, "कोई बात नहीं, मेरे पास
चाँदी का छोटा सिक्का [z]है। यह मैं मर्द-ए-ख़ुदा को दे
दूँगा ताकि बताए कि हम किस तरफ़ ढूँडें।"

9–11 साऊल ने कहा, "ठीक है, चलें।" वह शहर
की तरफ़ चल पड़े ताकि मर्द-ए-ख़ुदा से बात करें।
जब पहाड़ी ढलान पर शहर की तरफ़ चढ़ रहे थे
तो कुछ लड़कियाँ पानी भरने के लिए निकलीं।
आदमियों ने उन से पूछा, "क्या ग़ैबबीन शहर में है?"
(पुराने ज़माने में नबी ग़ैबबीन कहलाता था। अगर
कोई अल्लाह से कुछ मालूम करना चाहता तो कहता,
"आओ, हम ग़ैबबीन के पास चलें।")

---

[z]लफ़्ज़ी तर्जुमा : चाँदी के सिक्के की एक चौथाई

12–13 लड़कियों ने जवाब दिया, “जी, वह अभी
अभी पहुँचा है, क्यूँकि शहर के लोग आज पहाड़ी
पर क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर ईद मना रहे हैं। अगर जल्दी
करें तो पहाड़ी पर चढ़ने से पहले उस से मुलाक़ात
हो जाएगी। उस वक़्त तक ज़ियाफ़त शुरू नहीं होगी
जब तक ग़ैबबीन पहुँच न जाए। क्यूँकि उसे पहले
खाने को बरकत देना है, फिर ही मेहमानों को खाना
खाने की इजाज़त है। अब जाएँ, क्यूँकि इसी वक़्त
आप उस से बात कर सकते हैं।”
14 चुनाँचे साऊल और नौकर शहर की तरफ़ बढ़े।
शहर के दरवाज़े पर ही समूएल से मुलाक़ात हो गई
जो वहाँ से निकल कर क़ुर्बानगाह की पहाड़ी पर
चढ़ने को था।

समूएल साऊल की मेहमान-नवाज़ी करता है

15 रब समूएल को एक दिन पहले पैग़ाम दे चुका
था, 16 “कल मैं इसी वक़्त मुल्क-ए-बिनयमीन का
एक आदमी तेरे पास भेज दूँगा। उसे मसह करके
मेरी क़ौम इस्राईल पर बादशाह मुक़र्रर कर। वह
मेरी क़ौम को फ़िलिस्तियों से बचाएगा। क्यूँकि मैं
ने अपनी क़ौम की मुसीबत पर ध्यान दिया है, और
मदद के लिए उस की चीख़ें मुझ तक पहुँच गई हैं।”
17 अब जब समूएल ने शहर के दरवाज़े से निकलते
हुए साऊल को देखा तो रब समूएल से हमकलाम
हुआ, “देख, यही वह आदमी है जिस का ज़िक्र मैं ने
कल किया था। यही मेरी क़ौम पर हुकूमत करेगा।”
18 वहीं शहर के दरवाज़े पर साऊल समूएल से
मुख़ातिब हुआ, “मेहरबानी करके मुझे बताइए कि
ग़ैबबीन का घर कहाँ है?” 19 समूएल ने जवाब दिया,
“मैं ही ग़ैबबीन हूँ। आएँ, उस पहाड़ी पर चलें जिस
पर ज़ियाफ़त हो रही है, क्यूँकि आज आप मेरे मेहमान
हैं। कल मैं सुब्ह-सवेरे आप को आप के दिल की
बात बता दूँगा। 20 जहाँ तक तीन दिन से गुमशुदा
गधियों का ताल्लुक़ है, उन की फ़िक्र न करें। वह तो
मिल गई हैं। वैसे आप और आप के बाप के घराने को
इस्राईल की हर क़ीमती चीज़ हासिल है।” 21 साऊल
ने पूछा, “यह किस तरह? मैं तो इस्राईल के सब से
छोटे क़बीले बिनयमीन का हूँ, और मेरा ख़ानदान
क़बीले में सब से छोटा है।”
22 समूएल साऊल को नौकर समेत उस हाल में ले
गया जिस में ज़ियाफ़त हो रही थी। तक़रीबन 30
मेहमान थे, लेकिन समूएल ने दोनों आदमियों को सब
से इज़्ज़त की जगह पर बिठा दिया। 23 ख़ानसामे को
उस ने हुक्म दिया, “अब गोश्त का वह टुकड़ा ले
आओ जो मैं ने तुम्हें दे कर कहा था कि उसे अलग
रखना है।” 24 ख़ानसामे ने क़ुर्बानी की रान ला कर
उसे साऊल के सामने रख दिया। समूएल बोला, “यह
आप के लिए महफ़ूज़ रखा गया है। अब खाएँ, क्यूँकि
दूसरों को दावत देते वक़्त मैं ने यह गोश्त आप के
लिए और इस मौक़े के लिए अलग कर लिया था।”
चुनाँचे साऊल ने उस दिन समूएल के साथ खाना
खाया।
25 ज़ियाफ़त के बाद वह पहाड़ी से उतर कर शहर
वापस आए, और समूएल अपने घर की छत पर
साऊल से बातचीत करने लगा। 26 अगले दिन जब पौ
फटने लगी तो समूएल ने नीचे से साऊल को जो छत
पर सो रहा था आवाज़ दी, “उठें! मैं आप को रुख़्सत
करूँ।” साऊल जाग उठा और वह मिल कर रवाना
हुए। 27 जब वह शहर के किनारे पर पहुँचे तो समूएल
ने साऊल से कहा, “अपने नौकर को आगे भेजें।”
जब नौकर चला गया तो समूएल बोला, “ठहर जाएँ,
क्यूँकि मुझे आप को अल्लाह का एक पैग़ाम सुनाना
है।”

साऊल को मसह किया जाता है

10 1 फिर समूएल ने कुप्पी ले कर साऊल के
सर पर ज़ैतून का तेल उंडेल दिया और उसे
बोसा दे कर कहा, “रब ने आप को अपनी ख़ास
मिलकियत पर राहनुमा मुक़र्रर किया है। 2 मेरे पास
से चले जाने के बाद जब आप बिनयमीन की सरहद
के शहर ज़िल्ज़ख़ के क़रीब राख़िल की क़ब्र के पास
से गुज़रेंगे तो आप की मुलाक़ात दो आदमियों से

होगी। वह आप से कहेंगे, ‘जो गधियाँ आप ढूँडने
गए वह मिल गई हैं। और अब आप के बाप गधियों
की नहीं बल्कि आप की फ़िक्र कर रहे हैं। वह कह
रहे हैं कि मैं किस तरह अपने बेटे का पता करूँ?’
3 आप आगे जा कर तबूर के बलूत के दरख़्त के
पास पहुँचेंगे। वहाँ तीन आदमी आप से मिलेंगे जो
अल्लाह की इबादत करने के लिए बैत-एल जा रहे
होंगे। एक के पास तीन छोटी बकरियाँ, दूसरे के पास
तीन रोटियाँ और तीसरे के पास मै की मश्क होगी।
4 वह आप को सलाम कह कर दो रोटियाँ देंगे। उन
की यह रोटियाँ क़बूल करें।
5 इस के बाद आप अल्लाह के जिबिआ जाएंगे जहाँ
फ़िलिस्तियों की चौकी है। शहर में दाख़िल होते वक़्त
आप की मुलाक़ात नबियों के एक जुलूस से होगी जो
उस वक़्त पहाड़ी की क़ुर्बानगाह से उतर रहा होगा।
उन के आगे आगे सितार, दफ़, बाँसरियाँ और सरोद
बजाने वाले चलेंगे, और वह नबुव्वत की हालत में
होंगे। 6 रब का रूह आप पर भी नाज़िल होगा, और
आप उन के साथ नबुव्वत करेंगे। उस वक़्त आप
फ़र्क़ शख़्स में तब्दील हो जाएंगे।
7 जब यह तमाम निशान वुजूद में आएँगे तो वह कुछ
करें जो आप के ज़हन में आ जाए, क्यूँकि अल्लाह
आप के साथ होगा। 8 फिर मेरे आगे जिल्जाल चले
जाएँ। मैं भी आऊँगा और वहाँ भस्म होने वाली और
सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा। लेकिन आप
को सात दिन मेरा इन्तिज़ार करना है। फिर मैं आ
कर आप को बता दूँगा कि आगे क्या करना है।”
9 साऊल रवाना होने के लिए समूएल के पास से
मुड़ा तो अल्लाह ने उस का दिल तब्दील कर दिया।
जिन निशानों की भी पेशगोई समूएल ने की थी वह
उसी दिन पूरी हुई। 10 जब साऊल और उस का नौकर
जिबिआ पहुँचे तो वहाँ उन की मुलाक़ात मज़कूरा
नबियों के जुलूस से हुई। अल्लाह का रूह साऊल पर
नाज़िल हुआ, और वह उन के दरमियान नबुव्वत
करने लगा। 11 कुछ लोग वहाँ थे जो बचपन से उस
से वाक़िफ़ थे। साऊल को यूँ नबियों के दरमियान
नबुव्वत करते हुए देख कर वह आपस में कहने लगे,
“क़ीस के बेटे के साथ क्या हुआ? क्या साऊल को
भी नबियों में शुमार किया जाता है?” 12 एक मक़ामी
आदमी ने जवाब दिया, “कौन इन का बाप है?” बाद
में यह मुहावरा बन गया, “क्या साऊल को भी नबियों
में शुमार किया जाता है?”
13 नबुव्वत करने के इख़्तिताम पर साऊल पहाड़ी
पर चढ़ गया जहाँ क़ुर्बानगाह थी। 14 जब साऊल
नौकर समेत वहाँ पहुँचा तो उस के चचा ने पूछा,
“आप कहाँ थे?” साऊल ने जवाब दिया, “हम
गुमशुदा गधियों को ढूँडने के लिए निकले थे। लेकिन
जब वह न मिलीं तो हम समूएल के पास गए।”
15 चचा बोला, “अच्छा? उस ने आप को क्या
बताया?” 16 साऊल ने जवाब दिया, “ख़ैर, उस ने
कहा कि गधियाँ मिल गई हैं।” लेकिन जो कुछ
समूएल ने बादशाह बनने के बारे में बताया था उस
का ज़िक्र उस ने न किया।

साऊल बादशाह बन जाता है

17 कुछ देर के बाद समूएल ने अवाम को बुला कर
मिस्फ़ाह में रब के हुज़ूर जमा किया। 18 उस ने कहा,
“रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं इस्राईल को
मिस्र से निकाल लाया। मैं ने तुम्हें मिस्रियों और उन
तमाम सल्तनतों से बचाया जो तुम पर ज़ुल्म कर रही
थीं। 19 लेकिन गो मैं ने तुम्हें तुम्हारी तमाम मुसीबतों
और तंगियों से छुटकारा दिया तो भी तुम ने अपने
ख़ुदा को मुस्तरद कर दिया। क्यूँकि तुम ने इसरार
किया कि हम पर बादशाह मुक़र्रर करो! अब अपने
अपने क़बीलों और ख़ानदानों की तर्तीब के मुताबिक़
रब के हुज़ूर खड़े हो जाओ’।”
20 यह कह कर समूएल ने तमाम क़बीलों को रब के
हुज़ूर पेश किया। क़ुरआ डाला गया तो बिनयमीन के
क़बीले को चुना गया। 21 फिर समूएल ने बिनयमीन
के क़बीले के सारे ख़ानदानों को रब के हुज़ूर पेश
किया। मत्री के ख़ानदान को चुना गया। यूँ क़ुरआ

डालते डालते साऊल बिन क़ीस को चुना गया। लेकिन जब साऊल को ढूँडा गया तो वह ग़ाइब था।
22 उन्हों ने रब से दरयाफ़्त किया, “क्या साऊल
यहाँ पहुँच चुका है?” रब ने जवाब दिया, “वह
सामान के बीच में छुप गया है।” 23 कुछ लोग दौड़
कर उसे सामान में से निकाल कर अवाम के पास ले
आए। जब वह लोगों में खड़ा हुआ तो इतना लम्बा
था कि बाक़ी सब लोग सिर्फ़ उस के कंधों तक आते
थे।
24 समूएल ने कहा, “यह आदमी देखो जिसे रब ने
चुन लिया है। अवाम में उस जैसा कोई नहीं है!”
तमाम लोग ख़ुशी के मारे “बादशाह ज़िन्दाबाद!”
का नारा लगाते रहे। 25 समूएल ने बादशाह के हुक़ूक़
तफ़्सील से सुनाए। उस ने सब कुछ किताब में लिख
दिया और उसे रब के मक़्दिस में महफ़ूज़ रखा। फिर
उस ने अवाम को रुख़्सत कर दिया।
26 साऊल भी अपने घर चला गया जो जिबिआ में
था। कुछ फ़ौजी उस के साथ चले जिन के दिलों को
अल्लाह ने छू दिया था। 27 लेकिन ऐसे शरीर लोग भी
थे जिन्हों ने उस का मज़ाक़ उड़ा कर पूछा, “भला
यह किस तरह हमें बचा सकता है?” वह उसे हक़ीर
जानते थे और उसे तुह्फ़े पेश करने के लिए भी तय्यार
न हुए। लेकिन साऊल उन की बातें नज़रअन्दाज़
करके ख़ामोश ही रहा।

साऊल अम्मोनियों पर फ़त्ह पाता है

11 1 कुछ देर के बाद अम्मोनी बादशाह नाहस
ने अपनी फ़ौज ले कर यबीस-जिलिआद
का मुहासरा किया। यबीस के तमाम अफ़राद ने
उस से गुज़ारिश की, “हमारे साथ मुआहदा करें तो
हम आइन्दा आप के ताबे रहेंगे।” 2 नाहस ने जवाब
दिया, “ठीक है, लेकिन इस शर्त पर कि मैं हर एक
की दहनी आँख निकाल कर तमाम इस्राईल की
बेइज़्ज़ती करूँगा!” 3 यबीस के बुज़ुर्गों ने दरख़्वास्त
की, “हमें एक हफ़्ते की मुहलत दीजिए ताकि हम
अपने क़ासिदों को इस्राईल की हर जगह भेजें। अगर
कोई हमें बचाने के लिए न आए तो हम हथियार डाल
कर शहर को आप के हवाले कर देंगे।”
4 क़ासिद साऊल के शहर जिबिआ भी पहुँच गए।
जब मक़ामी लोगों ने उन का पैग़ाम सुना तो पूरा शहर
फूट फूट कर रोने लगा। 5 उस वक़्त साऊल अपने
बैलों को खेतों से वापस ला रहा था। उस ने पूछा,
“क्या हुआ है? लोग क्यूँ रो रहे हैं?” उसे क़ासिदों का
पैग़ाम सुनाया गया। 6 तब साऊल पर अल्लाह का रूह
नाज़िल हुआ, और उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 7 उस
ने बैलों का जोड़ा ले कर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर
दिया। फिर क़ासिदों को यह टुकड़े पकड़ा कर उस
ने उन्हें यह पैग़ाम दे कर इस्राईल की हर जगह भेज
दिया, “जो साऊल और समूएल के पीछे चल कर
अम्मोनियों से लड़ने नहीं जाएगा उस के बैल इसी
तरह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएंगे!”
यह ख़बर सुन कर लोगों पर रब की दह्शत तारी हो
गई, और सब के सब एक दिल हो कर अम्मोनियों से
लड़ने के लिए निकले। 8 बज़क़ के क़रीब साऊल ने
फ़ौज का जाइज़ा लिया। यहूदाह के 30,000 अफ़राद
थे और बाक़ी क़बीलों के 3,00,000।
9 उन्हों ने यबीस-जिलिआद के क़ासिदों को वापस
भेज कर बताया, “कल दोपहर से पहले पहले आप
को बचा लिया जाएगा।” वहाँ के बाशिन्दे यह ख़बर
सुन कर बहुत ख़ुश हुए। 10 उन्हों ने अम्मोनियों को
इत्तिला दी, “कल हम हथियार डाल कर शहर के
दरवाज़े खोल देंगे। फिर वह कुछ करें जो आप को
ठीक लगे।”
11 अगले दिन सुब्ह-सवेरे साऊल ने फ़ौज को तीन
हिस्सों में तक़्सीम किया। सूरज के तुलू होने से पहले
पहले उन्हों ने तीन सिम्तों से दुश्मन की लश्करगाह
पर हम्ला किया। दोपहर तक उन्हों ने अम्मोनियों को
मार मार कर ख़त्म कर दिया। जो थोड़े बहुत लोग
बच गए वह यूँ तित्तर-बित्तर हो गए कि दो भी इकट्ठे
न रहे।

साऊल की दुबारा तस्दीक़

12 फ़त्ह के बाद लोग समूएल के पास आ कर कहने
लगे, “वह लोग कहाँ हैं जिन्हों ने एतिराज़ किया कि
साऊल हम पर हुकूमत करे? उन्हें ले आएँ ताकि
हम उन्हें मार दें।” 13 लेकिन साऊल ने उन्हें रोक
दिया। उस ने कहा, “नहीं, आज तो हम किसी भी
भाई को सज़ा-ए-मौत नहीं देंगे, क्यूँकि इस दिन रब
ने इस्राईल को रिहाई बख़्शी है!” 14 फिर समूएल ने
एलान किया, “आओ, हम जिल्जाल जा कर दुबारा
इस की तस्दीक़ करें कि साऊल हमारा बादशाह है।”
15 चुनाँचे तमाम लोगों ने जिल्जाल जा कर रब के
हुज़ूर इस की तस्दीक़ की कि साऊल हमारा बादशाह
है। इस के बाद उन्हों ने रब के हुज़ूर सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश करके बड़ा जश्न मनाया।

समूएल की अलविदाई तक़रीर

12 1 तब समूएल तमाम इस्राईल से मुख़ातिब
हुआ, “मैं ने आप की हर बात मान कर
आप पर बादशाह मुक़र्रर किया है। 2 अब यही आप
के आगे आगे चल कर आप की राहनुमाई करेगा। मैं
ख़ुद बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफ़ेद हो गए हैं जबकि
मेरे बेटे आप के दरमियान ही रहते हैं। मैं जवानी से
ले कर आज तक आप की राहनुमाई करता आया
हूँ। 3 अब मैं हाज़िर हूँ। अगर मुझ से कोई ग़लती हुई
है तो रब और उस के मसह किए हुए बादशाह के
सामने इस की गवाही दें। क्या मैं ने किसी का बैल
या गधा लूट लिया? क्या मैं ने किसी से ग़लत फ़ाइदा
उठाया या किसी पर ज़ुल्म किया? क्या मैं ने कभी
किसी से रिश्वत ले कर ग़लत फ़ैसला किया है? अगर
ऐसा हुआ तो मुझे बताएँ! फिर मैं सब कुछ वापस
कर दूँगा।”

4 इजतिमा ने जवाब दिया, “न आप ने हम से ग़लत
फ़ाइदा उठाया, न हम पर ज़ुल्म किया है। आप ने
कभी भी रिश्वत नहीं ली।” 5 समूएल बोला, “आज
रब और उस का मसह किया हुआ बादशाह गवाह हैं
कि आप को मुझ पर इल्ज़ाम लगाने का कोई सबब न
मिला।” अवाम ने कहा, “जी, ऐसा ही है।” 6 समूएल
ने बात जारी रखी, “रब ख़ुद मूसा और हारून को
इस्राईल के राहनुमा बना कर आप के बापदादा को
मिस्र से निकाल लाया। 7 अब यहाँ रब के तख़्त-ए-
अदालत के सामने खड़े हो जाएँ तो मैं आप को उन
तमाम भलाइयों की याद दिलाऊँगा जो रब ने आप
और आप के बापदादा से की हैं।

8 आप का बाप याक़ूब मिस्र आया। जब मिस्री
उस की औलाद को दबाने लगे तो उन्हों ने चीख़ते
चिल्लाते रब से मदद माँगी। तब उस ने मूसा और
हारून को भेज दिया ताकि वह पूरी क़ौम को मिस्र
से निकाल कर यहाँ इस मुल्क में लाएँ। 9 लेकिन
जल्द ही वह रब अपने ख़ुदा को भूल गए, इस लिए
उस ने उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया। कभी हसूर
शहर के बादशाह का कमाँडर सीसरा उन से लड़ा,
कभी फ़िलिस्ती और कभी मोआब का बादशाह।
10 हर दफ़ा आप के बापदादा ने चीख़ते चिल्लाते रब से
मदद माँगी और इक़्रार किया, ‘हम ने गुनाह किया है,
क्यूँकि हम ने रब को तर्क करके बाल और अस्तारात
के बुतों की पूजा की है। लेकिन अब हमें दुश्मनों
से बचा! फिर हम सिर्फ़ तेरी ही ख़िदमत करेंगे।’
11 और हर बार रब ने किसी न किसी को भेज दिया,
कभी जिदाऊन, कभी बरक़, कभी इफ़्ताह और कभी
समूएल को। उन आदमियों की मारिफ़त अल्लाह ने
आप को इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से बचाया, और
मुल्क में अम्न-ओ-अमान क़ाइम हो गया।

12 लेकिन जब अम्मोनी बादशाह नाहस आप से
लड़ने आया तो आप मेरे पास आ कर तक़ाज़ा करने
लगे कि हमारा अपना बादशाह हो जो हम पर हुकूमत
करे, हालाँकि आप जानते थे कि रब हमारा ख़ुदा
हमारा बादशाह है। 13 अब वह बादशाह देखें जिसे
आप माँग रहे थे! रब ने आप की ख़्वाहिश पूरी करके
उसे आप पर मुक़र्रर किया है। 14 चुनाँचे रब का
ख़ौफ़ मानें, उस की ख़िदमत करें और उस की सुनें।
सरकश हो कर उस के अह्काम की ख़िलाफ़वरज़ी

मत करना। अगर आप और आप का बादशाह रब से
वफ़ादार रहेंगे तो वह आप के साथ होगा। 15 लेकिन
अगर आप उस के ताबे न रहें और सरकश हो कर
उस के अह्काम की ख़िलाफ़वरज़ी करें तो वह आप
की मुख़ालफ़त करेगा, जिस तरह उस ने आप के
बापदादा की भी मुख़ालफ़त की।
16 अब खड़े हो कर देखें कि रब क्या करने वाला
है। वह आप की आँखों के सामने ही बड़ा मोजिज़ा
करेगा। 17 इस वक़्त गन्दुम की कटाई का मौसम है।
गो इन दिनों में बारिश नहीं होती, लेकिन मैं दुआ
करूँगा तो रब गरजते बादल और बारिश भेजेगा।
तब आप जान लेंगे कि आप ने बादशाह का तक़ाज़ा
करते हुए रब के नज़्दीक कितनी बुरी बात की है।”
18 समूएल ने पुकार कर रब से दुआ की, और उस
दिन रब ने गरजते बादल और बारिश भेज दी। यह
देख कर इजतिमा सख़्त घबरा कर समूएल और रब
से डरने लगा। 19 सब ने समूएल से इल्तिमास की,
“रब अपने ख़ुदा से दुआ करके हमारी सिफ़ारिश करें
ताकि हम मर न जाएँ। क्यूँकि बादशाह का तक़ाज़ा
करने से हम ने अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा किया है।”
20 समूएल ने लोगों को तसल्ली दे कर कहा, “मत
डरें। बेशक आप से ग़लती हुई है, लेकिन आइन्दा
ख़याल रखें कि आप रब से दूर न हो जाएँ बल्कि
पूरे दिल से उस की ख़िदमत करें। 21 बेमानी बुतों के
पीछे मत पड़ना। न वह फ़ाइदे का बाइस हैं, न आप
को बचा सकते हैं। उन की कोई हैसियत नहीं है।
22 रब अपने अज़ीम नाम की ख़ातिर अपनी क़ौम को
नहीं छोड़ेगा, क्यूँकि उस ने आप को अपनी क़ौम
बनाने का फ़ैसला किया है। 23 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़
है, मैं इस में रब का गुनाह नहीं करूँगा कि आप की
सिफ़ारिश करने से बाज़ आऊँ। और आइन्दा भी मैं
आप को अच्छे और सहीह रास्ते की तालीम देता
रहूँगा। 24 लेकिन ध्यान से रब का ख़ौफ़ मानें और
पूरे दिल और वफ़ादारी से उस की ख़िदमत करें।
याद रहे कि उस ने आप के लिए कितने अज़ीम काम
किए हैं। 25 लेकिन अगर आप ग़लत काम करने पर
तुले रहें तो आप अपने बादशाह समेत दुनिया में से
मिट जाएंगे।”

फ़िलिस्तियों से जंग

13 1 साऊल 30 साल का था जब तख़्तनशीन
हुआ। दो साल हुकूमत करने के बाद 2 उस
ने अपनी फ़ौज के लिए 3,000 इस्राईली चुन लिए।
जंग लड़ने के क़ाबिल बाक़ी आदमियों को उस
ने फ़ारिग़ कर दिया। 2,000 फ़ौजियों की डयूटी
मिक्मास और बैत-एल के पहाड़ी इलाक़े में लगाई गई
जहाँ साऊल ख़ुद था। बाक़ी 1,000 अफ़राद यूनतन
के पास बिनयमीन के शहर जिबिआ में थे।
3 एक दिन यूनतन ने जिबिआ की फ़िलिस्ती चौकी
पर हम्ला करके उसे शिकस्त दी। जल्द ही यह ख़बर
दूसरे फ़िलिस्तियों तक पहुँच गई। साऊल ने मुल्क
के कोने कोने में क़ासिद भेज दिए, और वह नरसिंगा
बजाते बजाते लोगों को यूनतन की फ़त्ह सुनाते
गए। 4 तमाम इस्राईल में ख़बर फैल गई, “साऊल
ने जिबिआ की फ़िलिस्ती चौकी को तबाह कर दिया
है, और अब इस्राईल फ़िलिस्तियों की ख़ास नफ़रत
का निशाना बन गया है।” साऊल ने तमाम मर्दों को
फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए जिल्जाल में बुलाया।
5 फ़िलिस्ती भी इस्राईलियों से लड़ने के लिए जमा
हुए। उन के 30,000 रथ, 6,000 घुड़सवार और
साहिल की रेत जैसे बेशुमार पियादा फ़ौजी थे। उन्हों
ने बैत-आवन के मशरिक़ में मिक्मास के क़रीब अपने
ख़ैमे लगाए। 6 इस्राईलियों ने देखा कि हम बड़े ख़तरे
में आ गए हैं, और दुश्मन हम पर बहुत दबाओ डाल
रहा है तो परेशानी के आलम में कुछ ग़ारों और दराड़ों
में और कुछ पत्थरों के दरमियान या क़ब्रों और हौज़ों
में छुप गए। 7 कुछ इतने डर गए कि वह दरया-ए-यर्दन
को पार करके जद और जिलिआद के इलाक़े में चले
गए।

साऊल की बेसब्री

साऊल अब तक जिल्जाल में था, लेकिन जो आदमी उस के साथ रहे थे वह ख़ौफ़ के मारे थरथरा रहे थे। 8 समूएल ने साऊल को हिदायत दी थी कि सात दिन मेरा इन्तिज़ार करें। लेकिन सात दिन गुज़र गए, और समूएल न आया। साऊल के फ़ौजी मुन्तशिर होने लगे 9 तो साऊल ने हुक्म दिया, “भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ ले आओ।” फिर उस ने ख़ुद क़ुर्बानियाँ पेश कीं।

10 वह अभी इस काम से फ़ारिग़ ही हुआ था कि समूएल पहुँच गया। साऊल उसे ख़ुशआमदीद कहने के लिए निकला। 11 लेकिन समूएल ने पूछा, “आप ने क्या किया?”

साऊल ने जवाब दिया, “लोग मुन्तशिर हो रहे थे, और आप वक़्त पर न आए। जब मैं ने देखा कि फ़िलिस्ती मिक्मास के क़रीब जमा हो रहे हैं 12 तो मैं ने सोचा, ‘फ़िलिस्ती यहाँ जिल्जाल में आ कर मुझ पर हम्ला करने को हैं, हालाँकि मैं ने अभी रब से दुआ नहीं की कि वह हम पर मेहरबानी करे।’ इस लिए मैं ने जुरअत करके ख़ुद क़ुर्बानियाँ पेश कीं।”

13 समूएल बोला, “यह कैसी अहमक़ाना हरकत थी! आप ने रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना। रब तो आप और आप की औलाद को हमेशा के लिए इस्राईल पर मुक़र्रर करना चाहता था। 14 लेकिन अब आप की बादशाहत क़ाइम नहीं रहेगी। चूँकि आप ने उस की न सुनी इस लिए रब ने किसी और को चुन कर अपनी क़ौम का राहनुमा मुक़र्रर किया है, एक ऐसे आदमी को जो उस की सोच रखेगा।”

15 फिर समूएल जिल्जाल से चला गया।

जंग की तय्यारियाँ

बचे हुए इस्राईली साऊल के पीछे दुश्मन से लड़ने गए। वह जिल्जाल से रवाना हो कर जिबिआ पहुँच गए। जब साऊल ने वहाँ फ़ौज का जाइज़ा लिया तो बस 600 अफ़राद रह गए थे। 16 साऊल, यूनतन और उन की फ़ौज बिनयमीन के शहर जिबिआ में टिक गए जबकि फ़िलिस्ती मिक्मास के पास ख़ैमाज़न थे। 17 कुछ देर के बाद फ़िलिस्तियों के तीन दस्ते मुल्क को लूटने के लिए निकले। एक सूआल के इलाक़े के शहर उफ़्रा की तरफ़ चल पड़ा, 18 दूसरा बैत-हौरून की तरफ़ और तीसरा उस पहाड़ी सिलसिले की तरफ़ जहाँ से वादी-ए-ज़बोईम और रेगिस्तान देखा जा सकता है।

19 उन दिनों में पूरे मुल्क-ए-इस्राईल में लोहार नहीं था, क्यूँकि फ़िलिस्ती नहीं चाहते थे कि इस्राईली तलवारें या नेज़े बनाएँ। 20 अपने हलों, कुदालों, कुल्हाड़ियों या दरान्तियों को तेज़ करवाने के लिए तमाम इस्राईलियों को फ़िलिस्तियों के पास जाना पड़ता था। 21 फ़िलिस्ती हलों, कुदालों, काँटों और कुल्हाड़ियों को तेज़ करने के लिए और आँकुसों की नोक ठीक करने के लिए चाँदी के सिक्के की दो तिहाई लेते थे। 22 नतीजे में उस दिन साऊल और यूनतन के सिवा किसी भी इस्राईली के पास तलवार या नेज़ा नहीं था।

यूनतन फ़िलिस्तियों पर हम्ला करता है

23 फ़िलिस्तियों ने मिक्मास के दर्रे पर क़ब्ज़ा करके वहाँ चौकी क़ाइम की थी।

14 1 एक दिन यूनतन ने अपने जवान सिलाहबर्दार से कहा, “आओ, हम परली तरफ़ जाएँ जहाँ फ़िलिस्ती फ़ौज की चौकी है।” लेकिन उस ने अपने बाप को इत्तिला न दी।

2 साऊल उस वक़्त अनार के दरख़्त के साय में बैठा था जो जिबिआ के क़रीब के मिग्रोन में था। 600 मर्द उस के पास थे। 3 अख़ियाह इमाम भी साथ था जो इमाम का बालापोश पहने हुए था। अख़ियाह यकबोद के भाई अख़ीतूब का बेटा था। उस का दादा फ़ीन्हास और परदादा एली था, जो पुराने ज़माने में सैला में रब का इमाम था। किसी को भी मालूम न था कि यूनतन चला गया है।

4–5 फ़िलिस्ती चौकी तक पहुँचने के लिए यूनतन
ने एक तंग रास्ता इख़्तियार किया जो दो कड़ाड़ों
के दरमियान से गुज़रता था। पहले का नाम बोसीस
था, और वह शिमाल में मिक्मास के मुक़ाबिल था।
दूसरे का नाम सना था, और वह जुनूब में जिबा के
मुक़ाबिल था। 6 यूनतन ने अपने जवान सिलाहबर्दार
से कहा, “आओ, हम परली तरफ़ जाएँ जहाँ इन
नामख़्तूनों की चौकी है। शायद रब हमारी मदद करे,
क्यूँकि उस के नज़्दीक कोई फ़र्क़ नहीं कि हम ज़्यादा
हों या कम।” 7 उस का सिलाहबर्दार बोला, “जो कुछ
आप ठीक समझते हैं, वही करें। ज़रूर जाएँ। जो कुछ
भी आप कहेंगे, मैं हाज़िर हूँ।” 8 यूनतन बोला, “ठीक
है। फिर हम यूँ दुश्मनों की तरफ़ बढ़ते जाएंगे, कि
हम उन्हें साफ़ नज़र आएँ। 9 अगर वह हमें देख कर
पुकारें, ‘रुक जाओ, वर्ना हम तुम्हें मार देंगे!’ तो हम
अपने मन्सूबे से बाज़ आ कर उन के पास नहीं जाएंगे।
10 लेकिन अगर वह पुकारें, ‘आओ, हमारे पास आ
जाओ!’ तो हम ज़रूर उन के पास चढ़ जाएंगे। क्यूँकि
यह इस का निशान होगा कि रब उन्हें हमारे क़ब्ज़े में
कर देगा।”

11 चुनाँचे वह चलते चलते फ़िलिस्ती चौकी को
नज़र आए। फ़िलिस्ती शोर मचाने लगे, “देखो,
इस्राईली अपने छुपने के बिलों से निकल रहे
हैं!” 12 चौकी के फ़ौजियों ने दोनों को चैलेंज
किया, “आओ, हमारे पास आओ तो हम तुम्हें
सबक़ सिखाएँगे।” यह सुन कर यूनतन ने अपने
सिलाहबर्दार को आवाज़ दी, “आओ, मेरे पीछे
चलो! रब ने उन्हें इस्राईल के हवाले कर दिया है।”
13 दोनों अपने हाथों और पैरों के बल चढ़ते चढ़ते
चौकी तक जा पहुँचे। जब यूनतन आगे आगे चल
कर फ़िलिस्तियों के पास पहुँच गया तो वह उस के
सामने गिरते गए। साथ साथ सिलाहबर्दार पीछे से
लोगों को मारता गया।

14 इस पहले हमले के दौरान उन्हों ने तक़रीबन 20
आदमियों को मार डाला। उन की लाशें आध एकड़
ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। 15 अचानक पूरी फ़ौज
में दह्शत फैल गई, न सिर्फ़ लश्करगाह बल्कि खुले
मैदान में भी। चौकी के मर्द और लूटने वाले दस्ते
भी थरथराने लगे। साथ साथ ज़ल्ज़ला आया। रब ने
तमाम फ़िलिस्ती फ़ौजियों के दिलों में दह्शत पैदा
की।

रब फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह देता है

16 साऊल के जो पहरेदार जिबिआ से दुश्मन की
हरकतों पर ग़ौर कर रहे थे उन्हों ने अचानक देखा
कि फ़िलिस्ती फ़ौज में हलचल मच गई है, अफ़ा-
तफ़्री कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ बढ़ रही है।
17 साऊल ने फ़ौरन हुक्म दिया, “फ़ौजियों को गिन
कर मालूम करो कि कौन चला गया है।” मालूम हुआ
कि यूनतन और उस का सिलाहबर्दार मौजूद नहीं हैं।
18 साऊल ने अख़ियाह को हुक्म दिया, “अह्द का
सन्दूक़ ले आएँ।” क्यूँकि वह उन दिनों में इस्राईली
कैम्प में था। 19 लेकिन साऊल अभी अख़ियाह से
बात कर रहा था कि फ़िलिस्ती लश्करगाह में हंगामा
और शोर बहुत ज़्यादा बढ़ गया। साऊल ने इमाम से
कहा, “कोई बात नहीं, रहने दें।” 20 वह अपने 600
अफ़राद को ले कर फ़ौरन दुश्मन पर टूट पड़ा। जब
उन तक पहुँच गए तो मालूम हुआ कि फ़िलिस्ती एक
दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं, और हर तरफ़ हंगामा ही
हंगामा है।

21 फ़िलिस्तियों ने काफ़ी इस्राईलियों को अपनी
फ़ौज में शामिल कर लिया था। अब यह लोग
फ़िलिस्तियों को छोड़ कर साऊल और यूनतन के
पीछे हो लिए। 22 इन के इलावा जो इस्राईली इफ़्राईम
के पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर छुप गए थे, जब उन्हें
ख़बर मिली कि फ़िलिस्ती भाग रहे हैं तो वह भी उन
का ताक़्क़ुब करने लगे। 23 लड़ते लड़ते मैदान-ए-जंग
बैत-आवन तक फैल गया। इस तरह रब ने उस दिन
इस्राईलियों को बचा लिया।

साऊल की बेसोचे-समझे लानत

24 उस दिन इस्राईली सख़्त लड़ाई के बाइस बड़ी
मुसीबत में थे। इस लिए साऊल ने क़सम खा कर
कहा, “उस पर लानत जो शाम से पहले खाना खाए।
पहले मैं अपने दुश्मन से इन्तिक़ाम लूँगा, फिर ही सब
खा पी सकते हैं।” इस वजह से किसी ने रोटी को हाथ
तक न लगाया। 25 पूरी फ़ौज जंगल में दाख़िल हुई तो
वहाँ ज़मीन पर शहद के छत्ते थे। 26 तमाम लोग जब
उन के पास से गुज़रे तो देखा कि उन से शहद टपक
रहा है। लेकिन किसी ने थोड़ा भी ले कर खाने की
जुरअत न की, क्यूँकि सब साऊल की लानत से डरते
थे।

27 यूनतन को लानत का इल्म न था, इस लिए उस
ने अपनी लाठी का सिरा किसी छत्ते में डाल कर उसे
चाट लिया। उस की आँखें फ़ौरन चमक उठीं, और
वह ताज़ादम हो गया। 28 किसी ने देख कर यूनतन
को बताया, “आप के बाप ने फ़ौज से क़सम खिला
कर एलान किया है कि उस पर लानत जो इस दिन
कुछ खाए। इसी वजह से हम सब इतने निढाल हो
गए हैं।” 29 यूनतन ने जवाब दिया, “मेरे बाप ने मुल्क
को मुसीबत में डाल दिया है! देखो, इस थोड़े से शहद
को चखने से मेरी आँखें कितनी चमक उठीं और मैं
कितना ताज़ादम हो गया। 30 बेहतर होता कि हमारे
लोग दुश्मन से लूटे हुए माल में से कुछ न कुछ खा
लेते। लेकिन इस हालत में हम फ़िलिस्तियों को किस
तरह ज़्यादा नुक़्सान पहुँचा सकते हैं?”

31 उस दिन इस्राईली फ़िलिस्तियों को मिक्मास से
मार मार कर अय्यालोन तक पहुँच गए। लेकिन शाम
के वक़्त वह निहायत निढाल हो गए थे। 32 फिर वह
लूटे हुए रेवड़ों पर टूट पड़े। उन्हों ने जल्दी जल्दी भेड़-
बकरियों, गाय-बैलों और बछड़ों को ज़बह किया।
भूक की शिद्दत की वजह से उन्हों ने ख़ून को सहीह
तौर से निकलने न दिया बल्कि जानवरों को ज़मीन
पर छोड़ कर गोश्त को ख़ून समेत खाने लगे।

33 किसी ने साऊल को इत्तिला दी, “देखें, लोग
रब का गुनाह कर रहे हैं, क्यूँकि वह गोश्त खा रहे
हैं जिस में अब तक ख़ून है।” यह सुन कर साऊल
पुकार उठा, “आप रब से वफ़ादार नहीं रहे!” फिर
उस ने साथ वाले आदमियों को हुक्म दिया, “कोई
बड़ा पत्थर लुढ़का कर इधर ले आएँ! 34 फिर तमाम
आदमियों के पास जा कर उन्हें बता देना, ‘अपने
जानवरों को मेरे पास ले आएँ ताकि उन्हें पत्थर पर
ज़बह करके खाएँ। वर्ना आप ख़ूनआलूदा गोश्त खा
कर रब का गुनाह करेंगे’।”

सब मान गए। उस शाम वह साऊल के पास आए
और अपने जानवरों को पत्थर पर ज़बह किया।
35 वहाँ साऊल ने पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में
क़ुर्बानगाह बनाई।

36 फिर उस ने एलान किया, “आएँ, हम अभी
इसी रात फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करके उन में
लूट-मार का सिलसिला जारी रखें ताकि एक भी
न बचे।” फ़ौजियों ने जवाब दिया, “ठीक है, वह
कुछ करें जो आप को मुनासिब लगे।” लेकिन इमाम
बोला, “पहले हम अल्लाह से हिदायत लें।” 37 चुनाँचे
साऊल ने अल्लाह से पूछा, “क्या हम फ़िलिस्तियों का
ताक़्क़ुब जारी रखें? क्या तू उन्हें इस्राईल के हवाले
कर देगा?” लेकिन इस मर्तबा अल्लाह ने जवाब न
दिया।

38 यह देख कर साऊल ने फ़ौज के तमाम
राहनुमाओं को बुला कर कहा, “किसी ने गुनाह
किया है। मालूम करने की कोशिश करें कि कौन
क़ुसूरवार है। 39 रब की हयात की क़सम जो इस्राईल
का नजातदहिन्दा है, क़ुसूरवार को फ़ौरन सज़ा-ए-
मौत दी जाएगी, ख़्वाह वह मेरा बेटा यूनतन क्यूँ न
हो।” लेकिन सब ख़ामोश रहे।

40 तब साऊल ने दुबारा एलान किया, “पूरी फ़ौज
एक तरफ़ खड़ी हो जाए और यूनतन और मैं दूसरी
तरफ़।” लोगों ने जवाब दिया, “जो आप को मुनासिब
लगे वह करें।” 41 फिर साऊल ने रब इस्राईल के ख़ुदा

से दुआ की, “ऐ रब, हमें दिखा कि कौन क़ुसूरवार है!”

जब क़ुरआ डाला गया तो यूनतन और साऊल के गुरोह को क़ुसूरवार क़रार दिया गया और बाक़ी फ़ौज को बेक़ुसूर। 42 फिर साऊल ने हुक्म दिया, “अब क़ुरआ डाल कर पता करें कि मैं क़ुसूरवार हूँ या यूनतन।” जब क़ुरआ डाला गया तो यूनतन क़ुसूरवार ठहरा। 43 साऊल ने पूछा, “बताएँ, आप ने क्या किया?” यूनतन ने जवाब दिया, “मैं ने सिर्फ़ थोड़ा सा शहद चख लिया जो मेरी लाठी के सिरे पर लगा था। लेकिन मैं मरने के लिए तय्यार हूँ।” 44 साऊल ने कहा, “यूनतन, अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं आप को इस के लिए सज़ा-ए-मौत न दूँ।” 45 लेकिन फ़ौजियों ने एतिराज़ किया, “यह कैसी बात है? यूनतन ही ने अपने ज़बरदस्त हमले से इस्राईल को आज बचा लिया है। उसे किस तरह सज़ा-ए-मौत दी जा सकती है? कभी नहीं! अल्लाह की हयात की क़सम, उस का एक बाल भी बीका नहीं होगा, क्यूँकि आज उस ने अल्लाह की मदद से फ़त्ह पाई है।” यूँ फ़ौजियों ने यूनतन को मौत से बचा लिया।

46 तब साऊल ने फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करना छोड़ दिया और अपने घर चला गया। फ़िलिस्ती भी अपने मुल्क में वापस चले गए।

साऊल की जंगें

47 जब साऊल तख़्तनशीन हुआ तो वह मुल्क के इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से लड़ा। इन में मोआब, अम्मोन, अदोम, ज़ोबाह के बादशाह और फ़िलिस्ती शामिल थे। और जहाँ भी जंग छिड़ी वहाँ उस ने फ़त्ह पाई। 48 वह निहायत बहादुर था। उस ने अमालीक़ियों को भी शिकस्त दी और यूँ इस्राईल को उन तमाम दुश्मनों से बचा लिया जो बार बार मुल्क की लूट-मार करते थे।

साऊल का ख़ानदान

49 साऊल के तीन बेटे थे, यूनतन, इस्वी और मल्कीशूअ। उस की बड़ी बेटी मीरब और छोटी बेटी मीकल थी। 50 बीवी का नाम अख़ीनूअम बिन्त अख़ीमाज़ था। साऊल की फ़ौज का कमाँडर अबिनैर था, जो साऊल के चचा नैर का बेटा था। 51 साऊल का बाप क़ीस और अबिनैर का बाप नैर सगे भाई थे जिन का बाप अबीएल था।

52 साऊल के जीते जी फ़िलिस्तियों से सख़्त जंग जारी रही। इस लिए जब भी कोई बहादुर और लड़ने के क़ाबिल आदमी नज़र आया तो साऊल ने उसे अपनी फ़ौज में भर्ती कर लिया।

तमाम अमालीक़ियों को हलाक करने का हुक्म

15 1 एक दिन समूएल ने साऊल के पास आ कर उस से बात की, “रब ही ने मुझे आप को मसह करके इस्राईल पर मुक़र्रर करने का हुक्म दिया था। अब रब का पैग़ाम सुन लें! 2 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, ‘मैं अमालीक़ियों का मेरी क़ौम के साथ सुलूक नहीं भूल सकता। उस वक़्त जब इस्राईली मिस्र से निकल कर कनआन की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो अमालीक़ियों ने रास्ता बन्द कर दिया था। 3 अब वक़्त आ गया है कि तू उन पर हम्ला करे। सब कुछ तबाह करके मेरे हवाले कर दे। कुछ भी बचने न दे, बल्कि तमाम मर्दों, औरतों, बच्चों शीरख़्वारों समेत, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों, ऊँटों और गधों को मौत के घाट उतार दे।’”

4 साऊल ने अपने फ़ौजियों को बुला कर तलाइम में उन का जाइज़ा लिया। कुल 2,00,000 पयादे फ़ौजी थे, नीज़ यहूदाह के 10,000 अफ़राद। 5 अमालीक़ियों के शहर के पास पहुँच कर साऊल वादी में ताक में बैठ गया। 6 लेकिन पहले उस ने क़ीनियों को ख़बर भेजी, “अमालीक़ियों से अलग हो कर उन के पास से चले जाएँ, वर्ना आप उन के साथ हलाक हो जाएंगे। क्यूँकि जब इस्राईली मिस्र

से निकल कर रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे तो आप ने उन पर मेहरबानी की थी।" यह ख़बर मिलते ही क़ीनी अमालीक़ियों से अलग हो कर चले गए। 7 तब साऊल ने अमालीक़ियों पर हम्ला करके उन्हें हवीला से ले कर मिस्र की मशरिक़ी सरहद शूर तक शिकस्त दी। 8 पूरी क़ौम को तलवार से मारा गया, सिर्फ़ उन का बादशाह अजाज ज़िन्दा पकड़ा गया। 9 साऊल और उस के फ़ौजियों ने उसे ज़िन्दा छोड़ दिया। इसी तरह सब से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे-ताज़े बछड़ों और चीदा भेड़ के बच्चों को भी छोड़ दिया गया। जो भी अच्छा था बच गया, क्यूँकि इस्राईलियों का दिल नहीं करता था कि तन्दुरुस्त और मोटे-ताज़े जानवरों को हलाक करें। उन्हों ने सिर्फ़ उन तमाम कमज़ोर जानवरों को ख़त्म किया जिन की क़दर-ओ-क़ीमत न थी।

फ़रमाँबरदारी क़ुर्बानियों से अहम है

10 फिर रब समूएल से हमकलाम हुआ, 11 "मुझे दुख है कि मैं ने साऊल को बादशाह बना लिया है, क्यूँकि उस ने मुझ से दूर हो कर मेरा हुक्म नहीं माना।" समूएल को इतना ग़ुस्सा आया कि वह पूरी रात बुलन्द आवाज़ से रब से फ़र्याद करता रहा। 12 अगले दिन वह उठ कर साऊल से मिलने गया। किसी ने उसे बताया, "साऊल कर्मिल चला गया। वहाँ अपने लिए यादगार खड़ा करके वह आगे जिल्जाल चला गया है।" 13 जब समूएल जिल्जाल पहुँचा तो साऊल ने कहा, "मुबारक हो! मैं ने रब का हुक्म पूरा कर दिया है।" 14 समूएल ने पूछा, "जानवरों का यह शोर कहाँ से आ रहा है? भेड़-बकरियाँ ममया रही और गाय-बैल डकरा रहे हैं।" 15 साऊल ने जवाब दिया, "यह अमालीक़ियों के हाँ से लाए गए हैं। फ़ौजियों ने सब से अच्छे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को ज़िन्दा छोड़ दिया ताकि उन्हें रब आप के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बान करें। लेकिन हम ने बाक़ी सब को रब के हवाले करके मार दिया।"

16 समूएल बोला, "ख़ामोश! पहले वह बात सुन लें जो रब ने मुझे पिछली रात फ़रमाई।" साऊल ने जवाब दिया, "बताएँ।" 17 समूएल ने कहा, "जब आप तमाम क़ौम के राहनुमा बन गए तो एहसास-ए-कमतरी का शिकार थे। तो भी रब ने आप को मसह करके इस्राईल का बादशाह बना दिया। 18 और उस ने आप को भेज कर हुक्म दिया, 'जा और अमालीक़ियों को पूरे तौर पर हलाक करके मेरे हवाले कर। उस वक़्त तक इन शरीर लोगों से लड़ता रह जब तक वह सब के सब मिट न जाएँ।' 19 अब मुझे बताएँ कि आप ने रब की क्यूँ न सुनी? आप लूटे हुए माल पर क्यूँ टूट पड़े? यह तो रब के नज़्दीक गुनाह है।"

20 साऊल ने एतिराज़ किया, "लेकिन मैं ने ज़रूर रब की सुनी। जिस मक़्सद के लिए रब ने मुझे भेजा वह मैं ने पूरा कर दिया है, क्यूँकि मैं अमालीक़ के बादशाह अजाज को गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आया और बाक़ी सब को मौत के घाट उतार कर रब के हवाले कर दिया। 21 मेरे फ़ौजी लूटे हुए माल में से सिर्फ़ सब से अच्छी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल चुन कर ले आए, क्यूँकि वह उन्हें यहाँ जिल्जाल में रब आप के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बान करना चाहते थे।"

22 लेकिन समूएल ने जवाब दिया, "रब को क्या बात ज़्यादा पसन्द है, आप की भस्म होने वाली और ज़बह की क़ुर्बानियाँ या यह कि आप उस की सुनते हैं? सुनना क़ुर्बानी से कहीं बेहतर और ध्यान देना मेंढे की चर्बी से कहीं उम्दा है। 23 सरकशी ग़ैबदानी के गुनाह के बराबर है और ग़ुरूर बुतपरस्ती के गुनाह से कम नहीं होता। आप ने रब का हुक्म रद्द किया है, इस लिए उस ने आप को रद्द करके बादशाह का उह्दा आप से छीन लिया है।"

24 तब साऊल ने इक़्रार किया, "मुझ से गुनाह हुआ है। मैं ने आप की हिदायत और रब के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की है। मैं ने लोगों से डर कर उन की बात मान ली। 25 लेकिन अब मेहरबानी करके मुझे मुआफ़ करें और मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं

आप की मौजूदगी में रब की परस्तिश कर सकूँ।”
26 लेकिन समूएल ने जवाब दिया, “मैं आप के साथ
वापस नहीं चलूँगा। आप ने रब का कलाम रद्द किया
है, इस लिए रब ने आप को रद्द करके बादशाह का
उह्दा आप से छीन लिया है।”
27 समूएल मुड़ कर वहाँ से चलने लगा, लेकिन
साऊल ने उस के चोग़े का दामन इतने ज़ोर से पकड़
लिया कि वह फट कर उस के हाथ में रह गया।
28 समूएल बोला, “जिस तरह कपड़ा फट कर आप
के हाथ में रह गया बिलकुल उसी तरह रब ने आज
ही इस्राईल पर आप का इख़तियार आप से छीन कर
किसी और को दे दिया है, ऐसे शख़्स को जो आप से
कहीं बेहतर है। 29 जो इस्राईल की शान-ओ-शौकत है
वह न झूट बोलता, न कभी अपनी सोच को बदलता
है, क्यूँकि वह इन्सान नहीं कि एक बात कह कर
बाद में उसे बदले।”
30 साऊल ने दुबारा मिन्नत की, “बेशक मैं ने गुनाह
किया है। लेकिन बराह-ए-करम कम अज़ कम मेरी
क़ौम के बुज़ुर्गों और इस्राईल के सामने तो मेरी
इज़्ज़त करें। मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं आप
की मौजूदगी में रब आप के ख़ुदा की परस्तिश कर
सकूँ।”
31 तब समूएल मान गया और साऊल के साथ दूसरों
के पास वापस आया। साऊल ने रब की परस्तिश
की, 32 फिर समूएल ने एलान किया, “अमालीक़ के
बादशाह अजाज को मेरे पास ले आओ!” अजाज
इत्मीनान से समूएल के पास आया, क्यूँकि उस
ने सोचा, “बेशक मौत का ख़तरा टल गया है।”
33 लेकिन समूएल बोला, “तेरी तलवार से बेशुमार
माएँ अपने बच्चों से महरूम हो गई हैं। अब तेरी माँ
भी बेऔलाद हो जाएगी।” यह कह कर समूएल ने
वहीं जिल्जाल में रब के हुज़ूर अजाज को तलवार से
टुकड़े टुकड़े कर दिया।
34 फिर वह रामा वापस चला गया, और साऊल
अपने घर गया जो जिबिआ में था। 35 इस के बाद
समूएल जीते जी साऊल से कभी न मिला, क्यूँकि
वह साऊल का मातम करता रहा। लेकिन रब को
दुख था कि मैं ने साऊल को इस्राईल पर क्यूँ मुक़र्रर
किया।

नए बादशाह दाऊद को मुक़र्रर किया जाता है

16 1 एक दिन रब समूएल से हमकलाम हुआ,
“तू कब तक साऊल का मातम करेगा? मैं
ने तो उसे रद्द करके बादशाह का उह्दा उस से ले
लिया है। अब मेंढे का सींग ज़ैतून के तेल से भर कर
बैत-लहम चला जा। वहाँ एक आदमी से मिल जिस
का नाम यस्सी है। क्यूँकि मैं ने उस के बेटों में से एक
को चुन लिया है कि वह नया बादशाह बन जाए।”
2 लेकिन समूएल ने एतिराज़ किया, “मैं किस तरह जा
सकता हूँ? साऊल यह सुन कर मुझे मार डालेगा।”
रब ने जवाब दिया, “एक जवान गाय अपने साथ ले
कर लोगों को बता दे कि मैं इसे रब के हुज़ूर क़ुर्बान
करने के लिए आया हूँ। 3 यस्सी को दावत दे कि
वह क़ुर्बानी की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाए। आगे मैं
तुझे बताऊँगा कि क्या करना है। मैं तुझे दिखाऊँगा
कि किस बेटे को मेरे लिए मसह करके चुन लेना है।”
4 समूएल मान गया। जब वह बैत-लहम पहुँच गया
तो लोग चौंक उठे। लरज़ते लरज़ते शहर के बुज़ुर्ग उस
से मिलने आए और पूछा, “ख़ैरियत तो है कि आप
हमारे पास आ गए हैं?” 5 समूएल ने उन्हें तसल्ली दे
कर कहा, “ख़ैरियत है। मैं रब के हुज़ूर क़ुर्बानी पेश
करने के लिए आया हूँ। अपने आप को रब के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें और फिर मेरे साथ क़ुर्बानी
की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाएँ।” समूएल ने यस्सी
और उस के बेटों को भी दावत दी और उन्हें अपने
आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करने को कहा।
6 जब यस्सी अपने बेटों समेत क़ुर्बानी की ज़ियाफ़त
के लिए आया तो समूएल की नज़र इलियाब पर पड़ी।
उस ने सोचा, “बेशक यह वह है जिसे रब मसह
करके बादशाह बनाना चाहता है।” 7 लेकिन रब ने
फ़रमाया, “इस की शक्ल-ओ-सूरत और लम्बे क़द
से मुतअस्सिर न हो, क्यूँकि यह मुझे नामन्ज़ूर है।

मैं इन्सान की नज़र से नहीं देखता। क्यूँकि इन्सान ज़ाहिरी सूरत पर ग़ौर करके फ़ैसला करता है जबकि रब को हर एक का दिल साफ़ साफ़ नज़र आता है।”
8 फिर यस्सी ने अपने दूसरे बेटे अबीनदाब को बुला
कर समूएल के सामने से गुज़रने दिया। समूएल बोला,
“नहीं, रब ने इसे भी नहीं चुना।” 9 इस के बाद यस्सी
ने तीसरे बेटे सम्मा को पेश किया। लेकिन यह भी
नहीं चुना गया था। 10 यूँ यस्सी ने अपने सात बेटों को
एक एक करके समूएल के सामने से गुज़रने दिया।
इन में से कोई रब का चुना हुआ बादशाह न निकला।
11 आख़िरकार समूएल ने पूछा, “इन के इलावा कोई
और बेटा तो नहीं है?” यस्सी ने जवाब दिया, “सब
से छोटा बेटा अभी बाक़ी रह गया है, लेकिन वह
बाहर खेतों में भेड़-बकरियों की निगरानी कर रहा
है।” समूएल ने कहा, “उसे फ़ौरन बुला लें। उस के
आने तक हम खाने के लिए नहीं बैठेंगे।”
12 चुनाँचे यस्सी छोटे को बुला कर अन्दर ले आया।
यह बेटा गोरा था। उस की आँखें ख़ूबसूरत और
शक्ल-ओ-सूरत क़ाबिल-ए-तारीफ़ थी। रब ने समूएल
को बताया, “यही है। उठ कर इसे मसह कर।”
13 समूएल ने तेल से भरा हुआ मेंढे का सींग ले कर
उसे दाऊद के सर पर उंडेल दिया। सब भाई मौजूद
थे। उसी वक़्त रब का रूह दाऊद पर नाज़िल हुआ
और उस की सारी उम्र उस पर ठहरा रहा। फिर
समूएल रामा वापस चला गया।

दाऊद साऊल को बदरुह से आराम दिलाता है

14 लेकिन रब के रूह ने साऊल को छोड़ दिया
था। इस के बजाय रब की तरफ़ से एक बुरी रूह
उसे दहशतज़दा करने लगी। 15 एक दिन साऊल के
मुलाज़िमों ने उस से कहा, “अल्लाह की तरफ़ से एक
बुरी रूह आप के दिल में दहशत पैदा कर रही है।
16 हमारा आक़ा अपने ख़ादिमों को हुक्म दे कि वह
किसी को ढूँड लाएँ जो सरोद बजा सके। जब भी
अल्लाह की तरफ़ से यह बुरी रूह आप पर आए तो वह
अपना साज़ बजा कर आप को सुकून दिलाएगा।”
17 साऊल ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही करो।
किसी को बुला लाओ जो साज़ बजाने में माहिर हो।”
18 एक मुलाज़िम बोला, “मैं ने एक आदमी को देखा
है जो ख़ूब बजा सकता है। वह बैत-लहम के रहने
वाले यस्सी का बेटा है। वह न सिर्फ़ महारत से सरोद
बजा सकता है बल्कि बड़ा जंगजू भी है। यह भी उस
की एक ख़ूबी है कि वह हर मौक़े पर समझदारी से
बात कर सकता है। और वह ख़ूबसूरत भी है। रब
उस के साथ है।”
19 साऊल ने फ़ौरन अपने क़ासिदों को यस्सी के
पास भेज कर उसे इत्तिला दी, “अपने बेटे दाऊद को
जो भेड़-बकरियों को सँभालता है मेरे पास भेज देना।”
20 यह सुन कर यस्सी ने रोटी, मै का मश्कीज़ा और
एक जवान बकरी गधे पर लाद कर दाऊद के हवाले
कर दी और उसे साऊल के दरबार में भेज दिया।
21 इस तरह दाऊद साऊल की ख़िदमत में हाज़िर
हो गया। वह बादशाह को बहुत पसन्द आया
बल्कि साऊल को इतना प्यारा लगा कि उसे अपना
सिलाहबर्दार बना लिया। 22 साऊल ने यस्सी को
इत्तिला भेजी, “दाऊद मुझे बहुत पसन्द आया है,
इस लिए उसे मुस्तक़िल तौर पर मेरी ख़िदमत करने
की इजाज़त दें।” 23 और जब भी बुरी रूह साऊल
पर आती तो दाऊद अपना सरोद बजाने लगता। तब
साऊल को सुकून मिलता और बुरी रूह उस पर से
दूर हो जाती।

जाती जालूत

17 1 एक दिन फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौज को
यहूदाह के शहर सोका के क़रीब जमा
किया। वह इफ़स-दम्मीम में ख़ैमाज़न हुए जो सोका
और अज़ीक़ा के दरमियान है। 2 जवाब में साऊल
ने अपनी फ़ौज को बुला कर वादी-ए-ऐला में जमा
किया। वहाँ इस्राईल के मर्द जंग के लिए तर्तीब से
खड़े हुए। 3 यूँ फ़िलिस्ती एक पहाड़ी पर खड़े थे और
इस्राईली दूसरी पहाड़ी पर। उन के बीच में वादी थी।

4 फिर फ़िलिस्ती सफ़ों से जात शहर का पहलवान
निकल कर इस्राईलियों के सामने खड़ा हुआ। उस
का नाम जालूत था और वह 9 फ़ुट से ज़्यादा लम्बा
था। 5 उस ने हिफ़ाज़त के लिए पीतल की कई चीज़ें
पहन रखी थीं : सर पर ख़ोद, धड़ पर ज़िराबक्तर जो
57 किलोग्राम वज़नी था 6 और पिंडलियों पर बक्तर।
कंधों पर पीतल की शम्शीर लटकी हुई थी। 7 जो नेज़ा
वह पकड़ कर चल रहा था उस का दस्ता खड्डी के
शहतीर जैसा मोटा और लम्बा था, और उस के लोहे
की नोक का वज़न 7 किलोग्राम से ज़्यादा था। जालूत
के आगे आगे एक आदमी उस की ढाल उठाए चल
रहा था।

8 जालूत इस्राईली सफ़ों के सामने रुक कर गरजा,
“तुम सब क्यूँ लड़ने के लिए सफ़आरा हो गए हो?
क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं हूँ जबकि तुम सिर्फ़ साऊल के
नौकर-चाकर हो? चलो, एक आदमी को चुन कर उसे
यहाँ नीचे मेरे पास भेज दो। 9 अगर वह मुझ से लड़
सके और मुझे मार दे तो हम तुम्हारे ग़ुलाम बन जाएंगे।
लेकिन अगर मैं उस पर ग़ालिब आ कर उसे मार डालूँ
तो तुम हमारे ग़ुलाम बन जाओगे। 10 आज मैं इस्राईली
सफ़ों की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि
मुझे एक आदमी दो जो मेरे साथ लड़े।” 11 जालूत
की यह बातें सुन कर साऊल और तमाम इस्राईली
घबरा गए, और उन पर दह्शत तारी हो गई।

दाऊद भाइयों से मिलने के लिए फ़ौज के पास जाता है

12 उस वक़्त दाऊद का बाप यस्सी काफ़ी बूढ़ा हो
चुका था। उस के कुल 8 बेटे थे, और वह इफ़्राता के
इलाक़े के बैत-लहम में रहता था। 13 लेकिन उस के
तीन सब से बड़े बेटे फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए
साऊल की फ़ौज में भर्ती हो गए थे। सब से बड़े का
नाम इलियाब, दूसरे का अबीनदाब और तीसरे का
सम्मा था। 14–15 दाऊद तो सब से छोटा भाई था।
वह दूसरों की तरह पूरा वक़्त साऊल के पास न
गुज़ार सका, क्यूँकि उसे बाप की भेड़-बकरियों को
सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई थी। इस लिए वह
आता जाता रहा। चुनाँचे वह मौजूद नहीं था 16 जब
जालूत 40 दिन सुब्ह-ओ-शाम इस्राईलियों की सफ़ों
के सामने खड़े हो कर उन्हें चैलेंज करता रहा।

17 एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, “बेटा, अपने
भाइयों के पास कैम्प में जा कर उन का पता करो।
भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और यह दस
रोटियाँ अपने साथ ले कर जल्दी जल्दी उधर पहुँच
जाओ। 18 पनीर की यह दस टिक्कियाँ उन के कप्तान
को दे देना। भाइयों का हाल मालूम करके उन की
कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि मुझे तसल्ली हो
जाए कि वह ठीक हैं। 19 वह वादी-ए-ऐला में साऊल
और इस्राईली फ़ौज के साथ फ़िलिस्तियों से लड़
रहे हैं।” 20 अगले दिन सुब्ह-सवेरे दाऊद ने रेवड़
को किसी और के सपुर्द करके सामान उठाया और
यस्सी की हिदायत के मुताबिक़ चला गया। जब वह
कैम्प के पास पहुँच गया तो इस्राईली फ़ौजी नारे लगा
लगा कर मैदान-ए-जंग के लिए निकल रहे थे। 21 वह
लड़ने के लिए तर्तीब से खड़े हो गए, और दूसरी
तरफ़ फ़िलिस्ती सफ़ें भी तय्यार हुईं। 22 यह देख कर
दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़ दीं
जो लश्कर के सामान की निगरानी कर रहा था, फिर
भाग कर मैदान-ए-जंग में भाइयों से मिलने चला गया।

वह अभी उन का हाल पूछ ही रहा था 23 कि जाती
जालूत मामूल के मुताबिक़ फ़िलिस्तियों की सफ़ों
से निकल कर इस्राईलियों के सामने वही तन्ज़ की
बातें बकने लगा। दाऊद ने भी उस की बातें सुनीं।
24 जालूत को देखते ही इस्राईलियों के रोंगटे खड़े हो
गए, और वह भाग कर 25 आपस में कहने लगे, “क्या
आप ने इस आदमी को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए देखा?
सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी करके हमें
चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान किया है कि जो
शख़्स इसे मार दे उसे बड़ा अज्र मिलेगा। शहज़ादी
से उस की शादी होगी, और आइन्दा उस के पाप के
ख़ानदान को टैक्स नहीं देना पड़ेगा।”

26 दाऊद ने साथ वाले फ़ौजियों से पूछा, “क्या कह
रहे हैं? उस आदमी को क्या इनआम मिलेगा जो इस

फ़िलिस्ती को मार कर हमारी क़ौम की रुस्वाई दूर करेगा? यह नामख़्तून फ़िलिस्ती कौन है कि ज़िन्दा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज करे!”
27 लोगों ने दुबारा दाऊद को बताया कि बादशाह उस
आदमी को क्या देगा जो जालूत को मार डालेगा।
28 जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद की
बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और वह उसे झिड़कने
लगा, “तू क्यूँ आया है? बयाबान में अपनी चन्द एक
भेड़-बकरियों को किस के पास छोड़ आया है? मैं
तेरी शोख़ी और दिल की शरारत ख़ूब जानता हूँ। तू
सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने आया है!” 29 दाऊद ने
पूछा, “अब मुझ से क्या ग़लती हुई? मैं ने तो सिर्फ़
सवाल पूछा।” 30 वह उस से मुड़ कर किसी और के
पास गया और वही बात पूछने लगा। वही जवाब
मिला।

हथियार का चुनाओ

31 दाऊद की यह बातें सुन कर किसी ने साऊल को
इत्तिला दी। साऊल ने उसे फ़ौरन बुलाया। 32 दाऊद
ने बादशाह से कहा, “किसी को इस फ़िलिस्ती
की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए। मैं उस
से लड़ूँगा।” 33 साऊल बोला, “आप? आप जैसा
लड़का किस तरह उस का मुक़ाबला कर सकता
है? आप तो अभी बच्चे से हो जबकि वह तजरिबाकार
जंगजू है जो जवानी से हथियार इस्तेमाल करता आया
है।”
34 लेकिन दाऊद ने इसरार किया, “मैं अपने बाप
की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ। जब कभी
कोई शेरबबर या रीछ रेवड़ का जानवर छीन कर
भाग जाता 35 तो मैं उस के पीछे जाता और उसे मार
मार कर भेड़ को उस के मुँह से छुड़ा लेता था। अगर
शेर या रीछ जवाब में मुझ पर हम्ला करता तो मैं उस के
सर के बालों को पकड़ कर उसे मार देता था। 36 इस
तरह आप के ख़ादिम ने कई शेरों और रीछों को
मार डाला है। यह नामख़्तून भी उन की तरह हलाक
हो जाएगा, क्यूँकि उस ने ज़िन्दा ख़ुदा की फ़ौज की
बदनामी करके उसे चैलेंज किया है। 37 जिस रब ने
मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे
इस फ़िलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।”
साऊल बोला, “ठीक है, जाएँ और रब आप के
साथ हो।” 38 उस ने दाऊद को अपना ज़िराबक्तर और
पीतल का ख़ोद पहनाया। 39 फिर दाऊद ने साऊल
की तलवार बांध कर चलने की कोशिश की। लेकिन
उसे बहुत मुश्किल लग रहा था। उस ने साऊल से
कहा, “मैं यह चीज़ें पहन कर नहीं लड़ सकता,
क्यूँकि मैं इन का आदी नहीं हूँ।” उन्हें उतार कर
40 उस ने नदी से पाँच चिकने चिकने पत्थर चुन कर
उन्हें अपनी चरवाहे की थैली में डाल लिया। फिर
चरवाहे की अपनी लाठी और फ़लाख़न पकड़ कर
वह फ़िलिस्ती से लड़ने के लिए इस्राईली सफ़ों से
निकला।

दाऊद की फ़त्ह

41 जालूत दाऊद की जानिब बढ़ा। ढाल को उठाने
वाला उस के आगे आगे चल रहा था। 42 उस ने
हिक़ारतआमेज़ नज़रों से दाऊद का जाइज़ा लिया,
क्यूँकि वह गोरा और ख़ूबसूरत नौजवान था। 43 वह
गरजा, “क्या मैं कुत्ता हूँ कि तू लाठी ले कर मेरा
मुक़ाबला करने आया है?” अपने देवताओं के नाम
ले कर वह दाऊद पर लानत भेज कर 44 चिल्लाया,
“इधर आ ताकि मैं तेरा गोश्त परिन्दों और जंगली
जानवरों को खिलाऊँ।”
45 दाऊद ने जवाब दिया, “आप तलवार, नेज़ा और
शम्शीर ले कर मेरा मुक़ाबला करने आए हैं, लेकिन
मैं रब्ब-उल-अफ़्वाज का नाम ले कर आता हूँ, उसी
का नाम जो इस्राईली फ़ौज का ख़ुदा है। क्यूँकि आप
ने उसी को चैलेंज किया है। 46 आज ही रब आप को
मेरे हाथ में कर देगा, और मैं आप का सर क़लम
कर दूँगा। इसी दिन मैं फ़िलिस्ती फ़ौजियों की लाशें
परिन्दों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब
तमाम दुनिया जान लेगी कि इस्राईल का ख़ुदा है।
47 सब जो यहाँ मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें

बचाने के लिए तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती।
वह ख़ुद ही जंग कर रहा है, और वही आप को हमारे
क़ब्ज़े में कर देगा।”
48 जालूत दाऊद पर हम्ला करने के लिए आगे बढ़ा,
और दाऊद भी उस की तरफ़ दौड़ा। 49 चलते चलते
उस ने अपनी थैली से पत्थर निकाला और उसे
फ़लाख़न में रख कर ज़ोर से चलाया। पत्थर उड़ता
उड़ता फ़िलिस्ती के माथे पर जा लगा। वह खोपड़ी
में धँस गया, और पहलवान मुँह के बल गिर गया।
50–51 यूँ दाऊद फ़लाख़न और पत्थर से फ़िलिस्ती पर
ग़ालिब आया। उस के हाथ में तलवार नहीं थी। तब
उस ने जालूत की तरफ़ दौड़ कर उसी की तलवार
मियान से खैंच कर फ़िलिस्ती का सर काट डाला।
जब फ़िलिस्तियों ने देखा कि हमारा पहलवान
हलाक हो गया है तो वह भाग निकले। 52 इस्राईल
और यहूदाह के मर्द फ़त्ह के नारे लगा लगा कर
फ़िलिस्तियों पर टूट पड़े। उन का ताक़्क़ुब करते
करते वह जात और अक़्क़ून के दरवाज़ों तक पहुँच
गए। जो रास्ता शारैम से जात और अक़्क़ून तक जाता
है उस पर हर तरफ़ फ़िलिस्तियों की लाशें नज़र आईं।
53 फिर इस्राईलियों ने वापस आ कर फ़िलिस्तियों की
छोड़ी हुई लश्करगाह को लूट लिया।
54 बाद में दाऊद जालूत का सर यरूशलम को ले
आया। फ़िलिस्ती के हथियार उस ने अपने ख़ैमे में
रख लिए।

साऊल दाऊद के ख़ानदान का पता करता है

55 जब दाऊद जालूत से लड़ने गया तो साऊल
ने फ़ौज के कमाँडर अबिनैर से पूछा, “इस जवान
आदमी का बाप कौन है?” अबिनैर ने जवाब दिया,
“आप की हयात की क़सम, मुझे मालूम नहीं।”
56 बादशाह बोला, “फिर पता करें!” 57 जब दाऊद
फ़िलिस्ती का सर क़लम करके वापस आया तो
अबिनैर उसे बादशाह के पास लाया। दाऊद अभी
जालूत का सर उठाए फिर रहा था। 58 साऊल ने पूछा,
“आप का बाप कौन है?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं
बैत-लहम के रहने वाले आप के ख़ादिम यस्सी का
बेटा हूँ।”

दाऊद और यूनतन की दोस्ती

18 1 इस गुफ़्तगु के बाद दाऊद की मुलाक़ात
बादशाह के बेटे यूनतन से हुई। उन में फ़ौरन
गहरी दोस्ती पैदा हो गई, और यूनतन दाऊद को
अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखने लगा। 2 उस दिन
से साऊल ने दाऊद को अपने दरबार में रख लिया
और उसे बाप के घर वापस जाने न दिया। 3 और
यूनतन ने दाऊद से अह्द बांधा, क्यूँकि वह दाऊद
को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था। 4 अह्द
की तस्दीक़ के लिए यूनतन ने अपना चोग़ा उतार
कर उसे अपने ज़िराबक्तर, तलवार, कमान और पेटी
समेत दाऊद को दे दिया।
5 जहाँ भी साऊल ने दाऊद को लड़ने के लिए भेजा
वहाँ वह कामयाब हुआ। यह देख कर साऊल ने उसे
फ़ौज का बड़ा अफ़्सर बना दिया। यह बात अवाम
और साऊल के अफ़्सरों को पसन्द आई।

साऊल दाऊद से हसद करता है

6 जब दाऊद फ़िलिस्तियों को शिकस्त देने से वापस
आया तो तमाम शहरों से औरतें निकल कर साऊल
बादशाह से मिलने आईं। दफ़ और साज़ बजाते हुए
वह ख़ुशी के गीत गा गा कर नाचने लगीं। 7 और
नाचते नाचते वह गाती रहीं, “साऊल ने तो हज़ार
हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार।”
8 साऊल बड़े ग़ुस्से में आ गया, क्यूँकि औरतों का
गीत उसे निहायत बुरा लगा। उस ने सोचा, “उन की
नज़र में दाऊद ने दस हज़ार हलाक किए जबकि मैं
ने सिर्फ़ हज़ार। अब सिर्फ़ यह बात रह गई है कि उसे
बादशाह मुक़र्रर किया जाए।” 9 उस वक़्त से साऊल
दाऊद को शक की नज़र से देखने लगा। 10–11 अगले
दिन अल्लाह ने दुबारा साऊल पर बुरी रूह आने दी,
और वह घर के अन्दर वज्द की हालत में आ गया।
दाऊद मामूल के मुताबिक़ साज़ बजाने लगा ताकि

बादशाह को सुकून मिले। साऊल के हाथ में नेज़ा था। अचानक उस ने उसे फैंक कर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन दाऊद एक तरफ़ हट कर बच निकला। एक और दफ़ा ऐसा हुआ, लेकिन दाऊद फिर बच गया।

12 यह देख कर साऊल दाऊद से डरने लगा, क्यूँकि उस ने जान लिया कि रब मुझे छोड़ कर दाऊद का हामी बन गया है। 13 आख़िरकार उस ने दाऊद को दरबार से दूर करके हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर कर दिया। इन आदमियों के साथ दाऊद मुख़्तलिफ़ जंगों के लिए निकलता रहा। 14 और जो कुछ भी वह करता उस में कामयाब रहता, क्यूँकि रब उस के साथ था। 15 जब साऊल ने देखा कि दाऊद को कितनी ज़्यादा कामयाबी हुई है तो वह उस से मज़ीद डर गया। 16 लेकिन इस्राईल और यहूदाह के बाक़ी लोग दाऊद से बहुत मुहब्बत रखते थे, क्यूँकि वह हर जंग में निकलते वक़्त से ले कर घर वापस आते वक़्त तक उन के आगे आगे चलता था।

दाऊद साऊल का दामाद बन जाता है

17 एक दिन साऊल ने दाऊद से बात की, “मैं अपनी बड़ी बेटी मीरब का रिश्ता आप के साथ बांधना चाहता हूँ। लेकिन पहले साबित करें कि आप अच्छे फ़ौजी हैं, जो रब की जंगों में ख़ूब हिस्सा ले।” लेकिन दिल ही दिल में साऊल ने सोचा, “ख़ुद तो मैं दाऊद पर हाथ नहीं उठाऊँगा, बेहतर है कि वह फ़िलिस्तियों के हाथों मारा जाए।” 18 लेकिन दाऊद ने एतिराज़ किया, “मैं कौन हूँ कि बादशाह का दामाद बनूँ? इस्राईल में तो मेरे ख़ानदान और आबाई कुंबे की कोई हैसियत नहीं।”

19 तो भी शादी की तय्यारियाँ की गईं। लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो साऊल ने मीरब की शादी एक और आदमी बनाम अद्रीएल महूलाती से करवा दी।

20 इतने में साऊल की छोटी बेटी मीकल दाऊद से मुहब्बत करने लगी। जब साऊल को इस की ख़बर मिली तो वह ख़ुश हुआ। 21 उस ने सोचा, “अब मैं बेटी का रिश्ता उस के साथ बांध कर उसे यूँ फंसा दूँगा कि वह फ़िलिस्तियों से लड़ते लड़ते मर जाएगा।” दाऊद से उस ने कहा, “आज आप को मेरा दामाद बनने का दुबारा मौक़ा मिलेगा।”

22 फिर उस ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया कि वह चुपके से दाऊद को बताएँ, “सुनें, आप बादशाह को पसन्द हैं, और उस के तमाम अफ़सर भी आप को प्यार करते हैं। आप ज़रूर बादशाह की पेशकश क़बूल करके उस का दामाद बन जाएँ।” 23 लेकिन दाऊद ने एतिराज़ किया, “क्या आप की दानिस्त में बादशाह का दामाद बनना छोटी सी बात है? मैं तो ग़रीब आदमी हूँ, और मेरी कोई हैसियत नहीं।”

24 मुलाज़िमों ने बादशाह के पास वापस जा कर उसे दाऊद के अल्फ़ाज़ बताए। 25 साऊल ने उन्हें फिर दाऊद के पास भेज कर उसे इत्तिला दी, “बादशाह महर के लिए पैसे नहीं माँगता बल्कि यह कि आप उन के दुश्मनों से बदला ले कर 100 फ़िलिस्तियों को क़त्ल कर दें। सबूत के तौर पर आप को उन का ख़तना करके जिल्द का कटा हुआ हिस्सा बादशाह के पास लाना पड़ेगा।” शर्त का मक़सद यह था कि दाऊद फ़िलिस्तियों के हाथों मारा जाए।

26 जब दाऊद को यह ख़बर मिली तो उसे साऊल की पेशकश पसन्द आई। मुक़र्ररा वक़्त से पहले 27 उस ने अपने आदमियों के साथ निकल कर 200 फ़िलिस्तियों को मार दिया। लाशों का ख़तना करके वह जिल्द के कुल 200 टुकड़े बादशाह के पास लाया ताकि बादशाह का दामाद बने। यह देख कर साऊल ने उस की शादी मीकल से करवा दी।

28 साऊल को मानना पड़ा कि रब दाऊद के साथ है और कि मेरी बेटी मीकल उसे बहुत प्यार करती है। 29 तब वह दाऊद से और भी डरने लगा। इस के बाद वह जीते जी दाऊद का दुश्मन बना रहा। 30 उन दिनों में फ़िलिस्ती सरदार इस्राईल से लड़ते रहे। लेकिन जब भी वह जंग के लिए निकले तो दाऊद साऊल

के बाक़ी अफ़सरों की निस्बत ज़्यादा कामयाब होता था। नतीजे में उस की शुहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

यूनतन दाऊद की सिफ़ारिश करता है

19 1 अब साऊल ने अपने बेटे यूनतन और तमाम मुलाज़िमों को साफ़ बताया कि दाऊद को हलाक करना है। लेकिन दाऊद यूनतन को बहुत प्यारा था, 2 इस लिए उस ने उसे आगाह किया, “मेरा बाप आप को मार देने के मवाक़े ढूँड रहा है। कल सुब्ह ख़बरदार रहें। कहीं छुप कर मेरा इन्तिज़ार करें। 3 फिर मैं अपने बाप के साथ शहर से निकल कर आप के क़रीब से गुज़रूँगा। वहाँ मैं उन से आप का मुआमला छेड़ कर मालूम करूँगा कि वह क्या इरादा रखते हैं। जो कुछ भी वह कहेंगे मैं आप को बता दूँगा।”

4 अगली सुब्ह जब यूनतन ने अपने बाप से बात की तो उस ने दाऊद की सिफ़ारिश करके कहा, “बादशाह अपने ख़ादिम दाऊद का गुनाह न करें, क्यूँकि उस ने आप का गुनाह नहीं किया बल्कि हमेशा आप के लिए फ़ाइदामन्द रहा है। 5 उसी ने अपनी जान को ख़तरे में डाल कर फ़िलिस्ती को मार डाला, और रब ने उस के वसीले से तमाम इस्राईल को बड़ी नजात बख़्शी। उस वक़्त आप ख़ुद भी सब कुछ देख कर ख़ुश हुए। तो फिर आप गुनाह करके उस जैसे बेक़ुसूर आदमी को क्यूँ बिलावजह मरवाना चाहते हैं?”

6 यूनतन की बातें सुन कर साऊल मान गया। उस ने वादा किया, “रब की हयात की क़सम, दाऊद को मारा नहीं जाएगा।” 7 बाद में यूनतन ने दाऊद को बुला कर उसे सब कुछ बताया, फिर उसे साऊल के पास लाया। तब दाऊद पहले की तरह बादशाह की ख़िदमत करने लगा।

साऊल का दाऊद पर दूसरा हम्ला

8 एक बार फिर जंग छिड़ गई, और दाऊद निकल कर फ़िलिस्तियों से लड़ा। इस दफ़ा भी उस ने उन्हें यूँ शिकस्त दी कि वह फ़रार हो गए। 9 लेकिन एक दिन जब साऊल अपना नेज़ा पकड़े घर में बैठा था तो अल्लाह की भेजी हुई बुरी रूह उस पर ग़ालिब आई। उस वक़्त दाऊद सरोद बजा रहा था। 10 अचानक साऊल ने नेज़े को फैंक कर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन वह एक तरफ़ हट गया और नेज़ा उस के क़रीब से गुज़र कर दीवार में धँस गया। दाऊद भाग गया और उस रात साऊल के हाथ से बच गया।

11 साऊल ने फ़ौरन अपने आदमियों को दाऊद के घर के पास भेज दिया ताकि वह मकान की पहरादारी करके दाऊद को सुब्ह के वक़्त क़त्ल कर दें। लेकिन दाऊद की बीवी मीकल ने उस को आगाह कर दिया, “आज रात को ही यहाँ से चले जाएँ, वर्ना आप नहीं बचेंगे बल्कि कल सुब्ह ही मार दिए जाएंगे।” 12 चुनाँचे दाऊद घर की खिड़की में से निकला, और मीकल ने उतरने में उस की मदद की। तब दाऊद भाग कर बच गया।

13 मीकल ने दाऊद की चारपाई पर बुत रख कर उस के सर पर बकरियों के बाल लगा दिए और बाक़ी हिस्से पर कम्बल बिछा दिया। 14 जब साऊल के आदमी दाऊद को पकड़ने के लिए आए तो मीकल ने कहा, “वह बीमार है।” 15 फ़ौजियों ने साऊल को इत्तिला दी तो उस ने उन्हें हुक्म दिया, “उसे चारपाई समेत ही मेरे पास ले आओ ताकि उसे मार दूँ।”

16 जब वह दाऊद को ले जाने के लिए आए तो क्या देखते हैं कि उस की चारपाई पर बुत पड़ा है जिस के सर पर बकरियों के बाल लगे हैं। 17 साऊल ने अपनी बेटी को बहुत झिड़का, “तू ने मुझे इस तरह धोका दे कर मेरे दुश्मन की फ़रार होने में मदद क्यूँ की? तेरी ही वजह से वह बच गया।” मीकल ने जवाब दिया, “उस ने मुझे धमकी दी कि मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा अगर तू फ़रार होने में मेरी मदद न करे।”

दाऊद रामा में समूएल के पास

18 इस तरह दाऊद बच निकला। वह रामा में
समूएल के पास फ़रार हुआ और उसे सब कुछ
सुनाया जो साऊल ने उस के साथ किया था। फिर
दोनों मिल कर नयोत चले गए। वहाँ वह ठहरे।
19 साऊल को इत्तिला दी गई, “दाऊद रामा के नयोत
में ठहरा हुआ है।” 20 उस ने फ़ौरन अपने आदमियों
को उसे पकड़ने के लिए भेज दिया। जब वह पहुँचे तो
देखा कि नबियों का पूरा गुरोह वहाँ नबुव्वत कर रहा
है, और समूएल ख़ुद उन की राहनुमाई कर रहा है।
उन्हें देखते ही अल्लाह का रूह साऊल के आदमियों
पर नाज़िल हुआ, और वह भी नबुव्वत करने लगे।
21 साऊल को इस बात की ख़बर मिली तो उस ने
मज़ीद आदमियों को रामा भेज दिया। लेकिन वह भी
वहाँ पहुँचते ही नबुव्वत करने लगे। साऊल ने तीसरी
बार आदमियों को भेज दिया, लेकिन यही कुछ उन
के साथ भी हुआ।

22 आख़िर में साऊल ख़ुद रामा के लिए रवाना
हुआ। चलते चलते वह सीकू के बड़े हौज़ पर पहुँचा।
वहाँ उस ने लोगों से पूछा, “दाऊद और समूएल कहाँ
हैं?” उन्हों ने जवाब दिया, “रामा की आबादी नयोत
में।”

23 साऊल अभी नयोत नहीं पहुँचा था कि अल्लाह
का रूह उस पर भी नाज़िल हुआ, और वह नबुव्वत
करते करते नयोत पहुँच गया। 24 वहाँ वह अपने
कपड़ों को उतार कर समूएल के सामने नबुव्वत
करता रहा। नबुव्वत करते करते वह ज़मीन पर लेट
गया और वहाँ पूरे दिन और पूरी रात पड़ा रहा। इसी
वजह से यह क़ौल मश्हूर हुआ, “क्या साऊल को भी
नबियों में शुमार किया जाता है?”

दाऊद और यूनतन अह्द बांधते हैं

20 1 अब दाऊद रामा के नयोत से भी भाग
गया। चुपके से वह यूनतन के पास आया
और पूछा, “मुझ से क्या ग़लती हुई है? मेरा क्या
क़ुसूर है? मुझ से आप के बाप के ख़िलाफ़ क्या जुर्म
सरज़द हुआ है कि वह मुझे क़त्ल करना चाहते हैं?”

2 यूनतन ने एतिराज़ किया, “यह कभी नहीं हो
सकता! आप नहीं मरेंगे। मेरा बाप तो मुझे हमेशा
सब कुछ बता देता है, ख़्वाह बात बड़ी हो या छोटी।
तो फिर वह ऐसा कोई मन्सूबा मुझ से क्यूँ छुपाए?
आप की यह बात सरासर ग़लत है।”

3 लेकिन दाऊद ने क़सम खा कर इसरार किया,
“ज़ाहिर है कि आप को इस के बारे में इल्म नहीं।
आप के बाप को साफ़ मालूम है कि मैं आप को
पसन्द हूँ। ‘वह तो सोचते होंगे, यूनतन को इस बात
का इल्म न हो, वर्ना वह दुख महसूस करेगा।’ लेकिन
रब की और आप की जान की क़सम, मैं बड़े ख़तरे
में हूँ, और मौत से बचना मुश्किल ही है।”

4 यूनतन ने कहा, “मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ
तो मैं उसे करूँगा।” 5 तब दाऊद ने अपना मन्सूबा
पेश किया। “कल नए चाँद की ईद है, और बादशाह
तवक़्क़ो करेंगे कि मैं उन की ज़ियाफ़त में शरीक हूँ।
लेकिन इस मर्तबा मुझे परसों शाम तक बाहर खुले
मैदान में छुपा रहने की इजाज़त दें। 6 अगर आप के
बाप मेरा पता करें तो उन्हें कह देना, ‘दाऊद ने बड़े
ज़ोर से मुझ से अपने शहर बैत-लहम को जाने की
इजाज़त माँगी। उसे बड़ी जल्दी थी, क्यूँकि उस का
पूरा ख़ानदान अपनी सालाना क़ुर्बानी चढ़ाना चाहता
है।’ 7 अगर आप के बाप जवाब दें कि ठीक है तो
फिर मालूम होगा कि ख़तरा टल गया है। लेकिन
अगर वह बड़े ग़ुस्से में आ जाएँ तो यक़ीन जानें कि
वह मुझे नुक़्सान पहुँचाने का इरादा रखते हैं। 8 बराह-
ए-करम मुझ पर मेहरबानी करके याद रखें कि आप
ने रब के सामने अपने ख़ादिम से अह्द बांधा है।
अगर मैं वाक़ई क़ुसूरवार ठहरूँ तो आप ख़ुद मुझे
मार डालें। लेकिन किसी सूरत में भी मुझे अपने बाप
के हवाले न करें।”

9 यूनतन ने जवाब दिया, “फ़िक्र न करें, मैं कभी
ऐसा नहीं करूँगा। जब भी मुझे इशारा मिल जाए कि
मेरा बाप आप को क़त्ल करने का इरादा रखता है

तो मैं ज़रूर आप को फ़ौरन इत्तिला दूँगा।” 10 दाऊद
ने पूछा, “अगर आप के बाप ग़ुस्से में जवाब दें तो
कौन मुझे ख़बर पहुँचाएगा?”
11 यूनतन ने जवाब में कहा, “आएँ हम निकल कर
खुले मैदान में जाएँ।” दोनों निकले 12 तो यूनतन ने
दाऊद से कहा, “रब इस्राईल के ख़ुदा की क़सम,
परसों इस वक़्त तक मैं अपने बाप से बात मालूम
कर लूँगा। अगर वह आप के बारे में अच्छी सोच
रखे और मैं आप को इत्तिला न दूँ 13 तो रब मुझे
सख़्त सज़ा दे। लेकिन अगर मुझे पता चले कि मेरा
बाप आप को मार देने पर तुला हुआ है तो मैं आप
को इस की इत्तिला भी दूँगा। इस सूरत में मैं आप
को नहीं रोकूँगा बल्कि आप को सलामती से जाने
दूँगा। रब उसी तरह आप के साथ हो जिस तरह वह
पहले मेरे बाप के साथ था। 14 लेकिन दरख़्वास्त है
कि मेरे जीते जी मुझ पर रब की सी मेहरबानी करें
ताकि मैं मर न जाऊँ। 15 मेरे ख़ानदान पर भी हमेशा
तक मेहरबानी करें। वह कभी भी आप की मेहरबानी
से महरूम न हो जाए, उस वक़्त भी नहीं जब रब ने
आप के तमाम दुश्मनों को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा
दिया होगा।”
16 चुनाँचे यूनतन ने दाऊद से अह्द बांध कर कहा,
“रब दाऊद के दुश्मनों से बदला ले।” 17 वह बोला,
“क़सम खाएँ कि आप यह अह्द उतने पुख़्ता इरादे
से क़ाइम रखेंगे जितनी आप मुझ से मुहब्बत रखते
हैं।” क्यूँकि यूनतन दाऊद को अपनी जान के बराबर
अज़ीज़ रखता था।
18 फिर यूनतन ने अपना मन्सूबा पेश किया। “कल
तो नए चाँद की ईद है। जल्दी से पता चलेगा कि
आप नहीं आए, क्यूँकि आप की कुर्सी ख़ाली रहेगी।
19 इस लिए परसों शाम के वक़्त खुले मैदान में वहाँ
चले जाएँ जहाँ पहले छुप गए थे। पत्थर के ढेर के
क़रीब बैठ जाएँ। 20 उस वक़्त मैं घर से निकल कर
तीन तीर पत्थर के ढेर की तरफ़ चलाऊँगा गोया में
किसी चीज़ को निशाना बना कर मश्क़ कर रहा हूँ।
21 फिर मैं लड़के को तीरों को ले आने के लिए भेज
दूँगा। अगर मैं उसे बता दूँ, ‘तीर उरली तरफ़ पड़े हैं,
उन्हें जा कर ले आओ’ तो आप ख़ौफ़ खाए बग़ैर
छुपने की जगह से निकल कर मेरे पास आ सकेंगे।
रब की हयात की क़सम, इस सूरत में कोई ख़तरा
नहीं होगा। 22 लेकिन अगर मैं लड़के को बता दूँ,
‘तीर परली तरफ़ पड़े हैं’ तो आप को फ़ौरन हिज्रत
करनी पड़ेगी। इस सूरत में रब ख़ुद आप को यहाँ से
भेज रहा होगा। 23 लेकिन जो बातें हम ने आज आपस
में की हैं रब ख़ुद हमेशा तक इन का गवाह रहे।”

साऊल की दाऊद से अलानिया दुश्मनी

24 चुनाँचे दाऊद खुले मैदान में छुप गया। नए चाँद
की ईद आई तो बादशाह ज़ियाफ़त के लिए बैठ गया।
25 मामूल के मुताबिक़ वह दीवार के पास बैठ गया।
अबिनैर उस के साथ बैठा था और यूनतन उस के
मुक़ाबिल। लेकिन दाऊद की जगह ख़ाली रही।
26 उस दिन साऊल ने बात न छेड़ी, क्यूँकि उस ने
सोचा, “दाऊद किसी वजह से नापाक हो गया होगा,
इस लिए नहीं आया।”
27 लेकिन अगले दिन जब दाऊद की जगह फिर
ख़ाली रही तो साऊल ने यूनतन से पूछा, “यस्सी का
बेटा न तो कल, न आज ज़ियाफ़त में शरीक हुआ है।
क्या वजह है?” 28 यूनतन ने जवाब दिया, “दाऊद ने
बड़े ज़ोर से मुझ से बैत-लहम जाने की इजाज़त माँगी।
29 उस ने कहा, ‘मेहरबानी करके मुझे जाने दें, क्यूँकि
मेरा ख़ानदान एक ख़ास क़ुर्बानी चढ़ा रहा है, और मेरे
भाई ने मुझे आने का हुक्म दिया है। अगर आप को
मन्ज़ूर हो तो बराह-ए-करम मुझे अपने भाइयों के पास
जाने की इजाज़त दें।’ यही वजह है कि वह बादशाह
की ज़ियाफ़त में शरीक नहीं हुआ।”
30 यह सुन कर साऊल आपे से बाहर हो गया। वह
गरजा, “हरामज़ादे! मुझे ख़ूब मालूम है कि तू ने दाऊद
का साथ दिया है। शर्म की बात है, तेरे लिए और तेरी
माँ के लिए। 31 जब तक यस्सी का बेटा ज़िन्दा है तब
तक न तू और न तेरी बादशाहत क़ाइम रहेगी। अब
जा, उसे ले आ, क्यूँकि उसे मरना ही है।”

32 यूनतन ने कहा, “क्यूँ? उस ने क्या किया जो
सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है?” 33 जवाब में साऊल ने
अपना नेज़ा ज़ोर से यूनतन की तरफ़ फैंक दिया ताकि
उसे मार डाले। यह देख कर यूनतन ने जान लिया
कि साऊल दाऊद को क़त्ल करने का पुख़्ता इरादा
रखता है। 34 बड़े ग़ुस्से के आलम में वह खड़ा हुआ
और चला गया। उस दिन उस ने खाना खाने से इन्कार
किया। उसे बहुत दुख था कि मेरा बाप दाऊद की
इतनी बेइज़्ज़ती कर रहा है।

35 अगले दिन यूनतन सुब्ह के वक़्त घर से निकल
कर खुले मैदान में उस जगह आ गया जहाँ दाऊद
से मिलना था। एक लड़का उस के साथ था। 36 उस
ने लड़के को हुक्म दिया, “चलो, उस तरफ़ भागना
शुरू करो जिस तरफ़ मैं तीरों को चलाऊँगा ताकि तुझे
मालूम हो कि वह कहाँ हैं।” चुनाँचे लड़का दौड़ने
लगा, और यूनतन ने तीर इतने ज़ोर से चलाया कि
वह उस से आगे कहीं दूर जा गिरा। 37 जब लड़का
तीर के क़रीब पहुँच गया तो यूनतन ने आवाज़ दी,
“तीर परली तरफ़ है। 38 जल्दी करो, भाग कर आगे
निकलो और न रुको!” फिर लड़का तीर को उठा
कर अपने मालिक के पास वापस आ गया। 39 वह
नहीं जानता था कि इस के पीछे क्या मक़्सद है। सिर्फ़
यूनतन और दाऊद को इल्म था।

40 फिर यूनतन ने कमान और तीरों को लड़के के
सपुर्द करके उसे हुक्म दिया, “जाओ, सामान ले कर
शहर में वापस चले जाओ।” 41 लड़का चला गया तो
दाऊद पत्थर के ढेर के जुनूब से निकल कर यूनतन के
पास आया। तीन मर्तबा वह यूनतन के सामने मुँह के
बल झुक गया। एक दूसरे को चूम कर दोनों ख़ूब रोए,
ख़ासकर दाऊद। 42 फिर यूनतन बोला, “सलामती
से जाएँ! और कभी वह वादे न भूलें जो हम ने रब
की क़सम खा कर एक दूसरे से किए हैं। यह अह्द
आप के और मेरे और आप की और मेरी औलाद के
दरमियान हमेशा क़ाइम रहे। रब ख़ुद हमारा गवाह
है।”

फिर दाऊद रवाना हुआ, और यूनतन शहर को
वापस चला गया।

दाऊद नोब में अख़ीमलिक के पास ठहरता है

21 1 दाऊद नोब में अख़ीमलिक इमाम के
पास गया। अख़ीमलिक काँपते हुए उस से
मिलने के लिए आया और पूछा, “आप अकेले क्यूँ
आए हैं? कोई आप के साथ नहीं।” 2 दाऊद ने जवाब
दिया, “बादशाह ने मुझे एक ख़ास ज़िम्मादारी दी है
जिस का ज़िक्र तक करना मना है। किसी को भी इस
के बारे में जानना नहीं चाहिए। मैं ने अपने आदमियों
को हुक्म दिया है कि फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह पर मेरा
इन्तिज़ार करें। 3 अब मुझे ज़रा बताएँ कि खाने के
लिए क्या मिल सकता है? मुझे पाँच रोटियाँ दे दें, या
जो कुछ भी आप के पास है।”

4 इमाम ने जवाब दिया, “मेरे पास आम रोटी नहीं
है। मैं आप को सिर्फ़ रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटी
दे सकता हूँ। शर्त यह है कि आप के आदमी पिछले
दिनों में औरतों से हमबिसतर न हुए हों।” 5 दाऊद
ने उसे तसल्ली दे कर कहा, “फ़िक्र न करें। पहले की
तरह हमें इस मुहिम्म के दौरान भी औरतों से दूर रहना
पड़ा है। मेरे फ़ौजी आम मुहिम्मों के लिए भी अपने
आप को पाक रखते हैं, तो इस दफ़ा वह कहीं ज़्यादा
पाक-साफ़ हैं।”

6 फिर इमाम ने दाऊद को मख़्सूसशुदा रोटियाँ दीं
यानी वह रोटियाँ जो मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के हुज़ूर
रखी जाती थीं और उसी दिन ताज़ा रोटियों से तब्दील
हुई थीं। 7 उस वक़्त साऊल के चरवाहों का अदोमी
इंचार्ज दोएग वहाँ था। वह किसी मज्बूरी के बाइस
रब के हुज़ूर ठहरा हुआ था। उस की मौजूदगी में
8 दाऊद ने अख़ीमलिक से पूछा, “क्या आप के पास
कोई नेज़ा या तलवार है? मुझे बादशाह की मुहिम्म
के लिए इतनी जल्दी से निकलना पड़ा कि अपनी
तलवार या कोई और हथियार साथ लाने के लिए
फ़ुर्सत न मिली।”

9 अख़ीमलिक ने जवाब दिया, “जी है। वादी-ए-
ऐला में आप के हाथों मारे गए फ़िलिस्ती मर्द जालूत
की तलवार मेरे पास है। वह एक कपड़े में लिपटी
मेरे बालापोश के पीछे पड़ी है। अगर आप उसे अपने
साथ ले जाना चाहें तो ले जाएँ। मेरे पास कोई और
हथियार नहीं है।” दाऊद ने कहा, “इस क़िस्म की
तलवार कहीं और नहीं मिलती। मुझे दे दें।”

दाऊद फ़िलिस्ती बादशाह के पास

10 उसी दिन दाऊद आगे निकला ताकि साऊल से
बच सके। इस्राईल को छोड़ कर वह फ़िलिस्ती शहर
जात के बादशाह अकीस के पास गया। 11 लेकिन
अकीस के मुलाज़िमों ने बादशाह को आगाह किया,
“क्या यह मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं है? इसी
के बारे में इस्राईली नाच कर गीत गाते हैं, ‘साऊल ने
हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार’।”
12 यह सुन कर दाऊद घबरा गया और जात के
बादशाह अकीस से बहुत डरने लगा। 13 अचानक
वह पागल आदमी का रूप भर कर उन के दरमियान
अजीब अजीब हरकतें करने लगा। शहर के दरवाज़े
के पास जा कर उस ने उस पर बेतुके से निशान लगाए
और अपनी दाढ़ी पर राल टपकने दी।
14 यह देख कर अकीस ने अपने मुलाज़िमों को
झिड़का, “तुम इस आदमी को मेरे पास क्यूँ ले आए
हो? तुम ख़ुद देख सकते हो कि यह पागल है। 15 क्या
मेरे पास पागलों की कमी है कि तुम इस को मेरे
सामने ले आए हो ताकि इस तरह की हरकतें करे?
क्या मुझे ऐसे मेहमान की ज़रूरत है?”

अदुल्लाम के ग़ार और मोआब में

22 1 इस तरह दाऊद जात से बच निकला और
अदुल्लाम के ग़ार में छुप गया। जब उस के
भाइयों और बाप के घराने को इस की ख़बर मिली तो
वह बैत-लहम से आ कर वहाँ उस के साथ जा मिले।
2 और लोग भी जल्दी से उस के गिर्द जमा हो गए,
ऐसे जो किसी मुसीबत में फंसे हुए थे या अपना क़र्ज़
अदा नहीं कर सकते थे और ऐसे भी जिन का दिल
तल्ख़ी से भरा हुआ था। होते होते दाऊद तक़रीबन
400 अफ़राद का राहनुमा बन गया।
3 दाऊद अदुल्लाम से रवाना हो कर मुल्क-ए-मोआब
के शहर मिस्फ़ाह चला गया। उस ने मोआबी बादशाह
से गुज़ारिश की, “मेरे माँ-बाप को उस वक़्त तक
यहाँ पनाह दें जब तक मुझे पता न हो कि अल्लाह मेरे
लिए क्या इरादा रखता है।” 4 वह अपने माँ-बाप को
बादशाह के पास ले आया, और वह उतनी देर तक
वहाँ ठहरे जितनी देर दाऊद अपने पहाड़ी क़िले में
रहा।
5 एक दिन जाद नबी ने दाऊद से कहा, “यहाँ
पहाड़ी क़िले में मत रहें बल्कि दुबारा यहूदाह के
इलाक़े में वापस चले जाएँ।” दाऊद उस की सुन
कर हारत के जंगल में जा बसा।

साऊल नोब के इमामों से बदला लेता है

6 साऊल को इत्तिला दी गई कि दाऊद और उस
के आदमी दुबारा यहूदाह में पहुँच गए हैं। उस वक़्त
साऊल अपना नेज़ा पकड़े झाओ के उस दरख़्त के
साय में बैठा था जो जिबिआ की पहाड़ी पर था।
साऊल के इर्दगिर्द उस के मुलाज़िम खड़े थे। 7 वह
पुकार उठा, “बिनयमीन के मर्दो! सुनें, क्या यस्सी
का बेटा आप सब को खेत और अंगूर के बाग़ देगा?
क्या वह फ़ौज में आप को हज़ार हज़ार और सौ सौ
अफ़राद पर मुक़र्रर करेगा? 8 लगता है कि आप इस
की उम्मीद रखते हैं, वर्ना आप यूँ मेरे ख़िलाफ़ साज़िश
न करते। क्यूँकि आप में से किसी ने भी मुझे यह नहीं
बताया कि मेरे अपने बेटे ने इस आदमी के साथ
अह्द बांधा है। आप को मेरी फ़िक्र तक नहीं, वर्ना
मुझे इत्तिला देते कि यूनतन ने मेरे मुलाज़िम दाऊद
को उभारा है कि वह मेरी ताक में बैठ जाए। क्यूँकि
आज तो ऐसा ही हो रहा है।”
9 दोएग अदोमी साऊल के अफ़सरों के साथ वहाँ
खड़ा था। अब वह बोल उठा, “मैं ने यस्सी के बेटे
को देखा है। उस वक़्त वह नोब में अख़ीमलिक बिन

अख़ीतूब से मिलने आया। 10 अख़ीमलिक ने रब से
दरयाफ़्त किया कि दाऊद का अगला क़दम क्या
हो। साथ साथ उस ने उसे सफ़र के लिए खाना और
फ़िलिस्ती मर्द जालूत की तलवार भी दी।”
11 बादशाह ने फ़ौरन अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब
और उस के बाप के पूरे ख़ानदान को बुलाया। सब
नोब में इमाम थे। 12 जब पहुँचे तो साऊल बोला,
“अख़ीतूब के बेटे, सुनें।” अख़ीमलिक ने जवाब
दिया, “जी मेरे आक़ा, हुक्म।” 13 साऊल ने इल्ज़ाम
लगा कर कहा, “आप ने यस्सी के बेटे दाऊद के
साथ मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें क्यूँ की हैं? बताएँ, आप
ने उसे रोटी और तलवार क्यूँ दी? आप ने अल्लाह से
दरयाफ़्त क्यूँ किया कि दाऊद आगे क्या करे? आप
ही की मदद से वह सरकश हो कर मेरी ताक में बैठ
गया है, क्यूँकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।”
14 अख़ीमलिक बोला, “लेकिन मेरे आक़ा, क्या
मुलाज़िमों में से कोई और आप के दामाद दाऊद जैसा
वफ़ादार साबित हुआ है? वह तो आप के मुहाफ़िज़
दस्ते का कप्तान और आप के घराने का मुअज़्ज़ज़
मैम्बर है। 15 और यह पहली बार नहीं था कि मैं ने
उस के लिए अल्लाह से हिदायत माँगी। इस मुआमले में
बादशाह मुझ और मेरे ख़ानदान पर इल्ज़ाम न लगाए।
मैं ने तो किसी साज़िश का ज़िक्र तक नहीं सुना।”
16 लेकिन बादशाह बोला, “अख़ीमलिक, तुझे और
तेरे बाप के पूरे ख़ानदान को मरना है।” 17 उस ने
साथ खड़े अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म दिया, “जा कर
इमामों को मार दो, क्यूँकि यह भी दाऊद के इत्तिहादी
हैं। गो इन को मालूम था कि दाऊद मुझ से भाग रहा
है तो भी इन्हों ने मुझे इत्तिला न दी।”
लेकिन मुहाफ़िज़ों ने रब के इमामों को मार डालने
से इन्कार किया। 18 तब बादशाह ने दोएग अदोमी
को हुक्म दिया, “फिर तुम ही इमामों को मार दो।”
दोएग ने उन के पास जा कर उन सब को क़त्ल
कर दिया। कतान का बालापोश पहनने वाले कुल
85 आदमी उस दिन मारे गए। 19 फिर उस ने जा
कर इमामों के शहर नोब के तमाम बाशिन्दों को
मार डाला। शहर के मर्द, औरतें, बच्चे शीरख़्वारों
समेत, गाय-बैल, गधे और भेड़-बकरियाँ सब उस
दिन हलाक हुए।
20 सिर्फ़ एक ही शख़्स बच गया, अबियातर जो
अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब का बेटा था। वह भाग
कर दाऊद के पास आया 21 और उसे इत्तिला दी
कि साऊल ने रब के इमामों को क़त्ल कर दिया है।
22 दाऊद ने कहा, “उस दिन जब मैं ने दोएग अदोमी
को वहाँ देखा तो मुझे मालूम था कि वह ज़रूर
साऊल को ख़बर पहुँचाएगा। यह मेरा ही क़ुसूर है कि
आप के बाप का पूरा ख़ानदान हलाक हो गया है।
23 अब मेरे साथ रहें और मत डरें। जो आदमी आप
को क़त्ल करना चाहता है वह मुझे भी क़त्ल करना
चाहता है। आप मेरे साथ रह कर महफ़ूज़ रहेंगे।”

दाऊद क़ईला को बचाता है

23 1 एक दिन दाऊद को ख़बर मिली कि
फ़िलिस्ती क़ईला शहर पर हम्ला करके
गाहने की जगहों से अनाज लूट रहे हैं। 2 दाऊद ने रब
से दरयाफ़्त किया, “क्या मैं जा कर फ़िलिस्तियों पर
हम्ला करूँ?” रब ने जवाब दिया, “जा, फ़िलिस्तियों
पर हम्ला करके क़ईला को बचा।”
3 लेकिन दाऊद के आदमी एतिराज़ करने लगे, “हम
पहले से यहाँ यहूदाह में लोगों की मुख़ालफ़त से
डरते हैं। जब हम क़ईला जा कर फ़िलिस्तियों पर
हम्ला करेंगे तो फिर हमारा क्या बनेगा?” 4 तब दाऊद
ने रब से दुबारा हिदायत माँगी, और दुबारा उसे यही
जवाब मिला, “क़ईला को जा! मैं फ़िलिस्तियों को
तेरे हवाले कर दूँगा।”
5 चुनाँचे दाऊद अपने आदमियों के साथ क़ईला
चला गया। उस ने फ़िलिस्तियों पर हम्ला करके उन्हें
बड़ी शिकस्त दी और उन की भेड़-बकरियों को छीन
कर क़ईला के बाशिन्दों को बचाया। 6 वहाँ क़ईला
में अबियातर दाऊद के लोगों में शामिल हुआ। उस
के पास इमाम का बालापोश था।

7 जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद क़ईला
शहर में ठहरा हुआ है तो उस ने सोचा, “अल्लाह ने उसे
मेरे हवाले कर दिया है, क्यूँकि अब वह फ़सीलदार
शहर में जा कर फंस गया है।” 8 वह अपनी पूरी फ़ौज
को जमा करके जंग के लिए तय्यारियाँ करने लगा
ताकि उतर कर क़ईला का मुहासरा करे जिस में
दाऊद अब तक ठहरा हुआ था।
9 लेकिन दाऊद को पता चला कि साऊल उस के
ख़िलाफ़ तय्यारियाँ कर रहा है। उस ने अबियातर
इमाम से कहा, “इमाम का बालापोश ले आएँ ताकि
हम रब से हिदायत माँगें।” 10 फिर उस ने दुआ की,
“ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, मुझे ख़बर मिली है कि
साऊल मेरी वजह से क़ईला पर हम्ला करके उसे
बर्बाद करना चाहता है। 11 क्या शहर के बाशिन्दे
मुझे साऊल के हवाले कर देंगे? क्या साऊल वाक़ई
आएगा? ऐ रब, इस्राईल के ख़ुदा, अपने ख़ादिम
को बता!” रब ने जवाब दिया, “हाँ, वह आएगा।”
12 फिर दाऊद ने मज़ीद दरयाफ़्त किया, “क्या शहर
के बुज़ुर्ग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले
कर देंगे?” रब ने कहा, “हाँ, वह कर देंगे।”
13 लिहाज़ा दाऊद अपने तक़रीबन 600 आदमियों
के साथ क़ईला से चला गया और इधर उधर फिरने
लगा। जब साऊल को इत्तिला मिली कि दाऊद
क़ईला से निकल कर बच गया है तो वहाँ जाने से
बाज़ आया।

यूनतन दाऊद से मिलता है

14 अब दाऊद बयाबान के पहाड़ी क़िलों और दश्त-
ए-ज़ीफ़ के पहाड़ी इलाक़े में रहने लगा। साऊल तो
मुसलसल उस का खोज लगाता रहा, लेकिन अल्लाह
हमेशा दाऊद को साऊल के हाथ से बचाता रहा।
15 एक दिन जब दाऊद होरिश के क़रीब था तो उसे
इत्तिला मिली कि साऊल आप को हलाक करने के
लिए निकला है। 16 उस वक़्त यूनतन ने दाऊद के
पास आ कर उस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह
अल्लाह पर भरोसा रखे। 17 उस ने कहा, “डरें मत।
मेरे बाप का हाथ आप तक नहीं पहुँचेगा। एक दिन
आप ज़रूर इस्राईल के बादशाह बन जाएंगे, और
मेरा रुतबा आप के बाद ही आएगा। मेरा बाप भी
इस हक़ीक़त से ख़ूब वाक़िफ़ है।” 18 दोनों ने रब के
हुज़ूर अह्द बांधा। फिर यूनतन अपने घर चला गया
जबकि दाऊद वहाँ होरिश में ठहरा रहा।

दाऊद ज़ीफ़ में बच जाता है

19 दश्त-ए-ज़ीफ़ में आबाद कुछ लोग साऊल के
पास आ गए जो उस वक़्त जिबिआ में था। उन्हों
ने कहा, “हम जानते हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया
है। वह होरिश के पहाड़ी क़िलों में है, उस पहाड़ी
पर जिस का नाम हकीला है और जो यशीमोन के
जुनूब में है। 20 ऐ बादशाह, जब भी आप का दिल
चाहे आएँ तो हम उसे पकड़ कर आप के हवाले
कर देंगे।” 21 साऊल ने जवाब दिया, “रब आप को
बरकत बख़्शे कि आप को मुझ पर तरस आया है।
22 अब वापस जा कर मज़ीद तय्यारियाँ करें। पता
करें कि वह कहाँ आता जाता है और किस ने उसे
वहाँ देखा है। क्यूँकि मुझे बताया गया है कि वह
बहुत चालाक है। 23 हर जगह का खोज लगाएँ जहाँ
वह छुप जाता है। जब आप को सारी तफ़्सीलात
मालूम हों तो मेरे पास आएँ। फिर मैं आप के साथ
वहाँ पहुँचूँगा। अगर वह वाक़ई वहाँ कहीं हो तो मैं
उसे ज़रूर ढूँड निकालूँगा, ख़्वाह मुझे पूरे यहूदाह की
छानबीन क्यूँ न करनी पड़े।”
24–25 ज़ीफ़ के आदमी वापस चले गए। थोड़ी देर
के बाद साऊल भी अपनी फ़ौज समेत वहाँ के लिए
निकला। उस वक़्त दाऊद और उस के लोग दश्त-
ए-मऊन में यशीमोन के जुनूब में थे। जब दाऊद को
इत्तिला मिली कि साऊल उस का ताक़्क़ुब कर रहा
है तो वह रेगिस्तान के मज़ीद जुनूब में चला गया,
वहाँ जहाँ बड़ी चटान नज़र आती है। लेकिन साऊल
को पता चला और वह फ़ौरन रेगिस्तान में दाऊद के
पीछे गया।

26 चलते चलते साऊल दाऊद के क़रीब ही पहुँच
गया। आख़िरकार सिर्फ़ एक पहाड़ी उन के दरमियान
रह गई। साऊल पहाड़ी के एक दामन में था जबकि
दाऊद अपने लोगों समेत दूसरे दामन में भागता
हुआ बादशाह से बचने की कोशिश कर रहा था।
साऊल अभी उन्हें घेर कर पकड़ने को था 27 कि
अचानक क़ासिद साऊल के पास पहुँचा जिस ने
कहा, “जल्दी आएँ! फ़िलिस्ती हमारे मुल्क में घुस
आए हैं।” 28 साऊल को दाऊद को छोड़ना पड़ा,
और वह फ़िलिस्तियों से लड़ने गया। उस वक़्त से
पहाड़ी का नाम “अलाहिदगी की चटान” पड़ गया।
29 दाऊद वहाँ से चला गया और ऐन-जदी के पहाड़ी
क़िलों में रहने लगा।

दाऊद साऊल को क़त्ल करने से इन्कार करता है

24 1 जब साऊल फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब
करने से वापस आया तो उसे ख़बर मिली
कि दाऊद ऐन-जदी के रेगिस्तान में है। 2 वह तमाम
इस्राईल के 3,000 चीदा फ़ौजियों को ले कर पहाड़ी
बकरियों की चटानों के लिए रवाना हुआ ताकि
दाऊद को पकड़ ले।

3 चलते चलते वह भेड़ों के कुछ बाड़ों से गुज़रने
लगे। वहाँ एक ग़ार को देख कर साऊल अन्दर गया
ताकि अपनी हाजत रफ़ा करे। इत्तिफ़ाक़ से दाऊद
और उस के आदमी उसी ग़ार के पिछले हिस्से में
छुपे बैठे थे। 4 दाऊद के आदमियों ने आहिस्ता से
उस से कहा, “रब ने तो आप से वादा किया था, ‘मैं
तेरे दुश्मन को तेरे हवाले कर दूँगा, और तू जो जी चाहे
उस के साथ कर सकेगा।’ अब यह वक़्त आ गया
है!” दाऊद रेंगते रेंगते आगे साऊल के क़रीब पहुँच
गया। चुपके से उस ने साऊल के लिबास के किनारे
का टुकड़ा काट लिया और फिर वापस आ गया।
5 लेकिन जब अपने लोगों के पास पहुँचा तो उस
का ज़मीर उसे मलामत करने लगा। 6 उस ने अपने
आदमियों से कहा, “रब न करे कि मैं अपने आक़ा
के साथ ऐसा सुलूक करके रब के मसह किए हुए
बादशाह को हाथ लगाऊँ। क्यूँकि रब ने ख़ुद उसे
मसह करके चुन लिया है।” 7 यह कह कर दाऊद ने
उन को समझाया और उन्हें साऊल पर हम्ला करने से
रोक दिया।

थोड़ी देर के बाद साऊल ग़ार से निकल कर आगे
चलने लगा। 8 जब वह कुछ फ़ासिले पर था तो दाऊद
भी निकला और पुकार उठा, “ऐ बादशाह सलामत,
ऐ मेरे आक़ा!” साऊल ने पीछे देखा तो दाऊद मुँह के
बल झुक कर 9 बोला, “जब लोग आप को बताते हैं
कि दाऊद आप को नुक़्सान पहुँचाने पर तुला हुआ
है तो आप क्यूँ ध्यान देते हैं? 10 आज आप अपनी
आँखों से देख सकते हैं कि यह झूट ही झूट है। ग़ार में
आप अल्लाह की मर्ज़ी से मेरे क़ब्ज़े में आ गए थे। मेरे
लोगों ने ज़ोर दिया कि मैं आप को मार दूँ, लेकिन मैं ने
आप को न छेड़ा। मैं बोला, ‘मैं कभी भी बादशाह को
नुक़्सान नहीं पहुँचाऊँगा, क्यूँकि रब ने ख़ुद उसे मसह
करके चुन लिया है।’ 11 मेरे बाप, यह देखें जो मेरे हाथ
में है! आप के लिबास का यह टुकड़ा मैं काट सका,
और फिर भी मैं ने आप को हलाक न किया। अब
जान लें कि न मैं आप को नुक़्सान पहुँचाने का इरादा
रखता हूँ, न मैं ने आप का गुनाह किया है। फिर भी
आप मेरा ताक़्क़ुब करते हुए मुझे मार डालने के दरपै
हैं। 12 रब ख़ुद फ़ैसला करे कि किस से ग़लती हो रही
है, आप से या मुझ से। वही आप से मेरा बदला ले।
लेकिन ख़ुद मैं कभी आप पर हाथ नहीं उठाऊँगा।
13 क़दीम क़ौल यही बात बयान करता है, ‘बदकारों
से बदकारी पैदा होती है।’ मेरी नीयत तो साफ़ है,
इस लिए मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा। 14 इस्राईल का
बादशाह किस के ख़िलाफ़ निकल आया है? जिस का
ताक़्क़ुब आप कर रहे हैं उस की तो कोई हैसियत
नहीं। वह मुर्दा कुत्ता या पिस्सू ही है। 15 रब हमारा
मुन्सिफ़ हो। वही हम दोनों का फ़ैसला करे। वह मेरे
मुआमले पर ध्यान दे, मेरे हक़ में बात करे और मुझे
बेइल्ज़ाम ठहरा कर आप के हाथ से बचाए।”

16 दाऊद ख़ामोश हुआ तो साऊल ने पूछा, “दाऊद
मेरे बेटे, क्या आप की आवाज़ है?” और वह फूट

फूट कर रोने लगा। 17 उस ने कहा, “आप मुझ से
ज़्यादा रास्तबाज़ हैं। आप ने मुझ से अच्छा सुलूक
किया जबकि मैं आप से बुरा सुलूक करता रहा हूँ।
18 आज आप ने मेरे साथ भलाइ का सबूत दिया,
क्यूँकि गो रब ने मुझे आप के हवाले कर दिया था
तो भी आप ने मुझे हलाक न किया। 19 जब किसी
का दुश्मन उस के क़ब्ज़े में आ जाता है तो वह उसे
जाने नहीं देता। लेकिन आप ने ऐसा ही किया। रब
आप को उस मेहरबानी का अज्र दे जो आप ने आज
मुझ पर की है। 20 अब मैं जानता हूँ कि आप ज़रूर
बादशाह बन जाएंगे, और कि आप के ज़रीए इस्राईल
की बादशाही क़ाइम रहेगी। 21 चुनाँचे रब की क़सम
खा कर मुझ से वादा करें कि न आप मेरी औलाद
को हलाक करेंगे, न मेरे आबाई घराने में से मेरा नाम
मिटा देंगे।”

22 दाऊद ने क़सम खा कर साऊल से वादा किया।
फिर साऊल अपने घर चला गया जबकि दाऊद ने
अपने लोगों के साथ एक पहाड़ी क़िले में पनाह ले
ली।

समूएल की मौत

25 1 उन दिनों में समूएल फ़ौत हुआ। तमाम
इस्राईल रामा में जनाज़े के लिए जमा हुआ।
उस का मातम करते हुए उन्हों ने उसे उस की
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया।

नाबाल दाऊद की बेइज़्ज़ती करता है

उन दिनों में दाऊद दश्त-ए-फ़ारान में चला गया।
2–4 मऊन में कालिब के ख़ानदान का एक आदमी
रहता था जिस का नाम नाबाल था। वह निहायत
अमीर था। कर्मिल के क़रीब उस की 3,000 भेड़ें
और 1,000 बकरियाँ थीं। बीवी का नाम अबीजेल
था। वह ज़हीन भी थी और ख़ूबसूरत भी। उस के
मुक़ाबले में नाबाल सख़्तमिज़ाज और कमीना था।
एक दिन नाबाल अपनी भेड़ों के बाल कतरने के लिए
कर्मिल आया।

जब दाऊद को ख़बर मिली 5 तो उस ने 10 जवानों
को भेज कर कहा, “कर्मिल जा कर नाबाल से मिलें
और उसे मेरा सलाम दें। 6 उसे बताना, ‘अल्लाह आप
को तवील ज़िन्दगी अता करे। आप की, आप के
ख़ानदान की और आप की तमाम मिलकियत की
सलामती हो। 7 सुना है कि भेड़ों के बाल कतरने का
वक़्त आ गया है। कर्मिल में आप के चरवाहे हमेशा
हमारे साथ रहे। उस पूरे अर्से में न उन्हें हमारी तरफ़ से
कोई नुक़्सान पहुँचा, न कोई चीज़ चोरी हुई। 8 अपने
लोगों से ख़ुद पूछ लें! वह इस की तस्दीक़ करेंगे।
आज आप ख़ुशी मना रहे हैं, इस लिए मेरे जवानों पर
मेहरबानी करें। जो कुछ आप ख़ुशी से दे सकते हैं
वह उन्हें और अपने बेटे दाऊद को दे दें’।”

9 दाऊद के आदमी नाबाल के पास गए। उसे दाऊद
का सलाम दे कर उन्हों ने उस का पैग़ाम दिया और
फिर जवाब का इन्तिज़ार किया। 10 लेकिन नाबाल
ने करख़्त लहजे में कहा, “यह दाऊद कौन है? कौन
है यस्सी का बेटा? आजकल बहुत से ऐसे ग़ुलाम हैं
जो अपने मालिक से भागे हुए हैं। 11 मैं अपनी रोटी,
अपना पानी और कतरने वालों के लिए ज़बह किया
गया गोश्त ले कर ऐसे आवारा फिरने वालों को क्यूँ
दे दूँ? क्या पता है कि यह कहाँ से आए हैं।”

12 दाऊद के आदमी चले गए और दाऊद को सब
कुछ बता दिया। 13 तब दाऊद ने हुक्म दिया, “अपनी
तलवारें बांध लो!” सब ने अपनी तलवारें बांध लीं।
उस ने भी ऐसा किया और फिर 400 अफ़राद के साथ
कर्मिल के लिए रवाना हुआ। बाक़ी 200 मर्द सामान
के पास रहे।

अबीजेल दाऊद का ग़ुस्सा ठंडा करती है

14 इतने में नाबाल के एक नौकर ने उस की
बीवी को इत्तिला दी, “दाऊद ने रेगिस्तान में से
अपने क़ासिदों को नाबाल के पास भेजा ताकि उसे
मुबारकबाद दें। लेकिन उस ने जवाब में गरज कर
उन्हें गालियाँ दी हैं, 15 हालाँकि उन लोगों का हमारे
साथ सुलूक हमेशा अच्छा रहा है। हम अक्सर रेवड़ों

को चराने के लिए उन के क़रीब फिरते रहे, तो भी
उन्हों ने हमें कभी नुक़्सान न पहुँचाया, न कोई चीज़
चोरी की। 16 जब भी हम उन के क़रीब थे तो वह दिन
रात चारदीवारी की तरह हमारी हिफ़ाज़त करते रहे।
17 अब सोच लें कि क्या किया जाए! क्यूँकि हमारा
मालिक और उस के तमाम घर वाले बड़े ख़तरे में
हैं। वह ख़ुद इतना शरीर है कि उस से बात करने का
कोई फ़ाइदा नहीं।”

18 जितनी जल्दी हो सका अबीजेल ने कुछ सामान
इकट्ठा किया जिस में 200 रोटियाँ, मै की दो मश्कें,
खाने के लिए तय्यार की गई पाँच भेड़ें, भुने हुए
अनाज के साढ़े 27 किलोग्राम, किशमिश की 100
और अन्जीर की 200 टिक्कियाँ शामिल थीं। सब कुछ
गधों पर लाद कर 19 उस ने अपने नौकरों को हुक्म
दिया, “मेरे आगे निकल जाओ, मैं तुम्हारे पीछे पीछे
आऊँगी।” अपने शौहर को उस ने कुछ न बताया।
20 जब अबीजेल पहाड़ की आड़ में उतरने लगी तो
दाऊद अपने आदमियों समेत उस की तरफ़ बढ़ते हुए
नज़र आया। फिर उन की मुलाक़ात हुई। 21 दाऊद तो
अभी तक बड़े ग़ुस्से में था, क्यूँकि वह सोच रहा था,
“इस आदमी की मदद करने का क्या फ़ाइदा था!
हम रेगिस्तान में उस के रेवड़ों की हिफ़ाज़त करते
रहे और उस की कोई भी चीज़ गुम न होने दी। तो भी
उस ने हमारी नेकी के जवाब में हमारी बेइज़्ज़ती की
है। 22 अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं कल सुब्ह
तक उस के एक आदमी को भी ज़िन्दा छोड़ दूँ!”

23–24 दाऊद को देख कर अबीजेल जल्दी से गधे
पर से उतर कर उस के सामने मुँह के बल झुक गई।
उस ने कहा, “मेरे आक़ा, मुझे ही क़ुसूरवार ठहराएँ।
मेहरबानी करके अपनी ख़ादिमा को बोलने दें और
उस की बात सुनें। 25 मेरे मालिक उस शरीर आदमी
नाबाल पर ज़्यादा ध्यान न दें। उस के नाम का मतलब
अहमक़ है और वह है ही अहमक़। अफ़्सोस, मेरी
उन आदमियों से मुलाक़ात नहीं हुई जो आप ने हमारे
पास भेजे थे। 26 लेकिन रब की और आप की हयात
की क़सम, रब ने आप को अपने हाथों से बदला
लेने और क़ातिल बनने से बचाया है। और अल्लाह
करे कि जो भी आप से दुश्मनी रखते और आप को
नुक़्सान पहुँचाना चाहते हैं उन्हें नाबाल की सी सज़ा
मिल जाए। 27 अब गुज़ारिश है कि जो बरकत हमें
मिली है उस में आप भी शरीक हों। जो चीज़ें आप
की ख़ादिमा लाई है उन्हें क़बूल करके उन जवानों
में तक़्सीम कर दें जो मेरे आक़ा के पीछे हो लिए हैं।
28 जो भी ग़लती हुई है अपनी ख़ादिमा को मुआफ़
कीजिए। रब ज़रूर मेरे आक़ा का घराना हमेशा तक
क़ाइम रखेगा, क्यूँकि आप रब के दुश्मनों से लड़ते
हैं। वह आप को जीते जी ग़लतियाँ करने से बचाए
रखे। 29 जब कोई आप का ताक़्क़ुब करके आप को
मार देने की कोशिश करे तो रब आप का ख़ुदा आप
की जान जानदारों की थैली में महफ़ूज़ रखेगा। लेकिन
आप के दुश्मनों की जान वह फ़लाख़न के पत्थर की
तरह दूर फैंक कर हलाक कर देगा। 30 जब रब अपने
तमाम वादे पूरे करके आप को इस्राईल का बादशाह
बना देगा 31 तो कोई ऐसी बात सामने नहीं आएगी
जो ठोकर का बाइस हो। मेरे आक़ा का ज़मीर साफ़
होगा, क्यूँकि आप बदला ले कर क़ातिल नहीं बने
होंगे। गुज़ारिश है कि जब रब आप को कामयाबी दे
तो अपनी ख़ादिमा को भी याद करें।”

32 दाऊद बहुत ख़ुश हुआ। “रब इस्राईल के ख़ुदा
की तारीफ़ हो जिस ने आज आप को मुझ से मिलने
के लिए भेज दिया। 33 आप की बसीरत मुबारक है!
आप मुबारक हैं, क्यूँकि आप ने मुझे इस दिन अपने
हाथों से बदला ले कर क़ातिल बनने से रोक दिया है।
34 रब इस्राईल के ख़ुदा की क़सम जिस ने मुझे आप
को नुक़्सान पहुँचाने से रोक दिया, कल सुब्ह नाबाल
के तमाम आदमी हलाक होते अगर आप इतनी जल्दी
से मुझ से मिलने न आतीं।”

35 दाऊद ने अबीजेल की पेशकरदा चीज़ें क़बूल
करके उसे रुख़्सत किया और कहा, “सलामती से
जाएँ। मैं ने आप की सुनी और आप की बात मन्ज़ूर
कर ली है।”

रब नाबाल को सज़ा देता है

36 जब अबीजेल अपने घर पहुँची तो देखा कि बहुत
रौनक़ है, क्यूँकि नाबाल बादशाह की सी ज़ियाफ़त
करके ख़ुशियाँ मना रहा था। चूँकि वह नशे में धुत था
इस लिए अबीजेल ने उसे उस वक़्त कुछ न बताया।
37 अगली सुब्ह जब नाबाल होश में आ गया तो
अबीजेल ने उसे सब कुछ कह सुनाया। यह सुनते
ही नाबाल को दौरा पड़ गया, और वह पत्थर सा
बन गया। 38 दस दिन के बाद रब ने उसे मरने दिया।
39 जब दाऊद को नाबाल की मौत की ख़बर मिल गई
तो वह पुकारा, “रब की तारीफ़ हो जिस ने मेरे लिए
नाबाल से लड़ कर मेरी बेइज़्ज़ती का बदला लिया
है। उस की मेहरबानी है कि मैं ग़लत काम करने से
बच गया हूँ जबकि नाबाल की बुराई उस के अपने
सर पर आ गई है।”

अबीजेल की दाऊद से शादी

कुछ देर के बाद दाऊद ने अपने लोगों को अबीजेल
के पास भेजा ताकि वह दाऊद की उस के साथ शादी
की दरख़्वास्त पेश करें। 40 चुनाँचे उस के मुलाज़िम
कर्मिल में अबीजेल के पास जा कर बोले, “दाऊद ने
हमें शादी का पैग़ाम दे कर भेजा है।” 41 अबीजेल
खड़ी हुई, फिर मुँह के बल झुक कर बोली, “मैं
उन की ख़िदमत में हाज़िर हूँ। मैं अपने मालिक के
ख़ादिमों के पाँओ धोने तक तय्यार हूँ।”
42 वह जल्दी से तय्यार हुई और गधे पर बैठ
कर दाऊद के मुलाज़िमों के साथ रवाना हुई। पाँच
नौकरानियाँ उस के साथ चली गईं। यूँ अबीजेल
दाऊद की बीवी बन गई।
43 अब दाऊद की दो बीवियाँ थीं, क्यूँकि पहले
उस की शादी अख़ीनूअम से हुई थी जो यज़्रएल से
थी। 44 जहाँ तक साऊल की बेटी मीकल का ताल्लुक़
था साऊल ने उसे दाऊद से ले कर उस की दुबारा
शादी फ़ल्तीएल बिन लैस से करवाई थी जो जल्लीम
का रहने वाला था।

दाऊद साऊल को दूसरी बार बचने देता है

26 1 एक दिन दश्त-ए-ज़ीफ़ के कुछ बाशिन्दे
दुबारा जिबिआ में साऊल के पास आ
गए। उन्हों ने बादशाह को बताया, “हम जानते
हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया है। वह उस पहाड़ी
पर है जो हकीला कहलाती है और यशीमोन के
मुक़ाबिल है।” 2 यह सुन कर साऊल इस्राईल के
3,000 चीदा फ़ौजियों को ले कर दश्त-ए-ज़ीफ़ में
गया ताकि दाऊद को ढूँड निकाले। 3 हकीला पहाड़ी
पर यशीमोन के मुक़ाबिल वह रुक गए। जो रास्ता
पहाड़ पर से गुज़रता है उस के पास उन्हों ने अपना
कैम्प लगाया। दाऊद उस वक़्त रेगिस्तान में छुप गया
था। जब उसे ख़बर मिली कि साऊल मेरा ताक़्क़ुब
कर रहा है 4 तो उस ने अपने लोगों को मालूम करने
के लिए भेजा। उन्हों ने वापस आ कर उसे इत्तिला
दी कि बादशाह वाक़ई अपनी फ़ौज समेत रेगिस्तान
में पहुँच गया है। 5 यह सुन कर दाऊद ख़ुद निकल
कर चुपके से उस जगह गया जहाँ साऊल का कैम्प
था। उस को मालूम हुआ कि साऊल और उस का
कमाँडर अबिनैर बिन नैर कैम्प के ऐन बीच में सो
रहे हैं जबकि बाक़ी आदमी दाइरा बना कर उन के
इर्दगिर्द सो रहे हैं।
6 दो मर्द दाऊद के साथ थे, अख़ीमलिक हित्ती और
अबीशै बिन ज़रूयाह। ज़रूयाह योआब का भाई था।
दाऊद ने पूछा, “कौन मेरे साथ कैम्प में घुस कर
साऊल के पास जाएगा?” अबीशै ने जवाब दिया,
“मैं साथ जाऊँगा।” 7 चुनाँचे दोनों रात के वक़्त कैम्प
में घुस आए। सोए हुए फ़ौजियों और अबिनैर से गुज़र
कर वह साऊल तक पहुँच गए जो ज़मीन पर लेटा सो
रहा था। उस का नेज़ा सर के क़रीब ज़मीन में गड़ा
हुआ था। 8 अबीशै ने आहिस्ता से दाऊद से कहा,
“आज अल्लाह ने आप के दुश्मन को आप के क़ब्ज़े
में कर दिया है। अगर इजाज़त हो तो मैं उसे उस के
अपने नेज़े से ज़मीन के साथ छेद दूँ। मैं उसे एक

ही वार में मार दूँगा। दूसरे वार की ज़रूरत ही नहीं होगी।”

9 दाऊद बोला, “न करो! उसे मत मारना, क्यूँकि
जो रब के मसह किए हुए ख़ादिम को हाथ लगाए
वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 10 रब की हयात की क़सम,
रब ख़ुद साऊल की मौत मुक़र्रर करेगा, ख़्वाह वह
बूढ़ा हो कर मर जाए, ख़्वाह जंग में लड़ते हुए। 11 रब
मुझे इस से महफ़ूज़ रखे कि मैं उस के मसह किए हुए
ख़ादिम को नुक़सान पहुँचाऊँ। नहीं, हम कुछ और
करेंगे। उस का नेज़ा और पानी की सुराही पकड़
लो। आओ, हम यह चीज़ें अपने साथ ले कर यहाँ
से निकल जाते हैं।” 12 चुनाँचे वह दोनों चीज़ें अपने
साथ ले कर चुपके से चले गए। कैम्प में किसी को
भी पता न चला, कोई न जागा। सब सोए रहे, क्यूँकि
रब ने उन्हें गहरी नींद सुला दिया था।

13 दाऊद वादी को पार करके पहाड़ी पर चढ़ गया।
जब साऊल से फ़ासिला काफ़ी था 14 तो दाऊद ने
फ़ौज और अबिनैर को ऊँची आवाज़ से पुकार कर
कहा, “ऐ अबिनैर, क्या आप मुझे जवाब नहीं देंगे?”
अबिनैर पुकारा, “आप कौन हैं कि बादशाह को
इस तरह की ऊँची आवाज़ दें?” 15 दाऊद ने तन्ज़न
जवाब दिया, “क्या आप मर्द नहीं हैं? और इस्राईल
में कौन आप जैसा है? तो फिर आप ने अपने बादशाह
की सहीह हिफ़ाज़त क्यूँ न की जब कोई उसे क़त्ल
करने के लिए कैम्प में घुस आया? 16 जो आप ने
किया वह ठीक नहीं है। रब की हयात की क़सम,
आप और आप के आदमी सज़ा-ए-मौत के लाइक़ हैं,
क्यूँकि आप ने अपने मालिक की हिफ़ाज़त न की, गो
वह रब का मसह किया हुआ बादशाह है। ख़ुद देख
लें, जो नेज़ा और पानी की सुराही बादशाह के सर के
पास थे वह कहाँ हैं?”

17 तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचान
ली। वह पुकारा, “मेरे बेटे दाऊद, क्या आप की
आवाज़ है?” 18 दाऊद ने जवाब दिया, “जी, बादशाह
सलामत। मेरे आक़ा, आप मेरा ताक़्क़ुब क्यूँ कर रहे
हैं? मैं तो आप का ख़ादिम हूँ। मैं ने क्या किया? मुझ
से क्या जुर्म सरज़द हुआ है? 19 गुज़ारिश है कि मेरा
आक़ा और बादशाह अपने ख़ादिम की बात सुने।
अगर रब ने आप को मेरे ख़िलाफ़ उकसाया हो तो
वह मेरी ग़ल्ला की नज़र क़बूल करे। लेकिन अगर
इन्सान इस के पीछे हैं तो रब के सामने उन पर
लानत! अपनी हरकतों से उन्हों ने मुझे मेरी मौरूसी
ज़मीन से निकाल दिया है और नतीजे में मैं रब की
क़ौम में नहीं रह सकता। हक़ीक़त में वह कह रहे हैं,
‘जाओ, दीगर माबूदों की पूजा करो!’ 20 ऐसा न हो
कि मैं वतन से और रब के हुज़ूर से दूर मर जाऊँ।
इस्राईल का बादशाह पिस्सू को ढूँड निकालने के
लिए क्यूँ निकल आया है? वह तो पहाड़ों में मेरा
शिकार तीतर के शिकार की तरह कर रहे हैं।”

21 तब साऊल ने इक़्क़ार किया, “मैं ने गुनाह किया
है। दाऊद मेरे बेटे, वापस आएँ। अब से मैं आप
को नुक़सान पहुँचाने की कोशिश नहीं करूँगा, क्यूँकि
आज मेरी जान आप की नज़र में क़ीमती थी। मैं बड़ी
बेवुक़ूफ़ी कर गया हूँ, और मुझ से बड़ी ग़लती हुई
है।”

22 दाऊद ने जवाब में कहा, “बादशाह का नेज़ा
यहाँ मेरे पास है। आप का कोई जवान आ कर उसे
ले जाए। 23 रब हर उस शख़्स को अज्र देता है जो
इन्साफ़ करता और वफ़ादार रहता है। आज रब ने
आप को मेरे हवाले कर दिया, लेकिन मैं ने उस के
मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाने से इन्कार
किया। 24 और मेरी दुआ है कि जितनी क़ीमती आप
की जान आज मेरी नज़र में थी, उतनी क़ीमती मेरी
जान भी रब की नज़र में हो। वही मुझे हर मुसीबत
से बचाए रखे।” 25 साऊल ने जवाब दिया, “मेरे बेटे
दाऊद, रब आप को बरकत दे। आइन्दा आप को
बड़ी कामयाबी हासिल होगी।”

इस के बाद दाऊद ने अपनी राह ली और साऊल
अपने घर चला गया।

दाऊद दुबारा अकीस के पास

27 1 इस तजरिबे के बाद दाऊद सोचने लगा,
“अगर मैं यहीं ठहर जाऊँ तो किसी दिन
साऊल मुझे मार डालेगा। बेहतर है कि अपनी
हिफ़ाज़त के लिए फ़िलिस्तियों के मुल्क में चला
जाऊँ। तब साऊल पूरे इस्राईल में मेरा खोज लगाने से
बाज़ आएगा, और मैं महफ़ूज़ रहूँगा।” 2 चुनाँचे वह
अपने 600 आदमियों को ले कर जात के बादशाह
अकीस बिन माओक के पास चला गया। 3 उन के
ख़ानदान साथ थे। दाऊद की दो बीवियाँ अख़ीनूअम
यज़्रएली और नाबाल की बेवा अबीजेल कर्मिली भी
साथ थीं। अकीस ने उन्हें जात शहर में रहने की
इजाज़त दी। 4 जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद
ने जात में पनाह ली है तो वह उस का खोज लगाने
से बाज़ आया।

5 एक दिन दाऊद ने अकीस से बात की, “अगर
आप की नज़र-ए-करम मुझ पर है तो मुझे दीहात
की किसी आबादी में रहने की इजाज़त दें। क्या
ज़रूरत है कि मैं यहाँ आप के साथ दार-उल-हकूमत
में रहूँ?” 6 अकीस मुत्तफ़िक़ हुआ। उस दिन उस ने
उसे सिक़्लाज शहर दे दिया। यह शहर उस वक़्त
से यहूदाह के बादशाहों की मिलकियत में रहा है।
7 दाऊद एक साल और चार महीने फ़िलिस्ती मुल्क
में ठहरा रहा।

8 सिक़्लाज से दाऊद अपने आदमियों के साथ
मुख़्तलिफ़ जगहों पर हम्ला करने के लिए निकलता
रहा। कभी वह जसूरियों पर धावा बोलते, कभी
जिर्ज़ियों या अमालीक़ियों पर। यह क़बीले क़दीम
ज़माने से यहूदाह के जुनूब में शूर और मिस्र की सरहद
तक रहते थे। 9 जब भी कोई मक़ाम दाऊद के क़ब्ज़े
में आ जाता तो वह किसी भी मर्द या औरत को ज़िन्दा
न रहने देता लेकिन भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, गधों,
ऊँटों और कपड़ों को अपने साथ सिक़्लाज ले जाता।

जब भी दाऊद किसी हमले से वापस आ कर
बादशाह अकीस से मिलता 10 तो वह पूछता,
“आज आप ने किस पर छापा मारा?” फिर दाऊद
जवाब देता, “यहूदाह के जुनूबी इलाक़े पर,” या
“यरहमिएलियों के जुनूबी इलाक़े पर,” या “क़ीनियों
के जुनूबी इलाक़े पर।” 11 जब भी दाऊद किसी
आबादी पर हम्ला करता तो वह तमाम बाशिन्दों को
मौत के घाट उतार देता और न मर्द, न औरत को
ज़िन्दा छोड़ कर जात लाता। क्यूँकि उस ने सोचा,
“ऐसा न हो कि फ़िलिस्तियों को पता चले कि मैं
असल में इस्राईली आबादियों पर हम्ला नहीं कर
रहा।”

जितना वक़्त दाऊद ने फ़िलिस्ती मुल्क में गुज़ारा
वह ऐसा ही करता रहा। 12 अकीस ने दाऊद पर पूरा
भरोसा किया, क्यूँकि उस ने सोचा, “अब दाऊद
को हमेशा तक मेरी ख़िदमत में रहना पड़ेगा, क्यूँकि
ऐसी हरकतों से उस की अपनी क़ौम उस से सख़्त
मुतनफ़्फ़िर हो गई है।”

28 1 उन दिनों में फ़िलिस्ती इस्राईल से लड़ने
के लिए अपनी फ़ौजें जमा करने लगे।
अकीस ने दाऊद से भी बात की, “तवक़्क़ो है कि
आप अपने फ़ौजियों समेत मेरे साथ मिल कर जंग के
लिए निकलेंगे।”

2 दाऊद ने जवाब दिया, “ज़रूर। अब आप ख़ुद
देखेंगे कि आप का ख़ादिम क्या करने के क़ाबिल
है!” अकीस बोला, “ठीक है। पूरी जंग के दौरान
आप मेरे मुहाफ़िज़ होंगे।”

साऊल जादूगरनी की तरफ़ रुजू करता है

3 उस वक़्त समूएल इन्तिक़ाल कर चुका था, और
पूरे इस्राईल ने उस का मातम करके उसे उस के
आबाई शहर रामा में दफ़नाया था।

उन दिनों में इस्राईल में मुर्दों से राबिता करने वाले
और ग़ैबदान नहीं थे, क्यूँकि साऊल ने उन्हें पूरे मुल्क
से निकाल दिया था।

4 अब फ़िलिस्तियों ने अपनी लश्करगाह शूनीम के
पास लगाई जबकि साऊल ने तमाम इस्राईलियों को
जमा करके जिल्बूअ के पास अपना कैम्प लगाया।

5 फ़िलिस्तियों की बड़ी फ़ौज देख कर वह सख़्त दहशत खाने लगा। 6 उस ने रब से हिदायत हासिल
करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब न मिला,
न ख़्वाब, न मुक़द्दस क़ुरआ डालने से और न नबियों
की मारिफ़त। 7 तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों को
हुक्म दिया, “मेरे लिए मुर्दों से राबिता करने वाली
ढूँडो ताकि मैं जा कर उस से मालूमात हासिल कर
लूँ।” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “ऐन-दोर में ऐसी
औरत है।”

8 साऊल भेस बदल कर दो आदमियों के साथ ऐन-
दोर के लिए रवाना हुआ।

रात के वक़्त वह जादूगरनी के पास पहुँच गया
और बोला, “मुर्दों से राबिता करके उस रूह को
पाताल से बुला दें जिस का नाम मैं आप को बताता
हूँ।” 9 जादूगरनी ने एतिराज़ किया, “क्या आप मुझे
मरवाना चाहते हैं? आप को पता है कि साऊल ने
तमाम ग़ैबदानों और मुर्दों से राबिता करने वालों को
मुल्क में से मिटा दिया है। आप मुझे क्यूँ फंसाना
चाहते हैं?” 10 तब साऊल ने कहा, “रब की हयात
की क़सम, आप को यह करने के लिए सज़ा नहीं
मिलेगी।” 11 औरत ने पूछा, “मैं किस को बुलाऊँ?”
साऊल ने जवाब दिया, “समूएल को बुला दें।”

12 जब समूएल औरत को नज़र आया तो वह चीख़
उठी, “आप ने मुझे क्यूँ धोका दिया? आप तो साऊल
हैं!” 13 साऊल ने उसे तसल्ली दे कर कहा, “डरें
मत। बताएँ तो सही, क्या देख रही हैं?” औरत ने
जवाब दिया, “मुझे एक रूह नज़र आ रही है जो
चढ़ती चढ़ती ज़मीन में से निकल कर आ रही है।”
14 साऊल ने पूछा, “उस की शक्ल-ओ-सूरत कैसी
है?” जादूगरनी ने कहा, “चोगे में लिपटा हुआ बूढ़ा
आदमी है।”

यह सुन कर साऊल ने जान लिया कि समूएल ही
है। वह मुँह के बल ज़मीन पर झुक गया। 15 समूएल
बोला, “तू ने मुझे पाताल से बुलवा कर क्यूँ मुज़्तरिब
कर दिया है?” साऊल ने जवाब दिया, “मैं बड़ी
मुसीबत में हूँ। फ़िलिस्ती मुझ से लड़ रहे हैं, और
अल्लाह ने मुझे तर्क कर दिया है। न वह नबियों की
मारिफ़त मुझे हिदायत देता है, न ख़्वाब के ज़रीए।
इस लिए मैं ने आप को बुलवाया है ताकि आप मुझे
बताएँ कि मैं क्या करूँ।”

16 लेकिन समूएल ने कहा, “रब ख़ुद ही तुझे छोड़
कर तेरा दुश्मन बन गया है तो फिर मुझ से दरयाफ़्त
करने का क्या फ़ाइदा है? 17 रब इस वक़्त तेरे साथ
वह कुछ कर रहा है जिस की पेशगोई उस ने मेरी
मारिफ़त की थी। उस ने तेरे हाथ से बादशाही छीन
कर किसी और यानी दाऊद को दे दी है। 18 जब रब
ने तुझे अमालीक़ियों पर उस का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल
करने का हुक्म दिया था तो तू ने उस की न सुनी।
अब तुझे इस की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 19 रब तुझे
इस्राईल समेत फ़िलिस्तियों के हवाले कर देगा। कल
ही तू और तेरे बेटे यहाँ मेरे पास पहुँचेंगे। रब तेरी पूरी
फ़ौज भी फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में कर देगा।”

20 यह सुन कर साऊल सख़्त घबरा गया, और वह
गिर कर ज़मीन पर दराज़ हो गया। जिस्म की पूरी
ताक़त ख़त्म हो गई थी, क्यूँकि उस ने पिछले पूरे
दिन और रात रोज़ा रखा था।

21 जब जादूगरनी ने साऊल के पास जा कर देखा
कि उस के रोंगटे खड़े हो गए हैं तो उस ने कहा,
“जनाब, मैं ने आप का हुक्म मान कर अपनी जान
ख़तरे में डाल दी। 22 अब ज़रा मेरी भी सुनें। मुझे
इजाज़त दें कि मैं आप को कुछ खाना खिलाऊँ ताकि
आप तक़वियत पा कर वापस जा सकें।” 23 लेकिन
साऊल ने इन्कार किया, “मैं कुछ नहीं खाऊँगा।”
तब उस के आदमियों ने औरत के साथ मिल कर
उसे बहुत समझाया, और आख़िरकार उस ने उन की
सुनी। वह ज़मीन से उठ कर चारपाई पर बैठ गया।
24 जादूगरनी के पास मोटा-ताज़ा बछड़ा था। उसे उस
ने जल्दी से ज़बह करवा कर तय्यार किया। उस ने
कुछ आटा भी ले कर गूँधा और उस से बेख़मीरी
रोटी बनाई। 25 फिर उस ने खाना साऊल और उस के
मुलाज़िमों के सामने रख दिया, और उन्हों ने खाया।
फिर वह उसी रात दुबारा रवाना हो गए।

फ़िलिस्ती दाऊद पर शक करते हैं

29 1 फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौजों को अफ़ीक़
के पास जमा किया, जबकि इस्राईलियों
की लश्करगाह यज़्रएल के चश्मे के पास थी।
2 फ़िलिस्ती सरदार जंग के लिए निकलने लगे। उन
के पीछे सौ सौ और हज़ार हज़ार सिपाहियों के गुरोह
हो लिए। आख़िर में दाऊद और उस के आदमी भी
अकीस के साथ चलने लगे।
3 यह देख कर फ़िलिस्ती कमाँडरों ने पूछा, “यह
इस्राईली क्यूँ साथ जा रहे हैं?” अकीस ने जवाब
दिया, “यह दाऊद है, जो पहले इस्राईली बादशाह
साऊल का फ़ौजी अफ़्सर था और अब काफ़ी देर से
मेरे साथ है। जब से वह साऊल को छोड़ कर मेरे
पास आया है मैं ने उस में ऐब नहीं देखा।”
4 लेकिन फ़िलिस्ती कमाँडर ग़ुस्से से बोले, “उसे
उस शहर वापस भेज दें जो आप ने उस के लिए
मुक़र्रर किया है! कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे
साथ निकल कर अचानक हम पर ही हम्ला कर दे।
क्या अपने मालिक से सुलह कराने का कोई बेहतर
तरीक़ा है कि वह अपने मालिक को हमारे कटे हुए
सर पेश करे? 5 क्या यह वही दाऊद नहीं जिस के
बारे में इस्राईली नाचते हुए गाते थे, ‘साऊल ने हज़ार
हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार’?”
6 चुनाँचे अकीस ने दाऊद को बुला कर कहा, “रब
की हयात की क़सम, आप दियानतदार हैं, और मेरी
ख़्वाहिश थी कि आप इस्राईल से लड़ने के लिए मेरे
साथ निकलें, क्यूँकि जब से आप मेरी ख़िदमत करने
लगे हैं मैं ने आप में ऐब नहीं देखा। लेकिन अफ़्सोस,
आप सरदारों को पसन्द नहीं हैं। 7 इस लिए मेहरबानी
करके सलामती से लौट जाएँ और कुछ न करें जो
उन्हें बुरा लगे।”
8 दाऊद ने पूछा, “मुझ से क्या ग़लती हुई है? क्या
आप ने उस दिन से मुझ में नुक़्स पाया है जब से मैं
आप की ख़िदमत करने लगा हूँ? मैं अपने मालिक
और बादशाह के दुश्मनों से लड़ने के लिए क्यूँ नहीं
निकल सकता?”
9 अकीस ने जवाब दिया, “मेरे नज़्दीक तो आप
अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे अच्छे हैं। लेकिन फ़िलिस्ती
कमाँडर इस बात पर बज़िद हैं कि आप इस्राईल से
लड़ने के लिए हमारे साथ न निकलें। 10 चुनाँचे कल
सुब्ह-सवेरे उठ कर अपने आदमियों के साथ रवाना
हो जाना। जब दिन चढ़े तो देर न करना बल्कि जल्दी
से अपने घर चले जाना।”
11 दाऊद और उस के आदमियों ने ऐसा ही किया।
अगले दिन वह सुब्ह-सवेरे उठ कर फ़िलिस्ती मुल्क
में वापस चले गए जबकि फ़िलिस्ती यज़्रएल के लिए
रवाना हुए।

सिक़्लाज की तबाही और दाऊद का बदला

30 1 तीसरे दिन जब दाऊद सिक़्लाज पहुँचा तो
देखा कि शहर का सत्यानास हो गया है।
उन की ग़ैरमौजूदगी में अमालीक़ियों ने दश्त-ए-नजब
में आ कर सिक़्लाज पर भी हम्ला किया था। शहर
को जला कर 2 वह तमाम बाशिन्दों को छोटों से ले
कर बड़ों तक अपने साथ ले गए थे। लेकिन कोई
हलाक नहीं हुआ था बल्कि वह सब को अपने साथ
ले गए थे। 3 चुनाँचे जब दाऊद और उस के आदमी
वापस आए तो देखा कि शहर भस्म हो गया है और
तमाम बाल-बच्चे छिन गए हैं। 4 वह फूट फूट कर रोने
लगे, इतने रोए कि आख़िरकार रोने की सकत ही
न रही। 5 दाऊद की दो बीवियों अख़ीनूअम यज़्रएली
और अबीजेल कर्मिली को भी असीर कर लिया गया
था।
6 दाऊद की जान बड़े ख़तरे में आ गई, क्यूँकि उस
के मर्द ग़म के मारे आपस में उसे संगसार करने की
बातें करने लगे। क्यूँकि बेटे-बेटियों के छिन जाने के
बाइस सब सख़्त रंजीदा थे। लेकिन दाऊद ने रब
अपने ख़ुदा में पनाह ले कर तक़वियत पाई। 7 उस ने
अबियातर बिन अख़ीमलिक को हुक्म दिया, “क़ुरआ
डालने के लिए इमाम का बालापोश ले आएँ।” जब

इमाम बालापोश ले आया 8 तो दाऊद ने रब से
दरयाफ़्त किया, “क्या मैं लुटेरों का ताक़्क़ुब करूँ?
क्या मैं उन को जा लूँगा?” रब ने जवाब दिया, “उन
का ताक़्क़ुब कर! तू न सिर्फ़ उन्हें जा लेगा बल्कि
अपने लोगों को बचा भी लेगा।” 9–10 तब दाऊद
अपने 600 मर्दों के साथ रवाना हुआ। चलते चलते
वह बसोर नदी के पास पहुँच गए। 200 अफ़राद इतने
निढाल हो गए थे कि वह वहीं रुक गए। बाक़ी 400
मर्द नदी को पार करके आगे बढ़े।

11 रास्ते में उन्हें खुले मैदान में एक मिस्री आदमी
मिला और उसे दाऊद के पास ला कर कुछ पानी
पिलाया और कुछ रोटी, 12 अन्जीर की टिक्की का
टुकड़ा और किशमिश की दो टिक्कियाँ खिलाईं। तब
उस की जान में जान आ गई। उसे तीन दिन और
रात से न खाना, न पानी मिला था। 13 दाऊद ने पूछा,
“तुम्हारा मालिक कौन है, और तुम कहाँ के हो?”
उस ने जवाब दिया, “मैं मिस्री ग़ुलाम हूँ, और एक
अमालीक़ी मेरा मालिक है। जब मैं सफ़र के दौरान
बीमार हो गया तो उस ने मुझे यहाँ छोड़ दिया। अब
मैं तीन दिन से यहाँ पड़ा हूँ। 14 पहले हम ने करेतियों
यानी फ़िलिस्तियों के जुनूबी इलाक़े और फिर यहूदाह
के इलाक़े पर हम्ला किया था, ख़ासकर यहूदाह के
जुनूबी हिस्से पर जहाँ कालिब की औलाद आबाद
है। शहर सिक़्लाज को हम ने भस्म कर दिया था।”

15 दाऊद ने सवाल किया, “क्या तुम मुझे बता
सकते हो कि यह लुटेरे किस तरफ़ गए हैं?” मिस्री ने
जवाब दिया, “पहले अल्लाह की क़सम खा कर वादा
करें कि आप मुझे न हलाक करेंगे, न मेरे मालिक
के हवाले करेंगे। फिर मैं आप को उन के पास
ले जाऊँगा।” 16 चुनाँचे वह दाऊद को अमालीक़ी
लुटेरों के पास ले गया। जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि
अमालीक़ी इधर उधर बिखरे हुए बड़ा जश्न मना रहे
हैं। वह हर तरफ़ खाना खाते और मै पीते हुए नज़र
आ रहे थे, क्यूँकि जो माल उन्हों ने फ़िलिस्तियों और
यहूदाह के इलाक़े से लूट लिया था वह बहुत ज़्यादा
था।

17 सुब्ह-सवेरे जब अभी थोड़ी रौशनी थी दाऊद ने
उन पर हम्ला किया। लड़ते लड़ते अगले दिन की शाम
हो गई। दुश्मन हार गया और सब के सब हलाक हुए।
सिर्फ़ 400 जवान बच गए जो ऊँटों पर सवार हो कर
फ़रार हो गए। 18 दाऊद ने सब कुछ छुड़ा लिया जो
अमालीक़ियों ने लूट लिया था। उस की दो बीवियाँ
भी सहीह-सलामत मिल गईं। 19 न बच्चा न बुज़ुर्ग, न
बेटा न बेटी, न माल या कोई और लूटी हुई चीज़ रही
जो दाऊद वापस न लाया। 20 अमालीक़ियों के गाय-
बैल और भेड़-बकरियाँ दाऊद का हिस्सा बन गईं,
और उस के लोगों ने उन्हें अपने रेवड़ों के आगे आगे
हाँक कर कहा, “यह लूटे हुए माल में से दाऊद का
हिस्सा है।”

माल-ए-ग़नीमत की तक़्सीम

21 जब दाऊद अपने आदमियों के साथ वापस आ
रहा था तो जो 200 आदमी निढाल होने के बाइस
बसोर नदी से आगे न जा सके वह भी उन से आ
मिले। दाऊद ने सलाम करके उन का हाल पूछा।
22 लेकिन बाक़ी आदमियों में कुछ शरारती लोग
बुड़बुड़ाने लगे, “यह हमारे साथ लड़ने के लिए आगे
न निकले, इस लिए इन्हें लूटे हुए माल का हिस्सा
पाने का हक़ नहीं। बस वह अपने बाल-बच्चों को ले
कर चले जाएँ।”

23 लेकिन दाऊद ने इन्कार किया। “नहीं, मेरे
भाइयो, ऐसा मत करना! यह सब कुछ रब की तरफ़
से है। उसी ने हमें महफ़ूज़ रख कर हम्लाआवर लुटेरों
पर फ़त्ह बख़्शी। 24 तो फिर हम आप की बात किस
तरह मानें? जो पीछे रह कर सामान की हिफ़ाज़त कर
रहा था उसे भी उतना ही मिलेगा जितना कि उसे जो
दुश्मन से लड़ने गया था। हम यह सब कुछ बराबर
बराबर तक़्सीम करेंगे।”

25 उस वक़्त से यह उसूल बन गया। दाऊद ने इसे
इस्राईली क़ानून का हिस्सा बना दिया जो आज तक
जारी है। 26 सिक़्लाज वापस पहुँचने पर दाऊद ने लूटे
हुए माल का एक हिस्सा यहूदाह के बुज़ुर्गों के पास

भेज दिया जो उस के दोस्त थे। साथ साथ उस ने
पैग़ाम भेजा, “आप के लिए यह तुह्फ़ा रब के दुश्मनों
से लूट लिया गया है।” 27 यह तुह्फ़े उस ने ज़ैल के
शहरों में भेज दिए : बैत-एल, रामात-नजब, यत्तीर,
28 अरोईर, सिफ़्मोत, इस्तिमूअ, 29–31 रकल, हुर्मा,
बोर-असान, अताक़ और हब्रून। इस के इलावा उस ने
तुह्फ़े यरहमिएलियों, क़ीनियों और बाक़ी उन तमाम
शहरों को भेज दिए जिन में वह कभी ठहरा था।

साऊल और उस के बेटों का अन्जाम

31 1 इतने में फ़िलिस्तियों और इस्राईलियों के
दरमियान जंग छिड़ गई थी। लड़ते लड़ते
इस्राईली फ़रार होने लगे, लेकिन बहुत से लोग
जिल्बूअ के पहाड़ी सिलसिले पर शहीद हो गए।
2 फिर फ़िलिस्ती साऊल और उस के बेटों यूनतन,
अबीनदाब और मल्कीशूअ के पास जा पहुँचे। तीनों
बेटे हलाक हो गए 3 जबकि लड़ाई साऊल के इर्दगिर्द
उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअन्दाज़ों का
निशाना बन कर बुरी तरह ज़ख़्मी हो गया। 4 उस ने
अपने सिलाहबर्दार को हुक्म दिया, “अपनी तलवार
मियान से खैंच कर मुझे मार डाल, वर्ना यह नामख़्तून
मुझे छेद कर बेइज़्ज़त करेंगे।” लेकिन सिलाहबर्दार
ने इन्कार किया, क्यूँकि वह बहुत डरा हुआ था।
आख़िर में साऊल अपनी तलवार ले कर ख़ुद उस
पर गिर गया।
5 जब सिलाहबर्दार ने देखा कि मेरा मालिक मर
गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिर कर मर
गया। 6 यूँ उस दिन साऊल, उस के तीन बेटे, उस
का सिलाहबर्दार और उस के तमाम आदमी हलाक
हो गए।
7 जब मैदान-ए-यज़्रएल के पार और दरया-ए-यर्दन
के पार रहने वाले इस्राईलियों को ख़बर मिली कि
इस्राईली फ़ौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत
मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़ कर भाग
निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर क़ब्ज़ा
करके उन में बसने लगे।
8 अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के लिए
दुबारा मैदान-ए-जंग में आ गए। जब उन्हें जिल्बूअ
के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उस के तीनों
बेटे मुर्दा मिले 9 तो उन्हों ने साऊल का सर काट कर
उस का ज़िराबक्तर उतार लिया और क़ासिदों को
अपने पूरे मुल्क में भेज कर अपने बुतों के मन्दिर में
और अपनी क़ौम को फ़त्ह की इत्तिला दी। 10 साऊल
का ज़िराबक्तर उन्हों ने अस्तारात देवी के मन्दिर में
महफ़ूज़ कर लिया और उस की लाश को बैत-शान
की फ़सील से लटका दिया।
11 जब यबीस-जिलिआद के बाशिन्दों को ख़बर
मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के साथ
क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के
क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। पूरी
रात चलते हुए वह शहर के पास पहुँच गए। साऊल
और उस के बेटों की लाशों को फ़सील से उतार कर
वह उन्हें यबीस को ले गए। वहाँ उन्हों ने लाशों को
भस्म कर दिया 13 और बची हुई हड्डियों को शहर में
झाओ के दरख़्त के साय में दफ़नाया। उन्हों ने रोज़ा
रख कर पूरे हफ़्ते तक उन का मातम किया।

२-समूएल

दाऊद को साऊल और यूनतन की मौत की ख़बर मिलती है

1 1 जब दाऊद अमालीक़ियों को शिकस्त देने से
वापस आया तो साऊल बादशाह मर चुका था।
वह अभी दो ही दिन सिक़्लाज में ठहरा था 2 कि एक
आदमी साऊल की लश्करगाह से पहुँचा। दुख के
इज़हार के लिए उस ने अपने कपड़ों को फाड़ कर
अपने सर पर ख़ाक डाल रखी थी। दाऊद के पास
आ कर वह बड़े एहतिराम के साथ उस के सामने
झुक गया। 3 दाऊद ने पूछा, “आप कहाँ से आए
हैं?” आदमी ने जवाब दिया, “मैं बाल बाल बच कर
इस्राईली लश्करगाह से आया हूँ।” 4 दाऊद ने पूछा,
“बताएँ, हालात कैसे हैं?” उस ने बताया, “हमारे
बहुत से आदमी मैदान-ए-जंग में काम आए। बाक़ी
भाग गए हैं। साऊल और उस का बेटा यूनतन भी
हलाक हो गए हैं।”

5 दाऊद ने सवाल किया, “आप को कैसे मालूम
हुआ कि साऊल और यूनतन मर गए हैं?” 6 जवान
ने जवाब दिया, “इत्तिफ़ाक़ से मैं जिल्बूअ के पहाड़ी
सिलसिले पर से गुज़र रहा था। वहाँ मुझे साऊल नज़र
आया। वह नेज़े का सहारा ले कर खड़ा था। दुश्मन
के रथ और घुड़सवार तक़रीबन उसे पकड़ने ही वाले
थे 7 कि उस ने मुड़ कर मुझे देखा और अपने पास
बुलाया। मैं ने कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’ 8 उस ने पूछा,
‘तुम कौन हो?’ मैं ने जवाब दिया, ‘मैं अमालीक़ी हूँ।’
9 फिर उस ने मुझे हुक्म दिया, ‘आओ और मुझे मार
डालो! क्यूँकि गो मैं ज़िन्दा हूँ मेरी जान निकल रही
है।’ 10 चुनाँचे मैं ने उसे मार दिया, क्यूँकि मैं जानता
था कि बचने का कोई इम्कान नहीं रहा था। फिर मैं
उस का ताज और बाज़ूबन्द ले कर अपने मालिक के
पास यहाँ ले आया हूँ।”

11 यह सब कुछ सुन कर दाऊद और उस के तमाम
लोगों ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 शाम
तक उन्हों ने रो रो कर और रोज़ा रख कर साऊल,
उस के बेटे यूनतन और रब के उन बाक़ी लोगों का
मातम किया जो मारे गए थे।

13 दाऊद ने उस जवान से जो उन की मौत की ख़बर
लाया था पूछा, “आप कहाँ के हैं?” उस ने जवाब
दिया, “मैं अमालीक़ी हूँ जो अजनबी के तौर पर
आप के मुल्क में रहता हूँ।” 14 दाऊद बोला, “आप
ने रब के मसह किए हुए बादशाह को क़त्ल करने
की जुरअत कैसे की?” 15 उस ने अपने किसी जवान
को बुला कर हुक्म दिया, “इसे मार डालो!” उसी
वक़्त जवान ने अमालीक़ी को मार डाला। 16 दाऊद ने
कहा, “आप ने अपने आप को ख़ुद मुजरिम ठहराया
है, क्यूँकि आप ने अपने मुँह से इक़्रार किया है कि मैं
ने रब के मसह किए हुए बादशाह को मार दिया है।”

साऊल और यूनतन पर मातम का गीत

17 फिर दाऊद ने साऊल और यूनतन पर मातम का
गीत गाया। 18 उस ने हिदायत दी कि यहूदाह के तमाम
बाशिन्दे यह गीत याद करें। गीत का नाम ‘कमान का
गीत’ है और ‘याशर की किताब’ में दर्ज है। गीत यह
है,

19 “हाय, ऐ इस्राईल! तेरी शान-ओ-शौकत तेरी
बुलन्दियों पर मारी गई है। हाय, तेरे सूरमे किस तरह
गिर गए हैं!

20 जात में जा कर यह ख़बर मत सुनाना। अस्क़लून
की गलियों में इस का एलान मत करना, वर्ना
फ़िलिस्तियों की बेटियाँ ख़ुशी मनाएँगी, नामख़्तूनों
की बेटियाँ फ़त्ह के नारे लगाएँगी।

21 ऐ जिल्बूअ के पहाड़ो! ऐ पहाड़ी ढलानो!
आइन्दा तुम पर न ओस पड़े, न बारिश बरसे। क्यूँकि

सूरमाओं की ढाल नापाक हो गई है। अब से साऊल
की ढाल तेल मल कर इस्तेमाल नहीं की जाएगी।

22 यूनतन की कमान ज़बरदस्त थी, साऊल की
तलवार कभी ख़ाली हाथ न लौटी। उन के हथियारों
से हमेशा दुश्मन का ख़ून टपकता रहा, वह सूरमाओं
की चर्बी से चमकते रहे।
23 साऊल और यूनतन कितने प्यारे और मेहरबान
थे! जीते जी वह एक दूसरे के क़रीब रहे, और अब
मौत भी उन्हें अलग न कर सकी। वह उक़ाब से तेज़
और शेरबबर से ताक़तवर थे।
24 ऐ इस्राईल की ख़वातीन! साऊल के लिए आँसू
बहाएँ। क्यूँकि उसी ने आप को क़िर्मिज़ी रंग के
शानदार कपड़ों से मुलब्बस किया, उसी ने आप को
सोने के ज़ेवरात से आरास्ता किया।

25 हाय, हमारे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो गए हैं।
हाय ऐ इस्राईल, यूनतन मुर्दा हालत में तेरी बुलन्दियों
पर पड़ा है।
26 ऐ यूनतन मेरे भाई, मैं तेरे बारे में कितना दुखी
हूँ। तू मुझे कितना अज़ीज़ था। तेरी मुझ से मुहब्बत
अनोखी थी, वह औरतों की मुहब्बत से भी अनोखी
थी।
27 हाय, हाय! हमारे सूरमे किस तरह गिर कर शहीद
हो गए हैं। जंग के हथियार तबाह हो गए हैं।”

दाऊद यहूदाह का बादशाह बन जाता है

2 1 इस के बाद दाऊद ने रब से दरयाफ़्त किया,
“क्या मैं यहूदाह के किसी शहर में वापस चला
जाऊँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, वापस जा।” दाऊद
ने सवाल किया, “मैं किस शहर में जाऊँ?” रब ने
जवाब दिया, “हब्रून में।” 2 चुनाँचे दाऊद अपनी दो
बीवियों अख़ीनूअम यज़्रएली और नाबाल की बेवा
अबीजेल कर्मिली के साथ हब्रून में जा बसा।
3 दाऊद ने अपने आदमियों को भी उन के ख़ानदानों
समेत हब्रून और गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों में
मुन्तक़िल कर दिया। 4 एक दिन यहूदाह के आदमी
हब्रून में आए और दाऊद को मसह करके अपना
बादशाह बना लिया।

जब दाऊद को ख़बर मिल गई कि यबीस-
जिलिआद के मर्दों ने साऊल को दफ़ना दिया है 5 तो
उस ने उन्हें पैग़ाम भेजा, “रब आप को इस के लिए
बरकत दे कि आप ने अपने मालिक साऊल को दफ़न
करके उस पर मेहरबानी की है। 6 जवाब में रब आप
पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करे।
मैं भी इस नेक अमल का अज्र दूँगा। 7 अब मज़बूत
और दिलेर हों। आप का आक़ा साऊल तो फ़ौत हुआ
है, लेकिन यहूदाह के क़बीले ने मुझे उस की जगह
चुन लिया है।”

इश्बोसत इस्राईल का बादशाह बन जाता है

8 इतने में साऊल की फ़ौज के कमाँडर अबिनैर
बिन नैर ने साऊल के बेटे इश्बोसत को महनाइम
शहर में ले जा कर 9 बादशाह मुक़र्रर कर दिया।
जिलिआद, यज़्रएल, आशर, इफ़्राईम, बिनयमीन और
तमाम इस्राईल उस के क़ब्ज़े में रहे। 10 सिर्फ़ यहूदाह
का क़बीला दाऊद के साथ रहा। इश्बोसत 40 साल
की उम्र में बादशाह बना, और उस की हुकूमत दो
साल क़ाइम रही। 11 दाऊद हब्रून में यहूदाह पर साढ़े
सात साल हुकूमत करता रहा।

इस्राईल और यहूदाह के दरमियान जंग

12 एक दिन अबिनैर इश्बोसत बिन साऊल के
मुलाज़िमों के साथ महनाइम से निकल कर जिबऊन
आया। 13 यह देख कर दाऊद की फ़ौज योआब
बिन ज़रूयाह की राहनुमाई में उन से लड़ने के
लिए निकली। दोनों फ़ौजों की मुलाक़ात जिबऊन
के तालाब पर हुई। अबिनैर की फ़ौज तालाब की
उरली तरफ़ रुक गई और योआब की फ़ौज परली
तरफ़। 14 अबिनैर ने योआब से कहा, “आओ, हमारे
चन्द जवान हमारे सामने एक दूसरे का मुक़ाबला
करें।” योआब बोला, “ठीक है।” 15 चुनाँचे हर फ़ौज

ने बारह जवानों को चुन कर मुक़ाबले के लिए पेश
किया। इश्बोसत और बिनयमीन के क़बीले के बारह
जवान दाऊद के बारह जवानों के मुक़ाबले में खड़े
हो गए। 16 जब मुक़ाबला शुरू हुआ तो हर एक ने
एक हाथ से अपने मुख़ालिफ़ के बालों को पकड़
कर दूसरे हाथ से अपनी तलवार उस के पेट में घोंप
दी। सब के सब एक साथ मर गए। बाद में जिबऊन
की इस जगह का नाम ख़िल्क़त-हज़्ज़ूरीम पड़ गया।
17 फिर दोनों फ़ौजों के दरमियान निहायत सख़्त
लड़ाई छिड़ गई। लड़ते लड़ते अबिनैर और उस के
मर्द हार गए। 18 योआब के दो भाई अबीशै और
असाहेल भी लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे। असाहेल
ग़ज़ाल की तरह तेज़ दौड़ सकता था। 19 जब अबिनैर
शिकस्त खा कर भागने लगा तो असाहेल सीधा उस
के पीछे पड़ गया और न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।
20 अबिनैर ने पीछे देख कर पूछा, “क्या आप ही हैं,
असाहेल?” उस ने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ।”
21 अबिनैर बोला, “दाईं या बाईं तरफ़ हट कर किसी
और को पकड़ें! जवानों में से किसी से लड़ कर उस
के हथियार और ज़िराबक्तर उतारें।”

लेकिन असाहेल उस का ताक़्क़ुब करने से बाज़ न
आया। 22 अबिनैर ने उसे आगाह किया, “ख़बरदार।
मेरे पीछे से हट जाएँ, वर्ना आप को मार देने पर
मज्बूर हो जाऊँगा। फिर आप के भाई योआब को
किस तरह मुँह दिखाऊँगा?” 23 तो भी असाहेल ने
पीछा न छोड़ा। यह देख कर अबिनैर ने अपने नेज़े
का दस्ता इतने ज़ोर से उस के पेट में घोंप दिया कि
उस का सिरा दूसरी तरफ़ निकल गया। असाहेल वहीं
गिर कर जाँ-ब-हक़ हो गया। जिस ने भी वहाँ से गुज़र
कर यह देखा वह वहीं रुक गया।

24 लेकिन योआब और अबीशै अबिनैर का
ताक़्क़ुब करते रहे। जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो वह
एक पहाड़ी के पास पहुँच गए जिस का नाम अम्मा
था। यह जियाह के मुक़ाबिल उस रास्ते के पास है
जो मुसाफ़िर को जिबऊन से रेगिस्तान में पहुँचाता
है। 25 बिनयमीन के क़बीले के लोग वहाँ पहाड़ी पर
अबिनैर के पीछे जमा हो कर दुबारा लड़ने के लिए
तय्यार हो गए। 26 अबिनैर ने योआब को आवाज़ दी,
“क्या यह ज़रूरी है कि हम हमेशा तक एक दूसरे को
मौत के घाट उतारते जाएँ? क्या आप को समझ नहीं
आई कि ऐसी हरकतें सिर्फ़ तल्ख़ी पैदा करती हैं?
आप कब अपने मर्दों को हुक्म देंगे कि वह अपने
इस्राईली भाइयों का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आएँ?”
27 योआब ने जवाब दिया, “रब की हयात की
क़सम, अगर आप लड़ने का हुक्म न देते तो मेरे लोग
आज सुब्ह ही अपने भाइयों का ताक़्क़ुब करने से
बाज़ आ जाते।” 28 उस ने नरसिंगा बजा दिया, और
उस के आदमी रुक कर दूसरों का ताक़्क़ुब करने से
बाज़ आए। यूँ लड़ाई ख़त्म हो गई।

29 उस पूरी रात के दौरान अबिनैर और उस के
आदमी चलते गए। दरया-ए-यर्दन की वादी में से गुज़र
कर उन्हों ने दरया को पार किया और फिर गहरी
घाटी में से हो कर महनाइम पहुँच गए।

30 योआब भी अबिनैर और उस के लोगों को छोड़
कर वापस चला गया। जब उस ने अपने आदमियों
को जमा करके गिना तो मालूम हुआ कि असाहेल के
इलावा दाऊद के 19 आदमी मारे गए हैं। 31 इस के
मुक़ाबले में अबिनैर के 360 आदमी हलाक हुए थे।
सब बिनयमीन के क़बीले के थे। 32 योआब और उस
के साथियों ने असाहेल की लाश उठा कर उसे बैत-
लहम में उस के बाप की क़ब्र में दफ़न किया। फिर
उसी रात अपना सफ़र जारी रख कर वह पौ फटते
वक़्त हब्रून पहुँच गए।

3 1 साऊल के बेटे इश्बोसत और दाऊद के
दरमियान यह जंग बड़ी देर तक जारी रही।
लेकिन आहिस्ता आहिस्ता दाऊद ज़ोर पकड़ता गया
जबकि इश्बोसत की ताक़त कम होती गई।

दाऊद का ख़ानदान हब्रून में

2 हब्रून में दाऊद के बाज़ बेटे पैदा हुए। पहले का
नाम अम्नोन था। उस की माँ अख़ीनूअम यज़्रएली थी।
3 फिर किलियाब पैदा हुआ जिस की माँ नाबाल की

बेवा अबीजेल कर्मिली थी। तीसरा बेटा अबीसलूम था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी थी। 4 चौथे का नाम अदूनियाह था। उस की माँ हज्जीत थी। पाँचवाँ बेटा सफ़तियाह था। उस की माँ अबीताल थी। 5 छटे का नाम इत्रिआम था। उस की माँ इज्ला थी। यह छः बेटे हब्रून में पैदा हुए।

अबिनैर इश्बोसत से झगड़ता है

6 जितनी देर तक इश्बोसत और दाऊद के दरमियान जंग रही, उतनी देर तक अबिनैर साऊल के घराने का वफ़ादार रहा।

7 लेकिन एक दिन इश्बोसत अबिनैर से नाराज़ हुआ, क्यूँकि वह साऊल मरहूम की एक दाश्ता से हमबिसतर हो गया था। औरत का नाम रिस्फ़ा बिन्त अय्याह था। इश्बोसत ने शिकायत की, “आप ने मेरे बाप की दाश्ता से ऐसा सुलूक क्यूँ किया?” 8 अबिनैर बड़े ग़ुस्से में आ कर गरजा, “क्या मैं यहूदाह का कुत्ता [a]हूँ कि आप मुझे ऐसा रवय्या दिखाते हैं? आज तक मैं आप के बाप के घराने और उस के रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए लड़ता रहा हूँ। मेरी ही वजह से आप अब तक दाऊद के हाथ से बचे रहे हैं। क्या यह इस का मुआवज़ा है? क्या एक ऐसी औरत के सबब से आप मुझे मुजरिम ठहरा रहे हैं? 9–10 अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर अब से हर मुमकिन कोशिश न करूँ कि दाऊद पूरे इस्राईल और यहूदाह पर बादशाह बन जाए, शिमाल में दान से ले कर जुनूब में बैर-सबा तक। आख़िर रब ने ख़ुद क़सम खा कर दाऊद से वादा किया है कि मैं बादशाही साऊल के घराने से छीन कर तुझे दूँगा।”

11 यह सुन कर इश्बोसत अबिनैर से इतना डर गया कि मज़ीद कुछ कहने की जुरअत जाती रही।

अबिनैर के दाऊद से मुज़ाकरात

12 अबिनैर ने दाऊद को पैग़ाम भेजा, “मुल्क किस का है? मेरे साथ मुआहदा कर लें तो मैं पूरे इस्राईल को आप के साथ मिला दूँगा।”

13 दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं आप के साथ मुआहदा करता हूँ। लेकिन एक ही शर्त पर, आप साऊल की बेटी मीकल को जो मेरी बीवी है मेरे घर पहुँचाएँ, वर्ना मैं आप से नहीं मिलूँगा।” 14 दाऊद ने इश्बोसत के पास भी क़ासिद भेज कर तक़ाज़ा किया, “मुझे मेरी बीवी मीकल जिस से शादी करने के लिए मैं ने सौ फ़िलिस्तियों को मारा वापस कर दें।” 15 इश्बोसत मान गया। उस ने हुक्म दिया कि मीकल को उस के मौजूदा शौहर फ़ल्तीएल बिन लैस से ले कर दाऊद को भेजा जाए। 16 लेकिन फ़ल्तीएल उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वह रोते रोते बहूरीम तक अपनी बीवी के पीछे चलता रहा। तब अबिनैर ने उस से कहा, “अब जाओ! वापस चले जाओ!” तब वह वापस चला।

17 अबिनैर ने इस्राईल के बुज़ुर्गों से भी बात की, “आप तो काफ़ी देर से चाहते हैं कि दाऊद आप का बादशाह बन जाए। 18 अब क़दम उठाने का वक़्त आ गया है! क्यूँकि रब ने दाऊद से वादा किया है, ‘अपने ख़ादिम दाऊद से मैं अपनी क़ौम इस्राईल को फ़िलिस्तियों और बाक़ी तमाम दुश्मनों के हाथ से बचाऊँगा’।” 19 यही बात अबिनैर ने बिनयमीन के बुज़ुर्गों के पास जा कर भी की। इस के बाद वह हब्रून में दाऊद के पास आया ताकि उस के सामने इस्राईल और बिनयमीन के बुज़ुर्गों का फ़ैसला पेश करे।

20 बीस आदमी अबिनैर के साथ हब्रून पहुँच गए। उन का इस्तिक़बाल करके दाऊद ने ज़ियाफ़त की। 21 फिर अबिनैर ने दाऊद से कहा, “अब मुझे इजाज़त दें। मैं अपने आक़ा और बादशाह के लिए तमाम इस्राईल को जमा कर लूँगा ताकि वह आप के साथ

---

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : कुत्ते का सर

अह्द बांध कर आप को अपना बादशाह बना लें। फिर आप उस पूरे मुल्क पर हुकूमत करेंगे जिस तरह आप का दिल चाहता है।" फिर दाऊद ने अबिनैर को सलामती से रुख़्सत कर दिया।

अबिनैर को क़त्ल किया जाता है

22 थोड़ी देर के बाद योआब दाऊद के आदमियों
के साथ किसी लड़ाई से वापस आया। उन के पास
बहुत सा लूटा हुआ माल था। लेकिन अबिनैर हब्रून
में दाऊद के पास नहीं था, क्यूँकि दाऊद ने उसे
सलामती से रुख़्सत कर दिया था। 23 जब योआब
अपने आदमियों के साथ शहर में दाख़िल हुआ तो
उसे इत्तिला दी गई, "अबिनैर बिन नैर बादशाह के
पास था, और बादशाह ने उसे सलामती से रुख़्सत
कर दिया है।" 24 योआब फ़ौरन बादशाह के पास
गया और बोला, "आप ने यह क्या किया है? जब
अबिनैर आप के पास आया तो आप ने उसे क्यूँ
सलामती से रुख़्सत किया? अब उसे पकड़ने का
मौक़ा जाता रहा है। 25 आप तो उसे जानते हैं।
हक़ीक़त में वह इस लिए आया कि आप को मनवा
कर आप के आने जाने और बाक़ी कामों के बारे में
मालूमात हासिल करे।"

26 योआब ने दरबार से निकल कर क़ासिदों को
अबिनैर के पीछे भेज दिया। वह अभी सफ़र करते
करते सीरा के हौज़ पर से गुज़र रहा था कि क़ासिद
उस के पास पहुँच गए। उन की दावत पर वह उन
के साथ वापस गया। लेकिन बादशाह को इस का
इल्म न था। 27 जब अबिनैर दुबारा हब्रून में दाख़िल
होने लगा तो योआब शहर के दरवाज़े में उस का
इस्तिक़बाल करके उसे एक तरफ़ ले गया जैसे वह
उस के साथ कोई ख़ुफ़िया बात करना चाहता हो।
लेकिन अचानक उस ने अपनी तलवार को मियान
से खैंच कर अबिनैर के पेट में घोंप दिया। इस तरह
योआब ने अपने भाई असाहेल का बदला ले कर
अबिनैर को मार डाला।

28 जब दाऊद को इस की इत्तिला मिली तो उस ने
एलान किया, "मैं रब के सामने क़सम खाता हूँ कि
बेक़ुसूर हूँ। मेरा अबिनैर की मौत में हाथ नहीं था।
इस नाते से मुझ पर और मेरी बादशाही पर कभी भी
इल्ज़ाम न लगाया जाए, 29 क्यूँकि योआब और उस
के बाप का घराना क़ुसूरवार हैं। रब उसे और उस के
बाप के घराने को मुनासिब सज़ा दे। अब से अबद
तक उस की हर नस्ल में कोई न कोई हो जिसे ऐसे
ज़ख़्म लग जाएँ जो भर न पाएँ, किसी को कोढ़ लग
जाए, किसी को बैसाखियों की मदद से चलना पड़े,
कोई ग़ैरतबई मौत मर जाए, या किसी को ख़ुराक
की मुसलसल कमी रहे।" 30 यूँ योआब और उस के
भाई अबीशै ने अपने भाई असाहेल का बदला लिया।
उन्हों ने अबिनैर को इस लिए क़त्ल किया कि उस
ने असाहेल को जिबऊन के क़रीब लड़ते वक़्त मौत
के घाट उतार दिया था।

दाऊद अबिनैर का मातम करता है

31–32 दाऊद ने योआब और उस के साथियों को
हुक्म दिया, "अपने कपड़े फाड़ दो और टाट ओढ़
कर अबिनैर का मातम करो!" जनाज़े का बन्द-ओ-
बस्त हब्रून में किया गया। दाऊद ख़ुद जनाज़े के ऐन
पीछे चला। क़ब्र पर बादशाह ऊँची आवाज़ से रो
पड़ा, और बाक़ी सब लोग भी रोने लगे। 33 फिर
दाऊद ने अबिनैर के बारे में मातमी गीत गाया,

34 "हाय, अबिनैर क्यूँ बेदीन की तरह मारा गया?
तेरे हाथ बंधे हुए न थे, तेरे पाँओ ज़न्जीरों में जकड़े
हुए न थे। जिस तरह कोई शरीरों के हाथ में आ कर
मर जाता है उसी तरह तू हलाक हुआ।"

तब तमाम लोग मज़ीद रोए। 35 दाऊद ने जनाज़े के
दिन रोज़ा रखा। सब ने मिन्नत की कि वह कुछ खाए,
लेकिन उस ने क़सम खा कर कहा, "अल्लाह मुझे
सख़्त सज़ा दे अगर मैं सूरज के ग़ुरूब होने से पहले
रोटी का एक टुकड़ा भी खा लूँ।" 36 बादशाह का
यह रवय्या लोगों को बहुत पसन्द आया। वैसे भी
दाऊद का हर अमल लोगों को पसन्द आता था।

37 यूँ तमाम हाज़िरीन बल्कि तमाम इस्राईलियों ने
जान लिया कि बादशाह का अबिनैर को क़त्ल करने
में हाथ न था। 38 दाऊद ने अपने दरबारियों से कहा,
“क्या आप को समझ नहीं आई कि आज इस्राईल का
बड़ा सूरमा फ़ौत हुआ है? 39 मुझे अभी अभी मसह
करके बादशाह बनाया गया है, इस लिए मेरी इतनी
ताक़त नहीं कि ज़रूयाह के इन दो बेटों योआब और
अबीशै को कंट्रोल करूँ। रब उन्हें उन की इस शरीर
हरकत की मुनासिब सज़ा दे!”

इश्बोसत को क़त्ल किया जाता है

4 1 जब साऊल के बेटे इश्बोसत को इत्तिला मिली
कि अबिनैर को हब्रून में क़त्ल किया गया है
तो वह हिम्मत हार गया, और तमाम इस्राईल सख़्त
घबरा गया। 2 इश्बोसत के दो आदमी थे जिन के
नाम बाना और रैकाब थे। जब कभी इश्बोसत के
फ़ौजी छापा मारने के लिए निकलते तो यह दो भाई
उन पर मुक़र्रर थे। उन का बाप रिम्मोन बिनयमीन के
क़बाइली इलाक़े के शहर बैरोत का रहने वाला था।
बैरोत भी बिनयमीन में शुमार किया जाता है, 3 अगरचे
उस के बाशिन्दों को हिज्रत करके जित्तैम में बसना
पड़ा जहाँ वह आज तक परदेसी की हैसियत से रहते
हैं।

4 यूनतन का एक बेटा ज़िन्दा रह गया था जिस का
नाम मिफ़ीबोसत था। पाँच साल की उम्र में यज़्रएल
से ख़बर आई थी कि साऊल और यूनतन मारे गए
हैं। तब उस की आया उसे ले कर कहीं पनाह लेने
के लिए भाग गई थी। लेकिन जल्दी की वजह से
मिफ़ीबोसत गिर कर लंगड़ा हो गया था। उस वक़्त
से उस की दोनों टाँगें मफ़्लूज थीं।

5 एक दिन रिम्मोन बैरोती के बेटे रैकाब और बाना
दोपहर के वक़्त इश्बोसत के घर गए। गर्मी उरूज पर
थी, इस लिए इश्बोसत आराम कर रहा था। 6–7 दोनों
आदमी यह बहाना पेश करके घर के अन्दरूनी कमरे
में गए कि हम कुछ अनाज ले जाने के लिए आए हैं।
जब इश्बोसत के कमरे में पहुँचे तो वह चारपाई पर
लेटा सो रहा था। यह देख कर उन्हों ने उस के पेट
में तलवार घोंप दी और फिर उस का सर काट कर
वहाँ से सलामती से निकल आए।

पूरी रात सफ़र करते करते वह दरया-ए-यर्दन की
वादी में से गुज़र कर 8 हब्रून पहुँच गए। वहाँ उन्हों ने
दाऊद को इश्बोसत का सर दिखा कर कहा, “यह
देखें, साऊल के बेटे इश्बोसत का सर। आप का
दुश्मन साऊल बार बार आप को मार देने की कोशिश
करता रहा, लेकिन आज रब ने उस से और उस की
औलाद से आप का बदला लिया है।”

दाऊद क़ातिलों को सज़ा देता है

9 लेकिन दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात
की क़सम जिस ने फ़िद्या दे कर मुझे हर मुसीबत से
बचाया है, 10 जिस आदमी ने मुझे उस वक़्त सिक़्लाज
में साऊल की मौत की इत्तिला दी वह भी समझता
था कि मैं दाऊद को अच्छी ख़बर पहुँचा रहा हूँ।
लेकिन मैं ने उसे पकड़ कर सज़ा-ए-मौत दे दी। यही
था वह अज्र जो उसे ऐसी ख़बर पहुँचाने के इवज़
मिला! 11 अब तुम शरीर लोगों ने इस से बढ़ कर
किया। तुम ने बेक़ुसूर आदमी को उस के अपने घर
में उस की अपनी चारपाई पर क़त्ल कर दिया है। तो
क्या मेरा फ़र्ज़ नहीं कि तुम को इस क़त्ल की सज़ा
दे कर तुम्हें मुल्क में से मिटा दूँ?”

12 दाऊद ने दोनों को मार देने का हुक्म दिया। उस
के मुलाज़िमों ने उन्हें मार कर उन के हाथों और
पैरों को काट डाला और उन की लाशों को हब्रून
के तालाब के क़रीब कहीं लटका दिया। इश्बोसत
के सर को उन्हों ने अबिनैर की क़ब्र में दफ़नाया।

दाऊद पूरे इस्राईल का बादशाह बन जाता है

5 1 उस वक़्त इस्राईल के तमाम क़बीले हब्रून
में दाऊद के पास आए और कहा, “हम आप
ही की क़ौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माज़ी
में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी
मुहिम्मों में इस्राईल की क़ियादत करते रहे। और रब

ने आप से वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम इस्राईल
का चरवाहा बन कर उस पर हुकूमत करेगा।”
3 जब इस्राईल के तमाम बुज़ुर्ग हब्रून पहुँचे तो दाऊद
बादशाह ने रब के हुज़ूर उन के साथ अह्द बांधा,
और उन्हों ने उसे मसह करके इस्राईल का बादशाह
बना दिया।
4 दाऊद 30 साल की उम्र में बादशाह बन गया। उस
की हुकूमत 40 साल तक जारी रही। 5 पहले साढ़े
सात साल वह सिर्फ़ यहूदाह का बादशाह था और
उस का दार-उल-हकूमत हब्रून रहा। बाक़ी 33 साल
वह यरूशलम में रह कर यहूदाह और इस्राईल दोनों
पर हुकूमत करता रहा।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

6 बादशाह बनने के बाद दाऊद अपने फ़ौजियों के
साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हम्ला करे। वहाँ
अब तक यबूसी आबाद थे। दाऊद को देख कर
यबूसियों ने उस का मज़ाक़ उड़ाया, “आप हमारे
शहर में कभी दाख़िल नहीं हो पाएँगे! आप को रोकने
के लिए हमारे लंगड़े और अंधे काफ़ी हैं।” उन्हें पूरा
यक़ीन था कि दाऊद शहर में किसी भी तरीक़े से नहीं
आ सकेगा।
7 तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर
लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है।
8 जिस दिन उन्हों ने शहर पर हम्ला किया उस ने एलान
किया, “जो भी यबूसियों पर फ़त्ह पाना चाहे उसे
पानी की सुरंग में से गुज़र कर शहर में घुसना पड़ेगा
ताकि उन लंगड़ों और अंधों को मारे जिन से मेरी जान
नफ़रत करती है।” इस लिए आज तक कहा जाता
है, “लंगड़ों और अंधों को घर में जाने की इजाज़त
नहीं।”
9 यरूशलम पर फ़त्ह पाने के बाद दाऊद क़िले
में रहने लगा। उस ने उसे ‘दाऊद का शहर’ क़रार
दिया और उस के इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। यह
तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और
होते होते क़िले तक पहुँच गया।
10 यूँ दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्यूँकि रब्ब-उल-
अफ़्वाज उस के साथ था।

दाऊद की तरक़्क़ी

11 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास
वफ़द भेजा। बढ़ई और राज भी साथ थे। उन के पास
देवदार की लकड़ी थी, और उन्हों ने दाऊद के लिए
महल बना दिया। 12 यूँ दाऊद ने जान लिया कि रब
ने मुझे इस्राईल का बादशाह बना कर मेरी बादशाही
अपनी क़ौम इस्राईल की ख़ातिर सरफ़राज़ कर दी है।
13 हब्रून से यरूशलम में मुन्तक़िल होने के बाद
दाऊद ने मज़ीद बीवियों और दाश्ताओं से शादी की।
नतीजे में यरूशलम में उस के कई बेटे-बेटियाँ पैदा
हुए। 14 जो बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मूअ,
सोबाब, नातन, सुलेमान, 15 इब्हार, इलीसूअ, नफ़ज,
यफ़ीअ, 16 इलीसमा, इल्यदा और इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह

17 जब फ़िलिस्तियों को इत्तिला मिली कि दाऊद
को मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया गया है
तो उन्हों ने अपने फ़ौजियों को इस्राईल में भेज दिया
ताकि उसे पकड़ लें। लेकिन दाऊद को पता चल
गया, और उस ने एक पहाड़ी क़िले में पनाह ले ली।
18 जब फ़िलिस्ती इस्राईल में पहुँच कर वादी-ए-
रफ़ाईम में फैल गए 19 तो दाऊद ने रब से दरयाफ़्त
किया, “क्या मैं फ़िलिस्तियों पर हम्ला करूँ? क्या तू
मुझे उन पर फ़त्ह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया,
“हाँ, उन पर हम्ला कर! मैं उन्हें ज़रूर तेरे क़ब्ज़े में
कर दूँगा।” 20 चुनाँचे दाऊद अपने फ़ौजियों को ले
कर बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उस ने फ़िलिस्तियों को
शिकस्त दी। बाद में उस ने गवाही दी, “जितने ज़ोर
से बन्द के टूट जाने पर पानी उस से फूट निकलता
है उतने ज़ोर से आज रब मेरे देखते देखते दुश्मन की
सफ़ों में से फूट निकला है।” चुनाँचे उस जगह का
नाम बाल-पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’
पड़ गया। 21 फ़िलिस्ती अपने बुत छोड़ कर भाग गए,

और वह दाऊद और उस के आदमियों के क़ब्ज़े में आ गए।

22 एक बार फिर फ़िलिस्ती आ कर वादी-ए-रफ़ाईम
में फैल गए। 23 जब दाऊद ने रब से दरयाफ़्त किया तो
उस ने जवाब दिया, “इस मर्तबा उन का सामना मत
करना बल्कि उन के पीछे जा कर बका के दरख़्तों
के सामने उन पर हम्ला कर। 24 जब उन दरख़्तों की
चोटियों से क़दमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार!
यह इस का इशारा होगा कि रब ख़ुद तेरे आगे आगे
चल कर फ़िलिस्तियों को मारने के लिए निकल आया
है।”

25 दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे कर जिबऊन से ले कर
जज़र तक उन का ताक़्क़ुब किया।

दाऊद अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में ले आता है

6 1 एक बार फिर दाऊद ने इस्राईल के चुनीदा
आदमियों को जमा किया। 30,000 अफ़राद थे।
2 उन के साथ मिल कर वह यहूदाह के बाला पहुँच
गया ताकि अल्लाह का सन्दूक़ उठा कर यरूशलम
ले जाएँ, वही सन्दूक़ जिस पर रब्ब-उल-अफ़्वाज
के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह सन्दूक़ के
ऊपर करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है।
3–4 लोगों ने अल्लाह के सन्दूक़ को पहाड़ी पर वाक़े
अबीनदाब के घर से निकाल कर एक नई बैलगाड़ी
पर रख दिया, और अबीनदाब के दो बेटे उज़्ज़ा
और अख़ियो उसे यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे।
अख़ियो गाड़ी के आगे आगे 5 और दाऊद बाक़ी
तमाम लोगों के साथ पीछे चल रहा था। सब रब
के हुज़ूर पूरे ज़ोर से ख़ुशी मनाने और गीत गाने लगे।
मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों,
सरोदों, दफ़ों, ख़न्जरियों [b]और झाँझों की आवाज़ों
से गूँज उठी।

6 वह गन्दुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिस
के मालिक का नाम नकोन था। वहाँ बैल अचानक
बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अल्लाह का सन्दूक़
पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 7 उसी लम्हे रब
का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्यूँकि उस ने अल्लाह
के सन्दूक़ को छूने की जुरअत की थी। वहीं अल्लाह
के सन्दूक़ के पास ही उज़्ज़ा गिर कर हलाक हो गया।
8 दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज़्ज़ा
पर यूँ टूट पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम
परज़-उज़्ज़ा यानी ‘उज़्ज़ा पर टूट पड़ना’ है।

9 उस दिन दाऊद को रब से ख़ौफ़ आया। उस ने
सोचा, “रब का सन्दूक़ किस तरह मेरे पास पहुँच
सकेगा?” 10 चुनाँचे उस ने फ़ैसला किया कि हम
रब का सन्दूक़ यरूशलम नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे
ओबेद-अदोम जाती के घर में महफ़ूज़ रखेंगे। 11 वहाँ
वह तीन माह तक पड़ा रहा।

इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम
और उस के पूरे घराने को बरकत दी। 12 एक दिन
दाऊद को इत्तिला दी गई, “जब से अल्लाह का सन्दूक़
ओबेद-अदोम के घर में है उस वक़्त से रब ने उस के
घराने और उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी
है।” यह सुन कर दाऊद ओबेद-अदोम के घर गया
और ख़ुशी मनाते हुए अल्लाह के सन्दूक़ को दाऊद
के शहर ले आया। 13 छः क़दमों के बाद दाऊद ने
रब का सन्दूक़ उठाने वालों को रोक कर एक साँड
और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा क़ुर्बान किया। 14 जब
जुलूस आगे निकला तो दाऊद पूरे ज़ोर के साथ रब
के हुज़ूर नाचने लगा। वह कतान का बालापोश पहने
हुए था। 15 ख़ुशी के नारे लगा लगा कर और नरसिंगे
फूँक फूँक कर दाऊद और तमाम इस्राईली रब का
सन्दूक़ यरूशलम ले आए।

16 रब का सन्दूक़ दाऊद के शहर में दाख़िल हुआ
तो दाऊद की बीवी मीकल बिन्त साऊल खिड़की में
से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह रब के हुज़ूर

---

[b]इब्रानी में इस से मराद झुनझुने जैसा कोई साज़ है।

कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो मीकल ने दिल में उसे हक़ीर जाना।

17 रब का सन्दूक़ उस तम्बू के दरमियान में रखा गया जो दाऊद ने उस के लिए लगवाया था। फिर दाऊद ने रब के हुज़ूर भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 18 इस के बाद उस ने क़ौम को रब्ब-उल-अफ़्वाज के नाम से बरकत दे कर 19 हर इस्राईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी। फिर तमाम लोग अपने अपने घरों को वापस चले गए।

20 दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान को बरकत दे कर सलाम करे। वह अभी महल के अन्दर नहीं पहुँचा था कि मीकल निकल कर उस से मिलने आई। उस ने तन्ज़न कहा, “वाह जी वाह। आज इस्राईल का बादशाह कितनी शान के साथ लोगों को नज़र आया है! अपने लोगों की लौंडियों के सामने ही उस ने अपने कपड़े उतार दिए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह गंवार करते हैं।” 21 दाऊद ने जवाब दिया, “मैं रब ही के हुज़ूर नाच रहा था, जिस ने आप के बाप और उस के ख़ानदान को तर्क करके मुझे चुन लिया और इस्राईल का बादशाह बना दिया है। उसी की ताज़ीम में मैं आइन्दा भी नाचूँगा। 22 हाँ, मैं इस से भी ज़्यादा ज़लील होने के लिए तय्यार हूँ। जहाँ तक लौंडियों का ताल्लुक़ है, वह ज़रूर मेरी इज़्ज़त करेंगी।”

23 जीते जी मीकल बेऔलाद रही।

रब दाऊद से अबदी बादशाही का वादा करता है

7 1 दाऊद बादशाह सुकून से अपने महल में रहने लगा, क्यूँकि रब ने इर्दगिर्द के दुश्मनों को उस पर हम्ला करने से रोक दिया था। 2 एक दिन दाऊद ने नातन नबी से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि अल्लाह का सन्दूक़ अब तक तम्बू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं है!”

3 नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़्ज़ाई की, “जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। रब आप के साथ है।”

4 लेकिन उसी रात रब नातन से हमकलाम हुआ, 5 “मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जा कर उसे बता दे कि रब फ़रमाता है, ‘क्या तू मेरी रिहाइश के लिए मकान तामीर करेगा? हरगिज़ नहीं! 6 आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रह कर जगह-ब-जगह फिरता रहा हूँ। 7 जिस दौरान मैं तमाम इस्राईलियों के साथ इधर उधर फिरता रहा क्या मैं ने इस्राईल के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें मैं ने अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया था? क्या मैं ने उन में से किसी से कहा कि तुम ने मेरे लिए देवदार का घर क्यूँ नहीं बनाया?’

8 चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी क़ौम इस्राईल का बादशाह बना दिया है। 9 जहाँ भी तू ने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते मैं ने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सब से अज़ीम आदमियों के नामों के बराबर ही होगा। 10 और मैं अपनी क़ौम इस्राईल के लिए एक वतन मुहय्या करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यूँ लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़ कर महफ़ूज़ रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया करती थीं, 11 उस वक़्त से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी मुक़र्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को तुझ से दूर रख कर तुझे अम्न-ओ-अमान अता करूँगा। आज रब फ़रमाता है कि मैं ही तेरे लिए घर बनाऊँगा।

12 जब तू बूढ़ा हो कर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा के साथ आराम करेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस की

बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 13 वही मेरे नाम
के लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस की बादशाही
का तख़्त अबद तक क़ाइम रखूँगा। 14 मैं उस का
बाप हूँगा, और वह मेरा बेटा होगा। जब कभी उस
से ग़लती होगी तो मैं उसे यूँ छड़ी से सज़ा दूँगा जिस
तरह इन्सानी बाप अपने बेटे की तर्बियत करता है।
15 लेकिन मेरी नज़र-ए-करम कभी उस से नहीं हटेगी।
उस के साथ मैं वह सुलूक नहीं करूँगा जो मैं ने
साऊल के साथ किया जब उसे तेरे सामने से हटा
दिया। 16 तेरा घराना और तेरी बादशाही हमेशा मेरे
हुज़ूर क़ाइम रहेगी, तेरा तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा'।"

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

17 नातन ने दाऊद के पास जा कर उसे सब कुछ
सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 18 तब
दाऊद अह्द के सन्दूक़ के पास गया और रब के
हुज़ूर बैठ कर दुआ करने लगा,

"ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं कौन हूँ और मेरा
ख़ानदान क्या हैसियत रखता है कि तू ने मुझे यहाँ
तक पहुँचाया है? 19 और अब ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने को है,
क्यूँकि तू ने अपने ख़ादिम के घराने के मुस्तक़बिल
के बारे में भी वादा किया है। क्या तू आम तौर
पर इन्सान के साथ ऐसा सुलूक करता है? हरगिज़
नहीं! 20 लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ? ऐ रब क़ादिर-
ए-मुतलक़, तू तो अपने ख़ादिम को जानता है। 21 तू
ने अपने फ़रमान की ख़ातिर और अपनी मर्ज़ी के
मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके अपने ख़ादिम को
इत्तिला दी है।

22 ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू कितना अज़ीम है!
तुझ जैसा कोई नहीं है। हम ने अपने कानों से सुन
लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
23 दुनिया में कौन सी क़ौम तेरी उम्मत इस्राईल की
मानिन्द है? तू ने इसी एक क़ौम का फ़िद्या दे कर
उसे ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी क़ौम बना लिया।
तू ने इस्राईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम
करके अपने नाम की शुहरत फैला दी। हमें मिस्र से
रिहा करके तू ने क़ौमों और उन के देवताओं को
हमारे आगे से निकाल दिया। 24 ऐ रब, तू इस्राईल को
हमेशा के लिए अपनी क़ौम बना कर उन का ख़ुदा बन
गया है। 25 चुनाँचे ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, जो बात
तू ने अपने ख़ादिम और उस के घराने के बारे में की
है उसे अबद तक क़ाइम रख और अपना वादा पूरा
कर। 26 तब तेरा नाम अबद तक मश्हूर रहेगा और
लोग तस्लीम करेंगे कि रब्ब-उल-अफ़्वाज इस्राईल
का ख़ुदा है। फिर तेरे ख़ादिम दाऊद का घराना भी
तेरे हुज़ूर क़ाइम रहेगा।

27 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, इस्राईल के ख़ुदा, तू ने
अपने ख़ादिम के कान को इस बात के लिए खोल
दिया है। तू ही ने फ़रमाया, 'मैं तेरे लिए घर तामीर
करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे ख़ादिम ने यूँ तुझ से
दुआ करने की जुरअत की है। 28 ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू ही ख़ुदा है, और तेरी ही बातों पर एतिमाद
किया जा सकता है। तू ने अपने ख़ादिम से इन अच्छी
चीज़ों का वादा किया है। 29 अब अपने ख़ादिम के
घराने को बरकत देने पर राज़ी हो ताकि वह हमेशा
तक तेरे हुज़ूर क़ाइम रहे। क्यूँकि तू ही ने यह फ़रमाया
है, और चूँकि तू ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने बरकत दी
है इस लिए तेरे ख़ादिम का घराना अबद तक मुबारक
रहेगा।"

दाऊद की जंगें

8 1 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे कर उन्हें अपने ताबे
कर लिया और हुकूमत की बागडोर उन के हाथों से
छीन ली।

2 उस ने मोआबियों पर भी फ़त्ह पाई। मोआबी
क़ैदियों की क़तार बना कर उस ने उन्हें ज़मीन पर
लिटा दिया। फिर रस्सी का टुकड़ा ले कर उस ने
क़तार का नाप लिया। जितने लोग रस्सी की लम्बाई
में आ गए वह एक गुरोह बन गए। यूँ दाऊद ने लोगों
को गुरोहों में तक़्सीम किया। फिर उस ने गुरोहों के

तीन हिस्से बना कर दो हिस्सों के सर क़लम किए और एक हिस्से को ज़िन्दा छोड़ दिया। लेकिन जितने क़ैदी छूट गए वह दाऊद के ताबे रह कर उसे ख़राज देते रहे।

3 दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र बिन रहोब को भी हरा दिया जब हददअज़र दरया-ए-फ़ुरात पर दुबारा क़ाबू पाने के लिए निकल आया था। 4 दाऊद ने 1,700 घुड़सवारों और 20,000 पियादा सिपाहियों को गिरिफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को उस ने अपने लिए मह्फ़ूज़ रखा, जबकि बाक़ियों की उस ने कोंचें काट दीं ताकि वह आइन्दा जंग के लिए इस्तेमाल न हो सकें।

5 जब दमिश्क़ के अरामी बाशिन्दे ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद ने उन के 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 6 फिर उस ने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी चौकियाँ क़ाइम कीं। अरामी उस के ताबे हो गए और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। 7 सोने की जो ढालें हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद यरूशलम ले गया। 8 हददअज़र के दो शहरों बताह और बेरोती से उस ने कस्रत का पीतल छीन लिया।

9 जब हमात के बादशाह तूई को इत्तिला मिली कि दाऊद ने हददअज़र की पूरी फ़ौज पर फ़त्ह पाई है 10 तो उस ने अपने बेटे यूराम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। यूराम ने दाऊद को हददअज़र पर फ़त्ह के लिए मुबारकबाद दी, क्यूँकि हददअज़र तूई का दुश्मन था, और उन के दरमियान जंग रही थी। यूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और पीतल के तुह्फ़े भी पेश किए। 11 दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मख़्सूस कर दीं। जहाँ भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब आया वहाँ की सोना-चाँदी उस ने रब के लिए मख़्सूस कर दी। 12 यूँ अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिया, अमालीक़ और ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र बिन रहोब की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

13 जब दाऊद ने नमक की वादी में अदोमियों पर फ़त्ह पाई तो उस की शुहरत मज़ीद फैल गई। उस जंग में दुश्मन के 18,000 अफ़राद हलाक हुए। 14 दाऊद ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी फ़ौजी चौकियाँ क़ाइम कीं, और तमाम अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की मदद करके उसे फ़त्ह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

15 जितनी देर दाऊद पूरे इस्राईल पर हुकूमत करता रहा उतनी देर तक उस ने ध्यान दिया कि क़ौम के हर एक शख़्स को इन्साफ़ मिल जाए। 16 योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास था। 17 सदोक़ बिन अख़ीतूब और अख़ीमलिक बिन अबियातर इमाम थे। सिरायाह मीरमुन्शी था। 18 बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते बनाम करेती-ओ-फ़लेती का कप्तान था। दाऊद के बेटे इमाम थे।

दाऊद यूनतन के बेटे पर मेहरबानी करता है

9 1 एक दिन दाऊद पूछने लगा, “क्या साऊल के ख़ानदान का कोई फ़र्द बच गया है? मैं यूनतन की ख़ातिर उस पर अपनी मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।”

2 एक आदमी को बुलाया गया जो साऊल के घराने का मुलाज़िम था। उस का नाम ज़ीबा था। दाऊद ने सवाल किया, “क्या आप ज़ीबा हैं?” ज़ीबा ने जवाब दिया, “जी, आप का ख़ादिम हाज़िर है।” 3 बादशाह ने दरयाफ़्त किया, “क्या साऊल के ख़ानदान का कोई फ़र्द ज़िन्दा रह गया है? मैं उस पर अल्लाह की मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।” ज़ीबा ने कहा, “यूनतन का एक बेटा अब तक ज़िन्दा है। वह दोनों टाँगों से मफ़्लूज है।” 4 दाऊद ने पूछा, “वह कहाँ है?” ज़ीबा ने जवाब दिया, “वह लो-दिबार में मकीर बिन अम्मीएल के हाँ रहता है।” 5 दाऊद ने उसे फ़ौरन दरबार में बुला लिया।

6 यूनतन के जिस बेटे का ज़िक्र ज़ीबा ने किया वह
मिफ़ीबोसत था। जब उसे दाऊद के सामने लाया गया
तो उस ने मुँह के बल झुक कर उस की इज़्ज़त की।
दाऊद ने कहा, “मिफ़ीबोसत!” उस ने जवाब दिया,
“जी, आप का ख़ादिम हाज़िर है।” 7 दाऊद बोला,
“डरें मत। आज मैं आप के बाप यूनतन के साथ किया
हुआ वादा पूरा करके आप पर अपनी मेहरबानी का
इज़हार करना चाहता हूँ। अब सुनें! मैं आप को आप
के दादा साऊल की तमाम ज़मीनें वापस कर देता हूँ।
इस के इलावा मैं चाहता हूँ कि आप रोज़ाना मेरे साथ
खाना खाया करें।”

8 मिफ़ीबोसत ने दुबारा झुक कर बादशाह की
ताज़ीम की, “मैं कौन हूँ कि आप मुझ जैसे मुर्दा कुत्ते
पर ध्यान दे कर ऐसी मेहरबानी फ़रमाएँ!” 9 दाऊद
ने साऊल के पुराने मुलाज़िम ज़ीबा को बुला कर
उसे हिदायत दी, “मैं ने आप के मालिक के पोते को
साऊल और उस के ख़ानदान की तमाम मिलकियत
दे दी है। 10 अब आप की ज़िम्मादारी यह है कि आप
अपने बेटों और नौकरों के साथ उस के खेतों को
सँभालें ताकि उस का ख़ानदान ज़मीनों की पैदावार
से गुज़ारा कर सके। लेकिन मिफ़ीबोसत ख़ुद यहाँ रह
कर मेरे बेटों की तरह मेरे साथ खाना खाया करेगा।”
(ज़ीबा के 15 बेटे और 20 नौकर थे)।

11 ज़ीबा ने जवाब दिया, “मैं आप की ख़िदमत में
हाज़िर हूँ। जो भी हुक्म आप देंगे मैं करने के लिए
तय्यार हूँ।” 12–13 उस दिन से ज़ीबा के घराने के
तमाम अफ़राद मिफ़ीबोसत के मुलाज़िम हो गए।
मिफ़ीबोसत ख़ुद जो दोनों टाँगों से मफ़्लूज था
यरूशलम में रिहाइशपज़ीर हुआ और रोज़ाना दाऊद
बादशाह के साथ खाना खाता रहा। उस का एक
छोटा बेटा था जिस का नाम मीका था।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

10 1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह
फ़ौत हुआ, और उस का बेटा हनून
तख़्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, “नाहस ने हमेशा
मुझ पर मेहरबानी की थी, इस लिए अब मैं भी उस
के बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।” उस ने बाप
की वफ़ात का अफ़्सोस करने के लिए हनून के पास
वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार
में पहुँच गए 3 तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग हनून बादशाह
के कान में मन्फ़ी बातें भरने लगे, “क्या दाऊद ने
इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़ इस लिए भेजा है
कि वह अफ़्सोस करके आप के बाप का एहतिराम
करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में
यह जासूस हैं जो हमारे दार-उल-हकूमत के बारे
में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस
पर क़ब्ज़ा कर सकें।” 4 चुनाँचे हनून ने दाऊद के
आदमियों को पकड़वा कर उन की दाढ़ियों का
आधा हिस्सा मुंडवा दिया और उन के लिबास को
कमर से ले कर पाँओ तक काट कर उतरवाया। इसी
हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।

5 जब दाऊद को इस की ख़बर मिली तो उस
ने अपने क़ासिदों को उन से मिलने के लिए भेजा
ताकि उन्हें बताएँ, “यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे
रहें जब तक आप की दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो
जाएँ।” क्यूँकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी
शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत
से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इस लिए उन्हों
ने किराए पर कई जगहों से फ़ौजी तलब किए।
बैत-रहोब और ज़ोबाह के 20,000 अरामी पियादा
सिपाही, माका का बादशाह 1,000 फ़ौजियों समेत
और मुल्क-ए-तोब के 12,000 सिपाही उन की मदद
करने आए। 7 जब दाऊद को इस का इल्म हुआ
तो उस ने योआब को पूरी फ़ौज के साथ उन
का मुक़ाबला करने के लिए भेज दिया। 8 अम्मोनी
अपने दार-उल-हकूमत रब्बा से निकल कर शहर
के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा हुए जबकि उन

के अरामी इत्तिहादी ज़ोबाह और रहोब मुल्क-ए-तोब और माका के मर्दों समेत कुछ फ़ासिले पर खुले मैदान में खड़े हो गए।

9 जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उस ने अपनी फ़ौज को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया। सब से अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के सिपाहियों से लड़ने के लिए तय्यार हुआ। 10 बाक़ी आदमियों को उस ने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 11 एक दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, “अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने लगें तो मेरे पास आ कर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों पर क़ाबू न पा सकें तो मैं आ कर आप की मदद करूँगा। 12 हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी क़ौम और अपने ख़ुदा के शहरों के लिए लड़ें। और रब वह कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।”

13 योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के फ़ौजियों पर हम्ला किया तो वह उस के सामने से भागने लगे। 14 यह देख कर अम्मोनी अबीशै से फ़रार हो कर शहर में दाख़िल हुए। फिर योआब अम्मोनियों से लड़ने से बाज़ आया और यरूशलम वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

15 जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्ज़ती का एहसास हुआ तो वह दुबारा जमा हो गए। 16 हददअज़र ने दरया-ए-फ़ुरात के पार मसोपुतामिया में आबाद अरामियों को बुलाया ताकि वह उस की मदद करें। फिर सब हिलाम पहुँच गए। हददअज़र की फ़ौज पर मुक़र्रर अफ़्सर सोबक उन की राहनुमाई कर रहा था। 17 जब दाऊद को ख़बर मिली तो उस ने इस्राईल के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमियों को जमा किया और दरया-ए-यर्दन को पार करके हिलाम पहुँच गया। शाम के फ़ौजी सफ़आरा हो कर इस्राईलियों का मुक़ाबला करने लगे। 18 लेकिन उन्हें दुबारा शिकस्त मान कर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा उन के 700 रथबानों के इलावा 40,000 पियादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर सोबक को इतना ज़ख़्मी कर दिया कि वह मैदान-ए-जंग में हलाक हो गया।

19 जो अरामी बादशाह पहले हददअज़र के ताबे थे उन्हों ने अब हार मान कर इस्राईलियों से सुलह कर ली और उन के ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर जुरअत न की।

दाऊद और बत-सबा

11 1 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। दाऊद बादशाह ने भी अपने फ़ौजियों को लड़ने के लिए भेज दिया। योआब की राहनुमाई में उस के अफ़्सर और पूरी फ़ौज अम्मोनियों से लड़ने के लिए रवाना हुए। वह दुश्मन को तबाह करके दार-उल-हकूमत रब्बा का मुहासरा करने लगे। दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा।

2 एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब शाम के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर टहलने लगा। अचानक उस की नज़र एक औरत पर पड़ी जो अपने सहन में नहा रही थी। औरत निहायत ख़ूबसूरत थी। 3 दाऊद ने किसी को उस के बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेज दिया। वापस आ कर उस ने इत्तिला दी, “औरत का नाम बत-सबा है। वह इलीआम की बेटी और ऊरियाह हित्ती की बीवी है।” 4 तब दाऊद ने क़ासिदों को बत-सबा के पास भेजा ताकि उसे महल में ले आएँ। औरत आई तो दाऊद उस से हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने घर वापस चली गई। (थोड़ी देर पहले उस ने वह रस्म अदा की थी जिस का तक़ाज़ा शरीअत माहवारी के बाद करती है ताकि औरत दुबारा पाक-साफ़ हो जाए)।

5 कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा पाँओ भारी हो गया है। उस ने दाऊद को इत्तिला दी, “मेरा पाँओ भारी हो गया है।” 6 यह सुनते ही दाऊद ने योआब को पैग़ाम भेजा, “ऊरियाह हित्ती को मेरे पास

भेज दें!” योआब ने उसे भेज दिया। 7 जब ऊरियाह
दरबार में पहुँचा तो दाऊद ने उस से योआब और
फ़ौज का हाल मालूम किया और पूछा कि जंग किस
तरह चल रही है?
8 फिर उस ने ऊरियाह को बताया, “अब अपने घर
जाएँ और पाँओ धो कर आराम करें।” ऊरियाह अभी
महल से दूर नहीं गया था कि एक मुलाज़िम ने उस
के पीछे भाग कर उसे बादशाह की तरफ़ से तुह्फ़ा
दिया। 9 लेकिन ऊरियाह अपने घर न गया बल्कि रात
के लिए बादशाह के मुहाफ़िज़ों के साथ ठहरा रहा जो
महल के दरवाज़े के पास सोते थे।
10 दाऊद को इस बात का पता चला तो उस ने
अगले दिन उसे दुबारा बुलाया। उस ने पूछा, “क्या
बात है? आप तो बड़ी दूर से आए हैं। आप अपने
घर क्यूँ न गए?” 11 ऊरियाह ने जवाब दिया, “अह्द
का सन्दूक़ और इस्राईल और यहूदाह के फ़ौजी
झोंपड़ियों में रह रहे हैं। योआब और बादशाह के
अफ़सर भी खुले मैदान में ठहरे हुए हैं तो क्या मुनासिब
है कि मैं अपने घर जा कर आराम से खाऊँ पियूँ
और अपनी बीवी से हमबिसतर हो जाऊँ? हरगिज़
नहीं! आप की हयात की क़सम, मैं कभी ऐसा नहीं
करूँगा।”
12 दाऊद ने उसे कहा, “एक और दिन यहाँ ठहरें।
कल मैं आप को वापस जाने दूँगा।” चुनाँचे ऊरियाह
एक और दिन यरूशलम में ठहरा रहा।
13 शाम के वक़्त दाऊद ने उसे खाने की दावत दी।
उस ने उसे इतनी मै पिलाई कि ऊरियाह नशे में धुत
हो गया, लेकिन इस मर्तबा भी वह अपने घर न गया
बल्कि दुबारा महल में मुहाफ़िज़ों के साथ सो गया।

दाऊद ऊरियाह को क़त्ल करवाता है

14 अगले दिन सुब्ह दाऊद ने योआब को ख़त लिख
कर ऊरियाह के हाथ भेज दिया। 15 उस में लिखा था,
“ऊरियाह को सब से अगली सफ़ में खड़ा करें, जहाँ
लड़ाई सब से सख़्त होती है। फिर अचानक पीछे की
तरफ़ हट कर उसे छोड़ दें ताकि दुश्मन उसे मार दे।”
16 यह पढ़ कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी
जगह पर खड़ा किया जिस के बारे में उसे इल्म था
कि दुश्मन के सब से ज़बरदस्त फ़ौजी वहाँ लड़ते हैं।
17 जब अम्मोनियों ने शहर से निकल कर उन पर हम्ला
किया तो कुछ इस्राईली शहीद हुए। ऊरियाह हित्ती भी
उन में शामिल था।
18 योआब ने लड़ाई की पूरी रिपोर्ट भेज दी।
19 दाऊद को यह पैग़ाम पहुँचाने वाले को उस ने
बताया, “जब आप बादशाह को तफ़्सील से लड़ाई
का सारा सिलसिला सुनाएँगे 20 तो हो सकता है वह
ग़ुस्से हो कर कहे, ‘आप शहर के इतने क़रीब क्यूँ
गए? क्या आप को मालूम न था कि दुश्मन फ़सील से
तीर चलाएँगे? 21 क्या आप को याद नहीं कि क़दीम
ज़माने में जिदाऊन के बेटे अबीमलिक के साथ क्या
हुआ? तैबिज़ शहर में एक औरत ही ने उसे मार
डाला। और वजह यह थी कि वह क़िले के इतने
क़रीब आ गया था कि औरत दीवार पर से चक्की का
ऊपर का पाट उस पर फैंक सकी। शहर की फ़सील
के इस क़दर क़रीब लड़ने की क्या ज़रूरत थी?’
अगर बादशाह आप पर ऐसे इल्ज़ामात लगाएँ तो
जवाब में बस इतना ही कह देना, ‘ऊरियाह हित्ती भी
मारा गया है’।”
22 क़ासिद रवाना हुआ। जब यरूशलम पहुँचा तो
उस ने दाऊद को योआब का पूरा पैग़ाम सुना दिया,
23 “दुश्मन हम से ज़्यादा ताक़तवर थे। वह शहर से
निकल कर खुले मैदान में हम पर टूट पड़े। लेकिन
हम ने उन का सामना यूँ किया कि वह पीछे हट गए,
बल्कि हम ने उन का ताक़्क़ुब शहर के दरवाज़े तक
किया। 24 लेकिन अफ़्सोस कि फिर कुछ तीरअन्दाज़
हम पर फ़सील पर से तीर बरसाने लगे। आप के
कुछ ख़ादिम खेत आए और ऊरियाह हित्ती भी उन में
शामिल है।” 25 दाऊद ने जवाब दिया, “योआब को
बता देना कि यह मुआमला आप को हिम्मत हारने न
दे। जंग तो ऐसी ही होती है। कभी कोई यहाँ तलवार
का लुक़्मा हो जाता है, कभी वहाँ। पूरे अज़्म के साथ

शहर से जंग जारी रख कर उसे तबाह कर दें। यह कह कर योआब की हौसलाअफ़ज़ाई करें।”

26 जब बत-सबा को इत्तिला मिली कि ऊरियाह नहीं
रहा तो उस ने उस का मातम किया। 27 मातम का
वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर बुला कर
उस से शादी कर ली। फिर उस के बेटा पैदा हुआ।

लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत बुरी लगी।

नातन दाऊद को मुजरिम ठहराता है

12 1 रब ने नातन नबी को दाऊद के पास भेज
दिया। बादशाह के पास पहुँच कर वह
कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते थे।
एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। 2 अमीर की बहुत भेड़-
बकरियाँ और गाय-बैल थे, 3 लेकिन ग़रीब के पास
कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही सी बच्ची जो उस
ने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उस की परवरिश करता
रहा, और वह घर में उस के बच्चों के साथ साथ बड़ी
होती गई। वह उस की प्लेट से खाती, उस के प्याले
से पीती और रात को उस के बाज़ूओं में सो जाती।
ग़रज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की सी हैसियत रखती
थी। 4 एक दिन अमीर के हाँ मेहमान आया। जब उस
के लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं
करता था कि अपने रेवड़ में से किसी जानवर को
ज़बह करे, इस लिए उस ने ग़रीब आदमी से उस की
नन्ही सी भेड़ ले कर उसे मेहमान के लिए तय्यार
किया।”

5 यह सुन कर दाऊद को बड़ा ग़ुस्सा आया। वह
पुकारा, “रब की हयात की क़सम, जिस आदमी ने
यह किया वह सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है। 6 लाज़िम
है कि वह भेड़ की बच्ची के इवज़ ग़रीब को भेड़ के
चार बच्चे दे। यही उस की मुनासिब सज़ा है, क्यूँकि
उस ने ऐसी हरकत करके ग़रीब पर तरस न खाया।”

7 नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी हैं!
रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं ने तुझे मसह
करके इस्राईल का बादशाह बना दिया, और मैं ही
ने तुझे साऊल से महफ़ूज़ रखा। 8 साऊल का घराना
उस की बीवियों समेत मैं ने तुझे दे दिया। हाँ, पूरा
इस्राईल और यहूदाह भी तेरे तहत आ गए हैं। और
अगर यह तेरे लिए कम होता तो मैं तुझे मज़ीद देने
के लिए भी तय्यार होता। 9 अब मुझे बता कि तू ने
मेरी मर्ज़ी को हक़ीर जान कर ऐसी हरकत क्यूँ की
है जिस से मुझे नफ़रत है? तू ने ऊरियाह हित्ती को
क़त्ल करवाके उस की बीवी को छीन लिया है। हाँ,
तू क़ातिल है, क्यूँकि तू ने हुक्म दिया कि ऊरियाह
को अम्मोनियों से लड़ते लड़ते मरवाना है। 10 चूँकि
तू ने मुझे हक़ीर जान कर ऊरियाह हित्ती की बीवी
को उस से छीन लिया इस लिए आइन्दा तलवार तेरे
घराने से नहीं हटेगी।’

11 रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तेरे अपने
ख़ानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते
देखते मैं तेरी बीवियों को तुझ से छीन कर तेरे क़रीब
के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया
उन से हमबिसतर होगा। 12 तू ने चुपके से गुनाह
किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा वह
अलानिया और पूरे इस्राईल के देखते देखते होगा’।”

13 तब दाऊद ने इक़्रार किया, “मैं ने रब का गुनाह
किया है।” नातन ने जवाब दिया, “रब ने आप को
मुआफ़ कर दिया है और आप नहीं मरेंगे। 14 लेकिन
इस हरकत से आप ने रब के दुश्मनों को कुफ़्र बकने
का मौक़ा फ़राहम किया है, इस लिए बत-सबा से
होने वाला बेटा मर जाएगा।”

15 तब नातन अपने घर चला गया।

दाऊद का बेटा मर जाता है

फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और
वह सख़्त बीमार हो गया। 16 दाऊद ने अल्लाह से
इल्तिमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रख कर
वह रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा। 17 घर के
बुज़ुर्ग उस के इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि वह
फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ाइदा। वह उन के साथ
खाने के लिए भी तय्यार नहीं था।

18 सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया। दाऊद के
मुलाज़िमों ने उसे ख़बर पहुँचाने की जुरअत न की,
क्यूँकि उन्हों ने सोचा, “जब बच्चा अभी ज़िन्दा था तो
हम ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उस ने
हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे की मौत की
ख़बर दें तो ख़तरा है कि वह कोई नुक़सानदेह क़दम
उठाए।”
19 लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी
आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उस ने पूछा,
“क्या बेटा मर गया है?” उन्हों ने जवाब दिया, “जी,
वह मर गया है।”
20 यह सुन कर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह
नहाया और जिस्म को ख़ुश्बूदार तेल से मल कर
साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उस ने रब के घर में
जा कर उस की परस्तिश की। इस के बाद वह महल
में वापस गया और खाना मंगवा कर खाया। 21 उस
के मुलाज़िम हैरान हुए और बोले, “जब बच्चा ज़िन्दा
था तो आप रोज़ा रख कर रोते रहे। अब बच्चा जाँ-ब-
हक़ हो गया है तो आप उठ कर दुबारा खाना खा रहे
हैं। क्या वजह है?” 22 दाऊद ने जवाब दिया, “जब
तक बच्चा ज़िन्दा था तो मैं रोज़ा रख कर रोता रहा।
ख़याल यह था कि शायद रब मुझ पर रहम करके उसे
ज़िन्दा छोड़ दे। 23 लेकिन जब वह कूच कर गया है
तो अब रोज़ा रखने का क्या फ़ाइदा? क्या मैं इस से
उसे वापस ला सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! एक दिन मैं
ख़ुद ही उस के पास पहुँचूँगा। लेकिन उस का यहाँ
मेरे पास वापस आना नामुमकिन है।”
24 फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत-सबा के पास जा
कर उसे तसल्ली दी और उस से हमबिसतर हुआ।
तब उस के एक और बेटा पैदा हुआ। दाऊद ने उस
का नाम सुलेमान यानी अम्नपसन्द रखा। यह बच्चा
रब को प्यारा था, 25 इस लिए उस ने नातन नबी की
मारिफ़त इत्तिला दी कि उस का नाम यदीदियाह यानी
‘रब को प्यारा’ रखा जाए।

रब्बा शहर पर फ़त्ह

26 अब तक योआब अम्मोनी दार-उल-हकूमत
रब्बा का मुहासरा किए हुए था। फिर वह शहर के
एक हिस्से बनाम ‘शाही शहर’ पर क़ब्ज़ा करने में
कामयाब हो गया। 27 उस ने दाऊद को इत्तिला दी,
“मैं ने रब्बा पर हम्ला करके उस जगह पर क़ब्ज़ा कर
लिया है जहाँ पानी दस्तयाब है। 28 चुनाँचे अब फ़ौज
के बाक़ी अफ़राद को ला कर ख़ुद शहर पर क़ब्ज़ा
कर लें। वर्ना लोग समझेंगे कि मैं ही शहर का फ़ातेह
हूँ।”
29 चुनाँचे दाऊद फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को ले कर
रब्बा पहुँचा। जब शहर पर हम्ला किया तो वह उस के
क़ब्ज़े में आ गया। 30 दाऊद ने हनून बादशाह का ताज
उस के सर से उतार कर अपने सर पर रख लिया।
सोने के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और
उस में एक बेशक़ीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद
ने शहर से बहुत सा लूटा हुआ माल ले कर 31 उस के
बाशिन्दों को ग़ुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने
की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी
गईं ताकि वह मज़दूरी करें और भट्टों पर काम करें।
यही सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिन्दों के
साथ भी किया गया।
जंग के इख़तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ
यरूशलम लौट आया।

तमर की इस्मतदरी

13 1 दाऊद के बेटे अबीसलूम की ख़ूबसूरत
बहन थी जिस का नाम तमर था। उस का
सौतेला भाई अम्नोन तमर से शदीद मुहब्बत करने
लगा। 2 वह तमर को इतनी शिद्दत से चाहने लगा कि
रंजिश के बाइस बीमार हो गया, क्यूँकि तमर कुंवारी
थी, और अम्नोन को उस के क़रीब आने का कोई
रास्ता नज़र न आया।
3 अम्नोन का एक दोस्त था जिस का नाम यूनदब
था। वह दाऊद के भाई सिमआ का बेटा था और बड़ा

ज़हीन था। 4 उस ने अम्नोन से पूछा, “बादशाह के
बेटे, क्या मसला है? रोज़-ब-रोज़ आप ज़्यादा बुझे हुए
नज़र आ रहे हैं। क्या आप मुझे नहीं बताएँगे कि बात
क्या है?” अम्नोन बोला, “मैं अबीसलूम की बहन
तमर से शदीद मुहब्बत करता हूँ।” 5 यूनदब ने अपने
दोस्त को मश्वरा दिया, “बिस्तर पर लेट जाएँ और
ऐसा ज़ाहिर करें गोया बीमार हैं। जब आप के वालिद
आप का हाल पूछने आएँगे तो उन से दरख़्वास्त
करना, ‘मेरी बहन तमर आ कर मुझे मरीज़ों का खाना
खिलाए। वह मेरे सामने खाना तय्यार करे ताकि मैं
उसे देख कर उस के हाथ से खाना खाऊँ’।”

6 चुनाँचे अम्नोन ने बिस्तर पर लेट कर बीमार होने
का बहाना किया। जब बादशाह उस का हाल पूछने
आया तो अम्नोन ने गुज़ारिश की, “मेरी बहन तमर
मेरे पास आए और मेरे सामने मरीज़ों का खाना बना
कर मुझे अपने हाथ से खिलाए।”

7 दाऊद ने तमर को इत्तिला दी, “आप का भाई
अम्नोन बीमार है। उस के पास जा कर उस के लिए
मरीज़ों का खाना तय्यार करें।” 8 तमर ने अम्नोन के
पास आ कर उस की मौजूदगी में मैदा गूँधा और खाना
तय्यार करके पकाया। अम्नोन बिस्तर पर लेटा उसे
देखता रहा। 9 जब खाना पक गया तो तमर ने उसे
अम्नोन के पास ला कर पेश किया। लेकिन उस ने
खाने से इन्कार कर दिया। उस ने हुक्म दिया, “तमाम
नौकर कमरे से बाहर निकल जाएँ!” जब सब चले
गए 10 तो उस ने तमर से कहा, “खाने को मेरे सोने
के कमरे में ले आएँ ताकि मैं आप के हाथ से खा
सकूँ।” तमर खाने को ले कर सोने के कमरे में अपने
भाई के पास आई।

11 जब वह उसे खाना खिलाने लगी तो अम्नोन
ने उसे पकड़ कर कहा, “आ मेरी बहन, मेरे साथ
हमबिसतर हो!” 12 वह पुकारी, “नहीं, मेरे भाई! मेरी
इस्मतदरी न करें। ऐसा अमल इस्राईल में मना है।
ऐसी बेदीन हरकत मत करना! 13 और ऐसी बेहुरमती
के बाद मैं कहाँ जाऊँ? जहाँ तक आप का ताल्लुक़ है
इस्राईल में आप की बुरी तरह बदनामी हो जाएगी,
और सब समझेंगे कि आप निहायत शरीर आदमी
हैं। आप बादशाह से बात क्यूँ नहीं करते? यक़ीनन
वह आप को मुझ से शादी करने से नहीं रोकेंगे।”
14 लेकिन अम्नोन ने उस की न सुनी बल्कि उसे पकड़
कर उस की इस्मतदरी की।

15 लेकिन फिर अचानक उस की मुहब्बत सख़्त
नफ़रत में बदल गई। पहले तो वह तमर से शदीद
मुहब्बत करता था, लेकिन अब वह इस से बढ़ कर
उस से नफ़रत करने लगा। उस ने हुक्म दिया, “उठ,
दफ़ा हो जा!” 16 तमर ने इल्तिमास की, “हाय, ऐसा
मत करना। अगर आप मुझे निकालेंगे तो यह पहले
गुनाह से ज़्यादा संगीन जुर्म होगा।” लेकिन अम्नोन
उस की सुनने के लिए तय्यार न था। 17 उस ने अपने
नौकर को बुला कर हुक्म दिया, “इस औरत को यहाँ
से निकाल दो और इस के पीछे दरवाज़ा बन्द करके
कुंडी लगाओ!” 18 नौकर तमर को बाहर ले गया और
फिर उस के पीछे दरवाज़ा बन्द करके कुंडी लगा दी।

तमर एक लम्बे बाज़ूओं वाला फ़्राक पहने हुए
थी। बादशाह की तमाम कुंवारी बेटियाँ यही लिबास
पहना करती थीं। 19 बड़ी रंजिश के आलम में उस
ने अपना यह लिबास फाड़ कर अपने सर पर राख
डाल ली। फिर अपना हाथ सर पर रख कर वह
चीख़ती चिल्लाती वहाँ से चली गई। 20 जब घर पहुँच
गई तो अबीसलूम ने उस से पूछा, “मेरी बहन, क्या
अम्नोन ने आप से ज़ियादती की है? अब ख़ामोश हो
जाएँ। वह तो आप का भाई है। इस मुआमले को हद
से ज़्यादा अहमियत मत देना।” उस वक़्त से तमर
अकेली ही अपने भाई अबीसलूम के घर में रही।

21 जब दाऊद को इस वाकिए की ख़बर मिली तो
उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 22 अबीसलूम ने अम्नोन से
एक भी बात न की। न उस ने उस पर कोई इल्ज़ाम
लगाया, न कोई अच्छी बात की, क्यूँकि तमर की
इस्मतदरी की वजह से वह अपने भाई से सख़्त
नफ़रत करने लगा था।

अबीसलूम का इन्तिक़ाम

23 दो साल गुज़र गए। अबीसलूम की भेड़ें इफ़्राईम
के क़रीब के बाल-हसूर में लाई गईं ताकि उन के बाल
क़तरे जाएँ। इस मौक़े पर अबीसलूम ने बादशाह के
तमाम बेटों को दावत दी कि वह वहाँ ज़ियाफ़त में
शरीक हों। 24 वह दाऊद बादशाह के पास भी गया
और कहा, “इन दिनों में मैं अपनी भेड़ों के बाल
कतरा रहा हूँ। बादशाह और उन के अफ़सरों को भी
मेरे साथ ख़ुशी मनाने की दावत है।”
25 लेकिन दाऊद ने इन्कार किया, “नहीं, मेरे बेटे,
हम सब तो नहीं आ सकते। इतने लोग आप के
लिए बोझ का बाइस बन जाएंगे।” अबीसलूम बहुत
इसरार करता रहा, लेकिन दाऊद ने दावत को क़बूल
न किया बल्कि उसे बरकत दे कर रुख़्सत करना
चाहता था।
26 आख़िरकार अबीसलूम ने दरख़्वास्त की,
“अगर आप हमारे साथ जा न सकें तो फिर कम अज़
कम मेरे भाई अम्नोन को आने दें।” बादशाह ने पूछा,
“ख़ासकर अम्नोन को क्यूँ?” 27 लेकिन अबीसलूम
इतना ज़ोर देता रहा कि दाऊद ने अम्नोन को बाक़ी
बेटों समेत बाल-हसूर जाने की इजाज़त दे दी।
28 ज़ियाफ़त से पहले अबीसलूम ने अपने मुलाज़िमों
को हुक्म दिया, “सुनें! जब अम्नोन मै पी पी कर ख़ुश
हो जाएगा तो मैं आप को अम्नोन को मारने का हुक्म
दूँगा। फिर आप को उसे मार डालना है। डरें मत,
क्यूँकि मैं ही ने आप को यह हुक्म दिया है। मज़बूत
और दिलेर हों!”
29 मुलाज़िमों ने ऐसा ही किया। उन्हों ने अम्नोन को
मार डाला। यह देख कर बादशाह के दूसरे बेटे उठ
कर अपने ख़च्चरों पर सवार हुए और भाग गए। 30 वह
अभी रास्ते में ही थे कि अफ़वाह दाऊद तक पहुँची,
“अबीसलूम ने आप के तमाम बेटों को क़त्ल कर
दिया है। एक भी नहीं बचा।”
31 बादशाह उठा और अपने कपड़े फाड़ कर फ़र्श
पर लेट गया। उस के दरबारी भी दुख में अपने कपड़े
फाड़ फाड़ कर उस के पास खड़े रहे। 32 फिर दाऊद
का भतीजा यूनदब बोल उठा, “मेरे आक़ा, आप न
सोचें कि उन्हों ने तमाम शहज़ादों को मार डाला
है। सिर्फ़ अम्नोन मर गया होगा, क्यूँकि जब से उस
ने तमर की इस्मतदरी की उस वक़्त से अबीसलूम
का यही इरादा था। 33 लिहाज़ा इस ख़बर को इतनी
अहमियत न दें कि तमाम बेटे हलाक हुए हैं। सिर्फ़
अम्नोन मर गया होगा।”
34 इतने में अबीसलूम फ़रार हो गया था। फिर
यरूशलम की फ़सील पर खड़े पहरेदार ने अचानक
देखा कि मग़रिब से लोगों का बड़ा गुरोह शहर की
तरफ़ बढ़ रहा है। वह पहाड़ी के दामन में चले आ रहे
थे। 35 तब यूनदब ने बादशाह से कहा, “लो, बादशाह
के बेटे आ रहे हैं, जिस तरह आप के ख़ादिम ने कहा
था।” 36 वह अभी अपनी बात ख़त्म कर ही रहा था
कि शहज़ादे अन्दर आए और ख़ूब रो पड़े। बादशाह
और उस के अफ़सर भी रोने लगे।
37 दाऊद बड़ी देर तक अम्नोन का मातम करता
रहा। लेकिन अबीसलूम ने फ़रार हो कर जसूर के
बादशाह तल्मी बिन अम्मीहूद के पास पनाह ली जो
उस का नाना था। 38 वहाँ वह तीन साल तक रहा।
39 फिर एक वक़्त आ गया कि दाऊद का अम्नोन के
लिए दुख दूर हो गया, और उस का अबीसलूम पर
ग़ुस्सा थम गया।

योआब अबीसलूम की सिफ़ारिश करता है

14 1 योआब बिन ज़रूयाह को मालूम हुआ कि
बादशाह अपने बेटे अबीसलूम को चाहता
है, 2 इस लिए उस ने तक़ूअ से एक दानिशमन्द औरत
को बुलाया। योआब ने उसे हिदायत दी, “मातम
का रूप भरें जैसे आप देर से किसी का मातम कर
रही हों। मातम के कपड़े पहन कर ख़ुशबूदार तेल
मत लगाना। 3 बादशाह के पास जा कर उस से बात
करें।” फिर योआब ने औरत को लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ वह
कुछ सिखाया जो उसे बादशाह को बताना था।

4 दाऊद के दरबार में आ कर औरत ने औंधे मुँह
झुक कर इल्तिमास की, “ऐ बादशाह, मेरी मदद
करें!” 5 दाऊद ने दरयाफ़्त किया, “क्या मसला है?”
औरत ने जवाब दिया, “मैं बेवा हूँ, मेरा शौहर फ़ौत हो
गया है। 6 और मेरे दो बेटे थे। एक दिन वह बाहर खेत
में एक दूसरे से उलझ पड़े। और चूँकि कोई मौजूद
नहीं था जो दोनों को अलग करता इस लिए एक ने
दूसरे को मार डाला। 7 उस वक़्त से पूरा कुम्बा मेरे
ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। वह तक़ाज़ा करते हैं कि
मैं अपने बेटे को उन के हवाले करूँ। वह कहते हैं,
‘उस ने अपने भाई को मार दिया है, इस लिए हम
बदले में उसे सज़ा-ए-मौत देंगे। इस तरह वारिस भी
नहीं रहेगा।’ यूँ वह मेरी उम्मीद की आख़िरी किरन
को ख़त्म करना चाहते हैं। क्यूँकि अगर मेरा यह
बेटा भी मर जाए तो मेरे शौहर का नाम क़ाइम नहीं
रहेगा, और उस का ख़ानदान रू-ए-ज़मीन पर से मिट
जाएगा।” 8 बादशाह ने औरत से कहा, “अपने घर
चली जाएँ और फ़िक्र न करें। मैं मुआमला हल कर
दूँगा।”

9 लेकिन औरत ने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, डर
है कि लोग फिर भी मुझे मुजरिम ठहराएँगे अगर मेरे
बेटे को सज़ा-ए-मौत न दी जाए। आप पर तो वह
इल्ज़ाम नहीं लगाएँगे।” 10 दाऊद ने इसरार किया,
“अगर कोई आप को तंग करे तो उसे मेरे पास ले
आएँ। फिर वह आइन्दा आप को नहीं सताएगा!”
11 औरत को तसल्ली न हुई। उस ने गुज़ारिश की, “ऐ
बादशाह, बराह-ए-करम रब अपने ख़ुदा की क़सम
खाएँ कि आप किसी को भी मौत का बदला नहीं लेने
देंगे। वर्ना नुक़्सान में इज़ाफ़ा होगा और मेरा दूसरा
बेटा भी हलाक हो जाएगा।” दाऊद ने जवाब दिया,
“रब की हयात की क़सम, आप के बेटे का एक बाल
भी बीका नहीं होगा।”

12 फिर औरत असल बात पर आ गई, “मेरे आक़ा,
बराह-ए-करम अपनी ख़ादिमा को एक और बात
करने की इजाज़त दें।” बादशाह बोला, “करें बात।”
13 तब औरत ने कहा, “आप ख़ुद क्यूँ अल्लाह की
क़ौम के ख़िलाफ़ ऐसा इरादा रखते हैं जिसे आप
ने अभी अभी ग़लत क़रार दिया है? आप ने ख़ुद
फ़रमाया है कि यह ठीक नहीं, और यूँ आप ने अपने
आप को ही मुजरिम ठहराया है। क्यूँकि आप ने
अपने बेटे को रद्द करके उसे वापस आने नहीं दिया।
14 बेशक हम सब को किसी वक़्त मरना है। हम
सब ज़मीन पर उंडेले गए पानी की मानिन्द हैं जिसे
ज़मीन जज़ब कर लेती है और जो दुबारा जमा नहीं
किया जा सकता। लेकिन अल्लाह हमारी ज़िन्दगी को
बिलावजह मिटा नहीं देता बल्कि ऐसे मन्सूबे तय्यार
रखता है जिन के ज़रीए मर्दूद शख़्स भी उस के पास
वापस आ सके और उस से दूर न रहे। 15 ऐ बादशाह
मेरे आक़ा, मैं इस वक़्त इस लिए आप के हुज़ूर आई
हूँ कि मेरे लोग मुझे डराने की कोशिश कर रहे हैं।
मैं ने सोचा, मैं बादशाह से बात करने की जुरअत
करूँगी, शायद वह मेरी सुनें 16 और मुझे उस आदमी
से बचाएँ जो मुझे और मेरे बेटे को उस मौरूसी ज़मीन
से महरूम रखना चाहता है जो अल्लाह ने हमें दे दी है।
17 ख़याल यह था कि अगर बादशाह मुआमला हल
कर दें तो फिर मुझे दुबारा सुकून मिलेगा, क्यूँकि आप
अच्छी और बुरी बातों का इम्तियाज़ करने में अल्लाह
के फ़रिश्ते जैसे हैं। रब आप का ख़ुदा आप के साथ
हो।”

18 यह सब कुछ सुन कर दाऊद बोल उठा,
“अब मुझे एक बात बताएँ। इस का सहीह जवाब
दें।” औरत ने जवाब दिया, “जी मेरे आक़ा, बात
फ़रमाइए।” दाऊद ने पूछा, “क्या योआब ने आप
से यह काम करवाया?” 19 औरत पुकारी, “बादशाह
की हयात की क़सम, जो कुछ भी मेरे आक़ा फ़रमाते
हैं वह निशाने पर लग जाता है, ख़्वाह बन्दा बाईं
या दाईं तरफ़ हटने की कोशिश क्यूँ न करे। जी हाँ,
आप के ख़ादिम योआब ने मुझे आप के हुज़ूर भेज
दिया। उस ने मुझे लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सब कुछ बताया
जो मुझे आप को अर्ज़ करना था, 20 क्यूँकि वह आप
को यह बात बराह-ए-रास्त नहीं पेश करना चाहता
था। लेकिन मेरे आक़ा को अल्लाह के फ़रिश्ते की सी

हिक्मत हासिल है। जो कुछ भी मुल्क में वुक़ू में आता है उस का आप को पता चल जाता है।”

अबीसलूम की वापसी

21 दाऊद ने योआब को बुला कर उस से कहा,
“ठीक है, मैं आप की दरख़्वास्त पूरी करूँगा। जाएँ,
मेरे बेटे अबीसलूम को वापस ले आएँ।” 22 योआब
औंधे मुँह झुक गया और बोला, “रब बादशाह को
बरकत दे! मेरे आक़ा, आज मुझे मालूम हुआ है कि
मैं आप को मन्ज़ूर हूँ, क्यूँकि आप ने अपने ख़ादिम
की दरख़्वास्त को पूरा किया है।” 23 योआब रवाना
हो कर जसूर चला गया और वहाँ से अबीसलूम को
वापस लाया। 24 लेकिन जब वह यरूशलम पहुँचे तो
बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अपने घर में रहने की
इजाज़त है, लेकिन वह कभी मुझे नज़र न आए।”
चुनाँचे अबीसलूम अपने घर में दुबारा रहने लगा,
लेकिन बादशाह से कभी मुलाक़ात न हो सकी।

25 पूरे इस्राईल में अबीसलूम जैसा ख़ूबसूरत आदमी
नहीं था। सब उस की ख़ास तारीफ़ करते थे, क्यूँकि
सर से ले कर पाँओ तक उस में कोई नुक़्स नज़र
नहीं आता था। 26 साल में वह एक ही मर्तबा अपने
बाल कटवाता था, क्यूँकि इतने में उस के बाल हद
से ज़्यादा वज़नी हो जाते थे। जब उन्हें तोला जाता
तो उन का वज़न तक़रीबन सवा दो किलोग्राम होता
था। 27 अबीसलूम के तीन बेटे और एक बेटी थी।
बेटी का नाम तमर था और वह निहायत ख़ूबसूरत
थी।

28 दो साल गुज़र गए, फिर भी अबीसलूम को
बादशाह से मिलने की इजाज़त न मिली। 29 फिर
उस ने योआब को इत्तिला भेजी कि वह उस की
सिफ़ारिश करे। लेकिन योआब ने आने से इन्कार
किया। अबीसलूम ने उसे दुबारा बुलाने की कोशिश
की, लेकिन इस बार भी योआब उस के पास न
आया। 30 तब अबीसलूम ने अपने नौकरों को हुक्म
दिया, “देखो, योआब का खेत मेरे खेत से मुल्हिक़
है, और उस में जौ की फ़सल पक रही है। जाओ,
उसे आग लगा दो!” नौकर गए और ऐसा ही किया।

31 जब खेत में आग लग गई तो योआब भाग कर
अबीसलूम के पास आया और शिकायत की, “आप
के नौकरों ने मेरे खेत को आग क्यूँ लगाई है?”
32 अबीसलूम ने जवाब दिया, “देखें, आप नहीं आए
जब मैं ने आप को बुलाया। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि
आप बादशाह के पास जा कर उन से पूछें कि मुझे
जसूर से क्यूँ लाया गया। बेहतर होता कि मैं वहीं
रहता। अब बादशाह मुझ से मिलें या अगर वह अब
तक मुझे क़ुसूरवार ठहराते हैं तो मुझे सज़ा-ए-मौत
दें।”

33 योआब ने बादशाह के पास जा कर उसे यह
पैग़ाम पहुँचाया। फिर दाऊद ने अपने बेटे को बुलाया।
अबीसलूम अन्दर आया और बादशाह के सामने
औंधे मुँह झुक गया। फिर बादशाह ने अबीसलूम को
बोसा दिया।

अबीसलूम की साज़िश

15 1 कुछ देर के बाद अबीसलूम ने रथ और
घोड़े ख़रीदे और साथ साथ 50 मुहाफ़िज़
भी रखे जो उस के आगे आगे दौड़ें। 2 रोज़ाना वह
सुब्ह-सवेरे उठ कर शहर के दरवाज़े पर जाता। जब
कभी कोई शख़्स इस मक़सद से शहर में दाख़िल
होता कि बादशाह उस के किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला
करे तो अबीसलूम उस से मुख़ातिब हो कर पूछता,
“आप किस शहर से हैं?” अगर वह जवाब देता,
“मैं इस्राईल के फ़ुलाँ क़बीले से हूँ,” 3 तो अबीसलूम
कहता, “बेशक आप इस मुक़द्दमे को जीत सकते हैं,
लेकिन अफ़्सोस! बादशाह का कोई भी बन्दा इस
पर सहीह ध्यान नहीं देगा।” 4 फिर वह बात जारी
रखता, “काश मैं ही मुल्क पर आला क़ाज़ी मुक़र्रर
किया गया होता! फिर सब लोग अपने मुक़द्दमे मुझे
पेश कर सकते और मैं उन का सहीह इन्साफ़ कर
देता।” 5 और अगर कोई क़रीब आ कर अबीसलूम
के सामने झुकने लगता तो वह उसे रोक कर उस को

गले लगाता और बोसा देता। 6 यह उस का उन तमाम
इस्राईलियों के साथ सुलूक था जो अपने मुक़द्दमे
बादशाह को पेश करने के लिए आते थे। यूँ उस
ने इस्राईलियों के दिलों को अपनी तरफ़ माइल कर
लिया।

7 यह सिलसिला चार साल जारी रहा। एक दिन
अबीसलूम ने दाऊद से बात की, “मुझे हब्रून जाने की
इजाज़त दीजिए, क्यूँकि मैं ने रब से ऐसी मन्नत मानी
है जिस के लिए ज़रूरी है कि हब्रून जाऊँ। 8 क्यूँकि
जब मैं जसूर में था तो मैं ने क़सम खा कर वादा किया
था, ‘ऐ रब, अगर तू मुझे यरूशलम वापस लाए तो मैं
हब्रून में तेरी परस्तिश करूँगा’।” 9 बादशाह ने जवाब
दिया, “ठीक है। सलामती से जाएँ।”

10 लेकिन हब्रून पहुँच कर अबीसलूम ने ख़ुफ़िया
तौर पर अपने क़ासिदों को इस्राईल के तमाम
क़बाइली इलाक़ों में भेज दिया। जहाँ भी वह गए
उन्हों ने एलान किया, “जूँ ही नरसिंगे की आवाज़
सुनाई दे आप सब को कहना है, ‘अबीसलूम हब्रून
में बादशाह बन गया है’!” 11 अबीसलूम के साथ 200
मेहमान यरूशलम से हब्रून आए थे। वह बेलौस थे,
और उन्हें इस के बारे में इल्म ही न था।

12 जब हब्रून में क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जा रही थीं तो
अबीसलूम ने दाऊद के एक मुशीर को बुलाया जो
जिलोह का रहने वाला था। उस का नाम अख़ीतुफ़ल
जिलोनी था। वह आया और अबीसलूम के साथ मिल
गया। यूँ अबीसलूम के पैरोकारों में इज़ाफ़ा होता गया
और उस की साज़िशें ज़ोर पकड़ने लगीं।

दाऊद यरूशलम से हिज्रत करता है

13 एक क़ासिद ने दाऊद के पास पहुँच कर उसे
इत्तिला दी, “अबीसलूम आप के ख़िलाफ़ उठ खड़ा
हुआ है, और तमाम इस्राईल उस के पीछे लग गया
है।” 14 दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से कहा, “आओ,
हम फ़ौरन हिज्रत करें, वर्ना अबीसलूम के क़ब्ज़े में
आ जाएंगे। जल्दी करें ताकि हम फ़ौरन रवाना हो
सकें, क्यूँकि वह कोशिश करेगा कि जितनी जल्दी हो
सके यहाँ पहुँचे। अगर हम उस वक़्त शहर से निकले
न हों तो वह हम पर आफ़त ला कर शहर के बाशिन्दों
को मार डालेगा।” 15 बादशाह के मुलाज़िमों ने जवाब
दिया, “जो भी फ़ैसला हमारे आक़ा और बादशाह करें
हम हाज़िर हैं।”

16 बादशाह अपने पूरे ख़ानदान के साथ रवाना
हुआ। सिर्फ़ दस दाश्ताएँ महल को सँभालने के
लिए पीछे रह गईं। 17 जब दाऊद अपने तमाम लोगों
के साथ शहर के आख़िरी घर तक पहुँचा तो वह
रुक गया। 18 उस ने अपने तमाम पैरोकारों को आगे
निकलने दिया, पहले शाही दस्ते करेती-ओ-फ़लेती
को, फिर उन 600 जाती आदमियों को जो उस के
साथ जात से यहाँ आए थे और आख़िर में बाक़ी
तमाम लोगों को। 19 जब फ़िलिस्ती शहर जात का
आदमी इत्ती दाऊद के सामने से गुज़रने लगा तो
बादशाह उस से मुख़ातिब हुआ, “आप हमारे साथ
क्यूँ जाएँ? नहीं, वापस चले जाएँ और नए बादशाह
के साथ रहें। आप तो ग़ैरमुल्की हैं और इस लिए
इस्राईल में रहते हैं कि आप को जिलावतन कर दिया
गया है। 20 आप को यहाँ आए थोड़ी देर हुई है, तो
क्या मुनासिब है कि आप को दुबारा मेरी वजह से
कभी इधर कभी इधर घूमना पड़े? क्या पता है कि
मुझे कहाँ कहाँ जाना पड़े। इस लिए वापस चले जाएँ,
और अपने हमवतनों को भी अपने साथ ले जाएँ। रब
आप पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार
करे।”

21 लेकिन इत्ती ने एतिराज़ किया, “मेरे आक़ा, रब
और बादशाह की हयात की क़सम, मैं आप को कभी
नहीं छोड़ सकता, ख़्वाह मुझे अपनी जान भी क़ुर्बान
करनी पड़े।” 22 तब दाऊद मान गया। “चलो, फिर
आगे निकलें!” चुनाँचे इत्ती अपने लोगों और उन के
ख़ानदानों के साथ आगे निकला। 23 आख़िर में दाऊद
ने वादी-ए-क़िद्रोन को पार करके रेगिस्तान की तरफ़
रुख़ किया। गिर्द-ओ-नवाह के तमाम लोग बादशाह
को उस के पैरोकारों समेत रवाना होते हुए देख कर
फूट फूट कर रोने लगे।

24 सदोक़ इमाम और तमाम लावी भी दाऊद के
साथ शहर से निकल आए थे। लावी अह्द का
सन्दूक़ उठाए चल रहे थे। अब उन्हों ने उसे शहर
से बाहर ज़मीन पर रख दिया, और अबियातर वहाँ
क़ुर्बानियाँ चढ़ाने लगा। लोगों के शहर से निकलने
के पूरे अर्से के दौरान वह क़ुर्बानियाँ चढ़ाता रहा।
25 फिर दाऊद सदोक़ से मुख़ातिब हुआ, “अल्लाह
का सन्दूक़ शहर में वापस ले जाएँ। अगर रब की
नज़र-ए-करम मुझ पर हुई तो वह किसी दिन मुझे
शहर में वापस ला कर अह्द के सन्दूक़ और उस
की सुकूनतगाह को दुबारा देखने की इजाज़त देगा।
26 लेकिन अगर वह फ़रमाए कि तू मुझे पसन्द नहीं
है, तो मैं यह भी बर्दाश्त करने के लिए तय्यार हूँ।
वह मेरे साथ वह कुछ करे जो उसे मुनासिब लगे।
27 जहाँ तक आप का ताल्लुक़ है, अपने बेटे
अख़ीमाज़ को साथ ले कर सहीह-सलामत शहर
में वापस चले जाएँ। अबियातर और उस का बेटा
यूनतन भी साथ जाएँ। 28 मैं ख़ुद रेगिस्तान में दरया-ए-
यर्दन की उस जगह रुक जाऊँगा जहाँ हम आसानी से
दरया को पार कर सकेंगे। वहाँ आप मुझे यरूशलम
के हालात के बारे में पैग़ाम भेज सकते हैं। मैं आप
के इन्तिज़ार में रहूँगा।”
29 चुनाँचे सदोक़ और अबियातर अह्द का सन्दूक़
शहर में वापस ले जा कर वहीं रहे। 30 दाऊद रोते रोते
ज़ैतून के पहाड़ पर चढ़ने लगा। उस का सर ढाँपा
हुआ था, और वह नंगे पाँओ चल रहा था। बाक़ी
सब के सर भी ढाँपे हुए थे, सब रोते रोते चढ़ने लगे।
31 रास्ते में दाऊद को इत्तिला दी गई, “अख़ीतुफ़ल
भी अबीसलूम के साथ मिल गया है।” यह सुन कर
दाऊद ने दुआ की, “ऐ रब, बख़्श दे कि अख़ीतुफ़ल
के मश्वरे नाकाम हो जाएँ।”
32 चलते चलते दाऊद पहाड़ की चोटी पर पहुँच
गया जहाँ अल्लाह की परस्तिश की जाती थी। वहाँ
हूसी अर्की उस से मिलने आया। उस के कपड़े फटे
हुए थे, और सर पर ख़ाक थी। 33 दाऊद ने उस से
कहा, “अगर आप मेरे साथ जाएँ तो आप सिर्फ़ बोझ
का बाइस बनेंगे। 34 बेहतर है कि आप लौट कर शहर
में जाएँ और अबीसलूम से कहें, ‘ऐ बादशाह, मैं आप
की ख़िदमत में हाज़िर हूँ। पहले मैं आप के बाप की
ख़िदमत करता था, और अब आप ही की ख़िदमत
करूँगा।’ अगर आप ऐसा करें तो आप अख़ीतुफ़ल
के मश्वरे नाकाम बनाने में मेरी बड़ी मदद करेंगे।
35–36 आप अकेले नहीं होंगे। दोनों इमाम सदोक़ और
अबियातर भी यरूशलम में पीछे रह गए हैं। दरबार
में जो भी मन्सूबे बांधे जाएंगे वह उन्हें बताएँ। सदोक़
का बेटा अख़ीमाज़ और अबियातर का बेटा यूनतन
मुझे हर ख़बर पहुँचाएँगे, क्यूँकि वह भी शहर में ठहरे
हुए हैं।”
37 तब दाऊद का दोस्त हूसी वापस चला गया। वह
उस वक़्त पहुँच गया जब अबीसलूम यरूशलम में
दाख़िल हो रहा था।

ज़ीबा मिफ़ीबोसत के बारे में झूट बोलता है

16 1 दाऊद अभी पहाड़ की चोटी से कुछ
आगे निकल गया था कि मिफ़ीबोसत का
मुलाज़िम ज़ीबा उस से मिलने आया। उस के पास
दो गधे थे जिन पर ज़ीनें कसी हुई थीं। उन पर
200 रोटियाँ, किशमिश की 100 टिक्कियाँ, 100 ताज़ा
फल और मै की एक मश्क लदी हुई थी। 2 बादशाह
ने पूछा, “आप इन चीज़ों के साथ क्या करना
चाहते हैं?” ज़ीबा ने जवाब दिया, “गधे बादशाह
के ख़ानदान के लिए हैं, वह इन पर बैठ कर सफ़र
करें। रोटी और फल जवानों के लिए हैं, और मै उन
के लिए जो रेगिस्तान में चलते चलते थक जाएँ।”
3 बादशाह ने सवाल किया, “आप के पुराने मालिक
का पोता मिफ़ीबोसत कहाँ है?” ज़ीबा ने कहा, “वह
यरूशलम में ठहरा हुआ है। वह सोचता है कि आज
इस्राईली मुझे बादशाह बना देंगे, क्यूँकि मैं साऊल
का पोता हूँ।” 4 यह सुन कर दाऊद बोला, “आज
ही मिफ़ीबोसत की तमाम मिलकियत आप के नाम
मुन्तक़िल की जाती है!” ज़ीबा ने कहा, “मैं आप
के सामने अपने घुटने टेकता हूँ। रब करे कि मैं

अपने आक़ा और बादशाह का मन्ज़ूर-ए-नज़र रहूँ।”
5 जब दाऊद बादशाह बहूरीम के क़रीब पहुँचा तो
एक आदमी वहाँ से निकल कर उस पर लानतें भेजने
लगा। आदमी का नाम सिमई बिन जीरा था, और वह
साऊल का रिश्तेदार था।

सिमई दाऊद को लान-तान करता है

6 वह दाऊद और उस के अफ़सरों पर पत्थर भी
फैंकने लगा, अगरचे दाऊद के बाएँ और दाएँ हाथ
उस के मुहाफ़िज़ और बेहतरीन फ़ौजी चल रहे थे।
7 लानत करते करते सिमई चीख़ रहा था, “चल,
दफ़ा हो जा! क़ातिल! बदमआश! 8 यह तेरा ही क़ुसूर
था कि साऊल और उस का ख़ानदान तबाह हुए।
अब रब तुझे जो साऊल की जगह तख़्तनशीन हो
गया है इस की मुनासिब सज़ा दे रहा है। उस ने तेरे
बेटे अबीसलूम को तेरी जगह तख़्तनशीन करके तुझे
तबाह कर दिया है। क़ातिल को सहीह मुआवज़ा
मिल गया है!”
9 अबीशै बिन ज़रूयाह बादशाह से कहने लगा,
“यह कैसा मुर्दा कुत्ता है जो मेरे आक़ा बादशाह पर
लानत करे? मुझे इजाज़त दें, तो मैं जा कर उस का
सर क़लम कर दूँ।” 10 लेकिन बादशाह ने उसे रोक
दिया, “मेरा आप और आप के भाई योआब से क्या
वास्ता? नहीं, उसे लानत करने दें। हो सकता है रब
ने उसे यह करने का हुक्म दिया है। तो फिर हम कौन
हैं कि उसे रोकें।” 11 फिर दाऊद तमाम अफ़सरों से
भी मुख़ातिब हुआ, “जबकि मेरा अपना बेटा मुझे
क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है तो साऊल का
यह रिश्तेदार ऐसा क्यूँ न करे? इसे छोड़ दो, क्यूँकि
रब ने इसे यह करने का हुक्म दिया है। 12 शायद
रब मेरी मुसीबत का लिहाज़ करके सिमई की लानतें
बरकत में बदल दे।”
13 दाऊद और उस के लोगों ने सफ़र जारी रखा।
सिमई क़रीब की पहाड़ी ढलान पर उस के बराबर
चलते चलते उस पर लानतें भेजता और पत्थर और
मिट्टी के ढेले फैंकता रहा। 14 सब थकेमान्दे दरया-ए-
यर्दन को पहुँच गए। वहाँ दाऊद ताज़ादम हो गया।

अबीसलूम यरूशलम में

15 इतने में अबीसलूम अपने पैरोकारों के साथ
यरूशलम में दाख़िल हुआ था। अख़ीतुफ़ल भी उन
के साथ मिल गया था। 16 थोड़ी देर के बाद दाऊद
का दोस्त हूसी अर्की अबीसलूम के दरबार में हाज़िर
हो कर पुकारा, “बादशाह ज़िन्दाबाद! बादशाह
ज़िन्दाबाद!” 17 यह सुन कर अबीसलूम ने उस से
तन्ज़न कहा, “यह कैसी वफ़ादारी है जो आप अपने
दोस्त दाऊद को दिखा रहे हैं? आप अपने दोस्त के
साथ रवाना क्यूँ न हुए?” 18 हूसी ने जवाब दिया,
“नहीं, जिस आदमी को रब और तमाम इस्राईलियों
ने मुक़र्रर किया है, वही मेरा मालिक है, और उसी की
ख़िदमत में मैं हाज़िर रहूँगा। 19 दूसरे, अगर किसी की
ख़िदमत करनी है तो क्या दाऊद के बेटे की ख़िदमत
करना मुनासिब नहीं है? जिस तरह मैं आप के बाप
की ख़िदमत करता रहा हूँ उसी तरह अब आप की
ख़िदमत करूँगा।”
20 फिर अबीसलूम अख़ीतुफ़ल से मुख़ातिब हुआ,
“आगे क्या करना चाहिए? मुझे अपना मश्वरा पेश
करें।” 21 अख़ीतुफ़ल ने जवाब दिया, “आप के बाप
ने अपनी कुछ दाश्ताओं को महल सँभालने के लिए
यहाँ छोड़ दिया है। उन के साथ हमबिसतर हो जाएँ।
फिर तमाम इस्राईल को मालूम हो जाएगा कि आप
ने अपने बाप की ऐसी बेइज़्ज़ती की है कि सुलह का
रास्ता बन्द हो गया है। यह देख कर सब जो आप के
साथ हैं मज़बूत हो जाएंगे।” 22 अबीसलूम मान गया,
और महल की छत पर उस के लिए ख़ैमा लगाया
गया। उस में वह पूरे इस्राईल के देखते देखते अपने
बाप की दाश्ताओं से हमबिसतर हुआ।
23 उस वक़्त अख़ीतुफ़ल का हर मश्वरा अल्लाह के
फ़रमान जैसा माना जाता था। दाऊद और अबीसलूम
दोनों यूँ ही उस के मश्वरों की क़दर करते थे।

हूसी और अख़ीतुफ़ल

17 1 अख़ीतुफ़ल ने अबीसलूम को एक और
मश्वरा भी दिया। “मुझे इजाज़त दें तो मैं
12,000 फ़ौजियों के साथ इसी रात दाऊद का
ताक़्क़ुब करूँ। 2 मैं उस पर हम्ला करूँगा जब वह
थकामाँदा और बेदिल है। तब वह घबरा जाएगा,
और उस के तमाम फ़ौजी भाग जाएंगे। नतीजतन मैं
सिर्फ़ बादशाह ही को मार दूँगा 3 और बाक़ी तमाम
लोगों को आप के पास वापस लाऊँगा। जो आदमी
आप पकड़ना चाहते हैं उस की मौत पर सब वापस
आ जाएंगे। और क़ौम में अम्न-ओ-अमान क़ाइम हो
जाएगा।”

4 यह मश्वरा अबीसलूम और इस्राईल के तमाम
बुज़ुर्गों को पसन्द आया। 5 ताहम अबीसलूम ने कहा,
“पहले हम हूसी अर्की से भी मश्वरा लें। कोई उसे बुला
लाए।” 6 हूसी आया तो अबीसलूम ने उस के सामने
अख़ीतुफ़ल का मन्सूबा बयान करके पूछा, “आप
का क्या ख़याल है? क्या हमें ऐसा करना चाहिए, या
आप की कोई और राय है?”

7 हूसी ने जवाब दिया, “जो मश्वरा अख़ीतुफ़ल ने
दिया है वह इस दफ़ा ठीक नहीं। 8 आप तो अपने
वालिद और उन के आदमियों से वाक़िफ़ हैं। वह
सब माहिर फ़ौजी हैं। वह उस रीछनी की सी शिद्दत
से लड़ेंगे जिस से उस के बच्चे छीन लिए गए हैं। यह भी
ज़हन में रखना चाहिए कि आप का बाप तजरिबाकार
फ़ौजी है। इम्कान नहीं कि वह रात को अपने फ़ौजियों
के दरमियान गुज़ारेगा। 9 ग़ालिबन वह इस वक़्त भी
गहरी खाई या कहीं और छुप गया है। हो सकता है
वह वहाँ से निकल कर आप के दस्तों पर हम्ला करे
और इब्तिदा ही में आप के थोड़े बहुत अफ़राद मर
जाएँ। फिर अफ़वाह फैल जाएगी कि अबीसलूम के
दस्तों में क़त्ल-ए-आम शुरू हो गया है। 10 यह सुन
कर आप के तमाम अफ़राद डर के मारे बेदिल हो
जाएंगे, ख़्वाह वह शेरबबर जैसे बहादुर क्यूँ न हों।
क्यूँकि तमाम इस्राईल जानता है कि आप का बाप
बेहतरीन फ़ौजी है और कि उस के साथी भी दिलेर
हैं।

11 यह पेश-ए-नज़र रख कर मैं आप को एक और
मश्वरा देता हूँ। शिमाल में दान से ले कर जुनूब में
बैर-सबा तक लड़ने के क़ाबिल तमाम इस्राईलियों
को बुलाएँ। इतने जमा करें कि वह साहिल की रेत
की मानिन्द होंगे, और आप ख़ुद उन के आगे चल
कर लड़ने के लिए निकलें। 12 फिर हम दाऊद का
खोज लगा कर उस पर हम्ला करेंगे। हम उस तरह
उस पर टूट पड़ेंगे जिस तरह ओस ज़मीन पर गिरती
है। सब के सब हलाक हो जाएंगे, और न वह और
न उस के आदमी बच पाएँगे। 13 अगर दाऊद किसी
शहर में पनाह ले तो तमाम इस्राईली फ़सील के साथ
रस्से लगा कर पूरे शहर को वादी में घसीट ले जाएंगे।
पत्थर पर पत्थर बाक़ी नहीं रहेगा!”

14 अबीसलूम और तमाम इस्राईलियों ने कहा,
“हूसी का मश्वरा अख़ीतुफ़ल के मश्वरे से बेहतर है।”
हक़ीक़त में अख़ीतुफ़ल का मश्वरा कहीं बेहतर था,
लेकिन रब ने उसे नाकाम होने दिया ताकि अबीसलूम
को मुसीबत में डाले।

दाऊद को अबीसलूम का मन्सूबा बताया जाता है

15 हूसी ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर को
वह मन्सूबा बताया जो अख़ीतुफ़ल ने अबीसलूम
और इस्राईल के बुज़ुर्गों को पेश किया था। साथ साथ
उस ने उन्हें अपने मश्वरे के बारे में भी आगाह किया।
16 उस ने कहा, “अब फ़ौरन दाऊद को इत्तिला दें कि
किसी सूरत में भी इस रात को दरया-ए-यर्दन की उस
जगह पर न गुज़ारें जहाँ लोग दरया को पार करते हैं।
लाज़िम है कि आप आज ही दरया को उबूर कर लें,
वर्ना आप तमाम साथियों समेत बर्बाद हो जाएंगे।”

17 यूनतन और अख़ीमाज़ यरूशलम से बाहर के
चश्मे ऐन-राजिल के पास इन्तिज़ार कर रहे थे, क्यूँकि
वह शहर में दाख़िल हो कर किसी को नज़र आने का
ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे। एक नौकरानी शहर
से निकल आई और उन्हें हूसी का पैग़ाम दे दिया

ताकि वह आगे निकल कर उसे दाऊद तक पहुँचाएँ।
18 लेकिन एक जवान ने उन्हें देखा और भाग कर
अबीसलूम को इत्तिला दी। दोनों जल्दी जल्दी वहाँ
से चले गए और एक आदमी के घर में छुप गए जो
बहूरीम में रहता था। उस के सहन में कुआँ था। उस
में वह उतर गए। 19 आदमी की बीवी ने कुएँ के मुँह
पर कपड़ा बिछा कर उस पर अनाज के दाने बिखेर
दिए ताकि किसी को मालूम न हो कि वहाँ कुआँ है।
20 अबीसलूम के सिपाही उस घर में पहुँचे और
औरत से पूछने लगे, “अख़ीमाज़ और यूनतन कहाँ
हैं?” औरत ने जवाब दिया, “वह आगे निकल चुके
हैं, क्यूँकि वह नदी को पार करना चाहते थे।”
सिपाही दोनों आदमियों का खोज लगाते लगाते थक
गए। आख़िरकार वह ख़ाली हाथ यरूशलम लौट
गए।
21 जब चले गए तो अख़ीमाज़ और यूनतन कुएँ से
निकल कर सीधे दाऊद बादशाह के पास चले गए
ताकि उसे पैग़ाम सुनाएँ। उन्हों ने कहा, “लाज़िम
है कि आप दरया को फ़ौरन पार करें!” फिर उन्हों
ने दाऊद को अख़ीतुफ़ल का पूरा मन्सूबा बताया।
22 दाऊद और उस के तमाम साथी जल्द ही रवाना
हुए और उसी रात दरया-ए-यर्दन को उबूर किया। पौ
फटते वक़्त एक भी पीछे नहीं रह गया था।
23 जब अख़ीतुफ़ल ने देखा कि मेरा मश्वरा रद्द किया
गया है तो वह अपने गधे पर ज़ीन कस कर अपने
वतनी शहर वापस चला गया। वहाँ उस ने घर के
तमाम मुआमलात का बन्द-ओ-बस्त किया, फिर जा
कर फाँसी ले ली। उसे उस के बाप की क़ब्र में
दफ़नाया गया।
24 जब दाऊद महनाइम पहुँच गया तो अबीसलूम
इस्राईली फ़ौज के साथ दरया-ए-यर्दन को पार करने
लगा। 25 उस ने अमासा को फ़ौज पर मुक़र्रर किया
था, क्यूँकि योआब तो दाऊद के साथ था। अमासा
एक इस्माईली बनाम इत्रा का बेटा था। उस की माँ
अबीजेल बिन्त नाहस थी, और वह योआब की माँ
ज़रूयाह की बहन थी। 26 अबीसलूम और उस के
साथियों ने मुल्क-ए-जिलिआद में पड़ाओ डाला।
27 जब दाऊद महनाइम पहुँचा तो तीन आदमियों
ने उस का इस्तिक़बाल किया। सोबी बिन नाहस
अम्मोनियों के दार-उल-हकूमत रब्बा से, मकीर बिन
अम्मीएल लो-दिबार से और बर्ज़िल्ली जिलिआदी
राजिलीम से आए। 28 तीनों ने दाऊद और उस के
लोगों को बिस्तर, बासन, मिट्टी के बर्तन, गन्दुम,
जौ, मैदा, अनाज के भुने हुए दाने, लोबिया, मसूर,
29 शहद, दही, भेड़-बकरियाँ और गाय के दूध का
पनीर मुहय्या किया। क्यूँकि उन्हों ने सोचा, “यह
लोग रेगिस्तान में चलते चलते ज़रूर भूके, प्यासे और
थकेमान्दे हो गए होंगे।”

जंग के लिए तय्यारियाँ

18 1 दाऊद ने अपने फ़ौजियों का मुआइना
करके हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर
आदमी मुक़र्रर किए। 2 फिर उस ने उन्हें तीन हिस्सों
में तक़्सीम करके एक हिस्से पर योआब को, दूसरे
पर उस के भाई अबीशै बिन ज़रूयाह को और तीसरे
पर इत्ती जाती को मुक़र्रर किया।
उस ने फ़ौजियों को बताया, “मैं ख़ुद भी आप
के साथ लड़ने के लिए निकलूँगा।” 3 लेकिन उन्हों
ने एतिराज़ किया, “ऐसा न करें! अगर हमें भागना
भी पड़े या हमारा आधा हिस्सा मारा भी जाए तो
अबीसलूम के फ़ौजियों के लिए इतना कोई फ़र्क़ नहीं
पड़ेगा। वह आप ही को पकड़ना चाहते हैं, क्यूँकि
आप उन के नज़्दीक हम में से 10,000 अफ़राद से
ज़्यादा अहम हैं। चुनाँचे बेहतर है कि आप शहर ही
में रहें और वहाँ से हमारी हिमायत करें।”
4 बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ आप
को माक़ूल लगता है वही करूँगा।” वह शहर के
दरवाज़े पर खड़ा हुआ, और तमाम मर्द सौ सौ और
हज़ार हज़ार के गुरोहों में उस के सामने से गुज़र कर
बाहर निकले। 5 योआब, अबीशै और इत्ती को उस ने
हुक्म दिया, “मेरी ख़ातिर जवान अबीसलूम से नर्मी

से पेश आना!” तमाम फ़ौजियों ने तीनों कमाँडरों से यह बात सुनी।

अबीसलूम की शिकस्त

6 दाऊद के लोग खुले मैदान में इस्राईलियों से लड़ने
गए। इफ़्राईम के जंगल में उन की टक्कर हुई, 7 और
दाऊद के फ़ौजियों ने मुख़ालिफ़ों को शिकस्त-ए-फ़ाश
दी। उन के 20,000 अफ़राद हलाक हुए। 8 लड़ाई पूरे
जंगल में फैलती गई। यह जंगल इतना ख़तरनाक था
कि उस दिन तलवार की निस्बत ज़्यादा लोग उस की
ज़द में आ कर हलाक हो गए।

9 अचानक दाऊद के कुछ फ़ौजियों को अबीसलूम
नज़र आया। वह ख़च्चर पर सवार बलूत के एक बड़े
दरख़्त के साय में से गुज़रने लगा तो उस के बाल
दरख़्त की शाख़ों में उलझ गए। उस का ख़च्चर आगे
निकल गया जबकि अबीसलूम वहीं आसमान-ओ-
ज़मीन के दरमियान लटका रहा। 10 जिन आदमियों
ने यह देखा उन में से एक योआब के पास गया और
इत्तिला दी, “मैं ने अबीसलूम को देखा है। वह बलूत
के एक दरख़्त में लटका हुआ है।”

11 योआब पुकारा, “क्या आप ने उसे देखा? तो
उसे वहीं क्यूँ न मार दिया? फिर मैं आप को
इनआम के तौर पर चाँदी के दस सिक्के और एक
कमरबन्द दे देता।” 12 लेकिन आदमी ने एतिराज़
किया, “अगर आप मुझे चाँदी के हज़ार सिक्के भी देते
तो भी मैं बादशाह के बेटे को हाथ न लगाता। हमारे
सुनते सुनते बादशाह ने आप, अबीशै और इत्ती को
हुक्म दिया, ‘मेरी ख़ातिर अबीसलूम को नुक़्सान न
पहुँचाएँ।’ 13 और अगर मैं चुपके से भी उसे क़त्ल
करता तो भी इस की ख़बर किसी न किसी वक़्त
बादशाह के कानों तक पहुँचती। क्यूँकि कोई भी बात
बादशाह से पोशीदा नहीं रहती। अगर मुझे इस सूरत
में पकड़ा जाता तो आप मेरी हिमायत न करते।”

14 योआब बोला, “मेरा वक़्त मज़ीद ज़ाए मत
करो।” उस ने तीन नेज़े ले कर अबीसलूम के
दिल में घोंप दिए जब वह अभी ज़िन्दा हालत में
दरख़्त से लटका हुआ था। 15 फिर योआब के दस
सिलाहबर्दारों ने अबीसलूम को घेर कर उसे हलाक
कर दिया।

16 तब योआब ने नरसिंगा बजा दिया, और उस
के फ़ौजी दूसरों का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आ कर
वापस आ गए। 17 बाक़ी इस्राईली अपने अपने घर
भाग गए। योआब के आदमियों ने अबीसलूम की
लाश को एक गहरे गढ़े में फैंक कर उस पर पत्थरों
का बड़ा ढेर लगा दिया।

18 कुछ देर पहले अबीसलूम इस ख़याल से
बादशाह की वादी में अपनी याद में एक सतून खड़ा
कर चुका था कि मेरा कोई बेटा नहीं है जो मेरा नाम
क़ाइम रखे। आज तक यह ‘अबीसलूम की यादगार’
कहलाता है।

दाऊद को अबीसलूम की मौत की ख़बर मिलती है

19 अख़ीमाज़ बिन सदोक़ ने योआब से दरख़्वास्त
की, “मुझे दौड़ कर बादशाह को ख़ुशख़बरी सुनाने दें
कि रब ने उसे दुश्मनों से बचा लिया है।” 20 लेकिन
योआब ने इन्कार किया, “जो पैग़ाम आप को
बादशाह तक पहुँचाना है वह उस के लिए ख़ुशख़बरी
नहीं है, क्यूँकि उस का बेटा मर गया है। किसी और
वक़्त मैं ज़रूर आप को उस के पास भेज दूँगा, लेकिन
आज नहीं।” 21 उस ने एथोपिया के एक आदमी को
हुक्म दिया, “जाएँ और बादशाह को बताएँ।” आदमी
योआब के सामने औंधे मुँह झुक गया और फिर दौड़
कर चला गया।

22 लेकिन अख़ीमाज़ ख़ुश नहीं था। वह इसरार
करता रहा, “कुछ भी हो जाए, मेहरबानी करके मुझे
उस के पीछे दौड़ने दें!” एक और बार योआब ने उसे
रोकने की कोशिश की, “बेटे, आप जाने के लिए क्यूँ
तड़पते हैं? जो ख़बर पहुँचानी है उस के लिए आप को
इनआम नहीं मिलेगा।” 23 अख़ीमाज़ ने जवाब दिया,
“कोई बात नहीं। कुछ भी हो जाए, मैं हर सूरत में दौड़
कर बादशाह के पास जाना चाहता हूँ।” तब योआब
ने उसे जाने दिया। अख़ीमाज़ ने दरया-ए-यर्दन के खुले

मैदान का रास्ता लिया, इस लिए वह एथोपिया के आदमी से पहले बादशाह के पास पहुँच गया।

24 उस वक़्त दाऊद शहर के बाहर और अन्दर वाले
दरवाज़ों के दरमियान बैठा इन्तिज़ार कर रहा था।
जब पहरेदार दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर चढ़ा
तो उसे एक तन्हा आदमी नज़र आया जो दौड़ता हुआ
उन की तरफ़ आ रहा था। 25 पहरेदार ने आवाज़ दे
कर बादशाह को इत्तिला दी। दाऊद बोला, "अगर
अकेला हो तो ज़रूर ख़ुशख़बरी ले कर आ रहा
होगा।" यह आदमी भागता भागता क़रीब आ गया,
26 लेकिन इतने में पहरेदार को एक और आदमी नज़र
आया जो शहर की तरफ़ दौड़ता हुआ आ रहा था।
उस ने शहर के दरवाज़े के दरबान को आवाज़ दी,
"एक और आदमी दौड़ता हुआ दिखाई दे रहा है।
वह भी अकेला ही आ रहा है।" दाऊद ने कहा, "वह
भी अच्छी ख़बर ले कर आ रहा है।" 27 फिर पहरेदार
पुकारा, "लगता है कि पहला आदमी अख़ीमाज़ बिन
सदोक़ है, क्यूँकि वही यूँ चलता है।" दाऊद को
तसल्ली हुई, "अख़ीमाज़ अच्छा बन्दा है। वह ज़रूर
अच्छी ख़बर ले कर आ रहा होगा।"

28 दूर से अख़ीमाज़ ने बादशाह को आवाज़ दी,
"बादशाह की सलामती हो!" वह औंधे मुँह बादशाह
के सामने झुक कर बोला, "रब आप के ख़ुदा की
तम्जीद हो! उस ने आप को उन लोगों से बचा लिया है
जो मेरे आक़ा और बादशाह के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए
थे।" 29 दाऊद ने पूछा, "और मेरा बेटा अबीसलूम?
क्या वह महफ़ूज़ है?" अख़ीमाज़ ने जवाब दिया,
"जब योआब ने मुझे और बादशाह के दूसरे ख़ादिम
को आप के पास रुख़्सत किया तो उस वक़्त बड़ी
अफ़रा-तफ़री थी। मुझे तफ़्सील से मालूम न हुआ कि
क्या हो रहा है।" 30 बादशाह ने हुक्म दिया, "एक
तरफ़ हो कर मेरे पास खड़े हो जाएँ!" अख़ीमाज़ ने
ऐसा ही किया।

31 फिर एथोपिया का आदमी पहुँच गया। उस ने
कहा, "मेरे बादशाह, मेरी ख़ुशख़बरी सुनें! आज रब
ने आप को उन सब लोगों से नजात दिलाई है जो
आप के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे।" 32 बादशाह ने
सवाल किया, "और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह
महफ़ूज़ है?" एथोपिया के आदमी ने जवाब दिया,
"मेरे आक़ा, जिस तरह उस के साथ हुआ है, उस
तरह आप के तमाम दुश्मनों के साथ हो जाए, उन
सब के साथ जो आप को नुक़्सान पहुँचाना चाहते
हैं!"

33 यह सुन कर बादशाह लरज़ उठा। शहर के
दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर एक कमरा था।
अब बादशाह रोते रोते सीढ़ियों पर चढ़ने लगा और
चीख़ते चिल्लाते उस कमरे में चला गया, "हाय मेरे बेटे
अबीसलूम! मेरे बेटे, मेरे बेटे अबीसलूम! काश मैं ही
तेरी जगह मर जाता। हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे
बेटे!"

योआब दाऊद को समझाता है

19 1 योआब को इत्तिला दी गई, "बादशाह रोते
रोते अबीसलूम का मातम कर रहा है।"
2 जब फ़ौजियों को ख़बर मिली कि बादशाह अपने
बेटे का मातम कर रहा है तो फ़त्ह पाने पर उन की
सारी ख़ुशी काफ़ूर हो गई। हर तरफ़ मातम और ग़म
का समाँ था। 3 उस दिन दाऊद के आदमी चोरी चोरी
शहर में घुस आए, ऐसे लोगों की तरह जो मैदान-ए-
जंग से फ़रार होने पर शरमाते हुए चुपके से शहर में
आ जाते हैं।

4 बादशाह अभी कमरे में बैठा था। अपने मुँह को
ढाँप कर वह चीख़ता चिल्लाता रहा, "हाय मेरे बेटे
अबीसलूम! हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!"
5 तब योआब उस के पास जा कर उसे समझाने लगा,
"आज आप के ख़ादिमों ने न सिर्फ़ आप की जान
बचाई है बल्कि आप के बेटों, बेटियों, बीवियों और
दाश्ताओं की जान भी। तो भी आप ने उन का मुँह
काला कर दिया है। 6 जो आप से नफ़रत करते हैं उन
से आप मुहब्बत रखते हैं जबकि जो आप से प्यार
करते हैं उन से आप नफ़रत करते हैं। आज आप ने
साफ़ ज़ाहिर कर दिया है कि आप के कमाँडर और

दस्ते आप की नज़र में कोई हैसियत नहीं रखते। हाँ, आज मैं ने जान लिया है कि अगर अबीसलूम ज़िन्दा होता तो आप ख़ुश होते, ख़्वाह हम बाक़ी तमाम लोग हलाक क्यूँ न हो जाते। 7 अब उठ कर बाहर जाएँ और अपने ख़ादिमों की हौसलाअफ़ज़ाई करें। रब की क़सम, अगर आप बाहर न निकलेंगे तो रात तक एक भी आप के साथ नहीं रहेगा। फिर आप पर ऐसी मुसीबत आएगी जो आप की जवानी से ले कर आज तक आप पर नहीं आई है।”

8 तब दाऊद उठा और शहर के दरवाज़े के पास उतर आया। जब फ़ौजियों को बताया गया कि बादशाह शहर के दरवाज़े में बैठा है तो वह सब उस के सामने जमा हुए। इतने में इस्राईली अपने घर भाग गए थे।

दाऊद यरूशलम वापस आता है

9 इस्राईल के तमाम क़बीलों में लोग आपस में बह्स-मुबाहसा करने लगे, “दाऊद बादशाह ने हमें हमारे दुश्मनों से बचाया, और उसी ने हमें फ़िलिस्तियों के हाथ से आज़ाद कर दिया। लेकिन अबीसलूम की वजह से वह मुल्क से हिज्रत कर गया है। 10 अब जब अबीसलूम जिसे हम ने मसह करके बादशाह बनाया था मर गया है तो आप बादशाह को वापस लाने से क्यूँ झिजकते हैं?”

11 दाऊद ने सदोक़ और अबियातर इमामों की मारिफ़त यहूदाह के बुज़ुर्गों को इत्तिला दी, “यह बात मुझ तक पहुँच गई है कि तमाम इस्राईल अपने बादशाह का इस्तिक़बाल करके उसे महल में वापस लाना चाहता है। तो फिर आप क्यूँ देर कर रहे हैं? क्या आप मुझे वापस लाने में सब से आख़िर में आना चाहते हैं? 12 आप मेरे भाई, मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं। तो फिर आप बादशाह को वापस लाने में आख़िर में क्यूँ आ रहे हैं?” 13 और अबीसलूम के कमाँडर अमासा को दोनों इमामों ने दाऊद का यह पैग़ाम पहुँचाया, “सुनें, आप मेरे भतीजे हैं, इस लिए अब से आप ही योआब की जगह मेरी फ़ौज के कमाँडर होंगे। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं अपना यह वादा पूरा न करूँ।”

14 इस तरह दाऊद यहूदाह के तमाम दिलों को जीत सका, और सब के सब उस के पीछे लग गए। उन्हों ने उसे पैग़ाम भेजा, “वापस आएँ, आप भी और आप के तमाम लोग भी।” 15 तब दाऊद यरूशलम वापस चलने लगा। जब वह दरया-ए-यर्दन तक पहुँचा तो यहूदाह के लोग जिल्जाल में आए ताकि उस से मिलें और उसे दरया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ।

दाऊद सिमई को मुआफ़ कर देता है

16 बिनयमीनी शहर बहूरीम का सिमई बिन जीरा भी भाग कर यहूदाह के आदमियों के साथ दाऊद से मिलने आया। 17 बिनयमीन के क़बीले के हज़ार आदमी उस के साथ थे। साऊल का पुराना नौकर ज़ीबा भी अपने 15 बेटों और 20 नौकरों समेत उन में शामिल था। बादशाह के यर्दन के किनारे तक पहुँचने से पहले पहले 18 वह जल्दी से दरया को उबूर करके उस के पास आए ताकि बादशाह के घराने को दरया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ और हर तरह से बादशाह को ख़ुश रखें।

दाऊद दरया को पार करने को था कि सिमई औंधे मुँह उस के सामने गिर गया। 19 उस ने इल्तिमास की, “मेरे आक़ा, मुझे मुआफ़ करें। जो ज़ियादती मैं ने उस दिन आप से की जब आप को यरूशलम को छोड़ना पड़ा वह याद न करें। बराह-ए-करम यह बात अपने ज़हन से निकाल दें। 20 मैं ने जान लिया है कि मुझ से बड़ा जुर्म सरज़द हुआ है, इस लिए आज मैं यूसुफ़ के घराने के तमाम अफ़राद से पहले ही अपने आक़ा और बादशाह के हुज़ूर आ गया हूँ।”

21 अबीशै बिन ज़रूयाह बोला, “सिमई सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है! उस ने रब के मसह किए हुए बादशाह पर लानत की है।” 22 लेकिन दाऊद ने उसे डाँटा, “मेरा आप और आप के भाई योआब के साथ क्या वास्ता? ऐसी बातों से आप इस दिन मेरे मुख़ालिफ़ बन गए हैं! आज तो इस्राईल में किसी को

सज़ा-ए-मौत देने का नहीं बल्कि ख़ुशी का दिन है। देखें, इस दिन मैं दुबारा इस्राईल का बादशाह बन गया हूँ!” 23 फिर बादशाह सिमई से मुख़ातिब हुआ, “रब की क़सम, आप नहीं मरेंगे।”

मिफ़ीबोसत दाऊद से मिलने आता है

24 साऊल का पोता मिफ़ीबोसत भी बादशाह से मिलने आया। उस दिन से जब दाऊद को यरूशलम को छोड़ना पड़ा आज तक जब वह सलामती से वापस पहुँचा मिफ़ीबोसत मातम की हालत में रहा था। न उस ने अपने पाँओ न अपने कपड़े धोए थे, न अपनी मूँछों की काँट-छाँट की थी। 25 जब वह बादशाह से मिलने के लिए यरूशलम से निकला तो बादशाह ने उस से सवाल किया, “मिफ़ीबोसत, आप मेरे साथ क्यूँ नहीं गए थे?”

26 उस ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा और बादशाह, मैं जाने के लिए तय्यार था, लेकिन मेरा नौकर ज़ीबा मुझे धोका दे कर अकेला ही चला गया। मैं ने तो उसे बताया था, ‘मेरे गधे पर ज़ीन कसो ताकि मैं बादशाह के साथ रवाना हो सकूँ।’ और मेरा जाने का कोई और वसीला था नहीं, क्यूँकि मैं दोनों टाँगों से माज़ूर हूँ। 27 ज़ीबा ने मुझ पर तुहमत लगाई है। लेकिन मेरे आक़ा और बादशाह अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। मेरे साथ वही कुछ करें जो आप को मुनासिब लगे। 28 मेरे दादा के पूरे घराने को आप हलाक कर सकते थे, लेकिन फिर भी आप ने मेरी इज़्ज़त करके उन मेहमानों में शामिल कर लिया जो रोज़ाना आप की मेज़ पर खाना खाते हैं। चुनाँचे मेरा क्या हक़ है कि मैं बादशाह से मज़ीद अपील करूँ।”

29 बादशाह बोला, “अब बस करें। मैं ने फ़ैसला कर लिया है कि आप की ज़मीनें आप और ज़ीबा में बराबर तक़्सीम की जाएँ।” 30 मिफ़ीबोसत ने जवाब दिया, “वह सब कुछ ले ले। मेरे लिए यही काफ़ी है कि आज मेरे आक़ा और बादशाह सलामती से अपने महल में वापस आ पहुँचे हैं।”

दाऊद और बर्ज़िल्लै

31 बर्ज़िल्लै जिलिआदी राजिलीम से आया था ताकि बादशाह के साथ दरया-ए-यर्दन को पार करके उसे रुख़्सत करे। 32 बर्ज़िल्लै 80 साल का था। महनाइम में रहते वक़्त उसी ने दाऊद की मेहमान-नवाज़ी की थी, क्यूँकि वह बहुत अमीर था। 33 अब दाऊद ने बर्ज़िल्लै को दावत दी, “मेरे साथ यरूशलम जा कर वहाँ रहें! मैं आप का हर तरह से ख़याल रखूँगा।”

34 लेकिन बर्ज़िल्लै ने इन्कार किया, “मेरी ज़िन्दगी के थोड़े दिन बाक़ी हैं, मैं क्यूँ यरूशलम में जा बसूँ? 35 मेरी उम्र 80 साल है। न मैं अच्छी और बुरी चीज़ों में इम्तियाज़ कर सकता, न मुझे खाने-पीने की चीज़ों का मज़ा आता है। गीत गाने वालों की आवाज़ें भी मुझ से सुनी नहीं जातीं। नहीं मेरे आक़ा और बादशाह, अगर मैं आप के साथ जाऊँ तो आप के लिए सिर्फ़ बोझ का बाइस हूँगा। 36 इस की ज़रूरत नहीं कि आप मुझे इस क़िस्म का मुआवज़ा दें। मैं बस आप के साथ दरया-ए-यर्दन को पार करूँगा 37 और फिर अगर इजाज़त हो तो वापस चला जाऊँगा। मैं अपने ही शहर में मरना चाहता हूँ, जहाँ मेरे माँ-बाप की क़ब्र है। लेकिन मेरा बेटा किम्हाम आप की ख़िदमत में हाज़िर है। वह आप के साथ चला जाए तो आप उस के लिए वह कुछ करें जो आप को मुनासिब लगे।”

38 दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, किम्हाम मेरे साथ जाए। और जो कुछ भी आप चाहेंगे मैं उस के लिए करूँगा। अगर कोई काम है जो मैं आप के लिए कर सकता हूँ तो मैं हाज़िर हूँ।”

39 फिर दाऊद ने अपने साथियों समेत दरया को उबूर किया। बर्ज़िल्लै को बोसा दे कर उस ने उसे बरकत दी। बर्ज़िल्लै अपने शहर वापस चल पड़ा 40 जबकि दाऊद जिल्जाल की तरफ़ बढ़ गया। किम्हाम भी साथ गया। इस के इलावा यहूदाह के सब और इस्राईल के आधे लोग उस के साथ चले।

इस्राईल और यहूदाह आपस में झगड़ते हैं

41 रास्ते में इस्राईल के मर्द बादशाह के पास आ
कर शिकायत करने लगे, “हमारे भाइयों यहूदाह के
लोगों ने आप को आप के घराने और फ़ौजियों समेत
चोरी चोरी क्यूँ दरया-ए-यर्दन के मग़रिबी किनारे तक
पहुँचाया? यह ठीक नहीं है।”
42 यहूदाह के मर्दों ने जवाब दिया, “बात यह है कि
हम बादशाह के क़रीबी रिश्तेदार हैं। आप को यह
देख कर ग़ुस्सा क्यूँ आ गया है? न हम ने बादशाह
का खाना खाया, न उस से कोई तुह्फ़ा पाया है।”
43 तो भी इस्राईल के मर्दों ने एतिराज़ किया, “हमारे
दस क़बीले हैं, इस लिए हमारा बादशाह की ख़िदमत
करने का दस गुना ज़्यादा हक़ है। तो फिर आप हमें
हक़ीर क्यूँ जानते हैं? हम ने तो पहले अपने बादशाह
को वापस लाने की बात की थी।” यूँ बह्स-मुबाहसा
जारी रहा, लेकिन यहूदाह के मर्दों की बातें ज़्यादा
सख़्त थीं।

सबा दाऊद के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होता है

20 1 झगड़ने वालों में से एक बदमआश था
जिस का नाम सबा बिन बिक्री था। वह
बिनयमीनी था। अब उस ने नरसिंगा बजा कर एलान
किया, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा,
न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ
इस्राईल, हर एक अपने घर वापस चला जाए!” 2 तब
तमाम इस्राईली दाऊद को छोड़ कर सबा बिन बिक्री
के पीछे लग गए। सिर्फ़ यहूदाह के मर्द अपने बादशाह
के साथ लिपटे रहे और उसे यर्दन से ले कर यरूशलम
तक पहुँचाया।
3 जब दाऊद अपने महल में दाख़िल हुआ तो उस ने
उन दस दाश्ताओं का बन्द-ओ-बस्त कराया जिन को
उस ने महल को सँभालने के लिए पीछे छोड़ दिया
था। वह उन्हें एक ख़ास घर में अलग रख कर उन की
तमाम ज़रूरियात पूरी करता रहा लेकिन उन से कभी
हमबिसतर न हुआ। वह कहीं जा न सकीं, और उन्हें
ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक बेवा की सी ज़िन्दगी
गुज़ारनी पड़ी।
4 फिर दाऊद ने अमासा को हुक्म दिया, “यहूदाह
के तमाम फ़ौजियों को मेरे पास बुला लाएँ। तीन
दिन के अन्दर अन्दर उन के साथ हाज़िर हो जाएँ।”
5 अमासा रवाना हुआ। लेकिन जब तीन दिन के बाद
लौट न आया 6 तो दाऊद अबीशै से मुख़ातिब हुआ,
“आख़िर में सबा बिन बिक्री हमें अबीसलूम की
निस्बत ज़्यादा नुक़्सान पहुँचाएगा। जल्दी करें, मेरे
दस्तों को ले कर उस का ताक़्क़ुब करें। ऐसा न हो
कि वह क़िलाबन्द शहरों को क़ब्ज़े में ले ले और
यूँ हमारा बड़ा नुक़्सान हो जाए।” 7 तब योआब के
सिपाही, बादशाह का दस्ता करेती-ओ-फ़लेती और
तमाम माहिर फ़ौजी यरूशलम से निकल कर सबा
बिन बिक्री का ताक़्क़ुब करने लगे।
8 जब वह जिबऊन की बड़ी चटान के पास पहुँचे
तो उन की मुलाक़ात अमासा से हुई जो थोड़ी देर
पहले वहाँ पहुँच गया था। योआब अपना फ़ौजी
लिबास पहने हुए था, और उस पर उस ने कमर में
अपनी तलवार की पेटी बांधी हुई थी। अब जब वह
अमासा से मिलने गया तो उस ने अपने बाएँ हाथ
से तलवार को चोरी चोरी मियान से निकाल लिया।
9 उस ने सलाम करके कहा, “भाई, क्या सब ठीक
है?” और फिर अपने दहने हाथ से अमासा की दाढ़ी
को यूँ पकड़ लिया जैसे उसे बोसा देना चाहता हो।
10 अमासा ने योआब के दूसरे हाथ में तलवार पर
ध्यान न दिया, और अचानक योआब ने उसे इतने
ज़ोर से पेट में घोंप दिया कि उस की अंतड़ियाँ फूट
कर ज़मीन पर गिर गईं। तलवार को दुबारा इस्तेमाल
करने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्यूँकि अमासा फ़ौरन
मर गया।
फिर योआब और अबीशै सबा का ताक़्क़ुब करने
के लिए आगे बढ़े। 11 योआब का एक फ़ौजी अमासा
की लाश के पास खड़ा रहा और गुज़रने वाले
फ़ौजियों को आवाज़ देता रहा, “जो योआब और
दाऊद के साथ है वह योआब के पीछे हो ले!”

12 लेकिन जितने वहाँ से गुज़रे वह अमासा का
ख़ूनआलूदा और तड़पता हुआ जिस्म देख कर रुक
गए। जब आदमी ने देखा कि लाश रुकावट का
बाइस बन गई है तो उस ने उसे रास्ते से हटा कर
खेत में घसीट लिया और उस पर कपड़ा डाल दिया।
13 लाश के ग़ाइब हो जाने पर सब लोग योआब के
पीछे चले गए और सबा का ताक़्क़ुब करने लगे।
14 इतने में सबा पूरे इस्राईल से गुज़रते गुज़रते
शिमाल के शहर अबील-बैत-माका तक पहुँच गया
था। बिक्री के ख़ानदान के तमाम मर्द भी उस के पीछे
लग कर वहाँ पहुँच गए थे। 15 तब योआब और उस
के फ़ौजी वहाँ पहुँच कर शहर का मुहासरा करने
लगे। उन्हों ने शहर की बाहर वाली दीवार के साथ
साथ मिट्टी का बड़ा तोदा लगाया और उस पर से
गुज़र कर अन्दर वाली बड़ी दीवार तक पहुँच गए।
वहाँ वह दीवार की तोड़ फोड़ करने लगे ताकि वह
गिर जाए।
16 तब शहर की एक दानिशमन्द औरत ने फ़सील
से योआब के लोगों को आवाज़ दी, “सुनें! योआब
को यहाँ बुला लें ताकि मैं उस से बात कर सकूँ।”
17 जब योआब दीवार के पास आया तो औरत ने
सवाल किया, “क्या आप योआब हैं?” योआब ने
जवाब दिया, “मैं ही हूँ।” औरत ने दरख़्वास्त की,
“ज़रा मेरी बातों पर ध्यान दें।” योआब बोला, “ठीक
है, मैं सुन रहा हूँ।” 18 फिर औरत ने अपनी बात पेश
की, “पुराने ज़माने में कहा जाता था कि अबील शहर
से मश्वरा लो तो बात बनेगी। 19 देखें, हमारा शहर
इस्राईल का सब से ज़्यादा अम्नपसन्द और वफ़ादार
शहर है। आप एक ऐसा शहर तबाह करने की कोशिश
कर रहे हैं जो ‘इस्राईल की माँ’ कहलाता है। आप
रब की मीरास को क्यूँ हड़प कर लेना चाहते हैं?”
20 योआब ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे कि मैं
आप के शहर को हड़प या तबाह करूँ। 21 मेरे आने
का एक और मक़्सद है। इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े
का एक आदमी दाऊद बादशाह के ख़िलाफ़ उठ
खड़ा हुआ है जिस का नाम सबा बिन बिक्री है। उसे
ढूँड रहे हैं। उसे हमारे हवाले करें तो हम शहर को
छोड़ कर चले जाएंगे।”
औरत ने कहा, “ठीक है, हम दीवार पर से उस का
सर आप के पास फैंक देंगे।” 22 उस ने अबील-बैत-
माका के बाशिन्दों से बात की और अपनी हिक्मत
से उन्हें क़ाइल किया कि ऐसा ही करना चाहिए।
उन्हों ने सबा का सर क़लम करके योआब के पास
फैंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा बजा कर शहर
को छोड़ने का हुक्म दिया, और तमाम फ़ौजी अपने
अपने घर वापस चले गए। योआब ख़ुद यरूशलम में
दाऊद बादशाह के पास लौट गया।

दाऊद के आला अफ़्सर

23 योआब पूरी इस्राईली फ़ौज पर, बिनायाह बिन
यहोयदा शाही दस्ते करेती-ओ-फ़लेती पर 24 और
अदोराम बेगारियों पर मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन
अख़ीलूद बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास था। 25 सिवा
मीरमुन्शी था और सदोक़ और अबियातर इमाम थे।
26 ईरा याईरी दाऊद का ज़ाती इमाम था।

साऊल के जुर्म का कफ़्फ़ारा

21 1 दाऊद की हुकूमत के दौरान काल पड़
गया जो तीन साल तक जारी रहा। जब
दाऊद ने इस की वजह दरयाफ़्त की तो रब ने जवाब
दिया, “काल इस लिए ख़त्म नहीं हो रहा कि साऊल
ने जिबऊनियों को क़त्ल किया था।”
2 तब बादशाह ने जिबऊनियों को बुला लिया ताकि
उन से बात करे। असल में वह इस्राईली नहीं
बल्कि अमोरियों का बचा-खुचा हिस्सा थे। मुल्क-ए-
कनआन पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इस्राईलियों ने क़सम
खा कर वादा किया था कि हम आप को हलाक नहीं
करेंगे। लेकिन साऊल ने इस्राईल और यहूदाह के
लिए जोश में आ कर उन्हें हलाक करने की कोशिश
की थी।
3 दाऊद ने जिबऊनियों से पूछा, “मैं उस ज़ियादती
का कफ़्फ़ारा किस तरह दे सकता हूँ जो आप से हुई

है? मैं आप के लिए क्या करूँ ताकि आप दुबारा उस
ज़मीन को बरकत दें जो रब ने हमें मीरास में दी है?”
4 उन्हों ने जवाब दिया, “जो साऊल ने हमारे और
हमारे ख़ानदानों के साथ किया है उस का इज़ाला
सोने-चाँदी से नहीं किया जा सकता। यह भी मुनासिब
नहीं कि हम इस के इवज़ किसी इस्राईली को मार
दें।” दाऊद ने सवाल किया, “तो फिर मैं आप के
लिए क्या करूँ?” 5 जिबऊनियों ने कहा, “साऊल
ही ने हमें हलाक करने का मन्सूबा बनाया था, वही
हमें तबाह करना चाहता था ताकि हम इस्राईल की
किसी भी जगह क़ाइम न रह सकें। 6 इस लिए साऊल
की औलाद में से सात मर्दों को हमारे हवाले कर दें।
हम उन्हें रब के चुने हुए बादशाह साऊल के वतनी
शहर जिबिआ में रब के पहाड़ पर मौत के घाट उतार
कर उस के हुज़ूर लटका दें।”

बादशाह ने जवाब दिया, “मैं उन्हें आप के हवाले
कर दूँगा।” 7 यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत साऊल का
पोता तो था, लेकिन बादशाह ने उसे न छेड़ा, क्यूँकि
उस ने रब की क़सम खा कर यूनतन से वादा किया
था कि मैं आप की औलाद को कभी नुक़्सान नहीं
पहुँचाऊँगा। 8 चुनाँचे उस ने साऊल की दाश्ता रिस्फ़ा
बिन्त अय्याह के दो बेटों अर्मोनी और मिफ़ीबोसत
को और इस के इलावा साऊल की बेटी मीरब के
पाँच बेटों को चुन लिया। मीरब बर्ज़िल्लै महूलाती के
बेटे अद्रीएल की बीवी थी। 9 इन सात आदमियों को
दाऊद ने जिबऊनियों के हवाले कर दिया।

सातों आदमियों को मज़कूरा पहाड़ पर लाया गया।
वहाँ जिबऊनियों ने उन्हें क़त्ल करके रब के हुज़ूर
लटका दिया। वह सब एक ही दिन मर गए। उस
वक़्त जौ की फ़सल की कटाई शुरू हुई थी।

10 तब रिस्फ़ा बिन्त अय्याह सातों लाशों के पास
गई और पत्थर पर अपने लिए टाट का कपड़ा बिछा
कर लाशों की हिफ़ाज़त करने लगी। दिन के वक़्त
वह परिन्दों को भगाती और रात के वक़्त जंगली
जानवरों को लाशों से दूर रखती रही। वह बहार के
मौसम में फ़सल की कटाई के पहले दिनों से ले कर
उस वक़्त तक वहाँ ठहरी रही जब तक बारिश न
हुई।

11 जब दाऊद को मालूम हुआ कि साऊल की
दाश्ता रिस्फ़ा ने क्या किया है 12–14 तो वह यबीस-
जिलिआद के बाशिन्दों के पास गया और उन से
साऊल और उस के बेटे यूनतन की हड्डियों को ले
कर साऊल के बाप क़ीस की क़ब्र में दफ़नाया।
(जब फ़िलिस्तियों ने जिल्बूअ के पहाड़ी इलाक़े में
इस्राईलियों को शिकस्त दी थी तो उन्हों ने साऊल
और यूनतन की लाशों को बैत-शान के चौक में
लटका दिया था। तब यबीस-जिलिआद के आदमी
चोरी चोरी वहाँ आ कर लाशों को अपने पास ले
गए थे।) दाऊद ने जिबिआ में अब तक लटकी सात
लाशों को भी उतार कर ज़िला में क़ीस की क़ब्र में
दफ़नाया। ज़िला बिनयमीन के क़बीले की आबादी
है।

जब सब कुछ दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ किया
गया था तो रब ने मुल्क के लिए दुआएँ सुन लीं।

फ़िलिस्तियों से जंगें

15 एक और बार फ़िलिस्तियों और इस्राईलियों
के दरमियान जंग छिड़ गई। दाऊद अपनी फ़ौज
समेत फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए निकला। जब
वह लड़ता लड़ता निढाल हो गया था 16 तो एक
फ़िलिस्ती ने उस पर हम्ला किया जिस का नाम इश्बी-
बनोब था। यह आदमी देओक़ामत मर्द रफ़ा की नस्ल
से था। उस के पास नई तलवार और इतना लम्बा
नेज़ा था कि सिर्फ़ उस की पीतल की नोक का वज़न
तक़रीबन साढ़े 3 किलोग्राम था। 17 लेकिन अबीशै
बिन ज़रूयाह दौड़ कर दाऊद की मदद करने आया
और फ़िलिस्ती को मार डाला। इस के बाद दाऊद
के फ़ौजियों ने क़सम खाई, “आइन्दा आप लड़ने
के लिए हमारे साथ नहीं निकलेंगे। ऐसा न हो कि
इस्राईल का चराग़ बुझ जाए।”

18 इस के बाद इस्राईलियों को जूब के क़रीब भी
फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हूसाती

ने देओक़ामत म्रद रफ़ा की औलाद में से एक आदमी को मार डाला जिस का नाम सफ़ था।

19 जूब के क़रीब एक और लड़ाई छिड़ गई। इस के दौरान बैत-लहम के इल्हनान बिन यारे-उरजीम ने जाती जालूत को मौत के घाट उतार दिया। जालूत का नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा था। 20 एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फ़िलिस्तियों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की नस्ल का था बहुत लम्बा था। उस के हाथों और पैरों की छः छः उंगलियाँ यानी मिल कर 24 उंगलियाँ थीं। 21 जब वह इस्राईलियों का मज़ाक़ उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे मार डाला। 22 जात के यह देओक़ामत मर्द रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उस के फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

दाऊद का गीत

22 1 जिस दिन रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों और साऊल के हाथ से बचाया उस दिन बादशाह ने गीत गाया,

2 “रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिन्दा है।

3 मेरा ख़ुदा मेरी चटान है जिस में मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलन्द हिसार और मेरी पनाहगाह है। तू मेरा नजातदहिन्दा है जो मुझे ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से बचाता है।

4 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तम्जीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

5 मौत की मौजों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के सैलाब ने मेरे दिल पर दह्शत तारी की।

6 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।

7 जब मैं मुसीबत में फंस गया तो मैं ने रब को पुकारा। मैं ने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़र्याद की तो उस ने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीख़ें उस के कान तक पहुँच गईं।

8 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, आसमान की बुन्यादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने और झूलने लगीं।

9 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उस के मुँह से भस्म करने वाले शोले और दहकते कोएले भड़क उठे।

10 आसमान को झुका कर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उस के पाँओ के नीचे अंधेरा ही अंधेरा था।

11 वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़ कर हवा के परों पर मंडलाने लगा।

12 उस ने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने इर्दगिर्द लगाए।

13 उस के हुज़ूर की तेज़ रौशनी से शोलाज़न कोएले फूट निकले।

14 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गूँज उठी।

15 उस ने अपने तीर चला दिए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर हो गए। उस की बिजली इधर उधर गिरती गई तो उन में हलचल मच गई।

16 रब ने डाँटा तो समुन्दर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं, जब वह ग़ुस्से में गरजा तो उस के दम के झोंकों से ज़मीन की बुन्यादें नज़र आईं।

17 बुलन्दियों पर से अपना हाथ बढ़ा कर उस ने मुझे पकड़ लिया, गहरे पानी में से खैंच कर मुझे निकाल लाया।

18 उस ने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उन से जो मुझ से नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।

19 जिस दिन मैं मुसीबत में फंस गया उस दिन उन्हों ने मुझ पर हम्ला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।

20 उस ने मुझे तंग जगह से निकाल कर छुटकारा दिया, क्यूँकि वह मुझ से ख़ुश था।

21 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे हाथ
साफ़ हैं, इस लिए वह मुझे बरकत देता है।
22 क्यूँकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी
करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
23 उस के तमाम अह्काम मेरे सामने रहे हैं, मैं उस
के फ़रमानों से नहीं हटा।
24 उस के सामने ही मैं बेइल्ज़ाम रहा, गुनाह करने
से बाज़ रहा हूँ।
25 इस लिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र
दिया, क्यूँकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-
साफ़ साबित हुआ।

26 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उस के साथ तेरा सुलूक
वफ़ादारी का है, जो बेइल्ज़ाम है उस के साथ तेरा
सुलूक बेइल्ज़ाम है।
27 जो पाक है उस के साथ तेरा सुलूक पाक है।
लेकिन जो कजरौ है उस के साथ तेरा सुलूक भी
कजरवी का है।
28 तू पस्तहालों को नजात देता है, और तेरी आँखें
मग़ुरूरों पर लगी रहती हैं ताकि उन्हें पस्त करें।

29 ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ है, रब ही मेरे अंधेरे को
रौशन करता है।
30 क्यूँकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हम्ला कर
सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग
सकता हूँ।

31 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान
ख़ालिस है। जो भी उस में पनाह ले उस की वह ढाल
है।
32 क्यूँकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे ख़ुदा
के सिवा कौन चटान है?
33 अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता, वह
मेरी राह को कामिल कर देता है।
34 वह मेरे पाँओ को हिरन की सी फुरती अता
करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलन्दियों पर खड़ा
करता है।
35 वह मेरे हाथों को जंग करने की तर्बियत देता है।
अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

36 ऐ रब, तू ने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी
है, तेरी नर्मी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
37 तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है, इस
लिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
38 मैं ने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें
कुचल दिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म
न हो गए।
39 मैं ने उन्हें तबाह करके यूँ पाश पाश कर दिया
कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिर कर मेरे पाँओ तले
पड़े रहे।
40 क्यूँकि तू ने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत से
कमरबस्ता कर दिया, तू ने मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे
सामने झुका दिया।
41 तू ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया,
और मैं ने नफ़रत करने वालों को तबाह कर दिया।
42 वह मदद के लिए चीख़ते चिल्लाते रहे, लेकिन
बचाने वाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे,
लेकिन उस ने जवाब न दिया।
43 मैं ने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में
उड़ा दिया। मैं ने उन्हें गली में मिट्टी की तरह पाँओ
तले रौंद कर रेज़ा रेज़ा कर दिया।

44 तू ने मुझे मेरी क़ौम के झगड़ों से बचा कर
अक़्वाम पर मेरी हुकूमत क़ाइम रखी है। जिस क़ौम
से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
45 परदेसी दबक कर मेरी ख़ुशामद करते हैं। जूँ ही
मैं बात करता हूँ तो वह मेरी सुनते हैं।
46 वह हिम्मत हार कर काँपते हुए अपने क़िलों से
निकल आते हैं।

47 रब ज़िन्दा है! मेरी चटान की तम्जीद हो! मेरे
ख़ुदा की ताज़ीम हो जो मेरी नजात की चटान है।
48 वही ख़ुदा है जो मेरा इन्तिक़ाम लेता, अक़्वाम
को मेरे ताबे कर देता
49 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता,
मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।

50 ऐ रब, इस लिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्द-ओ-सना
करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
51 क्यूँकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता
है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और
उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।”

दाऊद के आख़िरी अल्फ़ाज़

23 1 दर्ज-ए-ज़ैल दाऊद के आख़िरी अल्फ़ाज़
हैं :
“दाऊद बिन यस्सी का फ़रमान जिसे अल्लाह ने
सरफ़राज़ किया, जिसे याक़ूब के ख़ुदा ने मसह
करके बादशाह बना दिया था, और जिस की तारीफ़
इस्राईल के गीत करते हैं,
2 रब के रूह ने मेरी मारिफ़त बात की, उस का
फ़रमान मेरी ज़बान पर था।
3 इस्राईल के ख़ुदा ने फ़रमाया, इस्राईल की चटान
मुझ से हमकलाम हुई, ‘जो इन्साफ़ से हुकूमत करता
है, जो अल्लाह का ख़ौफ़ मान कर हुक्मरानी करता है,
4 वह सुब्ह की रौशनी की मानिन्द है, उस तुलू-ए-
आफ़ताब की मानिन्द जब बादल छाए नहीं होते। जब
उस की किरनें बारिश के बाद ज़मीन पर पड़ती हैं तो
पौदे फूट निकलते हैं।’
5 यक़ीनन मेरा घराना मज़बूती से अल्लाह के साथ है,
क्यूँकि उस ने मेरे साथ अबदी अह्द बांधा है, ऐसा
अह्द जिस का हर पहलू मुनज़्ज़म और महफ़ूज़ है।
वह मेरी नजात तक्मील तक पहुँचाएगा और मेरी हर
आर्ज़ू पूरी करेगा।
6 लेकिन बेदीन ख़ारदार झाड़ियों की मानिन्द हैं जो
हवा के झोंकों से इधर उधर बिखर गई हैं। काँटों की
वजह से कोई भी हाथ नहीं लगाता।
7 लोग उन्हें लोहे के औज़ार या नेज़े के दस्ते से जमा
करके वहीं के वहीं जला देते हैं।”

दाऊद के सूरमा

8 दर्ज-ए-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़हरिस्त है।
जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के ऐन बाद
आते थे उन में योशेब-बशेबत तह्कमूनी पहले नम्बर
पर आता था। एक बार उस ने अपने नेज़े से 800
आदमियों को मार दिया।
9 इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलीअज़र
बिन दोदो बिन अख़ूही आता था। एक जंग में
जब उन्हों ने फ़िलिस्तियों को चैलेंज दिया था और
इस्राईली बाद में पीछे हट गए तो इलीअज़र दाऊद के
साथ 10 फ़िलिस्तियों का मुक़ाबला करता रहा। उस
दिन वह फ़िलिस्तियों को मारते मारते इतना थक गया
कि आख़िरकार तलवार उठा न सका बल्कि हाथ
तलवार के साथ जम गया। रब ने उस की मारिफ़त
बड़ी फ़त्ह बख़्शी। बाक़ी दस्ते सिर्फ़ लाशों को लूटने
के लिए लौट आए।
11 उस के बाद तीसरी जगह पर सम्मा बिन अजी-
हरारी आता था। एक मर्तबा फ़िलिस्ती लही के क़रीब
मसूर के खेत में इस्राईल के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे।
इस्राईली फ़ौजी उन के सामने भागने लगे, 12 लेकिन
सम्मा खेत के दरमियान तक बढ़ गया और वहाँ
लड़ते लड़ते फ़िलिस्तियों को शिकस्त दी। रब ने उस
की मारिफ़त बड़ी फ़त्ह बख़्शी।
13–14 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के
ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती फ़ौज
ने वादी-ए-रफ़ाईम में अपनी लश्करगाह लगाई थी।
उन के दस्तों ने बैत-लहम पर भी क़ब्ज़ा कर लिया
था। फ़सल का मौसम था। दाऊद के तीस आला
अफ़सरों में से तीन उस से मिलने आए। 15 दाऊद को
शदीद प्यास लगी, और वह कहने लगा, “कौन मेरे

लिए बैत-लहम के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?” 16 यह सुन कर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तियों की लश्करगाह पर हम्ला करके उस में घुस गए और लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उस से कुछ पानी भर कर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन उस ने पीने से इन्कार कर दिया बल्कि उसे क़ुर्बानी के तौर पर उंडेल कर रब को पेश किया 17 और बोला, “रब न करे कि मैं यह पानी पियूँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों का ख़ून पीता जो अपनी जान पर खेल कर पानी लाए हैं।” इस लिए वह उसे पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त कामों की एक मिसाल है।

18–19 योआब बिन ज़रूयाह का भाई अबीशै मज़कूरा तीन सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा उस ने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निस्बत उस की दुगनी इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह ख़ुद उन में गिना नहीं जाता था।

20 बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी था। वह क़ब्ज़िएल का रहने वाला था, और उस ने बहुत दफ़ा अपनी मर्दानगी दिखाई। मोआब के दो बड़े सूरमा उस के हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उस ने एक हौज़ में उतर कर एक शेरबबर को मार डाला जो उस में गिर गया था। 21 एक और मौक़े पर उस का वास्ता एक देओक़ामत मिस्री से पड़ा। मिस्री के हाथ में नेज़ा था जबकि उस के पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन बिनायाह ने उस पर हम्ला करके उस के हाथ से नेज़ा छीन लिया और उसे उस के अपने हथियार से मार डाला। 22 ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन यहोयदा मज़कूरा तीन आदमियों के बराबर मश्हूर हुआ। 23 तीस अफ़सरों के दीगर मर्दों की निस्बत उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़कूरा तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर किया।

24 ज़ैल के आदमी बादशाह के 30 सूरमाओं में शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का इल्हनान बिन दोदो, 25 सम्मा हरोदी, इलीक़ा हरोदी, 26 ख़लिस फ़ल्ती, तक़ूअ का ईरा बिन अक़्क़ीस, 27 अनतोत का अबीअज़र, मबून्नी हूसाती, 28 ज़ल्मोन अख़ूही, महरी नतूफ़ाती, 29 हलिब बिन बाना नतूफ़ाती, बिनयमीनी शहर जिबिआ का इत्ती बिन रीबी, 30 बिनायाह फ़िरआतोनी, नहले-जास का हिद्दी, 31 अबी-अल्बोन अर्बाती, अज़्मावत बर्हूमी, 32–33 इलियह्बा सालबूनी, बनी यसीन, यूनतन बिन सम्मा हरारी, अख़ीआम बिन सरार-हरारी, 34 इलीफ़लत बिन अहस्बी माकाती, इलीआम बिन अख़ीतुफ़ल जिलोनी, 35 हस्रो कर्मिली, फ़ारी अर्बी, 36 ज़ोबाह का इजाल बिन नातन, बानी जादी, 37 सिलक़ अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का सिलाहबर्दार नहरी बैरोती, 38 ईरा इत्री, जरीब इत्री 39 और ऊरियाह हित्ती। आदमियों की कुल तादाद 37 थी।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

24 1 एक बार फिर रब को इस्राईल पर ग़ुस्सा आया, और उस ने दाऊद को उन्हें मुसीबत में डालने पर उकसा कर उस के ज़हन में मर्दुमशुमारी करने का ख़याल डाल दिया।

2 चुनाँचे दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर योआब को हुक्म दिया, “दान से ले कर बैर-सबा तक इस्राईल के तमाम क़बीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के क़ाबिल मर्दों को गिन लें ताकि मालूम हो जाए कि उन की कुल तादाद क्या है।” 3 लेकिन योआब ने एतिराज़ किया, “ऐ बादशाह मेरे आक़ा, काश रब आप का ख़ुदा आप के देखते देखते फ़ौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ाए। लेकिन मेरे आक़ा और बादशाह उन की मर्दुमशुमारी क्यूँ करना चाहते हैं?” 4 लेकिन बादशाह योआब और फ़ौज के बड़े अफ़सरों के एतिराज़ात के बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे वह दरबार से रवाना हो कर इस्राईल के मर्दों की फ़हरिस्त तय्यार करने लगे।

5 दरया-ए-यर्दन को उबूर करके उन्हों ने अरोईर
और वादी-ए-अर्नोन के बीच के शहर में शुरू किया।
वहाँ से वह जद और याज़ेर से हो कर 6 जिलिआद
और हित्तियों के मुल्क के शहर क़ादिस तक पहुँचे।
फिर आगे बढ़ते बढ़ते वह दान और सैदा के गिर्द-
ओ-नवाह के इलाक़े 7 और क़िलाबन्द शहर सूर और
हिव्वियों और कनआनियों के तमाम शहरों तक
पहुँच गए। आख़िरकार उन्हों ने यहूदाह के जुनूब की
मर्दुमशुमारी बैर-सबा तक की।
8 यूँ पूरे मुल्क में सफ़र करते करते वह 9 महीनों
और 20 दिनों के बाद यरूशलम वापस आए।
9 योआब ने बादशाह को मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट
पेश की। इस्राईल में तलवार चलाने के क़ाबिल 8
लाख अफ़राद थे जबकि यहूदाह के 5 लाख मर्द थे।
10 लेकिन अब दाऊद का ज़मीर उस को मलामत
करने लगा। उस ने रब से दुआ की, “मुझ से संगीन
गुनाह सरज़द हुआ है। ऐ रब, अब अपने ख़ादिम का
क़ुसूर मुआफ़ कर। मुझ से बड़ी हमाक़त हुई है।”
11 अगले दिन जब दाऊद सुब्ह के वक़्त उठा तो
उस के ग़ैबबीन जाद नबी को रब की तरफ़ से पैग़ाम
मिल गया, 12 “दाऊद के पास जा कर उसे बता देना,
‘रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इन में से एक चुन
ले’।” 13 जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का
पैग़ाम सुना दिया। उस ने सवाल किया, “आप किस
सज़ा को तर्जीह देते हैं? अपने मुल्क में सात साल के
दौरान काल? या यह कि आप के दुश्मन आप को
भगा कर तीन माह तक आप का ताक़्क़ुब करते रहें?
या यह कि आप के मुल्क में तीन दिन तक वबा फैल
जाए? ध्यान से इस के बारे में सोचें ताकि मैं उसे
आप का जवाब पहुँचा सकूँ जिस ने मुझे भेजा है।”
14 दाऊद ने जवाब दिया, “हाय, मैं क्या कहूँ? मैं
बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथ में पड़ने
की निस्बत बेहतर है कि मैं रब ही के हाथ में पड़
जाऊँ, क्यूँकि उस का रहम अज़ीम है।”
15 तब रब ने इस्राईल में वबा फैलने दी। वह उसी
सुब्ह शुरू हुई और तीन दिन तक लोगों को मौत
के घाट उतारती गई। शिमाल में दान से ले कर
जुनूब में बैर-सबा तक कुल 70,000 अफ़राद हलाक
हुए। 16 लेकिन जब वबा का फ़रिश्ता चलते चलते
यरूशलम तक पहुँच गया और उस पर हाथ उठाने
लगा तो रब ने लोगों की मुसीबत को देख कर
तरस खाया और तबाह करने वाले फ़रिश्ते को हुक्म
दिया, “बस कर! अब बाज़ आ।” उस वक़्त रब का
फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ अरौनाह यबूसी अपना
अनाज गाहता था।
17 जब दाऊद ने फ़रिश्ते को लोगों को मारते हुए
देखा तो उस ने रब से इल्तिमास की, “मैं ही ने गुनाह
किया है, यह मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से क्या ग़लती
हुई है? बराह-ए-करम इन को छोड़ कर मुझे और मेरे
ख़ानदान को सज़ा दे।”
18 उसी दिन जाद दाऊद के पास आया और उस
से कहा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह के
पास जा कर उस पर रब की क़ुर्बानगाह बना ले।”
19 चुनाँचे दाऊद चढ़ कर गाहने की जगह के पास
आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया
था।
20 जब अरौनाह ने बादशाह और उस के दरबारियों
को अपनी तरफ़ चढ़ता हुआ देखा तो वह निकल
कर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। 21 उस
ने पूछा, “मेरे आक़ा और बादशाह मेरे पास क्यूँ आ
गए?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं आप की गाहने
की जगह ख़रीदना चाहता हूँ ताकि रब के लिए
क़ुर्बानगाह तामीर करूँ। क्यूँकि यह करने से वबा
रुक जाएगी।”
22 अरौनाह ने कहा, “मेरे आक़ा और बादशाह,
जो कुछ आप को अच्छा लगे उसे ले कर चढ़ाएँ।
यह बैल भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए हाज़िर
हैं। और अनाज को गाहने और बैलों को जोतने का
सामान क़ुर्बानगाह पर रख कर जला दें। 23 बादशाह
सलामत, मैं ख़ुशी से आप को यह सब कुछ दे देता
हूँ। दुआ है कि आप रब अपने ख़ुदा को पसन्द
आएँ।”

24 लेकिन बादशाह ने इन्कार किया, “नहीं, मैं ज़रूर
हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। मैं रब अपने
ख़ुदा को ऐसी कोई भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश नहीं
करूँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”
चुनाँचे दाऊद ने बैलों समेत गाहने की जगह चाँदी
के 50 सिक्कों के इवज़ ख़रीद ली। 25 उस ने वहाँ रब
की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह तामीर करके उस पर भस्म
होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। तब
रब ने मुल्क के लिए दुआ सुन कर वबा को रोक
दिया।

१-सलातीन

अदूनियाह की साज़िश

1 1 दाऊद बादशाह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे
हमेशा सर्दी लगती थी, और उस पर मज़ीद
बिस्तर डालने से कोई फ़ाइदा न होता था। 2 यह देख
कर मुलाज़िमों ने बादशाह से कहा, “अगर इजाज़त
हो तो हम बादशाह के लिए एक नौजवान कुंवारी
ढूँड लें जो आप की ख़िदमत में हाज़िर रहे और
आप की देख-भाल करे। लड़की आप के साथ लेट
कर आप को गर्म रखे।” 3 चुनाँचे वह पूरे मुल्क में
किसी ख़ूबसूरत लड़की की तलाश करने लगे। ढूँडते
ढूँडते अबीशाग शूनीमी को चुन कर बादशाह के पास
लाया गया। 4 अब से वह उस की ख़िदमत में हाज़िर
होती और उस की देख-भाल करती रही। लड़की
निहायत ख़ूबसूरत थी, लेकिन बादशाह ने कभी उस
से सोह्बत न की।

5–6 उन दिनों में अदूनियाह बादशाह बनने की
साज़िश करने लगा। वह दाऊद की बीवी हज्जीत
का बेटा था। यूँ वह अबीसलूम का सौतेला भाई
और उस के मरने पर दाऊद का सब से बड़ा बेटा
था। शक्ल-ओ-सूरत के लिहाज़ से लोग उस की बड़ी
तारीफ़ किया करते थे, और बचपन से उस के बाप
ने उसे कभी नहीं डाँटा था कि तू क्या कर रहा है।
अब अदूनियाह अपने आप को लोगों के सामने पेश
करके एलान करने लगा, “मैं ही बादशाह बनूँगा।”
इस मक़्सद के तहत उस ने अपने लिए रथ और घोड़े
ख़रीद कर 50 आदमियों को रख लिया ताकि वह
जहाँ भी जाए उस के आगे आगे चलते रहें। 7 उस ने
योआब बिन ज़रूयाह और अबियातर इमाम से बात
की तो वह उस के साथी बन कर उस की हिमायत
करने के लिए तय्यार हुए। 8 लेकिन सदोक़ इमाम,
बिनायाह बिन यहोयदा और नातन नबी उस के साथ
नहीं थे, न सिमई, रेई या दाऊद के मुहाफ़िज़।

9 एक दिन अदूनियाह ने ऐन-राजिल चश्मे के क़रीब
की चटान ज़ुहलत के पास ज़ियाफ़त की। काफ़ी
भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और मोटे-ताज़े बछड़े ज़बह
किए गए। अदूनियाह ने बादशाह के तमाम बेटों और
यहूदाह के तमाम शाही अफ़्सरों को दावत दी थी।
10 कुछ लोगों को जान-बूझ कर इस में शामिल नहीं
किया गया था। उन में उस का भाई सुलेमान, नातन
नबी, बिनायाह और दाऊद के मुहाफ़िज़ शामिल थे।

दाऊद सुलेमान को बादशाह क़रार देता है

11 तब नातन सुलेमान की माँ बत-सबा से मिला
और बोला, “क्या यह ख़बर आप तक नहीं पहुँची कि
हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने अपने आप को बादशाह
बना लिया है? और हमारे आक़ा दाऊद को इस का
इल्म तक नहीं! 12 आप की और आप के बेटे सुलेमान
की ज़िन्दगी बड़े ख़तरे में है। इस लिए लाज़िम है
कि आप मेरे मश्वरे पर फ़ौरन अमल करें। 13 दाऊद
बादशाह के पास जा कर उसे बता देना, ‘ऐ मेरे आक़ा
और बादशाह, क्या आप ने क़सम खा कर मुझ से
वादा नहीं किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद
तख़्तनशीन होगा? तो फिर अदूनियाह क्यूँ बादशाह
बन गया है?’ 14 आप की बादशाह से गुफ़्तगु अभी
ख़त्म नहीं होगी कि मैं दाख़िल हो कर आप की बात
की तस्दीक़ करूँगा।”

15 बत-सबा फ़ौरन बादशाह के पास गई जो सोने
के कमरे में लेटा हुआ था। उस वक़्त तो वह बहुत
उम्रसीदा हो चुका था, और अबीशाग उस की देख-
भाल कर रही थी। 16 बत-सबा कमरे में दाख़िल हो
कर बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गई। दाऊद
ने पूछा, “क्या बात है?” 17 बत-सबा ने कहा, “मेरे

आक़ा, आप ने तो रब अपने ख़ुदा की क़सम खा
कर मुझ से वादा किया था कि तेरा बेटा सुलेमान
मेरे बाद तख़्तनशीन होगा। 18 लेकिन अब अदूनियाह
बादशाह बन बैठा है और मेरे आक़ा और बादशाह
को इस का इल्म तक नहीं। 19 उस ने ज़ियाफ़त के
लिए बहुत से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-
बकरियाँ ज़बह करके तमाम शहज़ादों को दावत दी
है। अबियातर इमाम और फ़ौज का कमाँडर योआब
भी इन में शामिल हैं, लेकिन आप के ख़ादिम सुलेमान
को दावत नहीं मिली। 20 ऐ बादशाह मेरे आक़ा, इस
वक़्त तमाम इस्राईल की आँखें आप पर लगी हैं। सब
आप से यह जानने के लिए तड़पते हैं कि आप के
बाद कौन तख़्तनशीन होगा। 21 अगर आप ने जल्द
ही क़दम न उठाया तो आप के कूच कर जाने के
फ़ौरन बाद मैं और मेरा बेटा अदूनियाह का निशाना
बन कर मुजरिम ठहरेंगे।”

22–23 बत-सबा अभी बादशाह से बात कर ही रही
थी कि दाऊद को इत्तिला दी गई कि नातन नबी
आप से मिलने आया है। नबी कमरे में दाख़िल
हो कर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया।
24 फिर उस ने कहा, “मेरे आक़ा, लगता है कि
आप इस हक़ में हैं कि अदूनियाह आप के बाद
तख़्तनशीन हो। 25 क्यूँकि आज उस ने ऐन-राजिल
जा कर बहुत से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और
भेड़-बकरियों को ज़बह किया है। ज़ियाफ़त के लिए
उस ने तमाम शहज़ादों, तमाम फ़ौजी अफ़सरों और
अबियातर इमाम को दावत दी है। इस वक़्त वह
उस के साथ खाना खा खा कर और मै पी पी कर
नारा लगा रहे हैं, ‘अदूनियाह बादशाह ज़िन्दाबाद!’
26 कुछ लोगों को जान-बूझ कर दावत नहीं दी। उन
में मैं आप का ख़ादिम, सदोक़ इमाम, बिनायाह बिन
यहोयदा और आप का ख़ादिम सुलेमान भी शामिल
हैं। 27 मेरे आक़ा, क्या आप ने वाक़ई इस का हुक्म
दिया है? क्या आप ने अपने ख़ादिमों को इत्तिला
दिए बग़ैर फ़ैसला किया है कि यह शख़्स बादशाह
बनेगा?”

28 जवाब में दाऊद ने कहा, “बत-सबा को बुलाएँ!”
वह वापस आई और बादशाह के सामने खड़ी हो
गई। 29 बादशाह बोला, “रब की हयात की क़सम
जिस ने फ़िद्या दे कर मुझे हर मुसीबत से बचाया
है, 30 आप का बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा
बल्कि आज ही मेरे तख़्त पर बैठ जाएगा। हाँ, आज
ही मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैं ने रब इस्राईल के
ख़ुदा की क़सम खा कर आप से किया था।” 31 यह
सुन कर बत-सबा औंधे मुँह झुक गई और कहा, “मेरा
मालिक दाऊद बादशाह ज़िन्दाबाद!”

32 फिर दाऊद ने हुक्म दिया, “सदोक़ इमाम, नातन
नबी और बिनायाह बिन यहोयदा को बुला लाएँ।”
तीनों आए 33 तो बादशाह उन से मुख़ातिब हुआ,
“मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ख़च्चर पर बिठाएँ। फिर
मेरे अफ़सरों को साथ ले कर उसे जैहून चश्मे तक
पहुँचा दें। 34 वहाँ सदोक़ और नातन उसे मसह करके
इस्राईल का बादशाह बना दें। नरसिंगे को बजा बजा
कर नारा लगाना, ‘सुलेमान बादशाह ज़िन्दाबाद!’
35 इस के बाद मेरे बेटे के साथ यहाँ वापस आ जाना।
वह महल में दाख़िल हो कर मेरे तख़्त पर बैठ जाए
और मेरी जगह हुकूमत करे, क्यूँकि मैं ने उसे इस्राईल
और यहूदाह का हुक्मरान मुक़र्रर किया है।”

36 बिनायाह बिन यहोयदा ने जवाब दिया, “आमीन,
ऐसा ही हो! रब मेरे आक़ा का ख़ुदा इस फ़ैसले पर
अपनी बरकत दे। 37 और जिस तरह रब आप के साथ
रहा उसी तरह वह सुलेमान के साथ भी हो, बल्कि
वह उस के तख़्त को आप के तख़्त से कहीं ज़्यादा
सरबुलन्द करे!” 38 फिर सदोक़ इमाम, नातन नबी,
बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़
करेतियों और फ़लेतियों ने सुलेमान को बादशाह के
ख़च्चर पर बिठा कर उसे जैहून चश्मे तक पहुँचा
दिया। 39 सदोक़ के पास तेल से भरा मेंढे का वह
सींग था जो मुक़द्दस ख़ैमे में पड़ा रहता था। अब
उस ने यह तेल ले कर सुलेमान को मसह किया।
फिर नरसिंगा बजाया गया और लोग मिल कर नारा
लगाने लगे, “सुलेमान बादशाह ज़िन्दाबाद! सुलेमान

बादशाह ज़िन्दाबाद!” 40 तमाम लोग बाँसरी बजाते
और ख़ुशी मनाते हुए सुलेमान के पीछे चलने लगे।
जब वह दुबारा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो इतना
शोर था कि ज़मीन लरज़ उठी।

अदूनियाह की शिकस्त

41 लोगों की यह आवाज़ें अदूनियाह और उस के
मेहमानों तक भी पहुँच गईं। थोड़ी देर पहले वह
खाने से फ़ारिग़ हुए थे। नरसिंगे की आवाज़ सुन कर
योआब चौंक उठा और पूछा, “यह क्या है? शहर
से इतना शोर क्यूँ सुनाई दे रहा है?” 42 वह अभी
यह बात कर ही रहा था कि अबियातर का बेटा
यूनतन पहुँच गया। योआब बोला, “हमारे पास आएँ।
आप जैसे लाइक़ आदमी अच्छी ख़बर ले कर आ रहे
होंगे।”

43 यूनतन ने जवाब दिया, “अफ़्सोस, ऐसा नहीं है।
हमारे आक़ा दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह
बना दिया है। 44 उस ने उसे सदोक़ इमाम, नातन नबी,
बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़
करेतियों और फ़लेतियों के साथ जैहून चश्मे के पास
भेज दिया है। सुलेमान बादशाह के ख़च्चर पर सवार
था। 45 जैहून चश्मे के पास सदोक़ इमाम और नातन
नबी ने उसे मसह करके बादशाह बना दिया। फिर वह
ख़ुशी मनाते हुए शहर में वापस चले गए। पूरे शहर
में हलचल मच गई। यही वह शोर है जो आप को
सुनाई दे रहा है। 46 अब सुलेमान तख़्त पर बैठ चुका
है, 47 और दरबारी हमारे आक़ा दाऊद बादशाह को
मुबारकबाद देने के लिए उस के पास पहुँच गए हैं।
वह कह रहे हैं, ‘आप का ख़ुदा करे कि सुलेमान का
नाम आप के नाम से भी ज़्यादा मशहूर हो जाए। उस
का तख़्त आप के तख़्त से कहीं ज़्यादा सरबुलन्द
हो।’ बादशाह ने अपने बिस्तर पर झुक कर अल्लाह
की परस्तिश की 48 और कहा, ‘रब इस्राईल के ख़ुदा
की तम्जीद हो जिस ने मेरे बेटों में से एक को मेरी
जगह तख़्त पर बिठा दिया है। उस का शुक्र है कि मैं
अपनी आँखों से यह देख सका’।”

49 यूनतन के मुँह से यह ख़बर सुन कर अदूनियाह
के तमाम मेहमान घबरा गए। सब उठ कर चारों तरफ़
मुन्तशिर हो गए। 50 अदूनियाह सुलेमान से ख़ौफ़ खा
कर मुक़द्दस ख़ैमे के पास गया और क़ुर्बानगाह के
सींगों से लिपट गया। 51 किसी ने सुलेमान के पास
जा कर उसे इत्तिला दी, “अदूनियाह को सुलेमान
बादशाह से ख़ौफ़ है, इस लिए वह क़ुर्बानगाह के
सींगों से लिपटे हुए कह रहा है, ‘सुलेमान बादशाह
पहले क़सम खाए कि वह मुझे मौत के घाट नहीं
उतारेगा’।” 52 सुलेमान ने वादा किया, “अगर वह
लाइक़ साबित हो तो उस का एक बाल भी बीका
नहीं होगा। लेकिन जब भी उस में बदी पाई जाए वह
ज़रूर मरेगा।”

53 सुलेमान ने अपने लोगों को अदूनियाह के पास
भेज दिया ताकि वह उसे बादशाह के पास पहुँचाएँ।
अदूनियाह आया और सुलेमान के सामने औंधे मुँह
झुक गया। सुलेमान बोला, “अपने घर चले जाओ!”

दाऊद की आख़िरी हिदायात

2 1 जब दाऊद को महसूस हुआ कि कूच कर जाने
का वक़्त क़रीब है तो उस ने अपने बेटे सुलेमान
को हिदायत की, 2 “अब मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ
दुनिया के हर शख़्स को जाना होता है। चुनाँचे मज़बूत
हों और मर्दानगी दिखाएँ। 3 जो कुछ रब आप का
ख़ुदा आप से चाहता है वह करें और उस की राहों पर
चलते रहें। अल्लाह की शरीअत में दर्ज हर हुक्म और
हिदायत पर पूरे तौर पर अमल करें। फिर जो कुछ भी
करेंगे और जहाँ भी जाएंगे आप को कामयाबी नसीब
होगी। 4 फिर रब मेरे साथ अपना वादा पूरा करेगा।
क्यूँकि उस ने फ़रमाया है, ‘अगर तेरी औलाद अपने
चाल-चलन पर ध्यान दे कर पूरे दिल-ओ-जान से मेरी
वफ़ादार रहे तो इस्राईल पर उस की हुकूमत हमेशा
तक क़ाइम रहेगी।’

5 दो एक और बातें भी हैं। आप को ख़ूब मालूम है
कि योआब बिन ज़रूयाह ने मेरे साथ कैसा सुलूक
किया है। इस्राईल के दो कमाँडरों अबिनैर बिन नैर

और अमासा बिन यतर को उस ने क़त्ल किया। जब जंग नहीं थी उस ने जंग का ख़ून बहा कर अपनी पेटी और जूतों को बेक़ुसूर ख़ून से आलूदा कर लिया है। 6 उस के साथ वह कुछ करें जो आप को मुनासिब लगे। योआब बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे। 7 ताहम बर्ज़िल्ली जिलिआदी के बेटों पर मेहरबानी करें। वह आप की मेज़ के मुस्तक़िल मेहमान रहें, क्यूँकि उन्हों ने मेरे साथ भी ऐसा ही सुलूक किया जब मैं ने आप के भाई अबीसलूम की वजह से यरूशलम से हिज्रत की। 8 बहूरीम के बिनयमीनी सिमई बिन जीरा पर भी ध्यान दें। जिस दिन मैं हिज्रत करते हुए महनाइम से गुज़र रहा था तो उस ने मुझ पर लानतें भेजीं। लेकिन मेरी वापसी पर वह दरया-ए-यर्दन पर मुझ से मिलने आया और मैं ने रब की क़सम खा कर उस से वादा किया कि उसे मौत के घाट नहीं उतारूँगा। 9 लेकिन आप उस का जुर्म नज़रअन्दाज़ न करें बल्कि उस की मुनासिब सज़ा दें। आप दानिशमन्द हैं, इस लिए आप ज़रूर सज़ा देने का कोई न कोई तरीक़ा ढूँड निकालेंगे। वह बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे।”

10 फिर दाऊद मर कर अपने बापदादा से जा मिला। उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 11 वह कुल 40 साल तक इस्राईल का बादशाह रहा, सात साल हब्रून में और 33 साल यरूशलम में। 12 सुलेमान अपने बाप दाऊद के बाद तख़्तनशीन हुआ। उस की हुकूमत मज़बूती से क़ाइम हुई।

अदूनियाह की मौत

13 एक दिन दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा अदूनियाह सुलेमान की माँ बत-सबा के पास आया। बत-सबा ने पूछा, “क्या आप अम्नपसन्द इरादा रख कर आए हैं?” अदूनियाह बोला, “जी, 14 बल्कि मेरी आप से गुज़ारिश है।”

बत-सबा ने जवाब दिया, “तो फिर बताएँ!” 15 अदूनियाह ने कहा, “आप तो जानती हैं कि असल में बादशाह बनने का हक़ मेरा था। और यह तमाम इस्राईल की तवक़्क़ो भी थी। लेकिन अब तो हालात बदल गए हैं। मेरा भाई बादशाह बन गया है, क्यूँकि यही रब की मर्ज़ी थी। 16 अब मेरी आप से दरख़्वास्त है। इस से इन्कार न करें।” बत-सबा बोली, “बताएँ।” 17 अदूनियाह ने कहा, “मैं अबीशाग शूनीमी से शादी करना चाहता हूँ। बराह-ए-करम सुलेमान बादशाह के सामने मेरी सिफ़ारिश करें ताकि बात बन जाए। अगर आप बात करें तो वह इन्कार नहीं करेगा।” 18 बत-सबा राज़ी हुई, “चलें, ठीक है। मैं आप का यह मुआमला बादशाह को पेश करूँगी।”

19 चुनाँचे बत-सबा सुलेमान बादशाह के पास गई ताकि उसे अदूनियाह का मुआमला पेश करे। जब दरबार में पहुँची तो बादशाह उठ कर उस से मिलने आया और उस के सामने झुक गया। फिर वह दुबारा तख़्त पर बैठ गया और हुक्म दिया कि माँ के लिए भी तख़्त रखा जाए। बादशाह के दहने हाथ बैठ कर 20 उस ने अपना मुआमला पेश किया, “मेरी आप से एक छोटी सी गुज़ारिश है। इस से इन्कार न करें।” बादशाह ने जवाब दिया, “अम्मी, बताएँ अपनी बात, मैं इन्कार नहीं करूँगा।” 21 बत-सबा बोली, “अपने भाई अदूनियाह को अबीशाग शूनीमी से शादी करने दें।”

22 यह सुन कर सुलेमान भड़क उठा, “अदूनियाह की अबीशाग से शादी!! यह कैसी बात है जो आप पेश कर रही हैं? अगर आप यह चाहती हैं तो क्यूँ न बराह-ए-रास्त तक़ाज़ा करें कि अदूनियाह मेरी जगह तख़्त पर बैठ जाए। आख़िर वह मेरा बड़ा भाई है, और अबियातर इमाम और योआब बिन ज़रूयाह भी उस का साथ दे रहे हैं।” 23 फिर सुलेमान बादशाह ने रब की क़सम खा कर कहा, “इस दरख़्वास्त से अदूनियाह ने अपनी मौत पर मुहर लगाई है। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं उसे मौत के घाट न

उतारूँ। 24 रब की क़सम जिस ने मेरी तस्दीक़ करके
मुझे मेरे बाप दाऊद के तख़्त पर बिठा दिया और
अपने वादे के मुताबिक़ मेरे लिए घर तामीर किया है,
अदूनियाह को आज ही मरना है!”
25 फिर सुलेमान बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा
को हुक्म दिया कि वह अदूनियाह को मौत के घाट
उतार दे। चुनाँचे वह निकला और उसे मार डाला।

योआब और अबियातर की सज़ा

26 अबियातर इमाम से बादशाह ने कहा, “अब
यहाँ से चले जाएँ। अनतोत में अपने घर में रहें और
वहाँ अपनी ज़मीनें सँभालें। गो आप सज़ा-ए-मौत के
लाइक़ हैं तो भी मैं इस वक़्त आप को नहीं मार दूँगा,
क्यूँकि आप मेरे बाप दाऊद के सामने रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ के अह्द का सन्दूक़ उठाए हर जगह उन के
साथ गए। आप मेरे बाप के तमाम तक्लीफ़दिह और
मुश्किलतरीन लमहात में शरीक रहे हैं।” 27 यह कह
कर सुलेमान ने अबियातर का रब के हुज़ूर इमाम की
ख़िदमत सरअन्जाम देने का हक़ मन्सूख़ कर दिया।
यूँ रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो उस ने सैला में
एली के घराने के बारे में की थी।
28 योआब को जल्द ही पता चला कि अदूनियाह
और अबियातर से क्या कुछ हुआ है। वह अबीसलूम
की साज़िशों में तो शरीक नहीं हुआ था लेकिन बाद में
अदूनियाह का साथी बन गया था। इस लिए अब वह
भाग कर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में दाख़िल हुआ और
क़ुर्बानगाह के सींगों को पकड़ लिया। 29 सुलेमान
बादशाह को इत्तिला दी गई, “योआब भाग कर रब
के मुक़द्दस ख़ैमे में गया है। अब वह वहाँ क़ुर्बानगाह
के पास खड़ा है।” यह सुन कर सुलेमान ने बिनायाह
बिन यहोयदा को हुक्म दिया, “जाओ, योआब को
मार दो!”
30 बिनायाह रब के ख़ैमे में जा कर योआब से
मुख़ातिब हुआ, “बादशाह फ़रमाता है कि ख़ैमे से
निकल आओ!” लेकिन योआब ने जवाब दिया,
“नहीं, अगर मरना है तो यहीं मरूँगा।” बिनायाह
बादशाह के पास वापस आया और उसे योआब
का जवाब सुनाया। 31 तब बादशाह ने हुक्म दिया,
“चलो, उस की मर्ज़ी! उसे वहीं मार कर दफ़न कर
दो ताकि मैं और मेरे बाप का घराना उन क़त्लों के
जवाबदिह न ठहरें जो उस ने बिलावजह किए हैं।
32 रब उसे उन दो आदमियों के क़त्ल की सज़ा दे
जो उस से कहीं ज़्यादा शरीफ़ और अच्छे थे यानी
इस्राईली फ़ौज का कमाँडर अबिनैर बिन नैर और
यहूदाह की फ़ौज का कमाँडर अमासा बिन यतर।
योआब ने दोनों को तलवार से मार डाला, हालाँकि
मेरे बाप को इस का इल्म नहीं था। 33 योआब और
उस की औलाद हमेशा तक इन क़त्लों के क़ुसूरवार
ठहरें। लेकिन रब दाऊद, उस की औलाद, घराने और
तख़्त को हमेशा तक सलामती अता करे।”
34 तब बिनायाह ने मुक़द्दस ख़ैमे में जा कर योआब
को मार दिया। उसे यहूदाह के बयाबान में उस की
अपनी ज़मीन में दफ़ना दिया गया। 35 योआब की
जगह बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को फ़ौज
का कमाँडर बना दिया। अबियातर का उह्दा उस ने
सदोक़ इमाम को दे दिया।

सिमई की मौत

36 इस के बाद बादशाह ने सिमई को बुला कर
उसे हुक्म दिया, “यहाँ यरूशलम में अपना घर बना
कर रहना। आइन्दा आप को शहर से निकलने की
इजाज़त नहीं है, ख़्वाह आप कहीं भी जाना चाहें।
37 यक़ीन जानें कि जूँ ही आप शहर के दरवाज़े से
निकल कर वादी-ए-क़िद्रोन को पार करेंगे तो आप
को मार दिया जाएगा। तब आप ख़ुद अपनी मौत के
ज़िम्मादार ठहरेंगे।” 38 सिमई ने जवाब दिया, “ठीक
है, जो कुछ मेरे आक़ा ने फ़रमाया है मैं करूँगा।”
सिमई देर तक बादशाह के हुक्म के मुताबिक़
यरूशलम में रहा। 39 तीन साल यूँ ही गुज़र गए।
लेकिन एक दिन उस के दो ग़ुलाम भाग गए। चलते
चलते वह जात के बादशाह अकीस बिन माका के
पास पहुँच गए। किसी ने सिमई को इत्तिला दी, “आप

के ग़ुलाम जात में ठहरे हुए हैं।” 40 वह फ़ौरन अपने
गधे पर ज़ीन कस कर ग़ुलामों को ढूँडने के लिए जात
में अकीस के पास चला गया। दोनों ग़ुलाम अब तक
वहीं थे तो सिमई उन्हें पकड़ कर यरूशलम वापस
ले आया।

41 सुलेमान को ख़बर मिली कि सिमई जात जा कर
लौट आया है। 42 तब उस ने उसे बुला कर पूछा,
“क्या मैं ने आप को आगाह करके नहीं कहा था कि
यक़ीन जानें कि जूँ ही आप यरूशलम से निकलेंगे
आप को मार दिया जाएगा, ख़्वाह आप कहीं भी
जाना चाहें। और क्या आप ने जवाब में रब की
क़सम खा कर नहीं कहा था, ‘ठीक है, मैं ऐसा ही
करूँगा?’ 43 लेकिन अब आप ने अपनी क़सम तोड़
कर मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की है। यह आप ने
क्यूँ किया है?” 44 फिर बादशाह ने कहा, “आप ख़ूब
जानते हैं कि आप ने मेरे बाप दाऊद के साथ कितना
बुरा सुलूक किया। अब रब आप को इस की सज़ा
देगा। 45 लेकिन सुलेमान बादशाह को वह बरकत
देता रहेगा, और दाऊद का तख़्त रब के हुज़ूर अबद
तक क़ाइम रहेगा।”

46 फिर बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म
दिया कि वह सिमई को मार दे। बिनायाह ने उसे
बाहर ले जा कर तलवार से मार दिया। यूँ सुलेमान
की इस्राईल पर हुकूमत मज़बूत हो गई।

सुलेमान रब से हिक्मत माँगता है

3 1 सुलेमान फ़िरऔन की बेटी से शादी करके
मिस्री बादशाह का दामाद बन गया। शुरू में उस
की बीवी शहर के उस हिस्से में रहती थी जो ‘दाऊद
का शहर’ कहलाता था। क्यूँकि उस वक़्त नया महल,
रब का घर और शहर की फ़सील ज़ेर-ए-तामीर थे।

2 उन दिनों में रब के नाम का घर तामीर नहीं हुआ
था, इस लिए इस्राईली अपनी क़ुर्बानियाँ मुख़्तलिफ़
ऊँची जगहों पर चढ़ाते थे। 3 सुलेमान रब से प्यार
करता था और इस लिए अपने बाप दाऊद की तमाम
हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता था। लेकिन
वह भी जानवरों की अपनी क़ुर्बानियाँ और बख़ूर ऐसे
ही मक़ामों पर रब को पेश करता था।

4 एक दिन बादशाह जिबऊन गया और वहाँ भस्म
होने वाली 1,000 क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं, क्यूँकि उस शहर
की ऊँची जगह क़ुर्बानियाँ चढ़ाने का सब से अहम
मर्कज़ थी। 5 जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो रब
ख़्वाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, “तेरा
दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी ख़्वाहिश
पूरी करूँगा।”

6 सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर
बड़ी मेहरबानी कर चुका है। वजह यह थी कि तेरा
ख़ादिम वफ़ादारी, इन्साफ़ और ख़ुलूसदिली से तेरे
हुज़ूर चलता रहा। तेरी उस पर मेहरबानी आज तक
जारी रही है, क्यूँकि तू ने उस का बेटा उस की जगह
तख़्तनशीन कर दिया है। 7 ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू ने अपने
ख़ादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह तख़्त पर बिठा
दिया है। लेकिन मैं अभी छोटा बच्चा हूँ जिसे अपनी
ज़िम्मादारियाँ सहीह तौर पर सँभालने का तजरिबा
नहीं हुआ। 8 तो भी तेरे ख़ादिम को तेरी चुनी हुई क़ौम
के बीच में खड़ा किया गया है, इतनी अज़ीम क़ौम
के दरमियान कि उसे गिना नहीं जा सकता। 9 चुनाँचे
मुझे सुनने वाला दिल अता फ़रमा ताकि मैं तेरी क़ौम
का इन्साफ़ करूँ और सहीह और ग़लत बातों में
इम्तियाज़ कर सकूँ। क्यूँकि कौन तेरी इस अज़ीम
क़ौम का इन्साफ़ कर सकता है?”

10 सुलेमान की यह दरख़्वास्त रब को पसन्द आई,
11 इस लिए उस ने जवाब दिया, “मैं ख़ुश हूँ कि तू ने
न उम्र की दराज़ी, न दौलत और न अपने दुश्मनों की
हलाकत बल्कि इम्तियाज़ करने की सलाहियत माँगी
है ताकि सुन कर इन्साफ़ कर सके। 12 इस लिए मैं
तेरी दरख़्वास्त पूरी करके तुझे इतना दानिशमन्द और
समझदार बना दूँगा कि उतना न माज़ी में कोई था, न
मुस्तक़बिल में कभी कोई होगा। 13 बल्कि तुझे वह
कुछ भी दे दूँगा जो तू ने नहीं माँगा, यानी दौलत और
इज़्ज़त। तेरे जीते जी कोई और बादशाह तेरे बराबर
नहीं पाया जाएगा। 14 अगर तू मेरी राहों पर चलता

रहे और अपने बाप दाऊद की तरह मेरे अह्काम के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे तो फिर मैं तेरी उम्र दराज़
करूँगा।”
15 सुलेमान जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैं ने
ख़्वाब देखा है। वह यरूशलम को वापस चला गया
और रब के अह्द के सन्दूक़ के सामने खड़ा हुआ।
वहाँ उस ने भस्म होने वाली और सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश कीं, फिर बड़ी ज़ियाफ़त की जिस में
तमाम दरबारी शरीक हुए।

दो कस्बियों के बच्चे के बारे में सुलेमान का फ़ैसला

16 एक दिन दो कस्बियाँ बादशाह के पास आईं।
17 एक बात करने लगी, “मेरे आक़ा, हम दोनों एक
ही घर में बसती हैं। कुछ देर पहले इस की मौजूदगी
में घर में मेरे बच्चा पैदा हुआ। 18 दो दिन के बाद इस
के भी बचा हुआ। हम अकेली ही थीं, हमारे सिवा घर
में कोई और नहीं था। 19 एक रात को मेरी साथी का
बच्चा मर गया। माँ ने सोते में करवटें बदलते बदलते
अपने बच्चे को दबा दिया था। 20 रातों रात इसे मालूम
हुआ कि बेटा मर गया है। मैं अभी गहरी नींद सो रही
थी। यह देख कर इस ने मेरे बच्चे को उठाया और
अपने मुर्दे बेटे को मेरी गोद में रख दिया। फिर वह
मेरे बेटे के साथ सो गई। 21 सुब्ह के वक़्त जब मैं
अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए उठी तो देखा कि
उस से जान निकल गई है। लेकिन जब दिन मज़ीद
चढ़ा और मैं ग़ौर से उसे देख सकी तो क्या देखती हूँ
कि यह वह बच्चा नहीं है जिसे मैं ने जन्म दिया है!”
22 दूसरी औरत ने उस की बात काट कर कहा,
“हरगिज़ नहीं! यह झूट है। मेरा बेटा ज़िन्दा है और
तेरा तो मर गया है।” पहली औरत चीख़ उठी,
“कभी भी नहीं! ज़िन्दा बच्चा मेरा और मुर्दा बच्चा तेरा
है।” ऐसी बातें करते करते दोनों बादशाह के सामने
झगड़ती रहीं।
23 फिर बादशाह बोला, “सीधी सी बात यह है कि
दोनों ही दावा करती हैं कि ज़िन्दा बच्चा मेरा है और
मुर्दा बच्चा दूसरी का है। 24 ठीक है, फिर मेरे पास
तलवार ले आएँ!” उस के पास तलवार लाई गई।
25 तब उस ने हुक्म दिया, “ज़िन्दा बच्चे को बराबर के
दो हिस्सों में काट कर हर औरत को एक एक हिस्सा
दे दें।” 26 यह सुन कर बच्चे की हक़ीक़ी माँ ने जिस
का दिल अपने बेटे के लिए तड़पता था बादशाह से
इल्तिमास की, “नहीं मेरे आक़ा, उसे मत मारें! बराह-
ए-करम उसे इसी को दे दीजिए।”
लेकिन दूसरी औरत बोली, “ठीक है, उसे काट दें।
अगर यह मेरा नहीं होगा तो कम अज़ कम तेरा भी
नहीं होगा।”
27 यह देख कर बादशाह ने हुक्म दिया, “रुकें! बच्चे
पर तलवार मत चलाएँ बल्कि उसे पहली औरत को
दे दें जो चाहती है कि ज़िन्दा रहे। वही उस की माँ
है।” 28 जल्द ही सुलेमान के इस फ़ैसले की ख़बर पूरे
मुल्क में फैल गई, और लोगों पर बादशाह का ख़ौफ़
छा गया, क्यूँकि उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह ने
उसे इन्साफ़ करने की ख़ास हिक्मत अता की है।

सुलेमान के सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त

4 1 अब सुलेमान पूरे इस्राईल पर हुकूमत करता
था। 2 यह उस के आला अफ़सर थे :
इमाम-ए-आज़म : अज़रियाह बिन सदोक़,
3 मीरमुन्शी : सीसा के बेटे इलीहूरिफ़ और
अख़ियाह,
बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास : यहूसफ़त बिन
अख़ीलूद,
4 फ़ौज का कमाँडर : बिनायाह बिन यहोयदा,
इमाम : सदोक़ और अबियातर,
5 ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों का सरदार :
अज़रियाह बिन नातन,
बादशाह का क़रीबी मुशीर : इमाम ज़बूद बिन
नातन,
6 महल का इंचार्ज : अख़ीसर,
बेगारियों का इंचार्ज : अदूनीराम बिन अब्दा
7 सुलेमान ने मुल्क-ए-इस्राईल को बारह ज़िलओं
में तक़्सीम करके हर ज़िला पर एक अफ़सर मुक़र्रर

किया था। इन अफ़सरों की एक ज़िम्मादारी यह थी कि दरबार की ज़रूरियात पूरी करें। हर अफ़सर को साल में एक माह की ज़रूरियात पूरी करनी थीं। 8 दर्ज-ए-ज़ैल इन अफ़सरों और उन के इलाक़ों की फ़हरिस्त है। बिन हूर : इफ़्राईम का पहाड़ी इलाक़ा,
9 बिन दिक़र : मक़स, साल्बीम, बैत-शम्स और ऐलोन-बैत-हनान,
10 बिन हसद : अरुब्बोत, सोका और हिफ़र का इलाक़ा,
11 सुलेमान की बेटी ताफ़त का शौहर बिन अबीनदाब : साहिली शहर दोर का पहाड़ी इलाक़ा,
12 बाना बिन अख़ीलूद : तानक, मजिद्दो और उस बैत-शान का पूरा इलाक़ा जो ज़र्तान के पड़ोस में यज़्रएल के नीचे वाक़े है, नीज़ बैत-शान से ले कर अबील-महूला तक का पूरा इलाक़ा बशमूल युक़्मिआम,
13 बिन जबर : जिलिआद में रामात का इलाक़ा बशमूल याईर बिन मनस्सी की बस्तियाँ, फिर बसन में अर्जूब का इलाक़ा। इस में 60 ऐसे फ़सीलदार शहर शामिल थे जिन के दरवाज़ों पर पीतल के कुंडे लगे थे,
14 अख़ीनदाब बिन इद्दू : महनाइम,
15 सुलेमान की बेटी बासमत का शौहर अख़ीमाज़ : नफ़्ताली का क़बाइली इलाक़ा,
16 बाना बिन हूसी : आशर का क़बाइली इलाक़ा और बालोत,
17 यहूसफ़त बिन फ़रूह : इश्कार का क़बाइली इलाक़ा,
18 सिमई बिन ऐला : बिनयमीन का क़बाइली इलाक़ा,
19 जबर बिन ऊरी जिलिआद का वह इलाक़ा जिस पर पहले अमोरी बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज की हुकूमत थी। इस पूरे इलाक़े पर सिर्फ़ यही एक अफ़सर मुक़र्रर था।

सुलेमान की हुकूमत की अज़मत

20 उस ज़माने में इस्राईल और यहूदाह के लोग साहिल की रेत की मानिन्द बेशुमार थे। लोगों को खाने और पीने की सब चीज़ें दस्तयाब थीं, और वह ख़ुश थे।
21 सुलेमान दरया-ए-फ़ुरात से ले कर फ़िलिस्तियों के इलाक़े और मिस्री सरहद तक तमाम ममालिक पर हुकूमत करता था। उस के जीते जी यह ममालिक उस के ताबे रहे और उसे ख़राज देते थे।
22 सुलेमान के दरबार की रोज़ाना ज़रूरियात यह थीं : तक़रीबन 5,000 किलोग्राम बारीक मैदा, तक़रीबन 10,000 किलोग्राम आम मैदा, 23 10 मोटे-ताज़े बैल, चरागाहों में पले हुए 20 आम बैल, 100 भेड़-बकरियाँ, और इस के इलावा हिरन, ग़ज़ाल, मृग और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मोटे-ताज़े मुर्ग़ा।
24 जितने ममालिक दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिब में थे उन सब पर सुलेमान की हुकूमत थी, यानी तिफ़्सह से ले कर ग़ज़्ज़ा तक। किसी भी पड़ोसी मुल्क से उस का झगड़ा नहीं था, बल्कि सब के साथ सुलह थी। 25 उस के जीते जी पूरे यहूदाह और इस्राईल में सुलह-सलामती रही। शिमाल में दान से ले कर जुनूब में बैर-सबा तक हर एक सलामती से अंगूर की अपनी बेल और अन्जीर के अपने दरख़्त के साय में बैठ सकता था।
26 अपने रथों के घोड़ों के लिए सुलेमान ने 4,000 थान बनवाए। उस के 12,000 घोड़े थे। 27 बारह ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सर बाक़ाइदगी से सुलेमान बादशाह और उस के दरबार की ज़रूरियात पूरी करते रहे। हर एक को साल में एक माह के लिए सब कुछ मुहय्या करना था। उन की मेहनत की वजह से दरबार में कोई कमी न हुई। 28 बादशाह की हिदायत के मुताबिक़ वह रथों के घोड़ों और दूसरे घोड़ों के लिए दरकार जौ और भूसा बराह-ए-रास्त उन के थानों तक पहुँचाते थे।

29 अल्लाह ने सुलेमान को बहुत ज़्यादा हिक्मत और
समझ अता की। उसे साहिल की रेत जैसा वसी इल्म
हासिल हुआ। 30 उस की हिक्मत इस्राईल के मशरिक़
में रहने वाले और मिस्र के आलिमों से कहीं ज़्यादा
थी। 31 इस लिहाज़ से कोई भी उस के बराबर नहीं
था। वह ऐतान इज़्राही और महोल के बेटों हैमान,
कल्कूल और दर्दा पर भी सब्क़त ले गया था। उस
की शुहरत इर्दगिर्द के तमाम ममालिक में फैल गई।
32 उस ने 3,000 कहावतें और 1,005 गीत लिख
दिए। 33 वह तफ़्सील से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पौदों के
बारे में बात कर सकता था, लुबनान में देवदार के बड़े
दरख़्त से ले कर छोटे पौदे ज़ूफ़ा तक जो दीवार की
दराड़ों में उगता है। वह महारत से चौपाइयों, परिन्दों,
रेंगने वाले जानवरों और मछलियों की तफ़्सीलात भी
बयान कर सकता था। 34 चुनाँचे तमाम ममालिक के
बादशाहों ने अपने सफ़ीरों को सुलेमान के पास भेज
दिया ताकि उस की हिक्मत सुनें।

हीराम बादशाह के साथ सुलेमान का मुआहदा

5 1 सूर का बादशाह हीराम हमेशा दाऊद का
अच्छा दोस्त रहा था। जब उसे ख़बर मिली कि
दाऊद के बाद सुलेमान को मसह करके बादशाह
बनाया गया है तो उस ने अपने सफ़ीरों को उसे
मुबारकबाद देने के लिए भेज दिया। 2 तब सुलेमान
ने हीराम को पैग़ाम भेजा, 3 “आप जानते हैं कि मेरे
बाप दाऊद रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर
करना चाहते थे। लेकिन यह उन के बस की बात नहीं
थी, क्यूँकि उन के जीते जी इर्दगिर्द के ममालिक उन
से जंग करते रहे। गो रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों
पर फ़त्ह बख़्शी थी, लेकिन लड़ते लड़ते वह रब का
घर न बना सके। 4 अब हालात फ़र्क़ हैं : रब मेरे ख़ुदा
ने मुझे पूरा सुकून अता किया है। चारों तरफ़ न कोई
मुख़ालिफ़ नज़र आता है, न कोई ख़तरा। 5 इस लिए
मैं रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना
चाहता हूँ। क्यूँकि मेरे बाप दाऊद के जीते जी रब
ने उन से वादा किया था, ‘तेरे जिस बेटे को मैं तेरे
बाद तख़्त पर बिठाऊँगा वही मेरे नाम के लिए घर
बनाएगा।’ 6 अब गुज़ारिश है कि आप के लकड़हारे
लुबनान में मेरे लिए देवदार के दरख़्त काट दें। मेरे
लोग उन के साथ मिल कर काम करेंगे। आप के
लोगों की मज़दूरी मैं ही अदा करूँगा। जो कुछ भी
आप कहेंगे मैं उन्हें दूँगा। आप तो ख़ूब जानते हैं कि
हमारे हाँ सैदा के लक्कड़हारों जैसे माहिर नहीं हैं।”
7 जब हीराम को सुलेमान का पैग़ाम मिला तो वह
बहुत ख़ुश हो कर बोल उठा, “आज रब की हम्द
हो जिस ने दाऊद को इस बड़ी क़ौम पर हुकूमत
करने के लिए इतना दानिशमन्द बेटा अता किया है!”
8 सुलेमान को हीराम ने जवाब भेजा, “मुझे आप का
पैग़ाम मिल गया है, और मैं आप की ज़रूर मदद
करूँगा। देवदार और जूनीपर की जितनी लकड़ी
आप को चाहिए वह मैं आप के पास पहुँचा दूँगा।
9 मेरे लोग दरख़्तों के तने लुबनान के पहाड़ी इलाक़े
से नीचे साहिल तक लाएँगे जहाँ हम उन के बेड़े
बांध कर समुन्दर पर उस जगह पहुँचा देंगे जो आप
मुक़र्रर करेंगे। वहाँ हम तनों के रस्से खोल देंगे, और
आप उन्हें ले जा सकेंगे। मुआवज़े में आप मुझे इतनी
ख़ुराक मुहय्या करें कि मेरे दरबार की ज़रूरियात पूरी
हो जाएँ।”
10 चुनाँचे हीराम ने सुलेमान को देवदार और
जूनीपर की उतनी लकड़ी मुहय्या की जितनी
उसे ज़रूरत थी। 11 मुआवज़े में सुलेमान उसे
सालाना तक़रीबन 32,50,000 किलोग्राम गन्दुम
और तक़रीबन 4,40,000 लिटर ज़ैतून का तेल भेजता
रहा। 12 इस के इलावा सुलेमान और हीराम ने आपस
में सुलह का मुआहदा किया। यूँ रब ने सुलेमान को
हिक्मत अता की जिस तरह उस ने उस से वादा किया
था।

रब का घर बनाने की पहली तय्यारियाँ

13–14 सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम
करने के लिए इस्राईल में से 30,000 आदमियों
की बेगार पर भर्ती की। उस ने अदूनीराम को उन

पर मुक़र्रर किया। हर माह वह बारी बारी 10,000
अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा। यूँ हर मज़दूर एक
माह लुबनान में और दो माह घर में रहता। 15 सुलेमान
ने 80,000 आदमियों को कानों में लगाया ताकि
वह पत्थर निकालें। 70,000 अफ़राद यह पत्थर
यरूशलम लाते थे। 16 उन लोगों पर 3,300 निगरान
मुक़र्रर थे। 17 बादशाह के हुक्म पर वह कानों से
बेहतरीन पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े निकाल लाए और
उन्हें तराश कर रब के घर की बुन्याद के लिए तय्यार
किया। 18 जबल के कारीगरों ने सुलेमान और हीराम
के कारीगरों की मदद की। उन्हों ने मिल कर पत्थर
के बड़े बड़े टुकड़े और लकड़ी को तराश कर रब के
घर की तामीर के लिए तय्यार किया।

रब के घर की तामीर

6 1 सुलेमान ने अपनी हुकूमत के चौथे साल के
दूसरे महीने ज़ीब में रब के घर की तामीर शुरू
की। इस्राईल को मिस्र से निकले 480 साल गुज़र
चुके थे।

2 इमारत की लम्बाई 90 फ़ुट, चौड़ाई 30 फ़ुट और
ऊँचाई 45 फ़ुट थी। 3 सामने एक बरामदा बनाया गया
जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फ़ुट और आगे
की तरफ़ 15 फ़ुट लम्बा था। 4 इमारत की दीवारों
में खिड़कियाँ थीं जिन पर जंगले लगे थे। 5 इमारत
से बाहर आ कर सुलेमान ने दाएँ बाएँ की दीवारों
और पिछली दीवार के साथ एक ढाँचा खड़ा किया
जिस की तीन मन्ज़िलें थीं और जिस में मुख़्तलिफ़
कमरे थे। 6 निचली मन्ज़िल की अन्दर की चौड़ाई
साढ़े 7 फ़ुट, दरमियानी मन्ज़िल की 9 फ़ुट और ऊपर
की मन्ज़िल की साढ़े 10 फ़ुट थी। वजह यह थी कि
रब के घर की बैरूनी दीवार की मोटाई मन्ज़िल-ब-
मन्ज़िल कम होती गई। इस तरीक़े से बैरूनी ढाँचे
की दूसरी और तीसरी मन्ज़िल के शहतीरों के लिए
रब के घर की दीवार में सूराख़ बनाने की ज़रूरत
नहीं थी बल्कि उन्हें दीवार पर ही रखा गया। यानी
दरमियानी मन्ज़िल की इमारत वाली दीवार निचली
की दीवार की निस्बत कम मोटी और ऊपर वाली
मन्ज़िल की इमारत वाली दीवार दरमियानी मन्ज़िल
की दीवार की निस्बत कम मोटी थी। यूँ इस ढाँचे की
छतों के शहतीरों को इमारत की दीवार तोड़ कर उस
में लगाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें इमारत की
दीवार पर ही रखा गया।

7 जो पत्थर रब के घर की तामीर के लिए इस्तेमाल
हुए उन्हें पत्थर की कान के अन्दर ही तराश कर
तय्यार किया गया। इस लिए जब उन्हें ज़ेर-ए-तामीर
इमारत के पास ला कर जोड़ा गया तो न हथौड़ों, न
छैनी न लोहे के किसी और औज़ार की आवाज़ सुनाई
दी।

8 इस ढाँचे में दाख़िल होने के लिए इमारत की दहनी
दीवार में दरवाज़ा बनाया गया। वहाँ से एक सीढ़ी
परस्तार को दरमियानी और ऊपर की मन्ज़िल तक
पहुँचाती थी। 9 यूँ सुलेमान ने इमारत को तक्मील तक
पहुँचाया। छत को देवदार के शहतीरों और तख़्तों
से बनाया गया। 10 जो ढाँचा इमारत के तीनों तरफ़
खड़ा किया गया उसे देवदार के शहतीरों से इमारत
की बाहर वाली दीवार के साथ जोड़ा गया। उस की
तीनों मन्ज़िलों की ऊँचाई साढ़े सात सात फ़ुट थी।

11 एक दिन रब सुलेमान से हमकलाम हुआ,
12 “जहाँ तक मेरी सुकूनतगाह का ताल्लुक़ है जो तू
मेरे लिए बना रहा है, अगर तू मेरे तमाम अह्काम
और हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे तो मैं तेरे
लिए वह कुछ करूँगा जिस का वादा मैं ने तेरे बाप
दाऊद से किया है। 13 तब मैं इस्राईल के दरमियान
रहूँगा और अपनी क़ौम को कभी तर्क नहीं करूँगा।”

रब के घर का अन्दरूनी हिस्सा

14 जब इमारत की दीवारें और छत मुकम्मल हुईं
15 तो अन्दरूनी दीवारों पर फ़र्श से ले कर छत तक
देवदार के तख़्ते लगाए गए। फ़र्श पर जूनीपर के
तख़्ते लगाए गए। 16 अब तक इमारत का एक ही
कमरा था, लेकिन अब उस ने देवदार के तख़्तों से
फ़र्श से ले कर छत तक दीवार खड़ी करके पिछले

हिस्से में अलग कमरा बना दिया जिस की लम्बाई
30 फ़ुट थी। यह मुक़द्दसतरीन कमरा बन गया। 17 जो
हिस्सा सामने रह गया उसे मुक़द्दस कमरा मुक़र्रर
किया गया। उस की लम्बाई 60 फ़ुट थी। 18 इमारत
की तमाम अन्दरूनी दीवारों पर देवदार के तख़्ते यूँ
लगे थे कि कहीं भी पत्थर नज़र न आया। तख़्तों पर
तूँबे और फूल कन्दा किए गए थे।

19 पिछले कमरे में रब के अह्द का सन्दूक़ रखना
था। 20 इस कमरे की लम्बाई 30 फ़ुट, चौड़ाई 30
फ़ुट और ऊँचाई 30 फ़ुट थी। सुलेमान ने इस की
तमाम दीवारों और फ़र्श पर ख़ालिस सोना चढ़ाया।
मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने देवदार की क़ुर्बानगाह
थी। उस पर भी सोना मंढा गया 21 बल्कि इमारत के
सामने वाले कमरे की दीवारों, छत और फ़र्श पर भी
सोना मंढा गया। मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर
सोने की ज़न्जीरें लगाई गईं। 22 चुनाँचे इमारत की
तमाम अन्दरूनी दीवारों, छत और फ़र्श पर सोना
मंढा गया, और इसी तरह मुक़द्दसतरीन कमरे के
सामने की क़ुर्बानगाह पर भी।

23 फिर सुलेमान ने ज़ैतून की लकड़ी से दो करूबी
फ़रिश्ते बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा
गया। इन मुजस्समों का क़द 15 फ़ुट था। 24–25 दोनों
शक्ल-ओ-सूरत में एक जैसे थे। हर एक के दो पर
थे, और हर पर की लम्बाई साढ़े सात सात फ़ुट थी।
चुनाँचे एक पर के सिरे से दूसरे पर के सिरे तक का
फ़ासिला 15 फ़ुट था। 26 हर एक का क़द 15 फ़ुट
था। 27 उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यूँ एक दूसरे के
साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिश्ते का एक पर
दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ़ हर
एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। 28 इन
फ़रिश्तों पर भी सोना मंढा गया।

29 मुक़द्दस और मुक़द्दसतरीन कमरों की दीवारों पर
करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल कन्दा
किए गए। 30 दोनों कमरों के फ़र्श पर भी सोना मंढा
गया। 31 सुलेमान ने मुक़द्दसतरीन कमरे का दरवाज़ा
ज़ैतून की लकड़ी से बनवाया। उस के दो किवाड़ थे,
और चौखट की लकड़ी के पाँच कोने थे। 32 दरवाज़े
के किवाड़ों पर करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त
और फूल कन्दा किए गए। इन किवाड़ों पर भी
फ़रिश्तों और खजूर के दरख़्तों समेत सोना मंढा गया।
33 सुलेमान ने इमारत में दाख़िल होने वाले दरवाज़े के
लिए भी ज़ैतून की लकड़ी से चौखट बनवाई, लेकिन
उस की लकड़ी के चार कोने थे। 34 इस दरवाज़े के
दो किवाड़ जूनीपर की लकड़ी के बने हुए थे। दोनों
किवाड़ दीवार तक घूम सकते थे। 35 इन किवाड़ों
पर भी करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल
कन्दा किए गए थे। फिर उन पर सोना यूँ मंढा गया
कि वह अच्छी तरह इन बेल-बूटों के साथ लग गया।

36 इमारत के सामने एक अन्दरूनी सहन बनाया
गया जिस की चारदीवारी यूँ तामीर हुई कि पत्थर के
हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा
लगाया गया।

37 रब के घर की बुन्याद सुलेमान की हुकूमत के
चौथे साल के दूसरे महीने ज़ीब में डाली गई, 38 और
उस की हुकूमत के ग्यारवें साल के आठवें महीने
बूल में इमारत मुकम्मल हुई। सब कुछ नक़्शे के ऐन
मुताबिक़ बना। इस काम पर कुल सात साल सर्फ़
हुए।

सुलेमान का महल

7 1 जो महल सुलेमान ने बनवाया वह 13 साल के
बाद मुकम्मल हुआ।

2–3 उस की एक इमारत का नाम ‘लुबनान का
जंगल’ था। इमारत की लम्बाई 150 फ़ुट, चौड़ाई
75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट थी। निचली मन्ज़िल
एक बड़ा हाल था जिस के देवदार की लकड़ी के
45 सतून थे। पंद्रह पंद्रह सतूनों को तीन क़तारों में
खड़ा किया गया था। सतूनों पर शहतीर थे जिन पर
दूसरी मन्ज़िल के फ़र्श के लिए देवदार के तख़्ते लगाए
गए थे। दूसरी मन्ज़िल के मुख़्तलिफ़ कमरे थे, और
छत भी देवदार की लकड़ी से बनाई गई थी। 4 हाल
की दोनों लम्बी दीवारों में तीन तीन खिड़कियाँ थीं,

और एक दीवार की खिड़कियाँ दूसरी दीवार की
खिड़कियों के बिलकुल मुक़ाबिल थीं। 5 इन दीवारों
के तीन तीन दरवाज़े भी एक दूसरे के मुक़ाबिल थे।
उन की चौखटों की लकड़ी के चार चार कोने थे।
6 इस के इलावा सुलेमान ने सतूनों का हाल
बनवाया जिस की लम्बाई 75 फ़ुट और चौड़ाई 45
फ़ुट थी। हाल के सामने सतूनों का बरामदा था।
7 उस ने दीवान भी तामीर किया जो दीवान-ए-अदल
कहलाता था। उस में उस का तख़्त था, और वहाँ
वह लोगों की अदालत करता था। दीवान की चारों
दीवारों पर फ़र्श से ले कर छत तक देवदार के तख़्ते
लगे हुए थे।
8 दीवान के पीछे सहन था जिस में बादशाह का
रिहाइशी महल था। महल का डिज़ाइन दीवान जैसा
था। उस की मिस्री बीवी फ़िरऔन की बेटी का महल
भी डिज़ाइन में दीवान से मुताबिक़त रखता था।
9 यह तमाम इमारतें बुन्यादों से ले कर छत तक
और बाहर से ले कर बड़े सहन तक आला क़िस्म
के पत्थरों से बनी हुई थीं, ऐसे पत्थरों से जो चारों
तरफ़ आरी से नाप के ऐन मुताबिक़ काटे गए थे।
10 बुन्यादों के लिए उम्दा क़िस्म के बड़े बड़े पत्थर
इस्तेमाल हुए। बाज़ की लम्बाई 12 और बाज़ की
15 फ़ुट थी। 11 इन पर आला क़िस्म के पत्थरों की
दीवारें खड़ी की गईं। दीवारों में देवदार के शहतीर
भी लगाए गए। 12 बड़े सहन की चारदीवारी यूँ बनाई
गई कि पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के
शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया था। जो अन्दरूनी
सहन रब के घर के इर्दगिर्द था उस की चारदीवारी
भी इसी तरह ही बनाई गई, और इसी तरह रब के
घर के बरामदे की दीवारें भी।

रब के घर के सामने के दो ख़ास सतून

13 फिर सुलेमान बादशाह ने सूर के एक आदमी
को बुलाया जिस का नाम हीराम था। 14 उस की माँ
इस्राईली क़बीले नफ़्ताली की बेवा थी जबकि उस
का बाप सूर का रहने वाला और पीतल का कारीगर
था। हीराम बड़ी हिक्मत, समझदारी और महारत से
पीतल की हर चीज़ बना सकता था। इस क़िस्म का
काम करने के लिए वह सुलेमान बादशाह के पास
आया।
15 पहले उस ने पीतल के दो सतून ढाल दिए। हर
सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट था।
16 फिर उस ने हर सतून के लिए पीतल का बालाई
हिस्सा ढाल दिया जिस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट थी।
17 हर बालाई हिस्से को एक दूसरे के साथ ख़ूबसूरती
से मिलाई गई सात ज़न्जीरों से आरास्ता किया गया।
18–20 इन ज़न्जीरों के ऊपर हीराम ने हर बालाई हिस्से
को पीतल के 200 अनारों से सजाया जो दो क़तारों
में लगाए गए। फिर बालाई हिस्से सतूनों पर लगाए
गए। बालाई हिस्सों की सोसन के फूल की सी शक्ल
थी, और यह फूल 6 फ़ुट ऊँचे थे। 21 हीराम ने दोनों
सतून रब के घर के बरामदे के सामने खड़े किए। दहने
हाथ के सतून का नाम उस ने 'यकीन' और बाएँ हाथ
के सतून का नाम 'बोअज़' रखा। 22 बालाई हिस्से
सोसन-नुमा थे। चुनाँचे काम मुकम्मल हुआ।

पीतल का हौज़

23 इस के बाद हीराम ने पीतल का बड़ा गोल हौज़
ढाल दिया जिस का नाम 'समुन्दर' रखा गया। उस की
ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उस का मुँह 15 फ़ुट चौड़ा और
उस का घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था। 24 हौज़ के किनारे
के नीचे तूँबों की दो क़तारें थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6
तूँबे थे। तूँबे और हौज़ मिल कर ढाले गए थे। 25 हौज़
को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों
का रुख़ शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब
की तरफ़, तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन
का रुख़ मशरिक़ की तरफ़ था। उन के पिछले हिस्से
हौज़ की तरफ़ थे, और हौज़ उन के कंधों पर पड़ा था।
26 हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की
तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार
तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के
तक़रीबन 44,000 लिटर समा जाते थे।

पानी के बासन उठाने की हथगाड़ियाँ

27 फिर हीराम ने पानी के बासन उठाने के लिए
पीतल की हथगाड़ियाँ बनाईं। हर गाड़ी की लम्बाई 6
फ़ुट, चौड़ाई 6 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े 4 फ़ुट थी। 28 हर
गाड़ी का ऊपर का हिस्सा सरियों से मज़बूत किया
गया फ़्रेम था। 29 फ़्रेम के बैरूनी पहलू शेरबबरों, बैलों
और करूबी फ़रिश्तों से सजे हुए थे। शेरों और बैलों
के ऊपर और नीचे पीतल के सेहरे लगे हुए थे। 30 हर
गाड़ी के चार पहिए और दो धुरे थे। यह भी पीतल
के थे। चारों कोनों पर पीतल के ऐसे टुकड़े लगे थे
जिन पर बासन रखे जाते थे। यह टुकड़े भी सेहरों से
सजे हुए थे। 31 फ़्रेम के अन्दर जिस जगह बासन को
रखा जाता था वह गोल थी। उस की ऊँचाई डेढ़ फ़ुट
थी, और उस का मुँह सवा दो फ़ुट चौड़ा था। उस
के बैरूनी पहलू पर चीज़ें कन्दा की गई थीं। गाड़ी
का फ़्रेम गोल नहीं बल्कि चौरस था। 32 गाड़ी के फ़्रेम
के नीचे मज़कूरा चार पहिए थे जो धुरों से जुड़े थे।
धुरे फ़्रेम के साथ ही ढल गए थे। हर पहिया सवा दो
फ़ुट चौड़ा था। 33 पहिए रथों के पहियों की मानिन्द
थे। उन के धुरे, किनारे, तार और नाभें सब के सब
पीतल से ढाले गए थे। 34 गाड़ियों के चार कोनों पर
दस्ते लगे थे जो फ़्रेम के साथ मिल कर ढाले गए
थे। 35–36 हर गाड़ी के ऊपर का किनारा नौ इंच ऊँचा
था। कोनों पर लगे दस्ते और फ़्रेम के पहलू हर जगह
करूबी फ़रिश्तों, शेरबबरों और खजूर के दरख़्तों से
सजे हुए थे। चारों तरफ़ सेहरे भी कन्दा किए गए।
37 हीराम ने दसों गाड़ियों को एक ही साँचे में ढाला,
इस लिए सब एक जैसी थीं।

38 हीराम ने हर गाड़ी के लिए पीतल का बासन ढाल
दिया। हर बासन 6 फ़ुट चौड़ा था, और उस में 880
लिटर पानी समा जाता था। 39 उस ने पाँच गाड़ियाँ
रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच उस के बाएँ हाथ
खड़ी कीं। हौज़ बनाम समुन्दर को उस ने रब के घर
के जुनूब-मशरिक़ में रख दिया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने बनाया

40 हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काओ के
कटोरे भी बनाए। यूँ उस ने रब के घर में वह सारा
काम मुकम्मल किया जिस के लिए सुलेमान बादशाह
ने उसे बुलाया था। उस ने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :
41 दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़न्जीरों का डिज़ाइन,
42 ज़न्जीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा
200 अदद),
43 10 हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के 10 बासन,
44 हौज़ बनाम समुन्दर,
इसे उठाने वाले बैल के 12 मुजस्समे,
45 बालटियाँ, बेलचे और छिड़काओ के कटोरे।

यह तमाम सामान जो हीराम ने सुलेमान के हुक्म
पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढाल कर
पालिश किया गया था। 46 बादशाह ने उसे वादी-ए-
यर्दन में सुक्कात और ज़र्तान के दरमियान ढलवाया।
वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे के साँचे बना
कर हर चीज़ ढाल दी। 47 इस सामान के लिए सुलेमान
बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि
उस का कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अन्दर सोने का सामान

48 रब के घर के अन्दर के लिए सुलेमान ने दर्ज-ए-
ज़ैल सामान बनवाया :
सोने की क़ुर्बानगाह,
सोने की वह मेज़ जिस पर रब के लिए मख़्सूस
रोटियाँ पड़ी रहती थीं,
49 ख़ालिस सोने के 10 शमादान जो मुक़द्दसतरीन
कमरे के सामने रखे गए, पाँच दरवाज़े के दहने हाथ
और पाँच उस के बाएँ हाथ,
सोने के वह फूल जिन से शमादान आरास्ता थे,
सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के औज़ार,

50 ख़ालिस सोने के बासन, चराग़ को कतरने के
औज़ार, छिड़काओ के कटोरे और प्याले,
जलते हुए कोएले के लिए ख़ालिस सोने के बर्तन,
मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़ों के
क़ब्ज़े।
51 रब के घर की तक्मील पर सुलेमान बादशाह ने
वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब
के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उस के बाप दाऊद
ने रब के लिए मख़्सूस की थीं।

अह्द का सन्दूक़ रब के घर में लाया जाता है

8 1 फिर सुलेमान ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों और
क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को
अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्यूँकि रब के अह्द
का सन्दूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से में
था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है।
सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइन्दे हाज़िर हों
जब सन्दूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए।
2 चुनाँचे इस्राईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने
इतानीम [c]में सुलेमान बादशाह के पास यरूशलम में
जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती
थी।
3 जब सब जमा हुए तो इमाम रब के सन्दूक़ को
उठा कर 4 रब के घर में लाए। लावियों के साथ
मिल कर उन्हों ने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी उस के
तमाम मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया।
5 वहाँ सन्दूक़ के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी
तमाम जमा हुए इस्राईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ
और गाय-बैल क़ुर्बान किए कि उन की तादाद गिनी
नहीं जा सकती थी।
6 इमामों ने रब के अह्द का सन्दूक़ पिछले यानी
मुक़द्दसतरीन कमरे में ला कर करूबी फ़रिश्तों के
परों के नीचे रख दिया। 7 फ़रिश्तों के पर पूरे सन्दूक़
पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 8 तो
भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लम्बी थीं कि उन
के सिरे सामने वाले यानी मुक़द्दस कमरे से नज़र आते
थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज
तक वह वहीं मौजूद हैं। 9 सन्दूक़ में सिर्फ़ पत्थर की
वह दो तख़्तियाँ थीं जिन को मूसा ने होरिब यानी
कोह-ए-सीना के दामन में उस में रख दिया था, उस
वक़्त जब रब ने मिस्र से निकले हुए इस्राईलियों के
साथ अह्द बांधा था।
10–11 जब इमाम मुक़द्दस कमरे से निकल कर सहन
में आए तो रब का घर एक बादल से भर गया। इमाम
अपनी ख़िदमत अन्जाम न दे सके, क्यूँकि रब का
घर उस के जलाल के बादल से मामूर हो गया था।
12 यह देख कर सुलेमान ने दुआ की, "रब ने फ़रमाया
है कि मैं घने बादल के अंधेरे में रहूँगा। 13 यक़ीनन मैं
ने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम
जो तेरी अबदी सुकूनत के लाइक़ है।"

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

14 फिर बादशाह ने मुड़ कर रब के घर के सामने
खड़ी इस्राईल की पूरी जमाअत की तरफ़ रुख़ किया।
उस ने उन्हें बरकत दे कर कहा,
15 "रब इस्राईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिस ने वह
वादा पूरा किया है जो उस ने मेरे बाप दाऊद से किया
था। क्यूँकि उस ने फ़रमाया, 16 'जिस दिन मैं अपनी
क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया उस दिन से
ले कर आज तक मैं ने कभी न फ़रमाया कि इस्राईली
क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में
घर बनाया जाए। लेकिन मैं ने दाऊद को अपनी क़ौम
इस्राईल का बादशाह बनाया है।'
17 मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़्वाहिश थी कि रब
इस्राईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए।
18 लेकिन रब ने एतिराज़ किया, 'मैं ख़ुश हूँ कि तू
मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है,
19 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।'

---

[c]सितम्बर ता अक्तूबर

20 और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। मैं
रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद की
जगह इस्राईल का बादशाह बन कर तख़्त पर बैठ
गया हूँ। और अब मैं ने रब इस्राईल के ख़ुदा के नाम
की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 21 उस में मैं ने उस
सन्दूक़ के लिए मक़ाम तय्यार कर रखा है जिस में
शरीअत की तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अह्द की तख़्तियाँ
जो रब ने हमारे बापदादा से मिस्र से निकालते वक़्त
बांधा था।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की दुआ

22 फिर सुलेमान इस्राईल की पूरी जमाअत के देखते
देखते रब की क़ुर्बानगाह के सामने खड़ा हुआ। उस
ने अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर 23 दुआ
की,

“ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा नहीं
है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अह्द
क़ाइम रखता है जिसे तू ने अपनी क़ौम के साथ बांधा
है और अपनी मेहरबानी उन सब पर ज़ाहिर करता है
जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 24 तू ने अपने
ख़ादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है।
जो बात तू ने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तू ने
अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 25 ऐ रब इस्राईल
के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तू
ने अपने ख़ादिम दाऊद से की थी। क्यूँकि तू ने मेरे
बाप से वादा किया था, ‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह
अपने चाल-चलन पर ध्यान दे कर मेरे हुज़ूर चलती
रहे तो इस्राईल पर उस की हुकूमत हमेशा तक क़ाइम
रहेगी।’ 26 ऐ इस्राईल के ख़ुदा, अब बराह-ए-करम
अपना यह वादा पूरा कर जो तू ने अपने ख़ादिम मेरे
बाप दाऊद से किया है।

27 लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर सुकूनत
करेगा? नहीं, तू तो बुलन्दतरीन आसमान में भी समा
नहीं सकता! तो फिर यह मकान जो मैं ने बनाया है
किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन सकता है? 28 ऐ रब
मेरे ख़ुदा, तो भी अपने ख़ादिम की दुआ और इल्तिजा
सुन जब मैं आज तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इल्तिमास
करता हूँ 29 कि बराह-ए-करम दिन रात इस इमारत
की निगरानी कर! क्यूँकि यह वह जगह है जिस के
बारे में तू ने ख़ुद फ़रमाया, ‘यहाँ मेरा नाम सुकूनत
करेगा।’ चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं
इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता हूँ। 30 जब
हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें तो
अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजा सुन।
आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब
सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

31 अगर किसी पर इल्ज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुर्बानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठा कर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
32 तो बराह-ए-करम आसमान पर से सुन कर अपने
ख़ादिमों का इन्साफ़ कर। क़ुसूरवार को मुजरिम
ठहरा कर उस के अपने सर पर वह कुछ आने दे जो
उस से सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइल्ज़ाम
क़रार दे कर उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

33 हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इस्राईल तेरा
गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त
खाए। अगर इस्राईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ
और तेरे नाम की तम्जीद करके यहाँ इस घर में तुझ
से दुआ और इल्तिमास करें 34 तो आसमान पर से
उन की फ़र्याद सुन लेना। अपनी क़ौम इस्राईल का
गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस
लाना जो तू ने उन के बापदादा को दे दिया था।

35 हो सकता है इस्राईली तेरा इतना संगीन गुनाह
करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे।
अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़ रुख़ करके
तेरे नाम की तम्जीद करें और तेरी सज़ा के बाइस
अपना गुनाह छोड़ कर लौट आएँ 36 तो आसमान
पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। अपने ख़ादिमों और
अपनी क़ौम इस्राईल को मुआफ़ कर, क्यूँकि तू ही
उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क
पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तू ने अपनी क़ौम को
मीरास में दे दिया है।

37 हो सकता है इस्राईल में काल पड़ जाए, अनाज
की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों या कीड़ों
से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का
मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 38 अगर
कोई इस्राईली या तेरी पूरी क़ौम उस का सबब जान
कर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढ़ाए और तुझ
से इल्तिमास करे 39 तो आसमान पर अपने तख़्त से
उन की फ़र्याद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके वह
कुछ कर जो ज़रूरी है। हर एक को उस की तमाम
हरकतों का बदला दे, क्यूँकि सिर्फ़ तू ही हर इन्सान
के दिल को जानता है। 40 फिर जितनी देर वह उस
मुल्क में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे जो तू ने हमारे बापदादा को
दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानेंगे।
41 आइन्दा परदेसी भी तेरे नाम के सबब से दूरदराज़
ममालिक से आएँगे। अगरचे वह तेरी क़ौम इस्राईल
के नहीं होंगे 42 तो भी वह तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी
क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के बारे में सुन कर
आएँगे और इस घर की तरफ़ रुख़ करके दुआ करेंगे।
43 तब आसमान पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। जो
भी दरख़्वास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि
दुनिया की तमाम अक़्वाम तेरा नाम जान कर तेरी
क़ौम इस्राईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान
लें कि जो इमारत मैं ने तामीर की है उस पर तेरे ही
नाम का ठप्पा लगा है।
44 हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत के
मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें।
अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की
तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के लिए
तामीर की है 45 तो आसमान पर से उन की दुआ और
इल्तिमास सुन कर उन के हक़ में इन्साफ़ क़ाइम
रखना।
46 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें तो
हम सब से सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में तू
नाराज़ हो कर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो उन्हें
क़ैद करके अपने किसी दूरदराज़ या क़रीबी मुल्क
में ले जाए। 47 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके
दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझ से इल्तिमास
करें, ‘हम ने गुनाह किया है, हम से ग़लती हुई है,
हम ने बेदीन हरकतें की हैं।’ 48 अगर वह ऐसा करके
दुश्मन के मुल्क में अपने पूरे दिल-ओ-जान से दुबारा
तेरी तरफ़ रुजू करें और तेरी तरफ़ से बापदादा को
दिए गए मुल्क, तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत
की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के
लिए तामीर की है 49 तो आसमान पर अपने तख़्त
से उन की दुआ और इल्तिमास सुन लेना। उन के
हक़ में इन्साफ़ क़ाइम करना, 50 और अपनी क़ौम के
गुनाहों को मुआफ़ कर देना। जिस भी जुर्म से उन्हों
ने तेरा गुनाह किया है वह मुआफ़ कर देना। बख़्श
दे कि उन्हें गिरिफ़्तार करने वाले उन पर रहम करें।
51 क्यूँकि यह तेरी ही क़ौम के अफ़राद हैं, तेरी ही
मीरास जिसे तू मिस्र के भड़कते भट्टे से निकाल लाया।
52 ऐ अल्लाह, तेरी आँखें मेरी इल्तिजाओं और तेरी
क़ौम इस्राईल की फ़र्यादों के लिए खुली रहें। जब भी
वह मदद के लिए तुझे पुकारें तो उन की सुन लेना!
53 क्यूँकि तू, ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने इस्राईल को
दुनिया की तमाम क़ौमों से अलग करके अपनी ख़ास
मिलकियत बना लिया है। हमारे बापदादा को मिस्र से
निकालते वक़्त तू ने मूसा की मारिफ़त इस हक़ीक़त
का एलान किया।”

आख़िरी दुआ और बरकत

54 इस दुआ के बाद सुलेमान खड़ा हुआ, क्यूँकि
दुआ के दौरान उस ने रब की क़ुर्बानगाह के सामने
अपने घुटने टेके और अपने हाथ आसमान की तरफ़
उठाए हुए थे। 55 अब वह इस्राईल की पूरी जमाअत
के सामने खड़ा हुआ और बुलन्द आवाज़ से उसे
बरकत दी,
56 “रब की तम्जीद हो जिस ने अपने वादे के ऐन
मुताबिक़ अपनी क़ौम इस्राईल को आराम-ओ-सुकून
फ़राहम किया है। जितने भी ख़ूबसूरत वादे उस ने
अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त किए हैं वह सब के
सब पूरे हो गए हैं। 57 जिस तरह रब हमारा ख़ुदा हमारे

बापदादा के साथ था उसी तरह वह हमारे साथ भी रहे। न वह हमें छोड़े, न तर्क करे 58 बल्कि हमारे दिलों को अपनी तरफ़ माइल करे ताकि हम उस की तमाम राहों पर चलें और उन तमाम अह्काम और हिदायात के ताबे रहें जो उस ने हमारे बापदादा को दी हैं।

59 रब के हुज़ूर मेरी यह फ़र्याद दिन रात रब हमारे ख़ुदा के क़रीब रहे ताकि वह मेरा और अपनी क़ौम का इन्साफ़ क़ाइम रखे और हमारी रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करे। 60 तब तमाम अक़्वाम जान लेंगी कि रब ही ख़ुदा है और कि उस के सिवा कोई और माबूद नहीं है।

61 लेकिन लाज़िम है कि आप रब हमारे ख़ुदा के पूरे दिल से वफ़ादार रहें। हमेशा उस की हिदायात और अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप आज कर रहे हैं।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर जश्न

62–63 फिर बादशाह और तमाम इस्राईल ने रब के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करके रब के घर को मख़्सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को सलामती की क़ुर्बानियों के तौर पर ज़बह किया। 64 उसी दिन बादशाह ने सहन का दरमियानी हिस्सा क़ुर्बानियाँ चढ़ाने के लिए मख़्सूस किया। वजह यह थी कि पीतल की क़ुर्बानगाह इतनी क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए छोटी थी, क्यूँकि भस्म होने वाली क़ुर्बानियों और ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इस के इलावा सलामती की बेशुमार क़ुर्बानियों की चर्बी को भी जलाना था।

65 ईद 14 दिन तक मनाई गई। पहले हफ़्ते में सुलेमान और तमाम इस्राईल ने रब के घर की मख़्सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों की ईद। बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूरदराज़ इलाक़ों से यरूशलम आए थे, शिमाल में लबो-हमात से ले कर जुनूब में उस वादी तक जो मिस्र की सरहद थी। 66 दो हफ़्तों के बाद सुलेमान ने इस्राईलियों को रुख़्सत किया। बादशाह को बरकत दे कर वह अपने अपने घर चले गए। सब शादमान और दिल से ख़ुश थे कि रब ने अपने ख़ादिम दाऊद और अपनी क़ौम इस्राईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

9 1 चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तक्मील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उस ने ठान लिया था वह पूरा हुआ। 2 उस वक़्त रब दुबारा उस पर ज़ाहिर हुआ, उस तरह जिस तरह वह जिबऊन में उस पर ज़ाहिर हुआ था। 3 उस ने सुलेमान से कहा,

“जो दुआ और इल्तिजा तू ने मेरे हुज़ूर की उसे मैं ने सुन कर इस इमारत को जो तू ने बनाई है अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर लिया है। उस में मैं अपना नाम अबद तक क़ाइम रखूँगा। मेरी आँखें और दिल अबद तक वहाँ हाज़िर रहेंगे। 4 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, अपने बाप दाऊद की तरह दयानतदारी और रास्ती से मेरे हुज़ूर चलता रह। क्यूँकि अगर तू मेरे तमाम अह्काम और हिदायात की पैरवी करता रहे 5 तो मैं तेरी इस्राईल पर हुकूमत हमेशा तक क़ाइम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा क़ाइम रहेगा जो मैं ने तेरे बाप दाऊद से किया था कि इस्राईल पर तेरी औलाद की हुकूमत हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

6 लेकिन ख़बरदार! अगर तू या तेरी औलाद मुझ से दूर हो कर मेरे दिए गए अह्काम और हिदायात के ताबे न रहे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उन की ख़िदमत और परस्तिश करे 7 तो मैं इस्राईल को उस मुल्क में से मिटा दूँगा जो मैं ने उन को दे दिया था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैं ने अपने नाम के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त इस्राईल तमाम अक़्वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बन जाएगा। 8 इस शानदार घर की बुरी हालत देख कर यहाँ से गुज़रने वाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो

जाएंगे, और वह अपनी हिक़ारत का इज़हार करके
पूछेंगे, 'रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुलूक
क्यूँ किया?' 9 तब लोग जवाब देंगे, 'इस लिए कि गो
रब उन का ख़ुदा उन के बापदादा को मिस्र से निकाल
कर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर
माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उन की परस्तिश
और ख़िदमत करने से बाज़ न आए इस लिए रब ने
उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है'।"

हीराम की मदद का सिला

10 रब के घर और शाही महल को तामीर करने में
20 साल सर्फ़ हुए थे। 11 उस दौरान सूर का बादशाह
हीराम सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी
लकड़ी और उतना सोना भेजता रहा जितना सुलेमान
चाहता था। जब इमारतें तक्मील तक पहुँच गईं तो
सुलेमान ने हीराम को मुआवज़े में गलील के 20 शहर
दे दिए। 12 लेकिन जब हीराम उन का मुआइना करने
के लिए सूर से गलील आया तो वह उसे पसन्द न
आए। 13 उस ने सवाल किया, "मेरे भाई, यह कैसे
शहर हैं जो आप ने मुझे दिए हैं?" और उस ने उस
इलाक़े का नाम काबूल यानी 'कुछ भी नहीं' रखा।
यह नाम आज तक राइज है। 14 बात यह थी कि
हीराम ने इस्राईल के बादशाह को तक़रीबन 4,000
किलोग्राम सोना भेजा था।

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिम्मात

15 सुलेमान ने अपने तामीरी काम के लिए बेगारी
लगाए। ऐसे ही लोगों की मदद से उस ने न सिर्फ़
रब का घर, अपना महल, इर्दगिर्द के चबूतरे और
यरूशलम की फ़सील बनवाई बल्कि तीनों शहर
हसूर, मजिद्दो और जज़र को भी।

16 जज़र शहर पर मिस्र के बादशाह फ़िरऔन ने
हम्ला करके क़ब्ज़ा कर लिया था। उस के कनआनी
बाशिन्दों को क़त्ल करके उस ने पूरे शहर को जला
दिया था। जब सुलेमान की फ़िरऔन की बेटी से शादी
हुई तो मिस्री बादशाह ने जहेज़ के तौर पर उसे यह
इलाक़ा दे दिया। 17 अब सुलेमान ने जज़र का शहर
दुबारा तामीर किया। इस के इलावा उस ने नशेबी
बैत-हौरून, 18 बालात और रेगिस्तान के शहर तदमूर
में बहुत सा तामीरी काम कराया।

19 सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने
रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए।
जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी
सल्तनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था
वह उस ने बनवाया।

20–21 जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर
भर्ती की वह इस्राईली नहीं थे बल्कि अमोरी, हित्ती,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी यानी कनआन के पहले
बाशिन्दों की वह औलाद थे जो बाक़ी रह गए थे।
मुल्क पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इस्राईली इन क़ौमों को
पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इन की
औलाद को इस्राईल के लिए बेगार में काम करना
पड़ता है। 22 लेकिन सुलेमान ने इस्राईलियों में से
किसी को भी ऐसे काम करने पर मज्बूर न किया
बल्कि वह उस के फ़ौजी, सरकारी अफ़सर, फ़ौज के
अफ़सर और रथों के फ़ौजी बन गए, और उन्हें उस
के रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर किया गया। 23 सुलेमान
के तामीरी काम पर भी 550 इस्राईली मुक़र्रर थे जो
ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों के ताबे थे। यह लोग
तामीरी काम करने वालों की निगरानी करते थे।

24 जब फ़िरऔन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से
बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुन्तक़िल हुई
जो सुलेमान ने उस के लिए तामीर किया था तो वह
इर्दगिर्द के चबूतरे बनवाने लगा। 25 सुलेमान साल में
तीन बार रब को भस्म होने वाली और सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश करता था। वह उन्हें रब के घर की
उस क़ुर्बानगाह पर चढ़ाता था जो उस ने रब के लिए
बनवाई थी। साथ साथ वह बख़ूर भी जलाता था। यूँ
उस ने रब के घर को तक्मील तक पहुँचाया।

26 इस के इलावा सुलेमान बादशाह ने बहरी जहाज़ों
का बेड़ा भी बनवाया। इस काम का मर्कज़ ऐलात
के क़रीब शहर अस्यून-जाबर था। यह बन्दरगाह

मुल्क-ए-अदोम में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के साहिल पर है।
27 हीराम बादशाह ने उसे तजरिबाकार मल्लाह भेजे
ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिल कर
जहाज़ों को चलाएँ। 28 उन्हों ने ओफ़ीर तक सफ़र
किया और वहाँ से तक़रीबन 14,000 किलोग्राम
सोना सुलेमान के पास ले आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

10 1 सुलेमान की शुहरत सबा की मलिका तक
पहुँच गई। जब उस ने उस के बारे में सुना
और यह भी कि उस ने रब के नाम के लिए क्या कुछ
किया है तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना
हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की
दानिशमन्दी जाँच ले। 2 वह निहायत बड़े क़ाफ़िले के
साथ यरूशलम पहुँची जिस के ऊँट बल्सान, कस्रत
के सोने और क़ीमती जवाहिर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उस ने
उस से वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उस के
ज़हन में थे। 3 सुलेमान उस के हर सवाल का जवाब
दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि
बादशाह उस का मतलब मलिका को बता न सकता।
4 सबा की मलिका सुलेमान की वसी हिक्मत और
उस के नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। 5 उस ने
बादशाह की मेज़ों पर के मुख़्तलिफ़ खाने देखे और
यह कि उस के अफ़सर किस तर्तीब से उस पर बिठाए
जाते थे। उस ने बैरों की ख़िदमत, उन की शानदार
वर्दियों और साक़ियों पर भी ग़ौर किया। जब उस ने
इन बातों के इलावा भस्म होने वाली वह क़ुर्बानियाँ
भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो
मलिका हक्का-बक्का रह गई।

6 वह बोल उठी, “वाक़ई, जो कुछ मैं ने अपने
मुल्क में आप के शाहकारों और हिक्मत के बारे में
सुना था वह दुरुस्त है। 7 जब तक मैं ने ख़ुद आ कर
यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यक़ीन
नहीं आता था। बल्कि हक़ीक़त में मुझे आप के बारे
में आधा भी नहीं बताया गया था। आप की हिक्मत
और दौलत उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक
पहुँची थीं। 8 आप के लोग कितने मुबारक हैं! आप
के अफ़सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आप के
सामने खड़े रहते और आप की दानिश भरी बातें सुनते
हैं! 9 रब आप के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस ने आप
को पसन्द करके इस्राईल के तख़्त पर बिठाया है।
रब इस्राईल से अबदी मुहब्बत रखता है, इसी लिए
उस ने आप को बादशाह बना दिया है ताकि इन्साफ़
और रास्तबाज़ी क़ाइम रखें।”

10 फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन 4,000
किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बल्सान और जवाहिर
दिए। बाद में कभी भी उतना बल्सान इस्राईल में नहीं
लाया गया जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

11 हीराम के जहाज़ ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना लाए
बल्कि उन्हों ने क़ीमती लकड़ी और जवाहिर भी
बड़ी मिक़्दार में इस्राईल तक पहुँचाए। 12 जितनी
क़ीमती लकड़ी उन दिनों में दरआमद हुई उतनी आज
तक कभी यहूदाह में नहीं लाई गई। इस लकड़ी से
बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए
कटहरे बनवाए। यह मौसीक़ारों के सरोद और सितार
बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।

13 सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की
मलिका को बहुत से तुह्फ़े दिए। नीज़, जो कुछ भी
मलिका चाहती थी या उस ने माँगा वह उसे दिया
गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़सरों के
हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शुहरत

14 जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उस
का वज़न तक़रीबन 23,000 किलोग्राम था। 15 इस में
वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरों,
अरब बादशाहों और ज़िलओं के अफ़सरों से मिलते
थे।

16–17 सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300
छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मंढा गया। हर बड़ी
ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल

हुआ और हर छोटी ढाल के लिए तक़रीबन साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें ‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में महफ़ूज़ रखा।

18 इन के इलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता
एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर ख़ालिस सोना
चढ़ाया गया। 19–20 तख़्त की पुश्त का ऊपर का
हिस्सा गोल था, और उस के हर बाज़ू के साथ
शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और
बादशाह छः पाए वाली सीढ़ी पर चढ़ कर उस पर
बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर
का मुजस्समा था। इस क़िस्म का तख़्त किसी और
सल्तनत में नहीं पाया जाता था।

21 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि
‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में तमाम बर्तन
ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं
थी, क्यूँकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर
नहीं थी। 22 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो
हीराम के जहाज़ों के साथ मिल कर मुख़्तलिफ़ जगहों
पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी,
हाथीदाँत, बन्दरों और मोरों से लदे हुए वापस आते
थे।

23 सुलेमान की दौलत और हिक्मत दुनिया के तमाम
बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 24 पूरी दुनिया उस से
मिलने की कोशिश करती रही ताकि वह हिक्मत सुन
ले जो अल्लाह ने उस के दिल में डाल दी थी। 25 साल-
ब-साल जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई
न कोई तुह्फ़ा लाता। यूँ उसे सोने-चाँदी के बर्तन,
क़ीमती लिबास, हथियार, बल्सान, घोड़े और ख़च्चर
मिलते रहे।

26 सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे।
कुछ उस ने रथों के लिए मख़्सूस किए गए शहरों में
और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 27 बादशाह
की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम
हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी यहूदाह के
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अन्जीर-तूत की
सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 28 बादशाह अपने
घोड़े मिस्र और कूए यानी किलिकिया से दरआमद
करता था। उस के ताजिर इन जगहों पर जा कर उन्हें
ख़रीद लाते थे। 29 बादशाह के रथ मिस्र से दरआमद
होते थे। हर रथ की क़ीमत चाँदी के 600 सिक्के और
हर घोड़े की क़ीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान
के ताजिर यह घोड़े बरआमद करते हुए तमाम हित्ती
और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

सुलेमान रब से दूर हो जाता है

11 1 लेकिन सुलेमान बहुत सी ग़ैरमुल्की
ख़वातीन से मुहब्बत करता था। फ़िरऔन
की बेटी के इलावा उस की शादी मोआबी, अम्मोनी,
अदोमी, सैदानी और हित्ती औरतों से हुई। 2 इन क़ौमों
के बारे में रब ने इस्राईलियों को हुक्म दिया था, “न
तुम इन के घरों में जाओ और न यह तुम्हारे घरों
में आएँ, वर्ना यह तुम्हारे दिल अपने देवताओं की
तरफ़ माइल कर देंगे।” तो भी सुलेमान बड़े प्यार से
अपनी इन बीवियों से लिपटा रहा। 3 उस की शाही
ख़ानदानों से ताल्लुक़ रखने वाली 700 बीवियाँ और
300 दाश्ताएँ थीं। इन औरतों ने आख़िरकार उस का
दिल रब से दूर कर दिया। 4 जब वह बूढ़ा हो गया तो
उन्हों ने उस का दिल दीगर माबूदों की तरफ़ माइल
कर दिया। यूँ वह बुढ़ापे में अपने बाप दाऊद की
तरह पूरे दिल से रब का वफ़ादार न रहा 5 बल्कि
सैदानियों की देवी अस्तारात और अम्मोनियों के
देवता मिल्कूम की पूजा करने लगा। 6 ग़रज़ उस
ने ऐसा काम किया जो रब को नापसन्द था। वह
वफ़ादारी न रही जिस से उस के बाप दाऊद ने रब
की ख़िदमत की थी।

7 यरूशलम के मशरिक़ में सुलेमान ने एक पहाड़ी
पर दो मन्दिर बनाए, एक मोआब के घिनौने देवता
कमोस के लिए और एक अम्मोन के घिनौने देवता
मलिक यानी मिल्कूम के लिए। 8 ऐसे मन्दिर उस ने
अपनी तमाम ग़ैरमुल्की बीवियों के लिए तामीर किए
ताकि वह अपने देवताओं को बख़ूर और ज़बह की
क़ुर्बानियाँ पेश कर सकें।

9 रब को सुलेमान पर बड़ा ग़ुस्सा आया, क्यूँकि
वह इस्राईल के ख़ुदा से दूर हो गया था, हालाँकि
रब उस पर दो बार ज़ाहिर हुआ था। 10 गो उस ने
उसे दीगर माबूदों की पूजा करने से साफ़ मना किया
था तो भी सुलेमान ने उस का हुक्म न माना। 11 इस
लिए रब ने उस से कहा, “चूँकि तू मेरे अह्द और
अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता, इस
लिए मैं बादशाही को तुझ से छीन कर तेरे किसी
अफ़सर को दूँगा। यह बात यक़ीनी है। 12 लेकिन
तेरे बाप दाऊद की ख़ातिर मैं यह तेरे जीते जी नहीं
करूँगा बल्कि बादशाही को तेरे बेटे ही से छीनूँगा।
13 और मैं पूरी मम्लकत उस के हाथ से नहीं लूँगा
बल्कि अपने ख़ादिम दाऊद और अपने चुने हुए शहर
यरूशलम की ख़ातिर उस के लिए एक क़बीला छोड़
दूँगा।”

सुलेमान के दुश्मन हदद और रज़ून

14 फिर रब ने अदोम के शाही ख़ानदान में से एक
आदमी बनाम हदद को बरपा किया जो सुलेमान का
सख़्त मुख़ालिफ़ बन गया। 15 वह यूँ सुलेमान का
दुश्मन बन गया कि चन्द साल पहले जब दाऊद ने
अदोम को शिकस्त दी तो उस का फ़ौजी कमाँडर
योआब मैदान-ए-जंग में पड़ी तमाम इस्राईली लाशों
को दफ़नाने के लिए अदोम आया। जहाँ भी गया वहाँ
उस ने हर अदोमी मर्द को मार डाला। 16 वह छः
माह तक अपने फ़ौजियों के साथ हर जगह फिरा
और तमाम अदोमी मर्दों को मारता गया। 17 हदद
उस वक़्त बच गया और अपने बाप के चन्द एक
सरकारी अफ़सरों के साथ फ़रार हो कर मिस्र में पनाह
ले सका।

18 रास्ते में उन्हें दश्त-ए-फ़ारान के मुल्क-ए-
मिदियान से गुज़रना पड़ा। वहाँ वह मज़ीद कुछ
आदमियों को जमा कर सके और सफ़र करते करते
मिस्र पहुँच गए। हदद मिस्र के बादशाह फ़िरऔन
के पास गया तो उस ने उसे घर, कुछ ज़मीन और
ख़ुराक मुहय्या की। 19 हदद फ़िरऔन को इतना
पसन्द आया कि उस ने उस की शादी अपनी बीवी
मलिका तह्फ़नीस की बहन के साथ कराई। 20 इस
बहन के बेटा पैदा हुआ जिस का नाम जनूबत रखा
गया। तह्फ़नीस ने उसे शाही महल में पाला जहाँ वह
फ़िरऔन के बेटों के साथ परवान चढ़ा।

21 एक दिन हदद को ख़बर मिली कि दाऊद और
उस का कमाँडर योआब फ़ौत हो गए हैं। तब उस
ने फ़िरऔन से इजाज़त माँगी, “मैं अपने मुल्क
लौट जाना चाहता हूँ, बराह-ए-करम मुझे जाने दें।”
22 फ़िरऔन ने एतिराज़ किया, “यहाँ क्या कमी है
कि तुम अपने मुल्क वापस जाना चाहते हो?” हदद
ने जवाब दिया, “मैं किसी भी चीज़ से महरूम नहीं
रहा, लेकिन फिर भी मुझे जाने दीजिए।”

23 अल्लाह ने एक और आदमी को भी सुलेमान के
ख़िलाफ़ बरपा किया। उस का नाम रज़ून बिन इल्यदा
था। पहले वह ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की
ख़िदमत अन्जाम देता था, लेकिन एक दिन उस ने
अपने मालिक से भाग कर 24 कुछ आदमियों को
अपने गिर्द जमा किया और डाकुओं के जथ्थे का
सरग़ना बन गया। जब दाऊद ने ज़ोबाह को शिकस्त
दे दी तो रज़ून अपने आदमियों के साथ दमिश्क़ गया
और वहाँ आबाद हो कर अपनी हुकूमत क़ाइम कर
ली। 25 होते होते वह पूरे शाम का हुक्मरान बन गया।
वह इस्राईलियों से नफ़रत करता था और सुलेमान
के जीते जी इस्राईल का ख़ास दुश्मन बना रहा। हदद
की तरह वह भी इस्राईल को तंग करता रहा।

यरुबिआम और अख़ियाह नबी

26 सुलेमान का एक सरकारी अफ़सर भी उस के
ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ। उस का नाम यरुबिआम
बिन नबात था, और वह इफ़्राईम के शहर सरीदा का
था। उस की माँ सरूआ बेवा थी। 27 जब यरुबिआम
बाग़ी हुआ तो उन दिनों में सुलेमान इर्दगिर्द के चबूतरे
और फ़सील का आख़िरी हिस्सा तामीर कर रहा था।
28 उस ने देखा कि यरुबिआम माहिर और मेहनती
जवान है, इस लिए उस ने उसे इफ़्राईम और मनस्सी

के क़बीलों के तमाम बेगार में काम करने वालों पर
मुक़र्रर किया।
29 एक दिन यरुबिआम शहर से निकल रहा था तो
उस की मुलाक़ात सैला के नबी अख़ियाह से हुई।
अख़ियाह नई चादर ओढ़े फिर रहा था। खुले मैदान में
जहाँ कोई और नज़र न आया 30 अख़ियाह ने अपनी
चादर को पकड़ कर बारह टुकड़ों में फाड़ लिया
31 और यरुबिआम से कहा,
“चादर के दस टुकड़े अपने पास रखें! क्यूँकि रब
इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, इस वक़्त मैं इस्राईल
की बादशाही को सुलेमान से छीनने वाला हूँ। जब
ऐसा होगा तो मैं उस के दस क़बीले तेरे हवाले कर
दूँगा। 32 एक ही क़बीला उस के पास रहेगा, और
यह भी सिर्फ़ उस के बाप दाऊद और उस शहर की
ख़ातिर जिसे मैं ने तमाम क़बीलों में से चुन लिया है।
33 इस तरह मैं सुलेमान को सज़ा दूँगा, क्यूँकि वह
और उस के लोग मुझे तर्क करके सैदानियों की देवी
अस्तारात की, मोआबियों के देवता कमोस की और
अम्मोनियों के देवता मिल्कूम की पूजा करने लगे हैं।
वह मेरी राहों पर नहीं चलते बल्कि वही कुछ करते
हैं जो मुझे बिलकुल नापसन्द है। जिस तरह दाऊद
मेरे अह्काम और हिदायात की पैरवी करता था उस
तरह उस का बेटा नहीं करता।
34 लेकिन मैं इस वक़्त पूरी बादशाही सुलेमान के
हाथ से नहीं छीनूँगा। अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर
जिसे मैं ने चुन लिया और जो मेरे अह्काम और
हिदायात के ताबे रहा मैं सुलेमान के जीते जी यह
नहीं करूँगा। वह ख़ुद बादशाह रहेगा, 35 लेकिन
उस के बेटे से मैं बादशाही छीन कर दस क़बीले
तेरे हवाले कर दूँगा। 36 सिर्फ़ एक क़बीला सुलेमान
के बेटे के सपुर्द रहेगा ताकि मेरे ख़ादिम दाऊद का
चराग़ हमेशा मेरे हुज़ूर यरूशलम में जलता रहे, उस
शहर में जो मैं ने अपने नाम की सुकूनत के लिए चुन
लिया है। 37 लेकिन तुझे, ऐ यरुबिआम, मैं इस्राईल
पर बादशाह बना दूँगा। जो कुछ भी तेरा जी चाहता
है उस पर तू हुकूमत करेगा। 38 उस वक़्त अगर तू
मेरे ख़ादिम दाऊद की तरह मेरी हर बात मानेगा, मेरी
राहों पर चलेगा और मेरे अह्काम और हिदायात के
ताबे रह कर वह कुछ करेगा जो मुझे पसन्द है तो फिर
मैं तेरे साथ रहूँगा। फिर मैं तेरा शाही ख़ानदान उतना
ही क़ाइम-ओ-दाइम कर दूँगा जितना मैं ने दाऊद का
किया है, और इस्राईल तेरे ही हवाले रहेगा।
39 यूँ मैं सुलेमान के गुनाह के बाइस दाऊद की
औलाद को सज़ा दूँगा, अगरचे यह अबदी सज़ा नहीं
होगी।”
40 इस के बाद सुलेमान ने यरुबिआम को मरवाने
की कोशिश की, लेकिन यरुबिआम ने फ़रार हो कर
मिस्र के बादशाह सीसक़ के पास पनाह ली। वहाँ
वह सुलेमान की मौत तक रहा।

सुलेमान की मौत

41 सुलेमान की ज़िन्दगी और हिक्मत के बारे में
मज़ीद बातें ‘सुलेमान के आमाल’ की किताब में
बयान की गई हैं। 42 सुलेमान 40 साल पूरे इस्राईल
पर हुकूमत करता रहा। उस का दार-उल-हकूमत
यरूशलम था। 43 जब वह मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न
किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर
उस का बेटा रहुबिआम तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

12 1 रहुबिआम सिकम गया, क्यूँकि वहाँ
तमाम इस्राईली उसे बादशाह मुक़र्रर करने
के लिए जमा हो गए थे। 2 यरुबिआम बिन नबात
यह ख़बर सुनते ही मिस्र से जहाँ उस ने सुलेमान
बादशाह से भाग कर पनाह ली थी इस्राईल वापस
आया। 3 इस्राईलियों ने उसे बुलाया ताकि उस के
साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इस्राईल की पूरी
जमाअत यरुबिआम के साथ मिल कर रहुबिआम
से मिलने गई। उन्हों ने बादशाह से कहा, 4 “जो
जूआ आप के बाप ने हम पर डाल दिया था उसे
उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें

बादशाह की ख़िदमत में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम ख़ुशी से आप की ख़िदमत करेंगे।”

5 रहुबिआम ने जवाब दिया, “मुझे तीन दिन की मुहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।” चुनाँचे लोग चले गए।

6 फिर रहुबिआम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से मश्वरा किया जो सुलेमान के जीते जी बादशाह की ख़िदमत करते रहे थे। उस ने पूछा, “आप का क्या ख़याल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?” 7 बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हमारा मश्वरा है कि इस वक़्त उन का ख़ादिम बन कर उन की ख़िदमत करें और उन्हें नर्म जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आप के वफ़ादार ख़ादिम बने रहेंगे।”

8 लेकिन रहुबिआम ने बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से मश्वरा किया जो उस के साथ परवान चढ़े थे। 9 उस ने पूछा, “मैं इस क़ौम को क्या जवाब दूँ? यह तक़ाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जूआ हल्का कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।” 10 जो जवान उस के साथ परवान चढ़े थे उन्हों ने कहा, “अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे हैं कि आप के बाप का जूआ हल्का किया जाए? उन्हें बता देना, ‘मेरी छोटी उंगली मेरे बाप की कमर से ज़्यादा मोटी है! 11 बेशक जो जूआ उस ने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप को कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब करूँगा’!”

12 तीन दिन के बाद जब यरुबिआम तमाम इस्राईलियों के साथ रहुबिआम का फ़ैसला सुनने के लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख़्त जवाब दिया। बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके 14 उस ने उन्हें जवानों का जवाब दिया, “बेशक जो जूआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप को कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब करूँगा!” 15 यूँ रब की मर्ज़ी पूरी हुई कि रहुबिआम लोगों की बात नहीं मानेगा। क्यूँकि अब रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने यरुबिआम बिन नबात को बताई थी।

16 जब इस्राईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात सुनने के लिए तय्यार नहीं है तो उन्हों ने उस से कहा, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इस्राईल, सब अपने अपने घर वापस चलें! ऐ दाऊद, अब अपना घर ख़ुद सँभाल लो!” यह कह कर वह सब चले गए।

17 सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में रहने वाले इस्राईली रहुबिआम के तहत रहे। 18 फिर रहुबिआम बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर अफ़्सर अदूनीराम को शिमाली क़बीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देख कर तमाम लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबिआम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भाग कर यरूशलम पहुँच गया। 19 यूँ इस्राईल के शिमाली क़बीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।

20 जब ख़बर शिमाली इस्राईल में फैली कि यरुबिआम मिस्र से वापस आ गया है तो लोगों ने क़ौमी इज्लास मुनअक़िद करके उसे बुलाया और वहाँ उसे अपना बादशाह बना लिया। सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला रहुबिआम और उस के घराने का वफ़ादार रहा।

रहुबिआम को इस्राईल से जंग करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 जब रहुबिआम यरूशलम पहुँचा तो उस ने यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों के चीदा चीदा फ़ौजियों को इस्राईल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबिआम बिन सुलेमान के लिए इस्राईल पर दुबारा क़ाबू पाएँ। 22 लेकिन ऐन उस वक़्त मर्द-ए-ख़ुदा समायाह को अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम मिला, 23 “यहूदाह के बादशाह रहुबिआम बिन सुलेमान, यहूदाह और

बिनयमीन के तमाम अफ़राद और बाक़ी लोगों को इत्तिला दे, 24 ‘रब फ़रमाता है कि अपने इस्राईली
भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर
वापस चला जाए, क्यूँकि जो कुछ हुआ है वह मेरे
हुक्म पर हुआ है’।”
तब वह रब की सुन कर अपने अपने घर वापस
चले गए।

यरुबिआम के सोने के बछड़े

25 यरुबिआम इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर
सिकम को मज़बूत करके वहाँ आबाद हुआ। बाद
में उस ने फ़नूएल शहर की भी क़िलाबन्दी की और
वहाँ मुन्तक़िल हुआ। 26 लेकिन दिल में अन्देशा रहा
कि कहीं इस्राईल दुबारा दाऊद के घराने के हाथ
में न आ जाए। 27 उस ने सोचा, “लोग बाक़ाइदगी
से यरूशलम आते जाते हैं ताकि वहाँ रब के घर
में अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करें। अगर यह सिलसिला
तोड़ा न जाए तो आहिस्ता आहिस्ता उन के दिल
दुबारा यहूदाह के बादशाह रहुबिआम की तरफ़
माइल हो जाएंगे। आख़िरकार वह मुझे क़त्ल करके
रहुबिआम को अपना बादशाह बना लेंगे।”
28 अपने अफ़्सरों के मश्वरे पर उस ने सोने के दो
बछड़े बनवाए। लोगों के सामने उस ने एलान किया,
“हर क़ुर्बानी के लिए यरूशलम जाना मुश्किल है!
ऐ इस्राईल देख, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिस्र से
निकाल लाए।” 29 एक बुत उस ने जुनूबी शहर बैत-
एल में खड़ा किया और दूसरा शिमाली शहर दान में।
30 यूँ यरुबिआम ने इस्राईलियों को गुनाह करने पर
उकसाया। लोग दान तक सफ़र किया करते थे ताकि
वहाँ के बुत की पूजा करें।
31 इस के इलावा यरुबिआम ने बहुत सी ऊँची
जगहों पर मन्दिर बनवाए। उन्हें सँभालने के लिए उस
ने ऐसे लोग मुक़र्रर किए जो लावी के क़बीले के नहीं
बल्कि आम लोग थे। 32 उस ने एक नई ईद भी राइज
की जो यहूदाह में मनाने वाली झोंपड़ियों की ईद की
मानिन्द थी। यह ईद आठवें माह [d]के पंद्रहवें दिन
मनाई जाती थी। बैत-एल में उस ने ख़ुद क़ुर्बानगाह
पर जा कर अपने बनवाए हुए बछड़ों को क़ुर्बानियाँ
पेश कीं, और वहीं उस ने अपने उन मन्दिरों के इमामों
को मुक़र्रर किया जो उस ने ऊँची जगहों पर तामीर
किए थे।

नबी यरुबिआम को बुरी ख़बर पहुँचाता है

33 चुनाँचे यरुबिआम के मुक़र्ररकरदा दिन यानी
आठवें महीने के पंद्रहवें दिन इस्राईलियों ने बैत-एल
में ईद मनाई। तमाम मेहमानों के सामने यरुबिआम
क़ुर्बानगाह पर चढ़ गया ताकि क़ुर्बानियाँ पेश करे।

13 1 वह अभी क़ुर्बानगाह के पास खड़ा अपनी
क़ुर्बानियाँ पेश करना ही चाहता था कि
एक मर्द-ए-ख़ुदा आन पहुँचा। रब ने उसे यहूदाह
से बैत-एल भेज दिया था। 2 बुलन्द आवाज़ से वह
क़ुर्बानगाह से मुख़ातिब हुआ, “ऐ क़ुर्बानगाह! ऐ
क़ुर्बानगाह! रब फ़रमाता है, ‘दाऊद के घराने से बेटा
पैदा होगा जिस का नाम यूसियाह होगा। तुझ पर वह
उन इमामों को क़ुर्बान कर देगा जो ऊँची जगहों के
मन्दिरों में ख़िदमत करते और यहाँ क़ुर्बानियाँ पेश
करने के लिए आते हैं। तुझ पर इन्सानों की हड्डियाँ
जलाई जाएँगी’।” 3 फिर मर्द-ए-ख़ुदा ने इलाही निशान
भी पेश किया। उस ने एलान किया, “एक निशान
साबित करेगा कि रब मेरी मारिफ़त बात कर रहा है!
यह क़ुर्बानगाह फट जाएगी, और इस पर मौजूद चर्बी
मिली राख ज़मीन पर बिखर जाएगी।”
4 यरुबिआम बादशाह अब तक क़ुर्बानगाह के पास
खड़ा था। जब उस ने बैत-एल की क़ुर्बानगाह के
ख़िलाफ़ मर्द-ए-ख़ुदा की बात सुनी तो वह हाथ से
उस की तरफ़ इशारा करके गरजा, “उसे पकड़ो!”
लेकिन जूँ ही बादशाह ने अपना हाथ बढ़ाया वह सूख
गया, और वह उसे वापस न खैंच सका। 5 उसी लम्हे

---

[d]अक्तूबर ता नवम्बर

क़ुर्बानगाह फट गई और उस पर मौजूद राख ज़मीन
पर बिखर गई। बिलकुल वही कुछ हुआ जिस का
एलान मर्द-ए-ख़ुदा ने रब की तरफ़ से किया था।
6 तब बादशाह इल्तिमास करने लगा, “रब अपने
ख़ुदा का ग़ुस्सा ठंडा करके मेरे लिए दुआ करें ताकि
मेरा हाथ बहाल हो जाए।” मर्द-ए-ख़ुदा ने उस की
शफ़ाअत की तो यरुबिआम का हाथ फ़ौरन बहाल
हो गया।
7 तब यरुबिआम बादशाह ने मर्द-ए-ख़ुदा को दावत
दी, “आएँ, मेरे घर में खाना खा कर ताज़ादम हो जाएँ।
मैं आप को तुह्फ़ा भी दूँगा।” 8 लेकिन उस ने इन्कार
किया, “मैं आप के पास नहीं आऊँगा, चाहे आप
मुझे अपनी मिलकियत का आधा हिस्सा क्यूँ न दें।
मैं यहाँ न रोटी खाऊँगा, न कुछ पियूँगा। 9 क्यूँकि रब
ने मुझे हुक्म दिया है, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ
पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर
से तू बैत-एल पहुँचा है’।”
10 यह कह कर वह फ़र्क़ रास्ता इख़तियार करके
अपने घर के लिए रवाना हुआ।

नबी की नाफ़रमानी

11 बैत-एल में एक बूढ़ा नबी रहता था। जब उस के
बेटे उस दिन घर वापस आए तो उन्हों ने उसे सब
कुछ कह सुनाया जो मर्द-ए-ख़ुदा ने बैत-एल में किया
और यरुबिआम बादशाह को बताया था। 12 बाप
ने पूछा, “वह किस तरफ़ गया?” बेटों ने उसे वह
रास्ता बताया जो यहूदाह के मर्द-ए-ख़ुदा ने लिया था।
13 बाप ने हुक्म दिया, “मेरे गधे पर जल्दी से ज़ीन
कसो!” बेटों ने ऐसा किया तो वह उस पर बैठ कर
14 मर्द-ए-ख़ुदा को ढूँडने गया।
चलते चलते मर्द-ए-ख़ुदा बलूत के दरख़्त के साय
में बैठा नज़र आया। बुज़ुर्ग ने पूछा, “क्या आप वही
मर्द-ए-ख़ुदा हैं जो यहूदाह से बैत-एल आए थे?” उस
ने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 15 बुज़ुर्ग नबी ने
उसे दावत दी, “आएँ, मेरे साथ। मैं घर में आप को
कुछ खाना खिलाता हूँ।”
16 लेकिन मर्द-ए-ख़ुदा ने इन्कार किया, “नहीं, न मैं
आप के साथ वापस जा सकता हूँ, न मुझे यहाँ खाने-
पीने की इजाज़त है। 17 क्यूँकि रब ने मुझे हुक्म दिया,
‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते
वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैत-एल पहुँचा
है’।”
18 बुज़ुर्ग नबी ने एतिराज़ किया, “मैं भी आप जैसा
नबी हूँ! एक फ़रिश्ते ने मुझे रब का नया पैग़ाम
पहुँचा कर कहा, ‘उसे अपने साथ घर ले जा कर
रोटी खिला और पानी पिला’।” बुज़ुर्ग झूट बोल रहा
था, 19 लेकिन मर्द-ए-ख़ुदा उस के साथ वापस गया
और उस के घर में कुछ खाया और पिया।
20 वह अभी वहाँ बैठे खाना खा रहे थे कि बुज़ुर्ग
पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। 21 उस ने बुलन्द
आवाज़ से यहूदाह के मर्द-ए-ख़ुदा से कहा, “रब
फ़रमाता है, ‘तू ने रब के कलाम की ख़िलाफ़वरज़ी
की है! जो हुक्म रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दिया था वह तू ने
नज़रअन्दाज़ किया है। 22 गो उस ने फ़रमाया था कि
यहाँ न कुछ खा और न कुछ पी तो भी तू ने वापस
आ कर यहाँ रोटी खाई और पानी पिया है। इस लिए
मरते वक़्त तुझे तेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाया
नहीं जाएगा’।”
23 खाने के बाद बुज़ुर्ग के गधे पर ज़ीन कसा गया
और मर्द-ए-ख़ुदा को उस पर बिठाया गया। 24 वह
दुबारा रवाना हुआ तो रास्ते में एक शेरबबर ने उस
पर हम्ला करके उसे मार डाला। लेकिन उस ने लाश
को न छेड़ा बल्कि वह वहीं रास्ते में पड़ी रही जबकि
गधा और शेर दोनों ही उस के पास खड़े रहे।
25 कुछ लोग वहाँ से गुज़रे। जब उन्हों ने लाश को
रास्ते में पड़े और शेरबबर को उस के पास खड़े देखा
तो उन्हों ने बैत-एल जहाँ बुज़ुर्ग नबी रहता था आ
कर लोगों को इत्तिला दी। 26 जब बुज़ुर्ग को ख़बर
मिली तो उस ने कहा, “वही मर्द-ए-ख़ुदा है जिस ने
रब के फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी की। अब वह कुछ
हुआ है जो रब ने उसे फ़रमाया था यानी उस ने उसे
शेरबबर के हवाले कर दिया ताकि वह उसे फाड़ कर

मार डाले।” 27 बुज़ुर्ग ने अपने बेटों को गधे पर ज़ीन
कसने का हुक्म दिया, 28 और वह उस पर बैठ कर
रवाना हुआ। जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि लाश अब
तक रास्ते में पड़ी है और गधा और शेर दोनों ही उस
के पास खड़े हैं। शेरबबर ने न लाश को छेड़ा और न
गधे को फाड़ा था।
29 बुज़ुर्ग नबी ने लाश को उठा कर अपने गधे पर
रखा और उसे बैत-एल लाया ताकि उस का मातम
करके उसे वहाँ दफ़नाए। 30 उस ने लाश को अपनी
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया, और लोगों ने “हाय,
मेरे भाई” कह कर उस का मातम किया। 31 जनाज़े
के बाद बुज़ुर्ग नबी ने अपने बेटों से कहा, “जब मैं
कूच कर जाऊँगा तो मुझे मर्द-ए-ख़ुदा की क़ब्र में
दफ़नाना। मेरी हड्डियों को उस की हड्डियों के पास
ही रखें। 32 क्यूँकि जो बातें उस ने रब के हुक्म पर
बैत-एल की क़ुर्बानगाह और सामरिया के शहरों की
ऊँची जगहों के मन्दिरों के बारे में की हैं वह यक़ीनन
पूरी हो जाएँगी।”

यरुबिआम फिर भी नाफ़रमान रहता है

33 इन वाक़िआत के बावुजूद यरुबिआम अपनी
शरीर हरकतों से बाज़ न आया। आम लोगों को
इमाम बनाने का सिलसिला जारी रहा। जो कोई
भी इमाम बनना चाहता उसे वह ऊँची जगहों के
मन्दिरों में ख़िदमत करने के लिए मख़्सूस करता था।
34 यरुबिआम के घराने के इस संगीन गुनाह की वजह
से वह आख़िरकार तबाह हुआ और रू-ए-ज़मीन पर
से मिट गया।

यरुबिआम को इलाही सज़ा मिलती है

14 1 एक दिन यरुबिआम का बेटा अबियाह
बहुत बीमार हुआ। 2 तब यरुबिआम ने
अपनी बीवी से कहा, “जा कर अपना भेस बदलें
ताकि कोई न पहचाने कि आप मेरी बीवी हैं। फिर
सैला जाएँ। वहाँ अख़ियाह नबी रहता है जिस ने मुझे
इत्तिला दी थी कि मैं इस क़ौम का बादशाह बन
जाऊँगा। 3 उस के पास दस रोटियाँ, कुछ बिस्कुट
और शहद का मर्तबान ले जाएँ। वह आदमी आप को
ज़रूर बता देगा कि लड़के के साथ क्या हो जाएगा।”
4 चुनाँचे यरुबिआम की बीवी अपना भेस बदल कर
रवाना हुई और चलते चलते सैला में अख़ियाह के
घर पहुँच गई। अख़ियाह उम्ररसीदा होने के बाइस
देख नहीं सकता था। 5 लेकिन रब ने उसे आगाह कर
दिया, “यरुबिआम की बीवी तुझ से मिलने आ रही
है ताकि अपने बीमार बेटे के बारे में मालूमात हासिल
करे। लेकिन वह अपना भेस बदल कर आएगी ताकि
उसे पहचाना न जाए।” फिर रब ने नबी को बताया
कि उसे क्या जवाब देना है।
6 जब अख़ियाह ने औरत के क़दमों की आहट सुनी
तो बोला, “यरुबिआम की बीवी, अन्दर आएँ! रूप
भरने की क्या ज़रूरत? मुझे आप को बुरी ख़बर
पहुँचानी है। 7 जाएँ, यरुबिआम को रब इस्राईल के
ख़ुदा की तरफ़ से पैग़ाम दें, ‘मैं ने तुझे लोगों में से
चुन कर खड़ा किया और अपनी क़ौम इस्राईल पर
बादशाह बना दिया। 8 मैं ने बादशाही को दाऊद के
घराने से छीन कर तुझे दे दिया। लेकिन अफ़्सोस, तू
मेरे ख़ादिम दाऊद की तरह ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता जो
मेरे अह्काम के ताबे रह कर पूरे दिल से मेरी पैरवी
करता रहा और हमेशा वह कुछ करता था जो मुझे
पसन्द था। 9 जो तुझ से पहले थे उन की निस्बत तू ने
कहीं ज़्यादा बदी की, क्यूँकि तू ने बुत ढाल कर अपने
लिए दीगर माबूद बनाए हैं और यूँ मुझे तैश दिलाया।
चूँकि तू ने अपना मुँह मुझ से फेर लिया 10 इस लिए मैं
तेरे ख़ानदान को मुसीबत में डाल दूँगा। इस्राईल में मैं
यरुबिआम के तमाम मर्दों को हलाक कर दूँगा, ख़्वाह
वह बच्चे हों या बालिग़। जिस तरह गोबर को झाड़ू
दे कर दूर किया जाता है उसी तरह यरुबिआम के
घराने का नाम-ओ-निशान मिट जाएगा। 11 तुम में से
जो शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले
मैदान में मरेंगे उन्हें परिन्दे चट कर जाएंगे। क्यूँकि
यह रब का फ़रमान है’।”

12 फिर अख़ियाह ने यरुबिआम की बीवी से कहा,
“आप अपने घर वापस चली जाएँ। जूँ ही आप शहर
में दाख़िल होंगी लड़का फ़ौत हो जाएगा। 13 पूरा
इस्राईल उस का मातम करके उसे दफ़न करेगा।
वह आप के ख़ानदान का वाहिद फ़र्द होगा जिसे
सहीह तौर से दफ़नाया जाएगा। क्यूँकि रब इस्राईल
के ख़ुदा ने सिर्फ़ उसी में कुछ पाया जो उसे पसन्द
था। 14 रब इस्राईल पर एक बादशाह मुक़र्रर करेगा
जो यरुबिआम के ख़ानदान को हलाक करेगा। आज
ही से यह सिलसिला शुरू हो जाएगा। 15 रब इस्राईल
को भी सज़ा देगा, क्यूँकि वह यसीरत देवी के खम्बे
बना कर उन की पूजा करते हैं। चूँकि वह रब को
तैश दिलाते रहे हैं, इस लिए वह उन्हें मारेगा, और
वह पानी में सरकंडे की तरह हिल जाएंगे। रब उन्हें
इस अच्छे मुल्क से उखाड़ कर दरया-ए-फ़ुरात के
पार मुन्तशिर कर देगा। 16 यूँ वह इस्राईल को उन
गुनाहों के बाइस तर्क करेगा जो यरुबिआम ने किए
और इस्राईल को करने पर उकसाया है।”
17 यरुबिआम की बीवी तिर्ज़ा में अपने घर वापस
चली गई। और घर के दरवाज़े में दाख़िल होते ही उस
का बेटा मर गया। 18 तमाम इस्राईल ने उसे दफ़ना कर
उस का मातम किया। सब कुछ वैसे हुआ जैसे रब ने
अपने ख़ादिम अख़ियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया
था।

यरुबिआम की मौत

19 बाक़ी जो कुछ यरुबिआम की ज़िन्दगी के बारे
में लिखा है वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उस किताब में पढ़ा जा सकता
है कि वह किस तरह हुकूमत करता था और उस
ने कौन कौन सी जंगें कीं। 20 यरुबिआम 22 साल
बादशाह रहा। जब वह मर कर अपने बापदादा से
जा मिला तो उस का बेटा नदब तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह रहुबिआम

21 यहूदाह में रहुबिआम बिन सुलेमान हुकूमत
करता था। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 41 साल
की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ और 17 साल
बादशाह रहा। उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम
था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इस्राईली क़बीलों में
से चुन लिया ताकि उस में अपना नाम क़ाइम करे।
22 लेकिन यहूदाह के बाशिन्दे भी ऐसी हरकतें करते
थे जो रब को नापसन्द थीं। अपने गुनाहों से वह
उसे तैश दिलाते रहे, क्यूँकि उन के यह गुनाह उन
के बापदादा के गुनाहों से कहीं ज़्यादा संगीन थे।
23 उन्हों ने भी ऊँची जगहों पर मन्दिर बनाए। हर
ऊँची पहाड़ी पर और हर घने दरख़्त के साय में
उन्हों ने मख़्सूस पत्थर या यसीरत देवी के खम्बे खड़े
किए, 24 यहाँ तक कि मन्दिरों में जिस्मफ़रोश मर्द
और औरतें थे। ग़रज़, उन्हों ने उन क़ौमों के तमाम
घिनौने रस्म-ओ-रिवाज अपना लिए जिन को रब ने
इस्राईलियों के आगे आगे निकाल दिया था।
25 रहुबिआम बादशाह की हुकूमत के पाँचवें साल
में मिस्र के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर हम्ला
करके 26 रब के घर और शाही महल के तमाम ख़ज़ाने
लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली गईं जो
सुलेमान ने बनवाई थीं। 27 इन की जगह रहुबिआम
ने पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें उन मुहाफ़िज़ों
के अफ़सरों के सपुर्द किया जो शाही महल के दरवाज़े
की पहरादारी करते थे। 28 जब भी बादशाह रब के
घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह ढालें उठा कर साथ
ले जाते। इस के बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में
वापस ले जाते थे।
29 बाक़ी जो कुछ रहुबिआम बादशाह की हुकूमत
के दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया वह
‘शाहान-ए-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज
है। 30 दोनों बादशाहों रहुबिआम और यरुबिआम के
जीते जी उन के दरमियान जंग जारी रही। 31 जब
रहुबिआम मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो

उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। फिर रहुबिआम का बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

15 1 अबियाह इस्राईल के बादशाह यरुबिआम
बिन नबात की हुकूमत के 18वें साल में
यहूदाह का बादशाह बना। 2 वह तीन साल बादशाह
रहा, और उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम था।
उस की माँ माका बिन्त अबीसलूम थी। 3 अबियाह
से वही गुनाह सरज़द हुए जो उस के बाप ने किए थे,
और वह पूरे दिल से रब अपने ख़ुदा का वफ़ादार न
रहा। गो वह इस में अपने परदादा दाऊद से फ़र्क़ था
4 तो भी रब उस के ख़ुदा ने अबियाह का यरूशलम
में चराग़ जलने दिया। दाऊद की ख़ातिर उस ने उसे
जानशीन अता किया और यरूशलम को क़ाइम रखा,
5 क्यूँकि दाऊद ने वह कुछ किया था जो रब को
पसन्द था। जीते जी वह रब के अह्काम के ताबे
रहा, सिवाए उस जुर्म के जब उस ने ऊरियाह हित्ती
के सिलसिले में ग़लत क़दम उठाए थे।

6 रहुबिआम और यरुबिआम के दरमियान की जंग
अबियाह की हुकूमत के दौरान भी जारी रही। 7 बाक़ी
जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और
जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-यहूदाह की
तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 8 जब वह मर कर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के
उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’
कहलाता है। फिर उस का बेटा आसा तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

9 आसा इस्राईल के बादशाह यरुबिआम के 20वें
साल में यहूदाह का बादशाह बन गया। 10 उस की
हुकूमत का दौरानिया 41 साल था, और उस का दार-
उल-हकूमत यरूशलम था। माँ का नाम माका था,
और वह अबीसलूम की बेटी थी। 11 अपने परदादा
दाऊद की तरह आसा भी वह कुछ करता रहा जो रब
को पसन्द था। 12 उस ने उन जिस्मफ़रोश मर्दों और
औरतों को निकाल दिया जो मन्दिरों में नाम-निहाद
ख़िदमत करते थे और उन तमाम बुतों को तबाह कर
दिया जो उस के बापदादा ने बनाए थे। 13 और गो उस
की माँ बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असर-
ओ-रसूख़ रखती थी, ताहम आसा ने यह उह्दा ख़त्म
कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का घिनौना खम्बा
बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवा कर वादी-ए-
क़िद्रोन में जला दिया। 14 अफ़सोस कि उस ने ऊँची
जगहों के मन्दिरों को दूर न किया। तो भी आसा जीते
जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा। 15 सोना-चाँदी
और बाक़ी जितनी चीज़ें उस के बाप और उस ने रब
के लिए मख़्सूस की थीं उन सब को वह रब के घर
में लाया।

16 यहूदाह के बादशाह आसा और इस्राईल के
बादशाह बाशा के दरमियान ज़िन्दगी भर जंग जारी
रही। 17 एक दिन बाशा बादशाह ने यहूदाह पर हम्ला
करके रामा शहर की क़िलाबन्दी की। मक़्सद यह
था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में दाख़िल हो सके,
न कोई वहाँ से निकल सके। 18 जवाब में आसा ने
शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफ़द भेजा।
बिन-हदद का बाप ताबरिम्मोन बिन हज़्यून था, और
उस का दार-उल-हकूमत दमिश्क़ था। आसा ने रब
के घर और शाही महल के ख़ज़ानों का तमाम बचा
हुआ सोना और चाँदी वफ़द के सपुर्द करके दमिश्क़
के बादशाह को पैग़ाम भेजा, 19 “मेरा आप के साथ
अह्द है जिस तरह मेरे बाप का आप के बाप के साथ
अह्द था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह
तुह्फ़ा क़बूल करके इस्राईल के बादशाह बाशा के
साथ अपना अह्द मन्सूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क
से निकल जाए।”

20 बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उस ने अपने फ़ौजी
अफ़सरों को इस्राईल के शहरों पर हम्ला करने के लिए
भेज दिया तो उन्हों ने ऐय्यून, दान, अबील-बैत-माका,

तमाम किन्नरत और नफ़्ताली पर क़ब्ज़ा कर लिया।
21 जब बाशा को इस की ख़बर मिली तो वह रामा की
क़िलाबन्दी करने से बाज़ आया और तिर्ज़ा वापस
चला गया।
22 फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों
की भर्ती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन
तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठा कर ले जाएँ
जिन से बाशा बादशाह रामा की क़िलाबन्दी करना
चाहता था। तमाम मर्दों को वहाँ जाना पड़ा, एक को
भी छुट्टी न मिली। इस सामान से आसा ने बिनयमीन
के शहर जिबा और मिस्फ़ाह की क़िलाबन्दी की।
23 बाक़ी जो कुछ आसा की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-यहूदाह
की तारीख़' की किताब में दर्ज है। उस में उस की
कामयाबियों और उस के तामीर किए गए शहरों का
ज़िक्र है। बुढ़ापे में उस के पाँओ को बीमारी लग
गई। 24 जब वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।
फिर उस का बेटा यहूसफ़त उस की जगह तख़्तनशीन
हुआ।

इस्राईल का बादशाह नदब

25 नदब बिन यरुबिआम यहूदाह के बादशाह आसा
की हुकूमत के दूसरे साल में इस्राईल का बादशाह
बना। उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था।
26 उस का तर्ज़-ए-ज़िन्दगी रब को पसन्द नहीं था,
क्यूँकि वह अपने बाप के नमूने पर चलता रहा। जो
बदी यरुबिआम ने इस्राईल को करने पर उकसाया
था उस से नदब भी दूर न हुआ।
27–28 एक दिन जब नदब इस्राईली फ़ौज के साथ
फ़िलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा किए हुए था
तो इश्कार के क़बीले के बाशा बिन अख़ियाह ने
उस के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे मार डाला और
ख़ुद इस्राईल का बादशाह बन गया। यह यहूदाह के
बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में हुआ।
29 तख़्त पर बैठते ही बाशा ने यरुबिआम के पूरे
ख़ानदान को मरवा दिया। उस ने एक को भी ज़िन्दा
न छोड़ा। यूँ वह बात पूरी हुई जो रब ने सैला के रहने
वाले अपने ख़ादिम अख़ियाह की मारिफ़त फ़रमाई
थी। 30 क्यूँकि जो गुनाह यरुबिआम ने किए और
इस्राईल को करने पर उकसाया था उन से उस ने
रब इस्राईल के ख़ुदा को तैश दिलाया था।
31 बाक़ी जो कुछ नदब की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-इस्राईल
की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

इस्राईल का बादशाह बाशा

32–33 बाशा बिन अख़ियाह यहूदाह के बादशाह
आसा की हुकूमत के तीसरे साल में इस्राईल का
बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 24
साल था, और उस का दार-उल-हकूमत तिर्ज़ा रहा।
उस के और यहूदाह के बादशाह आसा के दरमियान
ज़िन्दगी भर जंग जारी रही। 34 लेकिन वह भी ऐसा
काम करता था जो रब को नापसन्द था, क्यूँकि उस
ने यरुबिआम के नमूने पर चल कर वह गुनाह जारी
रखे जो करने पर यरुबिआम ने इस्राईल को उकसाया
था।

16 1 एक दिन रब ने याहू बिन हनानी को बाशा
के पास भेज कर फ़रमाया, 2 "पहले तू कुछ
नहीं था, लेकिन मैं ने तुझे ख़ाक में से उठा कर
अपनी क़ौम इस्राईल का हुक्मरान बना दिया। तो
भी तू ने यरुबिआम के नमूने पर चल कर मेरी क़ौम
इस्राईल को गुनाह करने पर उकसाया और मुझे तैश
दिलाया है। 3 इस लिए मैं तेरे घराने के साथ वही कुछ
करूँगा जो यरुबिआम बिन नबात के घराने के साथ
किया था। बाशा की पूरी नस्ल हलाक हो जाएगी।
4 ख़ानदान के जो अफ़राद शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते
खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिन्दे
चट कर जाएंगे।"
5 बाक़ी जो कुछ बाशा की हुकूमत के दौरान हुआ,
जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे

हासिल हुई वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की
किताब में दर्ज हैं। 6 जब वह मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे तिर्ज़ा में दफ़न किया गया। फिर
उस का बेटा ऐला तख़्तनशीन हुआ। 7 रब की सज़ा
का जो पैग़ाम हनानी के बेटे याहू नबी ने बाशा और
उस के ख़ानदान को सुनाया उस की दो वुजूहात थीं।
पहले, बाशा ने यरुबिआम के ख़ानदान की तरह वह
कुछ किया जो रब को नापसन्द था और उसे तैश
दिलाया। दूसरे, उस ने यरुबिआम के पूरे ख़ानदान
को हलाक कर दिया था।

इस्राईल का बादशाह ऐला

8 ऐला बिन बाशा यहूदाह के बादशाह आसा की
हुकूमत के 26वें साल में इस्राईल का बादशाह बना।
उस की हुकूमत के दो साल के दौरान उस का दार-
उल-हकूमत तिर्ज़ा रहा। 9 ऐला का एक अफ़सर बनाम
ज़िम्री था। ज़िम्री रथों के आधे हिस्से पर मुक़र्रर था।
अब वह बादशाह के ख़िलाफ़ साज़िशें करने लगा।
एक दिन ऐला तिर्ज़ा में महल के इंचार्ज अर्ज़ा के घर
में बैठा मै पी रहा था। जब नशे में धुत हुआ 10 तो
ज़िम्री ने अन्दर जा कर उसे मार डाला। फिर वह ख़ुद
तख़्त पर बैठ गया। यह यहूदाह के बादशाह आसा
की हुकूमत के 27वें साल में हुआ।

11 तख़्त पर बैठते ही ज़िम्री ने बाशा के पूरे ख़ानदान
को हलाक कर दिया। उस ने किसी भी मर्द को ज़िन्दा
न छोड़ा, ख़्वाह वह दूर का रिश्तेदार था, ख़्वाह
दोस्त। 12 यूँ वही कुछ हुआ जो रब ने याहू नबी की
मारिफ़त बाशा को फ़रमाया था। 13 क्यूँकि बाशा और
उस के बेटे ऐला से संगीन गुनाह सरज़द हुए थे, और
साथ साथ उन्हों ने इस्राईल को भी यह करने पर
उकसाया था। अपने बातिल देवताओं से उन्हों ने
रब इस्राईल के ख़ुदा को तैश दिलाया था।

14 बाक़ी जो कुछ ऐला की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-इस्राईल
की तारीख़’ की किताब में दर्ज है।

इस्राईल का बादशाह ज़िम्री

15 ज़िम्री यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के
27वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। लेकिन
तिर्ज़ा में उस की हुकूमत सिर्फ़ सात दिन तक
क़ाइम रही। उस वक़्त इस्राईली फ़ौज फ़िलिस्ती
शहर जिब्बतून का मुहासरा कर रही थी। 16 जब
फ़ौज में ख़बर फैल गई कि ज़िम्री ने बादशाह के
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे क़त्ल किया है तो तमाम
इस्राईलियों ने लश्करगाह में आ कर उसी दिन अपने
कमाँडर उम्री को बादशाह बना दिया। 17 तब उम्री
तमाम फ़ौजियों के साथ जिब्बतून को छोड़ कर तिर्ज़ा
का मुहासरा करने लगा। 18 जब ज़िम्री को पता चला
कि शहर दूसरों के क़ब्ज़े में आ गया है तो उस ने
महल के बुर्ज में जा कर उसे आग लगाई। यूँ वह
जल कर मर गया।

19 इस तरह उसे भी मुनासिब सज़ा मिल गई, क्यूँकि
उस ने भी वह कुछ किया था जो रब को नापसन्द था।
यरुबिआम के नमूने पर चल कर उस ने वह तमाम
गुनाह किए जो यरुबिआम ने किए और इस्राईल को
करने पर उकसाया था। 20 जो कुछ ज़िम्री की हुकूमत
के दौरान हुआ और जो साज़िशें उस ने कीं वह
‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज
हैं।

इस्राईल का बादशाह उम्री

21 ज़िम्री की मौत के बाद इस्राईली दो फ़िर्क़ों में
बट गए। एक फ़िर्क़ा तिब्नी बिन जीनत को बादशाह
बनाना चाहता था, दूसरा उम्री को। 22 लेकिन उम्री का
फ़िर्क़ा तिब्नी के फ़िर्क़े की निस्बत ज़्यादा ताक़तवर
निकला। चुनाँचे तिब्नी मर गया और उम्री पूरी क़ौम
पर बादशाह बन गया।

23 उम्री यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के
31वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। उस की
हुकूमत का दौरानिया 12 साल था। पहले छः साल
दार-उल-हकूमत तिर्ज़ा रहा। 24 इस के बाद उस ने

एक आदमी बनाम समर को चाँदी के 6,000 सिक्के दे कर उस से सामरिया पहाड़ी ख़रीद ली और वहाँ अपना नया दार-उल-हकूमत तामीर किया। पहले मालिक समर की याद में उस ने शहर का नाम सामरिया रखा।

25 लेकिन उम्री ने भी वही कुछ किया जो रब को नापसन्द था, बल्कि उस ने माज़ी के बादशाहों की निस्बत ज़्यादा बदी की। 26 उस ने यरुबिआम बिन नबात के नमूने पर चल कर वह तमाम गुनाह किए जो यरुबिआम ने किए और इस्राईल को करने पर उकसाया था। नतीजे में इस्राईली रब अपने ख़ुदा को अपने बातिल देवताओं से तैश दिलाते रहे। 27 बाक़ी जो कुछ उम्री की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब में बयान की गई हैं। 28 जब उम्री मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा अख़ियब तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह अख़ियब

29 अख़ियब बन उम्री यहूदाह के बादशाह आसा के 38वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 22 साल था, और उस का दार-उल-हकूमत सामरिया रहा। 30 अख़ियब ने भी ऐसे काम किए जो रब को नापसन्द थे, बल्कि माज़ी के बादशाहों की निस्बत उस के गुनाह ज़्यादा संगीन थे। 31 यरुबिआम के नमूने पर चलना उस के लिए काफ़ी नहीं था बल्कि उस ने इस से बढ़ कर सैदा के बादशाह इत्बा□ल की बेटी ईज़बिल से शादी भी की। नतीजे में वह उस के देवता बाल के सामने झुक कर उस की पूजा करने लगा। 32 सामरिया में उस ने बाल का मन्दिर तामीर किया और देवता के लिए क़ुर्बानगाह बना कर उस में रख दिया। 33 अख़ियब ने यसीरत देवी का बुत भी बनवा दिया। यूँ उस ने अपने घिनौने कामों से माज़ी के तमाम इस्राईली बादशाहों की निस्बत कहीं ज़्यादा रब इस्राईल के ख़ुदा को तैश दिलाया।

34 अख़ियब की हुकूमत के दौरान बैत-एल के रहने वाले हीएल ने यरीहू शहर को नए सिरे से तामीर किया। जब उस की बुन्याद रखी गई तो उस का सब से बड़ा बेटा अबीराम मर गया, और जब उस ने शहर के दरवाज़े लगा दिए तो उस के सब से छोटे बेटे सजूब को अपनी जान देनी पड़ी। यूँ रब की वह बात पूरी हुई जो उस ने यशूअ बिन नून की मारिफ़त फ़रमाई थी।

कव्वे इल्यास नबी को खाना खिलाते हैं

17 1 एक दिन इल्यास नबी ने जो जिलिआद के शहर तिश्बी का था अख़ियब बादशाह से कहा, “रब इस्राईल के ख़ुदा की क़सम जिस की ख़िदमत मैं करता हूँ, आने वाले सालों में न ओस, न बारिश पड़ेगी जब तक मैं न कहूँ।”

2 फिर रब ने इल्यास से कहा, 3 “यहाँ से चला जा! मशरिक़ की तरफ़ सफ़र करके वादी-ए-करीत में छुप जा जिस की नदी दरया-ए-यर्दन में बहती है। 4 पानी तू नदी से पी सकता है, और मैं ने कव्वों को तुझे वहाँ खाना खिलाने का हुक्म दिया है।” 5 इल्यास रब की सुन कर रवाना हुआ और वादी-ए-करीत में रहने लगा जिस की नदी दरया-ए-यर्दन में बहती है। 6 सुब्ह-ओ-शाम कव्वे उसे रोटी और गोश्त पहुँचाते रहे, और पानी वह नदी से पीता था।

इल्यास सारपत की बेवा के पास

7 इस पूरे अर्से में बारिश न हुई, इस लिए नदी आहिस्ता आहिस्ता सूख गई। जब उस का पानी बिलकुल ख़त्म हो गया 8 तो रब दुबारा इल्यास से हमकलाम हुआ, 9 “यहाँ से रवाना हो कर सैदा के शहर सारपत में जा बस। मैं ने वहाँ की एक बेवा को तुझे खाना खिलाने का हुक्म दिया है।” 10 चुनाँचे इल्यास सारपत के लिए रवाना हुआ।

सफ़र करते करते वह शहर के दरवाज़े के पास पहुँच गया। वहाँ एक बेवा जलाने के लिए लकड़ियाँ चुन कर जमा कर रही थी। उसे बुला कर इल्यास ने कहा, “ज़रा किसी बर्तन में पानी भर कर मुझे थोड़ा सा पिलाएँ।”

11 वह अभी पानी लाने जा रही थी कि इल्यास ने उस के पीछे आवाज़ दे कर कहा, “मेरे लिए रोटी का टुकड़ा भी लाना!” 12 यह सुन कर बेवा रुक गई और बोली, “रब आप के ख़ुदा की क़सम, मेरे पास कुछ नहीं है। बस, एक बर्तन में मुट्ठी भर मैदा और दूसरे में थोड़ा सा तेल रह गया है। अब मैं जलाने के लिए चन्द एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ ताकि अपने और अपने बेटे के लिए आख़िरी खाना पकाऊँ। इस के बाद हमारी मौत यक़ीनी है।”

13 इल्यास ने उसे तसल्ली दी, “डरें मत! बेशक वह कुछ करें जो आप ने कहा है। लेकिन पहले मेरे लिए छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आएँ। फिर जो बाक़ी रह गया हो उस से अपने और अपने बेटे के लिए रोटी बनाएँ। 14 क्यूँकि रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘जब तक रब बारिश बरसने न दे तब तक मैदे और तेल के बर्तन ख़ाली नहीं होंगे’।”

15–16 औरत ने जा कर वैसा ही किया जैसा इल्यास ने उसे कहा था। वाक़ई मैदा और तेल कभी ख़त्म न हुआ। रोज़-ब-रोज़ इल्यास, बेवा और उस के बेटे के लिए खाना दस्तयाब रहा। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने इल्यास की मारिफ़त फ़रमाया था।

17 एक दिन बेवा का बेटा बीमार हो गया। उस की तबीअत बहुत ख़राब हुई, और होते होते उस की जान निकल गई। 18 तब बेवा इल्यास से शिकायत करने लगी, “मर्द-ए-ख़ुदा, मेरा आप के साथ क्या वास्ता? आप तो सिर्फ़ इस मक़सद से यहाँ आए हैं कि रब को मेरे गुनाह की याद दिला कर मेरे बेटे को मार डालें!”

19 इल्यास ने जवाब में कहा, “अपने बेटे को मुझे दे दें।” वह लड़के को औरत की गोद में से उठा कर छत पर अपने कमरे में ले गया और वहाँ उसे चारपाई पर रख कर 20 दुआ करने लगा, “ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू ने इस बेवा को जिस का मेहमान मैं हूँ ऐसी मुसीबत में क्यूँ डाल दिया है? तू ने उस के बेटे को मरने क्यूँ दिया?” 21 वह तीन बार लाश पर दराज़ हुआ और साथ साथ रब से इल्तिमास करता रहा, “ऐ रब मेरे ख़ुदा, बराह-ए-करम बच्चे की जान को उस में वापस आने दे!”

22 रब ने इल्यास की सुनी, और लड़के की जान उस में वापस आई। 23 इल्यास उसे उठा कर नीचे ले आया और उसे उस की माँ को वापस दे कर बोला, “देखें, आप का बेटा ज़िन्दा है!” 24 औरत ने जवाब दिया, “अब मैं ने जान लिया है कि आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं और कि जो कुछ आप रब की तरफ़ से बोलते हैं वह सच है।”

इल्यास इस्राईल वापस जाता है

18 1 बहुत दिन गुज़र गए। फिर काल के तीसरे साल में रब इल्यास से हमकलाम हुआ, “अब जा कर अपने आप को अख़ियब के सामने पेश कर। मैं बारिश का सिलसिला दुबारा शुरू कर दूँगा।”

2 चुनाँचे इल्यास अख़ियब से मिलने के लिए इस्राईल चला गया। उस वक़्त सामरिया काल की सख़्त गिरिफ़्त में था, 3 इस लिए अख़ियब ने महल के इंचार्ज अबदियाह को बुलाया। (अबदियाह रब का ख़ौफ़ मानता था। 4 जब ईज़बिल ने रब के तमाम नबियों को क़त्ल करने की कोशिश की थी तो अबदियाह ने 100 नबियों को दो ग़ारों में छुपा दिया था। हर ग़ार में 50 नबी रहते थे, और अबदियाह उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहता था।) 5 अब अख़ियब ने अबदियाह को हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़र कर तमाम चश्मों और वादियों का मुआइना करें। शायद कहीं कुछ घास मिल जाए जो हम अपने घोड़ों और ख़च्चरों को खिला कर उन्हें बचा सकें। ऐसा न हो कि हमें खाने की क़िल्लत के बाइस कुछ जानवरों को ज़बह करना पड़े।”

6 उन्हों ने मुक़र्रर किया कि अख़ियब कहाँ जाएगा
और अबदियाह कहाँ, फिर दोनों एक दूसरे से अलग
हो गए। 7 चलते चलते अबदियाह को अचानक
इल्यास उस की तरफ़ आते हुए नज़र आया। जब
अबदियाह ने उसे पहचाना तो वह मुँह के बल झुक
कर बोला, “मेरे आक़ा इल्यास, क्या आप ही हैं?”
8 इल्यास ने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ। जाएँ, अपने
मालिक को इत्तिला दें कि इल्यास आ गया है।”
9 अबदियाह ने एतिराज़ किया, “मुझ से क्या ग़लती
हुई है कि आप मुझे अख़ियब से मरवाना चाहते हैं?
10 रब आप के ख़ुदा की क़सम, बादशाह ने अपने
बन्दों को हर क़ौम और मुल्क में भेज दिया है ताकि
आप को ढूँड निकालें। और जहाँ जवाब मिला कि
इल्यास यहाँ नहीं है वहाँ लोगों को क़सम खानी पड़ी
कि हम इल्यास का खोज लगाने में नाकाम रहे हैं।
11 और अब आप चाहते हैं कि मैं बादशाह के पास जा
कर उसे बताऊँ कि इल्यास यहाँ है? 12 ऐन मुमकिन
है कि जब मैं आप को छोड़ कर चला जाऊँ तो रब
का रूह आप को उठा कर किसी नामालूम जगह
ले जाए। अगर बादशाह मेरी यह इत्तिला सुन कर
यहाँ आए और आप को न पाए तो मुझे मार डालेगा।
याद रहे कि मैं जवानी से ले कर आज तक रब का
ख़ौफ़ मानता आया हूँ। 13 क्या मेरे आक़ा तक यह
ख़बर नहीं पहुँची कि जब ईज़बिल रब के नबियों को
क़त्ल कर रही थी तो मैं ने क्या किया? मैं दो ग़ारों
में पचास पचास नबियों को छुपा कर उन्हें खाने-
पीने की चीज़ें पहुँचाता रहा। 14 और अब आप चाहते
हैं कि मैं अख़ियब के पास जा कर उसे इत्तिला दूँ
कि इल्यास यहाँ आ गया है? वह मुझे ज़रूर मार
डालेगा।”
15 इल्यास ने कहा, “रब्ब-उल-अफ़्वाज की हयात
की क़सम जिस की ख़िदमत मैं करता हूँ, आज मैं
अपने आप को ज़रूर बादशाह को पेश करूँगा।”
16 तब अबदियाह चला गया और बादशाह को
इल्यास की ख़बर पहुँचाई। यह सुन कर अख़ियब
इल्यास से मिलने के लिए आया।

क्या बाल हक़ीक़ी माबूद है या रब?

17 इल्यास को देखते ही अख़ियब बोला, “ऐ
इस्राईल को मुसीबत में डालने वाले, क्या आप
वापस आ गए हैं?” 18 इल्यास ने एतिराज़ किया, “मैं
तो इस्राईल के लिए मुसीबत का बाइस नहीं बना
बल्कि आप और आप के बाप का घराना। आप रब
के अह्काम छोड़ कर बाल के बुतों के पीछे लग गए
हैं। 19 अब मैं आप को चैलेंज देता हूँ, तमाम इस्राईल
को बुला कर कर्मिल पहाड़ पर जमा करें। साथ साथ
बाल देवता के 450 नबियों को और ईज़बिल की मेज़
पर शरीक होने वाले यसीरत देवी के 400 नबियों को
भी बुलाएँ।”
20 अख़ियब मान गया। उस ने तमाम इस्राईलियों
और नबियों को बुलाया। जब वह कर्मिल पहाड़ पर
जमा हो गए 21 तो इल्यास उन के सामने जा खड़ा
हुआ और कहा, “आप कब तक कभी इस तरफ़,
कभी उस तरफ़ लंगड़ाते रहेंगे? [e]अगर रब ख़ुदा है तो
सिर्फ़ उसी की पैरवी करें, लेकिन अगर बाल वाहिद
ख़ुदा है तो उसी के पीछे लग जाएँ।”
लोग ख़ामोश रहे। 22 इल्यास ने बात जारी रखी,
“रब के नबियों में से सिर्फ़ मैं ही बाक़ी रह गया
हूँ। दूसरी तरफ़ बाल देवता के यह 450 नबी खड़े
हैं। 23 अब दो बैल ले आएँ। बाल के नबी एक को
पसन्द करें और फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके अपनी
क़ुर्बानगाह की लकड़ियों पर रख दें। लेकिन वह
लकड़ियों को आग न लगाएँ। मैं दूसरे बैल को तय्यार
करके अपनी क़ुर्बानगाह की लकड़ियों पर रख दूँगा।
लेकिन मैं भी उन्हें आग नहीं लगाऊँगा। 24 फिर आप
अपने देवता का नाम पुकारें जबकि मैं रब का नाम
पुकारूँगा। जो माबूद क़ुर्बानी को जला कर जवाब

---

[e]देखिए आयत 26।

देगा वही ख़ुदा है।” तमाम लोग बोले, “आप ठीक कहते हैं।”

25 फिर इल्यास ने बाल के नबियों से कहा, “शुरू
करें, क्यूँकि आप बहुत हैं। एक बैल को चुन कर
उसे तय्यार करें। लेकिन उसे आग मत लगाना बल्कि
अपने देवता का नाम पुकारें ताकि वह आग भेज दे।”
26 उन्हों ने बैलों में से एक को चुन कर उसे तय्यार
किया, फिर बाल का नाम पुकारने लगे। सुब्ह से ले
कर दोपहर तक वह मुसलसल चीख़ते चिल्लाते रहे,
“ऐ बाल, हमारी सुन!” साथ साथ वह उस क़ुर्बानगाह
के इर्दगिर्द नाचते रहे [f]जो उन्हों ने बनाई थी। लेकिन
न कोई आवाज़ सुनाई दी, न किसी ने जवाब दिया।
27 दोपहर के वक़्त इल्यास उन का मज़ाक़ उड़ाने
लगा, “ज़्यादा ऊँची आवाज़ से बोलें! शायद वह
सोचों में ग़र्क़ हो या अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए
एक तरफ़ गया हो। यह भी हो सकता है कि वह कहीं
सफ़र कर रहा हो। या शायद वह गहरी नींद सो गया
हो और उसे जगाने की ज़रूरत है।”
28 तब वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से चीख़ने-चिल्लाने
लगे। मामूल के मुताबिक़ वह छुरियों और नेज़ों से
अपने आप को ज़ख़्मी करने लगे, यहाँ तक कि ख़ून
बहने लगा। 29 दोपहर गुज़र गई, और वह शाम के
उस वक़्त तक वज्द में रहे जब ग़ल्ला की नज़र पेश
की जाती है। लेकिन कोई आवाज़ न सुनाई दी। न
किसी ने जवाब दिया, न उन के तमाशे पर तवज्जुह
दी।
30 फिर इल्यास इस्राईलियों से मुख़ातिब हुआ,
“आएँ, सब यहाँ मेरे पास आएँ!” सब क़रीब आए।
वहाँ रब की एक क़ुर्बानगाह थी जो गिराई गई थी।
अब इल्यास ने वह दुबारा खड़ी की। 31 उस ने याक़ूब
से निकले हर क़बीले के लिए एक एक पत्थर चुन
लिया। (बाद में रब ने याक़ूब का नाम इस्राईल रखा
था)। 32 इन बारह पत्थरों को ले कर इल्यास ने रब
के नाम की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई। इस के
इर्दगिर्द उस ने इतना चौड़ा गढ़ा खोदा कि उस में
तक़रीबन 15 लिटर पानी समा सकता था। 33 फिर
उस ने क़ुर्बानगाह पर लकड़ियों का ढेर लगाया और
बैल को टुकड़े टुकड़े करके लकड़ियों पर रख दिया।
इस के बाद उस ने हुक्म दिया, “चार घड़े पानी से भर
कर क़ुर्बानी और लकड़ियों पर उंडेल दें!” 34 जब
उन्हों ने ऐसा किया तो उस ने दुबारा ऐसा करने का
हुक्म दिया, फिर तीसरी बार। 35 आख़िरकार इतना
पानी था कि उस ने चारों तरफ़ क़ुर्बानगाह से टपक
कर गढ़े को भर दिया।
36 शाम के वक़्त जब ग़ल्ला की नज़र पेश की जाती
है इल्यास ने क़ुर्बानगाह के पास जा कर बुलन्द
आवाज़ से दुआ की, “ऐ रब, ऐ इब्राहीम, इस्हाक़
और इस्राईल के ख़ुदा, आज लोगों पर ज़ाहिर कर
कि इस्राईल में तू ही ख़ुदा है और कि मैं तेरा ख़ादिम
हूँ। साबित कर कि मैं ने यह सब कुछ तेरे हुक्म के
मुताबिक़ किया है। 37 ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मेरी सुन
ताकि यह लोग जान लें कि तू, ऐ रब, ख़ुदा है और
कि तू ही उन के दिलों को दुबारा अपनी तरफ़ माइल
कर रहा है।”
38 अचानक आसमान से रब की आग नाज़िल हुई।
आग ने न सिर्फ़ क़ुर्बानी और लकड़ी को भस्म कर
दिया बल्कि क़ुर्बानगाह के पत्थरों और उस के नीचे
की मिट्टी को भी। गढ़े में पानी भी एक दम सूख गया।
39 यह देख कर इस्राईली औंधे मुँह गिर कर पुकारने
लगे, “रब ही ख़ुदा है! रब ही ख़ुदा है!” 40 फिर
इल्यास ने उन्हें हुक्म दिया, “बाल के नबियों को
पकड़ लें। एक भी बचने न पाए!” लोगों ने उन्हें पकड़
लिया तो इल्यास उन्हें नीचे वादी-ए-क़ैसोन में ले गया
और वहाँ सब को मौत के घाट उतार दिया।

बारिश होती है

41 फिर इल्यास ने अख़ियब से कहा, “अब जा कर
कुछ खाएँ और पिएँ, क्यूँकि मूसलाधार बारिश का

[f]लफ़्ज़ी तर्जुमा : लंगड़ाते हुए नाचते रहे। ग़ालिबन बाल की ताज़ीम में एक ख़ास क़िस्म का रक़्स। लिहाज़ा आयत 21 में इल्यास का सवाल, “आप कब तक . . . लंगड़ाते रहेंगे?”

शोर सुनाई दे रहा है।” 42 चुनाँचे अख़ियब खाने-पीने
के लिए चला गया जबकि इल्यास कर्मिल पहाड़ की
चोटी पर चढ़ गया। वहाँ उस ने झुक कर अपने सर
को दोनों घुटनों के बीच में छुपा लिया। 43 अपने
नौकर को उस ने हुक्म दिया, “जाओ, समुन्दर की
तरफ़ देखो।”

नौकर गया और समुन्दर की तरफ़ देखा, फिर
वापस आ कर इल्यास को इत्तिला दी, “कुछ भी नज़र
नहीं आता।” लेकिन इल्यास ने उसे दुबारा देखने
के लिए भेज दिया। इस दफ़ा भी कुछ मालूम न हो
सका। सात बार इल्यास ने नौकर को देखने के लिए
भेजा। 44 आख़िरकार जब नौकर सातवीं दफ़ा गया
तो उस ने वापस आ कर इत्तिला दी, “एक छोटा सा
बादल समुन्दर में से निकल कर ऊपर चढ़ रहा है।
वह आदमी के हाथ के बराबर है।”

तब इल्यास ने हुक्म दिया, “जाओ, अख़ियब
को इत्तिला दो, ‘घोड़ों को फ़ौरन रथ में जोत कर
घर चले जाएँ, वर्ना बारिश आप को रोक लेगी’।”
45 नौकर इत्तिला देने चला गया तो जल्द ही आँधी
आई, आसमान पर काले काले बादल छा गए और
मूसलाधार बारिश बरसने लगी। अख़ियब जल्दी से
रथ पर सवार हो कर यज़्रएल के लिए रवाना हो
गया। 46 उस वक़्त रब ने इल्यास को ख़ास ताक़त
दी। सफ़र के लिए कमरबस्ता हो कर वह अख़ियब
के रथ के आगे आगे दौड़ कर उस से पहले यज़्रएल
पहुँच गया।

इल्यास भाग जाता है

19 1 अख़ियब ने ईज़बिल को सब कुछ सुनाया
जो इल्यास ने कहा था, यह भी कि उस ने
बाल के नबियों को किस तरह तलवार से मार दिया
था। 2 तब ईज़बिल ने क़ासिद को इल्यास के पास
भेज कर उसे इत्तिला दी, “देवता मुझे सख़्त सज़ा दें
अगर मैं कल इस वक़्त तक आप को उन नबियों की
सी सज़ा न दूँ।”

3 इल्यास सख़्त डर गया और अपनी जान बचाने
के लिए भाग गया। चलते चलते वह यहूदाह के शहर
बैर-सबा तक पहुँच गया। वहाँ वह अपने नौकर को
छोड़ कर 4 आगे रेगिस्तान में जा निकला। एक दिन
के सफ़र के बाद वह सींक की झाड़ी के पास पहुँच
गया और उस के साय में बैठ कर दुआ करने लगा,
“ऐ रब, मुझे मरने दे। बस अब काफ़ी है। मेरी जान
ले ले, क्यूँकि मैं अपने बापदादा से बेहतर नहीं हूँ।”
5 फिर वह झाड़ी के साय में लेट कर सो गया।

अचानक एक फ़रिश्ते ने उसे छू कर कहा, “उठ,
खाना खा ले!” 6 जब उस ने अपनी आँखें खोलीं तो
देखा कि सिरहाने के क़रीब कोएलों पर बनाई गई
रोटी और पानी की सुराही पड़ी है। उस ने रोटी खाई,
पानी पिया और दुबारा सो गया। 7 लेकिन रब का
फ़रिश्ता एक बार फिर आया और उसे हाथ लगा
कर कहा, “उठ, खाना खा ले, वर्ना आगे का लम्बा
सफ़र तेरे बस की बात नहीं होगी।”

8 तब इल्यास ने उठ कर दुबारा खाना खाया और
पानी पिया। इस ख़ुराक ने उसे इतनी तक़वियत दी
कि वह चालीस दिन और चालीस रात सफ़र करते
करते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच
गया। 9 वहाँ वह रात गुज़ारने के लिए एक ग़ार में
चला गया।

रब इल्यास की हौसलाअफ़ज़ाई करता है

ग़ार में रब उस से हमकलाम हुआ। उस ने पूछा,
“इल्यास, तू यहाँ क्या कर रहा है?” 10 इल्यास
ने जवाब दिया, “मैं ने रब, आसमानी लश्करों के
ख़ुदा की ख़िदमत करने की सिरतोड़ कोशिश की है,
क्यूँकि इस्राईलियों ने तेरे अह्द को तर्क कर दिया है।
उन्हों ने तेरी क़ुर्बानगाहों को गिरा कर तेरे नबियों को
तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा
हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।”

11 जवाब में रब ने फ़रमाया, “ग़ार से निकल कर
पहाड़ पर रब के सामने खड़ा हो जा!” फिर रब वहाँ
से गुज़रा। उस के आगे आगे बड़ी और ज़बरदस्त

आँधी आई जिस ने पहाड़ों को चीर कर चटानों को
टुकड़े टुकड़े कर दिया। लेकिन रब आँधी में नहीं था।
12 इस के बाद ज़ल्ज़ला आया, लेकिन रब ज़ल्ज़ले में
नहीं था। 13 ज़ल्ज़ले के बाद भड़कती हुई आग वहाँ
से गुज़री, लेकिन रब आग में भी नहीं था। फिर नर्म
हवा की धीमी धीमी आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़
सुन कर इल्यास ने अपने चिहरे को चादर से ढाँप
लिया और निकल कर ग़ार के मुँह पर खड़ा हो गया।
एक आवाज़ उस से मुख़ातिब हुई, “इल्यास, तू यहाँ
क्या कर रहा है?” 14 इल्यास ने जवाब दिया, “मैं ने
रब, आसमानी लश्करों के ख़ुदा की ख़िदमत करने
की सिरतोड़ कोशिश की है, क्यूँकि इस्राईलियों ने तेरे
अह्द को तर्क कर दिया है। उन्हों ने तेरी क़ुर्बानगाहों
को गिरा कर तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर
दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार
डालने के दरपै हैं।”

15 रब ने जवाब में कहा, “रेगिस्तान में उस रास्ते से
हो कर वापस जा जिस ने तुझे यहाँ पहुँचाया है। फिर
दमिश्क़ चला जा। वहाँ हज़ाएल को तेल से मसह
करके शाम का बादशाह क़रार दे। 16 इसी तरह याहू
बिन निम्सी को मसह करके इस्राईल का बादशाह
क़रार दे और अबील-महूला के रहने वाले इलीशा
बिन साफ़त को मसह करके अपना जानशीन मुक़र्रर
कर। 17 जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा उसे
याहू मार देगा, और जो याहू की तलवार से बच
जाएगा उसे इलीशा मार देगा। 18 लेकिन मैं ने अपने
लिए इस्राईल में 7,000 अफ़राद को बचा लिया है,
उन तमाम लोगों को जो अब तक न बाल देवता के
सामने झुके, न उस के बुत को बोसा दिया है।”

इल्यास इलीशा को अपना जानशीन मुक़र्रर करता है

19 इल्यास वहाँ से चला गया। इस्राईल में वापस
आ कर उसे इलीशा बिन साफ़त मिला जो बैलों की
बारह जोड़ियों की मदद से हल चला रहा था। ख़ुद
वह बारहवीं जोड़ी के साथ चल रहा था। इल्यास ने
उस के पास आ कर अपनी चादर उस के कंधों पर
डाल दी और रुके बग़ैर आगे निकल गया।

20 इलीशा फ़ौरन अपने बैलों को छोड़ कर इल्यास
के पीछे भागा। उस ने कहा, “पहले मुझे अपने माँ-
बाप को बोसा दे कर ख़ैरबाद कहने दीजिए। फिर
मैं आप के पीछे हो लूँगा।” इल्यास ने जवाब दिया,
“चलें, वापस जाएँ। लेकिन वह कुछ याद रहे जो मैं
ने आप के साथ किया है।” 21 तब इलीशा वापस
चला गया। बैलों की एक जोड़ी को ले कर उस ने
दोनों को ज़बह किया। हल चलाने का सामान उस ने
गोश्त पकाने के लिए जला दिया। जब गोश्त तय्यार
था तो उस ने उसे लोगों में तक़्सीम करके उन्हें खिला
दिया। इस के बाद इलीशा इल्यास के पीछे हो कर
उस की ख़िदमत करने लगा।

शाम की फ़ौज सामरिया का मुहासरा करती है

20 1 एक दिन शाम के बादशाह बिन-हदद
ने अपनी पूरी फ़ौज को जमा किया। 32
इत्तिहादी बादशाह भी अपने रथों और घोड़ों को
ले कर आए। इस बड़ी फ़ौज के साथ बिन-हदद ने
सामरिया का मुहासरा करके इस्राईल से जंग का
एलान किया। 2 उस ने अपने क़ासिदों को शहर में
भेज कर इस्राईल के बादशाह अख़ियब को इत्तिला
दी, 3 “अब से आप का सोना, चाँदी, ख़वातीन और
बेटे मेरे ही हैं।” 4 इस्राईल के बादशाह ने जवाब दिया,
“मेरे आक़ा और बादशाह, आप की मर्ज़ी। मैं और जो
कुछ मेरा है आप की मिलकियत है।”

5 थोड़ी देर के बाद क़ासिद बिन-हदद की नई ख़बर
ले कर आए, “मैं ने आप से सोने, चाँदी, ख़वातीन
और बेटों का तक़ाज़ा किया है। 6 अब ग़ौर करें! कल
इस वक़्त मैं अपने मुलाज़िमों को आप के पास भेज
दूँगा, और वह आप के महल और आप के अफ़सरों
के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ भी आप को प्यारा
है उसे वह ले जाएंगे।”

7 तब अख़ियब बादशाह ने मुल्क के तमाम बुज़ुर्गों
को बुला कर उन से बात की, “देखें यह आदमी

कितना बुरा इरादा रखता है। जब उस ने मेरी ख़वातीन, बेटों, सोने और चाँदी का तक़ाज़ा किया तो मैं ने इन्कार न किया।” 8 बुज़ुर्गों और बाक़ी लोगों ने मिल कर मश्वरा दिया, “उस की न सुनें, और जो कुछ वह माँगता है उस पर राज़ी न हो जाएँ।” 9 चुनाँचे बादशाह ने क़ासिदों से कहा, “मेरे आक़ा बादशाह को जवाब देना, जो कुछ आप ने पहली मर्तबा माँग लिया वह मैं आप को देने के लिए तय्यार हूँ, लेकिन यह आख़िरी तक़ाज़ा मैं पूरा नहीं कर सकता।”

जब क़ासिदों ने बिन-हदद को यह ख़बर पहुँचाई 10 तो उस ने अख़ियब को फ़ौरन ख़बर भेज दी, “देवता मुझे सख़्त सज़ा दें अगर मैं सामरिया को नेस्त-ओ-नाबूद न कर दूँ। इतना भी नहीं रहेगा कि मेरा हर फ़ौजी मुट्ठी भर ख़ाक अपने साथ वापस ले जा सके!” 11 इस्राईल के बादशाह ने क़ासिदों को जवाब दिया, “उसे बता देना कि जो अभी जंग की तय्यारियाँ कर रहा है वह फ़त्ह के नारे न लगाए।”

12 जब बिन-हदद को यह इत्तिला मिली तो वह लश्करगाह में अपने इत्तिहादी बादशाहों के साथ मै पी रहा था। उस ने अपने अफ़सरों को हुक्म दिया, “हम्ला करने के लिए तय्यारियाँ करो!” चुनाँचे वह शहर पर हम्ला करने की तय्यारियाँ करने लगे।

शाम की फ़ौज से पहली जंग

13 इस दौरान एक नबी अख़ियब बादशाह के पास आया और कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या तुझे दुश्मन की यह बड़ी फ़ौज नज़र आ रही है? तो भी मैं इसे आज ही तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ’।”

14 अख़ियब ने सवाल किया, “रब यह किस के वसीले से करेगा?” नबी ने जवाब दिया, “रब फ़रमाता है कि ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान यह फ़त्ह पाएँगे।” बादशाह ने मज़ीद पूछा, “लड़ाई में कौन पहला क़दम उठाए?” नबी ने कहा, “तू ही।”

15 चुनाँचे अख़ियब ने ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवानों को बुलाया। 232 अफ़राद थे। फिर उस ने बाक़ी इस्राईलियों को जमा किया। 7,000 अफ़राद थे। 16–17 दोपहर को वह लड़ने के लिए निकले। ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान सब से आगे थे। बिन-हदद और 32 इत्तिहादी बादशाह लश्करगाह में बैठे नशे में धुत मै पी रहे थे कि अचानक शहर का जाइज़ा लेने के लिए बिन-हदद के भेजे गए सिपाही अन्दर आए और कहने लगे, “सामरिया से आदमी निकल रहे हैं।” 18 बिन-हदद ने हुक्म दिया, “हर सूरत में उन्हें ज़िन्दा पकड़ें, ख़्वाह वह अम्नपसन्द इरादा रखते हों या न।”

19 लेकिन उन्हें यह करने का मौक़ा न मिला, क्यूँकि इस्राईल के ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों और बाक़ी फ़ौजियों ने शहर से निकल कर 20 फ़ौरन उन पर हम्ला कर दिया। और जिस भी दुश्मन का मुक़ाबला हुआ उसे मारा गया। तब शाम की पूरी फ़ौज भाग गई। इस्राईलियों ने उन का ताक़्क़ुब किया, लेकिन शाम का बादशाह बिन-हदद घोड़े पर सवार हो कर चन्द एक घुड़सवारों के साथ बच निकला। 21 उस वक़्त इस्राईल का बादशाह जंग के लिए निकला और घोड़ों और रथों को तबाह करके अरामियों को ज़बरदस्त शिकस्त दी।

शाम की फ़ौज से दूसरी जंग

22 बाद में मज़कूरा नबी दुबारा इस्राईल के बादशाह के पास आया। वह बोला, “अब मज़बूत हो कर बड़े ध्यान से सोचें कि आने वाले दिनों में क्या क्या तय्यारियाँ करनी चाहिएँ, क्यूँकि अगले बहार के मौसम में शाम का बादशाह दुबारा आप पर हम्ला करेगा।”

23 शाम के बादशाह को भी मश्वरा दिया गया। उस के बड़े अफ़सरों ने ख़याल पेश किया, “इस्राईलियों के देवता पहाड़ी देवता हैं, इस लिए वह हम पर ग़ालिब आ गए हैं। लेकिन अगर हम मैदानी इलाक़े में उन से लड़ें तो हर सूरत में जीतेंगे। 24 लेकिन हमारा एक और मश्वरा भी है। 32 बादशाहों को हटा कर उन की जगह अपने अफ़सरों को मुक़र्रर करें। 25 फिर

एक नई फ़ौज तय्यार करें जो तबाहशुदा पुरानी फ़ौज जैसी ताक़तवर हो। उस के उतने ही रथ और घोड़े हों जितने पहले थे। फिर जब हम मैदानी इलाक़े में उन से लड़ेंगे तो उन पर ज़रूर ग़ालिब आएँगे।"

बादशाह उन की बात मान कर तय्यारियाँ करने लगा। 26 जब बहार का मौसम आया तो वह शाम के फ़ौजियों को जमा करके इस्राईल से लड़ने के लिए अफ़ीक़ शहर गया। 27 इस्राईली फ़ौज भी लड़ने के लिए जमा हुई। खाने-पीने की अश्या का बन्द-ओ-बस्त किया गया, और वह दुश्मन से लड़ने के लिए निकले। जब वहाँ पहुँचे तो उन्हों ने अपने ख़ैमों को दो जगहों पर लगाया। यह दो गुरोह शाम की वसी फ़ौज के मुक़ाबले में बकरियों के दो छोटे रेवड़ों जैसे लग रहे थे, क्यूँकि पूरा मैदान शाम के फ़ौजियों से भरा था।

28 फिर मर्द-ए-ख़ुदा ने अख़ियब के पास आ कर कहा, "रब फ़रमाता है, 'शाम के लोग ख़याल करते हैं कि रब पहाड़ी देवता है इस लिए मैदानी इलाक़े में नाकाम रहेगा। चुनाँचे मैं उन की ज़बरदस्त फ़ौज को तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ'।"

29 सात दिन तक दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबिल सफ़आरा रहीं। सातवें दिन लड़ाई का आग़ाज़ हुआ। इस्राईली इस मर्तबा भी शाम की फ़ौज पर ग़ालिब आए। उस दिन उन्हों ने उन के एक लाख पियादा फ़ौजियों को मार दिया। 30 बाक़ी फ़रार हो कर अफ़ीक़ शहर में घुस गए। तक़रीबन 27,000 आदमी थे। लेकिन अचानक शहर की फ़सील उन पर गिर गई, तो वह भी हलाक हो गए।

अख़ियब शाम के बादशाह पर रहम करता है

बिन-हदद बादशाह भी अफ़ीक़ में फ़रार हुआ था। अब वह कभी इस कमरे में, कभी उस में खिसक कर छुपने की कोशिश कर रहा था। 31 फिर उस के अफ़सरों ने उसे मश्वरा दिया, "सुना है कि इस्राईल के बादशाह नर्मदिल होते हैं। क्यूँ न हम टाट ओढ़ कर और अपनी गरदनों में रस्से डाल कर इस्राईल के बादशाह के पास जाएँ? शायद वह आप को ज़िन्दा छोड़ दे।"

32 चुनाँचे बिन-हदद के अफ़सर टाट ओढ़ कर और अपनी गरदनों में रस्से डाल कर इस्राईल के बादशाह के पास आए। उन्हों ने कहा, "आप का ख़ादिम बिन-हदद गुज़ारिश करता है कि मुझे ज़िन्दा छोड़ दें।" अख़ियब ने सवाल किया, "क्या वह अब तक ज़िन्दा है? वह तो मेरा भाई है!" 33 जब बिन-हदद के अफ़सरों ने जान लिया कि अख़ियब का रुज्हान किस तरफ़ है तो उन्हों ने जल्दी से इस की तस्दीक़ की, "जी, बिन-हदद आप का भाई है!" अख़ियब ने हुक्म दिया, "जा कर उसे बुला लाएँ।"

तब बिन-हदद निकल आया, और अख़ियब ने उसे अपने रथ पर सवार होने की दावत दी। 34 बिन-हदद ने अख़ियब से कहा, "मैं आप को वह तमाम शहर वापस कर देता हूँ जो मेरे बाप ने आप के बाप से छीन लिए थे। आप हमारे दार-उल-हकूमत दमिश्क़ में तिजारती मराकिज़ भी क़ाइम कर सकते हैं, जिस तरह मेरे बाप ने पहले सामरिया में किया था।" अख़ियब बोला, "ठीक है। इस के बदले में मैं आप को रिहा कर दूँगा।" उन्हों ने मुआहदा किया, फिर अख़ियब ने शाम के बादशाह को रिहा कर दिया।

नबी अख़ियब को मलामत करता है

35 उस वक़्त रब ने नबियों में से एक को हिदायत की, "जा कर अपने साथी को कह दे कि वह तुझे मारे।" नबी ने ऐसा किया, लेकिन साथी ने इन्कार किया। 36 फिर नबी बोला, "चूँकि आप ने रब की नहीं सुनी, इस लिए जूँ ही आप मुझ से चले जाएंगे शेरबबर आप को फाड़ डालेगा।" और ऐसा ही हुआ। जब साथी वहाँ से निकला तो शेरबबर ने उस पर हम्ला करके उसे फाड़ डाला।

37 नबी की मुलाक़ात किसी और से हुई तो उस ने उस से भी कहा, "मेहरबानी करके मुझे मारें!" उस आदमी ने नबी को मार मार कर ज़ख़्मी कर दिया।

38 तब नबी ने अपनी आँखों पर पट्टी बांधी ताकि उसे
पहचाना न जाए, फिर रास्ते के किनारे पर अख़ियब
बादशाह के इन्तिज़ार में खड़ा हो गया।
39 जब बादशाह वहाँ से गुज़रा तो नबी चिल्ला कर
उस से मुख़ातिब हुआ, “जनाब, मैं मैदान-ए-जंग में
लड़ रहा था कि अचानक किसी आदमी ने मेरे पास
आ कर अपने क़ैदी को मेरे हवाले कर दिया। उस ने
कहा, ‘इस की निगरानी करना। अगर यह किसी भी
वजह से भाग जाए तो आप को उस की जान के इवज़
अपनी जान देनी पड़ेगी या आप को एक मन चाँदी
अदा करनी पड़ेगी।’ 40 लेकिन मैं इधर उधर मसरूफ़
रहा, और इतने में क़ैदी ग़ाइब हो गया।” अख़ियब
बादशाह ने जवाब दिया, “आप ने ख़ुद अपने बारे
में फ़ैसला दिया है। अब आप को इस का नतीजा
भुगतना पड़ेगा।”
41 फिर नबी ने जल्दी से पट्टी को अपनी आँखों पर
से उतार दिया, और बादशाह ने पहचान लिया कि यह
नबियों में से एक है। 42 नबी ने कहा, “रब फ़रमाता
है, ‘मैं ने मुक़र्रर किया था कि बिन-हदद को मेरे लिए
मख़्सूस करके हलाक करना है, लेकिन तू ने उसे रिहा
कर दिया है। अब उस की जगह तू ही मरेगा, और उस
की क़ौम की जगह तेरी क़ौम को नुक़्सान पहुँचेगा’।”
43 इस्राईल का बादशाह बड़े ग़ुस्से और बदमिज़ाजी
के आलम में सामरिया में अपने महल में चला गया।

ईज़बिल के हाथों नबोत का क़त्ल

21 1 इस के बाद एक और क़ाबिल-ए-ज़िक्र
बात हुई। यज़्रएल में सामरिया के बादशाह
अख़ियब का एक महल था। महल की ज़मीन के साथ
साथ अंगूर का बाग़ था। मालिक का नाम नबोत था।
2 एक दिन अख़ियब ने नबोत से बात की, “अंगूर का
आप का बाग़ मेरे महल के क़रीब ही है। उसे मुझे
दे दें, क्यूँकि मैं उस में सब्ज़ियाँ लगाना चाहता हूँ।
मुआवज़े में मैं आप को उस से अच्छा अंगूर का बाग़
दे दूँगा। लेकिन अगर आप पैसे को तर्जीह दें तो आप
को उस की पूरी रक़म अदा कर दूँगा।”
3 लेकिन नबोत ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे कि
मैं आप को वह मौरूसी ज़मीन दूँ जो मेरे बापदादा ने
मेरे सपुर्द की है!”
4 अख़ियब बड़े ग़ुस्से में अपने घर वापस चला
गया। वह बेज़ार था कि नबोत अपने बापदादा की
मौरूसी ज़मीन बेचना नहीं चाहता। वह पलंग पर लेट
गया और अपना मुँह दीवार की तरफ़ करके खाना
खाने से इन्कार किया। 5 उस की बीवी ईज़बिल उस
के पास आई और पूछने लगी, “क्या बात है? आप
क्यूँ इतने बेज़ार हैं कि खाना भी नहीं खाना चाहते?”
6 अख़ियब ने जवाब दिया, “यज़्रएल का रहने वाला
नबोत मुझे अंगूर का बाग़ नहीं देना चाहता। गो मैं
उसे पैसे देना चाहता था बल्कि उसे इस की जगह
कोई और बाग़ देने के लिए तय्यार था तो भी वह
बज़िद रहा।”
7 ईज़बिल बोली, “क्या आप इस्राईल के बादशाह
हैं कि नहीं? अब उठें! खाएँ, पिएँ और अपना दिल
बहलाएँ। मैं ही आप को नबोत यज़्रएली का अंगूर का
बाग़ दिला दूँगी।” 8 उस ने अख़ियब के नाम से ख़ुतूत
लिख कर उन पर बादशाह की मुहर लगाई और उन्हें
नबोत के शहर के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा को भेज दिया।
9 ख़तों में ज़ैल की ख़बर लिखी थी,
“शहर में एलान करें कि एक दिन का रोज़ा रखा
जाए। जब लोग उस दिन जमा हो जाएंगे तो नबोत
को लोगों के सामने इज़्ज़त की कुर्सी पर बिठा दें।
10 लेकिन उस के मुक़ाबिल दो बदमआशों को बिठा
देना। इजतिमा के दौरान यह आदमी सब के सामने
नबोत पर इल्ज़ाम लगाएँ, ‘इस शख़्स ने अल्लाह और
बादशाह पर लानत भेजी है! हम इस के गवाह हैं।’
फिर उसे शहर से बाहर ले जा कर संगसार करें।”
11 यज़्रएल के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा ने ऐसा ही किया।
12 उन्हों ने रोज़े के दिन का एलान किया। जब लोग
मुक़र्ररा दिन जमा हुए तो नबोत को लोगों के सामने
इज़्ज़त की कुर्सी पर बिठा दिया गया। 13 फिर दो
बदमआश आए और उस के मुक़ाबिल बैठ गए।
इजतिमा के दौरान यह आदमी सब के सामने नबोत

पर इल्ज़ाम लगाने लगे, “इस शख़्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इस के गवाह हैं।” तब नबोत को शहर से बाहर ले जा कर संगसार कर दिया गया। 14 फिर शहर के बुज़ुर्गों ने ईज़बिल को इत्तिला दी, “नबोत मर गया है, उसे संगसार किया गया है।”

15 यह ख़बर मिलते ही ईज़बिल ने अख़ियब से बात की, “जाएँ, नबोत यज़्रएली के उस बाग़ पर क़ब्ज़ा करें जो वह आप को बेचने से इन्कार कर रहा था। अब वह आदमी ज़िन्दा नहीं रहा बल्कि मर गया है।”

16 यह सुन कर अख़ियब फ़ौरन नबोत के अंगूर के बाग़ पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ।

इल्यास अख़ियब को सज़ा सुनाता है

17 तब रब इल्यास तिश्बी से हमकलाम हुआ, 18 “इस्राईल के बादशाह अख़ियब से जो सामरिया में रहता है मिलने जा। इस वक़्त वह नबोत के अंगूर के बाग़ में है, क्यूँकि वह उस पर क़ब्ज़ा करने के लिए वहाँ पहुँचा है। 19 उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि तू ने एक आदमी को बिलावजह क़त्ल करके उस की मिलकियत पर क़ब्ज़ा कर लिया है। रब फ़रमाता है कि जहाँ कुत्तों ने नबोत का ख़ून चाटा है वहाँ वह तेरा ख़ून भी चाटेंगे’।”

20 जब इल्यास अख़ियब के पास पहुँचा तो बादशाह बोला, “मेरे दुश्मन, क्या आप ने मुझे ढूँड निकाला है?” इल्यास ने जवाब दिया, “जी, मैं ने आप को ढूँड निकाला है, क्यूँकि आप ने अपने आप को बदी के हाथ में बेच कर ऐसा काम किया है जो रब को नापसन्द है। 21 अब सुनें रब का फ़रमान, ‘मैं तुझे यूँ मुसीबत में डाल दूँगा कि तेरा नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा। मैं इस्राईल में से तेरे ख़ानदान के हर मर्द को मिटा दूँगा, ख़्वाह वह बालिग़ हो या बच्चा। 22 तू ने मुझे बड़ा तैश दिलाया और इस्राईल को गुनाह करने पर उकसाया है। इस लिए मेरा तेरे घराने के साथ वही सुलूक होगा जो मैं ने यरुबिआम बिन नबात और बाशा बिन अख़ियाह के साथ किया है।’ 23 ईज़बिल पर भी रब की सज़ा आएगी। रब फ़रमाता है, ‘कुत्ते यज़्रएल की फ़सील के पास ईज़बिल को खा जाएंगे। 24 अख़ियब के ख़ानदान में से जो शहर में मरेंगा उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिन्दे चट कर जाएंगे’।”

25 और यह हक़ीक़त है कि अख़ियब जैसा ख़राब शख़्स कोई नहीं था। क्यूँकि ईज़बिल के उकसाने पर उस ने अपने आप को बदी के हाथ में बेच कर ऐसा काम किया जो रब को नापसन्द था। 26 सब से घिनौनी बात यह थी कि वह बुतों के पीछे लगा रहा, बिलकुल उन अमोरियों की तरह जिन्हें रब ने इस्राईल से निकाल दिया था।

27 जब अख़ियब ने इल्यास की यह बातें सुनीं तो उस ने अपने कपड़े फाड़ कर टाट ओढ़ लिया। रोज़ा रख कर वह ग़मगीन हालत में फिरता रहा। टाट उस ने सोते वक़्त भी न उतारा। 28 तब रब दुबारा इल्यास तिश्बी से हमकलाम हुआ, 29 “क्या तू ने ग़ौर किया है कि अख़ियब ने अपने आप को मेरे सामने कितना पस्त कर दिया है? चूँकि उस ने अपनी आजिज़ी का इज़हार किया है इस लिए मैं उस के जीते जी उस के ख़ानदान को मज़कूरा मुसीबत में नहीं डालूँगा बल्कि उस वक़्त जब उस का बेटा तख़्त पर बैठेगा।”

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

22 1 तीन साल तक शाम और इस्राईल के दरमियान सुलह रही। 2 तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त इस्राईल के बादशाह अख़ियब से मिलने गया। 3 उस वक़्त इस्राईल के बादशाह ने अपने अफ़सरों से बात की, “देखें, रामात-जिलिआद हमारा ही शहर है। तो फिर हम क्यूँ कुछ नहीं कर रहे? हमें उसे शाम के बादशाह के क़ब्ज़े से छुड़वाना चाहिए।” 4 उस ने यहूसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलिआद जाएंगे ताकि उस पर क़ब्ज़ा करें?” यहूसफ़त ने जवाब दिया, “जी ज़रूर। हम तो भाई हैं। मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और

मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें! 5 लेकिन मेहरबानी
करके पहले रब की मर्ज़ी मालूम कर लें।”
6 इस्राईल के बादशाह ने तक़रीबन 400 नबियों को
बुला कर उन से पूछा, “क्या मैं रामात-जिलिआद
पर हम्ला करूँ या इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने
जवाब दिया, “जी करें, क्यूँकि रब उसे बादशाह के
हवाले कर देगा।”
7 लेकिन यहूसफ़त मुत्मइन न हुआ। उस ने पूछा,
“क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिस से हम
दरयाफ़्त कर सकें?” 8 इस्राईल का बादशाह बोला,
“हाँ, एक तो है जिस के ज़रीए हम रब की मर्ज़ी मालूम
कर सकते हैं। लेकिन मैं उस से नफ़रत करता हूँ,
क्यूँकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं
करता। वह हमेशा बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उस का
नाम मीकायाह बिन इम्ला है।” यहूसफ़त ने एतिराज़
किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!” 9 तब इस्राईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुला कर हुक्म
दिया, “मीकायाह बिन इम्ला को फ़ौरन हमारे पास
पहुँचा देना!”
10 अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास
पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने अपने
तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ
अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उन
के सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे। 11 एक
नबी बनाम सिदक़ियाह बिन कनआना ने अपने लिए
लोहे के सींग बना कर एलान किया, “रब फ़रमाता है
कि इन सींगों से तू शाम के फ़ौजियों को मार मार कर
हलाक कर देगा।” 12 दूसरे नबी भी इस क़िस्म की
पेशगोइयाँ कर रहे थे, “रामात-जिलिआद पर हम्ला
करें, क्यूँकि आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर
को आप के हवाले कर देगा।”
13 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए
भेजा गया था उस ने रास्ते में उसे समझाया, “देखें,
बाक़ी तमाम नबी मिल कर कह रहे हैं कि बादशाह
को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें
करें, आप भी फ़त्ह की पेशगोई करें!” 14 लेकिन
मीकायाह ने एतिराज़ किया, “रब की हयात की
क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो
रब मुझे फ़रमाएगा।”
15 जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा हुआ
तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-
जिलिआद पर हम्ला करें या मैं इस इरादे से बाज़
रहूँ?” मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हम्ला करें,
क्यूँकि रब शहर को आप के हवाले करके आप
को कामयाबी बख़्शेगा।” 16 बादशाह नाराज़ हुआ,
“मुझे कितनी दफ़ा आप को समझाना पड़ेगा कि आप
क़सम खा कर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ
सुनाएँ जो हक़ीक़त है।”
17 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम
इस्राईल गल्लाबान से महरूम भेड़-बकरियों की तरह
पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझ से
हमकलाम हुआ, ‘इन का कोई मालिक नहीं है। हर
एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए’।”
18 इस्राईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा, “लो,
क्या मैं ने आप को नहीं बताया था कि यह शख़्स
हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”
19 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब
का फ़रमान सुनें! मैं ने रब को उस के तख़्त पर
बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उस के दाएँ और
बाएँ हाथ खड़ी थी। 20 रब ने पूछा, ‘कौन अख़ियब
को रामात-जिलिआद पर हम्ला करने पर अकसाएगा
ताकि वह वहाँ जा कर मर जाए?’ एक ने यह
मश्वरा दिया, दूसरे ने वह। 21 आख़िरकार एक रूह
रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे
उकसाऊँगी।’ 22 रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’
रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकल कर उस के तमाम
नबियों पर यूँ क़ाबू पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’
रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यूँ ही
कर!’ 23 ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का
फ़ैसला कर लिया है, इस लिए उस ने झूटी रूह को
आप के इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

24 तब सिदक़ियाह बिन कनआना ने आगे बढ़ कर
मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, “रब
का रूह किस तरह मुझ से निकल गया ताकि तुझ
से बात करे?” 25 मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस
दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उस में खिसक
कर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आप को पता
चलेगा।”
26 तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया, “मीकायाह
को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे
यूआस के पास वापस भेज दो! 27 उन्हें बता देना,
‘इस आदमी को जेल में डाल कर मेरे सहीह-सलामत
वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया
करें’।” 28 मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-
सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी
मारिफ़त बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों
से मुख़ातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

29 इस के बाद इस्राईल का बादशाह अख़ियब और
यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त मिल कर रामात-
जिलिआद पर हम्ला करने के लिए रवाना हुए। 30 जंग
से पहले अख़ियब ने यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना
भेस बदल कर मैदान-ए-जंग में जाऊँगा। लेकिन
आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनाँचे इस्राईल
का बादशाह अपना भेस बदल कर मैदान-ए-जंग में
आया। 31 शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर अपने
32 अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़ और सिर्फ़
बादशाह पर हम्ला करें। किसी और से मत लड़ना,
ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा।”
32 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर
यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्यूँकि उन्हों ने कहा,
“यक़ीनन यही इस्राईल का बादशाह है!” लेकिन जब
यहूसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा 33 तो दुश्मनों
को मालूम हुआ कि यह अख़ियब बादशाह नहीं
है, और वह उस का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आए।
34 लेकिन किसी ने ख़ास निशाना बांधे बग़ैर अपना
तीर चलाया तो वह अख़ियब को ऐसी जगह जा
लगा जहाँ ज़िराबक्तर का जोड़ था। बादशाह ने अपने
रथबान को हुक्म दिया, “रथ को मोड़ कर मुझे मैदान-
ए-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।”
35 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई
जारी रही, इस लिए बादशाह अपने रथ में टेक लगा
कर दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा रहा। ख़ून ज़ख़्म से रथ
के फ़र्श पर टपकता रहा, और शाम के वक़्त अख़ियब
मर गया। 36 जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो इस्राईली
फ़ौज में बुलन्द आवाज़ से एलान किया गया, “हर
एक अपने शहर और अपने इलाक़े में वापस चला
जाए!”
37 बादशाह की मौत के बाद उस की लाश को
सामरिया ला कर दफ़नाया गया। 38 शाही रथ को
सामरिया के एक तालाब के पास लाया गया जहाँ
कस्बियों की नहाने की जगह थी। वहाँ उसे धोया
गया। कुत्ते भी आ कर ख़ून को चाटने लगे। यूँ रब
का फ़रमान पूरा हुआ।
39 बाक़ी जो कुछ अख़ियब की हुकूमत के दौरान
हुआ वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब
में दर्ज है। उस में बादशाह का तामीरकरदा हाथीदाँत
का महल और वह शहर बयान किए गए हैं जिन की
क़िलाबन्दी उस ने की। 40 जब वह मर कर अपने
बापदादा से जा मिला तो उस का बेटा अख़ज़ियाह
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

41 आसा का बेटा यहूसफ़त इस्राईल के बादशाह
अख़ियब की हुकूमत के चौथे साल में यहूदाह का
बादशाह बना। 42 उस वक़्त उस की उम्र 35 साल थी।
उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम रहा, और उस
की हुकूमत का दौरानिया 25 साल था। माँ का नाम
अज़ूबा बिन्त सिल्ही था। 43 वह हर काम में अपने
बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता
रहा जो रब को पसन्द था। लेकिन उस ने भी ऊँचे
मक़ामों के मन्दिरों को ख़त्म न किया। ऐसी जगहों

पर जानवरों को क़ुर्बान करने और बख़ूर जलाने का
इन्तिज़ाम जारी रहा। 44 यहूसफ़त और इस्राईल के
बादशाह के दरमियान सुलह क़ाइम रही।

45 बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के दौरान
हुआ वह 'शाहान-ए-यहूदाह की तारीख़' की किताब
में दर्ज है। उस की कामयाबियाँ और जंगें सब उस में
बयान की गई हैं। 46 जो जिस्मफ़रोश मर्द और औरतें
आसा के ज़माने में बच गए थे उन्हें यहूसफ़त ने मुल्क
में से मिटा दिया। 47 उस वक़्त मुल्क-ए-अदोम का
बादशाह न था बल्कि यहूदाह का एक अफ़सर उस
पर हुक्मरानी करता था।

48 यहूसफ़त ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा बनवाया
ताकि वह तिजारत करके ओफ़ीर से सोना लाएँ।
लेकिन वह कभी इस्तेमाल न हुए बल्कि अपनी ही
बन्दरगाह अस्यून-जाबर में तबाह हो गए। 49 तबाह
होने से पहले इस्राईल के बादशाह अख़ज़ियाह बिन
अख़ियब ने यहूसफ़त से दरख़्वास्त की थी कि
इस्राईल के कुछ लोग जहाज़ों पर साथ चलें। लेकिन
यहूसफ़त ने इन्कार किया था।

50 जब यहूसफ़त मर कर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे यरूशलम के हिस्से में जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।
फिर उस का बेटा यहूराम तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह अख़ज़ियाह

51 अख़ियब का बेटा अख़ज़ियाह यहूदाह के
बादशाह यहूसफ़त की हुकूमत के 17वें साल में
इस्राईल का बादशाह बना। वह दो साल तक इस्राईल
पर हुक्मरान रहा। सामरिया उस का दार-उल-हकूमत
था। 52 जो कुछ उस ने किया वह रब को नापसन्द था,
क्यूँकि वह अपने माँ-बाप और यरुबिआम बिन नबात
के नमूने पर चलता रहा, उसी यरुबिआम के नमूने पर
जिस ने इस्राईल को गुनाह करने पर उकसाया था।
53 अपने बाप की तरह बाल देवता की ख़िदमत और
पूजा करने से उस ने रब, इस्राईल के ख़ुदा को तैश
दिलाया।

२-सलातीन

अख़ज़ियाह के लिए इल्यास का पैग़ाम

1 1 अख़ियब की मौत के बाद मोआब का मुल्क
बाग़ी हो कर इस्राईल के ताबे न रहा।
2 सामरिया के शाही महल के बालाख़ाने की एक
दीवार में जंगला लगा था। एक दिन अख़ज़ियाह
बादशाह जंगले के साथ लग गया तो वह टूट गया
और बादशाह ज़मीन पर गिर कर बहुत ज़ख़्मी हुआ।
उस ने क़ासिदों को फ़िलिस्ती शहर अक्रून भेज कर
कहा, “जा कर अक्रून के देवता बाल-ज़बूब से पता
करें कि मेरी सेहत बहाल हो जाएगी कि नहीं।” 3 तब
रब के फ़रिश्ते ने इल्यास तिश्बी को हुक्म दिया,
“उठ, सामरिया के बादशाह के क़ासिदों से मिलने
जा। उन से पूछ, ‘आप दरयाफ़्त करने के लिए अक्रून
के देवता बाल-ज़बूब के पास क्यूँ जा रहे हैं? क्या
इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं है? 4 चुनाँचे रब फ़रमाता
है कि ऐ अख़ज़ियाह, जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उस
से तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”
इल्यास जा कर क़ासिदों से मिला। 5 उस का पैग़ाम
सुन कर क़ासिद बादशाह के पास वापस गए। उस ने
पूछा, “आप इतनी जल्दी वापस क्यूँ आए?” 6 उन्हों
ने जवाब दिया, “एक आदमी हम से मिलने आया
जिस ने हमें आप के पास वापस भेज कर आप को
यह ख़बर पहुँचाने को कहा, ‘रब फ़रमाता है कि तू
अपने बारे में दरयाफ़्त करने के लिए अपने बन्दों को
अक्रून के देवता बाल-ज़बूब के पास क्यूँ भेज रहा
है? क्या इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं है? चूँकि तू ने
यह किया है इस लिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उस
से तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”
7 अख़ज़ियाह ने पूछा, “यह किस क़िस्म का
आदमी था जिस ने आप से मिल कर आप को यह
बात बताई?” 8 उन्हों ने जवाब दिया, “उस के लम्बे
बाल थे, और कमर में चमड़े की पेटी बंधी हुई थी।”
बादशाह बोल उठा, “यह तो इल्यास तिश्बी था!”

आसमान से आग

9 फ़ौरन उस ने एक अफ़सर को 50 फ़ौजियों समेत
इल्यास के पास भेज दिया। जब फ़ौजी इल्यास के
पास पहुँचे तो वह एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा
था। अफ़सर बोला, “ऐ मर्द-ए-ख़ुदा, बादशाह कहते
हैं कि नीचे उतर आएँ!” 10 इल्यास ने जवाब दिया,
“अगर मैं मर्द-ए-ख़ुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल
हो कर आप और आप के 50 फ़ौजियों को भस्म कर
दे।” फ़ौरन आसमान से आग नाज़िल हुई और अफ़सर
को उस के लोगों समेत भस्म कर दिया। 11 बादशाह
ने एक और अफ़सर को इल्यास के पास भेज दिया।
उस के साथ भी 50 फ़ौजी थे। उस के पास पहुँच
कर अफ़सर बोला, “ऐ मर्द-ए-ख़ुदा, बादशाह कहते
हैं कि फ़ौरन उतर आएँ।” 12 इल्यास ने दुबारा पुकारा,
“अगर मैं मर्द-ए-ख़ुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल
हो कर आप और आप के 50 फ़ौजियों को भस्म कर
दे।” फ़ौरन आसमान से अल्लाह की आग नाज़िल हुई
और अफ़सर को उस के 50 फ़ौजियों समेत भस्म कर
दिया।
13 फिर बादशाह ने तीसरी बार एक अफ़सर को 50
फ़ौजियों के साथ इल्यास के पास भेज दिया। लेकिन
यह अफ़सर इल्यास के पास ऊपर चढ़ आया और
उस के सामने घुटने टेक कर इल्तिमास करने लगा,
“ऐ मर्द-ए-ख़ुदा, मेरी और अपने इन 50 ख़ादिमों
की जानों की क़दर करें। 14 देखें, आग ने आसमान
से नाज़िल हो कर पहले दो अफ़सरों को उन के
आदमियों समेत भस्म कर दिया है। लेकिन बराह-
ए-करम हमारे साथ ऐसा न करें। मेरी जान की क़दर
करें।”

15 तब रब के फ़रिश्ते ने इल्यास से कहा, “इस
से मत डरना बल्कि इस के साथ उतर जा!” चुनाँचे
इल्यास उठा और अफ़सर के साथ उतर कर बादशाह
के पास गया। 16 उस ने बादशाह से कहा, “रब
फ़रमाता है, ‘तू ने अपने क़ासिदों को अक्रून के देवता
बाल-ज़बूब से दरयाफ़्त करने के लिए क्यूँ भेजा? क्या
इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं है? चूँकि तू ने यह किया
है इस लिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उस से तू कभी
नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”

अख़ज़ियाह की मौत

17 वैसा ही हुआ जैसा रब ने इल्यास की मारिफ़त
फ़रमाया था, अख़ज़ियाह मर गया। चूँकि उस का
बेटा नहीं था इस लिए उस का भाई यहूराम यहूदाह
के बादशाह यूराम बिन यहूसफ़त की हुकूमत के
दूसरे साल में तख़्तनशीन हुआ। 18 बाक़ी जो कुछ
अख़ज़ियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ
उस ने किया वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की
किताब में बयान किया गया है।

इल्यास को आसमान पर उठा लिया जाता है

2 1 फिर वह दिन आया जब रब ने इल्यास को
आँधी में आसमान पर उठा लिया। उस दिन
इल्यास और इलीशा जिल्जाल शहर से रवाना हो
कर सफ़र कर रहे थे। 2 रास्ते में इल्यास इलीशा से
कहने लगा, “यहीं ठहर जाएँ, क्यूँकि रब ने मुझे बैत-
एल भेजा है।” लेकिन इलीशा ने इन्कार किया, “रब
और आप की हयात की क़सम, मैं आप को नहीं
छोड़ूँगा।”

चुनाँचे दोनों चलते चलते बैत-एल पहुँच गए।
3 नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था वह शहर से
निकल कर उन से मिलने आया। इलीशा से मुख़ातिब
हो कर उन्हों ने पूछा, “क्या आप को मालूम है
कि आज रब आप के आक़ा को आप के पास से
उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे
पता है। ख़ामोश!” 4 दुबारा इल्यास अपने साथी से
कहने लगा, “इलीशा, यहीं ठहर जाएँ, क्यूँकि रब ने
मुझे यरीहू भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब
और आप की हयात की क़सम, मैं आप को नहीं
छोड़ूँगा।”

चुनाँचे दोनों चलते चलते यरीहू पहुँच गए। 5 नबियों
का जो गुरोह वहाँ रहता था उस ने भी इलीशा के पास
आ कर उस से पूछा, “क्या आप को मालूम है कि
आज रब आप के आक़ा को आप के पास से उठा
ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे पता
है। ख़ामोश!”

6 इल्यास तीसरी बार इलीशा से कहने लगा, “यहीं
ठहर जाएँ, क्यूँकि रब ने मुझे दरया-ए-यर्दन के पास
भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आप की
हयात की क़सम, मैं आप को नहीं छोड़ूँगा।”

चुनाँचे दोनों आगे बढ़े। 7 पचास नबी भी उन के
साथ चल पड़े। जब इल्यास और इलीशा दरया-ए-
यर्दन के किनारे पर पहुँचे तो दूसरे उन से कुछ दूर
खड़े हो गए। 8 इल्यास ने अपनी चादर उतार कर उसे
लपेट लिया और उस के साथ पानी पर मारा। पानी
तक़्सीम हुआ, और दोनों आदमी ख़ुश्क ज़मीन पर
चलते हुए दरया में से गुज़र गए। 9 दूसरे किनारे पर
पहुँच कर इल्यास ने इलीशा से कहा, “मेरे आप के
पास से उठा लिए जाने से पहले मुझे बताएँ कि आप
के लिए क्या करूँ?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे
आप की रूह का दुगना हिस्सा मीरास में मिले।”
g10 इल्यास बोला, “जो दरख़्वास्त आप ने की है उसे
पूरा करना मुश्किल है। अगर आप मुझे उस वक़्त
देख सकेंगे जब मुझे आप के पास से उठा लिया
जाएगा तो मतलब होगा कि आप की दरख़्वास्त पूरी
हो गई है, वर्ना नहीं।” 11 दोनों आपस में बातें करते
हुए चल रहे थे कि अचानक एक आतिशीं रथ नज़र
आया जिसे आतिशीं घोड़े खैंच रहे थे। रथ ने दोनों को

---

gइलीशा पहलौठे का हिस्सा माँग रहा है जो दूसरे वारिसों की निस्बत दुगना होता है।

अलग कर दिया, और इल्यास को आँधी में आसमान
पर उठा लिया गया। 12 यह देख कर इलीशा चिल्ला
उठा, “हाय मेरे बाप, मेरे बाप! इस्राईल के रथ और
उस के घोड़े!”

इल्यास इलीशा की नज़रों से ओझल हुआ तो
इलीशा ने ग़म के मारे अपने कपड़ों को फाड़ डाला।
13 इल्यास की चादर ज़मीन पर गिर गई थी। इलीशा
उसे उठा कर दरया-ए-यर्दन के पास वापस चला।
14 चादर को पानी पर मार कर वह बोला, “रब और
इल्यास का ख़ुदा कहाँ है?” पानी तक़्सीम हुआ और
वह बीच में से गुज़र गया।

15 यरीहू से आए नबी अब तक दरया के मग़रिबी
किनारे पर खड़े थे। जब उन्हों ने इलीशा को अपने
पास आते हुए देखा तो पुकार उठे, “इल्यास की रूह
इलीशा पर ठहरी हुई है!” वह उस से मिलने गए और
औंधे मुँह उस के सामने झुक कर 16 बोले, “हमारे 50
ताक़तवर आदमी ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। अगर
इजाज़त हो तो हम उन्हें भेज देंगे ताकि वह आप के
आक़ा को तलाश करें। हो सकता है रब के रूह ने
उसे उठा कर किसी पहाड़ या वादी में रख छोड़ा
हो।”

इलीशा ने मना करने की कोशिश की, “नहीं, उन्हें
मत भेजना।” 17 लेकिन उन्हों ने यहाँ तक इसरार
किया कि आख़िरकार वह मान गया और कहा,
“चलो, उन्हें भेज दें।” उन्हों ने 50 आदमियों को भेज
दिया जो तीन दिन तक इल्यास का खोज लगाते रहे।
लेकिन वह कहीं नज़र न आया। 18 हिम्मत हार कर
वह यरीहू वापस आए जहाँ इलीशा ठहरा हुआ था।
उस ने कहा, “क्या मैं ने नहीं कहा था कि न जाएँ?”

इलीशा के मोजिज़े

19 एक दिन यरीहू के आदमी इलीशा के पास आ
कर शिकायत करने लगे, “हमारे आक़ा, आप ख़ुद
देख सकते हैं कि इस शहर में अच्छा गुज़ारा होता
है। लेकिन पानी ख़राब है, और नतीजे में बहुत दफ़ा
बच्चे माँ के पेट में ही मर जाते हैं।”

20 इलीशा ने हुक्म दिया, “एक ग़ैरइस्तेमालशुदा
बर्तन में नमक डाल कर उसे मेरे पास ले आएँ।”
जब बर्तन उस के पास लाया गया 21 तो वह उसे ले
कर शहर से निकला और चश्मे के पास गया। वहाँ
उस ने नमक को पानी में डाल दिया और साथ साथ
कहा, “रब फ़रमाता है कि मैं ने इस पानी को बहाल
कर दिया है। अब से यह कभी मौत या बच्चों के ज़ाए
होने का बाइस नहीं बनेगा।”

22 उसी लम्हे पानी बहाल हो गया। इलीशा के कहने
के मुताबिक़ यह आज तक ठीक रहा है।

23 यरीहू से इलीशा बैत-एल को वापस चला गया।
जब वह रास्ते पर चलते हुए शहर से गुज़र रहा था
तो कुछ लड़के शहर से निकल आए और उस का
मज़ाक़ उड़ा कर चिल्लाने लगे, “ओए गंजे, इधर आ!
ओए गंजे, इधर आ!” 24 इलीशा मुड़ गया और उन
पर नज़र डाल कर रब के नाम में उन पर लानत भेजी।
तब दो रीछनयाँ जंगल से निकल कर लड़कों पर टूट
पड़ीं और कुल 42 लड़कों को फाड़ डाला।

25 इल्यास आगे निकला और चलते चलते कर्मिल
पहाड़ के पास आया। वहाँ से वापस आ कर
सामरिया पहुँच गया।

इस्राईल का बादशाह यूराम

3 1 अख़ियब का बेटा यूराम यहूदाह के बादशाह
यहूसफ़त के 18वें साल में इस्राईल का बादशाह
बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था और
उस का दार-उल-हकूमत सामरिया रहा। 2 उस का
चाल-चलन रब को नापसन्द था, अगरचे वह अपने
माँ-बाप की निस्बत कुछ बेहतर था। क्यूँकि उस ने
बाल देवता का वह सतून दूर कर दिया जो उस के
बाप ने बनवाया था। 3 तो भी वह यरुबिआम बिन
नबात के उन गुनाहों के साथ लिपटा रहा जो करने पर
यरुबिआम ने इस्राईल को उकसाया था। वह कभी
उन से दूर न हुआ।

मोआब के ख़िलाफ़ जंग

4 मोआब का बादशाह मेसा भेड़ें रखता था, और
सालाना उसे भेड़ के एक लाख बच्चे और एक लाख
मेंढे उन की ऊन समेत इस्राईल के बादशाह को
ख़राज के तौर पर अदा करने पड़ते थे। 5 लेकिन जब
अख़ियब फ़ौत हुआ तो मोआब का बादशाह ताबे न
रहा।
6 तब यूराम बादशाह ने सामरिया से निकल कर
तमाम इस्राईलियों की भर्ती की। 7 साथ साथ उस
ने यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त को इत्तिला दी,
“मोआब का बादशाह सरकश हो गया है। क्या आप
मेरे साथ उस से लड़ने जाएंगे?” यहूसफ़त ने जवाब
भेजा, “जी, मैं आप के साथ जाऊँगा। हम तो भाई हैं।
मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और मेरे घोड़ों को अपने
घोड़े समझें। 8 हम किस रास्ते से जाएँ?” यूराम ने
जवाब दिया, “हम अदोम के रेगिस्तान से हो कर
जाएंगे।”
9 चुनाँचे इस्राईल का बादशाह यहूदाह के बादशाह
के साथ मिल कर रवाना हुआ। मुल्क-ए-अदोम का
बादशाह भी साथ था। अपने मन्सूबे के मुताबिक़
उन्हों ने रेगिस्तान का रास्ता इख़तियार किया।
लेकिन चूँकि वह सीधे नहीं बल्कि मुतबादिल रास्ते
से हो कर गए इस लिए सात दिन के सफ़र के बाद
उन के पास पानी न रहा, न उन के लिए, न जानवरों
के लिए।
10 इस्राईल का बादशाह बोला, “हाय, रब हमें इस
लिए यहाँ बुला लाया है कि हम तीनों बादशाहों को
मोआब के हवाले करे।”
11 लेकिन यहूसफ़त ने सवाल किया, “क्या यहाँ
रब का कोई नबी नहीं है जिस की मारिफ़त हम रब
की मर्ज़ी जान सकें?” इस्राईल के बादशाह के किसी
अफ़सर ने जवाब दिया, “एक तो है, इलीशा बिन
साफ़त जो इल्यास का क़रीबी शागिर्द था, वह उस
के हाथों पर पानी डालने की ख़िदमत अन्जाम दिया
करता था।” 12 यहूसफ़त बोला, “रब का कलाम उस
के पास है।” तीनों बादशाह इलीशा के पास गए।
13 लेकिन इलीशा ने इस्राईल के बादशाह से कहा,
“मेरा आप के साथ क्या वास्ता? अगर कोई बात हो
तो अपने माँ-बाप के नबियों के पास जाएँ।” इस्राईल
के बादशाह ने जवाब दिया, “नहीं, हम इस लिए यहाँ
आए हैं कि रब ही हम तीनों को यहाँ बुला लाया
है ताकि हमें मोआब के हवाले करे।” 14 इलीशा ने
कहा, “रब्ब-उल-अफ़्वाज की हयात की क़सम जिस
की ख़िदमत मैं करता हूँ, अगर यहूदाह का बादशाह
यहाँ मौजूद न होता तो फिर मैं आप का लिहाज़ न
करता बल्कि आप की तरफ़ देखता भी न। लेकिन
मैं यहूसफ़त का ख़याल करता हूँ, 15 इस लिए किसी
को बुलाएँ जो सरोद बजा सके।”
कोई सरोद बजाने लगा तो रब का हाथ इलीशा पर
आ ठहरा, 16 और उस ने एलान किया, “रब फ़रमाता
है कि इस वादी में हर तरफ़ गढ़ों की खुदाई करो।
17 गो तुम न हवा और न बारिश देखोगे तो भी वादी
पानी से भर जाएगी। पानी इतना होगा कि तुम, तुम्हारे
रेवड़ और बाक़ी तमाम जानवर पी सकेंगे। 18 लेकिन
यह रब के नज़दीक कुछ नहीं है, वह मोआब को भी
तुम्हारे हवाले कर देगा। 19 तुम तमाम क़िलाबन्द और
मर्कज़ी शहरों पर फ़त्ह पाओगे। तुम मुल्क के तमाम
अच्छे दरख़्तों को काट कर तमाम चश्मों को बन्द
करोगे और तमाम अच्छे खेतों को पत्थरों से ख़राब
करोगे।”
20 अगली सुब्ह तक़रीबन उस वक़्त जब ग़ल्ला की
नज़र पेश की जाती है मुल्क-ए-अदोम की तरफ़ से
सैलाब आया, और नतीजे में वादी के तमाम गढ़े पानी
से भर गए।

मोआब पर फ़त्ह

21 इतने में तमाम मोआबियों को पता चल गया था
कि तीनों बादशाह हम से लड़ने आ रहे हैं। छोटों से ले
कर बड़ों तक जो भी अपनी तलवार चला सकता था
उसे बुला कर सरहद की तरफ़ भेजा गया। 22 सुब्ह-

सवेरे जब मोआबी लड़ने के लिए तय्यार हुए तो तुलू-ए-आफ़ताब की सुर्ख़ रौशनी में वादी का पानी ख़ून की तरह सुर्ख़ नज़र आया। 23 मोआबी चिल्लाने लगे, “यह तो ख़ून है! तीनों बादशाहों ने आपस में लड़ कर एक दूसरे को मार दिया होगा। आओ, हम उन को लूट लें!”

24 लेकिन जब वह इस्राईली लश्करगाह के क़रीब पहुँचे तो इस्राईली उन पर टूट पड़े और उन्हें मार कर भगा दिया। फिर उन्हों ने उन के मुल्क में दाख़िल हो कर मोआब को शिकस्त दी। 25 चलते चलते उन्हों ने तमाम शहरों को बर्बाद किया। जब भी वह किसी अच्छे खेत से गुज़रे तो हर सिपाही ने एक पत्थर उस पर फैंक दिया। यूँ तमाम खेत पत्थरों से भर गए। इस्राईलियों ने तमाम चश्मों को भी बन्द कर दिया और हर अच्छे दरख़्त को काट डाला।

आख़िर में सिर्फ़ क़ीर-हरासत क़ाइम रहा। लेकिन फ़लाख़न चलाने वाले उस का मुहासरा करके उस पर हम्ला करने लगे। 26 जब मोआब के बादशाह ने जान लिया कि मैं शिकस्त खा रहा हूँ तो उस ने तलवारों से लेस 700 आदमियों को अपने साथ लिया और अदोम के बादशाह के क़रीब दुश्मन का मुहासरा तोड़ कर निकलने की कोशिश की, लेकिन बेफ़ाइदा। 27 फिर उस ने अपने पहलौठे को जिसे उस के बाद बादशाह बनना था ले कर फ़सील पर अपने देवता के लिए क़ुर्बान करके जला दिया। तब इस्राईलियों पर बड़ा ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और वह शहर को छोड़ कर अपने मुल्क वापस चले गए।

इलीशा और बेवा का तेल

4 1 एक दिन एक बेवा इलीशा के पास आई जिस का शौहर जब ज़िन्दा था नबियों के गुरोह में शामिल था। बेवा चीख़ती चिल्लाती इलीशा से मुख़ातिब हुई, “आप जानते हैं कि मेरा शौहर जो आप की ख़िदमत करता था अल्लाह का ख़ौफ़ मानता था। अब जब वह फ़ौत हो गया है तो उस का एक साहूकार आ कर धमकी दे रहा है कि अगर क़र्ज़ अदा न किया गया तो मैं तेरे दो बेटों को ग़ुलाम बना कर ले जाऊँगा।”

2 इलीशा ने पूछा, “मैं किस तरह आप की मदद करूँ? बताएँ, घर में आप के पास क्या है?” बेवा ने जवाब दिया, “कुछ नहीं, सिर्फ़ ज़ैतून के तेल का छोटा सा बर्तन।” 3 इलीशा बोला, “जाएँ, अपनी तमाम पड़ोसनों से ख़ाली बर्तन माँगें। लेकिन ध्यान रखें कि थोड़े बर्तन न हों! 4 फिर अपने बेटों के साथ घर में जा कर दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। तेल का अपना बर्तन ले कर तमाम ख़ाली बर्तनों में तेल उंडेलती जाएँ। जब एक भर जाए तो उसे एक तरफ़ रख कर दूसरे को भरना शुरू करें।”

5 बेवा ने जा कर ऐसा ही किया। वह अपने बेटों के साथ घर में गई और दरवाज़े पर कुंडी लगाई। बेटे उसे ख़ाली बर्तन देते गए और माँ उन में तेल उंडेलती गई। 6 बर्तनों में तेल डलते डलते सब लबालब भर गए। माँ बोली, “मुझे एक और बर्तन दे दो” तो एक लड़के ने जवाब दिया, “और कोई नहीं है।” तब तेल का सिलसिला रुक गया।

7 जब बेवा ने मर्द-ए-ख़ुदा के पास जा कर उसे इत्तिला दी तो इलीशा ने कहा, “अब जा कर तेल को बेच दें और कर्ज़े के पैसे अदा करें। जो बच जाए उसे आप और आप के बेटे अपनी ज़रूरियात पूरी करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।”

इलीशा शूनीम में लड़के को ज़िन्दा कर देता है

8 एक दिन इलीशा शूनीम गया। वहाँ एक अमीर औरत रहती थी जिस ने ज़बरदस्ती उसे अपने घर बिठा कर खाना खिलाया। बाद में जब कभी इलीशा वहाँ से गुज़रता तो वह खाने के लिए उस औरत के घर ठहर जाता। 9 एक दिन औरत ने अपने शौहर से बात की, “मैं ने जान लिया है कि जो आदमी हमारे हाँ आता रहता है वह अल्लाह का मुक़द्दस पैग़म्बर है। 10 क्यूँ न हम उस के लिए छत पर छोटा सा कमरा बना कर उस में चारपाई, मेज़, कुर्सी और शमादान

रखें। फिर जब भी वह हमारे पास आए तो वह उस
में ठहर सकता है।”
11 एक दिन जब इलीशा आया तो वह अपने कमरे
में जा कर बिस्तर पर लेट गया। 12 उस ने अपने
नौकर जैहाज़ी से कहा, “शूनीमी मेज़बान को बुला
लाओ।” जब वह आ कर उस के सामने खड़ी हुई
13 तो इलीशा ने जैहाज़ी से कहा, “उसे बता देना कि
आप ने हमारे लिए बहुत तक्लीफ़ उठाई है। अब हम
आप के लिए क्या कुछ करें? क्या हम बादशाह या
फ़ौज के कमाँडर से बात करके आप की सिफ़ारिश
करें?” औरत ने जवाब दिया, “नहीं, इस की ज़रूरत
नहीं। मैं अपने ही लोगों के दरमियान रहती हूँ।”
14 बाद में इलीशा ने जैहाज़ी से बात की, “हम
उस के लिए क्या करें?” जैहाज़ी ने जवाब दिया,
“एक बात तो है। उस का कोई बेटा नहीं, और उस
का शौहर काफ़ी बूढ़ा है।” 15 इलीशा बोला, “उसे
वापस बुलाओ।” औरत वापस आ कर दरवाज़े में
खड़ी हो गई। इलीशा ने उस से कहा, 16 “अगले
साल इसी वक़्त आप का अपना बेटा आप की गोद
में होगा।” शूनीमी औरत ने एतिराज़ किया, “नहीं
नहीं, मेरे आक़ा। मर्द-ए-ख़ुदा ऐसी बातें करके अपनी
ख़ादिमा को झूटी तसल्ली मत दें।”
17 लेकिन ऐसा ही हुआ। कुछ देर के बाद औरत
का पाँओ भारी हो गया, और ऐन एक साल के बाद
उस के हाँ बेटा पैदा हुआ। सब कुछ वैसा ही हुआ
जैसा इलीशा ने कहा था। 18 बच्चा परवान चढ़ा, और
एक दिन वह घर से निकल कर खेत में अपने बाप
के पास गया जो फ़सल की कटाई करने वालों के
साथ काम कर रहा था। 19 अचानक लड़का चीख़ने
लगा, “हाय मेरा सर, हाय मेरा सर!” बाप ने किसी
मुलाज़िम को बताया, “लड़के को उठा कर माँ के
पास ले जाओ।” 20 नौकर उसे उठा कर ले गया, और
वह अपनी माँ की गोद में बैठा रहा। लेकिन दोपहर
को वह मर गया।
21 माँ लड़के की लाश को ले कर छत पर चढ़ गई।
मर्द-ए-ख़ुदा के कमरे में जा कर उस ने उसे उस के
बिस्तर पर लिटा दिया। फिर दरवाज़े को बन्द करके
वह बाहर निकली 22 और अपने शौहर को बुलवा
कर कहा, “ज़रा एक नौकर और एक गधी मेरे पास
भेज दें। मुझे फ़ौरन मर्द-ए-ख़ुदा के पास जाना है। मैं
जल्द ही वापस आ जाऊँगी।” 23 शौहर ने हैरान हो
कर पूछा, “आज उस के पास क्यूँ जाना है? न तो नए
चाँद की ईद है, न सबत का दिन।” बीवी ने कहा,
“सब ख़ैरियत है।” 24 गधी पर ज़ीन कस कर उस ने
नौकर को हुक्म दिया, “गधी को तेज़ चला ताकि हम
जल्दी पहुँच जाएँ। जब मैं कहूँगी तब ही रुकना है,
वर्ना नहीं।”
25 चलते चलते वह कर्मिल पहाड़ के पास पहुँच
गए जहाँ मर्द-ए-ख़ुदा इलीशा था। उसे दूर से देख
कर इलीशा जैहाज़ी से कहने लगा, “देखो, शूनीम की
औरत आ रही है! 26 भाग कर उस के पास जाओ और
पूछो कि क्या आप, आप का शौहर और बच्चा ठीक
हैं?” जैहाज़ी ने जा कर उस का हाल पूछा तो औरत
ने जवाब दिया, “जी, सब ठीक है।” 27 लेकिन जूँ ही
वह पहाड़ के पास पहुँच गई तो इलीशा के सामने गिर
कर उस के पाँओ से चिमट गई। यह देख कर जैहाज़ी
उसे हटाने के लिए क़रीब आया, लेकिन मर्द-ए-ख़ुदा
बोला, “छोड़ दो! कोई बात इसे बहुत तक्लीफ़ दे
रही है, लेकिन रब ने वजह मुझ से छुपाए रखी है।
उस ने मुझे इस के बारे में कुछ नहीं बताया।”
28 फिर शूनीमी औरत बोल उठी, “मेरे आक़ा, क्या
मैं ने आप से बेटे की दरख़्वास्त की थी? क्या मैं
ने नहीं कहा था कि मुझे ग़लत उम्मीद न दिलाएँ?”
29 तब इलीशा ने नौकर को हुक्म दिया, “जैहाज़ी,
सफ़र के लिए कमरबस्ता हो कर मेरी लाठी को ले
लो और भाग कर शूनीम पहुँचो। अगर रास्ते में किसी
से मिलो तो उसे सलाम तक न करना, और अगर
कोई सलाम कहे तो उसे जवाब मत देना। जब वहाँ
पहुँचोगे तो मेरी लाठी लड़के के चिहरे पर रख देना।”
30 लेकिन माँ ने एतिराज़ किया, “रब की और आप
की हयात की क़सम, आप के बग़ैर मैं घर वापस नहीं
जाऊँगी।”

चुनाँचे इलीशा भी उठा और औरत के पीछे पीछे चल पड़ा। 31 जैहाज़ी भाग भाग कर उन से पहले पहुँच गया और लाठी को लड़के के चिहरे पर रख दिया। लेकिन कुछ न हुआ। न कोई आवाज़ सुनाई दी, न कोई हरकत हुई। वह इलीशा के पास वापस आया और बोला, “लड़का अभी तक मुर्दा ही है।”

32 जब इलीशा पहुँच गया तो लड़का अब तक मुर्दा हालत में उस के बिस्तर पर पड़ा था। 33 वह अकेला ही अन्दर गया और दरवाज़े पर कुंडी लगा कर रब से दुआ करने लगा। 34 फिर वह लड़के पर लेट गया, यूँ कि उस का मुँह बच्चे के मुँह से, उस की आँखें बच्चे की आँखों से और उस के हाथ बच्चे के हाथों से लग गए। और जूँ ही वह लड़के पर झुक गया तो उस का जिस्म गर्म होने लगा। 35 इलीशा खड़ा हुआ और घर में इधर उधर फिरने लगा। फिर वह एक और मर्तबा लड़के पर लेट गया। इस दफ़ा लड़के ने सात बार छींकें मार कर अपनी आँखें खोल दीं।

36 इलीशा ने जैहाज़ी को आवाज़ दे कर कहा, “शूनीमी औरत को बुला लाओ।” वह कमरे में दाख़िल हुई तो इलीशा बोला, “आएँ, अपने बेटे को उठा कर ले जाएँ।” 37 वह आई और इलीशा के सामने औंधे मुँह झुक गई, फिर अपने बेटे को उठा कर कमरे से बाहर चली गई।

इलीशा ज़हरीले सालन को खाने के क़ाबिल बना देता है

38 इलीशा जिल्जाल को लौट आया। उन दिनों में मुल्क काल की गिरिफ़्त में था। एक दिन जब नबियों का गुरोह उस के सामने बैठा था तो उस ने अपने नौकर को हुक्म दिया, “बड़ी देग ले कर नबियों के लिए कुछ पका लो।”

39 एक आदमी बाहर निकल कर खुले मैदान में कद्दू ढूँडने गया। कहीं एक बेल नज़र आई जिस पर कद्दू जैसी कोई सब्ज़ी लगी थी। इन कद्दूओं से अपनी चादर भर कर वह वापस आया और उन्हें काट काट कर देग में डाल दिया, हालाँकि किसी को भी मालूम नहीं था कि क्या चीज़ है।

40 सालन पक कर नबियों में तक़्सीम हुआ। लेकिन उसे चखते ही वह चीख़ने लगे, “मर्द-ए-ख़ुदा, सालन में ज़हर है! इसे खा कर बन्दा मर जाएगा।” वह उसे बिलकुल न खा सके। 41 इलीशा ने हुक्म दिया, “मुझे कुछ मैदा ला कर दें।” फिर उसे देग में डाल कर बोला, “अब इसे लोगों को खिला दें।” अब खाना खाने के क़ाबिल था और उन्हें नुक़्सान न पहुँचा सका।

100 आदमियों के लिए खाना

42 एक और मौक़े पर किसी आदमी ने बाल-सलीसा से आ कर मर्द-ए-ख़ुदा को नई फ़सल के जौ की 20 रोटियाँ और कुछ अनाज दे दिया। इलीशा ने जैहाज़ी को हुक्म दिया, “इसे लोगों को खिला दो।”

43 जैहाज़ी हैरान हो कर बोला, “यह कैसे मुमकिन है? यह तो 100 आदमियों के लिए काफ़ी नहीं है।” लेकिन इलीशा ने इसरार किया, “इसे लोगों में तक़्सीम कर दो, क्यूँकि रब फ़रमाता है कि वह जी भर कर खाएँगे बल्कि कुछ बच भी जाएगा।”

44 और ऐसा ही हुआ। जब नौकर ने आदमियों में खाना तक़्सीम किया तो उन्हों ने जी भर कर खाया, बल्कि कुछ खाना बच भी गया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने फ़रमाया था।

नामान की शिफ़ा

5 1 उस वक़्त शाम की फ़ौज का कमाँडर नामान था। बादशाह उस की बहुत क़दर करता था, और दूसरे भी उस की ख़ास इज़्ज़त करते थे, क्यूँकि रब ने उस की मारिफ़त शाम के दुश्मनों पर फ़त्ह बख़्शी थी। लेकिन ज़बरदस्त फ़ौजी होने के बावुजूद वह संगीन जिल्दी बीमारी का मरीज़ था। 2 नामान के घर में एक इस्राईली लड़की रहती थी। किसी वक़्त जब शाम के फ़ौजियों ने इस्राईल पर छापा मारा था तो वह उसे गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आए थे। अब

लड़की नामान की बीवी की ख़िदमत करती थी।
3 एक दिन उस ने अपनी मालिकन से बात की, “काश
मेरा आक़ा उस नबी से मिलने जाता जो सामरिया में
रहता है। वह उसे ज़रूर शिफ़ा देता।”
4 यह सुन कर नामान ने बादशाह के पास जा कर
लड़की की बात दुहराई। 5 बादशाह बोला, “ज़रूर
जाएँ और उस नबी से मिलें। मैं आप के हाथ
इस्राईल के बादशाह को सिफ़ारिशी ख़त भेज दूँगा।”
चुनाँचे नामान रवाना हुआ। उस के पास तक़रीबन
340 किलोग्राम चाँदी, 68 किलोग्राम सोना और 10
क़ीमती सूट थे। 6 जो ख़त वह साथ ले कर गया उस
में लिखा था, “जो आदमी आप को यह ख़त पहुँचा
रहा है वह मेरा ख़ादिम नामान है। मैं ने उसे आप के
पास भेजा है ताकि आप उसे उस की जिल्दी बीमारी
से शिफ़ा दें।”
7 ख़त पढ़ कर यूराम ने रंजिश के मारे अपने कपड़े
फाड़े और पुकारा, “इस आदमी ने मरीज़ को मेरे पास
भेज दिया है ताकि मैं उसे शिफ़ा दूँ! क्या मैं अल्लाह
हूँ कि किसी को जान से मारूँ या उसे ज़िन्दा करूँ?
अब ग़ौर करें और देखें कि वह किस तरह मेरे साथ
झगड़ने का मौक़ा ढूँड रहा है।”
8 जब इलीशा को ख़बर मिली कि बादशाह ने घबरा
कर अपने कपड़े फाड़ लिए हैं तो उस ने यूराम को
पैग़ाम भेजा, “आप ने अपने कपड़े क्यूँ फाड़ लिए?
आदमी को मेरे पास भेज दें तो वह जान लेगा कि
इस्राईल में नबी है।”
9 तब नामान अपने रथ पर सवार इलीशा के घर
के दरवाज़े पर पहुँच गया। 10 इलीशा ख़ुद न निकला
बल्कि किसी को बाहर भेज कर इत्तिला दी, “जा
कर सात बार दरया-ए-यर्दन में नहा लें। फिर आप
के जिस्म को शिफ़ा मिलेगी और आप पाक-साफ़ हो
जाएंगे।”
11 यह सुन कर नामान को ग़ुस्सा आया और वह यह
कह कर चला गया, “मैं ने सोचा कि वह कम अज़
कम बाहर आ कर मुझ से मिलेगा। होना यह चाहिए
था कि वह मेरे सामने खड़े हो कर रब अपने ख़ुदा का
नाम पुकारता और अपना हाथ बीमार जगह के ऊपर
हिला हिला कर मुझे शिफ़ा देता। 12 क्या दमिश्क़ के
दरया अबाना और फ़र्फ़र तमाम इस्राईली दरयाओं से
बेहतर नहीं हैं? अगर नहाने की ज़रूरत है तो मैं क्यूँ
न उन में नहा कर पाक-साफ़ हो जाऊँ?”
यूँ बुड़बुड़ाते हुए वह बड़े ग़ुस्से में चला गया।
13 लेकिन उस के मुलाज़िमों ने उसे समझाने की
कोशिश की। “हमारे आक़ा, अगर नबी आप से
किसी मुश्किल काम का तक़ाज़ा करता तो क्या आप
वह करने के लिए तय्यार न होते? अब जबकि उस ने
सिर्फ़ यह कहा है कि नहा कर पाक-साफ़ हो जाएँ तो
आप को यह ज़रूर करना चाहिए।” 14 आख़िरकार
नामान मान गया और यर्दन की वादी में उतर गया।
दरया पर पहुँच कर उस ने सात बार उस में डुबकी
लगाई और वाक़ई उस का जिस्म लड़के के जिस्म
जैसा सेहतमन्द और पाक-साफ़ हो गया।
15 तब नामान अपने तमाम मुलाज़िमों के साथ मर्द-
ए-ख़ुदा के पास वापस गया। उस के सामने खड़े हो
कर उस ने कहा, “अब मैं जान गया हूँ कि इस्राईल के
ख़ुदा के सिवा पूरी दुनिया में ख़ुदा नहीं है। ज़रा अपने
ख़ादिम से तुह्फ़ा क़बूल करें।” 16 लेकिन इलीशा ने
इन्कार किया, “रब की हयात की क़सम जिस की
ख़िदमत मैं करता हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” नामान
इसरार करता रहा, तो भी वह कुछ लेने के लिए
तय्यार न हुआ।
17 आख़िरकार नामान मान गया। उस ने कहा,
“ठीक है, लेकिन मुझे ज़रा एक काम करने की
इजाज़त दें। मैं यहाँ से इतनी मिट्टी अपने घर ले जाना
चाहता हूँ जितनी दो ख़च्चर उठा कर ले जा सकते हैं।
क्यूँकि आइन्दा मैं उस पर रब को भस्म होने वाली
और ज़बह की क़ुर्बानियाँ चढ़ाना चाहता हूँ। अब से
मैं किसी और माबूद को क़ुर्बानियाँ पेश नहीं करूँगा।
18 लेकिन रब मुझे एक बात के लिए मुआफ़ करे। जब
मेरा बादशाह पूजा करने के लिए रिम्मोन के मन्दिर
में जाता है तो मेरे बाज़ू का सहारा लेता है। यूँ मुझे
भी उस के साथ झुक जाना पड़ता है जब वह बुत के

सामने औंधे मुँह झुक जाता है। रब मेरी यह हरकत
मुआफ़ कर दे।”
19 इलीशा ने जवाब दिया, “सलामती से जाएँ।”

जैहाज़ी का लालच

नामान रवाना हुआ 20 तो कुछ देर के बाद इलीशा
का नौकर जैहाज़ी सोचने लगा, “मेरे आक़ा ने शाम
के इस बन्दे नामान पर हद से ज़्यादा नर्मदिली का
इज़हार किया है। चाहिए तो था कि वह उस के तुह्फ़े
क़बूल कर लेता। रब की हयात की क़सम, मैं उस
के पीछे दौड़ कर कुछ न कुछ उस से ले लूँगा।”
21 चुनाँचे जैहाज़ी नामान के पीछे भागा। जब नामान
ने उसे देखा तो वह रथ से उतर कर जैहाज़ी से मिलने
गया और पूछा, “क्या सब ख़ैरियत है?” 22 जैहाज़ी
ने जवाब दिया, “जी, सब ख़ैरियत है। मेरे आक़ा ने
मुझे आप को इत्तिला देने भेजा है कि अभी अभी
नबियों के गुरोह के दो जवान इफ़्राईम के पहाड़ी
इलाक़े से मेरे पास आए हैं। मेहरबानी करके उन्हें 34
किलोग्राम चाँदी और दो क़ीमती सूट दे दें।” 23 नामान
बोला, “ज़रूर, बल्कि 68 किलोग्राम चाँदी ले लें।”
इस बात पर वह बज़िद रहा। उस ने 68 किलोग्राम
चाँदी बोरियों में लपेट ली, दो सूट चुन लिए और सब
कुछ अपने दो नौकरों को दे दिया ताकि वह सामान
जैहाज़ी के आगे आगे ले चलें।
24 जब वह उस पहाड़ के दामन में पहुँचे जहाँ
इलीशा रहता था तो जैहाज़ी ने सामान नौकरों से ले
कर अपने घर में रख छोड़ा, फिर दोनों को रुख़्सत
कर दिया। 25 फिर वह जा कर इलीशा के सामने खड़ा
हो गया। इलीशा ने पूछा, “जैहाज़ी, तुम कहाँ से आए
हो?” उस ने जवाब दिया, “मैं कहीं नहीं गया था।”
26 लेकिन इलीशा ने एतिराज़ किया, “क्या मेरी रूह
तुम्हारे साथ नहीं थी जब नामान अपने रथ से उतर
कर तुम से मिलने आया? क्या आज चाँदी, कपड़े,
ज़ैतून और अंगूर के बाग़, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल,
नौकर और नौकरानियाँ हासिल करने का वक़्त था?
27 अब नामान की जिल्दी बीमारी हमेशा तक तुम्हें
और तुम्हारी औलाद को लगी रहेगी।”
जब जैहाज़ी कमरे से निकला तो जिल्दी बीमारी उसे
लग चुकी थी। वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गया था।

कुल्हाड़ी का लोहा पानी की सतह पर तैरता है

6 1 एक दिन कुछ नबी इलीशा के पास आ कर
शिकायत करने लगे, “जिस तंग जगह पर हम
आप के पास आ कर ठहरे हैं उस में हमारे लिए रहना
मुश्किल है। 2 क्यूँ न हम दरया-ए-यर्दन पर जाएँ और
हर आदमी वहाँ से शहतीर ले आए ताकि हम रहने
की नई जगह बना सकें।” इलीशा बोला, “ठीक है,
जाएँ।” 3 किसी ने गुज़ारिश की, “बराह-ए-करम हमारे
साथ चलें।” नबी राज़ी हो कर 4 उन के साथ रवाना
हुआ।
दरया-ए-यर्दन के पास पहुँचते ही वह दरख़्त काटने
लगे। 5 काटते काटते अचानक किसी की कुल्हाड़ी
का लोहा पानी में गिर गया। वह चिल्ला उठा, “हाय
मेरे आक़ा! यह मेरा नहीं था, मैं ने तो उसे किसी से
उधार लिया था।” 6 इलीशा ने सवाल किया, “लोहा
कहाँ पानी में गिरा?” आदमी ने उसे जगह दिखाई
तो नबी ने किसी दरख़्त से शाख़ काट कर पानी में
फैंक दी। अचानक लोहा पानी की सतह पर आ कर
तैरने लगा। 7 इलीशा बोला, “इसे पानी से निकाल
लो!” आदमी ने अपना हाथ बढ़ा कर लोहे को पकड़
लिया।

शाम के जंगी मन्सूबे इलीशा के बाइस नाकाम रहते हैं

8 शाम और इस्राईल के दरमियान जंग थी। जब
कभी बादशाह अपने अफ़्सरों से मश्वरा करके कहता,
“हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह अपनी लश्करगाह लगा
लेंगे” 9 तो फ़ौरन मर्द-ए-ख़ुदा इस्राईल के बादशाह
को आगाह करता, “फ़ुलाँ जगह से मत गुज़रना,
क्यूँकि शाम के फ़ौजी वहाँ घात में बैठे हैं।” 10 तब
इस्राईल का बादशाह अपने लोगों को मज़कूरा जगह

पर भेजता और वहाँ से गुज़रने से मुह्तात रहता था। ऐसा न सिर्फ़ एक या दो दफ़ा बल्कि कई मर्तबा हुआ।

11 आख़िरकार शाम के बादशाह ने बहुत रंजीदा
हो कर अपने अफ़सरों को बुलाया और पूछा, “क्या
कोई मुझे बता सकता है कि हम में से कौन इस्राईल
के बादशाह का साथ देता है?” 12 किसी अफ़सर ने
जवाब दिया, “मेरे आक़ा और बादशाह, हम में से
कोई नहीं है। मसला यह है कि इस्राईल का नबी
इलीशा इस्राईल के बादशाह को वह बातें भी बता
देता है जो आप अपने सोने के कमरे में बयान करते
हैं।” 13 बादशाह ने हुक्म दिया, “जाएँ, उस का पता
करें ताकि हम अपने फ़ौजियों को भेज कर उसे पकड़
लें।”

बादशाह को इत्तिला दी गई कि इलीशा दूतैन नामी
शहर में है। 14 उस ने फ़ौरन एक बड़ी फ़ौज रथों और
घोड़ों समेत वहाँ भेज दी। उन्हों ने रात के वक़्त पहुँच
कर शहर को घेर लिया। 15 जब इलीशा का नौकर
सुब्ह-सवेरे जाग उठा और घर से निकला तो क्या
देखता है कि पूरा शहर एक बड़ी फ़ौज से घिरा हुआ
है जिस में रथ और घोड़े भी शामिल हैं। उस ने इलीशा
से कहा, “हाय मेरे आक़ा, हम क्या करें?” 16 लेकिन
इलीशा ने उसे तसल्ली दी, “डरो मत! जो हमारे साथ
हैं वह उन की निस्बत कहीं ज़्यादा हैं जो दुश्मन के
साथ हैं।” 17 फिर उस ने दुआ की, “ऐ रब, नौकर की
आँखें खोल ताकि वह देख सके।” रब ने इलीशा के
नौकर की आँखें खोल दीं तो उस ने देखा कि पहाड़
पर इलीशा के इर्दगिर्द आतिशीं घोड़े और रथ फैले
हुए हैं।

18 जब दुश्मन इलीशा की तरफ़ बढ़ने लगा तो उस
ने दुआ की, “ऐ रब, इन को अंधा कर दे!” रब ने
इलीशा की सुनी और उन्हें अंधा कर दिया। 19 फिर
इलीशा उन के पास गया और कहा, “यह रास्ता
सहीह नहीं। आप ग़लत शहर के पास पहुँच गए हैं।
मेरे पीछे हो लें तो मैं आप को उस आदमी के पास
पहुँचा दूँगा जिसे आप ढूँड रहे हैं।” यह कह कर वह
उन्हें सामरिया ले गया।

20 जब वह शहर में दाख़िल हुए तो इलीशा ने दुआ
की, “ऐ रब, फ़ौजियों की आँखें खोल दे ताकि वह
देख सकें।” तब रब ने उन की आँखें खोल दीं, और
उन्हें मालूम हुआ कि हम सामरिया में फंस गए हैं।

21 जब इस्राईल के बादशाह ने अपने दुश्मनों को
देखा तो उस ने इलीशा से पूछा, “मेरे बाप, क्या मैं
उन्हें मार दूँ? क्या मैं उन्हें मार दूँ?” 22 लेकिन इलीशा
ने मना किया, “ऐसा मत करें। क्या आप अपने जंगी
क़ैदियों को मार देते हैं? नहीं, उन्हें खाना खिलाएँ,
पानी पिलाएँ और फिर उन के मालिक के पास वापस
भेज दें।”

23 चुनाँचे बादशाह ने उन के लिए बड़ी ज़ियाफ़त
का एहतिमाम किया और खाने-पीने से फ़ारिग़ होने
पर उन्हें उन के मालिक के पास वापस भेज दिया।
इस के बाद इस्राईल पर शाम की तरफ़ से लूट-मार
के छापे बन्द हो गए।

सामरिया का मुहासरा

24 कुछ देर के बाद शाम का बादशाह बिन-हदद
अपनी पूरी फ़ौज जमा करके इस्राईल पर चढ़ आया
और सामरिया का मुहासरा किया। 25 नतीजे में शहर
में शदीद काल पड़ा। आख़िर में गधे का सर चाँदी
के 80 सिक्कों में और कबूतर की मुट्ठी भर बीट चाँदी
के 5 सिक्कों में मिलती थी।

26 एक दिन इस्राईल का बादशाह यूराम शहर की
फ़सील पर सैर कर रहा था तो एक औरत ने उस
से इल्तिमास की, “ऐ मेरे आक़ा और बादशाह, मेरी
मदद कीजिए।” 27 बादशाह ने जवाब दिया, “अगर
रब आप की मदद नहीं करता तो मैं किस तरह आप
की मदद करूँ? न मैं गाहने की जगह जा कर आप
को अनाज दे सकता हूँ, न अंगूर का रस निकालने की
जगह जा कर आप को रस पहुँचा सकता हूँ। 28 फिर
भी मुझे बताएँ, मसला क्या है?” औरत बोली, “इस
औरत ने मुझ से कहा था, ‘आएँ, आज आप अपने
बेटे को क़ुर्बान करें ताकि हम उसे खा लें, तो फिर
कल हम मेरे बेटे को खा लेंगे।’ 29 चुनाँचे हम ने मेरे

बेटे को पका कर खा लिया। अगले दिन मैं ने उस से कहा, 'अब अपने बेटे को दे दें ताकि उसे भी खा लें।' लेकिन उस ने उसे छुपाए रखा।"

30 यह सुन कर बादशाह ने रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़ डाले। चूँकि वह अभी तक फ़सील पर खड़ा था इस लिए सब लोगों को नज़र आया कि कपड़ों के नीचे वह टाट पहने हुए था। 31 उस ने पुकारा, "अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं इलीशा बिन साफ़त का आज ही सर क़लम न करूँ!"

32 उस ने एक आदमी को इलीशा के पास भेजा और ख़ुद भी उस के पीछे चल पड़ा। इलीशा उस वक़्त घर में था, और शहर के बुज़ुर्ग उस के पास बैठे थे। बादशाह का क़ासिद अभी रास्ते में था कि इलीशा बुज़ुर्गों से कहने लगा, "अब ध्यान करें, इस क़ातिल बादशाह ने किसी को मेरा सर क़लम करने के लिए भेज दिया है। उसे अन्दर आने न दें बल्कि दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। उस के पीछे पीछे उस के मालिक के क़दमों की आहट भी सुनाई दे रही है।"

33 इलीशा अभी बात कर ही रहा था कि क़ासिद पहुँच गया और उस के पीछे बादशाह भी। बादशाह बोला, "रब ही ने हमें इस मुसीबत में फंसा दिया है। मैं मज़ीद उस की मदद के इन्तिज़ार में क्यूँ रहूँ?"

7 1 तब इलीशा बोला, "रब का फ़रमान सुनें! रब फ़रमाता है कि कल इसी वक़्त शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।" 2 जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा बादशाह लेता था वह मर्द-ए-ख़ुदा की बात सुन कर बोल उठा, "यह नामुमकिन है, ख़्वाह रब आसमान के दरीचे क्यूँ न खोल दे।" इलीशा ने जवाब दिया, "आप अपनी आँखों से इस का मुशाहदा करेंगे, लेकिन ख़ुद उस में से कुछ न खाएँगे।"

शाम के फ़ौजी फ़रार हो जाते हैं

3 शहर से बाहर दरवाज़े के क़रीब कोढ़ के चार मरीज़ बैठे थे। अब यह आदमी एक दूसरे से कहने लगे, "हम यहाँ बैठ कर मौत का इन्तिज़ार क्यूँ करें? 4 शहर में काल है। अगर उस में जाएँ तो भूके मर जाएंगे, लेकिन यहाँ रहने से भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। तो क्यूँ न हम शाम की लश्करगाह में जा कर अपने आप को उन के हवाले करें। अगर वह हमें ज़िन्दा रहने दें तो अच्छा रहेगा, और अगर वह हमें क़त्ल भी कर दें तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। यहाँ रह कर भी हमें मरना ही है।"

5 शाम के धुन्दल्के में वह रवाना हुए। लेकिन जब लश्करगाह के किनारे तक पहुँचे तो एक भी आदमी नज़र न आया। 6 क्यूँकि रब ने शाम के फ़ौजियों को रथों, घोड़ों और एक बड़ी फ़ौज का शोर सुना दिया था। वह एक दूसरे से कहने लगे, "इस्राईल के बादशाह ने हित्ती और मिस्री बादशाहों को उजरत पर बुलाया ताकि वह हम पर हम्ला करें!" 7 डर के मारे वह शाम के धुन्दल्के में फ़रार हो गए थे। उन के ख़ैमे, घोड़े, गधे बल्कि पूरी लश्करगाह पीछे रह गई थी जबकि वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गए थे।

8 जब कौड़ी लश्करगाह में दाख़िल हुए तो उन्हों ने एक ख़ैमे में जा कर जी भर कर खाना खाया और मै पी। फिर उन्हों ने सोना, चाँदी और कपड़े उठा कर कहीं छुपा दिए। वह वापस आ कर किसी और ख़ैमे में गए और उस का सामान जमा करके उसे भी छुपा दिया। 9 लेकिन फिर वह आपस में कहने लगे, "जो कुछ हम कर रहे हैं ठीक नहीं। आज ख़ुशी का दिन है, और हम यह ख़ुशख़बरी दूसरों तक नहीं पहुँचा रहे। अगर हम सुब्ह तक इन्तिज़ार करें तो क़ुसूरवार ठहरेंगे। आएँ, हम फ़ौरन वापस जा कर बादशाह के घराने को इत्तिला दें।"

10 चुनाँचे वह शहर के दरवाज़े के पास गए और पहरेदारों को आवाज़ दे कर उन्हें सब कुछ सुनाया, "हम शाम की लश्करगाह में गए तो वहाँ न कोई दिखाई दिया, न किसी की आवाज़ सुनाई दी। घोड़े और गधे बंधे हुए थे और ख़ैमे तर्तीब से खड़े थे, लेकिन आदमी एक भी मौजूद नहीं था!"

11 दरवाज़े के पहरेदारों ने आवाज़ दे कर दूसरों को
ख़बर पहुँचाई तो शहर के अन्दर बादशाह के घराने
को इत्तिला दी गई। 12 गो रात का वक़्त था तो भी
बादशाह ने उठ कर अपने अफ़सरों को बुलाया और
कहा, “मैं आप को बताता हूँ कि शाम के फ़ौजी क्या
कर रहे हैं। वह तो ख़ूब जानते हैं कि हम भूके मर
रहे हैं। अब वह अपनी लश्करगाह को छोड़ कर
खुले मैदान में छुप गए हैं, क्यूँकि वह समझते हैं
कि इस्राईली ख़ाली लश्करगाह को देख कर शहर
से ज़रूर निकलेंगे और फिर हम उन्हें ज़िन्दा पकड़
कर शहर में दाख़िल हो जाएंगे।”
13 लेकिन एक अफ़सर ने मश्वरा दिया, “बेहतर है
कि हम चन्द एक आदमियों को पाँच बचे हुए घोड़ों
के साथ लश्करगाह में भेजें। अगर वह पकड़े जाएँ
तो कोई बात नहीं। क्यूँकि अगर वह यहाँ रहें तो फिर
भी उन्हें हमारे साथ मरना ही है।”
14 चुनाँचे दो रथों को घोड़ों समेत तय्यार किया
गया, और बादशाह ने उन्हें शाम की लश्करगाह में
भेज दिया। रथबानों को उस ने हुक्म दिया, “जाएँ
और पता करें कि क्या हुआ है।” 15 वह रवाना हुए
और शाम के फ़ौजियों के पीछे पीछे चलने लगे।
रास्ते में हर तरफ़ कपड़े और सामान बिखरा पड़ा था,
क्यूँकि फ़ौजियों ने भागते भागते सब कुछ फैंक कर
रास्ते में छोड़ दिया था। इस्राईली रथसवार दरया-ए-
यर्दन तक पहुँचे और फिर बादशाह के पास वापस
आ कर सब कुछ कह सुनाया।
16 तब सामरिया के बाशिन्दे शहर से निकल आए
और शाम की लश्करगाह में जा कर सब कुछ लूट
लिया। यूँ वह कुछ पूरा हुआ जो रब ने फ़रमाया
था कि साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11
किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।
17 जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा बादशाह लेता
था उसे उस ने दरवाज़े की निगरानी करने के लिए भेज
दिया था। लेकिन जब लोग बाहर निकले तो अफ़सर
उन की ज़द में आ कर उन के पैरों तले कुचला गया।
यूँ वैसा ही हुआ जैसा मर्द-ए-ख़ुदा ने उस वक़्त कहा
था जब बादशाह उस के घर आया था। 18 क्यूँकि
इलीशा ने बादशाह को बताया था, “कल इसी वक़्त
शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन
मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के
लिए बिकेगा।” 19 अफ़सर ने एतिराज़ किया था, “यह
नामुमकिन है, ख़्वाह रब आसमान के दरीचे क्यूँ न
खोल दे।” और मर्द-ए-ख़ुदा ने जवाब दिया था, “आप
अपनी आँखों से इस का मुशाहदा करेंगे, लेकिन ख़ुद
उस में से कुछ नहीं खाएँगे।”
20 अब यह पेशगोई पूरी हुई, क्यूँकि बेकाबू लोगों
ने उसे शहर के दरवाज़े पर पाँओ तले कुचल दिया,
और वह मर गया।

यूराम बादशाह शूनीमी औरत की ज़मीन वापस कर देता है

8 1 एक दिन इलीशा ने उस औरत को जिस का
बेटा उस ने ज़िन्दा किया था मश्वरा दिया, “अपने
ख़ानदान को ले कर आरिज़ी तौर पर बैरून-ए-मुल्क
चली जाएँ, क्यूँकि रब ने हुक्म दिया है कि मुल्क में
सात साल तक काल होगा।” 2 शूनीम की औरत ने
मर्द-ए-ख़ुदा की बात मान ली। अपने ख़ानदान को ले
कर वह चली गई और सात साल फ़िलिस्ती मुल्क
में रही। 3 सात साल गुज़र गए तो वह उस मुल्क से
वापस आई। लेकिन किसी और ने उस के घर और
ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर रखा था, इस लिए वह मदद
के लिए बादशाह के पास गई।
4 ऐन उस वक़्त जब वह दरबार में पहुँची तो
बादशाह मर्द-ए-ख़ुदा इलीशा के नौकर जैहाज़ी से
गुफ़्तगु कर रहा था। बादशाह ने उस से दरख़्वास्त
की थी, “मुझे वह तमाम बड़े काम सुना दो जो इलीशा
ने किए हैं।” 5 और अब जब जैहाज़ी सुना रहा था कि
इलीशा ने मुर्दा लड़के को किस तरह ज़िन्दा कर दिया
तो उस की माँ अन्दर आ कर बादशाह से इल्तिमास
करने लगी, “घर और ज़मीन वापस मिलने में मेरी
मदद कीजिए।” उसे देख कर जैहाज़ी ने बादशाह से
कहा, “मेरे आक़ा और बादशाह, यह वही औरत

है और यह उस का वही बेटा है जिसे इलीशा ने ज़िन्दा कर दिया था।” 6 बादशाह ने औरत से सवाल किया, “क्या यह सहीह है?” औरत ने तस्दीक़ में उसे दुबारा सब कुछ सुनाया। तब उस ने औरत का मुआमला किसी दरबारी अफ़सर के सपुर्द करके हुक्म दिया, “ध्यान दें कि इसे पूरी मिलकियत वापस मिल जाए! और जितने पैसे क़ब्ज़ा करने वाला औरत की ग़ैरमौजूदगी में ज़मीन की फ़सलों से कमा सका वह भी औरत को दे दिए जाएँ।”

बिन-हदद की मौत की पेशगोई

7 एक दिन इलीशा दमिश्क़ आया। उस वक़्त शाम का बादशाह बिन-हदद बीमार था। जब उसे इत्तिला मिली कि मर्द-ए-ख़ुदा आया है 8 तो उस ने अपने अफ़सर हज़ाएल को हुक्म दिया, “मर्द-ए-ख़ुदा के लिए तुह्फ़ा ले कर उसे मिलने जाएँ। वह रब से दरयाफ़्त करे कि क्या मैं बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?”

9 हज़ाएल 40 ऊँटों पर दमिश्क़ की बेहतरीन पैदावार लाद कर इलीशा से मिलने गया। उस के पास पहुँच कर वह उस के सामने खड़ा हुआ और कहा, “आप के बेटे शाम के बादशाह बिन-हदद ने मुझे आप के पास भेजा है। वह यह जानना चाहता है कि क्या मैं अपनी बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?”

10 इलीशा ने जवाब दिया, “जाएँ और उसे इत्तिला दें, ‘आप ज़रूर शिफ़ा पाएँगे।’ लेकिन रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है कि वह हक़ीक़त में मर जाएगा।” 11 इलीशा ख़ामोश हो गया और टिकटिकी बांध कर बड़ी देर तक उसे घूरता रहा, फिर रोने लगा। 12 हज़ाएल ने पूछा, “मेरे आक़ा, आप क्यूँ रो रहे हैं?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे मालूम है कि आप इस्राईलियों को कितना नुक़्सान पहुँचाएँगे। आप उन की क़िलाबन्द आबादियों को आग लगा कर उन के जवानों को तलवार से क़त्ल कर देंगे, उन के छोटे बच्चों को ज़मीन पर पटख़ देंगे और उन की हामिला औरतों के पेट चीर डालेंगे।” 13 हज़ाएल बोला, “मुझ जैसे कुत्ते की क्या हैसियत है कि इतना बड़ा काम करूँ?” इलीशा ने कहा, “रब ने मुझे दिखा दिया है कि आप शाम के बादशाह बन जाएंगे।”

14 इस के बाद हज़ाएल चला गया और अपने मालिक के पास वापस आया। बादशाह ने पूछा, “इलीशा ने आप को क्या बताया?” हज़ाएल ने जवाब दिया, “उस ने मुझे यक़ीन दिलाया कि आप शिफ़ा पाएँगे।” 15 लेकिन अगले दिन हज़ाएल ने कम्बल ले कर पानी में भिगो दिया और उसे बादशाह के मुँह पर रख दिया। बादशाह का साँस रुक गया और वह मर गया। फिर हज़ाएल तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

16 यहूराम बिन यहूसफ़त इस्राईल के बादशाह यूराम की हुकूमत के पाँचवें साल में यहूदाह का बादशाह बना। शुरू में वह अपने बाप के साथ हुकूमत करता था। 17 यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रह कर 8 साल तक हुकूमत करता रहा। 18 उस की शादी इस्राईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से हुई थी, और वह इस्राईल के बादशाहों और ख़ासकर अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा। उस का चाल-चलन रब को नापसन्द था। 19 तो भी वह अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर यहूदाह को तबाह नहीं करना चाहता था, क्यूँकि उस ने दाऊद से वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का चराग़ हमेशा तक जलता रहेगा।

20 यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने बग़ावत की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके अपना बादशाह मुक़र्रर किया। 21 तब यहूराम अपने तमाम रथों को ले कर सईर के क़रीब आया। जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उस के रथों पर मुक़र्रर अफ़सरों को घेर लिया। रात को बादशाह घेरने वालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब हो गया, लेकिन उस के फ़ौजी उसे छोड़ कर अपने अपने घर भाग गए। 22 इस वजह से मुल्क-ए-अदोम आज तक दुबारा यहूदाह की हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी

वक़्त लिब्ना शहर भी सरकश हो कर ख़ुदमुख़्तार हो गया।

23 बाक़ी जो कुछ यहूराम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-यहूदा
की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है।
24 जब यहूराम मर कर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।
फिर उस का बेटा अख़ज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

25 अख़ज़ियाह बिन यहूराम इस्राईल के बादशाह
यूराम बिन अख़ियब की हुकूमत के 12वें साल में
यहूदाह का बादशाह बना। 26 वह 22 साल की उम्र
में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रह कर एक
साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह इस्राईल
के बादशाह उम्री की पोती थी। 27 अख़ज़ियाह भी
अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चल पड़ा।
अख़ियब के घराने की तरह उस का चाल-चलन रब
को नापसन्द था। वजह यह थी कि उस का रिश्ता
अख़ियब के ख़ानदान के साथ बंध गया था। 28 एक
दिन अख़ज़ियाह बादशाह यूराम बिन अख़ियब के
साथ मिल कर रामात-जिलिआद गया ताकि शाम के
बादशाह हज़ाएल से लड़े। जब जंग छिड़ गई तो यूराम
शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़्मी हुआ 29 और मैदान-
ए-जंग को छोड़ कर यज़्रएल वापस आया ताकि
ज़ख़्म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो
यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह बिन यहूराम उस
का हाल पूछने के लिए यज़्रएल आया।

इलीशा याहू को मसह करता है

9 1 एक दिन इलीशा नबी ने नबियों के गुरोह में
से एक को बुला कर कहा, "सफ़र के लिए
कमरबस्ता हो कर रामात-जिलिआद के लिए रवाना
हो जाएँ। ज़ैतून के तेल की यह कुप्पी अपने साथ
ले जाएँ। 2 वहाँ पहुँच कर याहू बिन यहूसफ़त बिन
निम्सी को तलाश करें। जब उस से मुलाक़ात हो तो
उसे उस के साथियों से अलग करके किसी अन्दरूनी
कमरे में ले जाएँ। 3 वहाँ कुप्पी ले कर याहू के सर
पर तेल उंडेल दें और कहें, 'रब फ़रमाता है कि मैं
तुझे तेल से मसह करके इस्राईल का बादशाह बना
देता हूँ।' इस के बाद देर न करें बल्कि फ़ौरन दरवाज़े
को खोल कर भाग जाएँ!"

4 चुनाँचे जवान नबी रामात-जिलिआद के लिए
रवाना हुआ। 5 जब वहाँ पहुँचा तो फ़ौजी अफ़्सर मिल
कर बैठे हुए थे। वह उन के क़रीब गया और बोला,
"मेरे पास कमाँडर के लिए पैग़ाम है।" याहू ने सवाल
किया, "हम में से किस के लिए?" नबी ने जवाब
दिया, "आप ही के लिए।"

6 याहू खड़ा हुआ और उस के साथ घर में गया।
वहाँ नबी ने याहू के सर पर तेल उंडेल कर कहा,
"रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैं ने तुझे मसह
करके अपनी क़ौम का बादशाह बना दिया है। 7 तुझे
अपने मालिक अख़ियब के पूरे ख़ानदान को हलाक
करना है। यूँ मैं उन नबियों का इन्तिक़ाम लूँगा जो
मेरी ख़िदमत करते हुए शहीद हो गए हैं। हाँ, मैं रब के
उन तमाम ख़ादिमों का बदला लूँगा जिन्हें ईज़बिल ने
क़त्ल किया है। 8 अख़ियब का पूरा घराना तबाह हो
जाएगा। मैं उस के ख़ानदान के हर मर्द को हलाक कर
दूँगा, ख़्वाह वह बालिग़ हो या बच्चा। 9 मेरा अख़ियब
के ख़ानदान के साथ वही सुलूक होगा जो मैं ने
यरुबिआम बिन नबात और बाशा बिन अख़ियाह के
ख़ानदानों के साथ किया। 10 जहाँ तक ईज़बिल का
ताल्लुक़ है उसे दफ़नाया नहीं जाएगा बल्कि कुत्ते उसे
यज़्रएल की ज़मीन पर खा जाएंगे'।" यह कह कर
नबी दरवाज़ा खोल कर भाग गया।

11 जब याहू निकल कर अपने साथी अफ़्सरों के
पास वापस आया तो उन्हों ने पूछा, "क्या सब
ख़ैरियत है? यह दीवाना आप से क्या चाहता था?"
याहू बोला, "ख़ैर, आप तो इस क़िस्म के लोगों
को जानते हैं कि किस तरह की गप्पें हाँकते हैं।"
12 लेकिन उस के साथी इस जवाब से मुत्मइन न हुए,

“झूट! सहीह बात बताएँ।” फिर याहू ने उन्हें खुल
कर बात बताई, “आदमी ने कहा, ‘रब फ़रमाता है
कि मैं ने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बना
दिया है’।”
13 यह सुन कर अफ़सरों ने जल्दी जल्दी अपनी
चादरों को उतार कर उस के सामने सीढ़ियों पर बिछा
दिया। फिर वह नरसिंगा बजा बजा कर नारा लगाने
लगे, “याहू बादशाह ज़िन्दाबाद!”

यूराम और अख़ज़ियाह का अन्जाम

14 याहू बिन यहूसफ़त बिन निम्सी फ़ौरन यूराम
बादशाह को तख़्त से उतारने के मन्सूबे बांधने लगा।
यूराम उस वक़्त पूरी इस्राईली फ़ौज समेत रामात-
जिलिआद के क़रीब दमिश्क़ के बादशाह हज़ाएल
से लड़ रहा था। लेकिन शहर का दिफ़ा करते करते
15 बादशाह शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़्मी हो गया
था और मैदान-ए-जंग को छोड़ कर यज़्रएल वापस
आया था ताकि ज़ख़्म भर जाएँ। अब याहू ने अपने
साथी अफ़सरों से कहा, “अगर आप वाक़ई मेरे साथ
हैं तो किसी को भी शहर से निकलने न दें, वर्ना ख़तरा
है कि कोई यज़्रएल जा कर बादशाह को इत्तिला
दे दे।” 16 फिर वह रथ पर सवार हो कर यज़्रएल
चला गया जहाँ यूराम आराम कर रहा था। उस वक़्त
यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह भी यूराम से मिलने
के लिए यज़्रएल आया हुआ था।
17 जब यज़्रएल के बुर्ज पर खड़े पहरेदार ने याहू के
ग़ोल को शहर की तरफ़ आते हुए देखा तो उस ने
बादशाह को इत्तिला दी। यूराम ने हुक्म दिया, “एक
घुड़सवार को उन की तरफ़ भेज कर उन से मालूम
करें कि सब ख़ैरियत है या नहीं।” 18 घुड़सवार शहर
से निकला और याहू के पास आ कर कहा, “बादशाह
पूछते हैं कि क्या सब ख़ैरियत है?” याहू ने जवाब
दिया, “इस से आप का क्या वास्ता? आएँ, मेरे
पीछे हो लें।” बुर्ज पर के पहरेदार ने बादशाह को
इत्तिला दी, “क़ासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन
वह वापस नहीं आ रहा।”
19 तब बादशाह ने एक और घुड़सवार को भेज
दिया। याहू के पास पहुँच कर उस ने भी कहा,
“बादशाह पूछते हैं कि क्या सब ख़ैरियत है?” याहू
ने जवाब दिया, “इस से आप का क्या वास्ता? मेरे
पीछे हो लें।” 20 बुर्ज पर के पहरेदार ने यह देख कर
बादशाह को इत्तिला दी, “हमारा क़ासिद उन तक
पहुँच गया है, लेकिन यह भी वापस नहीं आ रहा।
ऐसा लगता है कि उन का राहनुमा याहू बिन निम्सी
है, क्यूँकि वह अपने रथ को दीवाने की तरह चला
रहा है।”
21 यूराम ने हुक्म दिया, “मेरे रथ को तय्यार करो!”
फिर वह और यहूदाह का बादशाह अपने अपने रथ
में सवार हो कर याहू से मिलने के लिए शहर से
निकले। उन की मुलाक़ात उस बाग़ के पास हुई जो
नबोत यज़्रएली से छीन लिया गया था। 22 याहू को
पहचान कर यूराम ने पूछा, “याहू, क्या सब ख़ैरियत
है?” याहू बोला, “ख़ैरियत कैसे हो सकती है जब
तेरी माँ ईज़बिल की बुतपरस्ती और जादूगरी हर
तरफ़ फैली हुई है?” 23 यूराम बादशाह चिल्ला उठा,
“ऐ अख़ज़ियाह, ग़द्दारी!” और मुड़ कर भागने लगा।
24 याहू ने फ़ौरन अपनी कमान खैंच कर तीर चलाया
जो सीधा यूराम के कंधों के दरमियान यूँ लगा कि
दिल में से गुज़र गया। बादशाह एक दम अपने रथ में
गिर पड़ा। 25 याहू ने अपने साथ वाले अफ़सर बिद्क़र
से कहा, “इस की लाश उठा कर उस बाग़ में फैंक
दें जो नबोत यज़्रएली से छीन लिया गया था। क्यूँकि
वह दिन याद करें जब हम दोनों अपने रथों को इस
के बाप अख़ियब के पीछे चला रहे थे और रब ने
अख़ियब के बारे में एलान किया, 26 ‘यक़ीन जान
कि कल नबोत और उस के बेटों का क़त्ल मुझ से
छुपा न रहा। इस का मुआवज़ा मैं तुझे नबोत की इसी
ज़मीन पर दूँगा।’ चुनाँचे अब यूराम को उठा कर उस
ज़मीन पर फैंक दें ताकि रब की बात पूरी हो जाए।”
27 जब यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह ने यह देखा
तो वह बैत-गान का रास्ता ले कर फ़रार हो गया।
याहू उस का ताक़्क़ुब करते हुए चिल्लाया, “उसे भी

मार दो!” इब्लीआम के क़रीब जहाँ रास्ता जूर की
तरफ़ चढ़ता है अख़ज़ियाह अपने रथ में चलते चलते
ज़ख़्मी हुआ। वह बच तो निकला लेकिन मजिद्दो
पहुँच कर मर गया। 28 उस के मुलाज़िम लाश को
रथ पर रख कर यरूशलम लाए। वहाँ उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता
है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। 29 अख़ज़ियाह
यूराम बिन अख़ियब की हुकूमत के 11वें साल में
यहूदाह का बादशाह बन गया था।

ईज़बिल का अन्जाम

30 इस के बाद याहू यज़्रएल चला गया। जब
ईज़बिल को इत्तिला मिली तो उस ने अपनी आँखों में
सुरमा लगा कर अपने बालों को ख़ूबसूरती से संवारा
और फिर खिड़की से बाहर झाँकने लगी। 31 जब याहू
महल के गेट में दाख़िल हुआ तो ईज़बिल चिल्लाई,
“ऐ ज़िम्री जिस ने अपने मालिक को क़त्ल कर दिया
है, क्या सब ख़ैरियत है?” 32 याहू ने ऊपर देख कर
आवाज़ दी, “कौन मेरे साथ है, कौन?” दो या तीन
ख़्वाजासराओं ने खिड़की से बाहर देख कर उस पर
नज़र डाली 33 तो याहू ने उन्हें हुक्म दिया, “उसे नीचे
फैंक दो!”

तब उन्हों ने मलिका को नीचे फैंक दिया। वह इतने
ज़ोर से ज़मीन पर गिरी कि ख़ून के छींटे दीवार और
घोड़ों पर पड़ गए। याहू और उस के लोगों ने अपने
रथों को उस के ऊपर से गुज़रने दिया। 34 फिर याहू
महल में दाख़िल हुआ और खाया और पिया। इस के
बाद उस ने हुक्म दिया, “कोई जाए और उस लानती
औरत को दफ़न करे, क्यूँकि वह बादशाह की बेटी
थी।”

35 लेकिन जब मुलाज़िम उसे दफ़न करने के लिए
बाहर निकले तो देखा कि सिर्फ़ उस की खोपड़ी, हाथ
और पाँओ बाक़ी रह गए हैं। 36 याहू के पास वापस
जा कर उन्हों ने उसे आगाह किया। तब उस ने कहा,
“अब सब कुछ पूरा हुआ है जो रब ने अपने ख़ादिम
इल्यास तिश्बी की मारिफ़त फ़रमाया था, ‘यज़्रएल
की ज़मीन पर कुत्ते ईज़बिल की लाश खा जाएंगे।
37 उस की लाश यज़्रएल की ज़मीन पर गोबर की
तरह पड़ी रहेगी ताकि कोई यक़ीन से न कह सके
कि वह कहाँ है’।”

याहू अख़ियब की औलाद को हलाक करता है

10 1 सामरिया में अख़ियब के 70 बेटे थे। अब
याहू ने ख़त लिख कर सामरिया भेज दिए।
यज़्रएल के अफ़सरों, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब
के बेटों के सरपरस्तों को यह ख़त मिल गए, और
उन में ज़ैल की ख़बर लिखी थी,

2 “आप के मालिक के बेटे आप के पास हैं। आप
क़िलाबन्द शहर में रहते हैं, और आप के पास
हथियार, रथ और घोड़े भी हैं। इस लिए मैं आप को
चैलेंज देता हूँ कि यह ख़त पढ़ते ही 3 अपने मालिक
के सब से अच्छे और लाइक़ बेटे को चुन कर उसे
उस के बाप के तख़्त पर बिठा दें। फिर अपने मालिक
के ख़ानदान के लिए लड़ें!”

4 लेकिन सामरिया के बुज़ुर्ग बेहद सहम गए और
आपस में कहने लगे, “अगर दो बादशाह उस का
मुक़ाबला न कर सके तो हम क्या कर सकते हैं?”
5 इस लिए महल के इंचार्ज, सामरिया पर मुक़र्रर
अफ़सर, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब के बेटों के
सरपरस्तों ने याहू को पैग़ाम भेजा, “हम आप के
ख़ादिम हैं और जो कुछ आप कहेंगे हम करने के
लिए तय्यार हैं। हम किसी को बादशाह मुक़र्रर नहीं
करेंगे। जो कुछ आप मुनासिब समझते हैं वह करें।”

6 यह पढ़ कर याहू ने एक और ख़त लिख कर
सामरिया भेजा। उस में लिखा था, “अगर आप वाक़ई
मेरे साथ हैं और मेरे ताबे रहना चाहते हैं तो अपने
मालिक के बेटों के सरों को काट कर कल इस वक़्त
तक यज़्रएल में मेरे पास ले आएँ।” क्यूँकि अख़ियब
के 70 बेटे सामरिया के बड़ों के पास रह कर परवरिश
पा रहे थे। 7 जब ख़त उन के पास पहुँच गया तो इन
आदमियों ने 70 के 70 शहज़ादों को ज़बह कर दिया

और उन के सरों को टोकरों में रख कर यज़्रएल में याहू के पास भेज दिया।

8 एक क़ासिद ने याहू के पास आ कर इत्तिला दी, “वह बादशाह के बेटों के सर ले कर आए हैं।” तब याहू ने हुक्म दिया, “शहर के दरवाज़े पर उन के दो ढेर लगा दो और उन्हें सुब्ह तक वहीं रहने दो।” 9 अगले दिन याहू सुब्ह के वक़्त निकला और दरवाज़े के पास खड़े हो कर लोगों से मुख़ातिब हुआ, “यूराम की मौत के नाते से आप बेइल्ज़ाम हैं। मैं ही ने अपने मालिक के ख़िलाफ़ मन्सूबे बांध कर उसे मार डाला। लेकिन किस ने इन तमाम बेटों का सर क़लम कर दिया? 10 चुनाँचे आज जान लें कि जो कुछ भी रब ने अख़ियब और उस के ख़ानदान के बारे में फ़रमाया है वह पूरा हो जाएगा। जिस का एलान रब ने अपने ख़ादिम इल्यास की मारिफ़त किया है वह उस ने कर लिया है।” 11 इस के बाद याहू ने यज़्रएल में रहने वाले अख़ियब के बाक़ी तमाम रिश्तेदारों, बड़े अफ़्सरों, क़रीबी दोस्तों और पुजारियों को हलाक कर दिया। एक भी न बचा।

12 फिर वह सामरिया के लिए रवाना हुआ। रास्ते में जब बैत-इक़द-रोईम के क़रीब पहुँच गया 13 तो उस की मुलाक़ात यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह के चन्द एक रिश्तेदारों से हुई। याहू ने पूछा, “आप कौन हैं?” उन्हों ने जवाब दिया, “हम अख़ज़ियाह के रिश्तेदार हैं और सामरिया का सफ़र कर रहे हैं। वहाँ हम बादशाह और मलिका के बेटों से मिलना चाहते हैं।” 14 तब याहू ने हुक्म दिया, “उन्हें ज़िन्दा पकड़ो!” उन्हों ने उन्हें ज़िन्दा पकड़ कर बैत-इक़द के हौज़ के पास मार डाला। 42 आदमियों में से एक भी न बचा।

15 उस जगह को छोड़ कर याहू आगे निकला। चलते चलते उस की मुलाक़ात यूनदब बिन रैकाब से हुई जो उस से मिलने आ रहा था। याहू ने सलाम करके कहा, “क्या आप का दिल मेरे बारे में मुख़लिस है जैसा कि मेरा दिल आप के बारे में है?” यूनदब ने जवाब दिया, “जी हाँ।” याहू बोला, “अगर ऐसा है, तो मेरे साथ हाथ मिलाएँ।” यूनदब ने उस के साथ हाथ मिलाया तो याहू ने उसे अपने रथ पर सवार होने दिया। 16 फिर याहू ने कहा, “आएँ मेरे साथ और मेरी रब के लिए जिद्द-ओ-जह्द देखें।” चुनाँचे यूनदब याहू के साथ सामरिया चला गया।

17 सामरिया पहुँच कर याहू ने अख़ियब के ख़ानदान के जितने अफ़राद अब तक बच गए थे हलाक कर दिए। जिस तरह रब ने इल्यास को फ़रमाया था उसी तरह अख़ियब का पूरा घराना मिट गया।

याहू बाल के तमाम पुजारियों को क़त्ल करता है

18 इस के बाद याहू ने तमाम लोगों को जमा करके एलान किया, “अख़ियब ने बाल देवता की परस्तिश थोड़ी की है। मैं कहीं ज़्यादा उस की पूजा करूँगा! 19 अब जा कर बाल के तमाम नबियों, ख़िदमतगुज़ारों और पुजारियों को बुला लाएँ। ख़याल करें कि एक भी दूर न रहे, क्यूँकि मैं बाल को बड़ी क़ुर्बानी पेश करूँगा। जो भी आने से इन्कार करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।”

इस तरह याहू ने बाल के ख़िदमतगुज़ारों के लिए जाल बिछा दिया ताकि वह उस में फंस कर हलाक हो जाएँ। 20–21 उस ने पूरे इस्राईल में क़ासिद भेज कर एलान किया, “बाल देवता के लिए मुक़द्दस ईद मनाएँ!” चुनाँचे बाल के तमाम पुजारी आए, और एक भी इजतिमा से दूर न रहा। इतने जमा हुए कि बाल का मन्दिर एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।

22 याहू ने ईद के कपड़ों के इंचार्ज को हुक्म दिया, “बाल के तमाम पुजारियों को ईद के लिबास दे देना।” चुनाँचे सब को लिबास दिए गए। 23 फिर याहू और यूनदब बिन रैकाब बाल के मन्दिर में दाख़िल हुए, और याहू ने बाल के ख़िदमतगुज़ारों से कहा, “ध्यान दें कि यहाँ आप के साथ रब का कोई ख़ादिम मौजूद न हो। सिर्फ़ बाल के पुजारी होने चाहिएँ।”

24 दोनों आदमी सामने गए ताकि ज़बह की और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करें। इतने में याहू के 80 आदमी बाहर मन्दिर के इर्दगिर्द खड़े हो गए। याहू

ने उन्हें हुक्म दे कर कहा था, “ख़बरदार! जो पूजा
करने वालों में से किसी को बचने दे उसे सज़ा-ए-मौत
दी जाएगी।”
25 जूँ ही याहू भस्म होने वाली क़ुर्बानी को चढ़ाने से
फ़ारिग़ हुआ तो उस ने अपने मुहाफ़िज़ों और अफ़सरों
को हुक्म दिया, “अन्दर जा कर सब को मार देना।
एक भी बचने न पाए।” वह दाख़िल हुए और अपनी
तलवारों को खैंच कर सब को मार डाला। लाशों को
उन्हों ने बाहर फैंक दिया। फिर वह मन्दिर के सब से
अन्दर वाले कमरे में गए 26 जहाँ बुत था। उसे उन्हों
ने निकाल कर जला दिया 27 और बाल का सतून भी
टुकड़े टुकड़े कर दिया। बाल का पूरा मन्दिर ढा दिया
गया, और वह जगह बैत-उल-ख़ला बन गई। आज
तक वह इस के लिए इस्तेमाल होता है।

याहू की हुकूमत

28 इस तरह याहू ने इस्राईल में बाल देवता की पूजा
ख़त्म कर दी। 29 तो भी वह यरुबिआम बिन नबात के
उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबिआम
ने इस्राईल को उकसाया था। बैत-एल और दान में
क़ाइम सोने के बछड़ों की पूजा ख़त्म न हुई।
30 एक दिन रब ने याहू से कहा, “जो कुछ मुझे
पसन्द है उसे तू ने अच्छी तरह सरअन्जाम दिया है,
क्यूँकि तू ने अख़ियब के घराने के साथ सब कुछ
किया है जो मेरी मर्ज़ी थी। इस वजह से तेरी औलाद
चौथी पुश्त तक इस्राईल पर हुकूमत करती रहेगी।”
31 लेकिन याहू ने पूरे दिल से रब इस्राईल के ख़ुदा
की शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारी। वह उन
गुनाहों से बाज़ आने के लिए तय्यार नहीं था जो करने
पर यरुबिआम ने इस्राईल को उकसाया था।
32 याहू की हुकूमत के दौरान रब इस्राईल का
इलाक़ा छोटा करने लगा। शाम के बादशाह हज़ाएल
ने इस्राईल के उस पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया
33 जो दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में था। जद, रूबिन
और मनस्सी का इलाक़ा जिलिआद बसन से ले
कर दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े अरोईर तक शाम के
बादशाह के हाथ में आ गया।
34 बाक़ी जो कुछ याहू की हुकूमत के दौरान हुआ,
जो उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल
हुईं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब
में बयान किया गया है। 35–36 वह 28 साल सामरिया
में बादशाह रहा। वहाँ वह दफ़न भी हुआ। जब वह
मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उस का बेटा
यहूआख़ज़ तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह में अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

11 1 जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को
मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो
वह अख़ज़ियाह की तमाम औलाद को क़त्ल करने
लगी। 2 लेकिन अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा
ने अख़ज़ियाह के छोटे बेटे यूआस को चुपके से उन
शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था
और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा
दिया जिस में बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते थे। इस
तरह वह बच गया। 3 बाद में यूआस को रब के घर में
मुन्तक़िल किया गया जहाँ वह उस के साथ उन छः
सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका
थी।

अतलियाह का अन्जाम और यूआस बादशाह बन जाता है

4 अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में
यहोयदा इमाम ने सौ सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर
अफ़सरों, कारी नामी दस्तों और शाही मुहाफ़िज़ों को
रब के घर में बुला लिया। वहाँ उस ने क़सम खिला
कर उन से अह्द बांधा। फिर उस ने बादशाह के बेटे
यूआस को पेश करके 5 उन्हें हिदायत की, “अगले
सबत के दिन आप में से जितने ड्यूटी पर आएँगे वह
तीन हिस्सों में तक़्सीम हो जाएँ। एक हिस्सा शाही
महल पर पहरा दे, 6 दूसरा सूर नामी दरवाज़े पर और
तीसरा शाही मुहाफ़िज़ों के पीछे के दरवाज़े पर। यूँ

आप रब के घर की हिफ़ाज़त करेंगे। 7 दूसरे दो गुरोह
जो सबत के दिन डयूटी नहीं करते उन्हें रब के घर
में आ कर यूआस बादशाह की पहरादारी करनी है।
8 वह उस के इर्दगिर्द दाइरा बना कर अपने हथियारों
को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें।
जो भी इस दाइरे में घुसने की कोशिश करे उसे मार
डालना।”
9 सो सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सरों ने ऐसा ही
किया। अगले सबत के दिन वह सब अपने फ़ौजियों
समेत यहोयदा इमाम के पास आए। वह भी आए जो
डयूटी पर थे और वह भी जिन की अब छुट्टी थी।
10 इमाम ने अफ़सरों को दाऊद बादशाह के वह नेज़े
और ढालें दीं जो अब तक रब के घर में महफ़ूज़
रखी हुई थीं। 11 फिर मुहाफ़िज़ हथियारों को हाथ
में पकड़े बादशाह के गिर्द खड़े हो गए। क़ुर्बानगाह
और रब के घर के दरमियान उन का दाइरा रब के घर
की जुनूबी दीवार से ले कर उस की शिमाली दीवार
तक फैला हुआ था। 12 फिर यहोयदा बादशाह के बेटे
यूआस को बाहर लाया और उस के सर पर ताज रख
कर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यूँ यूआस को
बादशाह बना दिया गया। उन्हों ने उसे मसह करके
तालियाँ बजाईं और बुलन्द आवाज़ से नारा लगाने
लगे, “बादशाह ज़िन्दाबाद!”
13 जब मुहाफ़िज़ों और बाक़ी लोगों का शोर
अतलियाह तक पहुँचा तो वह रब के घर के सहन में
उन के पास आई। 14 वहाँ पहुँच कर वह क्या देखती
है कि नया बादशाह उस सतून के पास खड़ा है जहाँ
बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है, और वह
अफ़सरों और तुरम बजाने वालों से घिरा हुआ है।
तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजा कर ख़ुशी
मना रही है। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े
फाड़ कर चीख़ उठी, “ग़द्दारी, ग़द्दारी!”
15 यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर उन
अफ़सरों को बुलाया जिन के सपुर्द फ़ौज की गई थी
और उन्हें हुक्म दिया, “उसे बाहर ले जाएँ, क्यूँकि
मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए।
और जो भी उस के पीछे आए उसे तलवार से मार
देना।”
16 वह अतलियाह को पकड़ कर उस रास्ते पर ले
गए जिस पर चलते हुए घोड़े महल के पास पहुँचते हैं।
वहाँ उसे मार दिया गया। 17 फिर यहोयदा ने बादशाह
और क़ौम के साथ मिल कर रब से अह्द बांध कर
वादा किया कि हम रब की क़ौम रहेंगे। इस के इलावा
बादशाह ने यहोयदा की मारिफ़त क़ौम से भी अह्द
बांधा। 18 इस के बाद उम्मत के तमाम लोग बाल
के मन्दिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की
क़ुर्बानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्हों
ने बाल के पुजारी मत्तान को क़ुर्बानगाहों के सामने
ही मार डाला। रब के घर पर पहरेदार खड़े करने के
बाद 19 यहोयदा सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों,
कारी नामी दस्तों, महल के मुहाफ़िज़ों और बाक़ी
पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकाल कर बादशाह
को रब के घर से महल में ले गया। वह मुहाफ़िज़ों
के दरवाज़े से हो कर दाख़िल हुए। बादशाह शाही
तख़्त पर बैठ गया, 20 और तमाम उम्मत ख़ुशी मनाती
रही। यूँ यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्यूँकि
अतलियाह को महल के पास तलवार से मार दिया
गया था।

यहूदाह का बादशाह यूआस

21 यूआस सात साल का था जब तख़्तनशीन हुआ।
12 1 वह इस्राईल के बादशाह याहू की हुकूमत
के सातवें साल में यहूदाह का बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया
40 साल था। उस की माँ ज़िबियाह बैर-सबा की
रहने वाली थी। 2 जब तक यहोयदा उस की राहनुमाई
करता था यूआस वह कुछ करता रहा जो रब को
पसन्द था। 3 तो भी ऊँची जगहों के मन्दिर दूर न
किए गए। अवाम मामूल के मुताबिक़ वहाँ अपनी
क़ुर्बानियाँ पेश करते और बख़ूर जलाते रहे।

यूआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

4 एक दिन यूआस ने इमामों को हुक्म दिया, “रब
के लिए मख़्सूस जितने भी पैसे रब के घर में लाए
जाते हैं उन सब को जमा करें, चाहे वह मर्दुमशुमारी
के टैक्स [h]या किसी मन्नत के ज़िम्न में दिए गए हों,
चाहे रज़ाकाराना तौर पर अदा किए गए हों। 5 यह
तमाम पैसे इमामों के सपुर्द किए जाएँ। इन से आप
को जहाँ भी ज़रूरत है रब के घर की दराड़ों की
मरम्मत करवानी है।” 6 लेकिन यूआस की हुकूमत
के 23वें साल में उस ने देखा कि अब तक रब के घर
की दराड़ों की मरम्मत नहीं हुई। 7 तब उस ने यहोयदा
और बाक़ी इमामों को बुला कर पूछा, “आप रब के
घर की मरम्मत क्यूँ नहीं करा रहे? अब से आप को
इन पैसों से आप की अपनी ज़रूरियात पूरी करने
की इजाज़त नहीं बल्कि तमाम पैसे रब के घर की
मरम्मत के लिए इस्तेमाल करने हैं।”

8 इमाम मान गए कि अब से हम लोगों से हदिया
नहीं लेंगे और कि इस के बदले हमें रब के घर की
मरम्मत नहीं करवानी पड़ेगी। 9 फिर यहोयदा इमाम
ने एक सन्दूक़ ले कर उस के ढकने में सूराख़ बना
दिया। इस सन्दूक़ को उस ने क़ुर्बानगाह के पास
रख दिया, उस दरवाज़े के दहनी तरफ़ जिस में से
परस्तार रब के घर के सहन में दाख़िल होते थे। जब
लोग अपने हदियाजात रब के घर में पेश करते तो
दरवाज़े की पहरादारी करने वाले इमाम तमाम पैसों
को सन्दूक़ में डाल देते। 10 जब कभी पता चलता
कि सन्दूक़ भर गया है तो बादशाह का मीरमुन्शी
और इमाम-ए-आज़म आते और तमाम पैसे गिन कर
थैलियों में डाल देते थे। 11 फिर यह गिने हुए पैसे उन
ठेकेदारों को दिए जाते जिन के सपुर्द रब के घर की
मरम्मत का काम किया गया था। इन पैसों से वह
मरम्मत करने वाले कारीगरों की उजरत अदा करते
थे। इन में बढ़ई, इमारत पर काम करने वाले, 12 राज
और पत्थर तराशने वाले शामिल थे। इस के इलावा
उन्हों ने यह पैसे दराड़ों की मरम्मत के लिए दरकार
लकड़ी और तराशे हुए पत्थरों के लिए भी इस्तेमाल
किए। बाक़ी जितने अख़राजात रब के घर को बहाल
करने के लिए ज़रूरी थे वह सब इन पैसों से पूरे किए
गए। 13 लेकिन इन हदियाजात से सोने या चाँदी की
चीज़ें न बनवाई गईं, न चाँदी के बासन, बत्ती कतरने
के औज़ार, छिड़काओ के कटोरे या तुरम। 14 यह
सिर्फ़ और सिर्फ़ ठेकेदारों को दिए गए ताकि वह रब
के घर की मरम्मत कर सकें। 15 ठेकेदारों से हिसाब न
लिया गया जब उन्हें कारीगरों को पैसे देने थे, क्यूँकि
वह क़ाबिल-ए-एतिमाद थे।

16 महज़ वह पैसे जो क़ुसूर और गुनाह की
क़ुर्बानियों के लिए मिलते थे रब के घर की मरम्मत
के लिए इस्तेमाल न हुए। वह इमामों का हिस्सा रहे।

ख़राज मिलने पर हज़ाएल यरूशलम को छोड़ता है

17 उन दिनों में शाम के बादशाह हज़ाएल ने जात पर
हम्ला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बाद
वह मुड़ कर यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा ताकि
उस पर भी हम्ला करे। 18 यह देख कर यहूदाह के
बादशाह यूआस ने उन तमाम हदियाजात को इकट्ठा
किया जो उस के बापदादा यहूसफ़त, यहूराम और
अख़ज़ियाह ने रब के घर के लिए मख़्सूस किए थे।
उस ने वह भी जमा किए जो उस ने ख़ुद रब के घर
के लिए मख़्सूस किए थे। यह चीज़ें उस सारे सोने
के साथ मिला कर जो रब के घर और शाही महल
के ख़ज़ानों में था उस ने सब कुछ हज़ाएल को भेज
दिया। तब हज़ाएल यरूशलम को छोड़ कर चला
गया।

यूआस की मौत

19 बाक़ी जो कुछ यूआस की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया उस का ज़िक्र

---

[h]देखिए ख़ुरूज 30:11-16

‘शाहान-ए-यहूदाह’ की किताब में किया गया है।
20 एक दिन उस के अफ़सरों ने उस के ख़िलाफ़
साज़िश करके उसे क़त्ल कर दिया जब वह बैत-मिल्लो
के पास उस रास्ते पर था जो सिल्ला की तरफ़ उतर
जाता था। 21 क़ातिलों के नाम यूज़बद बिन सिमआत
और यहूज़बद बिन शूमीर थे। यूआस को यरूशलम
के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा
अमसियाह तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह यहूआख़ज़

13 1 यहूआख़ज़ बिन याहू यहूदाह के बादशाह
यूआस बिन अख़ज़ियाह की हुकूमत के
23वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। उस की
हुकूमत का दौरानिया 17 साल था, और उस का दार-
उल-हकूमत सामरिया रहा। 2 उस का चाल-चलन रब
को नापसन्द था, क्यूँकि वह भी यरुबिआम बिन
नबात के बुरे नमूने पर चलता रहा। उस ने वह गुनाह
जारी रखे जो करने पर यरुबिआम ने इस्राईल को
उकसाया था। उस बुतपरस्ती से वह कभी बाज़ न
आया। 3 इस वजह से रब इस्राईल से बहुत नाराज़
हुआ, और वह शाम के बादशाह हज़ाएल और उस
के बेटे बिन-हदद के वसीले से उन्हें बार बार दबाता
रहा।

4 लेकिन फिर यहूआख़ज़ ने रब का ग़ज़ब ठंडा
किया, और रब ने उस की मिन्नतें सुनीं, क्यूँकि उसे
मालूम था कि शाम का बादशाह इस्राईल पर कितना
ज़ुल्म कर रहा है। 5 रब ने किसी को भेज दिया जिस
ने उन्हें शाम के ज़ुल्म से आज़ाद करवाया। इस के
बाद वह पहले की तरह सुकून के साथ अपने घरों में
रह सकते थे। 6 तो भी वह उन गुनाहों से बाज़ न आए
जो करने पर यरुबिआम ने उन्हें उकसाया था बल्कि
उन की यह बुतपरस्ती जारी रही। यसीरत देवी का
बुत भी सामरिया से हटाया न गया।

7 आख़िर में यहूआख़ज़ के सिर्फ़ 50 घुड़सवार, 10
रथ और 10,000 पियादा सिपाही रह गए। फ़ौज का
बाक़ी हिस्सा शाम के बादशाह ने तबाह कर दिया
था। उस ने इस्राईली फ़ौजियों को कुचल कर यूँ उड़ा
दिया था जिस तरह धूल अनाज को गाहते वक़्त उड़
जाती है।

8 बाक़ी जो कुछ यहूआख़ज़ की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ उसे
हासिल हुईं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की
किताब में बयान की गई हैं। 9 जब वह मर कर अपने
बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया
गया। फिर उस का बेटा यहूआस तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह यहूआस

10 यहूआस बिन यहूआख़ज़ यहूदाह के बादशाह
यूआस की हुकूमत के 37वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। 11 यहूआस का चाल-चलन रब को
नापसन्द था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया
जो करने पर यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल
को उकसाया था बल्कि यह बुतपरस्ती जारी रही।
12 बाक़ी जो कुछ यहूआस की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ
उसे हासिल हुईं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’
की किताब में दर्ज हैं। उस में उस की यहूदाह के
बादशाह अमसियाह के साथ जंग का ज़िक्र भी है।
13 जब यहूआस मर कर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे सामरिया में शाही क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर
यरुबिआम दुवुम तख़्त पर बैठ गया।

बिस्तर-ए-मर्ग पर यहूआस की इलीशा से मुलाक़ात

14 यहूआस के दौर-ए-हुकूमत में इलीशा शदीद
बीमार हो गया। जब वह मरने को था तो इस्राईल का
बादशाह यहूआस उस से मिलने गया। उस के ऊपर
झुक कर वह ख़ूब रो पड़ा और चिल्लाया, “हाय, मेरे
बाप, मेरे बाप। इस्राईल के रथ और उस के घोड़े!”
15 इलीशा ने उसे हुक्म दिया, “एक कमान और कुछ
तीर ले आएँ।” बादशाह कमान और तीर इलीशा के
पास ले आया। 16 फिर इलीशा बोला, “कमान को

पकड़ें।” जब बादशाह ने कमान को पकड़ लिया तो इलीशा ने अपने हाथ उस के हाथों पर रख दिए। 17 फिर उस ने हुक्म दिया, “मशरिक़ी खिड़की को खोल दें।” बादशाह ने उसे खोल दिया। इलीशा ने कहा, “तीर चलाएँ!” बादशाह ने तीर चलाया। इलीशा पुकारा, “यह रब का फ़त्ह दिलाने वाला तीर है, शाम पर फ़त्ह का तीर! आप अफ़ीक़ के पास शाम की फ़ौज को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देंगे।”

18 फिर उस ने बादशाह को हुक्म दिया, “अब बाक़ी तीरों को पकड़ें।” बादशाह ने उन्हें पकड़ लिया। फिर इलीशा बोला, “इन को ज़मीन पर पटख़ दें।” बादशाह ने तीन मर्तबा तीरों को ज़मीन पर पटख़ दिया और फिर रुक गया। 19 यह देख कर मर्द-ए-ख़ुदा ग़ुस्से हो गया और बोला, “आप को तीरों को पाँच या छः मर्तबा ज़मीन पर पटख़ना चाहिए था। अगर ऐसा करते तो शाम की फ़ौज को शिकस्त दे कर मुकम्मल तौर पर तबाह कर देते। लेकिन अब आप उसे सिर्फ़ तीन मर्तबा शिकस्त देंगे।”

20 थोड़ी देर के बाद इलीशा फ़ौत हुआ और उसे दफ़न किया गया। उन दिनों में मोआबी लुटेरे हर साल मौसम-ए-बहार के दौरान मुल्क में घुस आते थे। 21 एक दिन किसी का जनाज़ा हो रहा था तो अचानक यह लुटेरे नज़र आए। मातम करने वाले लाश को क़रीब की इलीशा की क़ब्र में फैंक कर भाग गए। लेकिन जूँ ही लाश इलीशा की हड्डियों से टकराई उस में जान आ गई और वह आदमी खड़ा हो गया।

इलीशा के आख़िरी अल्फ़ाज़ पूरे हो जाते हैं

22 यहूआख़ज़ के जीते जी शाम का बादशाह हज़ाएल इस्राईल को दबाता रहा। 23 तो भी रब को अपनी क़ौम पर तरस आया। उस ने उन पर रहम किया, क्यूँकि उसे वह अह्द याद रहा जो उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से बांधा था। आज तक वह उन्हें तबाह करने या अपने हुज़ूर से ख़ारिज करने के लिए तय्यार नहीं हुआ।

24 जब शाम का बादशाह हज़ाएल फ़ौत हुआ तो उस का बेटा बिन-हदद तख़्तनशीन हुआ। 25 तब यहूआस बिन यहूआख़ज़ ने बिन-हदद से वह इस्राईली शहर दुबारा छीन लिए जिन पर बिन-हदद के बाप हज़ाएल ने क़ब्ज़ा कर लिया था। तीन बार यहूआस ने बिन-हदद को शिकस्त दे कर इस्राईली शहर वापस ले लिए।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

14 1 अमसियाह बिन यूआस इस्राईल के बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ के दूसरे साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त वह 25 साल का था। वह यरूशलम में रह कर 29 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यहूअद्दान यरूशलम की रहने वाली थी। 3 जो कुछ अमसियाह ने किया वह रब को पसन्द था, अगरचे वह उतनी वफ़ादारी से रब की पैरवी नहीं करता था जितनी उस के बाप दाऊद ने की थी। हर काम में वह अपने बाप यूआस के नमूने पर चला, 4 लेकिन उस ने भी ऊँची जगहों के मन्दिरों को दूर न किया। आम लोग अब तक वहाँ क़ुर्बानियाँ चढ़ाते और बख़ूर जलाते रहे।

5 जूँ ही अमसियाह के पाँओ मज़बूती से जम गए उस ने उन अफ़सरों को सज़ा-ए-मौत दी जिन्हों ने बाप को क़त्ल कर दिया था। 6 लेकिन उन के बेटों को उस ने ज़िन्दा रहने दिया और यूँ मूसवी शरीअत के ताबे रहा जिस में रब फ़रमाता है, “वालिदैन को उन के बच्चों के जराइम के सबब से सज़ा-ए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उन के वालिदैन के जराइम के सबब से। अगर किसी को सज़ा-ए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उस ने ख़ुद किया है।”

7 अमसियाह ने अदोमियों को नमक की वादी में शिकस्त दी। उस वक़्त उन के 10,000 फ़ौजी उस से लड़ने आए थे। जंग के दौरान उस ने सिला शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस का नाम युक़्तिएल रखा। यह नाम आज तक राइज है।

अमसियाह इस्राईल के बादशाह यहूआस से लड़ता है

8 इस फ़त्ह के बाद अमसियाह ने इस्राईल के
बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ को पैग़ाम भेजा,
“आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!” 9 लेकिन
इस्राईल के बादशाह यहूआस ने जवाब दिया,
“लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक
दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का
रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली
जानवरों ने उस के ऊपर से गुज़र कर उसे पाँओ तले
कुचल डाला। 10 मुल्क-ए-अदोम पर फ़त्ह पाने के
सबब से आप का दिल मग़ुरूर हो गया है। लेकिन
मेरा मश्वरा है कि आप अपने घर में रह कर फ़त्ह में
हासिल हुई शुहरत का मज़ा लेने पर इकतिफ़ा करें।
आप ऐसी मुसीबत को क्यूँ दावत देते हैं जो आप
और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?”
11 लेकिन अमसियाह मानने के लिए तय्यार नहीं
था, इस लिए यहूआस अपनी फ़ौज ले कर यहूदाह
पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उस का यहूदाह
के बादशाह के साथ मुक़ाबला हुआ। 12 इस्राईल
की फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और
हर एक अपने अपने घर भाग गया। 13 इस्राईल के
बादशाह यहूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह
बिन यूआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स
में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह यरूशलम गया
और शहर की फ़सील इफ़्राईम नामी दरवाज़े से कोने
के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लम्बाई
तक़रीबन 600 फ़ुट थी। 14 जितना भी सोना, चाँदी
और क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के
ख़ज़ानों में था उसे उस ने पूरे का पूरा छीन लिया।
लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को ले कर वह
सामरिया वापस चला गया।

इस्राईल के बादशाह यहूआस की मौत

15 बाक़ी जो कुछ यहूआस की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो कामयाबियाँ
उसे हासिल हुईं वह शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़
की किताब में दर्ज हैं। उस में उस की यहूदाह के
बादशाह अमसियाह के साथ जंग का ज़िक्र भी है।
16 जब यहूआस मर कर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे सामरिया में इस्राईल के बादशाहों की क़ब्र में
दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा यरुबिआम दुवुम
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह के बादशाह अमसियाह की मौत

17 इस्राईल के बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़
की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह अमसियाह बिन
यूआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। 18 बाक़ी जो कुछ
अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहान-
ए-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 19 एक
दिन लोग यरूशलम में उस के ख़िलाफ़ साज़िश करने
लगे। आख़िरकार उस ने फ़रार हो कर लकीस में
पनाह ली, लेकिन साज़िश करने वालों ने अपने लोगों
को उस के पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने
में कामयाब हो गए। 20 उस की लाश घोड़े पर उठा
कर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे शहर के उस हिस्से
में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र
में दफ़नाया गया।
21 यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह के बेटे
उज़्ज़ियाह [i]को बाप के तख़्त पर बिठा दिया। उस
की उम्र 16 साल थी 22 जब उस का बाप मर कर
अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद
उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा करके उसे दुबारा
यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उस ने शहर में बहुत
तामीरी काम करवाया।

---

[i]यहाँ कई जगहों पर इब्रानी में उज़्ज़ियाह का दूसरा नाम अज़रियाह मुस्तामल है।

इस्राईल का बादशाह यरुबिआम दुवुम

23 यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन यूआस के
15वें साल में यरुबिआम बिन यहूआस इस्राईल का
बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 41
साल था, और उस का दार-उल-हकूमत सामरिया
रहा। 24 उस का चाल-चलन रब को नापसन्द था। वह
उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर नबात के
बेटे यरुबिआम अव्वल ने इस्राईल को उकसाया था।
25 यरुबिआम दुवुम लबो-हमात से ले कर बहीरा-ए-
मुर्दार तक उन तमाम इलाक़ों पर दुबारा क़ब्ज़ा कर
सका जो पहले इस्राईल के थे। यूँ वह वादा पूरा हुआ
जो रब इस्राईल के ख़ुदा ने अपने ख़ादिम जात-हिफ़र
के रहने वाले नबी यूनुस बिन अमित्ती की मारिफ़त
किया था। 26 क्यूँकि रब ने इस्राईल की निहायत बुरी
हालत पर ध्यान दिया था। उसे मालूम था कि छोटे
बड़े सब हलाक होने वाले हैं और कि उन्हें छुड़ाने
वाला कोई नहीं है। 27 रब ने कभी नहीं कहा था कि
मैं इस्राईल क़ौम का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा, इस
लिए उस ने उन्हें यरुबिआम बिन यहूआस के वसीले
से नजात दिलाई।

28 बाक़ी जो कुछ यरुबिआम दुवुम की हुकूमत
के दौरान हुआ, जो कुछ उस ने किया और जो
जंगी कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं उन का ज़िक्र
‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब में हुआ
है। उस में यह भी बयान किया गया है कि उस ने
किस तरह दमिश्क़ और हमात पर दुबारा क़ब्ज़ा कर
लिया। 29 जब यरुबिआम मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे सामरिया में बादशाहों की क़ब्र
में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा ज़करियाह
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

15 1 उज़्ज़ियाह बिन अमसियाह इस्राईल के
बादशाह यरुबिआम दुवुम की हुकूमत के
27वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त
उस की उम्र 16 साल थी, और वह यरूशलम में
रह कर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ
यकूलियाह यरूशलम की रहने वाली थी। 3 अपने
बाप अमसियाह की तरह उस का चाल-चलन रब
को पसन्द था, 4 लेकिन ऊँची जगहों को दूर न किया
गया, और आम लोग वहाँ अपनी क़ुर्बानियाँ चढ़ाते
और बख़ूर जलाते रहे।

5 एक दिन रब ने बादशाह को सज़ा दी कि उसे कोढ़
लग गया। उज़्ज़ियाह जीते जी इस बीमारी से शिफ़ा
न पा सका, और उसे अलाहिदा घर में रहना पड़ा।
उस के बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया,
और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

6 बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 7 जब वह
मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा
यूताम तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का बादशाह ज़करियाह

8 ज़करियाह बिन यरुबिआम यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 38वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। उस का दार-उल-हकूमत भी सामरिया
था, लेकिन छः माह के बाद उस की हुकूमत ख़त्म
हो गई। 9 अपने बापदादा की तरह ज़करियाह का
चाल-चलन भी रब को नापसन्द था। वह उन गुनाहों
से बाज़ न आया जो करने पर यरुबिआम बिन नबात
ने इस्राईल को उकसाया था। 10 सल्लूम बिन यबीस ने
उस के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे सब के सामने
क़त्ल किया। फिर वह उस की जगह बादशाह बन
गया।

11 बाक़ी जो कुछ ज़करियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ उस का ज़िक्र ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’
की किताब में किया गया है।

12 यूँ रब का वह वादा पूरा हुआ जो उस ने याहू से
किया था, “तेरी औलाद चौथी पुश्त तक इस्राईल पर
हुकूमत करती रहेगी।”

इस्राईल का बादशाह सल्लूम

13 सल्लूम बिन यबीस यहूदाह के बादशाह उज़्ज़ियाह
के 39वें साल में इस्राईल का बादशाह बना। वह
सामरिया में रह कर सिर्फ़ एक माह तक तख़्त पर
बैठ सका। 14 फिर मनाहिम बिन जादी ने तिर्ज़ा से
आ कर सल्लूम को सामरिया में क़त्ल कर दिया। इस
के बाद वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया।
15 बाक़ी जो कुछ सल्लूम की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो साज़िशें उस ने कीं वह ‘शाहान-ए-इस्राईल
की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है।
16 उस वक़्त मनाहिम ने तिर्ज़ा से आ कर शहर
तिफ़्सह को उस के तमाम बाशिन्दों और गिर्द-ओ-
नवाह के इलाक़े समेत तबाह किया। वजह यह थी
कि उस के बाशिन्दे अपने दरवाज़ों को खोल कर उस
के ताबे हो जाने के लिए तय्यार नहीं थे। जवाब में
मनाहिम ने उन को मारा और तमाम हामिला औरतों
के पेट चीर डाले।

इस्राईल का बादशाह मनाहिम

17 मनाहिम बिन जादी यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 39वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। सामरिया उस का दार-उल-हकूमत
था, और उस की हुकूमत का दौरानिया 10 साल था।
18 उस का चाल-चलन रब को नापसन्द था, और वह
ज़िन्दगी भर उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर
यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल को उकसाया था।
19–20 मनाहिम के दौर-ए-हुकूमत में असूर का
बादशाह पूल यानी तिग्लत-पिलेसर मुल्क से लड़ने
आया। मनाहिम ने उसे 34,000 किलोग्राम चाँदी दे दी
ताकि वह उस की हुकूमत मज़बूत करने में मदद करे।
तब असूर का बादशाह इस्राईल को छोड़ कर अपने
मुल्क वापस चला गया। चाँदी के यह पैसे मनाहिम ने
अमीर इस्राईलियों से जमा किए। हर एक को चाँदी
के 50 सिक्के अदा करने पड़े।
21 बाक़ी जो कुछ मनाहिम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
इस्राईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 22 जब
वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उस का
बेटा फ़िक़हियाह तख़्त पर बैठ गया।

इस्राईल का बादशाह फ़िक़हियाह

23 फ़िक़हियाह बिन मनाहिम यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह के 50वें साल में इस्राईल का बादशाह
बना। सामरिया में रह कर उस की हुकूमत का
दौरानिया दो साल था। 24 फ़िक़हियाह का चाल-
चलन रब को नापसन्द था। वह उन गुनाहों से बाज़ न
आया जो करने पर यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल
को उकसाया था।
25 एक दिन फ़ौज के आला अफ़्सर फ़िक़ह बिन
रमलियाह ने उस के ख़िलाफ़ साज़िश की। जिलिआद
के 50 आदमियों को अपने साथ ले कर उस ने
फ़िक़हियाह को सामरिया के महल के बुर्ज में मार
डाला। उस वक़्त दो और अफ़्सर बनाम अर्जूब और
अरिया भी उस की ज़द में आ कर मर गए। इस के
बाद फ़िक़ह तख़्त पर बैठ गया।
26 बाक़ी जो कुछ फ़िक़हियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
इस्राईल की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया
है।

इस्राईल का बादशाह फ़िक़ह

27 फ़िक़ह बिन रमलियाह यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 52वें साल में इस्राईल का
बादशाह बना। सामरिया में रह कर वह 20 साल तक
हुकूमत करता रहा। 28 फ़िक़ह का चाल-चलन रब
को नापसन्द था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया
जो करने पर यरुबिआम बिन नबात ने इस्राईल को
उकसाया था।

29 फ़िक़ह के दौर-ए-हुकूमत में असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर ने इस्राईल पर हम्ला किया। ज़ैल के
तमाम शहर उस के क़ब्ज़े में आ गए : ऐय्यून, अबील-
बैत-माका, यानूह, क़ादिस और हसूर। जिलिआद
और गलील के इलाक़े भी नफ़्ताली के पूरे क़बाइली
इलाक़े समेत उस की गिरिफ़्त में आ गए। असूर
का बादशाह इन तमाम जगहों में आबाद लोगों को
गिरिफ़्तार करके अपने मुल्क असूर ले गया।
30 एक दिन होसेअ बिन ऐला ने फ़िक़ह के ख़िलाफ़
साज़िश करके उसे मौत के घाट उतार दिया। फिर
वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया। यह यहूदाह के बादशाह
यूताम बिन उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 20वें साल में
हुआ।
31 बाक़ी जो कुछ फ़िक़ह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-
इस्राईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

यहूदाह का बादशाह यूताम

32 उज़्ज़ियाह का बेटा यूताम इस्राईल के बादशाह
फ़िक़ह की हुकूमत के दूसरे साल में यहूदाह का
बादशाह बना। 33 वह 25 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रह कर 16 साल हुकूमत
करता रहा। उस की माँ यरूसा बिन्त सदोक़ थी।
34 वह अपने बाप उज़्ज़ियाह की तरह वह कुछ करता
रहा जो रब को पसन्द था। 35 तो भी ऊँची जगहों
के मन्दिर हटाए न गए। लोग वहाँ अपनी क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने और बख़ूर जलाने से बाज़ न आए। यूताम ने
रब के घर का बालाई दरवाज़ा तामीर किया।
36 बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-ए-यहूदाह की
तारीख़' की किताब में क़लमबन्द है। 37 उन दिनों
में रब शाम के बादशाह रज़ीन और फ़िक़ह बिन
रमलियाह को यहूदाह के ख़िलाफ़ भेजने लगा ताकि
उस से लड़ें। 38 जब यूताम मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में
जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में
दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा आख़ज़ तख़्त पर
बैठ गया।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

16 1 आख़ज़ बिन यूताम इस्राईल के बादशाह
फ़िक़ह बिन रमलियाह की हुकूमत के 17वें
साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त
आख़ज़ 20 साल का था, और वह यरूशलम में रह
कर 16 साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप
दाऊद के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता
रहा जो रब को नापसन्द था। 3 क्यूँकि उस ने इस्राईल
के बादशाहों का चाल-चलन अपनाया, यहाँ तक कि
उस ने अपने बेटे को क़ुर्बानी के तौर पर जला दिया।
यूँ वह उन क़ौमों के घिनौने रस्म-ओ-रिवाज अदा
करने लगा जिन्हें रब ने इस्राईलियों के आगे मुल्क से
निकाल दिया था। 4 आख़ज़ बख़ूर जला कर अपनी
क़ुर्बानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों और
हर घने दरख़्त के साय में चढ़ाता था।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

5 एक दिन शाम का बादशाह रज़ीन और इस्राईल
का बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह यरूशलम पर
हम्ला करने के लिए यहूदाह में घुस आए। उन्हों ने
शहर का मुहासरा तो किया लेकिन उस पर क़ब्ज़ा
करने में नाकाम रहे। 6 उन ही दिनों में रज़ीन ने ऐलात
पर दुबारा क़ब्ज़ा करके शाम का हिस्सा बना लिया।
यहूदाह के लोगों को वहाँ से निकाल कर उस ने वहाँ
अदोमियों को बसा दिया। यह अदोमी आज तक वहाँ
आबाद हैं।
7 आख़ज़ ने अपने क़ासिदों को असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर के पास भेज कर उसे इत्तिला दी, "मैं
आप का ख़ादिम और बेटा हूँ। मेहरबानी करके आएँ
और मुझे शाम और इस्राईल के बादशाहों से बचाएँ
जो मुझ पर हम्ला कर रहे हैं।" 8 साथ साथ आख़ज़
ने वह चाँदी और सोना जमा किया जो रब के घर
और शाही महल के ख़ज़ानों में था और उसे तुह्फ़े के

तौर पर असूर के बादशाह को भेज दिया। 9 तिग्लत-
पिलेसर राज़ी हो गया। उस ने दमिश्क़ पर हम्ला करके
शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस के बाशिन्दों को
गिरिफ़्तार करके क़ीर को ले गया। रज़ीन को उस ने
क़त्ल कर दिया।

आख़ज़ रब के घर की बेहुरमती करता है

10 आख़ज़ बादशाह असूर के बादशाह तिग्लत-
पिलेसर से मिलने के लिए दमिश्क़ गया। वहाँ एक
क़ुर्बानगाह थी जिस का नमूना आख़ज़ ने बना कर
ऊरियाह इमाम को भेज दिया। साथ साथ उस ने
डिज़ाइन की तमाम तफ़्सीलात भी यरूशलम भेज दीं।
11 जब ऊरियाह को हिदायात मिलीं तो उस ने उन
ही के मुताबिक़ यरूशलम में एक क़ुर्बानगाह बनाई।
आख़ज़ के दमिश्क़ से वापस आने से पहले पहले
उसे तय्यार कर लिया गया।

12 जब बादशाह वापस आया तो उस ने नई
क़ुर्बानगाह का मुआइना किया। फिर उस की सीढ़ी
पर चढ़ कर 13 उस ने ख़ुद क़ुर्बानियाँ उस पर पेश
कीं। भस्म होने वाली क़ुर्बानी और ग़ल्ला की नज़र
जला कर उस ने मै की नज़र क़ुर्बानगाह पर उंडेल दी
और सलामती की क़ुर्बानियों का ख़ून उस पर छिड़क
दिया।

14 रब के घर और नई क़ुर्बानगाह के दरमियान अब
तक पीतल की पुरानी क़ुर्बानगाह थी। अब आख़ज़
ने उसे उठा कर रब के घर के सामने से मुन्तक़िल
करके नई क़ुर्बानगाह के पीछे यानी शिमाल की
तरफ़ रखवा दिया। 15 ऊरियाह इमाम को उस ने
हुक्म दिया, “अब से आप को तमाम क़ुर्बानियों
को नई क़ुर्बानगाह पर पेश करना है। इन में सुब्ह-
ओ-शाम की रोज़ाना क़ुर्बानियाँ भी शामिल हैं और
बादशाह और उम्मत की मुख़्तलिफ़ क़ुर्बानियाँ भी,
मसलन भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला और
मै की नज़रें। क़ुर्बानियों के तमाम ख़ून को भी सिर्फ़
नई क़ुर्बानगाह पर छिड़कना है। आइन्दा पीतल की
पुरानी क़ुर्बानगाह सिर्फ़ मेरे ज़ाती इस्तेमाल के लिए
होगी जब मुझे अल्लाह से कुछ दरयाफ़्त करना होगा।”
16 ऊरियाह इमाम ने वैसा ही किया जैसा बादशाह ने
उसे हुक्म दिया।

17 लेकिन आख़ज़ बादशाह रब के घर में मज़ीद
तब्दीलियाँ भी लाया। हथगाड़ियों के जिन फ़्रेमों पर
बासन रखे जाते थे उन्हें तोड़ कर उस ने बासनों
को दूर कर दिया। इस के इलावा उस ने ‘समुन्दर’
नामी बड़े हौज़ को पीतल के उन बैलों से उतार दिया
जिन पर वह शुरू से पड़ा था और उसे पत्थर के एक
चबूतरे पर रखवा दिया। 18 उस ने असूर के बादशाह
को ख़ुश रखने के लिए एक और काम भी किया। उस
ने रब के घर से वह चबूतरा दूर कर दिया जिस पर
बादशाह का तख़्त रखा जाता था और वह दरवाज़ा
बन्द कर दिया जो बादशाह रब के घर में दाख़िल
होने के लिए इस्तेमाल करता था।

19 बाक़ी जो कुछ आख़ज़ की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 20 जब वह
मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उस का बेटा
हिज़क़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

इस्राईल का आख़िरी बादशाह होसेअ

17 1 होसेअ बिन ऐला यहूदाह के बादशाह
आख़ज़ की हुकूमत के 12वें साल में
इस्राईल का बादशाह बना। सामरिया उस का दार-
उल-हकूमत रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया
9 साल था। 2 होसेअ का चाल-चलन रब को नापसन्द
था, लेकिन इस्राईल के उन बादशाहों की निस्बत जो
उस से पहले थे वह कुछ बेहतर था।

3 एक दिन असूर के बादशाह सल्मनसर ने इस्राईल
पर हम्ला किया। तब होसेअ शिकस्त मान कर उस के
ताबे हो गया। उसे असूर को ख़राज अदा करना पड़ा।
4 लेकिन चन्द साल के बाद वह सरकश हो गया। उस
ने ख़राज का सालाना सिलसिला बन्द करके अपने

सफ़ीरों को मिस्र के बादशाह सो के पास भेजा ताकि उस से मदद हासिल करे। जब असूर के बादशाह को पता चला तो उस ने उसे पकड़ कर जेल में डाल दिया।

सामरिया का अन्जाम

5 सल्मनसर पूरे मुल्क में से गुज़र कर सामरिया तक पहुँच गया। तीन साल तक उसे शहर का मुहासरा करना पड़ा, 6 लेकिन आख़िरकार वह होसेअ की हुकूमत के नवें साल में कामयाब हुआ और शहर पर क़ब्ज़ा करके इस्राईलियों को जिलावतन कर दिया। उन्हें असूर ला कर उस ने कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ जौज़ान के दरया-ए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों के शहरों में बसाए।

7 यह सब कुछ इस लिए हुआ कि इस्राईलियों ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया था, हालाँकि वह उन्हें मिस्री बादशाह फ़िरऔन के क़ब्ज़े से रिहा करके मिस्र से निकाल लाया था। वह दीगर माबूदों की पूजा करते 8 और उन क़ौमों के रस्म-ओ-रिवाज की पैरवी करते जिन को रब ने उन के आगे से निकाल दिया था। साथ साथ वह उन रस्मों से भी लिपटे रहे जो इस्राईल के बादशाहों ने शुरू की थीं। 9 इस्राईलियों को रब अपने ख़ुदा के ख़िलाफ़ बहुत तरकीबें सूझीं जो ठीक नहीं थीं। सब से छोटी चौकी से ले कर बड़े से बड़े क़िलाबन्द शहर तक उन्हों ने अपने तमाम शहरों की ऊँची जगहों पर मन्दिर बनाए। 10 हर पहाड़ी की चोटी पर और हर घने दरख़्त के साय में उन्हों ने पत्थर के अपने देवताओं के सतून और यसीरत देवी के खम्बे खड़े किए। 11 हर ऊँची जगह पर वह बख़ूर जला देते थे, बिलकुल उन अक़्वाम की तरह जिन्हें रब ने उन के आगे से निकाल दिया था। ग़रज़ इस्राईलियों से बहुत सी ऐसी शरीर हरकतें सरज़द हुईं जिन को देख कर रब को ग़ुस्सा आया। 12 वह बुतों की परस्तिश करते रहे अगरचे रब ने इस से मना किया था।

13 बार बार रब ने अपने नबियों और ग़ैबबीनों को इस्राईल और यहूदाह के पास भेजा था ताकि उन्हें आगाह करें, “अपनी शरीर राहों से बाज़ आओ। मेरे अह्काम और क़वाइद के ताबे रहो। उस पूरी शरीअत की पैरवी करो जो मैं ने तुम्हारे बापदादा को अपने ख़ादिमों यानी नबियों के वसीले से दे दी थी।”

14 लेकिन वह सुनने के लिए तय्यार नहीं थे बल्कि अपने बापदादा की तरह अड़ गए, क्यूँकि वह भी रब अपने ख़ुदा पर भरोसा नहीं करते थे। 15 उन्हों ने उस के अह्काम और उस अह्द को रद्द किया जो उस ने उन के बापदादा से बांधा था। जब भी उस ने उन्हें किसी बात से आगाह किया तो उन्हों ने उसे हक़ीर जाना। बेकार बुतों की पैरवी करते करते वह ख़ुद बेकार हो गए। वह गिर्द-ओ-नवाह की क़ौमों के नमूने पर चल पड़े हालाँकि रब ने इस से मना किया था। 16 रब अपने ख़ुदा के तमाम अह्काम को मुस्तरद करके उन्हों ने अपने लिए बछड़ों के दो मुजस्समे ढाल लिए और यसीरत देवी का खम्बा खड़ा कर दिया। वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लश्कर के सामने झुक गए और बाल देवता की परस्तिश करने लगे। 17 अपने बेटे-बेटियों को उन्हों ने अपने बुतों के लिए क़ुर्बान करके जला दिया। नुजूमियों से मश्वरा लेना और जादूगरी करना आम हो गया। ग़रज़ उन्हों ने अपने आप को बदी के हाथ में बेच कर ऐसा काम किया जो रब को नापसन्द था और जो उसे ग़ुस्सा दिलाता रहा।

18 तब रब का ग़ज़ब इस्राईल पर नाज़िल हुआ, और उस ने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया। सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला मुल्क में बाक़ी रह गया।

19 लेकिन यहूदाह के अफ़राद भी रब अपने ख़ुदा के अह्काम के ताबे रहने के लिए तय्यार नहीं थे। वह भी उन बुरे रस्म-ओ-रिवाज की पैरवी करते रहे जो इस्राईल ने शुरू किए थे। 20 फिर रब ने पूरी की पूरी क़ौम को रद्द कर दिया। उन्हें तंग करके वह उन्हें लुटेरों के हवाले करता रहा, और एक दिन उस ने उन्हें भी अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

21 रब ने ख़ुद इस्राईल के शिमाली क़बीलों को दाऊद के घराने से अलग कर दिया था, और उन्हों ने

यरुबिआम बिन नबात को अपना बादशाह बना लिया था। लेकिन यरुबिआम ने इस्राईल को एक संगीन गुनाह करने पर उकसा कर रब की पैरवी करने से दूर किए रखा। 22 इस्राईली यरुबिआम के बुरे नमूने पर चलते रहे और कभी इस से बाज़ न आए।

23 यही वजह है कि जो कुछ रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था वह पूरा हुआ। उस ने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया, और दुश्मन उन्हें क़ैदी बना कर असूर ले गया जहाँ वह आज तक ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

सामरिया में अजनबी क़ौमों को आबाद किया जाता है

24 असूर के बादशाह ने बाबल, कूता, अव्वा, हमात और सिफ़र्वाइम से लोगों को इस्राईल में ला कर सामरिया के इस्राईलियों से ख़ाली किए गए शहरों में बसा दिया। यह लोग सामरिया पर क़ब्ज़ा करके उस के शहरों में बसने लगे। 25 लेकिन आते वक़्त वह रब की परस्तिश नहीं करते थे, इस लिए रब ने उन के दरमियान शेरबबर भेज दिए जिन्हों ने कई एक को फाड़ डाला।

26 असूर के बादशाह को इत्तिला दी गई, “जिन लोगों को आप ने जिलावतन करके सामरिया के शहरों में बसा दिया है वह नहीं जानते कि उस मुल्क का देवता किन किन बातों का तक़ाज़ा करता है। नतीजे में उस ने उन के दरमियान शेरबबर भेज दिए हैं जो उन्हें फाड़ रहे हैं। और वजह यही है कि वह उस की सहीह पूजा करने से वाक़िफ़ नहीं हैं।” 27 यह सुन कर असूर के बादशाह ने हुक्म दिया, “सामरिया से यहाँ लाए गए इमामों में से एक को चुन लो जो अपने वतन लौट कर वहाँ दुबारा आबाद हो जाए और लोगों को सिखाए कि उस मुल्क का देवता अपनी पूजा के लिए किन किन बातों का तक़ाज़ा करता है।”

28 तब एक इमाम जिलावतनी से वापस आया। बैत-एल में आबाद हो कर उस ने नए बाशिन्दों को सिखाया कि रब की मुनासिब इबादत किस तरह की जाती है। 29 लेकिन साथ साथ वह अपने ज़ाती देवताओं की पूजा भी करते रहे। शहर-ब-शहर हर क़ौम ने अपने अपने बुत बना कर उन तमाम ऊँची जगहों के मन्दिरों में खड़े किए जो सामरिया के लोगों ने बना छोड़े थे। 30 बाबल के बाशिन्दों ने सुक्कात-बनात के बुत, कूता के लोगों ने नैर्गल के मुजस्समे, हमात वालों ने असीमा के बुत 31 और अव्वा के लोगों ने निब्हाज़ और तर्ताक़ के मुजस्समे खड़े किए। सिफ़र्वाइम के बाशिन्दे अपने बच्चों को अपने देवताओं अद्रम्मलिक और अनम्मलिक के लिए क़ुर्बान करके जला देते थे। 32 ग़रज़ सब रब की परस्तिश के साथ साथ अपने देवताओं की पूजा भी करते और अपने लोगों में से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अफ़राद को चुन कर पुजारी मुक़र्रर करते थे ताकि वह ऊँची जगहों के मन्दिरों को सँभालें। 33 वह रब की इबादत भी करते और साथ साथ अपने देवताओं की उन क़ौमों के रिवाजों के मुताबिक़ इबादत भी करते थे जिन में से उन्हें यहाँ लाया गया था।

34 यह सिलसिला आज तक जारी है। सामरिया के बाशिन्दे अपने उन पुराने रिवाजों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और सिर्फ़ रब की परस्तिश करने के लिए तय्यार नहीं होते। वह उस की हिदायात और अह्काम की पर्वा नहीं करते और उस शरीअत की पैरवी नहीं करते जो रब ने याक़ूब की औलाद को दी थी। (रब ने याक़ूब का नाम इस्राईल में बदल दिया था।) 35 क्यूँकि रब ने इस्राईल की क़ौम के साथ अह्द बांध कर उसे हुक्म दिया था,

“दूसरे किसी भी माबूद की इबादत मत करना! उन के सामने झुक कर उन की ख़िदमत मत करना, न उन्हें क़ुर्बानियाँ पेश करना। 36 सिर्फ़ रब की परस्तिश करो जो बड़ी क़ुदरत और अज़ीम काम दिखा कर तुम्हें मिस्र से निकाल लाया। सिर्फ़ उसी के सामने झुक जाओ, सिर्फ़ उसी को अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करो। 37 लाज़िम है कि तुम ध्यान से उन तमाम हिदायात, अह्काम और क़वाइद की पैरवी करो

जो मैं ने तुम्हारे लिए क़लमबन्द कर दिए हैं। किसी
और देवता की पूजा मत करना। 38 वह अह्द मत
भूलना जो मैं ने तुम्हारे साथ बांध लिया है, और दीगर
माबूदों की परस्तिश न करो। 39 सिर्फ़ और सिर्फ़ रब
अपने ख़ुदा की इबादत करो। वही तुम्हें तुम्हारे तमाम
दुश्मनों के हाथ से बचा लेगा।”
40 लेकिन लोग यह सुनने के लिए तय्यार नहीं थे
बल्कि अपने पुराने रस्म-ओ-रिवाज के साथ लिपटे
रहे। 41 चुनाँचे रब की इबादत के साथ ही सामरिया
के नए बाशिन्दे अपने बुतों की पूजा करते रहे। आज
तक उन की औलाद यही कुछ करती आई है।

यहूदाह का बादशाह हिज़क़ियाह

18 1 इस्राईल के बादशाह होसेअ बिन ऐला की
हुकूमत के तीसरे साल में हिज़क़ियाह बिन
आख़ज़ यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त उस
की उम्र 25 साल थी, और वह यरूशलम में रह कर
29 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ अबी बिन्त
ज़करियाह थी। 3 अपने बाप दाऊद की तरह उस ने
ऐसा काम किया जो रब को पसन्द था। 4 उस ने
ऊँची जगहों के मन्दिरों को गिरा दिया, पत्थर के
उन सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया जिन की पूजा
की जाती थी और यसीरत देवी के खम्बों को काट
डाला। पीतल का जो साँप मूसा ने बनाया था उसे भी
बादशाह ने टुकड़े टुकड़े कर दिया, क्यूँकि इस्राईली
उन अय्याम तक उस के सामने बख़ूर जलाने आते
थे। (साँप नख़ुश्तान कहलाता था।)
5 हिज़क़ियाह रब इस्राईल के ख़ुदा पर भरोसा
रखता था। यहूदाह में न इस से पहले और न इस के
बाद ऐसा बादशाह हुआ। 6 वह रब के साथ लिपटा
रहा और उस की पैरवी करने से कभी भी बाज़ न
आया। वह उन अह्काम पर अमल करता रहा जो
रब ने मूसा को दिए थे। 7 इस लिए रब उस के साथ
रहा। जब भी वह किसी मक़्सद के लिए निकला तो
उसे कामयाबी हासिल हुई।
चुनाँचे वह असूर की हुकूमत से आज़ाद हो गया
और उस के ताबे न रहा। 8 फ़िलिस्तियों को उस ने
सब से छोटी चौकी से ले कर बड़े से बड़े क़िलाबन्द
शहर तक शिकस्त दी और उन्हें मारते मारते ग़ज़्ज़ा
शहर और उस के इलाक़े तक पहुँच गया।

असूरी इस्राईल पर क़ब्ज़ा करते हैं

9 हिज़क़ियाह की हुकूमत के चौथे साल में और
इस्राईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के सातवें
साल में असूर के बादशाह सल्मनसर ने इस्राईल पर
हम्ला किया। सामरिया शहर का मुहासरा करके 10 वह
तीन साल के बाद उस पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब
हुआ। यह हिज़क़ियाह की हुकूमत के छटे साल और
इस्राईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के नवें साल
में हुआ। 11 असूर के बादशाह ने इस्राईलियों को
जिलावतन करके कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ
जौज़ान के दरया-ए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ
मादियों के शहरों में बसाए।
12 यह सब कुछ इस लिए हुआ कि वह रब अपने
ख़ुदा के ताबे न रहे बल्कि उस के उन के साथ
बंधे हुए अह्द को तोड़ कर उन तमाम अह्काम के
फ़रमाँबरदार न रहे जो रब के ख़ादिम मूसा ने उन्हें
दिए थे। न वह उन की सुनते और न उन पर अमल
करते थे।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

13 हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के 14वें साल
में असूर के बादशाह सन्हेरिब ने यहूदाह के तमाम
क़िलाबन्द शहरों पर धावा बोल कर उन पर क़ब्ज़ा
कर लिया। 14 जब असूर का बादशाह लकीस के
आस-पास पहुँचा तो यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह
ने उसे इत्तिला दी, “मुझ से ग़लती हुई है। मुझे छोड़
दें तो जो कुछ भी आप मुझ से तलब करेंगे मैं आप
को अदा करूँगा।”
तब सन्हेरिब ने हिज़क़ियाह से चाँदी के तक़रीबन
10,000 किलोग्राम और सोने के तक़रीबन 1,000

किलोग्राम माँग लिया। 15 हिज़क़ियाह ने उसे वह
तमाम चाँदी दे दी जो रब के घर और शाही महल के
ख़ज़ानों में पड़ी थी। 16 सोने का तक़ाज़ा पूरा करने
के लिए उस ने रब के घर के दरवाज़ों और चौखटों
पर लगा सोना उतरवा कर उसे असूर के बादशाह
को भेज दिया। यह सोना उस ने ख़ुद दरवाज़ों और
चौखटों पर चढ़वाया था।

17 फिर भी असूर का बादशाह मुत्मइन न हुआ। उस
ने अपने सब से आला अफ़सरों को बड़ी फ़ौज के
साथ लकीस से यरूशलम को भेजा (उन की अपनी
ज़बान में अफ़सरों के उह्दों के नाम तर्तान, रब-सारिस
और रबशाक़ी थे)। यरूशलम पहुँच कर वह उस नाले
के पास रुक गए जो पानी को ऊपर वाले तालाब तक
पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों
के घाट तक ले जाता है)। 18 इन तीन असूरी अफ़सरों
ने इत्तिला दी कि बादशाह हम से मिलने आए,
लेकिन हिज़क़ियाह ने महल के इंचार्ज इलियाक़ीम
बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी शब्नाह और मुशीर-ए-
ख़ास यूआख़ बिन आसफ़ को उन के पास भेजा।
19 रबशाक़ी ने उन के हाथ हिज़क़ियाह को पैग़ाम
भेजा,

“असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 20 तुम समझते हो कि
ख़ाली बातें करना फ़ौजी हिकमत-ए-अमली और
ताक़त के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर
एतिमाद कर रहे हो कि मुझ से सरकश हो गए हो?
21 क्या तुम मिस्र पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा
हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उस
का हाथ वह चीर कर ज़ख़्मी कर देगा। यही कुछ उन
सब के साथ हो जाएगा जो मिस्र के बादशाह फ़िरऔन
पर भरोसा करें! 22 शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने
ख़ुदा पर तवक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह
हो सकता है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती
की है। क्यूँकि उस ने ऊँची जगहों के मन्दिरों और
क़ुर्बानगाहों को ढा कर यहूदाह और यरूशलम से
कहा है कि सिर्फ़ यरूशलम की क़ुर्बानगाह के सामने
परस्तिश करें।

23 आओ, मेरे आक़ा असूर के बादशाह से सौदा
करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तेकि तुम उन
के लिए सवार मुहय्या कर सको। लेकिन अफ़सोस,
तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं! 24 तुम मेरे
आक़ा असूर के बादशाह के सब से छोटे अफ़सर
का भी मुक़ाबला नहीं कर सकते। लिहाज़ा मिस्र के
रथों पर भरोसा रखने का क्या फ़ाइदा? 25 शायद तुम
समझते हो कि मैं रब की मर्ज़ी के बग़ैर ही इस जगह
पर हम्ला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बर्बाद करूँ।
लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा कि
इस मुल्क पर धावा बोल कर इसे तबाह कर दे।”

26 यह सुन कर इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह,
शब्नाह और यूआख़ ने रबशाक़ी की तक़रीर में दख़ल
दे कर कहा, “बराह-ए-करम अरामी ज़बान में अपने
ख़ादिमों के साथ गुफ़्तगु कीजिए, क्यूँकि हम यह
अच्छी तरह बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न
करें, वर्ना शहर की फ़सील पर खड़े लोग आप की
बातें सुन लेंगे।” 27 लेकिन रबशाक़ी ने जवाब दिया,
“क्या तुम समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैग़ाम
सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़
नहीं! वह चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें।
क्यूँकि वह भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और
अपना पेशाब पीने पर मज्बूर हो जाएंगे।”

28 फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़ कर बुलन्द
आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब हुआ,
“सुनो, शहन्शाह, असूर के बादशाह के फ़रमान पर
ध्यान दो! 29 बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़क़ियाह
तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा
नहीं सकता। 30 बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की
कोशिश करके कहता है, ‘रब हमें ज़रूर छुटकारा
देगा, यह शहर कभी भी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में
नहीं आएगा।’ लेकिन इस क़िस्म की बातों से तसल्ली
पा कर रब पर भरोसा मत करना। 31 हिज़क़ियाह
की बातें न मानो बल्कि असूर के बादशाह की।

क्यूँकि वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और
शहर से निकल कर मेरे पास आ जाओ। फिर तुम
में से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अन्जीर के
अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़ का
पानी पिएगा। 32 फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक
ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की
मानिन्द होगा। उस में भी अनाज, नई मै, रोटी और
अंगूर के बाग़, ज़ैतून के दरख़्त और शहद है। ग़रज़,
मौत की राह इख़तियार न करना बल्कि ज़िन्दगी की
राह। हिज़क़ियाह की मत सुनना। जब वह कहता
है, 'रब हमें बचाएगा' तो वह तुम्हें धोका दे रहा है।
33 क्या दीगर अक़्वाम के देवता अपने मुल्कों को
शाह-ए-असूर से बचाने के क़ाबिल रहे हैं? 34 हमात
और अर्फ़ाद के देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़र्वाइम,
हेना और इव्वा के देवता क्या कर सके? और क्या
किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से बचाया?
35 नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझ से बचा न
सका। तो फिर रब यरूशलम को किस तरह मुझ से
बचाएगा?"

36 फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्हों ने कोई
जवाब न दिया, क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया था
कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहें। 37 फिर महल
का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी
शब्नाह और मुशीर-ए-ख़ास यूआख़ बिन आसफ़
रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़ कर हिज़क़ियाह
के पास वापस गए। दरबार में पहुँच कर उन्हों ने
बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाक़ी ने
उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

19 1 यह बातें सुन कर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास
पहन कर रब के घर में गया। 2 साथ साथ उस ने
महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुन्शी शब्नाह और
इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे यसायाह नबी
के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए
थे। 3 नबी के पास पहुँच कर उन्हों ने हिज़क़ियाह का
पैग़ाम सुनाया, "आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा
के इस दिन असूरियों ने हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की
है। हमारा हाल दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला उस औरत का
सा है जिस के पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो
इस लिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती
रही है। 4 लेकिन शायद रब आप के ख़ुदा ने रबशाक़ी
की वह तमाम बातें सुनी हों जो उस के आक़ा असूर
के बादशाह ने ज़िन्दा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो
सकता है रब आप का ख़ुदा उस की बातें सुन कर
उसे सज़ा दे। बराह-ए-करम हमारे लिए जो अब तक
बचे हुए हैं दुआ करें।"

5 जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह को
बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6 तो नबी ने जवाब दिया,
"अपने आक़ा को बता देना कि रब फ़रमाता है, 'उन
धमकियों से ख़ौफ़ मत खा जो असूरी बादशाह के
मुलाज़िमों ने मेरी इहानत करके दी हैं। 7 देख, मैं उस
का इरादा बदल दूँगा। वह अफ़्वाह सुन कर इतना
मुज़्तरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क वापस चला
जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सन्हेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8 रबशाक़ी यरूशलम को छोड़ कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना हो कर लिब्ना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9 फिर सन्हेरिब को इत्तिला मिली, "एथोपिया का
बादशाह तिर्हाक़ा आप से लड़ने आ रहा है।" तब
उस ने अपने क़ासिदों को दुबारा यरूशलम भेज
दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम पहुँचाएँ, 10 "जिस
देवता पर तुम भरोसा रखते हो उस से फ़रेब न
खाओ जब वह कहता है कि यरूशलम कभी असूरी
बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन
चुके हो कि असूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या
कुछ किया है। हर मुल्क को उन्हों ने मुकम्मल तौर
पर तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच

जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उन की हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्क-ए-अदन में
तिलस्सार के बाशिन्दे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उन की मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने
उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमात, अर्फ़ाद,
सिफ़र्वाइम शहर, हेना और इव्वा के बादशाह कहाँ
हैं?”

14 ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया और
फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को रब के
सामने बिछा कर 15 उस ने रब से दुआ की,

“ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा जो करूबी फ़रिश्तों के
दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया के
तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने आसमान-ओ-
ज़मीन को ख़ल्क़ किया है। 16 ऐ रब, मेरी सुन! अपनी
आँखें खोल कर देख! सन्हेरिब की उन बातों पर
ध्यान दे जो उस ने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई
हैं कि ज़िन्दा ख़ुदा की इहानत करे। 17 ऐ रब, यह
बात सच है कि असूरी बादशाहों ने इन क़ौमों को
उन के मुल्कों समेत तबाह कर दिया है। 18 वह तो
उन के बुतों को आग में फैंक कर भस्म कर सकते थे,
क्यूँकि वह ज़िन्दा नहीं बल्कि सिर्फ़ इन्सान के हाथों
से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुत थे। 19 ऐ रब
हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझ से इल्तिमास करता हूँ कि
हमें असूरी बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के
तमाम ममालिक जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा
है।”

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

20 फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़क़ियाह को
पैग़ाम भेजा, “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि
मैं ने असूरी बादशाह सन्हेरिब के बारे में तेरी दुआ
सुनी है। 21 अब रब का उस के ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,

कुंवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है,
हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिला कर
हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 22 क्या
तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं और किस
की इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तू ने
किस के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द की है? जिस की
तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख रहा है वह इस्राईल
का क़ुद्दूस है!

23 अपने क़ासिदों के ज़रीए तू ने रब की इहानत की
है। तू डींगें मार कर कहता है, ‘मैं अपने बेशुमार रथों
से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इन्तिहा तक
चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और जूनीपर के
बेहतरीन दरख़्तों को काट कर लुबनान के दूरतरीन
कोनों तक, उस के सब से घने जंगल तक पहुँच गया
हूँ। 24 मैं ने ग़ैरमुल्कों में कुएँ खुदवा कर उन का पानी
पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिस्र की तमाम नदियाँ
ख़ुश्क हो गईं।’

25 ऐ असूरी बादशाह, क्या तू ने नहीं सुना कि बड़ी
देर से मैं ने यह सब कुछ मुक़र्रर किया? क़दीम ज़माने
में ही मैं ने इस का मन्सूबा बांध लिया, और अब मैं
इसे वुजूद में लाया। मेरी मर्ज़ी थी कि तू क़िलाबन्द
शहरों को ख़ाक में मिला कर पत्थर के ढेरों में बदल
दे। 26 इसी लिए उन के बाशिन्दों की ताक़त जाती
रही, वह घबराए और शर्मिन्दा हुए। वह घास की
तरह कमज़ोर थे, छत पर उगने वाली उस हरियाली
की मानिन्द जो थोड़ी देर के लिए फलती फूलती तो
है, लेकिन लू चलते वक़्त एक दम मुरझा जाती है।
27 मैं तो तुझ से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि
तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझ से
पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़
कितने तैश में आ गया है। 28 तेरा तैश और ग़ुरूर देख
कर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डाल
कर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा
जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

29 ऐ हिज़क़ियाह, मैं इस निशान से तुझे तसल्ली
दिलाऊँगा कि इस साल और आने वाले साल तुम
वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद-ब-ख़ुद उगेगा।
लेकिन तीसरे साल तुम बीज बो कर फ़सलें काटोगे
और अंगूर के बाग़ लगा कर उन का फल खाओगे।
30 यहूदाह के बचे हुए बाशिन्दे एक बार फिर जड़

पकड़ कर फल लाएँगे। 31 क्यूँकि यरूशलम से क़ौम
का बक़िया निकल आएगा, और कोह-ए-सिय्यून का
बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्ब-
उल-अफ़्वाज की ग़ैरत यह कुछ सरअन्जाम देगी।
32 जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब
फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा।
वह एक तीर तक उस में नहीं चलाएगा। न वह ढाल
ले कर उस पर हम्ला करेगा, न शहर की फ़सील
के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 33 जिस रास्ते से
बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने
मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने
नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 34 क्यूँकि मैं
अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस शहर
का दिफ़ा करके इसे बचाऊँगा।”
35 उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और
असूरी लश्करगाह में से गुज़र कर 1,85,000
फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुब्ह-सवेरे उठे
तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।
36 यह देख कर सन्हेरिब अपने ख़ैमे उखाड़ कर
अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँच
कर वह वहाँ ठहर गया। 37 एक दिन जब वह अपने
देवता निस्रूक के मन्दिर में पूजा कर रहा था तो उस
के बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से
क़त्ल कर दिया और फ़रार हो कर मुल्क-ए-अरारात
में पनाह ली। फिर उस का बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन
हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शिफ़ा देता है

20 1 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार
हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस
का बेटा यसायाह नबी उस से मिलने आया और
कहा, “रब फ़रमाता है कि अपने घर का बन्द-ओ-
बस्त कर ले, क्यूँकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से
शिफ़ा नहीं पाएगा।”
2 यह सुन कर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार की
तरफ़ फेर कर दुआ की, 3 “ऐ रब, याद कर कि मैं
वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा
हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसन्द
है।” फिर वह फूट फूट कर रोने लगा।
4 इतने में यसायाह चला गया था। लेकिन वह अभी
अन्दरूनी सहन से निकला नहीं था कि उसे रब का
कलाम मिला, 5 “मेरी क़ौम के राहनुमा हिज़क़ियाह
के पास वापस जा कर उसे बता देना कि रब तेरे बाप
दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं ने तेरी दुआ सुन ली
और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तुझे शिफ़ा दूँगा। परसों तू
दुबारा रब के घर में जाएगा। 6 मैं तेरी ज़िन्दगी में 15
साल का इज़ाफ़ा करूँगा। साथ साथ मैं तुझे और इस
शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं अपनी
और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर शहर का दिफ़ा
करूँगा’।”
7 फिर यसायाह ने हुक्म दिया, “अन्जीर की टिक्की
ला कर बादशाह के नासूर पर बांध दो!” जब ऐसा
किया गया तो हिज़क़ियाह को शिफ़ा मिली। 8 पहले
हिज़क़ियाह ने यसायाह से पूछा था, “रब मुझे कौन
सा निशान देगा जिस से मुझे यक़ीन आए कि वह मुझे
शिफ़ा देगा और कि मैं परसों दुबारा रब के घर की
इबादत में शरीक हूँगा?” 9 यसायाह ने जवाब दिया,
“रब धूपघड़ी का साया दस दर्जे आगे करेगा या दस
दर्जे पीछे। इस से आप जान लेंगे कि वह अपना
वादा पूरा करेगा। आप क्या चाहते हैं, क्या साया दस
दर्जे आगे चले या दस दर्जे पीछे?” 10 हिज़क़ियाह ने
जवाब दिया, “यह करवाना कि साया दस दर्जे आगे
चले आसान काम है। नहीं, वह दस दर्जे पीछे जाए।”
11 तब यसायाह नबी ने रब से दुआ की, और रब
ने आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे
पीछे कर दिया।

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

12 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह मरूदक-
बलदान बिन बलदान ने हिज़क़ियाह की बीमारी की
ख़बर सुन कर वफ़द के हाथ ख़त और तुह्फ़े भेजे।
13 हिज़क़ियाह ने वफ़द का इस्तिक़्बाल करके उसे

वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने में महफ़ूज़ रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बल्सान का तेल और बाक़ी क़ीमती तेल। उस ने अस्लिहाख़ाना और बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो उस के ख़ज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई। 14 तब यसायाह नबी हिज़क़ियाह बादशाह के पास आया और पूछा, “इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ से आए हैं?” हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, “दूरदराज़ मुल्क बाबल से आए हैं।” 15 यसायाह बोला, “उन्हों ने महल में क्या कुछ देखा?” हिज़क़ियाह ने कहा, “उन्हों ने महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे ख़ज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैं ने उन्हें नहीं दिखाई।”

16 तब यसायाह ने कहा, “रब का फ़रमान सुनें! 17 एक दिन आने वाला है कि तेरे महल का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने भी ख़ज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सब को दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 18 तेरे बेटों में से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख़्वाजासरा बन कर शाह-ए-बाबल के महल में ख़िदमत करेंगे।”

19 हिज़क़ियाह बोला, “रब का जो पैग़ाम आप ने मुझे दिया है वह ठीक है।” क्यूँकि उस ने सोचा, “बड़ी बात यह है कि मेरे जीते जी अम्न-ओ-अमान होगा।”

हिज़क़ियाह की मौत

20 बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहान-ए-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज हैं। वहाँ यह भी बयान किया गया है कि उस ने किस तरह तालाब बनवा कर वह सुरंग खुदवाई जिस के ज़रीए चश्मे का पानी शहर तक पहुँचता है। 21 जब हिज़क़ियाह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उस का बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

21 1 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 55 साल था। उस की माँ हिफ़्सीबाह थी। 2 मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसन्द था। उस ने उन क़ौमों के क़ाबिल-ए-घिन रस्म-ओ-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इस्राईलियों के आगे से निकाल दिया था। 3 ऊँची जगहों के जिन मन्दिरों को उस के बाप हिज़क़ियाह ने ढा दिया था उन्हें उस ने नए सिरे से तामीर किया। उस ने बाल देवता की क़ुर्बानगाहें बनवाईं और यसीरत देवी का खम्बा खड़ा किया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह इस्राईल के बादशाह अख़ियब ने किया था। इन के इलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लश्कर को सिज्दा करके उन की ख़िदमत करता था। 4 उस ने रब के घर में भी अपनी क़ुर्बानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, “मैं यरूशलम में अपना नाम क़ाइम करूँगा।” 5 लेकिन मनस्सी ने पर्वा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लश्कर के लिए क़ुर्बानगाहें बनवाईं। 6 यहाँ तक कि उस ने अपने बेटे को भी क़ुर्बान करके जला दिया। जादूगरी और ग़ैबदानी करने के इलावा वह मुर्दों की रूहों से राबिता करने वालों और रम्मालों से भी मश्वरा करता था।

ग़रज़ उस ने बहुत कुछ किया जो रब को नापसन्द था और उसे तैश दिलाया। 7 यसीरत देवी का खम्बा बनवा कर उस ने उसे रब के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उस के बेटे सुलेमान से कहा था, “इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैं ने तमाम इस्राईली क़बीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम अबद तक क़ाइम रखूँगा। 8 अगर इस्राईली एहतियात से मेरे उन तमाम अह्काम की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इस्राईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैं ने उन के बापदादा

को अता किया था।” 9 लेकिन लोग रब के ताबे न
रहे, और मनस्सी ने उन्हें ऐसे ग़लत काम करने पर
उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे
जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त उन के आगे
से तबाह कर दिया था।
10 आख़िरकार रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों
की मारिफ़त एलान किया, 11 “यहूदाह के बादशाह
मनस्सी से क़ाबिल-ए-घिन गुनाह सरज़द हुए हैं। उस
की हरकतें मुल्क में इस्राईल से पहले रहने वाले
अमोरियों की निस्बत कहीं ज़्यादा शरीर हैं। अपने
बुतों से उस ने यहूदाह के बाशिन्दों को गुनाह करने
पर उकसाया है। 12 चुनाँचे रब इस्राईल का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘मैं यरूशलम और यहूदाह पर ऐसी
आफ़त नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इस की ख़बर
मिलेगी उस के कान बजने लगेंगे। 13 मैं यरूशलम को
उसी नाप से नापूँगा जिस से सामरिया को नाप चुका
हूँ। मैं उसे उस तराज़ू में रख कर तोलूँगा जिस में
अख़ियब का घराना तोल चुका हूँ। जिस तरह बर्तन
सफ़ाई करते वक़्त पोंछ कर उलटे रखे जाते हैं उसी
तरह मैं यरूशलम का सफ़ाया कर दूँगा। 14 उस वक़्त
मैं अपनी मीरास का बचा-खुचा हिस्सा भी तर्क कर
दूँगा। मैं उन्हें उन के दुश्मनों के हवाले कर दूँगा जो
उन की लूट-मार करेंगे। 15 और वजह यही होगी कि
उन से ऐसी हरकतें सरज़द हुई हैं जो मुझे नापसन्द
हैं। उस दिन से ले कर जब उन के बापदादा मिस्र से
निकल आए आज तक वह मुझे तैश दिलाते रहे हैं’।”
16 लेकिन मनस्सी ने न सिर्फ़ यहूदाह के बाशिन्दों
को बुतपरस्ती और ऐसे काम करने पर उकसाया जो
रब को नापसन्द थे बल्कि उस ने बेशुमार बेक़ुसूर
लोगों को क़त्ल भी किया। उन के ख़ून से यरूशलम
एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।
17 बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उस में
उस के गुनाहों का ज़िक्र भी किया गया है। 18 जब
वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उस
के महल के बाग़ में दफ़नाया गया जो उज़्ज़ा का बाग़
कहलाता है। फिर उस का बेटा अमून तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

19 अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और
दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता रहा। उस
की माँ मसुल्लिमत बिन्त हरूस युत्बा की रहने वाली
थी। 20 अपने बाप मनस्सी की तरह अमून ऐसा ग़लत
काम करता रहा जो रब को नापसन्द था। 21 वह हर
तरह से अपने बाप के बुरे नमूने पर चल कर उन बुतों
की ख़िदमत और पूजा करता रहा जिन की पूजा उस
का बाप करता आया था। 22 रब अपने बापदादा के
ख़ुदा को उस ने तर्क किया, और वह उस की राहों
पर नहीं चलता था।
23 एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने उस के
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल कर दिया।
24 लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश करने वालों को
मार डाला और अमून के बेटे यूसियाह को बादशाह
बना दिया।
25 बाक़ी जो कुछ अमून की हुकूमत के दौरान हुआ
और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-यहूदाह की
तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है। 26 उसे
उज़्ज़ा के बाग़ में उस की अपनी क़ब्र में दफ़न किया
गया। फिर उस का बेटा यूसियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूसियाह

22 1 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में रह कर उस की हुकूमत
का दौरानिया 31 साल था। उस की माँ यदीदा बिन्त
अदायाह बुस्क़त की रहने वाली थी। 2 यूसियाह वह
कुछ करता रहा जो रब को पसन्द था। वह हर बात
में अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा
और उस से न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।
3 अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह बादशाह
ने अपने मीरमुन्शी साफ़न बिन असलियाह बिन

मसुल्लाम को रब के घर के पास भेज कर कहा,
4 “इमाम-ए-आज़म ख़िलक़ियाह के पास जा कर उसे
बता देना कि उन तमाम पैसों को गिन लें जो दरबानों
ने लोगों से जमा किए हैं। 5–6 फिर पैसे उन ठेकेदारों
को दे दें जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे हैं
ताकि वह कारीगरों, तामीर करने वालों और राजों
की उजरत अदा कर सकें। इन पैसों से वह दराड़ों
को ठीक करने के लिए दरकार लकड़ी और तराशे
हुए पत्थर भी ख़रीदें। 7 ठेकेदारों को अख़राजात का
हिसाब-किताब देने की ज़रूरत नहीं है, क्यूँकि वह
क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं।”

रब के घर से शरीअत की किताब मिल जाती है

8 जब मीरमुन्शी साफ़न ख़िलक़ियाह के पास पहुँचा
तो इमाम-ए-आज़म ने उसे एक किताब दिखा कर
कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली
है।” उस ने उसे साफ़न को दे दिया जिस ने उसे पढ़
लिया। 9 तब साफ़न बादशाह के पास गया और उसे
इत्तिला दी, “हम ने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत
पर मुक़र्रर ठेकेदारों और बाक़ी काम करने वालों को
दे दिए हैं।” 10 फिर साफ़न ने बादशाह को बताया,
“ख़िलक़ियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब
को खोल कर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की
तिलावत करने लगा।

11 किताब की बातें सुन कर बादशाह ने रंजीदा
हो कर अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 उस ने
ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अक्बोर
बिन मीकायाह, मीरमुन्शी साफ़न और अपने ख़ास
ख़ादिम असायाह को बुला कर उन्हें हुक्म दिया,
13 “जा कर मेरी और क़ौम बल्कि तमाम यहूदाह की
ख़ातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में
दरयाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होने
वाला है वह निहायत सख़्त है, क्यूँकि हमारे बापदादा
न किताब के फ़रमानों के ताबे रहे, न उन हिदायात
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी है जो उस में हमारे लिए
दर्ज की गई हैं।”

14 चुनाँचे ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम, अक्बोर,
साफ़न और असायाह ख़ुल्दा नबिया को मिलने गए।
ख़ुल्दा का शौहर सल्लूम बिन तिक़्वा बिन ख़र्ख़स रब
के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए
इलाक़े में रहते थे। 15–16 ख़ुल्दा ने उन्हें जवाब दिया,
“रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी
ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि मैं
इस शहर और उस के बाशिन्दों पर आफ़त नाज़िल
करूँगा। वह तमाम बातें पूरी हो जाएँगी जो यहूदाह के
बादशाह ने किताब में पढ़ी हैं। 17 क्यूँकि मेरी क़ौम ने
मुझे तर्क करके दीगर माबूदों को क़ुर्बानियाँ पेश की
हैं और अपने हाथों से बुत बना कर मुझे तैश दिलाया
है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और
कभी ख़त्म नहीं होगा।’

18 लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ जिस
ने आप को रब से दरयाफ़्त करने के लिए भेजा है
और उसे बता दें कि रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘मेरी बातें सुन कर 19 तेरा दिल नर्म हो गया है।
जब तुझे पता चला कि मैं ने इस मक़ाम और इस
के बाशिन्दों के बारे में फ़रमाया है कि वह लानती
और तबाह हो जाएंगे तो तू ने अपने आप को रब
के सामने पस्त कर दिया। तू ने रंजीदा हो कर अपने
कपड़े फाड़ लिए और मेरे हुज़ूर फूट फूट कर रोया।
रब फ़रमाता है कि यह देख कर मैं ने तेरी सुनी है।
20 जब तू मेरे कहने पर मर कर अपने बापदादा से जा
मिलेगा तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं
शहर पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा’।”

अफ़्सर बादशाह के पास वापस गए और उसे
ख़ुल्दा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अह्द बांधता है

23 1 तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के
तमाम बुज़ुर्गों को बुला कर 2 रब के घर में
गया। सब लोग छोटे से ले कर बड़े तक उस के साथ
गए यानी यहूदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिन्दे,
इमाम और नबी। वहाँ पहुँच कर जमाअत के सामने

अह्द की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

3 फिर बादशाह ने सतून के पास खड़े हो कर रब के हुज़ूर अह्द बांधा और वादा किया, “हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिल-ओ-जान से उस के अह्काम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अह्द की बातें क़ाइम रखेंगे।” पूरी क़ौम अह्द में शरीक हुई।

यूसियाह बुतपरस्ती को ख़त्म करता है

4 अब बादशाह ने इमाम-ए-आज़म ख़िलक़ियाह, दूसरे दर्जे पर मुक़र्रर इमामों और दरबानों को हुक्म दिया, “रब के घर में से वह तमाम चीज़ें निकाल दें जो बाल देवता, यसीरत देवी और आसमान के पूरे लश्कर की पूजा के लिए इस्तेमाल हुई हैं।” फिर उस ने यह सारा सामान यरूशलम के बाहर वादी-ए-क़िद्रोन के खुले मैदान में जला दिया और उस की राख उठा कर बैत-एल ले गया। 5 उस ने उन बुतपरस्त पुजारियों को भी हटा दिया जिन्हें यहूदाह के बादशाहों ने यहूदाह के शहरों और यरूशलम के गिर्द-ओ-नवाह के मन्दिरों में क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया था। यह पुजारी न सिर्फ़ बाल देवता को अपने नज़राने पेश करते थे बल्कि सूरज, चाँद, झुर्मटों और आसमान के पूरे लश्कर को भी। 6 यसीरत देवी का खम्बा यूसियाह ने रब के घर से निकाल कर शहर के बाहर वादी-ए-क़िद्रोन में जला दिया। फिर उस ने उसे पीस कर उस की राख ग़रीब लोगों की क़ब्रों पर बिखेर दी। 7 रब के घर के पास ऐसे मकान थे जो जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों के लिए बनाए गए थे। उन में औरतें यसीरत देवी के लिए कपड़े भी बुनती थीं। अब बादशाह ने उन को भी गिरा दिया।

8 फिर यूसियाह तमाम इमामों को यरूशलम वापस लाया। साथ साथ उस ने यहूदाह के शिमाल में जिबा से ले कर जुनूब में बैर-सबा तक ऊँची जगहों के उन तमाम मन्दिरों की बेहुरमती की जहाँ इमाम पहले क़ुर्बानियाँ पेश करते थे। यरूशलम के उस दरवाज़े के पास भी दो मन्दिर थे जो शहर के सरदार यशूअ के नाम से मश्हूर था। इन को भी यूसियाह ने ढा दिया। (शहर में दाख़िल होते वक़्त यह मन्दिर बाईं तरफ़ नज़र आते थे।) 9 जिन इमामों ने ऊँची जगहों पर ख़िदमत की थी उन्हें यरूशलम में रब के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन वह बाक़ी इमामों की तरह बेख़मीरी रोटी के लिए मख़्सूस रोटी खा सकते थे। 10 बिन-हिन्नूम की वादी की क़ुर्बानगाह बनाम तूफ़त को भी बादशाह ने ढा दिया ताकि आइन्दा कोई भी अपने बेटे या बेटी को जला कर मलिक देवता को क़ुर्बान न कर सके। 11 घोड़े के जो मुजस्समे यहूदाह के बादशाहों ने सूरज देवता की ताज़ीम में खड़े किए थे उन्हें भी यूसियाह ने गिरा दिया और उन के रथों को जला दिया। यह घोड़े रब के घर के सहन में दरवाज़े के साथ खड़े थे, वहाँ जहाँ दरबारी अफ़्सर बनाम नातन-मलिक का कमरा था। 12 आख़ज़ बादशाह ने अपनी छत पर एक कमरा बनाया था जिस की छत पर भी मुख़्तलिफ़ बादशाहों की बनी हुई क़ुर्बानगाहें थीं। अब यूसियाह ने इन को भी ढा दिया और उन दो क़ुर्बानगाहों को भी जो मनस्सी ने रब के घर के दो सहनों में खड़ी की थीं। इन को टुकड़े टुकड़े करके उस ने मल्बा वादी-ए-क़िद्रोन में फैंक दिया। 13 नीज़, बादशाह ने यरूशलम के मशरिक़ में ऊँची जगहों के मन्दिरों की बेहुरमती की। यह मन्दिर हलाकत के पहाड़ के जुनूब में थे, और सुलेमान बादशाह ने उन्हें तामीर किया था। उस ने उन्हें सैदा की शर्मनाक देवी अस्तारात, मोआब के मकरूह देवता कमोस और अम्मोन के क़ाबिल-ए-घिन देवता मिल्कूम के लिए बनाया था। 14 यूसियाह ने देवताओं के लिए मख़्सूस किए गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े करके यसीरत देवी के खम्बे कटवा दिए और मक़ामात पर इन्सानी हड्डियाँ बिखेर कर उन की बेहुरमती की।

यूसियाह बैत-एल और सामरिया के मन्दिरों को गिरा देता है

15–16 बैत-एल में अब तक ऊँची जगह पर वह
मन्दिर और क़ुर्बानगाह पड़ी थी जो यरुबिआम बिन
नबात ने तामीर की थी। यरुबिआम ही ने इस्राईल को
गुनाह करने पर उकसाया था। जब यूसियाह ने देखा
कि जिस पहाड़ पर क़ुर्बानगाह है उस की ढलानों पर
बहुत सी क़ब्रें हैं तो उस ने हुक्म दिया कि उन की
हड्डियाँ निकाल कर क़ुर्बानगाह पर जला दी जाएँ।
यूँ क़ुर्बानगाह की बेहुरमती बिलकुल उसी तरह हुई
जिस तरह रब ने मर्द-ए-ख़ुदा की मारिफ़त फ़रमाया
था। इस के बाद यूसियाह ने मन्दिर और क़ुर्बानगाह
को गिरा दिया। उस ने यसीरत देवी का मुजस्समा
कूट कूट कर आख़िर में सब कुछ जला दिया।
17 फिर यूसियाह को एक और क़ब्र नज़र आई। उस
ने शहर के बाशिन्दों से पूछा, “यह किस की क़ब्र
है?” उन्हों ने जवाब दिया, “यह यहूदाह के उस मर्द-
ए-ख़ुदा की क़ब्र है जिस ने बैत-एल की क़ुर्बानगाह
के बारे में ऐन वह पेशगोई की थी जो आज आप के
वसीले से पूरी हुई है।” 18 यह सुन कर बादशाह ने
हुक्म दिया, “इसे छोड़ दो! कोई भी इस की हड्डियों
को न छेड़े।” चुनाँचे उस की और उस नबी की हड्डियाँ
बच गईं जो सामरिया से उस से मिलने आया और बाद
में उस की क़ब्र में दफ़नाया गया था।
19 जिस तरह यूसियाह ने बैत-एल के मन्दिर को
तबाह किया उसी तरह उस ने सामरिया के तमाम
शहरों के मन्दिरों के साथ किया। उन्हें ऊँची जगहों
पर बना कर इस्राईल के बादशाहों ने रब को तैश
दिलाया था। 20 इन मन्दिरों के पुजारियों को उस ने
उन की अपनी अपनी क़ुर्बानगाहों पर सज़ा-ए-मौत दी
और फिर इन्सानी हड्डियाँ उन पर जला कर उन की
बेहुरमती की। इस के बाद वह यरूशलम लौट गया।

फ़सह की ईद मनाई जाती है

21 यरूशलम में आ कर बादशाह ने हुक्म दिया,
“पूरी क़ौम रब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की
ईद मनाए, जिस तरह अह्द की किताब में फ़रमाया
गया है।” 22 उस ज़माने से ले कर जब क़ाज़ी इस्राईल
की राहनुमाई करते थे यूसियाह के दिनों तक फ़सह
की ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। इस्राईल और
यहूदाह के बादशाहों के अय्याम में भी ऐसी ईद नहीं
मनाई गई थी। 23 यूसियाह की हुकूमत के 18वें साल
में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद यरूशलम
में मनाई गई।

यूसियाह की फ़रमाँबरदारी

24 यूसियाह उन तमाम हिदायात के ताबे रहा जो
शरीअत की उस किताब में दर्ज थीं जो ख़िलक़ियाह
इमाम को रब के घर में मिली थी। चुनाँचे उस ने मुर्दों
की रूहों से राबिता करने वालों, रम्मालों, घरेलू बुतों,
दूसरे बुतों और बाक़ी तमाम मकरूह चीज़ों को ख़त्म
कर दिया। 25 न यूसियाह से पहले, न उस के बाद उस
जैसा कोई बादशाह हुआ जिस ने उस तरह पूरे दिल,
पूरी जान और पूरी ताक़त के साथ रब के पास वापस
आ कर मूसवी शरीअत के हर फ़रमान के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारी हो। 26 तो भी रब यहूदाह पर अपने
ग़ुस्से से बाज़ न आया, क्यूँकि मनस्सी ने अपनी ग़लत
हरकतों से उसे हद से ज़्यादा तैश दिलाया था। 27 इसी
लिए रब ने फ़रमाया, “जो कुछ मैं ने इस्राईल के साथ
किया वही कुछ यहूदाह के साथ भी करूँगा। मैं उसे
अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दूँगा। अपने चुने हुए शहर
यरूशलम को मैं रद्द करूँगा और साथ साथ उस घर
को भी जिस के बारे में मैं ने कहा, ‘वहाँ मेरा नाम
होगा’।”
28 बाक़ी जो कुछ यूसियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उस ने किया वह ‘शाहान-ए-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया
है।

29 यूसियाह की हुकूमत के दौरान मिस्र का बादशाह
निकोह फ़िरऔन दरया-ए-फ़ुरात के लिए रवाना हुआ
ताकि असूर के बादशाह से लड़े। रास्ते में यूसियाह
उस से लड़ने के लिए निकला। लेकिन जब मजिद्दो
के क़रीब उन का एक दूसरे के साथ मुक़ाबला हुआ
तो निकोह ने उसे मार दिया। 30 यूसियाह के मुलाज़िम
उस की लाश रथ पर रख कर मजिद्दो से यरूशलम
ले आए जहाँ उसे उस की अपनी क़ब्र में दफ़न किया
गया। फिर उम्मत ने उस के बेटे यहूआख़ज़ को मसह
करके बाप के तख़्त पर बिठा दिया।

यहूदाह का बादशाह यहूआख़ज़

31 यहूआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन
माह था। उस की माँ हमूतल बिन्त यरमियाह लिब्ना
की रहने वाली थी। 32 अपने बापदादा की तरह
वह भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसन्द
था। 33 निकोह फ़िरऔन ने मुल्क-ए-हमात के शहर
रिब्ला में उसे गिरिफ़्तार कर लिया, और उस की
हुकूमत ख़त्म हुई। मुल्क-ए-यहूदाह को ख़राज के
तौर पर तक़रीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34
किलोग्राम सोना अदा करना पड़ा। 34 यहूआख़ज़ की
जगह फ़िरऔन ने यूसियाह के एक और बेटे को तख़्त
पर बिठाया। उस के नाम इलियाक़ीम को उस ने
यहूयक़ीम में बदल दिया। यहूआख़ज़ को वह अपने
साथ मिस्र ले गया जहाँ वह बाद में मरा भी।

35 मतलूबा चाँदी और सोने की रक़म अदा करने
के लिए यहूयक़ीम ने लोगों से ख़ास टैक्स लिया।
उम्मत को अपनी दौलत के मुताबिक़ पैसे देने पड़े।
इस तरीक़े से यहूयक़ीम फ़िरऔन को ख़राज अदा
कर सका।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

36 यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना,
और वह यरूशलम में रह कर 11 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ ज़बूदा बिन्त फ़िदायाह रूमाह की
रहने वाली थी। 37 बापदादा की तरह उस का चाल-
चलन भी रब को नापसन्द था।

24 1 यहूयक़ीम की हुकूमत के दौरान बाबल के
बादशाह नबूकद्नज़्ज़र ने यहूदाह पर हम्ला
किया। नतीजे में यहूयक़ीम उस के ताबे हो गया।
लेकिन तीन साल के बाद वह सरकश हो गया। 2 तब
रब ने बाबल, शाम, मोआब और अम्मोन से डाकुओं
के जथ्थे भेज दिए ताकि उसे तबाह करें। वैसा ही
हुआ जिस तरह रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों
की मारिफ़त फ़रमाया था। 3 यह आफ़तें इस लिए
यहूदाह पर आईं कि रब ने इन का हुक्म दिया था।
वह मनस्सी के संगीन गुनाहों की वजह से यहूदाह
को अपने हुज़ूर से ख़ारिज करना चाहता था।

4 वह यह हक़ीक़त भी नज़रअन्दाज़ न कर सका
कि मनस्सी ने यरूशलम को बेक़ुसूर लोगों के ख़ून
से भर दिया था। रब यह मुआफ़ करने के लिए तय्यार
नहीं था। 5 बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया वह 'शाहान-
ए-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 6 जब
वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उस का
बेटा यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ। 7 उस वक़्त मिस्र
का बादशाह दुबारा अपने मुल्क से निकल न सका,
क्यूँकि बाबल के बादशाह ने मिस्र की सरहद बनाम
वादी-ए-मिस्र से ले कर दरया-ए-फ़ुरात तक का सारा
इलाक़ा मिस्र के क़ब्ज़े से छीन लिया था।

यहूयाकीन की हुकूमत और यरूशलम पर बाबल का क़ब्ज़ा

8 यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना, और
यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह
था। उस की माँ नहुश्ता बिन्त इल्नातन यरूशलम की
रहने वाली थी। 9 अपने बाप की तरह यहूयाकीन भी
ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसन्द था।

10 उस की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र की फ़ौज यरूशलम तक बढ़ कर उस
का मुहासरा करने लगी। 11 नबूकद्नज़्ज़र ख़ुद शहर

के मुहासरे के दौरान पहुँच गया। 12 तब यहूयाकीन
ने शिकस्त मान कर अपने आप को अपनी माँ,
मुलाज़िमों, अफ़सरों और दरबारियों समेत बाबल
के बादशाह के हवाले कर दिया। बादशाह ने उसे
गिरिफ़्तार कर लिया।

यह नबूकद्नज़्ज़र की हुकूमत के आठवें साल में
हुआ। 13 जिस का एलान रब ने पहले किया था वह
अब पूरा हुआ, नबूकद्नज़्ज़र ने रब के घर और शाही
महल के तमाम ख़ज़ाने छीन लिए। उस ने सोने का
वह सारा सामान भी लूट लिया जो सुलेमान ने रब
के घर के लिए बनवाया था। 14 और जितने खाते-
पीते लोग यरूशलम में थे उन सब को बादशाह ने
जिलावतन कर दिया। उन में तमाम अफ़सर, फ़ौजी,
दस्तकार और धातों का काम करने वाले शामिल
थे, कुल 10,000 अफ़राद। उम्मत के सिर्फ़ ग़रीब
लोग पीछे रह गए। 15 नबूकद्नज़्ज़र यहूयाकीन को
भी क़ैदी बना कर बाबल ले गया और उस की माँ,
बीवियों, दरबारियों और मुल्क के तमाम असर-ओ-
रसूख़ रखने वालों को भी। 16 उस ने फ़ौजियों के
7,000 अफ़राद और 1,000 दस्तकारों और धातों
का काम करने वालों को जिलावतन करके बाबल में
बसा दिया। यह सब माहिर और जंग करने के क़ाबिल
आदमी थे। 17 यरूशलम में बाबल के बादशाह ने
यहूयाकीन की जगह उस के चचा मत्तनियाह को
तख़्त पर बिठा कर उस का नाम सिदक़ियाह में बदल
दिया।

यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह

18 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया
11 साल था। उस की माँ हमूतल बिन्त यरमियाह
लिब्ना शहर की रहने वाली थी। 19 यहूयक़ीम की
तरह सिदक़ियाह ऐसा काम करता रहा जो रब
को नापसन्द था। 20 रब यरूशलम और यहूदाह के
बाशिन्दों से इतना नाराज़ हुआ कि आख़िर में उस ने
उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह से सरकश
हुआ,

25 1 इस लिए शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र
तमाम फ़ौज को अपने साथ ले कर दुबारा
यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हम्ला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की
फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम
दसवें महीने के दसवें दिन [j]शुरू हुआ। पूरे शहर के
इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए। 2 सिदक़ियाह की
हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम क़ाइम रहा।
3 लेकिन फिर काल ने शहर में ज़ोर पकड़ा, और
अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन [k]4 बाबल के फ़ौजियों ने
फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात सिदक़ियाह
अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार होने में कामयाब
हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह
फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के
साथ मुल्हिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादी-
ए-यर्दन की तरफ़ भागने लगे, 5 लेकिन बाबल की
फ़ौज ने बादशाह का ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के
मैदान में पकड़ लिया। उस के फ़ौजी उस से अलग
हो कर चारों तरफ़ मुन्तशिर हो गए, 6 और वह ख़ुद
गिरिफ़्तार हो गया।

फिर उसे रिब्ला में शाह-ए-बाबल के पास लाया
गया, और वहीं सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया
गया। 7 सिदक़ियाह के देखते देखते उस के बेटों को
क़त्ल किया गया। इस के बाद फ़ौजियों ने उस की
आँखें निकाल कर उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़
लिया और बाबल ले गए।

---

[j]यानी 15 जन्वरी

[k]यानी 18 जुलाई

यरूशलम और रब के घर की तबाही

8 शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की हुकूमत के 19वें
साल में बादशाह का ख़ास अफ़्सर नबूज़रादान
यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर
था। पाँचवें महीने के सातवें दिन [l]उस ने आ कर 9 रब
के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम मकानों
को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। 10 उस
ने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की फ़सील को भी
गिरा दिया। 11 फिर नबूज़रादान ने सब को जिलावतन
कर दिया जो यरूशलम और यहूदाह में पीछे रह गए
थे। वह भी उन में शामिल थे जो जंग के दौरान ग़द्दारी
करके शाह-ए-बाबल के पीछे लग गए थे। 12 लेकिन
नबूज़रादान ने सब से निचले तब्क़े के बाज़ लोगों
को मुल्क-ए-यहूदाह में छोड़ दिया ताकि वह अंगूर
के बाग़ों और खेतों को सँभालें।

13 बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जा कर
पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठाने
वाली हथगाड़ियों और समुन्दर नामी पीतल के हौज़
को तोड़ दिया और सारा पीतल उठा कर बाबल ले
गए। 14 वह रब के घर की ख़िदमत सरअन्जाम देने
के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ,
बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, बर्तन और पीतल का
बाक़ी सारा सामान। 15 ख़ालिस सोने और चाँदी के
बर्तन भी इस में शामिल थे यानी जलते हुए कोएले
के बर्तन और छिड़काओ के कटोरे। शाही मुहाफ़िज़ों
का अफ़्सर सारा सामान उठा कर बाबल ले गया।
16 जब दोनों सतूनों, समुन्दर नामी हौज़ और बासनों
को उठाने वाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया
तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका।
सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए
बनवाई थीं। 17 हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट थी। उन
के बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट थी, और
वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।

18 शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने ज़ैल
के क़ैदियों को अलग कर दिया : इमाम-ए-आज़म
सिरायाह, उस के बाद आने वाला इमाम सफ़नियाह,
रब के घर के तीन दरबानों, 19 शहर के बचे हुओं में
से उस अफ़्सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर
था, सिदक़ियाह बादशाह के पाँच मुशीरों, उम्मत की
भर्ती करने वाले अफ़्सर और शहर में मौजूद उस के
60 मर्दों को। 20 नबूज़रादान इन सब को अलग करके
सूबा हमात के शहर रिब्ला ले गया जहाँ बाबल का
बादशाह था। 21 वहाँ नबूकद्नज़्ज़र ने उन्हें सज़ा-ए-
मौत दी।

यूँ यहूदाह के बाशिन्दों को जिलावतन कर दिया
गया।

जिदलियाह की हुकूमत

22 जिन लोगों को बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र
ने यहूदाह में पीछे छोड़ दिया था, उन पर उस
ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न मुक़र्रर
किया। 23 जब फ़ौज के बचे हुए अफ़्सरों और उन
के दस्तों को ख़बर मिली कि जिदलियाह को गवर्नर
मुक़र्रर किया गया है तो वह मिस्फ़ाह में उस के
पास आए। अफ़्सरों के नाम इस्माईल बिन नतनियाह,
यूहनान बिन क़रीह, सिरायाह बिन तन्हूमत नतूफ़ाती
और याज़नियाह बिन माकाती थे। उन के फ़ौजी भी
साथ आए।

24 जिदलियाह ने क़सम खा कर उन से वादा किया,
“बाबल के अफ़्सरों से मत डरना! मुल्क में रह कर
बाबल के बादशाह की ख़िदमत करें तो आप की
सलामती होगी।”

25 लेकिन उस साल के सातवें महीने में इस्माईल
बिन नतनियाह बिन इलीसमा ने दस साथियों के
साथ मिस्फ़ाह आ कर धोके से जिदलियाह को क़त्ल
किया। इस्माईल शाही नस्ल का था। जिदलियाह के
इलावा उन्हों ने उस के साथ रहने वाले यहूदाह और

---

[l]यानी 14 अगस्त

बाबल के तमाम लोगों को भी क़त्ल किया। 26 यह
देख कर यहूदाह के तमाम बाशिन्दे छोटे से ले कर
बड़े तक फ़ौजी अफ़सरों समेत हिज्रत करके मिस्र चले
गए, क्यूँकि वह बाबल के इन्तिक़ाम से डरते थे।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

27 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की जिलावतनी
के 37वें साल में अवील-मरूदक बाबल का बादशाह
बना। उसी साल के 12वें महीने के 27वें दिन उस ने
यहूयाकीन को क़ैदख़ाने से आज़ाद कर दिया। 28 उस
ने उस से नर्म बातें करके उसे इज़्ज़त की ऐसी कुर्सी
पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक़ी
बादशाहों की निस्बत ज़्यादा अहम थी। 29 यहूयाकीन
को क़ैदियों के कपड़े उतारने की इजाज़त मिली, और
उसे ज़िन्दगी भर बादशाह की मेज़ पर बाक़ाइदगी
से शरीक होने का शरफ़ हासिल रहा। 30 बादशाह
ने मुक़र्रर किया कि यहूयाकीन को उम्र भर इतना
वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात
पूरी होती रहें।

१-तवारीख़

आदम से इब्राहीम तक का नसबनामा

1 [1] नूह तक आदम की औलाद सेत, अनूस,
[2] क़ीनान, महलल-एल, यारिद, [3] हनूक,
मतूसिलह, लमक, [4] और नूह थी।

नूह के तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त थे। [5] याफ़त
के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान, तूबल, मसक
और तीरास थे। [6] जुमर के बेटे अश्कनाज़, रीफ़त और
तुजर्मा थे। [7] यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे।
कित्ती और रोदानी भी उस की औलाद हैं।

[8] हाम के बेटे कूश, मिस्र, फ़ूत और कनआन थे।
[9] कूश के बेटे सिबा, हवीला, सब्ता, रामा और
सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।
[10] नमरूद भी कूश का बेटा था। वह ज़मीन पर पहला
सूरमा था। [11] मिस्र ज़ैल की क़ौमों का बाप था : लूदी,
अनामी, लिहाबी, नफ़्तूही, [12] फ़त्रूसी, कस्लूही (जिन
से फ़िलिस्ती निकले) और कफ़्तूरी। [13] कनआन का
पहलौठा सैदा था। कनआन इन क़ौमों का बाप भी
था : हित्ती [14] यबूसी, अमोरी, जिर्जासी, [15] हिव्वी,
अर्क़ी, सीनी, [16] अर्वादी, समारी और हमाती।

[17] सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अर्फ़क्सद, लूद और
अराम थे। अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मसक
थे। [18] अर्फ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का
बेटा इबर था। [19] इबर के दो बेटे पैदा हुए। एक का
नाम फ़लज यानी तक़्सीम था, क्यूँकि उन अय्याम
में दुनिया तक़्सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम
युक़्तान था। [20] युक़्तान के बेटे अल्मूदाद, सलफ़,
हसरमावत, इराख़, [21] हदूराम, ऊज़ाल, दिक़्ला,
[22] ऊबाल, अबीमाएल, सबा, [23] ओफ़ीर, हवीला
और यूबाब थे। यह सब उस के बेटे थे।

[24] सिम का यह नसबनामा है : सिम, अर्फ़क्सद,
सिलह, [25] इबर, फ़लज, रऊ, [26] सरूज, नहूर, तारह
[27] और अब्राम यानी इब्राहीम।

इब्राहीम का नसबनामा

[28] इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ और इस्माईल थे। [29] उन
की दर्ज-ए-ज़ैल औलाद थी :

इस्माईल का पहलौठा नबायोत था। उस के बाक़ी
बेटे क़ीदार, अदबिएल, मिब्साम, [30] मिश्मा, दूमा,
मस्सा, हदद, तैमा, [31] यतूर, नफ़ीस और क़िदमा थे।
सब इस्माईल के हाँ पैदा हुए।

[32] इब्राहीम की दाश्ता क़तूरा के बेटे ज़िम्रान,
युक़्सान, मिदान, मिदियान, इस्बाक़ और सूख़ थे।
युक़्सान के दो बेटे सबा और ददान पैदा हुए [33] जबकि
मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और
इल्दआ थे। सब क़तूरा की औलाद थे।

[34] इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ के दो बेटे पैदा हुए,
एसौ और इस्राईल। [35] एसौ के बेटे इलीफ़ज़, रऊएल,
यऊस, यालाम और क़ोरह थे। [36] इलीफ़ज़ के बेटे
तेमान, ओमर, सफ़ी, जाताम, क़नज़ और अमालीक़
थे। अमालीक़ की माँ तिमना थी। [37] रऊएल के बेटे
नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे।

सईर यानी अदोम का नसबनामा

[38] सईर के बेटे लोतान, सोबल, सिबओन, अना,
दीसोन, एसर और दीसान थे। [39] लोतान के दो बेटे
होरी और होमाम थे। (तिमना लोतान की बहन थी।)
[40] सोबल के बेटे अल्यान, मानहत, ऐबाल, सफ़ी
और ओनाम थे। सिबओन के बेटे अय्याह और अना
थे। [41] अना के एक बेटा दीसोन पैदा हुआ। दीसोन
के चार बेटे हम्रान, इश्बान, यित्रान और किरान थे।

42 एसर के तीन बेटे बिल्हान, ज़ावान और अक़ान
थे। दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

अदोम के बादशाह

43 इस से पहले कि इस्राईलियों का कोई बादशाह
था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्क-ए-अदोम
में हुकूमत करते थे : बाला बिन बओर जो दिन्हाबा
शहर का था।
44 उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुस्रा शहर
का था।
45 उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क
का था।
46 उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिस ने
मुल्क-ए-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह
अवीत शहर का था।
47 उस की मौत पर सम्ला जो मस्रिक़ा शहर का था।
48 उस की मौत पर साऊल जो दरया-ए-फ़ुरात पर
रहोबोत शहर का था।
49 उस की मौत पर बाल-हनान बिन अक्बोर।
50 उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का
था। (बीवी का नाम महेतब-एल बिन्त मत्रिद बिन्त
मेज़ाहाब था।) 51 फिर हदद मर गया।

अदोमी क़बीलों के सरदार तिमना, अल्या, यतेत,
52 उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, 53 क़नज़, तेमान,
मिब्सार, 54 मज्दीएल और इराम थे। यही अदोम के
सरदार थे।

याक़ूब यानी इस्राईल के बेटे

2 1 इस्राईल के बारह बेटे रूबिन, शमाऊन,
लावी, यहूदाह, इश्कार, ज़बूलून, 2 दान, यूसुफ़,
बिनयमीन, नफ़्ताली, जद और आशर थे।

यहूदाह का नसबनामा

3 यहूदाह की शादी कनआनी औरत से हुई जो सूअ
की बेटी थी। उन के तीन बेटे एर, ओनान और सेला
पैदा हुए। यहूदाह का पहलौठा एर रब के नज़दीक
शरीर था, इस लिए उस ने उसे मरने दिया। 4 यहूदाह
के मज़ीद दो बेटे उस की बहू तमर से पैदा हुए। उन
के नाम फ़ारस और ज़ारह थे। यूँ यहूदाह के कुल पाँच
बेटे थे।

5 फ़ारस के दो बेटे हस्रोन और हमूल थे।
6 ज़ारह के पाँच बेटे ज़िम्री, ऐतान, हैमान, कल्कूल
और दारा थे। 7 कर्मी बिन ज़िम्री का बेटा वही अकर
यानी अकन था जिस ने उस लूटे हुए माल में से कुछ
लिया जो रब के लिए मख़्सूस था। 8 ऐतान के बेटे का
नाम अज़रियाह था।
9 हस्रोन के तीन बेटे यरहमिएल, राम और कलूबी
यानी कालिब थे।

राम की औलाद

10 राम के हाँ अम्मीनदाब और अम्मीनदाब के हाँ
यहूदाह के क़बीले के सरदार नह्सोन पैदा हुआ।
11 नह्सोन सल्मोन का और सल्मोन बोअज़ का बाप
था। 12 बोअज़ ओबेद का और ओबेद यस्सी का
बाप था। 13 बड़े से ले कर छोटे तक यस्सी के बेटे
इलियाब, अबीनदाब, सिमआ, 14 नतनीएल, रद्दी,
15 ओज़म और दाऊद थे। कुल सात भाई थे। 16 उन
की दो बहनें ज़रूयाह और अबीजेल थीं। ज़रूयाह
के तीन बेटे अबीशै, योआब और असाहेल थे।
17 अबीजेल के एक बेटा अमासा पैदा हुआ। बाप
यतर इस्माईली था।

कालिब की औलाद

18 कालिब बिन हस्रोन की बीवी अज़ूबा के हाँ
बेटी बनाम यरीओत पैदा हुई। यरीओत के बेटे यशर,
सोबाब और अर्दून थे। 19 अज़ूबा के वफ़ात पाने पर
कालिब ने इफ़्रात से शादी की। उन के बेटा हूर पैदा
हुआ। 20 हूर ऊरी का और ऊरी बज़लीएल का बाप
था।

21 60 साल की उम्र में कालिब के बाप हस्रोन
ने दुबारा शादी की। बीवी जिलिआद के बाप
मकीर की बेटी थी। इस रिश्ते से बेटा सजूब पैदा

हुआ। 22–23 सजूब का बेटा वह याईर था जिस की
जिलिआद के इलाक़े में 23 बस्तियाँ बनाम 'याईर
की बस्तियाँ' थीं। लेकिन बाद में जसूर और शाम के
फ़ौजियों ने उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त उन्हें
क़नात भी गिर्द-ओ-नवाह के इलाक़े समेत हासिल
हुआ। उन दिनों में कुल 60 आबादियाँ उन के हाथ
में आ गईं। इन के तमाम बाशिन्दे जिलिआद के
बाप मकीर की औलाद थे। 24 हस्रोन जिस की बीवी
अबियाह थी फ़ौत हुआ तो कालिब और इफ़्राता के
हाँ बेटा अश्हूर पैदा हुआ। बाद में अश्हूर तक़ूअ शहर
का बानी बन गया।

यरहमिएल की औलाद

25 हस्रोन के पहलौठे यरहमिएल के बेटे बड़े से
ले कर छोटे तक राम, बूना, ओरन, ओज़म और
अख़ियाह थे। 26 यरहमिएल की दूसरी बीवी अतारा
का एक बेटा ओनाम था।

27 यरहमिएल के पहलौठे राम के बेटे माज़, यमीन
और एकर थे। 28 ओनाम के दो बेटे सम्मी और
यदा थे। सम्मी के दो बेटे नदब और अबीसूर थे।
29 अबीसूर की बीवी अबीख़ैल के दो बेटे अख़्बान
और मोलिद पैदा हुए। 30 नदब के दो बेटे सिलद और
अफ़्फ़ाइम थे। सिलद बेऔलाद मर गया, 31 लेकिन
अफ़्फ़ाइम के हाँ बेटा यिसई पैदा हुआ। यिसई
सीसान का और सीसान अख़्ली का बाप था।
32 सम्मी के भाई यदा के दो बेटे यतर और यूनतन
थे। यतर बेऔलाद मर गया, 33 लेकिन यूनतन के
दो बेटे फ़लत और ज़ाज़ा पैदा हुए। सब यरहमिएल
की औलाद थे। 34–35 सीसान के बेटे नहीं थे बल्कि
बेटियाँ। एक बेटी की शादी उस ने अपने मिस्री
ग़ुलाम यर्ख़ा से करवाई। उन के बेटा अत्ती पैदा
हुआ। 36 अत्ती के हाँ नातन पैदा हुआ और नातन
के ज़बद, 37 ज़बद के इफ़्लाल, इफ़्लाल के ओबेद,
38 ओबेद के याहू, याहू के अज़रियाह, 39 अज़रियाह
के ख़लिस, ख़लिस के इलिआसा, 40 इलिआसा के
सिस्मी, सिस्मी के सल्लूम, 41 सल्लूम के यक़मियाह और
यक़मियाह के इलीसमा।

कालिब की औलाद का एक और नसबनामा

42 ज़ैल में यरहमिएल के भाई कालिब की औलाद
है : उस का पहलौठा मेसा ज़ीफ़ का बाप था और
दूसरा बेटा मरेसा हब्रून का बाप। 43 हब्रून के चार
बेटे क़ोरह, तफ़्फ़ूअह, रक़म और समा थे। 44 समा
के बेटे रख़म के हाँ युर्क़िआम पैदा हुआ। रक़म सम्मी
का बाप था, 45 सम्मी मऊन का और मऊन बैत-सूर
का।

46 कालिब की दाश्ता ऐफ़ा के बेटे हारान, मौज़ा
और जाज़िज़ पैदा हुए। हारान के बेटे का नाम जाज़िज़
था। 47 यह्दी के बेटे रजम, यूताम, जेसान, फ़लत,
ऐफ़ा और शाफ़ थे।

48 कालिब की दूसरी दाश्ता माका के बेटे शिबर,
तिर्हना, 49 शाफ़ (मदमन्ना का बाप) और सिवा
(मक्बेना और जिबिआ का बाप) पैदा हुए। कालिब
की एक बेटी भी थी जिस का नाम अक्सा था। 50 सब
कालिब की औलाद थे।

इफ़्राता के पहलौठे हूर के बेटे क़िर्यत-यारीम का
बाप सोबल, 51 बैत-लहम का बाप सल्मा और बैत-
जादिर का बाप ख़ारिफ़ थे। 52 क़िर्यत-यारीम के
बाप सोबल से यह घराने निकले : हराई, मानहत
का आधा हिस्सा 53 और क़िर्यत-यारीम के ख़ानदान
उत्तरी, फ़ूती, सुमाती और मिसराई। इन से सुरआती
और इस्ताली निकले हैं।

54 सल्मा से ज़ैल के घराने निकले : बैत-लहम
के बाशिन्दे, नतूफ़ाती, अतरात-बैत-योआब, मानहत
का आधा हिस्सा, सुरई 55 और याबीज़ में आबाद
मुन्शियों के ख़ानदान तिरआती, सिमआती और
सूकाती। यह सब क़ीनी थे जो रैकाबियों के बाप
हम्मत से निकले थे।

दाऊद बादशाह की औलाद

3 1 हब्रून में दाऊद बादशाह के दर्ज-ए-ज़ैल बेटे
पैदा हुए :

पहलौठा अम्नोन था जिस की माँ अख़ीनूअम
यज़्रएली थी। दूसरा दान्याल था जिस की माँ
अबीजेल कर्मिली थी। 2 तीसरा अबीसलूम था। उस
की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी
थी। चौथा अदूनियाह था जिस की माँ हज्जीत थी।
3 पाँचवाँ सफ़तियाह था जिस की माँ अबीताल थी।
छटा इत्रिआम था जिस की माँ इज्ला थी। 4 दाऊद
के यह छः बेटे उन साढ़े सात सालों के दौरान पैदा
हुए जब हब्रून उस का दार-उल-हकूमत था।

इस के बाद वह यरूशलम में मुन्तक़िल हुआ और
वहाँ मज़ीद 33 साल हुकूमत करता रहा। 5 उस
दौरान उस की बीवी बत-सबा बिन्त अम्मीएल के
चार बेटे सिमआ, सोबाब, नातन और सुलेमान पैदा
हुए। 6 मज़ीद बेटे भी पैदा हुए, इब्हार, इलीसूअ,
इलीफ़लत, 7 नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, 8 इलीसमा,
इल्यदा और इलीफ़लत। कुल नौ बेटे थे। 9 तमर उन
की बहन थी। इन के इलावा दाऊद की दाश्ताओं के
बेटे भी थे।

10 सुलेमान के हाँ रहुबिआम पैदा हुआ, रहुबिआम
के अबियाह, अबियाह के आसा, आसा के
यहूसफ़त, 11 यहूसफ़त के यहूराम, यहूराम के
अख़ज़ियाह, अख़ज़ियाह के यूआस, 12 यूआस
के अमसियाह, अमसियाह के अज़रियाह यानी
उज़्ज़ियाह, उज़्ज़ियाह के यूताम, 13 यूताम के आख़ज़,
आख़ज़ के हिज़क़ियाह, हिज़क़ियाह के मनस्सी,
14 मनस्सी के अमून और अमून के यूसियाह।

15 यूसियाह के चार बेटे बड़े से ले कर छोटे तक
यूहनान, यहूयक़ीम, सिदक़ियाह और सल्लूम थे।

16 यहूयक़ीम यहूयाकीन [m]का और यहूयाकीन
सिदक़ियाह का बाप था। 17 यहूयाकीन [n]को बाबल
में जिलावतन कर दिया गया। उस के सात बेटे
सियाल्तीएल, 18 मलकिराम, फ़िदायाह, शेनाज़्ज़र,
यक़मियाह, हूसमा और नदबियाह थे। 19 फ़िदायाह
के दो बेटे ज़रुब्बाबल और सिमई थे।

ज़रुब्बाबल के दो बेटे मसुल्लाम और हननियाह थे।
एक बेटी बनाम सलूमीत भी पैदा हुई। 20 बाक़ी पाँच
बेटों के नाम हसूबा, ओहल, बरकियाह, हसदियाह
और यूसब-हसद थे।

21 हननियाह के दो बेटे फ़लतियाह और यसायाह
थे। यसायाह रिफ़ायाह का बाप था, रिफ़ायाह
अर्नान का, अर्नान अबदियाह का और अबदियाह
सकनियाह का।

22 सकनियाह के बेटे का नाम समायाह था।
समायाह के छः बेटे हत्तूश, इजाल, बरीह, नअरियाह
और साफ़त थे। 23 नअरियाह के तीन बेटे इलियूऐनी,
हिज़क़ियाह और अज़्रीक़ाम पैदा हुए।

24 इलियूऐनी के सात बेटे हूदावियाह, इलियासिब,
फ़िलायाह, अक़्क़ूब, यूहनान, दिलायाह और अनानी
थे।

यहूदाह की औलाद

4 1 फ़ारस, हस्रोन, कर्मी, हूर और सोबल यहूदाह
की औलाद थे।

2 रियायाह बिन सोबल के हाँ यहत, यहत के
अख़ूमी और अख़ूमी के लाहद पैदा हुआ। यह
सुरआती ख़ानदानों के बापदादा थे।

3 ऐताम के तीन बेटे यज़्रएल, इस्मा और इदबास
थे। उन की बहन का नाम हज़्ज़िलफ़ोनी था।

4 इफ़्राता का पहलौठा हूर बैत-लहम का बाप था।
उस के दो बेटे जदूर का बाप फ़नूएल और हूसा का
बाप अज़र थे।

5 तक़ूअ के बाप अश्हूर की दो बीवियाँ हीलाह और
नारा थीं।

---

[m]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[n]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

6 नारा के बेटे अख़ूज़्ज़ाम, हिफ़र, तेमनी और
हख़सतरी थे।
7 हीलाह के बेटे ज़रत, सुहर और इतनान थे।
8 कूज़ के बेटे अनूब और हज़्ज़ोबीबा थे। उस से
अख़रख़ैल बिन हरूम के ख़ानदान भी निकले।
9 याबीज़ की अपने भाइयों की निस्बत ज़्यादा
इज़्ज़त थी। उस की माँ ने उस का नाम याबीज़ यानी
'वह तक्लीफ़ देता है' रखा, क्यूँकि उस ने कहा,
"पैदा होते वक़्त मुझे बड़ी तक्लीफ़ हुई।" 10 याबीज़
ने बुलन्द आवाज़ से इस्राईल के ख़ुदा से इल्तिमास
की, "काश तू मुझे बरकत दे कर मेरा इलाक़ा वसी
कर दे। तेरा हाथ मेरे साथ हो, और मुझे नुक़सान से
बचा ताकि मुझे तक्लीफ़ न पहुँचे।" और अल्लाह ने
उस की सुनी।
11 सूख़ा के भाई कलूब महीर का और महीर इस्तून
का बाप था।
12 इस्तून के बेटे बैत-रफ़ा, फ़ासह और तख़िन्ना थे।
तख़िन्ना नाहस शहर का बाप था जिस की औलाद
रैका में आबाद है। 13 क़नज़ के बेटे ग़ुतनीएल और
सिरायाह थे। ग़ुतनीएल के बेटों के नाम हतत और
मऊनाती थे।
14 मऊनाती उफ़्रा का बाप था।
सिरायाह योआब का बाप था जो 'वादी-ए-कारीगर'
का बानी था। आबादी का यह नाम इस लिए पड़ गया
कि उस के बाशिन्दे कारीगर थे।
15 कालिब बिन यफ़ुन्ना के बेटे ईरू, ऐला और नाम
थे। ऐला का बेटा क़नज़ था।
16 यहल्लल-एल के चार बेटे ज़ीफ़, ज़ीफ़ा, तीरियाह
और असर-एल थे।
17–18 अज़्रा के चार बेटे यतर, मरद, इफ़र और
यलून थे। मरद की शादी मिस्री बादशाह फ़िरऔन
की बेटी बितियाह से हुई। उस के तीन बच्चे मरियम,
सम्मी और इस्बाह पैदा हुए। इस्बाह इस्तिमूअ का
बाप था। मरद की दूसरी बीवी यहूदाह की थी, और
उस के तीन बेटे जदूर का बाप यरद, सोका का बाप
हिबर और ज़नूह का बाप यक़ूतीएल थे।
19 हूदियाह की बीवी नहम की बहन थी। उस का
एक बेटा क़ईला जर्मी का बाप और दूसरा इस्तिमूअ
माकाती था।
20 सीमून के बेटे अम्नोन, रिन्ना, बिन-हनान और
तीलोन थे। यिसई के बेटे ज़ोहित और बिन-ज़ोहित
थे।
21 सेला बिन यहूदाह की दर्ज-ए-ज़ैल औलाद थी
: लेका का बाप एर, मरेसा का बाप लादा, बैत-
अश्बीअ में आबाद बारीक कतान का काम करने
वालों के ख़ानदान, 22 योक़ीम, कोज़ीबा के बाशिन्दे,
और यूआस और साराफ़ जो क़दीम रिवायत के
मुताबिक़ मोआब पर हुक्मरानी करते थे लेकिन बाद
में बैत-लहम वापस आए। 23 वह नताईम और जदीरा
में रह कर कुम्हार और बादशाह के मुलाज़िम थे।

शमाऊन की औलाद

24 शमाऊन के बेटे यमूएल, यमीन, यरीब, ज़ारह
और साऊल थे। 25 साऊल के हाँ सल्लूम पैदा हुआ,
सल्लूम के मिब्साम, मिब्साम के मिश्मा, 26 मिश्मा के
हम्मूएल, हम्मूएल के ज़क्कूर और ज़क्कूर के सिमई।
27 सिमई के 16 बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उस
के भाइयों के कम बच्चे पैदा हुए। नतीजे में शमाऊन
का क़बीला यहूदाह के क़बीले की निस्बत छोटा
रहा।
28 ज़ैल के शहर उन के गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियों समेत शमाऊन का क़बाइली इलाक़ा
था : बैर-सबा, मोलादा, हसार-सूआल, 29 बिल्हाह,
अज़म, तोलद, 30 बतूएल, हुर्मा, सिक़्लाज, 31 बैत-
मर्कबोत, हसार-सूसीम, बैत-बिरी और शारैम। दाऊद
की हुकूमत तक यह क़बीला इन जगहों में आबाद
था, 32 नीज़ ऐताम, ऐन, रिम्मोन, तोकन और असन
में भी। 33 इन पाँच आबादियों के गिर्द-ओ-नवाह के
दीहात भी बाल तक शामिल थे। हर मक़ाम के अपने
अपने तहरीरी नसबनामे थे।
34 शमाऊन के ख़ानदानों के दर्ज-ए-ज़ैल सरपरस्त
थे : मिसोबाब, यम्लीक, यूशा बिन अमसियाह,

35 योएल, याहू बिन यूसिबियाह बिन सिरायाह
बिन असीएल, 36 इलियूऐनी, याक़ूबा, यशूख़ाया,
असायाह, अदीएल, यसीमीएल, बिनायाह, 37 ज़ीज़ा
बिन शिफ़ई बिन अल्लोन बिन यदायाह बिन सिम्री बिन
समायाह।

38 दर्ज-ए-बाला आदमी अपने ख़ानदानों के
सरपरस्त थे। उन के ख़ानदान बहुत बढ़ गए, 39 इस
लिए वह अपने रेवड़ों को चराने की जगहें ढूँडते
ढूँडते वादी के मशरिक़ में जदूर तक फैल गए।
40 वहाँ उन्हें अच्छी और शादाब चरागाहें मिल
गईं। इलाक़ा खुला, पुरसुकून और आरामदिह भी
था। पहले हाम की कुछ औलाद वहाँ आबाद
थी, 41 लेकिन हिज़क़ियाह बादशाह के अय्याम में
शमाऊन के मज़कूरा सरपरस्तों ने वहाँ के रहने वाले
हामियों और मऊनियों पर हम्ला किया और उन के
तम्बूओं को तबाह करके सब को मार दिया। एक
भी न बचा। फिर वह ख़ुद वहाँ आबाद हुए। अब
उन के रेवड़ों के लिए काफ़ी चरागाहें थीं। आज
तक वह इसी इलाक़े में रहते हैं।

42 एक दिन शमाऊन के 500 आदमी यिसई के
चार बेटों फ़लतियाह, नअरियाह, रिफ़ायाह और
उज़्ज़ीएल की राहनुमाई में सईर के पहाड़ी इलाक़े
में घुस गए। 43 वहाँ उन्हों ने उन अमालीक़ियों को
हलाक कर दिया जिन्हों ने बच कर वहाँ पनाह ली
थी। फिर वह ख़ुद वहाँ रहने लगे। आज तक वह
वहीं आबाद हैं।

रूबिन की औलाद

5 1 इस्राईल का पहलौठा रूबिन था। लेकिन चूँकि
उस ने अपने बाप की दाश्ता से हमबिसतर होने
से बाप की बेहुरमती की थी इस लिए पहलौठे का
मौरूसी हक़ उस के भाई यूसुफ़ के बेटों को दिया
गया। इसी वजह से नसबनामे में रूबिन को पहलौठे
की हैसियत से बयान नहीं किया गया। 2 यहूदाह
दीगर भाइयों की निस्बत ज़्यादा ताक़तवर था, और
उस से क़ौम का बादशाह निकला। तो भी यूसुफ़ को
पहलौठे का मौरूसी हक़ हासिल था।

3 इस्राईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी थे।

4 योएल के हाँ समायाह पैदा हुआ, समायाह के
जूज, जूज के सिमई, 5 सिमई के मीकाह, मीकाह के
रियायाह, रियायाह के बाल और 6 बाल के बईरा।
बईरा को असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर ने
जिलावतन कर दिया। बईरा रूबिन के क़बीले का
सरपरस्त था। 7 उन के नसबनामे में उस के भाई उन
के ख़ानदानों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं, सर-ए-
फ़हरिस्त यईएल, फिर ज़करियाह 8 और बाला बिन
अज़ज़ बिन समा बिन योएल।

रूबिन का क़बीला अरोईर से ले कर नबू और बाल-
मऊन तक के इलाक़े में आबाद हुआ। 9 मशरिक़ की
तरफ़ वह उस रेगिस्तान के किनारे तक फैल गए जो
दरया-ए-फ़ुरात से शुरू होता है। क्यूँकि जिलिआद में
उन के रेवड़ों की तादाद बहुत बढ़ गई थी।

10 साऊल के अय्याम में उन्हों ने हाजिरियों से
लड़ कर उन्हें हलाक कर दिया और ख़ुद उन की
आबादियों में रहने लगे। यूँ जिलिआद के मशरिक़
का पूरा इलाक़ा रूबिन के क़बीले की मिलकियत में
आ गया।

जद की औलाद

11 जद का क़बीला रूबिन के क़बीले के पड़ोसी
मुल्क बसन में सल्का तक आबाद था। 12 उस का
सरबराह योएल था, फिर साफ़म, यानी और साफ़त।
वह सब बसन में आबाद थे। 13 उन के भाई उन
के ख़ानदानों समेत मीकाएल, मसुल्लाम, सबा, यूरी,
याकान, ज़ीअ और इबर थे। 14 यह सात आदमी
अबीख़ैल बिन हूरी बिन यारूह बिन जिलिआद बिन
मीकाएल बिन यसीसी बिन यह्दू बिन बूज़ के बेटे
थे। 15 अख़ी बिन अब्दीएल बिन जूनी इन ख़ानदानों
का सरपरस्त था।

16 जद का क़बीला जिलिआद और बसन के
इलाक़ों की आबादियों में आबाद था। शारून से ले
कर सरहद तक की पूरी चरागाहें भी उन के क़ब्ज़े
में थीं। 17 यह तमाम ख़ानदान यहूदाह के बादशाह
यूताम और इस्राईल के बादशाह यरुबिआम के ज़माने
में नसबनामे में दर्ज किए गए।

दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में क़बीलों की जंग

18 रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के
44,760 फ़ौजी थे। सब लड़ने के क़ाबिल और
तजरिबाकार आदमी थे, ऐसे लोग जो तीर चला
सकते और ढाल और तलवार से लेस थे। 19 उन्हों
ने हाजिरियों, यतूर, नफ़ीस और नोदब से जंग की।
20 लड़ते वक़्त उन्हों ने अल्लाह से मदद के लिए
फ़र्याद की, तो उस ने उन की सुन कर हाजिरियों
को उन के इत्तिहादियों समेत उन के हवाले कर
दिया। 21 उन्हों ने उन से बहुत कुछ लूट लिया :
50,000 ऊँट, 2,50,000 भेड़-बकरियाँ और 2,000
गधे। साथ साथ उन्हों ने 1,00,000 लोगों को क़ैद
भी कर लिया। 22 मैदान-ए-जंग में बेशुमार दुश्मन मारे
गए, क्यूँकि जंग अल्लाह की थी। जब तक इस्राईलियों
को असूर में जिलावतन न कर दिया गया वह इस
इलाक़े में आबाद रहे।

मनस्सी का आधा क़बीला

23 मनस्सी का आधा क़बीला बहुत बड़ा था। उस
के लोग बसन से ले कर बाल-हर्मून और सनीर यानी
हर्मून के पहाड़ी सिलसिले तक फैल गए। 24 उन के
ख़ानदानी सरपरस्त इफ़र, यिसई, इलीएल, अज़्रीएल,
यरमियाह, हूदावियाह और यह्दीएल थे। सब माहिर
फ़ौजी, मशहूर आदमी और ख़ानदानी सरबराह थे।

मशरिक़ी क़बीलों की जिलावतनी

25 लेकिन यह मशरिक़ी क़बीले अपने बापदादा के
ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए। वह ज़िना करके मुल्क के
उन अक़्वाम के देवताओं के पीछे लग गए जिन को
अल्लाह ने उन के आगे से मिटा दिया था। 26 यह
देख कर इस्राईल के ख़ुदा ने असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर को उन के ख़िलाफ़ बरपा किया
जिस ने रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
को जिलावतन कर दिया। वह उन्हें ख़लह, दरया-ए-
ख़ाबूर, हारा और दरया-ए-जौज़ान को ले गया जहाँ
वह आज तक आबाद हैं।

इमाम-ए-आज़म की नस्ल (लावी का क़बीला)

6 1 लावी के बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी थे।
2 क़िहात के बेटे अम्राम, इज़हार , हब्रून और
उज़्ज़ीएल थे।
3 अम्राम के बेटे हारून और मूसा थे। बेटी का नाम
मरियम था। हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र
और इतमर थे।
4 इलीअज़र के हाँ फ़ीन्हास पैदा हुआ, फ़ीन्हास
के अबीसूअ, 5 अबीसूअ के बुक़्क़ी, बुक़्क़ी के
उज़्ज़ी, 6 उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह, ज़रख़ियाह के
मिरायोत, 7 मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह
के अख़ीतूब, 8 अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के
अख़ीमाज़, 9 अख़ीमाज़ के अज़रियाह, अज़रियाह
के यूहनान 10 और यूहनान के अज़रियाह। यही
अज़रियाह रब के उस घर का पहला इमाम-ए-
आज़म था जो सुलेमान ने यरूशलम में बनवाया
था। 11 उस के हाँ अमरियाह पैदा हुआ, अमरियाह
के अख़ीतूब, 12 अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के
सल्लूम, 13 सल्लूम के ख़िलक़ियाह, ख़िलक़ियाह के
अज़रियाह, 14 अज़रियाह के सिरायाह और सिरायाह
के यहूसदक़। 15 जब रब ने नबूकद्नज़्ज़र के हाथ
से यरूशलम और पूरे यहूदाह के बाशिन्दों को
जिलावतन कर दिया तो यहूसदक़ भी उन में शामिल
था।

लावी की औलाद

16 लावी के तीन बेटे जैर्सोम, क़िहात और मिरारी
थे। 17 जैर्सोम के दो बेटे लिब्नी और सिमई थे।

18 क़िहात के चार बेटे अम्राम, इज़हार , हब्रून और
उज़्ज़ीएल थे। 19 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी
थे।

ज़ैल में लावी के ख़ानदानों की फ़हरिस्त उन के
बानियों के मुताबिक़ दर्ज है।

20 जैर्सोम के हाँ लिब्नी पैदा हुआ, लिब्नी के यहत,
यहत के ज़िम्मा, 21 ज़िम्मा के यूआख़, यूआख़ के इद्दू,
इद्दू के ज़ारह और ज़ारह के यतरी।

22 क़िहात के हाँ अम्मीनदाब पैदा हुआ,
अम्मीनदाब के क़ोरह, क़ोरह के अस्सीर, 23 अस्सीर
के इल्क़ाना, इल्क़ाना के अबियासफ़, अबियासफ़
के अस्सीर, 24 अस्सीर के तहत, तहत के ऊरीएल,
ऊरीएल के उज़्ज़ियाह और उज़्ज़ियाह के साऊल।
25 इल्क़ाना के बेटे अमासी, अख़ीमोत 26 और
इल्क़ाना थे। इल्क़ाना के हाँ ज़ूफ़ी पैदा हुआ,
ज़ूफ़ी के नहत, 27 नहत के इलियाब, इलियाब के
यरोहाम, यरोहाम के इल्क़ाना और इल्क़ाना के
समूएल। 28 समूएल का पहला बेटा योएल और
दूसरा अबियाह था।

29 मिरारी के हाँ महली पैदा हुआ, महली के लिब्नी,
लिब्नी के सिमई, सिमई के उज़्ज़ा, 30 उज़्ज़ा के
सिमआ, सिमआ के हज्जियाह और हजयाह के
असायाह।

लावी की ज़िम्मादारियाँ

31 जब अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में लाया गया
ताकि आइन्दा वहाँ रहे तो दाऊद बादशाह ने कुछ
लावियों को रब के घर में गीत गाने की ज़िम्मादारी
दी। 32 इस से पहले कि सुलेमान ने रब का घर
बनवाया यह लोग अपनी ख़िदमत मुलाक़ात के ख़ैमे
के सामने सरअन्जाम देते थे। वह सब कुछ मुक़र्ररा
हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे। 33 ज़ैल में उन
के नाम उन के बेटों के नामों समेत दर्ज हैं।

क़िहात के ख़ानदान का हैमान पहला गुलूकार था।
उस का पूरा नाम यह था : हैमान बिन योएल बिन
समूएल 34 बिन इल्क़ाना बिन यरोहाम बिन इलीएल
बिन तूख़ 35 बिन सूफ़ बिन इल्क़ाना बिन महत बिन
अमासी 36 बिन इल्क़ाना बिन योएल बिन अज़रियाह
बिन सफ़नियाह 37 बिन तहत बिन अस्सीर बिन
अबियासफ़ बिन क़ोरह 38 बिन इज़हार बिन क़िहात
बिन लावी बिन इस्राईल।

39 हैमान के दहने हाथ आसफ़ खड़ा होता था।
उस का पूरा नाम यह था : आसफ़ बिन बरकियाह
बिन सिमआ 40 बिन मीकाएल बिन बासियाह बिन
मल्कियाह 41 बिन अत्नी बिन ज़ारह बिन अदायाह
42 बिन ऐतान बिन ज़िम्मा बिन सिमई 43 बिन यहत
बिन जैर्सोम बिन लावी।

44 हैमान के बाएँ हाथ ऐतान खड़ा होता था। वह
मिरारी के ख़ानदान का फ़र्द था। उस का पूरा नाम
यह था : ऐतान बिन क़ीसी बिन अब्दी बिन मल्लूक
45 बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन ख़िलक़ियाह
46 बिन अम्सी बिन बानी बिन समर 47 बिन महली
बिन मूशी बिन मिरारी बिन लावी।

48 दूसरे लावियों को अल्लाह की सुकूनतगाह में
बाक़ीमान्दा ज़िम्मादारियाँ दी गई थीं।

49 लेकिन सिर्फ़ हारून और उस की औलाद भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करते और बख़ूर की
क़ुर्बानगाह पर बख़ूर जलाते थे। वही मुक़द्दसतरीन
कमरे में हर ख़िदमत सरअन्जाम देते थे। इस्राईल का
कफ़्फ़ारा देना उन ही की ज़िम्मादारी थी। वह सब
कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे जो
अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने उन्हें दी थीं।

50 हारून के हाँ इलीअज़र पैदा हुआ, इलीअज़र
के फ़ीन्हास, फ़ीन्हास के अबीसूअ, 51 अबीसूअ
के बुक़्क़ी, बुक़्क़ी के उज़्ज़ी, उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह,
52 ज़रख़ियाह के मिरायोत, मिरायोत के अमरियाह,
अमरियाह के अख़ीतूब, 53 अख़ीतूब के सदोक़,
सदोक़ के अख़ीमाज़।

लावियों की आबादियाँ

54 ज़ैल में वह आबादियाँ और चरागाहें दर्ज हैं जो
लावियों को क़ुरआ डाल कर दी गईं।

क़ुरआ डालते वक़्त पहले हारून के बेटे क़िहात
की औलाद को जगहें मिल गईं। 55 उसे यहूदाह के
क़बीले से हब्रून शहर उस की चरागाहों समेत मिल
गया। 56 लेकिन गिर्द-ओ-नवाह के खेत और दीहात
कालिब बिन यफ़ुन्ना को दिए गए। 57 हब्रून उन शहरों
में शामिल था जिन में हर वह पनाह ले सकता था
जिस के हाथों ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ
हो। हब्रून के इलावा हारून की औलाद को ज़ैल के
मक़ाम उन की चरागाहों समेत दिए गए : लिब्ना,
यत्तीर, इस्तिमूअ, 58 हौलून, दबीर, 59 असन, और
बैत-शम्स। 60 बिनयमीन के क़बीले से उन्हें जिबऊन,
जिबा, अलमत और अनतोत उन की चरागाहों समेत
दिए गए। इस तरह हारून के ख़ानदान को 13 शहर
मिल गए।

61 क़िहात के बाक़ी ख़ानदानों को मनस्सी के
मग़रिबी हिस्से के दस शहर मिल गए।

62 जैर्सोम की औलाद को इश्कार, आशर, नफ़्ताली
और मनस्सी के क़बीलों के 13 शहर दिए गए। यह
मनस्सी का वह इलाक़ा था जो दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ में मुल्क-ए-बसन में था।

63 मिरारी की औलाद को रूबिन, जद और ज़बूलून
के क़बीलों के 12 शहर मिल गए।

64–65 यूँ इस्राईलियों ने क़ुरआ डाल कर लावियों
को मज़कूरा शहर दे दिए। सब यहूदाह, शमाऊन और
बिनयमीन के क़बाइली इलाक़ों में थे।

66 क़िहात के चन्द एक ख़ानदानों को इफ़्राईम के
क़बीले से शहर उन की चरागाहों समेत मिल गए।
67 इन में इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े का शहर सिकम
शामिल था जिस में हर वह पनाह ले सकता था जिस
से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ होता था, फिर
जज़र, 68 युक़्मिआम, बैत-हौरून, 69 अय्यालोन और
जात-रिम्मोन। 70 क़िहात के बाक़ी कुंबों को मनस्सी
के मग़रिबी हिस्से के दो शहर आनेर और बलआम
उन की चरागाहों समेत मिल गए।

71 जैर्सोम की औलाद को ज़ैल के शहर भी उन की
चरागाहों समेत मिल गए : मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से
से जौलान जो बसन में है और अस्तारात। 72 इश्कार
के क़बीले से क़ादिस, दाबरत, 73 रामात और
आनीम। 74 आशर के क़बीले से मिसाल, अब्दोन,
75 हुक़ूक़ और रहोब। 76 और नफ़्ताली के क़बीले से
गलील का क़ादिस, हम्मून और क़िर्यताइम।

77 मिरारी के बाक़ी ख़ानदानों को ज़ैल के शहर उन
की चरागाहों समेत मिल गए : ज़बूलून के क़बीले
से रिम्मोन और तबूर। 78–79 रूबिन के क़बीले से
रेगिस्तान का बसर, यहज़, क़दीमात और मिफ़ात
(यह शहर दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में यरीहू के
मुक़ाबिल वाक़े हैं)। 80 जद के क़बीले से जिलिआद
का रामात, महनाइम, 81 हस्बोन और याज़ेर।

इश्कार की औलाद

7 1 इश्कार के चार बेटे तोला, फ़ुव्वा, यसूब और
सिम्रोन थे।

2 तोला के पाँच बेटे उज़्ज़ी, रिफ़ायाह, यरीएल,
यहमी, इब्साम और समूएल थे। सब अपने ख़ानदानों
के सरपरस्त थे। नसबनामे के मुताबिक़ दाऊद के
ज़माने में तोला के ख़ानदान के 22,600 अफ़राद जंग
करने के क़ाबिल थे।

3 उज़्ज़ी का बेटा इज़्रख़ियाह था जो अपने चार
भाइयों मीकाएल, अबदियाह, योएल और यिस्सियाह
के साथ ख़ानदानी सरपरस्त था। 4 नसबनामे के
मुताबिक़ उन के 36,000 अफ़राद जंग करने के
क़ाबिल थे। इन की तादाद इस लिए ज़्यादा थी कि
उज़्ज़ी की औलाद के बहुत बाल-बच्चे थे। 5 इश्कार
के क़बीले के ख़ानदानों के कुल 87,000 आदमी जंग
करने के क़ाबिल थे। सब नसबनामे में दर्ज थे।

बिनयमीन और नफ़्ताली की औलाद

6 बिनयमीन के तीन बेटे बाला, बकर और
यदीअएल थे। 7 बाला के पाँच बेटे इस्बून, उज़्ज़ी,
उज़्ज़ीएल, यरीमोत और ईरी थे। सब अपने ख़ानदानों
के सरपरस्त थे। उन के नसबनामे के मुताबिक़ उन
के 22,034 मर्द जंग करने के क़ाबिल थे।

8 बकर के 9 बेटे ज़मीरा, यूआस, इलीअज़र,
इलियूऐनी, उम्री, यरीमोत, अबियाह, अनतोत और
अलमत थे। 9 उन के नसबनामे में उन के सरपरस्त
और 20,200 जंग करने के क़ाबिल मर्द बयान किए
गए हैं।
10 बिल्हान बिन यदीअएल के सात बेटे यऊस,
बिनयमीन, अहूद, कनआना, ज़ैतान, तरसीस और
अख़ीसहर थे। 11 सब अपने ख़ानदानों के सरपरस्त
थे। उन के 17,200 जंग करने के क़ाबिल मर्द थे।
12 सुफ़्फ़ी और हुफ़्फ़ी ईर की और हुशी अख़ीर की
औलाद थे।
13 नफ़्ताली के चार बेटे यहसीएल, जूनी, यिसर
और सल्लूम थे। सब बिल्हाह की औलाद थे।

मनस्सी की औलाद

14 मनस्सी की अरामी दाश्ता के दो बेटे अस्रीएल
और जिलिआद का बाप मकीर पैदा हुए। 15 मकीर ने
हुफ़्फ़ियों और सुफ़्फ़ियों की एक औरत से शादी की।
बहन का नाम माका था। मकीर के दूसरे बेटे का नाम
सिलाफ़िहाद था जिस के हाँ सिर्फ़ बेटियाँ पैदा हुईं।
16 मकीर की बीवी माका के मज़ीद दो बेटे फ़रस
और शरस पैदा हुए। शरस के दो बेटे औलाम और
रक़म थे। 17 औलाम के बेटे का नाम बिदान था। यही
जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी की औलाद थे।
18 जिलिआद की बहन मूलिकत के तीन बेटे इश्हूद,
अबीअज़र और महलाह थे। 19 समीदा के चार बेटे
अखियान, सिकम, लिक़्ही और अनीआम थे।

इफ़्राईम की औलाद

20 इफ़्राईम के हाँ सूतलह पैदा हुआ, सूतलह के
बरद, बरद के तहत, तहत के इलिअदा, इलिअदा
के तहत, 21 तहत के ज़बद और ज़बद के सूतलह।
इफ़्राईम के मज़ीद दो बेटे अज़र और इलिअद थे।
यह दो मर्द एक दिन जात गए ताकि वहाँ के रेवड़
लूट लें। लेकिन मक़ामी लोगों ने उन्हें पकड़ कर मार
डाला। 22 उन का बाप इफ़्राईम काफ़ी अर्से तक उन
का मातम करता रहा, और उस के रिश्तेदार उस से
मिलने आए ताकि उसे तसल्ली दें। 23 जब इस के बाद
उस की बीवी के बेटा पैदा हुआ तो उस ने उस का
नाम बरीआ यानी मुसीबत रखा, क्यूँकि उस वक़्त
ख़ानदान मुसीबत में आ गया था। 24 इफ़्राईम की बेटी
सैरा ने बालाई और नशेबी बैत-हौरून और ऊज़्ज़न-
सैरा को बनवाया।
25 इफ़्राईम के मज़ीद दो बेटे रफ़ह और रसफ़ थे।
रसफ़ के हाँ तिलह पैदा हुआ, तिलह के तहन,
26 तहन के लादान, लादान के अम्मीहूद, अम्मीहूद
के इलीसमा, 27 इलीसमा के नून, नून के यशूअ।
28 इफ़्राईम की औलाद के इलाक़े में ज़ैल के मक़ाम
शामिल थे : बैत-एल गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों
समेत, मशरिक़ में नारान तक, मग़रिब में जज़र
तक गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत, शिमाल
में सिकम और अय्याह तक गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियों समेत। 29 बैत-शान, तानक, मजिद्दो और
दोर गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत मनस्सी की
औलाद की मिलकियत बन गए। इन तमाम मक़ामों
में यूसुफ़ बिन इस्राईल की औलाद रहती थी।

आशर की औलाद

30 आशर के चार बेटे यिम्ना, इस्वाह, इस्वी और
बरीआ थे। उन की बहन सिरह थी।
31 बरीआ के बेटे हिबर और बिर्ज़ाइत का बाप
मल्कीएल थे।
32 हिबर के तीन बेटे यफ़्लीत, शूमीर और ख़ूताम
थे। उन की बहन सूअ थी।
33 यफ़्लीत के तीन बेटे फ़ासक, बिम्हाल और
अस्वात थे। 34 शूमीर के चार बेटे अख़ी, रूह्जा,
हुब्बा और अराम थे। 35 उस के भाई हीलम के चार
बेटे सूफ़ह, इम्ना, सलस और अमल थे।
36 सूफ़ह के 11 बेटे सूह, हर्नफ़र, सूआल, बैरी,
इम्राह,
37 बसर, हूद, सम्मा, सिल्सा, यित्रान और बईरा थे।
38 यतर के तीन बेटे यफ़ुन्ना, फ़िस्फ़ाह और अरा थे।

39 उल्ला के तीन बेटे अरख़, हन्नीएल और रिज़ियाह
थे।
40 आशर के दर्ज-ए-बाला तमाम अफ़राद अपने
अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। सब चीदा मर्द,
माहिर फ़ौजी और सरदारों के सरबराह थे। नसबनामे
में 26,000 जंग करने के क़ाबिल मर्द दर्ज हैं।

बिनयमीन की औलाद

8 1 बिनयमीन के पाँच बेटे बड़े से ले कर छोटे
तक बाला, अश्बेल, अख़ख़, 2 नूहा और रफ़ा
थे।
3 बाला के बेटे अद्दार, जीरा, अबीहूद, 4 अबीसूअ,
नामान, अख़ूह, 5 जीरा, सफ़ूफ़ान और हूराम थे।
6–7 अहूद के तीन बेटे नामान, अख़ियाह और जीरा
थे। यह उन ख़ानदानों के सरपरस्त थे जो पहले जिबा
में रहते थे लेकिन जिन्हें बाद में जिलावतन करके
मानहत में बसाया गया। उज़्ज़ा और अख़ीहूद का बाप
जीरा उन्हें वहाँ ले कर गया था।
8–9 सहरैम अपनी दो बीवियों हुशीम और बारा को
तलाक़ दे कर मोआब चला गया। वहाँ उस की बीवी
हूदस के सात बेटे यूबाब, ज़िबिया, मेसा, मल्काम,
10 यऊज़, सकियाह और मिर्मा पैदा हुए। सब बाद
में अपने ख़ानदानों के सरपरस्त बन गए। 11 पहली
बीवी हुशीम के दो बेटे अबीतूब और इल्फ़ाल पैदा
हुए।
12–14 इल्फ़ाल के आठ बेटे इबर, मिशआम, समद,
बरीआ, समा, अख़ियो, शाशक़ और यरीमोत थे।
समद ओनू, लूद और गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों
का बानी था। बरीआ और समा अय्यालोन के
बाशिन्दों के सरबराह थे। उन ही ने जात के बाशिन्दों
को निकाल दिया।
15–16 बरीआ के बेटे ज़बदियाह, अराद, इदर,
मीकाएल, इस्फ़ाह और यूख़ा थे।
17 इल्फ़ाल के मज़ीद बेटे ज़बदियाह, मसुल्लाम,
हिज़्क़ी, हिबर, 18 यिस्मरी, यिज़्लियाह और यूबाब
थे।
19–21 सिमई के बेटे यक़ीम, ज़िक्री, ज़बदी,
इलीऐनी, ज़िल्लती, इलीएल, अदायाह, बिरायाह और
सिम्रात थे।
22–25 शाशक़ के बेटे इस्फ़ान, इबर, इलीएल,
अब्दोन, ज़िक्री, हनान, हननियाह, ऐलाम,
अनतोतियाह, यफ़्दियाह और फ़नूएल थे।
26–27 यरोहाम के बेटे सम्सरी, शहारियाह,
अतलियाह, यारसियाह, इल्यास और ज़िक्री थे।
28 यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज
थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल का ख़ानदान

29 जिबऊन का बाप यईएल जिबऊन में रहता था।
उस की बीवी का नाम माका था। 30 बड़े से ले कर
छोटे तक उन के बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस, बाल,
नदब, 31 जदूर, अख़ियो, ज़कर 32 और मिक़्लोत
थे। मिक़्लोत का बेटा सिमाह था। वह भी अपने
रिश्तेदारों के साथ यरूशलम में रहते थे।
33 नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल का।
साऊल के चार बेटे यूनतन, मल्कीशूअ, अबीनदाब
और इश्बाल थे।
34 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल
मीकाह का।
35 मीकाह के चार बेटे फ़ीतून, मलिक, तारीअ और
आख़ज़ थे।
36 आख़ज़ का बेटा यहूअद्दा था जिस के तीन बेटे
अलमत, अज़्मावत और ज़िम्री थे। ज़िम्री के हाँ मौज़ा
पैदा हुआ, 37 मौज़ा के बिनआ, बिनआ के राफ़ा,
राफ़ा के इलिआसा और इलिआसा के असील।
38 असील के छः बेटे अज़्रीक़ाम, बोकिरू,
इस्माईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे।
39 असील के भाई ईशक़ के तीन बेटे बड़े से ले कर
छोटे तक औलाम, यऊस और इलीफ़लत थे।
40 औलाम के बेटे तजरिबाकार फ़ौजी थे जो महारत
से तीर चला सकते थे। उन के बहुत से बेटे और पोते

थे, कुल 150 अफ़राद। तमाम मज़कूरा आदमी उन के ख़ानदानों समेत बिनयमीन की औलाद थे।

जिलावतनी के बाद यरूशलम के बाशिन्दे

9 1 तमाम इस्राईल शाहान-ए-इस्राईल की किताब
के नसबनामों में दर्ज है।
फिर यहूदाह के बाशिन्दों को बेवफ़ाई के बाइस
बाबल में जिलावतन कर दिया गया। 2 जो लोग
पहले वापस आ कर दुबारा शहरों में अपनी मौरूसी
ज़मीन पर रहने लगे वह इमाम, लावी, रब के
घर के ख़िदमतगार और बाक़ी चन्द एक इस्राईली
थे। 3 यहूदाह, बिनयमीन, इफ़्राईम और मनस्सी के
क़बीलों के कुछ लोग यरूशलम में जा बसे।
4 यहूदाह के क़बीले के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदानी
सरपरस्त वहाँ आबाद हुए :
ऊती बिन अम्मीहूद बिन उम्री बिन इम्री बिन बानी।
बानी फ़ारस बिन यहूदाह की औलाद में से था।
5 सैला के ख़ानदान का पहलौठा असायाह और उस
के बेटे।
6 ज़ारह के ख़ानदान का यऊएल। यहूदाह के इन
ख़ानदानों की कुल तादाद 690 थी।
7–8 बिनयमीन के क़बीले के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदानी
सरपरस्त यरूशलम में आबाद हुए :
सल्लू बिन मसुल्लाम बिन हूदावियाह बिन सनूआह।
इबनियाह बिन यरोहाम।
ऐला बिन उज़्ज़ी बिन मिक्री।
मसुल्लाम बिन सफ़तियाह बिन रऊएल बिन
इबनियाह।
9 नसबनामे के मुताबिक़ बिनयमीन के इन
ख़ानदानों की कुल तादाद 956 थी।
10 जो इमाम जिलावतनी से वापस आ कर
यरूशलम में आबाद हुए वह ज़ैल में दर्ज हैं :
यदायाह, यहूयरीब, यकीन, 11 अल्लाह के घर
का इंचार्ज अज़रियाह बिन ख़िलक़ियाह बिन
मसुल्लाम बिन सदोक़ बिन मिरायोत बिन अख़ीतूब,
12 अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़श्हूर बिन मल्कियाह
और मासी बिन अदीएल बिन यह्ज़ीराह बिन मसुल्लाम
बिन मसिल्लिमित बिन इम्मेर। 13 इमामों के इन
ख़ानदानों की कुल तादाद 1,760 थी। उन के मर्द
रब के घर में ख़िदमत सरअन्जाम देने के क़ाबिल थे।
14 जो लावी जिलावतनी से वापस आ कर
यरूशलम में आबाद हुए वह दर्ज-ए-ज़ैल हैं :
मिरारी के ख़ानदान का समायाह बिन हस्सूब
बिन अज़्रीक़ाम बिन हसबियाह, 15 बक़्बक़्कर, हरस,
जलाल, मत्तनियाह बिन मीका बिन ज़िक्री बिन
आसफ़, 16 अबदियाह बिन समायाह बिन जलाल
बिन यदूतून और बरकियाह बिन आसा बिन
इल्क़ाना। बरकियाह नतूफ़ातियों की आबादियों का
रहने वाला था।
17 ज़ैल के दरबान भी वापस आए : सल्लूम, अक़्कूब,
तल्मून, अख़ीमान और उन के भाई। सल्लूम उन का
इंचार्ज था। 18 आज तक उस का ख़ानदान रब के घर
के मशरिक़ में शाही दरवाज़े की पहरादारी करता
है। यह दरबान लावियों के ख़ैमों के अफ़राद थे।
19 सल्लूम बिन क़ोरे बिन अबियासफ़ बिन क़ोरह अपने
भाइयों के साथ क़ोरह के ख़ानदान का था। जिस तरह
उन के बापदादा की ज़िम्मादारी रब की ख़ैमागाह में
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े की पहरादारी करनी
थी उसी तरह उन की ज़िम्मादारी मक़्दिस के दरवाज़े
की पहरादारी करनी थी। 20 क़दीम ज़माने में फ़ीन्हास
बिन इलीअज़र उन पर मुक़र्रर था, और रब उस के
साथ था। 21 बाद में ज़करियाह बिन मसलमियाह
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े का दरबान था।
22 कुल 212 मर्दों को दरबान की ज़िम्मादारी दी गई
थी। उन के नाम उन की मक़ामी जगहों के नसबनामे
में दर्ज थे। दाऊद और समूएल ग़ैबबीन ने उन के
बापदादा को यह ज़िम्मादारी दी थी। 23 वह और उन
की औलाद पहले रब के घर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़ों पर पहरादारी करते थे। 24 यह दरबान
रब के घर के चारों तरफ़ के दरवाज़ों की पहरादारी
करते थे।

25 लावी के अक्सर लोग यरूशलम में नहीं रहते
थे बल्कि बारी बारी एक हफ़्ते के लिए दीहात
से यरूशलम आते थे ताकि वहाँ अपनी ख़िदमत
सरअन्जाम दें। 26 सिर्फ़ दरबानों के चार इंचार्ज
मुसलसल यरूशलम में रहते थे। यह चार लावी
अल्लाह के घर के कमरों और ख़ज़ानों को भी सँभालते
27 और रात को भी अल्लाह के घर के इर्दगिर्द गुज़ारते
थे, क्यूँकि उन ही को उस की हिफ़ाज़त करना और
सुब्ह के वक़्त उस के दरवाज़ों को खोलना था।
28 बाज़ दरबान इबादत का सामान सँभालते थे।
जब भी उसे इस्तेमाल के लिए अन्दर और बाद
में दुबारा बाहर लाया जाता तो वह हर चीज़ को
गिन कर चैक करते थे। 29 बाज़ बाक़ी सामान और
मक़्दिस में मौजूद चीज़ों को सँभालते थे। रब के घर
में मुस्तामल बारीक मैदा, मै, ज़ैतून का तेल, बख़ूर
और बल्सान के मुख़्तलिफ़ तेल भी इन में शामिल थे।
30 लेकिन बल्सान के तेलों को तय्यार करना इमामों
की ज़िम्मादारी थी। 31 क़ोरह के ख़ानदान का लावी
मत्तितियाह जो सल्लूम का पहलौठा था क़ुर्बानी के
लिए मुस्तामल रोटी बनाने का इन्तिज़ाम चलाता था।
32 क़िहात के ख़ानदान के बाज़ लावियों के हाथ में
वह रोटियाँ बनाने का इन्तिज़ाम था जो हर हफ़्ते के
दिन को रब के लिए मख़्सूस करके रब के घर के
मुक़द्दस कमरे की मेज़ पर रखी जाती थीं।
33 मौसीक़ार भी लावी थे। उन के सरबराह बाक़ी
तमाम ख़िदमत में हिस्सा नहीं लेते थे, क्यूँकि उन्हें
हर वक़्त अपनी ही ख़िदमत सरअन्जाम देने के लिए
तय्यार रहना पड़ता था। इस लिए वह रब के घर के
कमरों में रहते थे।
34 लावियों के यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त
नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल के ख़ानदान

35 जिबऊन का बाप यईएल जिबऊन में रहता था।
उस की बीवी का नाम माका था। 36 बड़े से ले कर
छोटे तक उन के बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस, बाल, नैर,
नदब, 37 जदूर, अख़ियो, ज़करियाह और मिक़्लोत
थे। 38 मिक़्लोत का बेटा सिमाह था। वह भी अपने
भाइयों के मुक़ाबिल यरूशलम में रहते थे।
39 नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल का।
साऊल के चार बेटे यूनतन, मल्कीशूअ, अबीनदाब
और इश्बाल थे।
40 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल
मीकाह का। 41 मीकाह के चार बेटे फ़ीतून, मलिक,
तहरेअ और आख़ज़ थे। 42 आख़ज़ का बेटा यारा
था। यारा के तीन बेटे अलमत, अज़्मावत और
ज़िम्री थे। ज़िम्री के हाँ मौज़ा पैदा हुआ, 43 मौज़ा के
बिनआ, बना के रिफ़ायाह, रिफ़ायाह के इलिआसा
और इलिआसा के असील।
44 असील के छः बेटे अज़्रीक़ाम, बोकिरू,
इस्माईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे।

साऊल और अप्स के बेटों की मौत

10 1 जिल्बूअ के पहाड़ी सिलसिले पर
फ़िलिस्तियों और इस्राईलियों के दरमियान
जंग छिड़ गई। लड़ते लड़ते इस्राईली फ़रार होने
लगे, लेकिन बहुत लोग वहीं शहीद हो गए।
2 फिर फ़िलिस्ती साऊल और उस के बेटों यूनतन,
अबीनदाब और मल्कीशूअ के पास जा पहुँचे। तीनों
बेटे हलाक हो गए, 3 जबकि लड़ाई साऊल के
इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअन्दाज़ों
का निशाना बन कर ज़ख़्मी हो गया। 4 उस ने अपने
सिलाहबर्दार को हुक्म दिया, “अपनी तलवार मियान
से खैंच कर मुझे मार डाल! वर्ना यह नामख़्तून
मुझे बेइज़्ज़त करेंगे।” लेकिन सिलाहबर्दार ने इन्कार
किया, क्यूँकि वह बहुत डरा हुआ था। आख़िर में
साऊल अपनी तलवार ले कर ख़ुद उस पर गिर गया।
5 जब सिलाहबर्दार ने देखा कि मेरा मालिक मर
गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिर कर मर
गया। 6 यूँ उस दिन साऊल, उस के तीन बेटे और
उस का तमाम घराना हलाक हो गए। 7 जब मैदान-ए-
यज़्रएल के इस्राईलियों को ख़बर मिली कि इस्राईली

फ़ौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़ कर भाग निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में बसने लगे।

8 अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के लिए
दुबारा मैदान-ए-जंग में आ गए। जब उन्हें जिल्बूअ के
पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उस के तीनों बेटे
मुर्दा मिले 9 तो उन्हों ने साऊल का सर काट कर उस
का ज़िराबक्तर उतार लिया और क़ासिदों को अपने
पूरे मुल्क में भेज कर अपने बुतों और अपनी क़ौम
को फ़त्ह की इत्तिला दी। 10 साऊल का ज़िराबक्तर
उन्हों ने अपने देवताओं के मन्दिर में महफ़ूज़ कर
लिया और उस के सर को दजून देवता के मन्दिर में
लटका दिया।

11 जब यबीस-जिलिआद के बाशिन्दों को ख़बर
मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के साथ
क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के
क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। वहाँ
पहुँच कर वह साऊल और उस के बेटों की लाशों को
उतार कर यबीस ले गए जहाँ उन्हों ने उन की हड्डियों
को यबीस के बड़े दरख़्त के साय में दफ़नाया। उन्हों
ने रोज़ा रख कर पूरे हफ़्ते तक उन का मातम किया।

13 साऊल को इस लिए मारा गया कि वह रब का
वफ़ादार न रहा। उस ने उस की हिदायात पर अमल न
किया, यहाँ तक कि उस ने मुर्दों की रूह से राबिता
करने वाली जादूगरनी से मश्वरा किया, 14 हालाँकि
उसे रब से दरयाफ़्त करना चाहिए था। यही वजह है
कि रब ने उसे सज़ा-ए-मौत दे कर सल्तनत को दाऊद
बिन यस्सी के हवाले कर दिया।

दाऊद पूरे इस्राईल का बादशाह बन जाता है

11 1 उस वक़्त तमाम इस्राईल हब्रून में दाऊद
के पास आया और कहा, “हम आप ही
की क़ौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माज़ी में भी
जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी मुहिम्मों
में इस्राईल की क़ियादत करते रहे। और रब आप
के ख़ुदा ने आप से वादा भी किया है कि तू मेरी
क़ौम इस्राईल का चरवाहा बन कर उस पर हुकूमत
करेगा।”

3 जब इस्राईल के तमाम बुज़ुर्ग हब्रून पहुँचे तो दाऊद
बादशाह ने रब के हुज़ूर उन के साथ अह्द बांधा, और
उन्हों ने उसे मसह करके इस्राईल का बादशाह बना
दिया। यूँ रब का समूएल की मारिफ़त किया हुआ
वादा पूरा हुआ।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

4 बादशाह बनने के बाद दाऊद तमाम इस्राईलियों
के साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हम्ला करे। उस
ज़माने में उस का नाम यबूस था, और यबूसी उस
में बसते थे। 5 दाऊद को देख कर यबूसियों ने उस
से कहा, “आप हमारे शहर में कभी दाख़िल नहीं हो
पाएँगे!”

तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर
लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है।
6 यबूस पर हम्ला करने से पहले दाऊद ने कहा था,
“जो भी यबूसियों पर हम्ला करने में राहनुमाई करे वह
फ़ौज का कमाँडर बनेगा।” तब योआब बिन ज़रूयाह
ने पहले शहर पर चढ़ाई की। चुनाँचे उसे कमाँडर
मुक़र्रर किया गया।

7 यरूशलम पर फ़त्ह पाने के बाद दाऊद क़िले में
रहने लगा। उस ने उसे ‘दाऊद का शहर’ क़रार दिया
8 और उस के इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। दाऊद
का यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू
हुआ और चारों तरफ़ फैलता गया जबकि योआब ने
शहर का बाक़ी हिस्सा बहाल कर दिया। 9 यूँ दाऊद
ज़ोर पकड़ता गया, क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज उस के
साथ था।

दाऊद के मश्हूर फ़ौजी

10 दर्ज-ए-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़हरिस्त
है। पूरे इस्राईल के साथ उन्हों ने मज़बूती से उस

की बादशाही की हिमायत करके दाऊद को रब के
फ़रमान के मुताबिक़ अपना बादशाह बना दिया।
11 जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के ऐन
बाद आते थे उन में यसूबिआम हक्मूनी पहले नम्बर
पर आता था। एक बार उस ने अपने नेज़े से 300
आदमियों को मार दिया। 12 इन तीन अफ़सरों में से
दूसरी जगह पर इलीअज़र बिन दोदो बिन अख़ूही
आता था। 13 यह फ़स-दम्मीम में दाऊद के साथ
था जब फ़िलिस्ती वहाँ लड़ने के लिए जमा हो गए
थे। मैदान-ए-जंग में जौ का खेत था, और लड़ते
लड़ते इस्राईली फ़िलिस्तियों के सामने भागने लगे।
14 लेकिन इलीअज़र दाऊद के साथ खेत के बीच में
फ़िलिस्तियों का मुक़ाबला करता रहा। फ़िलिस्तियों
को मारते मारते उन्हों ने खेत का दिफ़ा करके रब की
मदद से बड़ी फ़त्ह पाई।
15–16 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के
ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती फ़ौज
ने वादी-ए-रफ़ाईम में अपनी लश्करगाह लगाई थी।
उन के दस्तों ने बैत-लहम पर भी क़ब्ज़ा कर लिया
था। दाऊद के तीस आला अफ़सरों में से तीन उस से
मिलने आए। 17 दाऊद को शदीद प्यास लगी, और
वह कहने लगा, “कौन मेरे लिए बैत-लहम के दरवाज़े
पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?”
18 यह सुन कर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तियों की
लश्करगाह पर हम्ला करके उस में घुस गए और लड़ते
लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उस से कुछ
पानी भर कर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन
उस ने पीने से इन्कार कर दिया बल्कि उसे क़ुर्बानी के
तौर पर उंडेल कर रब को पेश किया 19 और बोला,
“अल्लाह न करे कि मैं यह पानी पियूँ। अगर ऐसा
करता तो उन आदमियों का ख़ून पीता जो अपनी जान
पर खेल कर पानी लाए हैं।” इस लिए वह उसे पीना
नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त
कामों की एक मिसाल है।
20–21 योआब का भाई अबीशै मज़कूरा तीन
सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा उस ने अपने नेज़े
से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निस्बत
उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह ख़ुद
इन में गिना नहीं जाता था।
22 बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी था।
वह क़ब्ज़िएल का रहने वाला था, और उस ने बहुत
दफ़ा अपनी मर्दानगी दिखाई। मोआब के दो बड़े
सूरमा उस के हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत
बर्फ़ पड़ गई तो उस ने एक हौज़ में उतर कर एक
शेरबबर को मार डाला जो उस में गिर गया था।
23 एक और मौक़े पर उस का वास्ता एक मिस्री से
पड़ा जिस का क़द साढ़े सात फ़ुट था। मिस्री के
हाथ में खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा नेज़ा था जबकि
उस के अपने पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन बिनायाह
ने उस पर हम्ला करके उस के हाथ से नेज़ा छीन
लिया और उसे उस के अपने हथियार से मार डाला।
24 ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन
यहोयदा मज़कूरा तीन आदमियों के बराबर मश्हूर
हुआ। 25 तीस अफ़सरों के दीगर मर्दों की निस्बत उस
की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़कूरा
तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे
अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर किया।
26 ज़ैल के आदमी बादशाह के सूरमाओं में शामिल
थे।
योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का इल्हनान
बिन दोदो, 27 सम्मोत हरोरी, ख़लिस फ़लूनी,
28 तक़ूअ का ईरा बिन अक़्क़ीस, अनतोत का
अबीअज़र, 29 सिब्बकी हूसाती, ईली अख़ूही,
30 महरी नतूफ़ाती, हलिद बिन बाना नतूफ़ाती,
31 बिनयमीनी शहर जिबिआ का इत्ती बिन रीबी,
बिनायाह फ़िरआतोनी 32 नहले-जास का हूरी,
अबीएल अर्बाती, 33 अज़्मावत बहरूमी, इलियह्बा
सालबूनी, 34 हशीम जिज़ूनी के बेटे, यूनतन बिन शजी
हरारी, 35 अख़ीआम बिन सकार हरारी, इलीफ़ल
बिन ऊर, 36 हिफ़र मकीराती, अख़ियाह फ़लूनी,
37 हस्रो कर्मिली, नारी बिन अज़्बी, 38 नातन का भाई
योएल, मिब्ख़ार बिन हाजिरी, 39 सिलक़ अम्मोनी,

योआब बिन ज़रूयाह का सिलाहबर्दार नहरी बैरोती,
40 ईरा इत्री, जरीब इत्री, 41 ऊरियाह हित्ती, ज़बद
बिन अख़्लई, 42 अदीना बिन सीज़ा (रूबिन के
क़बीले का यह सरदार 30 फ़ौजियों पर मुक़र्रर था),
43 हनान बिन माका, यूसफ़त मित्नी, 44 उज़्ज़ियाह
अस्तराती, ख़ूताम अरोईरी के बेटे समा और यईएल,
45 यदीअएल बिन सिम्री, उस का भाई यूख़ा तीसी,
46 इलीएल महावी, इल्नाम के बेटे यरीबी और
यूसावियाह, यित्मा मोआबी, 47 इलीएल, ओबेद और
यासीएल मज़ोबाई।

साऊल के दौर-ए-हकूमत में दाऊद के पैरोकार

12 1 ज़ैल के आदमी सिक़्लाज में दाऊद के
साथ मिल गए, उस वक़्त जब वह साऊल
बिन क़ीस से छुपा रहता था। यह उन फ़ौजियों में
से थे जो जंग में दाऊद के साथ मिल कर लड़ते थे
2 और बेहतरीन तीरअन्दाज़ थे, क्यूँकि यह न सिर्फ़
दहने बल्कि बाएँ हाथ से भी महारत से तीर और
फ़लाख़न का पत्थर चला सकते थे। इन आदमियों
में से दर्ज-ए-ज़ैल बिनयमीन के क़बीले और साऊल
के ख़ानदान से थे।

3 उन का राहनुमा अख़ीअज़र, फिर यूआस (दोनों
समाआह जिबिआती के बेटे थे), यज़ीएल और फ़लत
(दोनों अज़्मावत के बेटे थे), बराका, याहू अनतोती,
4 इस्मायाह जिबऊनी जो दाऊद के 30 अफ़्सरों का
एक सूरमा और लीडर था, यरमियाह, यहज़ीएल,
यूहनान, यूज़बद जदीराती, 5 इलिऊज़ी, यरीमोत,
बालियाह, समरियाह और सफ़तियाह ख़रूफ़ी।

6 क़ोरह के ख़ानदान में से इल्क़ाना, यिस्सियाह,
अज़रेल, यूअज़र और यसूबिआम दाऊद के साथ थे।

7 इन के इलावा यरोहाम जदूरी के बेटे यूईला और
ज़बदियाह भी थे।

8 जद के क़बीले से भी कुछ बहादुर और
तजरिबाकार फ़ौजी साऊल से अलग हो कर दाऊद
के साथ मिल गए जब वह रेगिस्तान के क़िले में
था। यह मर्द महारत से ढाल और नेज़ा इस्तेमाल
कर सकते थे। उन के चिहरे शेरबबर के चिहरों की
मानिन्द थे, और वह पहाड़ी इलाक़े में ग़ज़ालों की
तरह तेज़ चल सकते थे।

9 उन का लीडर अज़र ज़ैल के दस आदमियों
पर मुक़र्रर था : अबदियाह, इलियाब, 10 मिस्मन्ना,
यरमियाह, 11 अत्ती, इलीएल, 12 यूहनान, इल्ज़बद,
13 यरमियाह और मक्बन्नी।

14 जद के यह मर्द सब आला फ़ौजी अफ़्सर बन
गए। उन में से सब से कमज़ोर आदमी सौ आम
फ़ौजियों का मुक़ाबला कर सकता था जबकि सब
से ताक़तवर आदमी हज़ार का मुक़ाबला कर सकता
था। 15 इन ही ने बहार के मौसम में दरया-ए-यर्दन को
पार किया, जब वह किनारों से बाहर आ गया था,
और मशरिक़ और मग़रिब की वादियों को बन्द कर
रखा।

16 बिनयमीन और यहूदाह के क़बीलों के कुछ मर्द
दाऊद के पहाड़ी क़िले में आए। 17 दाऊद बाहर
निकल कर उन से मिलने गया और पूछा, “क्या
आप सलामती से मेरे पास आए हैं? क्या आप मेरी
मदद करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो मैं आप का
अच्छा साथी रहूँगा। लेकिन अगर आप मुझे दुश्मनों
के हवाले करने के लिए आए हैं हालाँकि मुझ से कोई
भी ज़ुल्म नहीं हुआ है तो हमारे बापदादा का ख़ुदा इसे
देख कर आप को सज़ा दे।”

18 फिर रूह-उल-क़ुद्स 30 अफ़्सरों के राहनुमा
अमासी पर नाज़िल हुआ, और उस ने कहा, “ऐ
दाऊद, हम तेरे ही लोग हैं। ऐ यस्सी के बेटे, हम
तेरे साथ हैं। सलामती, सलामती तुझे हासिल हो,
और सलामती उन्हें हासिल हो जो तेरी मदद करते
हैं। क्यूँकि तेरा ख़ुदा तेरी मदद करेगा।” यह सुन कर
दाऊद ने उन्हें क़बूल करके अपने छापामार दस्तों
पर मुक़र्रर किया।

19 मनस्सी के क़बीले के कुछ मर्द भी साऊल से
अलग हो कर दाऊद के पास आए। उस वक़्त वह
फ़िलिस्तियों के साथ मिल कर साऊल से लड़ने जा
रहा था, लेकिन बाद में उसे मैदान-ए-जंग में आने की

इजाज़त न मिली। क्यूँकि फ़िलिस्ती सरदारों ने आपस में मश्वरा करने के बाद उसे यह कह कर वापस भेज दिया कि ख़तरा है कि यह हमें मैदान-ए-जंग में छोड़ कर अपने पुराने मालिक साऊल से दुबारा मिल जाए। फिर हम तबाह हो जाएंगे।

20 जब दाऊद सिक़्लाज वापस जा रहा था तो मनस्सी के क़बीले के दर्ज-ए-ज़ैल अफ़्सर साऊल से अलग हो कर उस के साथ हो लिए : अदना, यूज़बद, यदीअएल, मीकाएल, यूज़बद, इलीहू और ज़िल्लती। मनस्सी में हर एक को हज़ार हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर किया गया था। 21 उन्हों ने लूटने वाले अमालीक़ी दस्तों को पकड़ने में दाऊद की मदद की, क्यूँकि वह सब दिलेर और क़ाबिल फ़ौजी थे। सब उस की फ़ौज में अफ़्सर बन गए।

22 रोज़-ब-रोज़ लोग दाऊद की मदद करने के लिए आते रहे, और होते होते उस की फ़ौज अल्लाह की फ़ौज जैसी बड़ी हो गई।

हब्रून में दाऊद की फ़ौज

23 दर्ज-ए-ज़ैल उन तमाम फ़ौजियों की फ़हरिस्त है जो हब्रून में दाऊद के पास आए ताकि उसे साऊल की जगह बादशाह बनाएँ, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।

24 यहूदाह के क़बीले के ढाल और नेज़े से लेस 6,800 मर्द थे।

25 शमाऊन के क़बीले के 7,100 तजरिबाकार फ़ौजी थे।

26 लावी के क़बीले के 4,600 मर्द थे। 27 उन में हारून के ख़ानदान का सरपरस्त यहोयदा भी शामिल था जिस के साथ 3,700 आदमी थे। 28 सदोक़ नामी एक दिलेर और जवान फ़ौजी भी शामिल था। उस के साथ उस के अपने ख़ानदान के 22 अफ़्सर थे।

29 साऊल के क़बीले बिनयमीन के भी 3,000 मर्द थे, लेकिन इस क़बीले के अक्सर फ़ौजी अब तक साऊल के ख़ानदान के साथ लिपटे रहे।

30 इफ़्राईम के क़बीले के 20,800 फ़ौजी थे। सब अपने ख़ानदानों में असर-ओ-रसूख़ रखने वाले थे।

31 मनस्सी के आधे क़बीले के 18,000 मर्द थे। उन्हें दाऊद को बादशाह बनाने के लिए चुन लिया गया था।

32 इश्कार के क़बीले के 200 अफ़्सर अपने दस्तों के साथ थे। यह लोग वक़्त की ज़रूरत समझ कर जानते थे कि इस्राईल को क्या करना है।

33 ज़बूलून के क़बीले के 50,000 तजरिबाकार फ़ौजी थे। वह हर हथियार से लेस और पूरी वफ़ादारी से दाऊद के लिए लड़ने के लिए तय्यार थे।

34 नफ़्ताली के क़बीले के 1,000 अफ़्सर थे। उन के तहत ढाल और नेज़े से मुसल्लह 37,000 आदमी थे।

35 दान के क़बीले के 28,600 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए मुस्तइद थे।

36 आशर के क़बीले के 40,000 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए तय्यार थे।

37 दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में आबाद क़बीलों रूबिन, जद और मनस्सी के आधे हिस्से के 1,20,000 मर्द थे। हर एक हर क़िस्म के हथियार से लेस था।

38 सब तर्तीब से हब्रून आए ताकि पूरे अज़्म के साथ दाऊद को पूरे इस्राईल का बादशाह बनाएँ। बाक़ी तमाम इस्राईली भी मुत्तफ़िक़ थे कि दाऊद हमारा बादशाह बन जाए। 39 यह फ़ौजी तीन दिन तक दाऊद के पास रहे जिस दौरान उन के क़बाइली भाई उन्हें खाने-पीने की चीज़ें मुहय्या करते रहे। 40 क़रीब के रहने वालों ने भी इस में उन की मदद की। इश्कार, ज़बूलून और नफ़्ताली तक के लोग अपने गधों, ऊँटों, ख़च्चरों और बैलों पर खाने की चीज़ें लाद कर वहाँ पहुँचे। मैदा, अन्जीर और किशमिश की टिक्कियाँ, मै, तेल, बैल और भेड़-बकरियाँ बड़ी मिक़्दार में हब्रून लाई गईं, क्यूँकि तमाम इस्राईली ख़ुशी मना रहे थे।

दाऊद अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में लाना चाहता है

13 1 दाऊद ने तमाम अफ़सरों से मश्वरा किया।
उन में हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़सर शामिल थे। 2 फिर उस ने इस्राईल की
पूरी जमाअत से कहा, “अगर आप को मन्ज़ूर हो और
रब हमारे ख़ुदा की मर्ज़ी हो तो आएँ हम पूरे मुल्क के
इस्राईली भाइयों को दावत दें कि आ कर हमारे साथ
जमा हो जाएँ। वह इमाम और लावी भी शरीक हों जो
अपने अपने शहरों और चरागाहों में बसते हैं। 3 फिर
हम अपने ख़ुदा के अह्द का सन्दूक़ दुबारा अपने
पास वापस लाएँ, क्यूँकि साऊल के दौर-ए-हुकूमत
में हम उस की फ़िक्र नहीं करते थे।”

4 पूरी जमाअत मुत्तफ़िक़ हुई, क्यूँकि यह मन्सूबा
सब को दुरुस्त लगा। 5 चुनाँचे दाऊद ने पूरे इस्राईल
को जुनूब में मिस्र के सैहूर से ले कर शिमाल में
लबो-हमात तक बुलाया ताकि सब मिल कर अल्लाह
के अह्द का सन्दूक़ क़िर्यत-यारीम से यरूशलम ले
जाएँ। 6 फिर वह उन के साथ यहूदाह के बाला यानी
क़िर्यत-यारीम गया ताकि रब ख़ुदा का सन्दूक़ उठा
कर यरूशलम ले जाएँ, वही सन्दूक़ जिस पर रब
के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह सन्दूक़
के ऊपर करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन
है। 7 क़िर्यत-यारीम पहुँच कर लोगों ने अल्लाह के
सन्दूक़ को अबीनदाब के घर से निकाल कर एक नई
बैलगाड़ी पर रख दिया, और उज़्ज़ा और अख़ियो उसे
यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे। 8 दाऊद और तमाम
इस्राईली गाड़ी के पीछे चल पड़े। सब अल्लाह के हुज़ूर
पूरे ज़ोर से ख़ुशी मनाने लगे। जूनीपर की लकड़ी के
मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों,
सरोदों, दफ़ों, झाँझों और तुरमों की आवाज़ों से गूँज
उठी।

9 वह गन्दुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिस
के मालिक का नाम कैदून था। वहाँ बैल अचानक
बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अह्द का सन्दूक़
पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 10 उसी लम्हे रब
का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्यूँकि उस ने अह्द
के सन्दूक़ को छूने की जुरअत की थी। वहीं अल्लाह
के हुज़ूर उज़्ज़ा गिर कर हलाक हुआ। 11 दाऊद को
बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज़्ज़ा पर यूँ टूट
पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम परज़-उज़्ज़ा
यानी ‘उज़्ज़ा पर टूट पड़ना’ है।

12 उस दिन दाऊद को अल्लाह से ख़ौफ़ आया। उस
ने सोचा, “मैं किस तरह अल्लाह का सन्दूक़ अपने
पास पहुँचा सकूँगा?” 13 चुनाँचे उस ने फ़ैसला किया
कि हम अहद का सन्दूक़ यरूशलम नहीं ले जाएंगे
बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफ़ूज़
रखेंगे। 14 वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा। इन तीन
महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम के घराने और
उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी।

दाऊद की तरक़्क़ी

14 1 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद
के पास वफ़द भेजा। राज और बढ़ई भी
साथ थे। उन के पास देवदार की लकड़ी थी ताकि
दाऊद के लिए महल बनाएँ। 2 यूँ दाऊद ने जान
लिया कि रब ने मुझे इस्राईल का बादशाह बना कर
मेरी बादशाही अपनी क़ौम इस्राईल की ख़ातिर बहुत
सरफ़राज़ कर दी है।

3 यरूशलम में जा बसने के बाद दाऊद ने
मज़ीद बीवियों से शादी की। नतीजे में यरूशलम
में उस के कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 4 जो बेटे
वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मूअ, सोबाब,
नातन, सुलेमान, 5 इब्हार, इलीसूअ, इल्फ़लत,
6 नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, 7 इलीसमा, बाल-यदा और
इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़त्ह

8 जब फ़िलिस्तियों को इत्तिला मिली कि दाऊद को
मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया गया है तो
उन्हों ने अपने फ़ौजियों को इस्राईल में भेज दिया
ताकि उसे पकड़ लें। जब दाऊद को पता चल गया

तो वह उन का मुक़ाबला करने के लिए गया। 9 जब
फ़िलिस्ती इस्राईल में पहुँच कर वादी-ए-रफ़ाईम में
फैल गए 10 तो दाऊद ने रब से दरयाफ़्त किया,
“क्या मैं फ़िलिस्तियों पर हम्ला करूँ? क्या तू मुझे
उन पर फ़त्ह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया, “हाँ,
उन पर हम्ला कर! मैं उन्हें तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।”
11 चुनाँचे दाऊद अपने फ़ौजियों को ले कर बाल-
पराज़ीम गया। वहाँ उस ने फ़िलिस्तियों को शिकस्त
दी। बाद में उस ने गवाही दी, “जितने ज़ोर से बन्द
के टूट जाने पर पानी उस से फूट निकलता है उतने
ज़ोर से आज अल्लाह मेरे वसीले से दुश्मन की सफ़ों में
से फूट निकला है।” चुनाँचे उस जगह का नाम बाल-
पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़ गया।
12 फ़िलिस्ती अपने देवताओं को छोड़ कर भाग गए,
और दाऊद ने उन्हें जला देने का हुक्म दिया।

13 एक बार फिर फ़िलिस्ती आ कर वादी-ए-रफ़ाईम
में फैल गए। 14 इस दफ़ा जब दाऊद ने अल्लाह से
दरयाफ़्त किया तो उस ने जवाब दिया, “इस मर्तबा
उन का सामना मत करना बल्कि उन के पीछे जा
कर बका के दरख़्तों के सामने उन पर हम्ला कर।
15 जब उन दरख़्तों की चोटियों से क़दमों की चाप
सुनाई दे तो ख़बरदार! यह इस का इशारा होगा कि
अल्लाह ख़ुद तेरे आगे आगे चल कर फ़िलिस्तियों को
मारने के लिए निकल आया है।” 16 दाऊद ने ऐसा
ही किया और नतीजे में फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे
कर जिबऊन से ले कर जज़र तक उन का ताक़्क़ुब
किया।

17 दाऊद की शुहरत तमाम ममालिक में फैल गई।
रब ने तमाम क़ौमों के दिलों में दाऊद का ख़ौफ़ डाल
दिया।

यरूशलम में अह्द के सन्दूक़ के लिए तय्यारियाँ

15 1 यरूशलम के उस हिस्से में जिस का नाम
‘दाऊद का शहर’ पड़ गया था दाऊद ने
अपने लिए चन्द इमारतें बनवाईं। उस ने अल्लाह के
सन्दूक़ के लिए भी एक जगह तय्यार करके वहाँ
ख़ैमा लगा दिया। 2 फिर उस ने हुक्म दिया, “सिवाए
लावियों के किसी को भी अल्लाह का सन्दूक़ उठाने
की इजाज़त नहीं। क्यूँकि रब ने इन ही को रब का
सन्दूक़ उठाने और हमेशा के लिए उस की ख़िदमत
करने के लिए चुन लिया है।”

3 इस के बाद दाऊद ने तमाम इस्राईल को यरूशलम
बुलाया ताकि वह मिल कर रब का सन्दूक़ उस जगह
ले जाएँ जो उस ने उस के लिए तय्यार कर रखी थी।
4 बादशाह ने हारून और बाक़ी लावियों की औलाद
को भी बुलाया। 5 दर्ज-ए-ज़ैल उन लावी सरपरस्तों
की फ़हरिस्त है जो अपने रिश्तेदारों को ले कर आए।

क़िहात के ख़ानदान से ऊरीएल 120 मर्दों समेत,
6 मिरारी के ख़ानदान से असायाह 220 मर्दों समेत,
7 जैर्सोम के ख़ानदान से योएल 130 मर्दों समेत,
8 इलीसफ़न के ख़ानदान से समायाह 200 मर्दों
समेत,
9 हब्रून के ख़ानदान से इलीएल 80 मर्दों समेत,
10 उज़्ज़ीएल के ख़ानदान से अम्मीनदाब 112 मर्दों
समेत।

11 दाऊद ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर
को मज़कूरा छः लावी सरपरस्तों समेत अपने पास
बुला कर 12 उन से कहा, “आप लावियों के सरबराह
हैं। लाज़िम है कि आप अपने क़बाइली भाइयों के
साथ अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करके रब
इस्राईल के ख़ुदा के सन्दूक़ को उस जगह ले जाएँ
जो मैं ने उस के लिए तय्यार कर रखी है। 13 पहली
मर्तबा जब हम ने उसे यहाँ लाने की कोशिश की तो
यह आप लावियों के ज़रीए न हुआ, इस लिए रब
हमारे ख़ुदा का क़हर हम पर टूट पड़ा। उस वक़्त हम
ने उस से दरयाफ़्त नहीं किया था कि उसे उठा कर
ले जाने का क्या मुनासिब तरीक़ा है।” 14 तब इमामों
और लावियों ने अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करके रब इस्राईल के ख़ुदा के सन्दूक़ को यरूशलम
लाने के लिए तय्यार किया। 15 फिर लावी अल्लाह के
सन्दूक़ को उठाने की लकड़ियों से अपने कंधों पर

यूँ ही रख कर चल पड़े जिस तरह मूसा ने रब के
कलाम के मुताबिक़ फ़रमाया था।

16 दाऊद ने लावी सरबराहों को यह हुक्म भी
दिया, “अपने क़बीले में से ऐसे आदमियों को चुन
लें जो साज़, सितार, सरोद और झाँझ बजाते हुए
ख़ुशी के गीत गाएँ।” 17 उस ज़िम्मादारी के लिए
लावियों ने ज़ैल के आदमियों को मुक़र्रर किया
: हैमान बिन योएल, उस का भाई आसफ़ बिन
बरकियाह और मिरारी के ख़ानदान का ऐतान बिन
कौसायाह। 18 दूसरे मक़ाम पर उन के यह भाई
आए : ज़करियाह, याज़ीएल, समीरामोत, यहीएल,
उन्नी, इलियाब, बिनायाह, मासियाह, मत्तितियाह,
इलीफ़लेहू, मिक़्नियाह, ओबेद-अदोम और यईएल।
यह दरबान थे। 19 हैमान, आसफ़ और ऐतान
गुलूकार थे, और उन्हें पीतल के झाँझ बजाने
की ज़िम्मादारी दी गई। 20 ज़करियाह, अज़ीएल,
समीरामोत, यहीएल, उन्नी, इलियाब, मासियाह और
बिनायाह को अलामूत के तर्ज़ पर सितार बजाना
था। 21 मत्तितियाह, इलीफ़लेहू, मिक़्नियाह, ओबेद-
अदोम, यईएल और अज़ज़ियाह को शमीनीत के तर्ज़
पर सरोद बजाने के लिए चुना गया।

22 कननियाह ने लावियों की कवाइर की राहनुमाई
की, क्यूँकि वह इस में माहिर था।

23–24 बरकियाह, इल्क़ाना, ओबेद-अदोम और
यहियाह अह्द के सन्दूक़ के दरबान थे। सबनियाह,
यूसफ़त, नतनीएल, अमासी, ज़करियाह, बिनायाह
और इलीअज़र को तुरम बजा कर अल्लाह के सन्दूक़
के आगे आगे चलने की ज़िम्मादारी दी गई। सातों
इमाम थे।

दाऊद अह्द का सन्दूक़ यरूशलम में ले आता है

25 फिर दाऊद, इस्राईल के बुज़ुर्ग और हज़ार हज़ार
फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़्सर ख़ुशी मनाते हुए निकल
कर ओबेद-अदोम के घर गए ताकि रब के अह्द
का सन्दूक़ वहाँ से ले कर यरूशलम पहुँचाएँ।
26 जब ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह अह्द के सन्दूक़ को
उठाने वाले लावियों की मदद कर रहा है तो सात
जवान साँडों और सात मेंढों को क़ुर्बान किया गया।
27 दाऊद बारीक कतान का लिबास पहने हुए था,
और इस तरह अह्द का सन्दूक़ उठाने वाले लावी,
गुलूकार और कवाइर का लीडर कननियाह भी। इस
के इलावा दाऊद कतान का बालापोश पहने हुए
था। 28 तमाम इस्राईली ख़ुशी के नारे लगा लगा कर,
नरसिंगे और तुरम फूँक फूँक कर और झाँझ, सितार
और सरोद बजा बजा कर रब के अह्द का सन्दूक़
यरूशलम लाए।

29 रब का अह्द का सन्दूक़ दाऊद के शहर में
दाख़िल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बिन्त
साऊल खिड़की में से जुलूस को देख रही थी। जब
बादशाह कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो
मीकल ने उसे हक़ीर जाना।

16 1 अल्लाह का सन्दूक़ उस तम्बू के दरमियान
में रखा गया जो दाऊद ने उस के लिए
लगवाया था। फिर उन्हों ने अल्लाह के हुज़ूर भस्म होने
वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 2 इस के
बाद दाऊद ने क़ौम को रब के नाम से बरकत दे कर
3 हर इस्राईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर
की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी।
4 उस ने कुछ लावियों को रब के सन्दूक़ के सामने
ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी दी। उन्हें रब इस्राईल
के ख़ुदा की तम्जीद और हम्द-ओ-सना करनी थी।
5 उन का सरबराह आसफ़ झाँझ बजाता था। उस
का नाइब ज़करियाह था। फिर यईएल, समीरामोत,
यहीएल, मत्तितियाह, इलियाब, बिनायाह, ओबेद-
अदोम और यईएल थे जो सितार और सरोद बजाते
थे। 6 बिनायाह और यहज़ीएल इमामों की ज़िम्मादारी
अल्लाह के अह्द के सन्दूक़ के सामने तुरम बजाना
थी।

शुक्र का गीत

7 उस दिन दाऊद ने पहली दफ़ा आसफ़ और उस
के साथी लावियों के हवाले ज़ैल का गीत करके उन्हें
रब की सताइश करने की ज़िम्मादारी दी।

8 “रब का शुक्र करो और उस का नाम पुकारो!
अक़्वाम में उस के कामों का एलान करो।
9 साज़ बजा कर उस की मद्हसराई करो। उस के
तमाम अजाइब के बारे में लोगों को बताओ।
10 उस के मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के
तालिब दिल से ख़ुश हों।
11 रब और उस की क़ुदरत की दरयाफ़्त करो, हर
वक़्त उस के चिहरे के तालिब रहो।
12 जो मोजिज़े उस ने किए उन्हें याद करो। उस के
इलाही निशान और उस के मुँह के फ़ैसले दुहराते
रहो।
13 तुम जो उस के ख़ादिम इस्राईल की औलाद और
याक़ूब के फ़र्ज़न्द हो, जो उस के बर्गुज़ीदा लोग हो,
तुम्हें सब कुछ याद रहे!

14 वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की
अदालत करता है।
15 वह हमेशा अपने अह्द का ख़याल रखता है, उस
कलाम का जो उस ने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया
था।
16 यह वह अह्द है जो उस ने इब्राहीम से बांधा,
वह वादा जो उस ने क़सम खा कर इस्हाक़ से किया
था।
17 उस ने उसे याक़ूब के लिए क़ाइम किया ताकि
वह उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, उस ने तस्दीक़
की कि यह मेरा इस्राईल से अबदी अह्द है।
18 साथ साथ उस ने फ़रमाया, ‘मैं तुझे मुल्क-ए-
कनआन दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।’
19 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे
बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।
20 अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सल्तनतों
में घूमते फिरते थे।
21 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने
न दिया, और उन की ख़ातिर उस ने बादशाहों को
डाँटा,
22 ‘मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना, मेरे
नबियों को नुक़्सान मत पहुँचाना।’

23 ऐ पूरी दुनिया, रब की तम्जीद में गीत गा! रोज़-
ब-रोज़ उस की नजात की ख़ुशख़बरी सुना।
24 क़ौमों में उस का जलाल और तमाम उम्मतों में
उस के अजाइब बयान करो।
25 क्यूँकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लाइक़
है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
26 क्यूँकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं
जबकि रब ने आसमान को बनाया।
27 उस के हुज़ूर शान-ओ-शौकत, उस की
सुकूनतगाह में क़ुदरत और जलाल है।
28 ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तम्जीद करो, रब
के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
29 रब के नाम को जलाल दो। क़ुर्बानी ले कर उस
के हुज़ूर आओ। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता हो कर
रब को सिज्दा करो।
30 पूरी दुनिया उस के सामने लरज़ उठे। यक़ीनन
दुनिया मज़बूती से क़ाइम है और नहीं डगमगाएगी।
31 आसमान शादमान हो, और ज़मीन जश्न मनाए।
क़ौमों में कहा जाए कि रब बादशाह है।
32 समुन्दर और जो कुछ उस में है ख़ुशी से गरज
उठे, मैदान और जो कुछ उस में है बाग़ बाग़ हो।
33 फिर जंगल के दरख़्त रब के सामने शादियाना
बजाएंगे, क्यूँकि वह आ रहा है, वह ज़मीन की
अदालत करने आ रहा है।

34 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला है, और उस
की शफ़क़त अबदी है।

35 उस से इल्तिमास करो, ‘ऐ हमारी नजात के ख़ुदा,
हमें बचा! हमें जमा करके दीगर क़ौमों के हाथ से
छुड़ा। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे
और तेरे क़ाबिल-ए-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।’
36 अज़ल से अबद तक रब, इस्राईल के ख़ुदा की
हम्द हो!”

तब पूरी क़ौम ने “आमीन” और “रब की हम्द हो”
कहा।

लावियों की ज़िम्मादारियाँ

37 दाऊद ने आसफ़ और उस के साथी लावियों को
रब के अह्द के सन्दूक़ के सामने छोड़ कर कहा,
“आइन्दा यहाँ बाक़ाइदगी से रोज़ाना की ज़रूरी
ख़िदमत करते जाएँ।”
38 इस गुरोह में ओबेद-अदोम और मज़ीद 68 लावी
शामिल थे। ओबेद-अदोम बिन यदूतून और हूसा
दरबान बन गए।
39 लेकिन सदोक़ इमाम और उस के साथी इमामों
को दाऊद ने रब की उस सुकूनतगाह के पास छोड़
दिया जो जिबऊन की पहाड़ी पर थी। 40 क्यूँकि
लाज़िम था कि वह वहाँ हर सुब्ह और शाम को
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करें और बाक़ी तमाम
हिदायात पर अमल करें जो रब की तरफ़ से इस्राईल
के लिए शरीअत में बयान की गई हैं। 41 दाऊद ने
हैमान, यदूतून और मज़ीद कुछ चीदा लावियों को
भी जिबऊन में उन के पास छोड़ दिया। वहाँ उन की
ख़ास ज़िम्मादारी रब की हम्द-ओ-सना करना थी,
क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है। 42 उन के पास
तुरम, झाँझ और बाक़ी ऐसे साज़ थे जो अल्लाह की
तारीफ़ में गाए जाने वाले गीतों के साथ बजाए जाते
थे। यदूतून के बेटों को दरबान बनाया गया।
43 जश्न के बाद सब लोग अपने अपने घर चले गए।
दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान को
बरकत दे कर सलाम करे।

रब दाऊद के लिए अबदी
बादशाही का वादा करता है

17 1 दाऊद बादशाह सलामती से अपने महल
में रहने लगा। एक दिन उस ने नातन नबी
से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता
हूँ जबकि रब के अह्द का सन्दूक़ अब तक तम्बू में
पड़ा है। यह मुनासिब नहीं!” 2 नातन ने बादशाह की
हौसलाअफ़ज़ाई की, “जो कुछ भी आप करना चाहते
हैं वह करें। अल्लाह आप के साथ है।”

रब दाऊद के लिए अबदी
बादशाही का वादा करता है

3 लेकिन उसी रात अल्लाह नातन से हमकलाम हुआ,
4 “मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जा कर उसे बता दे
कि रब फ़रमाता है, ‘तू मेरी रिहाइश के लिए मकान
तामीर नहीं करेगा। 5 आज तक मैं किसी मकान में
नहीं रहा। जब से मैं इस्राईलियों को मिस्र से निकाल
लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रह कर जगह-ब-जगह
फिरता रहा हूँ। 6 जिस दौरान मैं तमाम इस्राईलियों के
साथ इधर उधर फिरता रहा क्या मैं ने इस्राईल के उन
राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें
मैं ने अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया
था? क्या मैं ने उन में से किसी से कहा कि तुम ने मेरे
लिए देवदार का घर क्यूँ नहीं बनाया?’
7 चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्ब-उल-
अफ़्वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों
की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी क़ौम
इस्राईल का बादशाह बना दिया है। 8 जहाँ भी तू ने
क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते
मैं ने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब
मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सब
से अज़ीम आदमियों के नामों के बराबर ही होगा।
9 और मैं अपनी क़ौम इस्राईल के लिए एक वतन
मुहय्या करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यूँ लगा दूँगा कि
वह जड़ पकड़ कर महफ़ूज़ रहेंगे और कभी बेचैन

नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी
जिस तरह माज़ी में किया करती थीं, 10 उस वक़्त
से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी मुक़र्रर करता था। मैं तेरे
दुश्मनों को ख़ाक में मिला दूँगा। आज मैं फ़रमाता
हूँ कि रब ही तेरे लिए घर बनाएगा। 11 जब तू बूढ़ा
हो कर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा से जा
मिलेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त
पर बिठा दूँगा। उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना
दूँगा। 12 वही मेरे लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस
का तख़्त अबद तक क़ाइम रखूँगा। 13 मैं उस का
बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा। मेरी नज़र-ए-करम
साऊल पर न रही, लेकिन मैं उसे तेरे बेटे से कभी नहीं
हटाऊँगा कभी नहीं होने दूँगा कि वह तेरे बेटे से दूर
हो जाए। 14 मैं उसे अपने घराने और अपनी बादशाही
पर हमेशा क़ाइम रखूँगा, उस का तख़्त हमेशा मज़बूत
रहेगा'।"

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

15 नातन ने दाऊद के पास जा कर उसे सब कुछ
सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 16 तब
दाऊद अह्द के सन्दूक़ के पास गया और रब के
हुज़ूर बैठ कर दुआ करने लगा,

"ऐ रब ख़ुदा, मैं कौन हूँ और मेरा ख़ानदान क्या
हैसियत रखता है कि तू ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है?
17 और अब ऐ अल्लाह, तू मुझे और भी ज़्यादा अता
करने को है, क्यूँकि तू ने अपने ख़ादिम के घराने के
मुस्तक़बिल के बारे में भी वादा किया है। ऐ रब ख़ुदा,
तू ने यूँ मुझ पर निगाह डाली है गोया कि मैं कोई बहुत
अहम बन्दा हूँ। 18–19 लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ जब
तू ने यूँ अपने ख़ादिम की इज़्ज़त की है? ऐ रब, तू
तो अपने ख़ादिम को जानता है। तू ने अपने ख़ादिम
की ख़ातिर और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम
काम करके इन अज़ीम वादों की इत्तिला दी है।

20 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है। हम ने अपने कानों
से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
21 दुनिया में कौन सी क़ौम तेरी उम्मत इस्राईल की
मानिन्द है? तू ने इसी एक क़ौम का फ़िद्या दे कर उसे
ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी क़ौम बना लिया। तू
ने इस्राईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम करके
अपने नाम की शुहरत फैला दी। हमें मिस्र से रिहा
करके तू ने क़ौमों को हमारे आगे से निकाल दिया।
22 ऐ रब, तू इस्राईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम
बना कर उन का ख़ुदा बन गया है।

23 चुनाँचे ऐ रब, जो बात तू ने अपने ख़ादिम और
उस के घराने के बारे में की है उसे अबद तक क़ाइम
रख और अपना वादा पूरा कर। 24 तब वह मज़बूत
रहेगा और तेरा नाम अबद तक मश्हूर रहेगा। फिर
लोग तस्लीम करेंगे कि इस्राईल का ख़ुदा रब्ब-उल-
अफ़्वाज वाक़ई इस्राईल का ख़ुदा है, और तेरे ख़ादिम
दाऊद का घराना भी अबद तक तेरे हुज़ूर क़ाइम
रहेगा। 25 ऐ मेरे ख़ुदा, तू ने अपने ख़ादिम के कान को
इस बात के लिए खोल दिया है। तू ही ने फ़रमाया,
'मैं तेरे लिए घर तामीर करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे
ख़ादिम ने यूँ तुझ से दुआ करने की जुरअत की है।
26 ऐ रब, तू ही ख़ुदा है। तू ने अपने ख़ादिम से इन
अच्छी चीज़ों का वादा किया है। 27 अब तू अपने
ख़ादिम के घराने को बरकत देने पर राज़ी हो गया है
ताकि वह हमेशा तक तेरे सामने क़ाइम रहे। क्यूँकि
तू ही ने उसे बरकत दी है, इस लिए वह अबद तक
मुबारक रहेगा।"

दाऊद की जंगें

18 1 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दे कर उन्हें अपने
ताबे कर लिया और जात शहर पर गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियों समेत क़ब्ज़ा कर लिया।

2 उस ने मोआबियों पर भी फ़त्ह पाई, और वह उस
के ताबे हो कर उसे ख़राज देने लगे।

3 दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र को भी हमात के क़रीब हरा
दिया जब हददअज़र दरया-ए-फ़ुरात पर क़ाबू पाने
के लिए निकल आया था। 4 दाऊद ने 1,000 रथों,

7,000 घुड़सवारों और 20,000 पियादा सिपाहियों को गिरिफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को उस ने अपने लिए महफ़ूज़ रखा जबकि बाक़ियों की उस ने कोंचें काट दीं ताकि वह आइन्दा जंग के लिए इस्तेमाल न हो सकें।

5 जब दमिश्क़ के अरामी बाशिन्दे ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद ने उन के 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 6 फिर उस ने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी चौकियाँ क़ाइम कीं। अरामी उस के ताबे हो गए और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। 7 सोने की जो ढालें हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद यरूशलम ले गया। 8 हददअज़र के दो शहरों कून और तिब्ख़त से उस ने कस्रत का पीतल छीन लिया। बाद में सुलेमान ने यह पीतल रब के घर में 'समुन्दर' नामी पीतल का हौज़, सतून और पीतल का मुख़्तलिफ़ सामान बनाने के लिए इस्तेमाल किया।

9 जब हमात के बादशाह तूई को इत्तिला मिली कि दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की पूरी फ़ौज पर फ़त्ह पाई है 10 तो उस ने अपने बेटे हदूराम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। हदूराम ने दाऊद को हददअज़र पर फ़त्ह के लिए मुबारकबाद दी, क्यूँकि हददअज़र तूई का दुश्मन था, और उन के दरमियान जंग रही थी। हदूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और पीतल के बहुत से तुह्फ़े भी पेश किए। 11 दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मख़्सूस कर दीं। जहाँ भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब आया वहाँ की सोना-चाँदी उस ने रब के लिए मख़्सूस कर दी। यूँ अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिया और अमालीक़ की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

12 अबीशै बिन ज़रूयाह ने नमक की वादी में अदोमियों पर फ़त्ह पा कर 18,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 13 उस ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी फ़ौजी चौकियाँ क़ाइम कीं, और तमाम अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की मदद करके उसे फ़त्ह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

14 जितनी देर दाऊद पूरे इस्राईल पर हुकूमत करता रहा उतनी देर तक उस ने ध्यान दिया कि क़ौम के हर एक शख़्स को इन्साफ़ मिल जाए। 15 योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बादशाह का मुशीर-ए-ख़ास था। 16 सदोक़ बिन अख़ीतूब और अबीमलिक बिन अबियातर इमाम थे। शौशा मीरमुन्शी था। 17 बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते बनाम करेती और फ़लेती का कप्तान मुक़र्रर था। दाऊद के बेटे आला अफ़सर थे।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

19 1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह नाहस फ़ौत हुआ, और उस का बेटा तख़्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, "नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी, इस लिए अब मैं भी उस के बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।" उस ने बाप की वफ़ात का अफ़सोस करने के लिए हनून के पास वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार में पहुँच गए ताकि हनून के सामने अफ़सोस का इज़हार करें 3 तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग हनून बादशाह के कान में मन्फ़ी बातें भरने लगे, "क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़ इस लिए भेजा है कि वह अफ़सोस करके आप के बाप का एहतिराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।" 4 चुनाँचे हनून ने दाऊद के आदमियों को पकड़वा कर उन की दाढ़ियाँ मुंडवा दीं और उन के लिबास को कमर से ले कर पाँओ तक काट कर उतरवाया। इसी हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।

5 जब दाऊद को इस की ख़बर मिली तो उस
ने अपने क़ासिदों को उन से मिलने के लिए भेजा
ताकि उन्हें बताएँ, “यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे
रहें जब तक आप की दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो
जाएँ।” क्यूँकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी
शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत
से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इस लिए हनून
और अम्मोनियों ने मसोपुतामिया, अराम-माका और
ज़ोबाह को चाँदी के 34,000 किलोग्राम भेज कर
किराए पर रथ और रथसवार मंगवाए। 7 यूँ उन्हें
32,000 रथ उन के सवारों समेत मिल गए। माका
का बादशाह भी अपने दस्तों के साथ उन से मुत्तहिद
हुआ। मीदबा के क़रीब उन्हों ने अपनी लश्करगाह
लगाई। अम्मोनी भी अपने शहरों से निकल कर जंग
के लिए जमा हुए। 8 जब दाऊद को इस का इल्म
हुआ तो उस ने योआब को पूरी फ़ौज के साथ उन
का मुक़ाबला करने के लिए भेज दिया। 9 अम्मोनी
अपने दार-उल-हकूमत रब्बा से निकल कर शहर
के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा हुए जबकि दूसरे
ममालिक से आए हुए बादशाह कुछ फ़ासिले पर खुले
मैदान में खड़े हो गए।

10 जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे
दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उस ने अपनी
फ़ौज को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया। सब से
अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के सिपाहियों
से लड़ने के लिए तय्यार हुआ। 11 बाक़ी आदमियों
को उस ने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया
ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 12 एक दूसरे से अलग
होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, “अगर शाम
के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने लगें तो मेरे पास आ
कर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों
पर क़ाबू न पा सकें तो मैं आ कर आप की मदद
करूँगा। 13 हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी क़ौम
और अपने ख़ुदा के शहरों के लिए लड़ें। और रब वह
कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।”
14 योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के फ़ौजियों
पर हम्ला किया तो वह उस के सामने से भागने लगे।
15 यह देख कर अम्मोनी भी उस के भाई अबीशै
से फ़रार हो कर शहर में दाख़िल हुए। तब योआब
यरूशलम वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

16 जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्ज़ती
का एहसास हुआ तो उन्हों ने दरया-ए-फ़ुरात के पार
मसोपुतामिया में आबाद अरामियों के पास क़ासिद
भेजे ताकि वह भी लड़ने में मदद करें। हददअज़र का
कमाँडर सोफ़क उन पर मुक़र्रर हुआ। 17 जब दाऊद
को ख़बर मिली तो उस ने इस्राईल के तमाम लड़ने के
क़ाबिल आदमियों को जमा किया और दरया-ए-यर्दन
को पार करके उन के मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ। जब
वह यूँ उन से लड़ने के लिए तय्यार हुआ तो अरामी
उस का मुक़ाबला करने लगे। 18 लेकिन उन्हें दुबारा
शिकस्त मान कर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा उन के
7,000 रथबानों के इलावा 40,000 पियादा सिपाही
हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर सोफ़क को
भी मार डाला।
19 जो अरामी पहले हददअज़र के ताबे थे उन्हों
ने अब हार मान कर इस्राईलियों से सुलह कर ली
और उन के ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों ने
अम्मोनियों की मदद करने की फिर जुरअत न की।

रब्बा शहर पर फ़त्ह

20 1 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब
बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। तब
योआब ने फ़ौज ले कर अम्मोनियों का मुल्क तबाह
कर दिया। लड़ते लड़ते वह रब्बा तक पहुँच गया
और उस का मुहासरा करने लगा। लेकिन दाऊद
ख़ुद यरूशलम में रहा। फिर योआब ने रब्बा को
भी शिकस्त दे कर ख़ाक में मिला दिया। 2 दाऊद

ने हनून बादशाह का ताज उस के सर से उतार कर अपने सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और उस में एक बेशक़ीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत सा लूटा हुआ माल ले कर 3 उस के बाशिन्दों को ग़ुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि वह मज़दूरी करें। यही सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिन्दों के साथ भी किया गया। जंग के इख़तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ यरूशलम लौट आया।

फ़िलिस्तियों से जंग

4 इस के बाद इस्राईलियों को जज़र के क़रीब फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हूसाती ने देओक़ामत मर्द रफ़ा की औलाद में से एक आदमी को मार डाला जिस का नाम सफ़्फ़ी था। यूँ फ़िलिस्तियों को ताबे कर लिया गया। 5 उन से एक और लड़ाई के दौरान इल्हनान बिन याईर ने जाती जालूत के भाई लहमी को मौत के घाट उतार दिया। उस का नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा था। 6 एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फ़िलिस्तियों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की नस्ल का था बहुत लम्बा था। उस के हाथों और पैरों की छः छः उंगलियाँ यानी मिल कर 24 उंगलियाँ थीं। 7 जब वह इस्राईलियों का मज़ाक़ उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे मार डाला। 8 जात के यह देओक़ामत मर्द रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उस के फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

21 1 एक दिन इब्लीस इस्राईल के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ और दाऊद को इस्राईल की मर्दुमशुमारी करने पर उकसाया। 2 दाऊद ने योआब और क़ौम के बुज़ुर्गों को हुक्म दिया, “दान से ले कर बैर-सबा तक इस्राईल के तमाम क़बीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के क़ाबिल मर्दों को गिन लें। फिर वापस आ कर मुझे इत्तिला दें ताकि मालूम हो जाए कि उन की कुल तादाद क्या है।”

3 लेकिन योआब ने एतिराज़ किया, “ऐ बादशाह मेरे आक़ा, काश रब अपने फ़ौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ा दे। क्यूँकि यह तो सब आप के ख़ादिम हैं। लेकिन मेरे आक़ा उन की मर्दुमशुमारी क्यूँ करना चाहते हैं? इस्राईल आप के सबब से क्यूँ क़ुसूरवार ठहरे?”

4 लेकिन बादशाह योआब के एतिराज़ात के बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे योआब दरबार से रवाना हुआ और पूरे इस्राईल में से गुज़र कर उस की मर्दुमशुमारी की। इस के बाद वह यरूशलम वापस आ गया। 5 वहाँ उस ने दाऊद को मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इस्राईल में 11,00,000 तलवार चलाने के क़ाबिल अफ़राद थे जबकि यहूदाह के 4,70,000 मर्द थे। 6 हालाँकि योआब ने लावी और बिनयमीन के क़बीलों को मर्दुमशुमारी में शामिल नहीं किया था, क्यूँकि उसे यह काम करने से घिन आती थी।

7 अल्लाह को दाऊद की यह हरकत बुरी लगी, इस लिए उस ने इस्राईल को सज़ा दी। 8 तब दाऊद ने अल्लाह से दुआ की, “मुझ से संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। अब अपने ख़ादिम का क़ुसूर मुआफ़ कर। मुझ से बड़ी हमाक़त हुई है।” 9 तब रब दाऊद के ग़ैबबीन जाद नबी से हमकलाम हुआ, 10 “दाऊद के पास जा कर उसे बता देना, ‘रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इन में से एक चुन ले’।”

11 जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैग़ाम सुना दिया। उस ने सवाल किया, “आप किस सज़ा को तर्जीह देते हैं? 12 सात साल के दौरान काल? या यह कि आप के दुश्मन तीन माह तक आप को तलवार से मार मार कर आप का ताक़्क़ुब करते रहें? या यह कि रब की तलवार इस्राईल में से गुज़रे? इस सूरत में रब का फ़रिश्ता मुल्क में वबा फैला कर पूरे इस्राईल का सत्यानास कर देगा।”

13 दाऊद ने जवाब दिया, “हाय मैं क्या कहूँ? मैं
बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथों में पड़
जाने की निस्बत बेहतर है कि हम रब ही के हाथों में
पड़ जाएँ, क्यूँकि उस का रहम निहायत अज़ीम है।”
14 तब रब ने इस्राईल में वबा फैलने दी। मुल्क
में 70,000 अफ़राद हलाक हुए। 15 अल्लाह ने अपने
फ़रिश्ते को यरूशलम को तबाह करने के लिए भी
भेजा। लेकिन फ़रिश्ता अभी इस के लिए तय्यार हो
रहा था कि रब ने लोगों की मुसीबत को देख कर
तरस खाया और तबाह करने वाले फ़रिश्ते को हुक्म
दिया, “बस कर! अब बाज़ आ।” उस वक़्त रब का
फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ उर्नान यानी अरौनाह
यबूसी अपना अनाज गाहता था। 16 दाऊद ने अपनी
निगाह उठा कर रब के फ़रिश्ते को आसमान-ओ-
ज़मीन के दरमियान खड़े देखा। अपनी तलवार मियान
से खैंच कर उस ने उसे यरूशलम की तरफ़ बढ़ाया
था कि दाऊद बुज़ुर्गों समेत मुँह के बल गिर गया। सब
टाट का लिबास ओढ़े हुए थे। 17 दाऊद ने अल्लाह से
इल्तिमास की, “मैं ही ने हुक्म दिया कि लड़ने के
क़ाबिल मर्दों को गिना जाए। मैं ही ने गुनाह किया है,
यह मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से क्या ग़लती हुई है?
ऐ रब मेरे ख़ुदा, बराह-ए-करम इन को छोड़ कर मुझे
और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे। अपनी क़ौम से वबा
दूर कर!”
18 फिर रब के फ़रिश्ते ने जाद की मारिफ़त दाऊद
को पैग़ाम भेजा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह
के पास जा कर उस पर रब की क़ुर्बानगाह बना ले।”
19 चुनाँचे दाऊद चढ़ कर गाहने की जगह के पास
आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया
था। 20 उस वक़्त अरौनाह अपने चार बेटों के साथ
गन्दुम गाह रहा था। जब उस ने पीछे देखा तो फ़रिश्ता
नज़र आया। अरौनाह के बेटे भाग कर छुप गए।
21 इतने में दाऊद आ पहुँचा। उसे देखते ही अरौनाह
गाहने की जगह को छोड़ कर उस से मिलने गया और
उस के सामने औंधे मुँह झुक गया। 22 दाऊद ने उस
से कहा, “मुझे अपनी गाहने की जगह दे दें ताकि मैं
यहाँ रब के लिए क़ुर्बानगाह तामीर करूँ। क्यूँकि यह
करने से वबा रुक जाएगी। मुझे इस की पूरी क़ीमत
बताएँ।”
23 अरौनाह ने दाऊद से कहा, “मेरे आक़ा और
बादशाह, इसे ले कर वह कुछ करें जो आप को
अच्छा लगे। देखें, मैं आप को अपने बैलों को भस्म
होने वाली क़ुर्बानियों के लिए दे देता हूँ। अनाज को
गाहने का सामान क़ुर्बानगाह पर रख कर जला दें।
मेरा अनाज ग़ल्ला की नज़र के लिए हाज़िर है। मैं ख़ुशी
से आप को यह सब कुछ दे देता हूँ।” 24 लेकिन
दाऊद बादशाह ने इन्कार किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर
चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। जो आप की है
उसे मैं ले कर रब को पेश नहीं करूँगा, न मैं ऐसी कोई
भस्म होने वाली क़ुर्बानी चढ़ाऊँगा जो मुझे मुफ़्त में
मिल जाए।”
25 चुनाँचे दाऊद ने अरौनाह को उस जगह के लिए
सोने के 600 सिक्के दे दिए। 26 उस ने वहाँ रब की
ताज़ीम में क़ुर्बानगाह तामीर करके उस पर भस्म होने
वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। जब उस
ने रब से इल्तिमास की तो रब ने उस की सुनी और
जवाब में आसमान से भस्म होने वाली क़ुर्बानी पर
आग भेज दी। 27 फिर रब ने मौत के फ़रिश्ते को हुक्म
दिया, और उस ने अपनी तलवार को दुबारा मियान
में डाल दिया।
28 यूँ दाऊद ने जान लिया कि रब ने अरौनाह यबूसी
की गहने की जगह पर मेरी सुनी जब मैं ने यहाँ
क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। 29 उस वक़्त रब का वह मुक़द्दस
ख़ैमा जो मूसा ने रेगिस्तान में बनवाया था जिबऊन की
पहाड़ी पर था। क़ुर्बानियों को जलाने की क़ुर्बानगाह
भी वहीं थी। 30 लेकिन अब दाऊद में वहाँ जा कर
रब के हुज़ूर उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करने की जुरअत
न रही, क्यूँकि रब के फ़रिश्ते की तलवार को देख
कर उस पर इतनी शदीद दहशत तारी हुई कि वह जा
ही नहीं सकता था।

22 1 इस लिए दाऊद ने फ़ैसला किया, “रब
हमारे ख़ुदा का घर गाहने की इस जगह

पर होगा, और यहाँ वह क़ुर्बानगाह भी होगी जिस
पर इस्राईल के लिए भस्म होने वाली क़ुर्बानी जलाई
जाती है।”

दाऊद रब का घर बनाने की तय्यारियाँ करता है

2 चुनाँचे उस ने इस्राईल में रहने वाले परदेसियों को
बुला कर उन्हें अल्लाह के घर के लिए दरकार तराशे
हुए पत्थर तय्यार करने की ज़िम्मादारी दी। 3 इस के
इलावा दाऊद ने दरवाज़ों के किवाड़ों की कीलों
और कड़ों के लिए लोहे के बड़े ढेर लगाए। साथ
साथ इतना पीतल इकट्ठा किया गया कि आख़िरकार
उसे तोला न जा सका। 4 इसी तरह देवदार की बहुत
ज़्यादा लकड़ी यरूशलम लाई गई। सैदा और सूर के
बाशिन्दों ने उसे दाऊद तक पहुँचाया। 5 यह सामान
जमा करने के पीछे दाऊद का यह ख़याल था, “मेरा
बेटा सुलेमान जवान है, और उस का अभी इतना
तजरिबा नहीं है, हालाँकि जो घर रब के लिए बनवाना
है उसे इतना बड़ा और शानदार होने की ज़रूरत है
कि तमाम दुनिया हक्का-बक्का रह कर उस की तारीफ़
करे। इस लिए मैं ख़ुद जहाँ तक हो सके उसे बनवाने
की तय्यारियाँ करूँगा।” यही वजह थी कि दाऊद ने
अपनी मौत से पहले इतना सामान जमा कराया।

दाऊद सुलेमान को रब का घर बनवाने की ज़िम्मादारी देता है

6 फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को बुला कर
उसे रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए सुकूनतगाह बनवाने
की ज़िम्मादारी दे कर 7 कहा, “मेरे बेटे, मैं ख़ुद रब
अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर बनाना चाहता था।
8 लेकिन मुझे इजाज़त नहीं मिली, क्यूँकि रब मुझ से
हमकलाम हुआ, ‘तू ने शदीद क़िस्म की जंगें लड़ कर
बेशुमार लोगों को मार दिया है। नहीं, तू मेरे नाम के
लिए घर तामीर नहीं करेगा, क्यूँकि मेरे देखते देखते तू
बहुत ख़ूँरेज़ी का सबब बना है। 9 लेकिन तेरे एक बेटा
पैदा होगा जो अम्नपसन्द होगा। उसे मैं अम्न-ओ-
अमान मुहय्या करूँगा, उसे चारों तरफ़ के दुश्मनों
से लड़ना नहीं पड़ेगा। उस का नाम सुलेमान होगा,
और उस की हुकूमत के दौरान मैं इस्राईल को अम्न-
ओ-अमान अता करूँगा। 10 वही मेरे नाम के लिए
घर बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उस का
बाप हूँगा। और मैं इस्राईल पर उस की बादशाही का
तख़्त हमेशा तक क़ाइम रखूँगा’।”

11 दाऊद ने बात जारी रख कर कहा, “मेरे बेटे, रब
आप के साथ हो ताकि आप को कामयाबी हासिल
हो और आप रब अपने ख़ुदा का घर उस के वादे के
मुताबिक़ तामीर कर सकें। 12 आप को इस्राईल पर
मुक़र्रर करते वक़्त रब आप को हिक्मत और समझ
अता करे ताकि आप रब अपने ख़ुदा की शरीअत
पर अमल कर सकें। 13 अगर आप एहतियात से उन
हिदायात और अह्काम पर अमल करें जो रब ने
मूसा की मारिफ़त इस्राईल को दे दिए तो आप को
ज़रूर कामयाबी हासिल होगी। मज़बूत और दिलेर
हों। डरें मत और हिम्मत न हारें। 14 देखें, मैं ने बड़ी
जिद्द-ओ-जह्द के साथ रब के घर के लिए सोने के
34,00,000 किलोग्राम और चाँदी के 3,40,00,000
किलोग्राम तय्यार कर रखे हैं। इस के इलावा मैं ने
इतना पीतल और लोहा इकट्ठा किया कि उसे तोला
नहीं जा सकता, नीज़ लकड़ी और पत्थर का ढेर
लगाया, अगरचे आप और भी जमा करेंगे। 15 आप
की मदद करने वाले कारीगर बहुत हैं। उन में पत्थर
को तराशने वाले, राज, बढ़ई और ऐसे कारीगर
शामिल हैं जो महारत से हर क़िस्म की चीज़ बना
सकते हैं, 16 ख़्वाह वह सोने, चाँदी, पीतल या लोहे
की क्यूँ न हो। बेशुमार ऐसे लोग तय्यार खड़े हैं। अब
काम शुरू करें, और रब आप के साथ हो!”

17 फिर दाऊद ने इस्राईल के तमाम राहनुमाओं को
अपने बेटे सुलेमान की मदद करने का हुक्म दिया।
18 उस ने उन से कहा, “रब आप का ख़ुदा आप के
साथ है। उस ने आप को पड़ोसी क़ौमों से महफ़ूज़
रख कर अम्न-ओ-अमान अता किया है। मुल्क के
बाशिन्दों को उस ने मेरे हवाले कर दिया, और अब
यह मुल्क रब और उस की क़ौम के ताबे हो गया है।

19 अब दिल-ओ-जान से रब अपने ख़ुदा के तालिब
रहें। रब अपने ख़ुदा के मक़्दिस की तामीर शुरू करें
ताकि आप जल्दी से अह्द का सन्दूक़ और मुक़द्दस
ख़ैमे के सामान को उस घर में ला सकें जो रब के
नाम की ताज़ीम में तामीर होगा।”

23 1 जब दाऊद उम्ररसीदा था तो उस ने अपने
बेटे सुलेमान को इस्राईल का बादशाह बना
दिया।

ख़िदमत के लिए लावियों के गुरोह

2 दाऊद ने इस्राईल के तमाम राहनुमाओं को इमामों
और लावियों समेत अपने पास बुला लिया। 3 तमाम
उन लावियों को गिना गया जिन की उम्र तीस साल
या इस से ज़ाइद थी। उन की कुल तादाद 38,000
थी। 4 इन्हें दाऊद ने मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियाँ सौंपीं।
24,000 अफ़राद रब के घर की तामीर के निगरान,
6,000 अफ़्सर और क़ाज़ी, 5 4,000 दरबान और
4,000 ऐसे मौसीक़ार बन गए जिन्हें दाऊद के
बनवाए हुए साज़ों को बजा कर रब की हम्द-ओ-सना
करनी थी।

6 दाऊद ने लावियों को लावी के तीन बेटों जैर्सोन,
क़िहात और मिरारी के मुताबिक़ तीन गुरोहों में
तक़्सीम किया।

7 जैर्सोन के दो बेटे लादान और सिमई थे। 8 लादान
के तीन बेटे यहीएल, ज़ैताम और योएल थे। 9 सिमई
के तीन बेटे सलूमीत, हज़ीएल और हारान थे। यह
लादान के घरानों के सरबराह थे। 10–11 सिमई के
चार बेटे बड़े से ले कर छोटे तक यहत, ज़ीज़ा, यऊस
और बरीआ थे। चूँकि यऊस और बरीआ के कम बेटे
थे इस लिए उन की औलाद मिल कर ख़िदमत के
लिहाज़ से एक ही ख़ानदान और गुरोह की हैसियत
रखती थी।

12 क़िहात के चार बेटे अम्राम, इज़हार , हब्रून और
उज़्ज़ीएल थे। 13 अम्राम के दो बेटे हारून और मूसा
थे। हारून और उस की औलाद को अलग किया
गया ताकि वह हमेशा तक मुक़द्दसतरीन चीज़ों को
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखें, रब के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश
करें, उस की ख़िदमत करें और उस के नाम से लोगों
को बरकत दें। 14 मर्द-ए-ख़ुदा मूसा के बेटों को बाक़ी
लावियों में शुमार किया जाता था। 15 मूसा के दो
बेटे जैर्सोम और इलीअज़र थे। 16 जैर्सोम के पहलौठे
का नाम सबूएल था। 17 इलीअज़र का सिर्फ़ एक
बेटा रहबियाह था। लेकिन रहबियाह की बेशुमार
औलाद थी। 18 इज़हार के पहलौठे का नाम सलूमीत
था। 19 हब्रून के चार बेटे बड़े से ले कर छोटे तक
यरियाह, अमरियाह, यहज़ीएल और यक़मिआम थे।
20 उज़्ज़ीएल का पहलौठा मीकाह था। दूसरे का नाम
यिस्सियाह था।

21 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। महली के
दो बेटे इलीअज़र और क़ीस थे। 22 जब इलीअज़र
फ़ौत हुआ तो उस की सिर्फ़ बेटियाँ थीं। इन बेटियों
की शादी क़ीस के बेटों यानी चचाज़ाद भाइयों से
हुई। 23 मूशी के तीन बेटे महली, इदर और यरीमोत
थे।

24 ग़रज़ यह लावी के क़बीले के ख़ानदान और
सरपरस्त थे। हर एक को ख़ानदानी रजिस्टर में दर्ज
किया गया था। इन में से जो रब के घर में ख़िदमत
करते थे हर एक की उम्र कम अज़ कम 20 साल थी।
25–27 क्यूँकि दाऊद ने मरने से पहले पहले हुक्म
दिया था कि जितने लावियों की उम्र कम अज़ कम
20 साल है, वह ख़िदमत के लिए रजिस्टर में दर्ज
किए जाएँ। इस नाते से उस ने कहा था,

“रब इस्राईल के ख़ुदा ने अपनी क़ौम को अम्न-
ओ-अमान अता किया है, और अब वह हमेशा के
लिए यरूशलम में सुकूनत करेगा। अब से लावियों
को मुलाक़ात का ख़ैमा और उस का सामान उठा
कर जगह-ब-जगह ले जाने की ज़रूरत नहीं रही।
28 अब से वह इमामों की मदद करें जब यह रब
के घर में ख़िदमत करते हैं। वह सहनों और छोटे
कमरों को सँभालें और ध्यान दें कि रब के घर के
लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की गई चीज़ें पाक-साफ़
रहें। उन्हें अल्लाह के घर में कई और ज़िम्मादारियाँ

भी सौंपी जाएँ। 29 ज़ैल की चीज़ें सँभालना सिर्फ़
उन ही की ज़िम्मादारी है : मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की
गई रोटियाँ, ग़ल्ला की नज़रों के लिए मुस्तामल मैदा,
बेख़मीरी रोटियाँ पकाने और गूँधने का इन्तिज़ाम।
लाज़िम है कि वही तमाम लवाज़िमात को अच्छी
तरह तोलें और नापें। 30 हर सुब्ह और शाम को उन
के गुलूकार रब की हम्द-ओ-सना करें। 31 जब भी रब
को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश की जाएँ तो लावी
मदद करें, ख़्वाह सबत को, ख़्वाह नए चाँद की ईद
या किसी और ईद के मौक़े पर हो। लाज़िम है कि
वह रोज़ाना मुक़र्ररा तादाद के मुताबिक़ ख़िदमत के
लिए हाज़िर हो जाएँ।”

32 इस तरह लावी पहले मुलाक़ात के ख़ैमे में और
बाद में रब के घर में अपनी ख़िदमत सरअन्जाम देते
रहे। वह रब के घर की ख़िदमत में अपने क़बाइली
भाइयों यानी इमामों की मदद करते थे।

ख़िदमत के लिए इमामों के गुरोह

24 1 हारून की औलाद को भी मुख़्तलिफ़
गुरोहों में तक़्सीम किया गया। हारून के
चार बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर थे।
2 नदब और अबीहू अपने बाप से पहले मर गए, और
उन के बेटे नहीं थे। इलीअज़र और इतमर इमाम बन
गए। 3 दाऊद ने इमामों को ख़िदमत के मुख़्तलिफ़
गुरोहों में तक़्सीम किया। सदोक़ और अख़ीमलिक
ने इस में दाऊद की मदद की (सदोक़ इलीअज़र की
औलाद में से और अख़ीमलिक इतमर की औलाद
में से था)। 4 इलीअज़र की औलाद को 16 गुरोहों
में और इतमर की औलाद को 8 गुरोहों में तक़्सीम
किया गया, क्यूँकि इलीअज़र की औलाद के इतने ही
ज़्यादा ख़ानदानी सरपरस्त थे। 5 तमाम ज़िम्मादारियाँ
क़ुरआ डाल कर इन मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़्सीम की
गईं, क्यूँकि इलीअज़र और इतमर दोनों ख़ानदानों के
बहुत सारे ऐसे अफ़्सर थे जो पहले से मक़्दिस में रब
की ख़िदमत करते थे।

6 यह ज़िम्मादारियाँ तक़्सीम करने के लिए
इलीअज़र और इतमर की औलाद बारी बारी क़ुरआ
डालते रहे। क़ुरआ डालते वक़्त बादशाह, इस्राईल
के बुज़ुर्ग, सदोक़ इमाम, अख़ीमलिक बिन अबियातर
और इमामों और लावियों के ख़ानदानी सरपरस्त
हाज़िर थे। मीरमुन्शी समायाह बिन नतनीएल ने जो
ख़ुद लावी था ख़िदमत के इन गुरोहों की फ़हरिस्त
ज़ैल की तर्तीब से लिख ली जिस तरह वह क़ुरआ
डालने से मुक़र्ररर किए गए,

7 1. यहूयरीब,
2. यदायाह,
8 3. हारिम,
4. सऊरीम,
9 5. मल्कियाह,
6. मियामीन,
10 7. हक़्क़ूज़,
8. अबियाह,
11 9. यशूअ,
10. सकनियाह,
12 11. इलियासिब,
12. यक़ीम,
13 13. ख़ुफ़्फ़ाह,
14. यस्बिआब,
14 15. बिल्जा,
16. इम्मेर,
15 17. ख़ज़ीर,
18. फ़िज़्ज़ीज़,
16 19. फ़तहियाह,
20. यहिज़्क़ेल,
17 21. यकीन,
22. जमूल,
18 23. दिलायाह,
24. माज़ियाह।

19 इमामों को इसी तर्तीब के मुताबिक़ रब के घर
में आ कर अपनी ख़िदमत सरअन्जाम देनी थी, उन

हिदायात के मुताबिक़ जो रब इस्राईल के ख़ुदा ने उन्हें उन के बाप हारून की मारिफ़त दी थीं।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20 ज़ैल के लावियों के मज़ीद ख़ानदानी सरपरस्त हैं :
अम्राम की औलाद में से सूबाएल,
सूबाएल की औलाद में से यहदियाह
21 रहबियाह की औलाद में से यिस्सियाह सरपरस्त था,
22 इज़हार की औलाद में से सलूमीत,
सलूमीत की औलाद में से यहत,
23 हब्रून की औलाद में से बड़े से ले कर छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहज़ीएल और यक़मिआम,
24 उज़्ज़ीएल की औलाद में से मीकाह,
मीकाह की औलाद में से समीर,
25 मीकाह का भाई यिस्सियाह,
यिस्सियाह की औलाद में से ज़करियाह,
26 मिरारी की औलाद में से महली और मूशी,
उस के बेटे याज़ियाह की औलाद,
27 मिरारी के बेटे याज़ियाह की औलाद में से सूहम, ज़क्कूर और इब्री,
28–29 महली की औलाद में से इलीअज़र और क़ीस। इलीअज़र बेऔलाद था जबकि क़ीस के हाँ यरहमिएल पैदा हुआ।
30 मूशी की औलाद में से महली, इदर और यरीमोत भी लावियों के इन मज़ीद ख़ानदानी सरपरस्तों में शामिल थे।

31 इमामों की तरह उन की ज़िम्मादारियाँ भी क़ुरआ-अन्दाज़ी से मुक़र्रर की गईं। इस सिलसिले में सब से छोटे भाई के ख़ानदान के साथ और सब से बड़े भाई के ख़ानदान के साथ सुलूक बराबर था। इस कार-रवाई के लिए भी दाऊद बादशाह, सदोक़, अख़ीमलिक और इमामों और लावियों के ख़ानदानी सरपरस्त हाज़िर थे।

रब के घर में मौसीक़ारों के गुरोह

25 1 दाऊद ने फ़ौज के आला अफ़सरों के साथ आसफ़, हैमान और यदूतून की औलाद को एक ख़ास ख़िदमत के लिए अलग कर दिया। उन्हें नबुव्वत की रूह में सरोद, सितार और झाँझ बजाना था। ज़ैल के आदमियों को मुक़र्रर किया गया :
2 आसफ़ के ख़ानदान से आसफ़ के बेटे ज़क्कूर, यूसुफ़, नतनियाह और असरेलाह। उन का बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ नबुव्वत की रूह में साज़ बजाता था।
3 यदूतून के ख़ानदान से यदूतून के बेटे जिदलियाह, ज़री, यसायाह, सिमई, हसबियाह, और मत्तितियाह। उन का बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह नबुव्वत की रूह में रब की हम्द-ओ-सना करते हुए सितार बजाता था।
4 हैमान के ख़ानदान से हैमान के बेटे बुक्कियाह, मत्तनियाह, उज़्ज़ीएल, सबूएल, यरीमोत, हननियाह, हनानी, इलियाता, जिद्दाल्ती, रूमम्ती-अज़र, यस्बिक़ाशा, मल्लूती, हौतीर और महाज़ियोत। 5 इन सब का बाप हैमान दाऊद बादशाह का ग़ैबबीन था। अल्लाह ने हैमान से वादा किया था कि मैं तेरी ताक़त बढ़ा दूँगा, इस लिए उस ने उसे 14 बेटे और तीन बेटियाँ अता की थीं।
6 यह सब अपने अपने बाप यानी आसफ़, यदूतून और हैमान की राहनुमाई में साज़ बजाते थे। जब कभी रब के घर में गीत गाए जाते थे तो यह मौसीक़ार साथ साथ झाँझ, सितार और सरोद बजाते थे। वह अपनी ख़िदमत बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ सरअन्जाम देते थे। 7 अपने भाइयों समेत जो रब की ताज़ीम में गीत गाते थे उन की कुल तादाद 288 थी। सब के सब माहिर थे। 8 उन की मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियाँ भी करआ के ज़रीए मुक़र्रर की गईं। इस में सब के साथ सुलूक एक जैसा था, ख़्वाह जवान थे या बूढ़े, ख़्वाह उस्ताद थे या शागिर्द।

9 क़ुरआ डाल कर 24 गुरोहों को मुक़र्रर किया
गया। हर गुरोह के बारह बारह आदमी थे। यूँ ज़ैल
के आदमियों के गुरोहों ने तश्कील पाई :
1. आसफ़ के ख़ानदान का यूसुफ़,
2. जिदलियाह,
10 3. ज़क्कूर,
11 4. ज़री,
12 5. नतनियाह,
13 6. बुक़्क़ियाह,
14 7. यसरेलाह,
15 8. यसायाह,
16 9. मत्तनियाह,
17 10. सिमई,
18 11. अज़रेल,
19 12. हसबियाह,
20 13. सूबाएल,
21 14. मत्तितियाह,
22 15. यरीमोत,
23 16. हननियाह,
24 17. यस्बिक़ाशा,
25 18. हनानी,
26 19. मल्लूती,
27 20. इलियाता,
28 21. हौतीर,
29 22. जिद्दाल्ती,
30 23. महाज़ियोत,
31 24. रूमम्ती-अज़र।
हर गुरोह में राहनुमा के बेटे और कुछ रिश्तेदार
शामिल थे।

रब के घर के दरबान

26 1 रब के घर के सहन के दरवाज़ों पर
पहरादारी करने के गुरोह भी मुक़र्रर किए
गए। उन में ज़ैल के आदमी शामिल थे :
क़ोरह के ख़ानदान का फ़र्द मसलमियाह बिन क़ोरे
जो आसफ़ की औलाद में से था। 2 मसलमियाह
के सात बेटे बड़े से ले कर छोटे तक ज़करियाह,
यदीअएल, ज़बदियाह, यत्नीएल, 3 ऐलाम, यूहनान
और इलीहूऐनी थे।
4–5 ओबेद-अदोम भी दरबान था। अल्लाह ने उसे
बरकत दे कर आठ बेटे दिए थे। बड़े से ले कर
छोटे तक उन के नाम समायाह, यहूज़बद, यूआख़,
सकार, नतनीएल, अम्मीएल, इश्कार और फ़ऊल्लती
थे। 6 समायाह बिन ओबेद-अदोम के बेटे ख़ानदानी
सरबराह थे, क्यूँकि वह काफ़ी असर-ओ-रसूख़
रखते थे। 7 उन के नाम उत्नी, रफ़ाएल, ओबेद
और इल्ज़बद थे। समायाह के रिश्तेदार इलीहू और
समकियाह भी गुरोह में शामिल थे, क्यूँकि वह भी
ख़ास हैसियत रखते थे। 8 ओबेद-अदोम से निकले
यह तमाम आदमी लाइक़ थे। वह अपने बेटों और
रिश्तेदारों समेत कुल 62 अफ़राद थे और सब महारत
से अपनी ख़िदमत सरअन्जाम देते थे।
9 मसलमियाह के बेटे और रिश्तेदार कुल 18
आदमी थे। सब लाइक़ थे।
10 मिरारी के ख़ानदान का फ़र्द हूसा के चार बेटे
सिम्री, ख़िलक़ियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे।
हूसा ने सिम्री को ख़िदमत के गुरोह का सरबराह बना
दिया था अगरचे वह पहलौठा नहीं था। 11 दूसरे बेटे
बड़े से ले कर छोटे तक ख़िलक़ियाह, तबलियाह
और ज़करियाह थे। हूसा के कुल 13 बेटे और
रिश्तेदार थे।
12 दरबानों के इन गुरोहों में ख़ानदानी सरपरस्त
और तमाम आदमी शामिल थे। बाक़ी लावियों की
तरह यह भी रब के घर में अपनी ख़िदमत सरअन्जाम
देते थे। 13 क़ुरआ-अन्दाज़ी से मुक़र्रर किया गया
कि कौन सा गुरोह सहन के किस दरवाज़े की
पहरादारी करे। इस सिलसिले में बड़े और छोटे
ख़ानदानों में इम्तियाज़ न किया गया। 14 यूँ जब
क़ुरआ डाला गया तो मसलमियाह के ख़ानदान का
नाम मशरिक़ी दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए
निकला। ज़करियाह बिन मसलमियाह के ख़ानदान
का नाम शिमाली दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए

निकला। ज़करियाह अपने दाना मश्वरों के लिए मश्हूर था। 15 जब क़ुरआ जुनूबी दरवाज़े की पहरादारी के लिए डाला गया तो ओबेद-अदोम का नाम निकला। उस के बेटों को गोदाम की पहरादारी करने की ज़िम्मादारी दी गई। 16 जब मग़रिबी दरवाज़े और सल्कत दरवाज़े के लिए क़ुरआ डाला गया तो सुफ़्फ़ीम और हूसा के नाम निकले। सल्कत दरवाज़ा चढ़ने वाले रास्ते पर है।

पहरादारी की ख़िदमत यूँ बाँटी गई :

17 रोज़ाना मशरिक़ी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, शिमाली और जुनूबी दरवाज़ों पर चार चार अफ़राद और गोदाम पर दो। 18 रब के घर के सहन के मग़रिबी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, चार रास्ते पर और दो सहन में।

19 यह सब दरबानों के गुरोह थे। सब क़ोरह और मिरारी के ख़ानदानों की औलाद थे।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20 दूसरे कुछ लावी अल्लाह के घर के ख़ज़ानों और रब के लिए मख़्सूस की गई चीज़ें सँभालते थे।

21–22 दो भाई ज़ैताम और योएल रब के घर के ख़ज़ानों की पहरादारी करते थे। वह यहीएल के ख़ानदान के सरपरस्त थे और यूँ लादान जैर्सोनी की औलाद थे। 23 अम्राम, इज़हार , हब्रून और उज़्ज़ीएल के ख़ानदानों की यह ज़िम्मादारियाँ थीं :

24 सबूएल बिन जैर्सोम बिन मूसा ख़ज़ानों का निगरान था। 25 जैर्सोम के भाई इलीअज़र का बेटा रहबियाह था। रहबियाह का बेटा यसायाह, यसायाह का बेटा यूराम, यूराम का बेटा ज़िक्री और ज़िक्री का बेटा सलूमीत था। 26 सलूमीत अपने भाइयों के साथ उन मुक़द्दस चीज़ों को सँभालता था जो दाऊद बादशाह, ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्ररर अफ़सरों और दूसरे आला अफ़सरों ने रब के लिए मख़्सूस की थीं। 27 यह चीज़ें जंगों में लूटे हुए माल में से ले कर रब के घर को मज़बूत करने के लिए मख़्सूस की गई थीं। 28 इन में वह सामान भी शामिल था जो समूएल ग़ैबबीन, साऊल बिन क़ीस, अबिनैर बिन नैर और योआब बिन ज़रूयाह ने मक़्दिस के लिए मख़्सूस किया था। सलूमीत और उस के भाई इन तमाम चीज़ों को सँभालते थे।

29 इज़हार के ख़ानदान के अफ़राद यानी कननियाह और उस के बेटों को रब के घर से बाहर की ज़िम्मादारियाँ दी गईं। उन्हें निगरानों और क़ाज़ियों की हैसियत से इस्राईल पर मुक़र्ररर किया गया। 30 हब्रून के ख़ानदान के अफ़राद यानी हसबियाह और उस के भाइयों को दरया-ए-यर्दन के मग़रिब के इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई। वहाँ वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के इलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरअन्जाम देते थे। इन लाइक़ आदमियों की कुल तादाद 1,700 थी।

31 दाऊद बादशाह की हुकूमत के 40वें साल में नसबनामे की तहक़ीक़ की गई ताकि हब्रून के ख़ानदान के बारे में मालूमात हासिल हो जाएँ। पता चला कि उस के कई लाइक़ रुकन जिलिआद के इलाक़े के शहर याज़ेर में आबाद हैं। यरियाह उन का सरपरस्त था। 32 दाऊद बादशाह ने उसे रूबिन, जद और मनस्सी के मशरिक़ी इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मादारी दी। यरियाह की इस ख़िदमत में उस के ख़ानदान के मज़ीद 2,700 अफ़राद भी शामिल थे। सब लाइक़ और अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। उस इलाक़े में वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के इलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरअन्जाम देते थे।

फ़ौज के गुरोह

27 1 दर्ज-ए-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्ररर अफ़सरों और सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त है जो बादशाह के मुलाज़िम थे।

फ़ौज 12 गुरोहों पर मुश्तमिल थी, और हर गुरोह के 24,000 अफ़राद थे। हर गुरोह की ड्यूटी साल में

एक माह के लिए लगती थी। 2 जो अफ़सर इन गुरोहों पर मुक़र्रर थे वह यह थे :

पहला माह : यसूबिआम बिन ज़ब्दीएल। 3 वह फ़ारस के ख़ानदान का था और उस गुरोह पर मुक़र्रर था जिस की डयूटी पहले महीने में होती थी।

4 दूसरा माह : दोदी अख़ूही। उस के गुरोह के आला अफ़सर का नाम मिक़्लोत था।

5 तीसरा माह : यहोयदा इमाम का बेटा बिनायाह। 6 यह दाऊद के बेहतरीन दस्ते बनाम 'तीस' पर मुक़र्रर था और ख़ुद ज़बरदस्त फ़ौजी था। उस के गुरोह का आला अफ़सर उस का बेटा अम्मीज़बद था।

7 चौथा माह : योआब का भाई असाहेल। उस की मौत के बाद असाहेल का बेटा ज़बदियाह उस की जगह मुक़र्रर हुआ।

8 पाँचवाँ माह : सम्हूत इज़्राख़ी।

9 छटा माह : ईरा बिन अक़्क़ीस तक़ूई।

10 सातवाँ माह : ख़लिस फ़लूनी इफ़्राईमी।

11 आठवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का सिब्बकी हूसाती।

12 नवाँ माह : बिनयमीन के क़बीले का अबीअज़र अनतोती।

13 दसवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का महरी नतूफ़ाती।

14 ग्यारहवाँ माह : इफ़्राईम के क़बीले का बिनायाह फ़िरआतोनी।

15 बारहवाँ माह : ग़ुतनीएल के ख़ानदान का ख़ल्दी नतूफ़ाती।

क़बीलों के सरपरस्त

16 ज़ैल के आदमी इस्राईली क़बीलों के सरपरस्त थे :

रूबिन का क़बीला : इलीअज़र बिन ज़िक्री।

शमाऊन का क़बीला : सफ़तियाह बिन माका।

17 लावी का क़बीला : हसबियाह बिन क़मूएल।

हारून के ख़ानदान का सरपरस्त सदोक़ था।

18 यहूदाह का क़बीला : दाऊद का भाई इलीहू।

इश्कार का क़बीला : उम्री बिन मीकाएल।

19 ज़बूलून का क़बीला : इस्मायाह बिन अबदियाह।

नफ़्ताली का क़बीला : यरीमोत बिन अज़्रीएल।

20 इफ़्राईम का क़बीला : होसेअ बिन अज़ज़ियाह।

मग़रिबी मनस्सी का क़बीला : योएल बिन फ़िदायाह।

21 मशरिक़ी मनस्सी का क़बीला जो जिलिआद में था : यिद्दू बिन ज़करियाह।

बिनयमीन का क़बीला : यासीएल बिन अबिनैर।

22 दान का क़बीला : अज़रेल बिन यरोहाम।

यह बारह लोग इस्राईली क़बीलों के सरबराह थे।

23 जितने इस्राईली मर्दों की उम्र 20 साल या इस से कम थी उन्हें दाऊद ने शुमार नहीं किया, क्यूँकि रब ने उस से वादा किया था कि मैं इस्राईलियों को आसमान पर के सितारों जैसा बेशुमार बना दूँगा। 24 नीज़, योआब बिन ज़रूयाह ने मर्दुमशुमारी को शुरू तो किया लेकिन उसे इख़तिताम तक नहीं पहुँचाया था, क्यूँकि अल्लाह का ग़ज़ब मर्दुमशुमारी के बाइस इस्राईल पर नाज़िल हुआ था। नतीजे में दाऊद बादशाह की तारीख़ी किताब में इस्राईलियों की कुल तादाद कभी नहीं दर्ज हुई।

शाही मिलकियत के इंचार्ज

25 अज़्मावत बिन अदीएल यरूशलम के शाही गोदामों का इंचार्ज था।

जो गोदाम देही इलाक़े, बाक़ी शहरों, गाँव और क़िलों में थे उन को यूनतन बिन उज़्ज़ियाह सँभालता था।

26 अज़री बिन कलूब शाही ज़मीनों की काश्तकारी करने वालों पर मुक़र्रर था।

27 सिमई रामाती अंगूर के बाग़ों की निगरानी करता जबकि ज़ब्दी शिफ़्मी इन बाग़ों की मै के गोदामों का इंचार्ज था।

28 बाल-हनान जदीरी ज़ैतून और अन्जीर-तूत के उन
बाग़ों पर मुक़र्रर था जो मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े में थे। यूआस ज़ैतून के तेल के गोदामों की
निगरानी करता था।
29 शारून के मैदान में चरने वाले गाय-बैल सित्री
शारूनी के ज़ेर-ए-निगरानी थे जबकि साफ़त बिन
अद्ली वादियों में चरने वाले गाय-बैलों को सँभालता
था। 30 ओबिल इस्माईली ऊँटों पर मुक़र्रर था,
यहदियाह मरूनोती गधियों पर 31 और याज़ीज़
हाजिरी भेड़-बकरियों पर।
यह सब शाही मिलकियत के निगरान थे।

बादशाह के क़रीबी मुशीर

32 दाऊद का समझदार और आलिम चचा यूनतन
बादशाह का मुशीर था। यहीएल बिन हक्मूनी
बादशाह के बेटों की तर्बियत के लिए ज़िम्मादार था।
33 अख़ीतुफ़ल दाऊद का मुशीर जबकि हूसी अर्की
दाऊद का दोस्त था। 34 अख़ीतुफ़ल के बाद यहोयदा
बिन बिनायाह और अबियातर बादशाह के मुशीर बन
गए। योआब शाही फ़ौज का कमाँडर था।

इस्राईल के बुज़ुर्गों के सामने दाऊद की तक़रीर

28 1 दाऊद ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों को
यरूशलम बुलाया। इन में क़बीलों के
सरपरस्त, फ़ौजी डिवीझ़नों पर मुक़र्रर अफ़्सर, हज़ार
हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़्सर, शाही
मिलकियत और रेवड़ों के इंचार्ज, बादशाह के बेटों
की तर्बियत करने वाले अफ़्सर, दरबारी, मुल्क के
सूरमा और बाक़ी तमाम साहिब-ए-हैसियत शामिल
थे।
2 दाऊद बादशाह उन के सामने खड़े हो कर उन से
मुख़ातिब हुआ,
“मेरे भाइयो और मेरी क़ौम, मेरी बात पर ध्यान दें!
काफ़ी देर से मैं एक ऐसा मकान तामीर करना चाहता
था जिस में रब के अह्द का सन्दूक़ मुस्तक़िल तौर
पर रखा जा सके। आख़िर यह तो हमारे ख़ुदा की
चौकी है। इस मक़्सद से मैं तय्यारियाँ करने लगा।
3 लेकिन फिर अल्लाह मुझ से हमकलाम हुआ, ‘मेरे
नाम के लिए मकान बनाना तेरा काम नहीं है, क्यूँकि
तू ने जंगजू होते हुए बहुत ख़ून बहाया है।’
4 रब इस्राईल के ख़ुदा ने मेरे पूरे ख़ानदान में से
मुझे चुन कर हमेशा के लिए इस्राईल का बादशाह
बना दिया, क्यूँकि उस की मर्ज़ी थी कि यहूदाह का
क़बीला हुकूमत करे। यहूदाह के ख़ानदानों में से उस
ने मेरे बाप के ख़ानदान को चुन लिया, और इसी
ख़ानदान में से उस ने मुझे पसन्द करके पूरे इस्राईल
का बादशाह बना दिया। 5 रब ने मुझे बहुत बेटे अता
किए हैं। उन में से उस ने मुक़र्रर किया कि सुलेमान
मेरे बाद तख़्त पर बैठ कर रब की उम्मत पर हुकूमत
करे। 6 रब ने मुझे बताया, ‘तेरा बेटा सुलेमान ही मेरा
घर और उस के सहन तामीर करेगा। क्यूँकि मैं ने उसे
चुन कर फ़रमाया है कि वह मेरा बेटा होगा और मैं
उस का बाप हूँगा। 7 अगर वह आज की तरह आइन्दा
भी मेरे अह्काम और हिदायात पर अमल करता रहे
तो मैं उस की बादशाही अबद तक क़ाइम रखूँगा।’
8 अब मेरी हिदायत पर ध्यान दें, पूरा इस्राईल यानी
रब की जमाअत और हमारा ख़ुदा इस के गवाह हैं।
रब अपने ख़ुदा के तमाम अह्काम के ताबे रहें! फिर
आइन्दा भी यह अच्छा मुल्क आप की मिलकियत
और हमेशा तक आप की औलाद की मौरूसी ज़मीन
रहेगा। 9 ऐ सुलेमान मेरे बेटे, अपने बाप के ख़ुदा
को तस्लीम करके पूरे दिल-ओ-जान और ख़ुशी से
उस की ख़िदमत करें। क्यूँकि रब तमाम दिलों की
तहक़ीक़ कर लेता है, और वह हमारे ख़यालों के
तमाम मन्सूबों से वाक़िफ़ है। उस के तालिब रहें तो
आप उसे पा लेंगे। लेकिन अगर आप उसे तर्क करें
तो वह आप को हमेशा के लिए रद्द कर देगा। 10 याद
रहे, रब ने आप को इस लिए चुन लिया है कि आप
उस के लिए मुक़द्दस घर तामीर करें। मज़बूत रह कर
इस काम में लगे रहें!”

रब के घर का नक़्शा

11 फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को रब के घर
का नक़्शा दे दिया जिस में तमाम तफ़्सीलात दर्ज थीं
यानी उस के बरामदे, ख़ज़ानों के कमरे, बालाख़ाने,
अन्दरूनी कमरे, वह मुक़द्दसतरीन कमरा जिस में
अह्द के सन्दूक़ को उस के कफ़्फ़ारे के ढकने समेत
रखना था, 12 रब के घर के सहन, उस के इर्दगिर्द
के कमरे और वह कमरे जिन में रब के लिए मख़्सूस
किए गए सामान को महफ़ूज़ रखना था।

दाऊद ने रूह की हिदायत से यह पूरा नक़्शा तय्यार
किया था। 13 उस ने रब के घर की ख़िदमत के
लिए दरकार इमामों और लावियों के गुरोहों को भी
मुक़र्रर किया, और साथ साथ रब के घर में बाक़ी
तमाम ज़िम्मादारियाँ भी। इस के इलावा उस ने रब
के घर की ख़िदमत के लिए दरकार तमाम सामान
की फ़हरिस्त भी तय्यार की थी। 14 उस ने मुक़र्रर
किया कि मुख़्तलिफ़ चीज़ों के लिए कितना सोना
और कितनी चाँदी इस्तेमाल करनी है। इन में ज़ैल की
चीज़ें शामिल थीं : 15 सोने और चाँदी के चराग़दान
और उन के चराग़ (मुख़्तलिफ़ चराग़दानों के वज़न
फ़र्क़ थे, क्यूँकि हर एक का वज़न उस के मक़्सद
पर मुन्हसिर था), 16 सोने की वह मेज़ें जिन पर रब
के लिए मख़्सूस रोटियाँ रखनी थीं, चाँदी की मेज़ें,
17 ख़ालिस सोने के काँटे, छिड़काओ के कटोरे और
सुराही, सोने-चाँदी के प्याले 18 और बख़ूर जलाने की
क़ुर्बानगाह पर मंढा हुआ ख़ालिस सोना। दाऊद ने रब
के रथ का नक़्शा भी सुलेमान के हवाले कर दिया,
यानी उन करूबी फ़रिश्तों का नक़्शा जो अपने परों
को फैला कर रब के अह्द के सन्दूक़ को ढाँप देते
हैं।

19 दाऊद ने कहा, “मैं ने यह तमाम तफ़्सीलात वैसे
ही क़लमबन्द कर दी हैं जैसे रब ने मुझे हिक्मत और
समझ अता की है।”

20 फिर वह अपने बेटे सुलेमान से मुख़ातिब हुआ,
“मज़बूत और दिलेर हों! डरें मत और हिम्मत मत
हारना, क्यूँकि रब ख़ुदा मेरा ख़ुदा आप के साथ है।
न वह आप को छोड़ेगा, न तर्क करेगा बल्कि रब के
घर की तक्मील तक आप की मदद करता रहेगा।
21 ख़िदमत के लिए मुक़र्रर इमामों और लावियों के
गुरोह भी आप का सहारा बन कर रब के घर में अपनी
ख़िदमत सरअन्जाम देंगे। तामीर के लिए जितने भी
माहिर कारीगरों की ज़रूरत है वह ख़िदमत के लिए
तय्यार खड़े हैं। बुज़ुर्गों से ले कर आम लोगों तक
सब आप की हर हिदायत की तामील करने के लिए
मुस्तइद हैं।”

रब के घर की तामीर के लिए नज़राने

29 1 फिर दाऊद दुबारा पूरी जमाअत से
मुख़ातिब हुआ, “अल्लाह ने मेरे बेटे सुलेमान
को चुन कर मुक़र्रर किया है कि वह अगला बादशाह
बने। लेकिन वह अभी जवान और नातजरिबाकार है,
और यह तामीरी काम बहुत वसी है। उसे तो यह महल
इन्सान के लिए नहीं बनाना है बल्कि रब हमारे ख़ुदा
के लिए। 2 मैं पूरी जाँफ़िशानी से अपने ख़ुदा के घर
की तामीर के लिए सामान जमा कर चुका हूँ। इस
में सोना-चाँदी, पीतल, लोहा, लकड़ी, अक़ीक़-ए-
अह्मर, [o]मुख़्तलिफ़ जड़े हुए जवाहिर और पच्चीकारी
के मुख़्तलिफ़ पत्थर बड़ी मिक़्दार में शामिल हैं।
3 और चूँकि मुझ में अपने ख़ुदा का घर बनाने के लिए
बोझ है इस लिए मैं ने इन चीज़ों के इलावा अपने
ज़ाती ख़ज़ानों से भी सोना और चाँदी दी है 4 यानी
तक़रीबन 1,00,000 किलोग्राम ख़ालिस सोना और
2,35,000 किलोग्राम ख़ालिस चाँदी। मैं चाहता हूँ
कि यह कमरों की दीवारों पर चढ़ाई जाए। 5 कुछ
कारीगरों के बाक़ी कामों के लिए भी इस्तेमाल हो
सकता है। अब मैं आप से पूछता हूँ, आज कौन

---

[o]carnelian

मेरी तरह ख़ुशी से रब के काम के लिए कुछ देने को तय्यार है?”

6 यह सुन कर वहाँ हाज़िर ख़ानदानी सरपरस्तों,
क़बीलों के बुज़ुर्गों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों
पर मुक़र्ररर अफ़सरों और बादशाह के आला सरकारी
अफ़सरों ने ख़ुशी से काम के लिए हदिए दिए।
7 उस दिन रब के घर के लिए तक़रीबन 1,70,000
किलोग्राम सोना, सोने के 10,000 सिक्के, 3,40,000
किलोग्राम चाँदी, 6,10,000 किलोग्राम पीतल और
34,00,000 किलोग्राम लोहा जमा हुआ। 8 जिस के
पास जवाहिर थे उस ने उन्हें यहीएल जैर्सोनी के
हवाले कर दिया जो ख़ज़ान्ची था और जिस ने उन्हें
रब के घर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर लिया। 9 पूरी
क़ौम इस फ़राख़दिली को देख कर ख़ुश हुई, क्यूँकि
सब ने दिली ख़ुशी और फ़य्याज़ी से अपने हदिए
रब को पेश किए। दाऊद बादशाह भी निहायत ख़ुश
हुआ।

दाऊद की दुआ

10 इस के बाद दाऊद ने पूरी जमाअत के सामने रब
की तम्जीद करके कहा,

“ऐ रब हमारे बाप इस्राईल के ख़ुदा, अज़ल से
अबद तक तेरी हम्द हो। 11 ऐ रब, अज़मत, क़ुदरत,
जलाल और शान-ओ-शौकत तेरे ही हैं, क्यूँकि जो
कुछ भी आसमान और ज़मीन में है वह तेरा ही है। ऐ
रब, सल्तनत तेरे हाथ में है, और तू तमाम चीज़ों पर
सरफ़राज़ है। 12 दौलत और इज़्ज़त तुझ से मिलती
है, और तू सब पर हुक्मरान है। तेरे हाथ में ताक़त
और क़ुदरत है, और हर इन्सान को तू ही ताक़तवर
और मज़बूत बना सकता है। 13 ऐ हमारे ख़ुदा, यह
देख कर हम तेरी सताइश और तेरे जलाली नाम की
तारीफ़ करते हैं।

14 मेरी और मेरी क़ौम की क्या हैसियत है कि हम
इतनी फ़य्याज़ी से यह चीज़ें दे सके? आख़िर हमारी
तमाम मिलकियत तेरी तरफ़ से है। जो कुछ भी हम
ने तुझे दे दिया वह हमें तेरे हाथ से मिला है। 15 अपने
बापदादा की तरह हम भी तेरे नज़्दीक परदेसी और
ग़ैरशहरी हैं। दुनिया में हमारी ज़िन्दगी साय की तरह
आरिज़ी है, और मौत से बचने की कोई उम्मीद नहीं।
16 ऐ रब हमारे ख़ुदा, हम ने यह सारा तामीरी सामान
इस लिए इकट्ठा किया है कि तेरे मुक़द्दस नाम के लिए
घर बनाया जाए। लेकिन हक़ीक़त में यह सब कुछ
पहले से तेरे हाथ से हासिल हुआ है। यह पहले से
तेरा ही है। 17 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं जानता हूँ कि तू इन्सान
का दिल जाँच लेता है, कि दयानतदारी तुझे पसन्द
है। जो कुछ भी मैं ने दिया है वह मैं ने ख़ुशी से और
अच्छी नीयत से दिया है। अब मुझे यह देख कर ख़ुशी
है कि यहाँ हाज़िर तेरी क़ौम ने भी इतनी फ़य्याज़ी से
तुझे हदिए दिए हैं।

18 ऐ रब हमारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और
इस्राईल के ख़ुदा, गुज़ारिश है कि तू हमेशा तक अपनी
क़ौम के दिलों में ऐसी ही तड़प क़ाइम रख। अता
कर कि उन के दिल तेरे साथ लिपटे रहें। 19 मेरे बेटे
सुलेमान की भी मदद कर ताकि वह पूरे दिल-ओ-
जान से तेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करे
और उस महल को तक्मील तक पहुँचा सके जिस के
लिए मैं ने तय्यारियाँ की हैं।”

20 फिर दाऊद ने पूरी जमाअत से कहा, “आएँ,
रब अपने ख़ुदा की सताइश करें!” चुनाँचे सब रब
अपने बापदादा के ख़ुदा की तम्जीद करके रब और
बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गए।

21 अगले दिन तमाम इस्राईल के लिए भस्म होने
वाली बहुत सी क़ुर्बानियाँ उन की मै की नज़रों समेत
रब को पेश की गईं। इस के लिए 1,000 जवान बैलों,
1,000 मेंढों और 1,000 भेड़ के बच्चों को चढ़ाया
गया। साथ साथ ज़बह की बेशुमार क़ुर्बानियाँ भी
पेश की गईं। 22 उस दिन उन्हों ने रब के हुज़ूर खाते-
पीते हुए बड़ी ख़ुशी मनाई। फिर उन्हों ने दुबारा इस
की तस्दीक़ की कि दाऊद का बेटा सुलेमान हमारा
बादशाह है। तेल से उसे मसह करके उन्हों ने उसे
रब के हुज़ूर बादशाह और सदोक़ को इमाम क़रार
दिया।

सुलेमान की ज़बरदस्त हुकूमत

23 यूँ सुलेमान अपने बाप दाऊद की जगह रब के
तख़्त पर बैठ गया। उसे कामयाबी हासिल हुई, और
तमाम इस्राईल उस के ताबे रहा। 24 तमाम आला
अफ़सर, बड़े बड़े फ़ौजी और दाऊद के बाक़ी बेटों
ने भी अपनी ताबेदारी का इज़हार किया। 25 इस्राईल
के देखते देखते रब ने सुलेमान को बहुत सरफ़राज़
किया। उस ने उस की सल्तनत को ऐसी शान-ओ-
शौकत से नवाज़ा जो माज़ी में इस्राईल के किसी भी
बादशाह को हासिल नहीं हुई थी।

दाऊद की वफ़ात

26–27 दाऊद बिन यस्सी कुल 40 साल तक इस्राईल
का बादशाह रहा, 7 साल हब्रून में और 33 साल
यरूशलम में। 28 वह बहुत उम्ररसीदा और उम्र, दौलत
और इज़्ज़त से आसूदा हो कर इन्तिक़ाल कर गया।
फिर सुलेमान तख़्तनशीन हुआ।

29 बाक़ी जो कुछ दाऊद की हुकूमत के दौरान हुआ
वह तीनों किताबों ‘समूएल ग़ैबबीन की तारीख़,’
‘नातन नबी की तारीख़’ और ‘जाद ग़ैबबीन की
तारीख़’ में दर्ज है। 30 इन में उस की हुकूमत और
असर-ओ-रसूख़ की तफ़्सीलात बयान की गई हैं,
नीज़ वह कुछ जो उस के साथ, इस्राईल के साथ
और गिर्द-ओ-नवाह के ममालिक के साथ हुआ।

२- तवारीख़

सुलेमान रब से हिक्मत माँगता है

1 1 सुलेमान बिन दाऊद की हुकूमत मज़बूत हो
गई। रब उस का ख़ुदा उस के साथ था, और
वह उस की ताक़त बढ़ाता रहा।
2 एक दिन सुलेमान ने तमाम इस्राईल को अपने पास
बुलाया। उन में हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़्सर, क़ाज़ी, तमाम बुज़ुर्ग और कुंबों के
सरपरस्त शामिल थे। 3 फिर सुलेमान उन के साथ
जिबऊन की उस पहाड़ी पर गया जहाँ अल्लाह का
मुलाक़ात का ख़ैमा था, वही जो रब के ख़ादिम मूसा
ने रेगिस्तान में बनवाया था। 4 अह्द का सन्दूक़ उस
में नहीं था, क्यूँकि दाऊद ने उसे क़िर्यत-यारीम से
यरूशलम ला कर एक ख़ैमे में रख दिया था जो उस
ने वहाँ उस के लिए तय्यार कर रखा था। 5 लेकिन
पीतल की जो क़ुर्बानगाह बज़लीएल बिन ऊरी बिन
हूर ने बनाई थी वह अब तक जिबऊन में रब के
ख़ैमे के सामने थी। अब सुलेमान और इस्राईल उस
के सामने जमा हुए ताकि रब की मर्ज़ी दरयाफ़्त
करें। 6 वहाँ रब के हुज़ूर सुलेमान ने पीतल की उस
क़ुर्बानगाह पर भस्म होने वाली 1,000 क़ुर्बानियाँ
चढ़ाईं।
7 उसी रात रब सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और
फ़रमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो
मैं तेरी ख़्वाहिश पूरी करूँगा।” 8 सुलेमान ने जवाब
दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर
चुका है, और अब तू ने उस की जगह मुझे तख़्त पर
बिठा दिया है। 9 तू ने मुझे एक ऐसी क़ौम पर बादशाह
बना दिया है जो ज़मीन की ख़ाक की तरह बेशुमार
है। चुनाँचे ऐ रब ख़ुदा, वह वादा पूरा कर जो तू ने मेरे
बाप दाऊद से किया है। 10 मुझे हिक्मत और समझ
अता फ़रमा ताकि मैं इस क़ौम की राहनुमाई कर
सकूँ। क्यूँकि कौन तेरी इस अज़ीम क़ौम का इन्साफ़
कर सकता है?”
11 अल्लाह ने सुलेमान से कहा, “मैं ख़ुश हूँ कि तू
दिल से यही कुछ चाहता है। तू ने न माल-ओ-दौलत,
न इज़्ज़त, न अपने दुश्मनों की हलाकत और न उम्र
की दराज़ी बल्कि हिक्मत और समझ माँगी है ताकि
मेरी उस क़ौम का इन्साफ़ कर सके जिस पर मैं
ने तुझे बादशाह बना दिया है। 12 इस लिए मैं तेरी
यह दरख़्वास्त पूरी करके तुझे हिक्मत और समझ
अता करूँगा। साथ साथ मैं तुझे उतना माल-ओ-
दौलत और उतनी इज़्ज़त दूँगा जितनी न माज़ी में
किसी बादशाह को हासिल थी, न मुस्तक़बिल में
कभी किसी को हासिल होगी।”
13 इस के बाद सुलेमान जिबऊन की उस पहाड़ी से
उतरा जिस पर मुलाक़ात का ख़ैमा था और यरूशलम
वापस चला गया जहाँ वह इस्राईल पर हुकूमत करता
था।

सुलेमान की दौलत

14 सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे।
कुछ उस ने रथों के लिए मख़्सूस किए गए शहरों में
और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 15 बादशाह
की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम
हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी मग़रिब
के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अन्जीर-तूत की सस्ती
लकड़ी जैसी आम हो गई। 16 बादशाह अपने घोड़े
मिस्र और कूए यानी किलिकिया से दरआमद करता
था। उस के ताजिर इन जगहों पर जा कर उन्हें ख़रीद
लाते थे। 17 बादशाह के रथ मिस्र से दरआमद होते
थे। हर रथ की क़ीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर
घोड़े की क़ीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान के

ताजिर यह घोड़े बरआमद करते हुए तमाम हित्ती और
अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

रब के घर की तामीर की तय्यारियाँ

2 1 फिर सुलेमान ने रब के लिए घर और अपने
लिए शाही महल बनाने का हुक्म दिया। 2 इस
के लिए उस ने 1,50,000 आदमियों की भर्ती की।
80,000 को उस ने पहाड़ी कानों में लगाया ताकि
वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद की
ज़िम्मादारी यह पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब
पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुक़र्रर किए। 3 उस ने
सूर के बादशाह हीराम को इत्तिला दी, “जिस तरह
आप मेरे बाप दाऊद को देवदार की लकड़ी भेजते
रहे जब वह अपने लिए महल बना रहे थे उसी तरह
मुझे भी देवदार की लकड़ी भेजें। 4 मैं एक घर तामीर
करके उसे रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए मख़्सूस
करना चाहता हूँ। क्यूँकि हमें ऐसी जगह की ज़रूरत
है जिस में उस के हुज़ूर ख़ुशबूदार बख़ूर जलाया
जाए, रब के लिए मख़्सूस रोटियाँ बाक़ाइदगी से
मेज़ पर रखी जाएँ और ख़ास मौक़ों पर भस्म होने
वाली क़ुर्बानियाँ पेश की जाएँ यानी हर सुब्ह-ओ-
शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईदों और रब हमारे
ख़ुदा की दीगर मुक़र्ररा ईदों पर। यह इस्राईल का
दाइमी फ़र्ज़ है।

5 जिस घर को मैं बनाने को हूँ वह निहायत अज़ीम
होगा, क्यूँकि हमारा ख़ुदा दीगर तमाम माबूदों से
कहीं अज़ीम है। 6 लेकिन कौन उस के लिए ऐसा घर
बना सकता है जो उस के लाइक़ हो? बुलन्दतरीन
आसमान भी उस की रिहाइश के लिए छोटा है। तो
फिर मेरी क्या हैसियत है कि उस के लिए घर बनाऊँ?
मैं सिर्फ़ ऐसी जगह बना सकता हूँ जिस में उस के
लिए क़ुर्बानियाँ चढ़ाई जा सकें।

7 चुनाँचे मेरे पास किसी ऐसे समझदार कारीगर
को भेज दें जो महारत से सोने-चाँदी, पीतल और
लोहे का काम जानता हो। वह नीले, अर्ग़वानी और
क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा बनाने और कन्दाकारी का
उस्ताद भी हो। ऐसा शख़्स यरूशलम और यहूदाह
में मेरे उन कारीगरों का इंचार्ज बने जिन्हें मेरे बाप
दाऊद ने काम पर लगाया है। 8 इस के इलावा
मुझे लुबनान से देवदार, जूनीपर और दीगर क़ीमती
दरख़्तों की लकड़ी भेज दें। क्यूँकि मैं जानता हूँ
कि आप के लोग उम्दा क़िस्म के लकड़हारे हैं। मेरे
आदमी आप के लोगों के साथ मिल कर काम करेंगे।
9 हमें बहुत सी लकड़ी की ज़रूरत होगी, क्यूँकि
जो घर मैं बनाना चाहता हूँ वह बड़ा और शानदार
होगा। 10 आप के लक्कड़हारों के काम के मुआवज़े
में मैं 32,75,000 किलोग्राम गन्दुम, 27,00,000
किलोग्राम जौ, 4,40,000 लिटर मै और 4,40,000
लिटर ज़ैतून का तेल दूँगा।”

11 सूर के बादशाह हीराम ने ख़त लिख कर सुलेमान
को जवाब दिया, “रब अपनी क़ौम को प्यार करता
है, इस लिए उस ने आप को उस का बादशाह
बनाया है। 12 रब इस्राईल के ख़ुदा की हम्द हो जिस
ने आसमान-ओ-ज़मीन को ख़ल्क़ किया है कि उस
ने दाऊद बादशाह को इतना दानिशमन्द बेटा अता
किया है। उस की तम्जीद हो कि यह अक़लमन्द
और समझदार बेटा रब के लिए घर और अपने लिए
महल तामीर करेगा। 13 मैं आप के पास एक माहिर
और समझदार कारीगर को भेज देता हूँ जिस का
नाम हीराम-अबी है। 14 उस की इस्राईली माँ, दान के
क़बीले की है जबकि उस का बाप सूर का है। हीराम
सोने-चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर और लकड़ी की
चीज़ें बनाने में महारत रखता है। वह नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा और कतान का बारीक
कपड़ा बना सकता है। वह हर क़िस्म की कन्दाकारी
में भी माहिर है। जो भी मन्सूबा उसे पेश किया जाए
उसे वह पाया-ए-तक्मील तक पहुँचा सकता है। यह
आदमी आप के और आप के मुअज़्ज़ज़ बाप दाऊद
के कारीगरों के साथ मिल कर काम करेगा। 15 चुनाँचे
जिस गन्दुम, जौ, ज़ैतून के तेल और मै का ज़िक्र
मेरे आक़ा ने किया वह अपने ख़ादिमों को भेज दें।
16 मुआवज़े में हम आप के लिए दरकार दरख़्तों को

लुबनान में कटवाएँगे और उन के बेड़े बांध कर समुन्दर के ज़रीए याफ़ा शहर तक पहुँचा देंगे। वहाँ से आप उन्हें यरूशलम ले जा सकेंगे।”

17 सुलेमान ने इस्राईल में आबाद तमाम ग़ैरमुल्कियों की मर्दुमशुमारी करवाई। (उस के बाप दाऊद ने भी उन की मर्दुमशुमारी करवाई थी।) मालूम हुआ कि इस्राईल में 1,53,600 ग़ैरमुल्की रहते हैं। 18 इन में से उस ने 80,000 को पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद की ज़िम्मादारी यह पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुक़र्रर किए।

रब के घर की तामीर

3 1 सुलेमान ने रब के घर को यरूशलम की पहाड़ी मोरियाह पर तामीर किया। उस का बाप दाऊद यह मक़ाम मुक़र्रर कर चुका था। यहीं जहाँ पहले उर्नान यानी अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था रब दाऊद पर ज़ाहिर हुआ था। 2 तामीर का यह काम सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे माह और उस के दूसरे दिन शुरू हुआ।

3 मकान की लम्बाई 90 फ़ुट और चौड़ाई 30 फ़ुट थी। 4 सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फ़ुट और 30 फ़ुट ऊँचा था। उस की अन्दरूनी दीवारों पर उस ने ख़ालिस सोना चढ़ाया। 5 बड़े हाल की दीवारों पर उस ने ऊपर से ले कर नीचे तक जूनीपर की लकड़ी के तख़्ते लगाए, फिर तख़्तों पर ख़ालिस सोना मंढवा कर उन्हें खजूर के दरख़्तों और ज़न्जीरों की तस्वीरों से आरास्ता किया। 6 सुलेमान ने रब के घर को जवाहिर से भी सजाया। जो सोना इस्तेमाल हुआ वह पर्वाइम से मंगवाया गया था। 7 सोना मकान, तमाम शहतीरों, दहलीज़ों, दीवारों और दरवाज़ों पर मंढा गया। दीवारों पर करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें भी कन्दा की गईं।

मुक़द्दसतरीन कमरा

8 इमारत का सब से अन्दरूनी कमरा बनाम मुक़द्दसतरीन कमरा इमारत जैसा चौड़ा यानी 30 फ़ुट था। उस की लम्बाई भी 30 फ़ुट थी। इस कमरे की तमाम दीवारों पर 20,000 किलोग्राम से ज़ाइद सोना मंढा गया। 9 सोने की कीलों का वज़न तक़रीबन 600 ग्राम था। बालाख़ानों की दीवारों पर भी सोना मंढा गया।

10 फिर सुलेमान ने करूबी फ़रिश्तों के दो मुजस्समे बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा गया। उन पर भी सोना चढ़ाया गया। 11–13 जब दोनों फ़रिश्तों को एक दूसरे के साथ मुक़द्दसतरीन कमरे में खड़ा किया गया तो उन के चार परों की मिल कर लम्बाई 30 फ़ुट थी। हर एक के दो पर थे, और हर पर की लम्बाई साढ़े सात सात फ़ुट थी। उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यूँ एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिश्ते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। वह अपने पाँओ पर खड़े बड़े हाल की तरफ़ देखते थे। 14 मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर सुलेमान ने बारीक कतान से बुना हुआ पर्दा लगवाया। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से सजा हुआ था, और उस पर करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें थीं।

रब के घर के दरवाज़े पर दो सतून

15 सुलेमान ने दो सतून ढलवा कर रब के घर के दरवाज़े के सामने खड़े किए। हर एक 27 फ़ुट लम्बा था, और हर एक पर एक बालाई हिस्सा रखा गया जिस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट थी। 16 इन बालाई हिस्सों को ज़न्जीरों से सजाया गया जिन से सौ अनार लटके हुए थे। 17 दोनों सतूनों को सुलेमान ने रब के घर के दरवाज़े के दाईं और बाईं तरफ़ खड़ा किया। दहने हाथ के सतून का नाम उस ने ‘यकीन’ और बाएँ हाथ के सतून का नाम ‘बोअज़’ रखा।

क़ुर्बानगाह और समुन्दर नामी हौज़

4 1 सुलेमान ने पीतल की एक क़ुर्बानगाह भी
बनवाई जिस की लम्बाई 30 फ़ुट, चौड़ाई 30
फ़ुट और ऊँचाई 15 फ़ुट थी।
2 इस के बाद उस ने पीतल का बड़ा गोल हौज़
ढलवाया जिस का नाम 'समुन्दर' रखा गया। उस की
ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उस का मुँह 15 फ़ुट चौड़ा और
उस का घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था। 3 हौज़ के किनारे
के नीचे बैलों की दो क़तारें थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6
बैल थे। बैल और हौज़ मिल कर ढाले गए थे। 4 हौज़
को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों
का रुख़ शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब
की तरफ़, तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन
का रुख़ मशरिक़ की तरफ़ था। उन के पिछले हिस्से
हौज़ की तरफ़ थे, और हौज़ उन के कंधों पर पड़ा था।
5 हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की
तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार
तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के
तक़रीबन 66,000 लिटर समा जाते थे।
6 सुलेमान ने 10 बासन ढलवाए। पाँच को रब के
घर के दाएँ हाथ और पाँच को उस के बाएँ हाथ
खड़ा किया गया। इन बासनों में गोश्त के वह टुकड़े
धोए जाते जिन्हें भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
जलाना था। लेकिन 'समुन्दर' नामी हौज़ इमामों के
इस्तेमाल के लिए था। उस में वह नहाते थे।

सोने के शमादान और मेज़ें

7 सुलेमान ने सोने के 10 शमादान मुक़र्ररा
तफ़्सीलात के मुताबिक़ बनवा कर रब के घर में रख
दिए, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़।
8 दस मेज़ें भी बना कर रब के घर में रखी गईं, पाँच
को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़। इन चीज़ों
के इलावा सुलेमान ने छिड़काओ के सोने के 100
कटोरे बनवाए।

सहन

9 फिर सुलेमान ने वह अन्दरूनी सहन बनवाया
जिस में सिर्फ़ इमामों को दाख़िल होने की इजाज़त
थी। उस ने बड़ा सहन भी उस के दरवाज़ों समेत
बनवाया। दरवाज़ों के किवाड़ों पर पीतल चढ़ाया
गया। 10 'समुन्दर' नामी हौज़ को सहन के जुनूब-
मशरिक़ में रखा गया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने तय्यार किया

11 हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काओ के
कटोरे भी बनाए। यूँ उस ने अल्लाह के घर में वह सारा
काम मुकम्मल किया जिस के लिए सुलेमान बादशाह
ने उसे बुलाया था। उस ने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :
12 दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़न्जीरों का डिज़ाइन,
13 ज़न्जीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा
200 अदद),
14 हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के बासन,
15 हौज़ बनाम समुन्दर,
इसे उठाने वाले बैल के 12 मुजस्समे,
16 बालटियाँ, बेलचे, गोश्त के काँटे।
तमाम सामान जो हीराम-अबी ने सुलेमान के हुक्म
पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढाल कर
पालिश किया गया था। 17 बादशाह ने उसे वादी-ए-
यर्दन में सुक्कात और ज़र्तान के दरमियान ढलवाया।
वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे से साँचे बना
कर हर चीज़ ढाल दी। 18 इस सामान के लिए सुलेमान
बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि
उस का कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अन्दर सोने का सामान

19 अल्लाह के घर के अन्दर के लिए सुलेमान ने दर्ज-
ए-ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की क़ुर्बानगाह,
सोने की वह मेज़ें जिन पर रब के लिए मख़्सूस
रोटियाँ पड़ी रहती थीं,
20 ख़ालिस सोने के वह शमादान और चराग़ जिन
को क़वाइद के मुताबिक़ मुक़द्दसतरीन कमरे के
सामने जलना था,
21 ख़ालिस सोने के वह फूल जिन से शमादान
आरास्ता थे,
ख़ालिस सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के
औज़ार,
22 चराग़ को कतरने के ख़ालिस सोने के औज़ार,
छिड़काओ के ख़ालिस सोने के कटोरे और प्याले,
जलते हुए कोएले के लिए ख़ालिस सोने के बर्तन,
मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़े।

5 1 रब के घर की तक्मील पर सुलेमान ने वह
सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब
के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उस के बाप दाऊद
ने अल्लाह के लिए मख़्सूस की थीं।

अह्द का सन्दूक़ रब के घर में लाया जाता है

2 फिर सुलेमान ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों और
क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को अपने
पास यरूशलम में बुलाया, क्यूँकि रब के अह्द का
सन्दूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो
'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है। सुलेमान
चाहता था कि क़ौम के नुमाइन्दे हाज़िर हों जब
सन्दूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए।
3 चुनाँचे इस्राईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने
pमें बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी
महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।
4 जब सब जमा हुए तो लावी रब के सन्दूक़ को
उठा कर 5 रब के घर में लाए। इमामों के साथ मिल
कर उन्हों ने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी उस के तमाम
मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया। 6 वहाँ
सन्दूक़ के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी तमाम
जमाशुदा इस्राईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और
गाय-बैल क़ुर्बान किए कि उन की तादाद गिनी नहीं
जा सकती थी।
7 इमामों ने रब के अह्द का सन्दूक़ पिछले यानी
मुक़द्दसतरीन कमरे में ला कर करूबी फ़रिश्तों के
परों के नीचे रख दिया। 8 फ़रिश्तों के पर पूरे सन्दूक़
पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 9 तो
भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लम्बी थीं कि उन
के सिरे सामने वाले यानी मुक़द्दस कमरे से नज़र आते
थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज
तक वह वहीं मौजूद हैं। 10 सन्दूक़ में सिर्फ़ पत्थर
की वह दो तख़्तियाँ थीं जिन को मूसा ने होरिब यानी
कोह-ए-सीना के दामन में उस में रख दिया था, उस
वक़्त जब रब ने मिस्र से निकले हुए इस्राईलियों के
साथ अह्द बांधा था। 11 फिर इमाम मुक़द्दस कमरे
से निकल कर सहन में आए।

जितने इमाम आए थे उन सब ने अपने आप को
पाक-साफ़ किया हुआ था, ख़्वाह उस वक़्त उन
के गुरोह की रब के घर में डयूटी थी या नहीं।
12 लावियों के तमाम गुलूकार भी हाज़िर थे। उन के
राहनुमा आसफ़, हैमान और यदूतून अपने बेटों और
रिश्तेदारों समेत सब बारीक कतान के लिबास पहने
हुए क़ुर्बानगाह के मशरिक़ में खड़े थे। वह झाँझ,
सितार और सरोद बजा रहे थे, जबकि उन के साथ
120 इमाम तुरम फूँक रहे थे। 13 गाने वाले और तुरम
बजाने वाले मिल कर रब की सताइश कर रहे थे।
तुरमों, झाँझों और बाक़ी साज़ों के साथ उन्हों ने
बुलन्द आवाज़ से रब की तम्जीद में गीत गाया, "वह
भला है, और उस की शफ़्क़त अबदी है।"

तब रब का घर एक बादल से भर गया। 14 इमाम रब
के घर में अपनी ख़िदमत अन्जाम न दे सके, क्यूँकि
अल्लाह का घर उस के जलाल के बादल से मामूर हो
गया था।

---

pसितम्बर ता अक्तूबर

6 1 यह देख कर सुलेमान ने दुआ की, “रब ने
फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अंधेरे में रहूँगा।
2 मैं ने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक
मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लाइक़ है।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

3 फिर बादशाह ने मुड़ कर रब के घर के सामने
खड़ी इस्राईल की पूरी जमाअत की तरफ़ रुख़ किया।
उस ने उन्हें बरकत दे कर कहा,
4 “रब इस्राईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिस ने वह
वादा पूरा किया है जो उस ने मेरे बाप दाऊद से
किया था। क्यूँकि उस ने फ़रमाया, 5 ‘जिस दिन मैं
अपनी क़ौम को मिस्र से निकाल लाया उस दिन से
ले कर आज तक मैं ने न कभी फ़रमाया कि इस्राईली
क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में
घर बनाया जाए, न किसी को मेरी क़ौम इस्राईल पर
हुकूमत करने के लिए मुक़र्रर किया। 6 लेकिन अब
मैं ने यरूशलम को अपने नाम की सुकूनतगाह और
दाऊद को अपनी क़ौम इस्राईल का बादशाह बनाया
है।’
7 मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़्वाहिश थी कि रब
इस्राईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए।
8 लेकिन रब ने एतिराज़ किया, ‘मैं ख़ुश हूँ कि तू
मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है,
9 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।’
10 और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है।
मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद
की जगह इस्राईल का बादशाह बन कर तख़्त पर
बैठ गया हूँ। और अब मैं ने रब इस्राईल के ख़ुदा
के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 11 उस में
मैं ने वह सन्दूक़ रख दिया है जिस में शरीअत की
तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अह्द की तख़्तियाँ जो रब ने
इस्राईलियों से बांधा था।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर सुलेमान की दुआ

12 फिर सुलेमान ने इस्राईल की पूरी जमाअत के
देखते देखते रब की क़ुर्बानगाह के सामने खड़े हो
कर अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए। 13 उस
ने इस मौक़े के लिए पीतल का एक चबूतरा बनवा
कर उसे बैरूनी सहन के बीच में रखवा दिया था।
चबूतरा साढ़े 7 फ़ुट लम्ब, साढ़े 7 फ़ुट चौड़ा और
साढ़े 4 फ़ुट ऊँचा था। अब सुलेमान उस पर चढ़ कर
पूरी जमाअत के देखते देखते झुक गया। अपने हाथों
को आसमान की तरफ़ उठा कर 14 उस ने दुआ की,
“ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा नहीं
है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अह्द
क़ाइम रखता है जिसे तू ने अपनी क़ौम के साथ बांधा
है और अपनी मेहरबानी उन सब पर ज़ाहिर करता है
जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 15 तू ने अपने
ख़ादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है।
जो बात तू ने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तू ने
अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 16 ऐ रब इस्राईल
के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तू
ने अपने ख़ादिम दाऊद से की थी। क्यूँकि तू ने मेरे
बाप से वादा किया था, ‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह
अपने चाल-चलन पर ध्यान दे कर मेरी शरीअत के
मुताबिक़ मेरे हुज़ूर चलती रहे तो इस्राईल पर उस की
हुकूमत हमेशा तक क़ाइम रहेगी।’ 17 ऐ रब इस्राईल
के ख़ुदा, अब बराह-ए-करम अपना यह वादा पूरा
कर जो तू ने अपने ख़ादिम दाऊद से किया है।
18 लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर इन्सान के
दरमियान सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलन्दतरीन
आसमान में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मकान
जो मैं ने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन
सकता है? 19 ऐ रब मेरे ख़ुदा, तो भी अपने ख़ादिम
की दुआ और इल्तिजा सुन जब मैं तेरे हुज़ूर पुकारते
हुए इल्तिमास करता हूँ 20 कि बराह-ए-करम दिन रात
इस इमारत की निगरानी कर! क्यूँकि यह वह जगह
है जिस के बारे में तू ने ख़ुद फ़रमाया, ‘यहाँ मेरा नाम

सुकूनत करेगा।' चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश
सुन जो मैं इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता
हूँ। 21 जब हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ
करें तो अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजाएँ
सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और
जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!
22 अगर किसी पर इल्ज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुर्बानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठा कर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
23 तो बराह-ए-करम आसमान पर से सुन कर अपने
ख़ादिमों का इन्साफ़ कर। क़ुसूरवार को सज़ा दे कर
उस के अपने सर पर वह कुछ आने दे जो उस से
सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइल्ज़ाम क़रार दे
और उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।
24 हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इस्राईल तेरा
गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त
खाए। अगर इस्राईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ
और तेरे नाम की तम्जीद करके यहाँ इस घर में तेरे
हुज़ूर दुआ और इल्तिमास करें 25 तो आसमान पर से
उन की फ़र्याद सुन लेना। अपनी क़ौम इस्राईल का
गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस
लाना जो तू ने उन्हें और उन के बापदादा को दे दिया
था।
26 हो सकता है इस्राईली तेरा इतना संगीन गुनाह
करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे।
अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़ रुख़ करके
तेरे नाम की तम्जीद करें और तेरी सज़ा के बाइस
अपना गुनाह छोड़ कर लौट आएँ 27 तो आसमान
पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। अपने ख़ादिमों और
अपनी क़ौम इस्राईल को मुआफ़ कर, क्यूँकि तू ही
उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क
पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तू ने अपनी क़ौम को
मीरास में दे दिया है।
28 हो सकता है इस्राईल में काल पड़ जाए, अनाज
की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों या कीड़ों
से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का
मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 29 अगर
कोई इस्राईली या तेरी पूरी क़ौम उस का सबब जान
कर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढ़ाए और
तुझ से इल्तिमास करे 30 तो आसमान पर अपने तख़्त
से उन की फ़र्याद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके हर
एक को उस की तमाम हरकतों का बदला दे, क्यूँकि
सिर्फ़ तू ही हर इन्सान के दिल को जानता है। 31 फिर
जितनी देर वह उस मुल्क में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे जो तू ने
हमारे बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़
मान कर तेरी राहों पर चलते रहेंगे।
32 आइन्दा परदेसी भी तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी
क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के सबब से आएँगे
और इस घर की तरफ़ रुख़ करके दुआ करेंगे।
अगरचे वह तेरी क़ौम इस्राईल के नहीं होंगे 33 तो
भी आसमान पर से उन की फ़र्याद सुन लेना। जो
भी दरख़्वास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि
दुनिया की तमाम अक़्वाम तेरा नाम जान कर तेरी
क़ौम इस्राईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान
लें कि जो इमारत मैं ने तामीर की है उस पर तेरे ही
नाम का ठप्पा लगा है।
34 हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत के
मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें।
अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की
तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के लिए
तामीर की है 35 तो आसमान पर से उन की दुआ और
इल्तिमास सुन कर उन के हक़ में इन्साफ़ क़ाइम
रखना।
36 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें
तो हम सब से सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में
तू नाराज़ हो कर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो
उन्हें क़ैद करके किसी दूरदराज़ या क़रीबी मुल्क
में ले जाए। 37 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके
दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझ से इल्तिमास करें,
'हम ने गुनाह किया है, हम से ग़लती हुई है, हम ने
बेदीन हरकतें की हैं।'

38 अगर वह ऐसा करके अपनी क़ैद के मुल्क में
अपने पूरे दिल-ओ-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें
और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे
चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ रुख़ करके
दुआ करें जो मैं ने तेरे नाम के लिए तामीर की है
39 तो आसमान पर अपने तख़्त से उन की दुआ और
इल्तिमास सुन लेना। उन के हक़ में इन्साफ़ क़ाइम
करना, और अपनी क़ौम के गुनाहों को मुआफ़ कर
देना। 40 ऐ मेरे ख़ुदा, तेरी आँखें और तेरे कान उन
दुआओं के लिए खुले रहें जो इस जगह पर की जाती
हैं।
41 ऐ रब ख़ुदा, उठ कर अपनी आरामगाह के पास
आ, तू और अह्द का सन्दूक़ जो तेरी क़ुदरत का
इज़हार है। ऐ रब ख़ुदा, तेरे इमाम नजात से मुलब्बस
हो जाएँ, और तेरे ईमानदार तेरी भलाई की ख़ुशी
मनाएँ। 42 ऐ रब ख़ुदा, अपने मसह किए हुए ख़ादिम
को रद्द न कर बल्कि उस शफ़क़त को याद कर जो तू
ने अपने ख़ादिम दाऊद पर की है।”

रब के घर की मख़्सूसियत पर जश्न

7 1 सुलेमान की इस दुआ के इख़तिताम पर आग
ने आसमान पर से नाज़िल हो कर भस्म होने
वाली और ज़बह की क़ुर्बानियों को भस्म कर दिया।
साथ साथ रब का घर उस के जलाल से यूँ मामूर
हुआ 2 कि इमाम उस में दाख़िल न हो सके। 3 जब
इस्राईलियों ने देखा कि आसमान पर से आग नाज़िल
हुई है और घर रब के जलाल से मामूर हो गया है तो
वह मुँह के बल झुक कर रब की हम्द-ओ-सना करके
गीत गाने लगे, “वह भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।”
4–5 फिर बादशाह और तमाम क़ौम ने रब के
हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करके अल्लाह के घर को
मख़्सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने
22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को
क़ुर्बान किया। 6 इमाम और लावी अपनी अपनी
ज़िम्मादारियों के मुताबिक़ खड़े थे। लावी उन साज़ों
को बजा रहे थे जो दाऊद ने रब की सताइश करने
के लिए बनवाए थे। साथ साथ वह हम्द का वह
गीत गा रहे थे जो उन्हों ने दाऊद से सीखा था, “उस
की शफ़क़त अबदी है।” लावियों के मुक़ाबिल इमाम
तुरम बजा रहे थे जबकि बाक़ी तमाम लोग खड़े थे।
7 सुलेमान ने सहन का दरमियानी हिस्सा क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने के लिए मख़्सूस किया। वजह यह थी कि
पीतल की क़ुर्बानगाह इतनी क़ुर्बानियाँ पेश करने के
लिए छोटी थी, क्यूँकि भस्म होने वाली क़ुर्बानियों
और ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इस
के इलावा सलामती की बेशुमार क़ुर्बानियों की चर्बी
को भी जलाना था।
8–9 ईद 14 दिनों तक मनाई गई। पहले हफ़्ते
में सुलेमान और तमाम इस्राईल ने क़ुर्बानगाह की
मख़्सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों की
ईद। इस ईद में बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह
दूरदराज़ इलाक़ों से यरूशलम आए थे, शिमाल में
लबो-हमात से ले कर जुनूब में उस वादी तक जो
मिस्र की सरहद थी। आख़िरी दिन पूरी जमाअत
ने इख़तितामी जश्न मनाया। 10 यह सातवें माह के
23वें दिन वुक़ूपज़ीर हुआ। इस के बाद सुलेमान ने
इस्राईलियों को रुख़्सत किया। सब शादमान और
दिल से ख़ुश थे कि रब ने दाऊद, सुलेमान और अपनी
क़ौम इस्राईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

11 चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को
तक्मील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उस ने ठान लिया
था वह पूरा हुआ। 12 एक रात रब उस पर ज़ाहिर हुआ
और कहा,
“मैं ने तेरी दुआ को सुन कर तै कर लिया है कि यह
घर वही जगह हो जहाँ तुम मुझे क़ुर्बानियाँ पेश कर
सको। 13 जब कभी मैं बारिश का सिलसिला रोकूँ, या
फ़सलें ख़राब करने के लिए टिड्डियाँ भेजूँ या अपनी
क़ौम में वबा फैलने दूँ 14 तो अगर मेरी क़ौम जो मेरे
नाम से कहलाती है अपने आप को पस्त करे और

दुआ करके मेरे चिहरे की तालिब हो और अपनी
शरीर राहों से बाज़ आए तो फिर मैं आसमान पर से
उस की सुन कर उस के गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा
और मुल्क को बहाल करूँगा। 15 अब से जब भी यहाँ
दुआ माँगी जाए तो मेरी आँखें खुली रहेंगी और मेरे
कान उस पर ध्यान देंगे। 16 क्यूँकि मैं ने इस घर को
चुन कर मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर रखा है ताकि मेरा
नाम हमेशा तक यहाँ क़ाइम रहे। मेरी आँखें और दिल
हमेशा इस में हाज़िर रहेंगे। 17 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़
है, अपने बाप दाऊद की तरह मेरे हुज़ूर चलता रह।
क्यूँकि अगर तू मेरे तमाम अह्काम और हिदायात
की पैरवी करता रहे 18 तो मैं तेरी इस्राईल पर हुकूमत
क़ाइम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा क़ाइम रहेगा जो
मैं ने तेरे बाप दाऊद से अह्द बांध कर किया था
कि इस्राईल पर तेरी औलाद की हुकूमत हमेशा तक
क़ाइम रहेगी।

19 लेकिन ख़बरदार! अगर तू मुझ से दूर हो कर
मेरे दिए गए अह्काम और हिदायात को तर्क करे
बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उन की
ख़िदमत और परस्तिश करे 20 तो मैं इस्राईल को जड़
से उखाड़ कर उस मुल्क से निकाल दूँगा जो मैं ने
उन को दे दिया है। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को
भी रद्द कर दूँगा जो मैं ने अपने नाम के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त मैं इस्राईल को
तमाम अक़्वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना
बना दूँगा। 21 इस शानदार घर की बुरी हालत देख
कर यहाँ से गुज़रने वाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े
हो जाएंगे, और वह पूछेंगे, ‘रब ने इस मुल्क और इस
घर से ऐसा सुलूक क्यूँ किया?’ 22 तब लोग जवाब
देंगे, ‘इस लिए कि गो रब उन के बापदादा का ख़ुदा
उन्हें मिस्र से निकाल कर यहाँ लाया तो भी यह लोग
उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि
वह उन की परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ न
आए इस लिए उस ने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल
दिया है’।”

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिम्मात

8 1 रब के घर और शाही महल को तामीर करने
में 20 साल लग गए थे। 2 इस के बाद सुलेमान
ने वह आबादियाँ नए सिरे से तामीर कीं जो हीराम
ने उसे दे दी थीं। इन में उस ने इस्राईलियों को बसा
दिया।

3 एक फ़ौजी मुहिम्म के दौरान उस ने हमात-ज़ोबाह
पर हम्ला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। 4 इस के
इलावा उस ने हमात के इलाक़े में गोदाम के शहर
बनाए। रेगिस्तान के शहर तदमूर में उस ने बहुत सा
तामीरी काम कराया 5–6 और इसी तरह बालाई और
नशेबी बैत-हौरून और बालात में भी। इन शहरों के
लिए उस ने फ़सील और कुंडे वाले दरवाज़े बनवाए।
सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों
और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए।

जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी
सल्तनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था
वह उस ने बनवाया। 7–8 जिन आदमियों की सुलेमान
ने बेगार पर भर्ती की वह इस्राईली नहीं थे बल्कि
हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी यानी
कनआन के पहले बाशिन्दों की वह औलाद थे जो
बाक़ी रह गए थे। मुल्क पर क़ब्ज़ा करते वक़्त
इस्राईली इन क़ौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके,
और आज तक इन की औलाद को इस्राईल के लिए
बेगार में काम करना पड़ता है। 9 लेकिन सुलेमान ने
इस्राईलियों को ऐसे काम करने पर मज्बूर न किया
बल्कि वह उस के फ़ौजी और रथों के फ़ौजियों के
अफ़सर बन गए, और उन्हें रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर
किया गया। 10 सुलेमान के तामीरी काम पर भी 250
इस्राईली मुक़र्रर थे जो ज़िलओं पर मुक़र्रर अफ़सरों
के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करने वालों की
निगरानी करते थे।

11 फ़िरऔन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से
बनाम ‘दाऊद का शहर’ से उस महल में मुन्तक़िल हुई
जो सुलेमान ने उस के लिए तामीर किया था, क्यूँकि

सुलेमान ने कहा, “लाज़िम है कि मेरी अहलिया इस्राईल के बादशाह दाऊद के महल में न रहे। चूँकि रब का सन्दूक़ यहाँ से गुज़रा है, इस लिए यह जगह मुक़द्दस है।”

रब के घर में ख़िदमत की तर्तीब

12 उस वक़्त से सुलेमान रब को रब के घर के बड़े
हाल के सामने की क़ुर्बानगाह पर भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश करता था। 13 जो कुछ भी मूसा ने
रोज़ाना की क़ुर्बानियों के मुताल्लिक़ फ़रमाया था उस
के मुताबिक़ बादशाह क़ुर्बानियाँ चढ़ाता था। इन में
वह क़ुर्बानियाँ भी शामिल थीं जो सबत के दिन, नए
चाँद की ईद पर और साल की तीन बड़ी ईदों पर
यानी फ़सह की ईद, हफ़्तों की ईद और झोंपड़ियों
की ईद पर पेश की जाती थीं। 14 सुलेमान ने इमामों
के मुख़्तलिफ़ गुरोहों को वह ज़िम्मादारियाँ सौंपीं
जो उस के बाप दाऊद ने मुक़र्रर की थीं। लावियों
की ज़िम्मादारियाँ भी मुक़र्रर की गईं। उन की एक
ज़िम्मादारी रब की हम्द-ओ-सना करने में परस्तारों
की राहनुमाई करनी थी। नीज़, उन्हें रोज़ाना की
ज़रूरियात के मुताबिक़ इमामों की मदद करनी थी।
रब के घर के दरवाज़ों की पहरादारी भी लावियों की
एक ख़िदमत थी। हर दरवाज़े पर एक अलग गुरोह
की ड्यूटी लगाई गई। यह भी मर्द-ए-ख़ुदा दाऊद की
हिदायात के मुताबिक़ हुआ। 15 जो भी हुक्म दाऊद
ने इमामों, लावियों और ख़ज़ानों के मुताल्लिक़ दिया
था वह उन्हों ने पूरा किया।

16 यूँ सुलेमान के तमाम मन्सूबे रब के घर की
बुन्याद रखने से ले कर उस की तक्मील तक पूरे
हुए।

17 बाद में सुलेमान अस्यून-जाबर और ऐलात गया।
यह शहर अदोम के साहिल पर वाक़े थे। 18 वहाँ
हीराम बादशाह ने अपने जहाज़ और तजरिबाकार
मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ
मिल कर जहाज़ों को चलाएँ। उन्हों ने ओफ़ीर तक
सफ़र किया और वहाँ से सुलेमान के लिए तक़रीबन
15,000 किलोग्राम सोना ले कर आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

9 1 सुलेमान की शुहरत सबा की मलिका तक
पहुँच गई। जब उस ने उस के बारे में सुना
तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई
ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की
दानिशमन्दी जाँच ले। वह निहायत बड़े क़ाफ़िले के
साथ यरूशलम पहुँची जिस के ऊँट बल्सान, कस्रत
के सोने और क़ीमती जवाहिर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उस ने
उस से वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उस के
ज़हन में थे। 2 सुलेमान उस के हर सवाल का जवाब
दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि वह
उस का मतलब मलिका को बता न सकता। 3 सबा
की मलिका सुलेमान की हिक्मत और उस के नए
महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। 4 उस ने बादशाह की
मेज़ों पर के मुख़्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उस
के अफ़्सर किस तर्तीब से उस पर बिठाए जाते थे।
उस ने बैरों की ख़िदमत, उन की शानदार वर्दियों
और साक़ियों की शानदार वर्दियों पर भी ग़ौर किया।
जब उस ने इन बातों के इलावा भस्म होने वाली वह
क़ुर्बानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता
था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

5 वह बोल उठी, “वाक़ई, जो कुछ मैं ने अपने
मुल्क में आप के शाहकारों और हिक्मत के बारे में
सुना था वह दुरुस्त है। 6 जब तक मैं ने ख़ुद आ कर
यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यक़ीन
नहीं आता था। लेकिन हक़ीक़त में मुझे आप की
ज़बरदस्त हिक्मत के बारे में आधा भी नहीं बताया
गया था। वह उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ
तक पहुँची थीं। 7 आप के लोग कितने मुबारक हैं!
आप के अफ़्सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आप
के सामने खड़े रहते और आप की दानिश भरी बातें
सुनते हैं! 8 रब आप के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस

ने आप को पसन्द करके अपने तख़्त पर बिठाया
ताकि रब अपने ख़ुदा की ख़ातिर हुकूमत करें। आप
का ख़ुदा इस्राईल से मुहब्बत रखता है, और वह उसे
अबद तक क़ाइम रखना चाहता है, इसी लिए उस ने
आप को उन का बादशाह बना दिया है ताकि इन्साफ़
और रास्तबाज़ी क़ाइम रखें।”
9 फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन 4,000
किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बल्सान और जवाहिर
दे दिए। पहले कभी भी उतना बल्सान इस्राईल में नहीं
लाया गया था जितना उस वक़्त सबा की मलिका
लाई।
10 हीराम और सुलेमान के आदमी ओफ़ीर से न
सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्हों ने क़ीमती लकड़ी
और जवाहिर भी इस्राईल तक पहुँचाए। 11 जितनी
क़ीमती लकड़ी उन दिनों में यहूदाह में दरआमद
हुई उतनी पहले कभी वहाँ लाई नहीं गई थी। इस
लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल
के लिए सीढ़ियाँ बनवाईं। यह मौसीक़ारों के सरोद
और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।
12 सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की
मलिका को बहुत से तुह्फ़े दिए। यह उन चीज़ों से
ज़्यादा थे जो मलिका अपने मुल्क से उस के पास लाई
थी। जो भी मलिका चाहती थी या उस ने माँगा वह
उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और
अफ़सरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शुहरत

13 जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उस
का वज़न तक़रीबन 23,000 किलोग्राम था। 14 इस में
वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरों,
अरब बादशाहों और ज़िलओं के अफ़सरों से मिलते
थे। यह उसे सोना और चाँदी देते थे।
15–16 सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300
छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मंढा गया। हर बड़ी
ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल
हुआ और हर छोटी ढाल के लिए साढ़े 3 किलोग्राम।
सुलेमान ने उन्हें ‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में
महफ़ूज़ रखा।
17 इन के इलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता
एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर ख़ालिस सोना
चढ़ाया गया। 18–19 उस के हर बाज़ू के साथ शेरबबर
का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह
छः पाए वाली सीढ़ी पर चढ़ कर उस पर बैठता
था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का
मुजस्समा था। पाँओ के लिए सोने की चौकी बनाई
गई थी। इस क़िस्म का तख़्त किसी और सल्तनत में
नहीं पाया जाता था।
20 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि
‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में तमाम बर्तन
ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी,
क्यूँकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर नहीं
थी। 21 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो हीराम
के बन्दों के साथ मिल कर मुख़्तलिफ़ जगहों पर जाते
थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत,
बन्दरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।
22 सुलेमान की दौलत और हिक्मत दुनिया के तमाम
बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 23 दुनिया के तमाम
बादशाह उस से मिलने की कोशिश करते रहे ताकि
वह हिक्मत सुन लें जो अल्लाह ने उस के दिल में डाल
दी थी। 24 साल-ब-साल जो भी सुलेमान के दरबार में
आता वह कोई न कोई तुह्फ़ा लाता। यूँ उसे सोने-
चाँदी के बर्तन, क़ीमती लिबास, हथियार, बल्सान,
घोड़े और ख़च्चर मिलते रहे।
25 घोड़ों और रथों को रखने के लिए सुलेमान के
4,000 थान थे। उस के 12,000 घोड़े थे। कुछ उस
ने रथों के लिए मख़्सूस किए गए शहरों में और
कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 26 सुलेमान उन
तमाम बादशाहों का हुक्मरान था जो दरया-ए-फ़ुरात
से ले कर फ़िलिस्तियों के मुल्क की मिस्री सरहद
तक हुकूमत करते थे। 27 बादशाह की सरगर्मियों के
बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार
की क़ीमती लकड़ी मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े

की अन्जीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई।
28 बादशाह के घोड़े मिस्र और दीगर कई मुल्कों से
दरआमद होते थे।

सुलेमान की मौत

29 सुलेमान की ज़िन्दगी के बारे में मज़ीद बातें शुरू
से ले कर आख़िर तक 'नातन नबी की तारीख़,'
सैला के रहने वाले नबी अख़ियाह की किताब
'अख़ियाह की नबुव्वत' और यरुबिआम बिन नबात
से मुताल्लिक़ किताब 'इद्दू ग़ैबबीन की रोयाएँ' में दर्ज
हैं।
30 सुलेमान 40 साल के दौरान पूरे इस्राईल
पर हुकूमत करता रहा। उस का दार-उल-हकूमत
यरूशलम था। 31 जब वह मर कर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न
किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर
उस का बेटा रहुबिआम तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

10 1 रहुबिआम सिकम गया, क्यूँकि वहाँ
तमाम इस्राईली उसे बादशाह मुक़र्रर करने
के लिए जमा हो गए थे। 2 यरुबिआम बिन नबात
यह ख़बर सुनते ही मिस्र से जहाँ उस ने सुलेमान
बादशाह से भाग कर पनाह ली थी इस्राईल वापस
आया। 3 इस्राईलियों ने उसे बुलाया ताकि उस के
साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इस्राईल की पूरी
जमाअत यरुबिआम के साथ मिल कर रहुबिआम
से मिलने गई। उन्हों ने बादशाह से कहा, 4 "जो
जूआ आप के बाप ने हम पर डाल दिया था उसे
उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें
बादशाह की ख़िदमत में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिल-
ए-बर्दाश्त थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम
ख़ुशी से आप की ख़िदमत करेंगे।"
5 रहुबिआम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की
मुहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।" चुनाँचे लोग
चले गए। 6 फिर रहुबिआम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से
मश्वरा किया जो सुलेमान के जीते जी बादशाह की
ख़िदमत करते रहे थे। उस ने पूछा, "आप का क्या
ख़याल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?" 7 बुज़ुर्गों
ने जवाब दिया, "हमारा मश्वरा है कि इस वक़्त उन
से मेहरबानी से पेश आ कर उन से अच्छा सुलूक
करें और नर्म जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह
हमेशा आप के वफ़ादार ख़ादिम बने रहेंगे।"
8 लेकिन रहुबिआम ने बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके
उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से मश्वरा किया
जो उस के साथ परवान चढ़े थे। 9 उस ने पूछा, "मैं
इस क़ौम को क्या जवाब दूँ? यह तक़ाज़ा कर रहे हैं
कि मैं वह जूआ हल्का कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर
डाल दिया।" 10 जो जवान उस के साथ परवान चढ़े
थे उन्हों ने कहा, "अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे
हैं कि आप के बाप का जूआ हल्का किया जाए?
उन्हें बता देना, 'मेरी छोटी उंगली मेरे बाप की कमर
से ज़्यादा मोटी है! 11 बेशक जो जूआ उस ने आप
पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा
जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप को
कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब
करूँगा'!"
12 तीन दिन के बाद जब यरुबिआम तमाम
इस्राईलियों के साथ रहुबिआम का फ़ैसला सुनने के
लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख़्त जवाब
दिया। बुज़ुर्गों का मश्वरा रद्द करके 14 उस ने उन्हें
जवानों का जवाब दिया, "बेशक जो जूआ मेरे बाप ने
आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन
मेरा जूआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आप
को कोड़े लगाए वहाँ मैं आप की बिच्छूओं से तादीब
करूँगा!" 15 यूँ रब की मर्ज़ी पूरी हुई कि रहुबिआम
लोगों की बात नहीं मानेगा। क्यूँकि अब रब की
वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने
यरुबिआम बिन नबात को बताई थी।
16 जब इस्राईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात
सुनने के लिए तय्यार नहीं है तो उन्हों ने उस से कहा,
"न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के

बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इस्राईल, सब अपने अपने घर वापस चलें! ऐ दाऊद, अब अपना घर ख़ुद सँभाल लो!” यह कह कर वह सब चले गए।

17 सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में रहने वाले इस्राईली रहुबिआम के तहत रहे। 18 फिर रहुबिआम बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर अफ़सर अदूनीराम को शिमाली क़बीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देख कर लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबिआम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भाग कर यरूशलम पहुँच गया।

19 यूँ इस्राईल के शिमाली क़बीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।

रहुबिआम को इस्राईल से लड़ने की इजाज़त नहीं मिलती

11 1 जब रहुबिआम यरूशलम पहुँचा तो उस ने यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों के चीदा चीदा फ़ौजियों को इस्राईल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबिआम के लिए इस्राईल पर दुबारा क़ाबू पाएँ। 2 लेकिन ऐन उस वक़्त मर्द-ए-ख़ुदा समायाह को रब की तरफ़ से पैग़ाम मिला, 3 “यहूदाह के बादशाह रहुबिआम बिन सुलेमान और यहूदाह और बिनयमीन के तमाम अफ़राद को इत्तिला दे, 4 ‘रब फ़रमाता है कि अपने भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला जाए, क्यूँकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक्म पर हुआ है’।”

तब वह रब की सुन कर यरुबिआम से लड़ने से बाज़ आए।

रहुबिआम की क़िलाबन्दी

5 रहुबिआम का दार-उल-हकूमत यरूशलम रहा। यहूदाह में उस ने ज़ैल के शहरों की क़िलाबन्दी की : 6 बैत-लहम, ऐताम, तक़ूअ, 7 बैत-सूर, सोका, अदुल्लाम, 8 जात, मरेसा, ज़ीफ़, 9 अदूराईम, लकीस, अज़ीक़ा, 10 सुरआ, अय्यालोन और हब्रून। यहूदाह और बिनयमीन के इन क़िलाबन्द शहरों को 11 मज़बूत करके रहुबिआम ने हर शहर पर अफ़सर मुक़र्रर किए। उन में उस ने ख़ुराक, ज़ैतून के तेल और मै का ज़ख़ीरा कर लिया 12 और साथ साथ उन में ढालें और नेज़े भी रखे। इस तरह उस ने उन्हें बहुत मज़बूत बना कर यहूदाह और बिनयमीन पर अपनी हुकूमत महफ़ूज़ कर ली।

इमाम और लावी यहूदाह में मुन्तक़िल हो जाते हैं

13 गो इमाम और लावी तमाम इस्राईल में बिखरे रहते थे तो भी उन्हों ने रहुबिआम का साथ दिया। 14 अपनी चरागाहों और मिलकियत को छोड़ कर वह यहूदाह और यरूशलम में आबाद हुए, क्यूँकि यरुबिआम और उस के बेटों ने उन्हें इमाम की हैसियत से रब की ख़िदमत करने से रोक दिया था। 15 उन की जगह उस ने अपने ज़ाती इमाम मुक़र्रर किए जो ऊँची जगहों पर के मन्दिरों को सँभालते हुए बकरे के देवताओं और बछड़े के बुतों की ख़िदमत करते थे। 16 लावियों की तरह तमाम क़बीलों के बहुत से ऐसे लोग यहूदाह में मुन्तक़िल हुए जो पूरे दिल से रब इस्राईल के ख़ुदा के तालिब रहे थे। वह यरूशलम आए ताकि रब अपने बापदादा के ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ पेश कर सकें। 17 यहूदाह की सल्तनत ने ऐसे लोगों से तक़वियत पाई। वह रहुबिआम बिन सुलेमान के लिए तीन साल तक मज़बूती का सबब थे, क्यूँकि तीन साल तक यहूदाह दाऊद और सुलेमान के अच्छे नमूने पर चलता रहा।

रहुबिआम का ख़ानदान

18 रहुबिआम की शादी महलत से हुई जो यरीमोत और अबीख़ैल की बेटी थी। यरीमोत दाऊद का बेटा और अबीख़ैल इलियाब बिन यस्सी की बेटी थी। 19 महलत के तीन बेटे यऊस, समरियाह और ज़हम पैदा हुए। 20 बाद में रहुबिआम की माका बिन्त अबीसलूम से शादी हुई। इस रिश्ते से चार

बेटे अबियाह, अत्ती, ज़ीज़ा और सलूमीत पैदा हुए।
21 रहुबिआम की 18 बीवियाँ और 60 दाश्ताएँ थीं।
इन के कुल 28 बेटे और 60 बेटियाँ पैदा हुईं।
लेकिन माका बिन्त अबीसलूम रहुबिआम को सब
से ज़्यादा प्यारी थी। 22 उस ने माका के पहलौठे
अबियाह को उस के भाइयों का सरबराह बना दिया
और मुक़र्रर किया कि यह बेटा मेरे बाद बादशाह
बनेगा। 23 रहुबिआम ने अपने बेटों से बड़ी समझदारी
के साथ सुलूक किया, क्यूँकि उस ने उन्हें अलग
अलग करके यहूदाह और बिनयमीन के पूरे क़बाइली
इलाक़े और तमाम क़िलाबन्द शहरों में बसा दिया।
साथ साथ वह उन्हें कस्रत की ख़ुराक और बीवियाँ
मुहय्या करता रहा।

मिस्र की यहूदाह पर फ़त्ह

12 1 जब रहुबिआम की सल्तनत ज़ोर पकड़
कर मज़बूत हो गई तो उस ने तमाम इस्राईल
समेत रब की शरीअत को तर्क कर दिया। 2 उन
की रब से बेवफ़ाई का नतीजा यह निकला कि
रहुबिआम की हुकूमत के पाँचवें साल में मिस्र के
बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर हम्ला किया। 3 उस
की फ़ौज बहुत बड़ी थी। 1,200 रथों के इलावा
60,000 घुड़सवार और लिबिया, सुक्कियों के मुल्क
और एथोपिया के बेशुमार पियादा सिपाही थे। 4 यके
बाद दीगरे यहूदाह के क़िलाबन्द शहरों पर क़ब्ज़ा
करते करते मिस्री बादशाह यरूशलम तक पहुँच
गया।

5 तब समायाह नबी रहुबिआम और यहूदाह के उन
बुज़ुर्गों के पास आया जिन्हों ने सीसक़ के आगे आगे
भाग कर यरूशलम में पनाह ली थी। उस ने उन से
कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तुम ने मुझे तर्क कर दिया है,
इस लिए अब मैं तुम्हें तर्क करके सीसक़ के हवाले
कर दूँगा’।” 6 यह पैग़ाम सुन कर रहुबिआम और
यहूदाह के बुज़ुर्गों ने बड़ी इनकिसारी के साथ तस्लीम
किया कि रब ही आदिल है। 7 उन की यह आजिज़ी
देख कर रब ने समायाह से कहा, “चूँकि उन्हों ने बड़ी
ख़ाकसारी से अपना ग़लत रवय्या तस्लीम कर लिया
है इस लिए मैं उन्हें तबाह नहीं करूँगा बल्कि जल्द
ही उन्हें रिहा करूँगा। मेरा ग़ज़ब सीसक़ के ज़रीए
यरूशलम पर नाज़िल नहीं होगा। 8 लेकिन वह इस
क़ौम को ज़रूर अपने ताबे कर रखेगा। तब वह समझ
लेंगे कि मेरी ख़िदमत करने और दीगर ममालिक के
बादशाहों की ख़िदमत करने में क्या फ़र्क़ है।”

9 मिस्र के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर हम्ला
करते वक़्त रब के घर और शाही महल के तमाम
ख़ज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली
गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 10 इन की जगह
रहुबिआम ने पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें
उन मुहाफ़िज़ों के अफ़सरों के सपुर्द किया जो शाही
महल के दरवाज़े की पहरादारी करते थे। 11 जब
भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह
ढालें उठा कर साथ ले जाते। इस के बाद वह उन्हें
पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

12 चूँकि रहुबिआम ने बड़ी इनकिसारी से अपना
ग़लत रवय्या तस्लीम किया इस लिए रब का उस पर
ग़ज़ब ठंडा हो गया, और वह पूरे तौर पर तबाह न
हुआ। दरहक़ीक़त यहूदाह में अब तक कुछ न कुछ
पाया जाता था जो अच्छा था।

रहुबिआम की मौत

13 रहुबिआम की सल्तनत ने दुबारा तक़वियत पाई,
और यरूशलम में रह कर वह अपनी हुकूमत जारी
रख सका। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन
हुआ था, और वह 17 साल बादशाह रहा। उस
का दार-उल-हकूमत यरूशलम था, वह शहर जिसे
रब ने तमाम इस्राईली क़बीलों में से चुन लिया
ताकि उस में अपना नाम क़ाइम करे। उस की माँ
नामा अम्मोनी थी। 14 रहुबिआम ने अच्छी ज़िन्दगी
न गुज़ारी, क्यूँकि वह पूरे दिल से रब का तालिब न
रहा था।

15 बाक़ी जो कुछ रहुबिआम की हुकूमत के दौरान
शुरू से ले कर आख़िर तक हुआ उस का समायाह

नबी और ग़ैबबीन इद्दू की तारीख़ी किताब में बयान है। वहाँ उस के नसबनामे का ज़िक्र भी है। दोनों बादशाहों रहुबिआम और यरुबिआम के जीते जी उन के दरमियान जंग जारी रही। 16 जब रहुबिआम मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उस का बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

13 1 अबियाह इस्राईल के बादशाह यरुबिआम अव्वल की हुकूमत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 वह तीन साल बादशाह रहा, और उस का दार-उल-हकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बिन्त ऊरीएल जिबिआ की रहने वाली थी।

एक दिन अबियाह और यरुबिआम के दरमियान जंग छिड़ गई। 3 4,00,000 तजरिबाकार फ़ौजियों को जमा करके अबियाह यरुबिआम से लड़ने के लिए निकला। यरुबिआम 8,00,000 तजरिबाकार फ़ौजियों के साथ उस के मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ। 4 फिर अबियाह ने इफ़्राईम के पहाड़ी इलाक़े के पहाड़ समरैम पर चढ़ कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा,

"यरुबिआम और तमाम इस्राईलियो, मेरी बात सुनें! 5 क्या आप को नहीं मालूम कि रब इस्राईल के ख़ुदा ने दाऊद से नमक का अबदी अह्द बांध कर उसे और उस की औलाद को हमेशा के लिए इस्राईल की सल्तनत अता की है? 6 तो भी सुलेमान बिन दाऊद का मुलाज़िम यरुबिआम बिन नबात अपने मालिक के ख़िलाफ़ उठ कर बाग़ी हो गया। 7 उस के इर्दगिर्द कुछ बदमआश जमा हुए और रहुबिआम बिन सुलेमान की मुख़ालफ़त करने लगे। उस वक़्त वह जवान और नातजरिबाकार था, इस लिए उन का सहीह मुक़ाबला न कर सका।

8 और अब आप वाक़ई समझते हैं कि हम रब की बादशाही पर फ़त्ह पा सकते हैं, उसी बादशाही पर जो दाऊद की औलाद के हाथ में है। आप समझते हैं कि आप की फ़ौज बहुत ही बड़ी है, और कि सोने के बछड़े आप के साथ हैं, वही बुत जो यरुबिआम ने आप की पूजा के लिए तय्यार कर रखे हैं। 9 लेकिन आप ने रब के इमामों यानी हारून की औलाद को लावियों समेत मुल्क से निकाल कर उन की जगह ऐसे पुजारी ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किए जैसे बुतपरस्त क़ौमों में पाए जाते हैं। जो भी चाहता है कि उसे मख़्सूस करके इमाम बनाया जाए उसे सिर्फ़ एक जवान बैल और सात मेंढे पेश करने की ज़रूरत है। यह इन नाम-निहाद ख़ुदाओं का पुजारी बनने के लिए काफ़ी है।

10 लेकिन जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है रब ही हमारा ख़ुदा है। हम ने उसे तर्क नहीं किया। सिर्फ़ हारून की औलाद ही हमारे इमाम हैं। सिर्फ़ यह और लावी रब की ख़िदमत करते हैं। 11 यही सुब्ह-शाम उसे भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ख़ुशबूदार बख़ूर पेश करते हैं। पाक मेज़ पर रब के लिए मख़्सूस रोटियाँ रखना और सोने के शमादान के चराग़ जलाना इन ही की ज़िम्मादारी रही है। ग़रज़, हम रब अपने ख़ुदा की हिदायात पर अमल करते हैं जबकि आप ने उसे तर्क कर दिया है। 12 चुनाँचे अल्लाह हमारे साथ है। वही हमारा राहनुमा है, और उस के इमाम तुरम बजा कर आप से लड़ने का एलान करेंगे। इस्राईल के मर्दो, ख़बरदार! रब अपने बापदादा के ख़ुदा से मत लड़ना। यह जंग आप जीत ही नहीं सकते!"

13 इतने में यरुबिआम ने चुपके से कुछ दस्तों को यहूदाह की फ़ौज के पीछे भेज दिया ताकि वहाँ ताक में बैठ जाएँ। यूँ उस की फ़ौज का एक हिस्सा यहूदाह की फ़ौज के सामने और दूसरा हिस्सा उस के पीछे था। 14 अचानक यहूदाह के फ़ौजियों को पता चला कि दुश्मन सामने और पीछे से हम पर हम्ला कर रहा है। चीख़ते चिल्लाते हुए उन्हों ने रब से मदद माँगी। इमामों ने अपने तुरम बजाय 15 और यहूदाह के मर्दों ने जंग का नारा लगाया। जब उन की आवाज़ें बुलन्द हुईं तो अल्लाह ने यरुबिआम और तमाम इस्राईलियों

को शिकस्त दे कर अबियाह और यहूदाह की फ़ौज के सामने से भगा दिया। 16 इस्राईली फ़रार हुए, लेकिन अल्लाह ने उन्हें यहूदाह के हवाले कर दिया। 17 अबियाह और उस के लोग उन्हें बड़ा नुक़्सान पहुँचा सके। इस्राईल के 5,00,000 तजरिबाकार फ़ौजी मैदान-ए-जंग में मारे गए। 18 उस वक़्त इस्राईल की बड़ी बेइज़्ज़ती हुई जबकि यहूदाह को तक़वियत मिली। क्यूँकि वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा पर भरोसा रखते थे।

19 अबियाह ने यरुबिआम का ताक़्क़ुब करते करते उस से तीन शहर गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत छीन लिए, बैत-एल, यसाना और इफ़्रोन। 20 अबियाह के जीते जी यरुबिआम दुबारा तक़वियत न पा सका, और थोड़ी देर के बाद रब ने उसे मार दिया। 21 उस के मुक़ाबले में अबियाह की ताक़त बढ़ती गई। उस की 14 बीवियों के 22 बेटे और 16 बेटियाँ पैदा हुईं।

22 बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया और कहा, वह इद्दू नबी की किताब में बयान किया गया है।

14 1 जब अबियाह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उस का बेटा आसा तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

आसा की हुकूमत के तहत मुल्क में 10 साल तक अम्न-ओ-अमान क़ाइम रहा। 2 आसा वह कुछ करता रहा जो रब उस के ख़ुदा के नज़्दीक अच्छा और ठीक था। 3 उस ने अजनबी माबूदों की क़ुर्बानगाहों को ऊँची जगहों के मन्दिरों समेत गिरा कर देवताओं के लिए मख़्सूस किए गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और यसीरत देवी के खम्बे काट डाले। 4 साथ साथ उस ने यहूदाह के बाशिन्दों को हिदायत दी कि वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा के तालिब हों और उस के अह्काम के ताबे रहें। 5 यहूदाह के तमाम शहरों से उस ने बख़ूर की क़ुर्बानगाहें और ऊँची जगहों के मन्दिर दूर कर दिए। चुनाँचे उस की हुकूमत के दौरान बादशाही में सुकून रहा।

6 अम्न-ओ-अमान के इन सालों के दौरान आसा यहूदाह में कई शहरों की क़िलाबन्दी कर सका। जंग का ख़तरा नहीं था, क्यूँकि रब ने उसे सुकून मुहय्या किया। 7 बादशाह ने यहूदाह के बाशिन्दों से कहा, "आएँ, हम इन शहरों की क़िलाबन्दी करें! हम इन के इर्दगिर्द फ़सीलें बना कर उन्हें बुर्जों, दरवाज़ों और कुंडों से मज़बूत करें। क्यूँकि अब तक मुल्क हमारे हाथ में है। चूँकि हम रब अपने ख़ुदा के तालिब रहे हैं इस लिए उस ने हमें चारों तरफ़ सुलह-सलामती मुहय्या की है।" चुनाँचे क़िलाबन्दी का काम शुरू हुआ बल्कि तक्मील तक पहुँच सका।

एथोपिया पर फ़त्ह

8 आसा की फ़ौज में बड़ी ढालों और नेज़ों से लेस यहूदाह के 3,00,000 अफ़राद थे। इस के इलावा छोटी ढालों और कमानों से मुसल्लह बिनयमीन के 2,80,000 अफ़राद थे। सब तजरिबाकार फ़ौजी थे।

9 एक दिन एथोपिया के बादशाह ज़ारह ने यहूदाह पर हम्ला किया। उस के बेशुमार फ़ौजी और 300 रथ थे। बढ़ते बढ़ते वह मरेसा तक पहुँच गया। 10 आसा उस का मुक़ाबला करने के लिए निकला। वादी-ए-सफ़ाता में दोनों फ़ौजें लड़ने के लिए सफ़आरा हुईं। 11 आसा ने रब अपने ख़ुदा से इल्तिमास की, "ऐ रब, सिर्फ़ तू ही बेबसों को ताक़तवरों के हम्लों से महफ़ूज़ रख सकता है। ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमारी मदद कर! क्यूँकि हम तुझ पर भरोसा रखते हैं। तेरा ही नाम ले कर हम इस बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए निकले हैं। ऐ रब, तू ही हमारा ख़ुदा है। ऐसा न होने दे कि इन्सान तेरी मर्ज़ी की ख़िलाफ़वरज़ी करने में कामयाब हो जाए।"

12 तब रब ने आसा और यहूदाह के देखते देखते दुश्मन को शिकस्त दी। एथोपिया के फ़ौजी फ़रार हुए, 13 और आसा ने अपने फ़ौजियों के साथ जिरार तक उन का ताक़्क़ुब किया। दुश्मन के इतने अफ़राद

हलाक हुए कि उस की फ़ौज बाद में बहाल न हो सकी। रब ख़ुद और उस की फ़ौज ने दुश्मन को तबाह कर दिया था। यहूदाह के मर्दों ने बहुत सा माल लूट लिया। 14 वह जिरार के इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुए, क्यूँकि मक़ामी लोगों में रब की दहशत फैल गई थी। नतीजे में इन शहरों से भी बहुत सा माल छीन लिया गया। 15 इस मुहिम्म के दौरान उन्हों ने गल्लाबानों की ख़ैमागाहों पर भी हम्ला किया और उन से कसरत की भेड़-बकरियाँ और ऊँट लूट कर अपने साथ यरूशलम ले आए।

आसा रब से अह्द की तज्दीद करता है

15 1 अल्लाह का रूह अज़रियाह बिन ओदीद
पर नाज़िल हुआ, 2 और वह आसा से
मिलने के लिए निकला और कहा, “ऐ आसा और
यहूदाह और बिनयमीन के तमाम बाशिन्दो, मेरी बात
सुनो! रब तुम्हारे साथ है अगर तुम उसी के साथ रहो।
अगर तुम उस के तालिब रहो तो उसे पा लोगे। लेकिन
जब भी तुम उसे तर्क करो तो वह तुम ही को तर्क
करेगा। 3 लम्बे अर्से तक इस्राईली हक़ीक़ी ख़ुदा के
बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। न कोई इमाम था जो उन्हें
अल्लाह की राह सिखाता, न शरीअत। 4 लेकिन जब
कभी वह मुसीबत में फंस जाते तो दुबारा रब इस्राईल
के ख़ुदा के पास लौट आते। वह उसे तलाश करते
और नतीजे में उसे पा लेते। 5 उस ज़माने में सफ़र
करना ख़तरनाक होता था, क्यूँकि अम्न-ओ-अमान
कहीं नहीं था। 6 एक क़ौम दूसरी क़ौम के साथ और
एक शहर दूसरे के साथ लड़ता रहता था। इस के
पीछे अल्लाह का हाथ था। वही उन्हें हर क़िस्म की
मुसीबत में डालता रहा। 7 लेकिन जहाँ तक तुम्हारा
ताल्लुक़ है, मज़बूत हो और हिम्मत न हारो। अल्लाह
ज़रूर तुम्हारी मेहनत का अज्र देगा।”

8 जब आसा ने ओदीद के बेटे अज़रियाह नबी की
पेशगोई सुनी तो उस का हौसला बढ़ गया, और उस ने
अपने पूरे इलाक़े के घिनौने बुतों को दूर कर दिया।
इस में यहूदाह और बिनयमीन के इलावा इफ़्राईम
के पहाड़ी इलाक़े के वह शहर शामिल थे जिन पर
उस ने क़ब्ज़ा कर लिया था। साथ साथ उस ने उस
क़ुर्बानगाह की मरम्मत करवाई जो रब के घर के
दरवाज़े के सामने थी। 9 फिर उस ने यहूदाह और
बिनयमीन के तमाम लोगों को यरूशलम बुलाया। उन
इस्राईलियों को भी दावत मिली जो इफ़्राईम, मनस्सी
और शमाऊन के क़बाइली इलाक़ों से मुन्तक़िल हो
कर यहूदाह में आबाद हुए थे। क्यूँकि बेशुमार लोग
यह देख कर कि रब आसा का ख़ुदा उस के साथ है
इस्राईल से निकल कर यहूदाह में जा बसे थे।

10 आसा बादशाह की हुकूमत के 15वें साल और
तीसरे महीने में सब यरूशलम में जमा हुए। 11 वहाँ
उन्हों ने लूटे हुए माल में से रब को 700 बैल और
7,000 भेड़-बकरियाँ क़ुर्बान कर दीं। 12 उन्हों ने
अह्द बांधा, ‘हम पूरे दिल-ओ-जान से रब अपने
बापदादा के ख़ुदा के तालिब रहेंगे। 13 और जो रब
इस्राईल के ख़ुदा का तालिब नहीं रहेगा उसे सज़ा-
ए-मौत दी जाएगी, ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा, मर्द
हो या औरत।’ 14 बुलन्द आवाज़ से उन्हों ने क़सम
खा कर रब से अपनी वफ़ादारी का एलान किया।
साथ साथ तुरम और नरसिंगे बजते रहे। 15 यह अह्द
तमाम यहूदाह के लिए ख़ुशी का बाइस था, क्यूँकि
उन्हों ने पूरे दिल से क़सम खा कर उसे बांधा था।
और चूँकि वह पूरे दिल से ख़ुदा के तालिब थे इस
लिए वह उसे पा भी सके। नतीजे में रब ने उन्हें चारों
तरफ़ अम्न-ओ-अमान मुहय्या किया।

16 आसा की माँ माका बादशाह की माँ होने के
बाइस बहुत असर-ओ-रसूख़ रखती थी। लेकिन
आसा ने यह उह्दा ख़त्म कर दिया जब माँ ने यसीरत
देवी का घिनौना खम्बा बनवा लिया। आसा ने यह
बुत कटवा कर टुकड़े टुकड़े कर दिया और वादी-ए-
क़िद्रोन में जला दिया। 17 अफ़सोस कि उस ने इस्राईल
की ऊँची जगहों के मन्दिरों को दूर न किया। तो भी
आसा अपने जीते जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार
रहा। 18 सोना-चाँदी और बाक़ी जितनी चीज़ें उस के

बाप और उस ने रब के लिए मख़्सूस की थीं उन सब को वह रब के घर में लाया।

19 आसा की हुकूमत के 35वें साल तक जंग दुबारा न छिड़ी।

शाम के साथ आसा का मुआहदा

16 1 आसा की हुकूमत के 36वें साल में इस्राईल के बादशाह बाशा ने यहूदाह पर हम्ला करके रामा शहर की क़िलाबन्दी की। मक़्सद यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में दाख़िल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।

2 जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफ़द भेजा जिस का दार-उल-हकूमत दमिश्क़ था। उस ने रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों की सोना-चाँदी वफ़द के सपुर्द करके दमिश्क़ के बादशाह को पैग़ाम भेजा, 3 “मेरा आप के साथ अह्द है जिस तरह मेरे बाप का आप के बाप के साथ अह्द था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह तुह्फ़ा क़बूल करके इस्राईल के बादशाह बाशा के साथ अपना अह्द मन्सूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल जाए।”

4 बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उस ने अपने फ़ौजी अफ़्सरों को इस्राईल के शहरों पर हम्ला करने के लिए भेज दिया तो उन्हों ने ऐय्यून, दान, अबील-माइम और नफ़्ताली के उन तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया जिन में शाही गोदाम थे। 5 जब बाशा को इस की ख़बर मिली तो उस ने रामा की क़िलाबन्दी करने से बाज़ आ कर अपनी यह मुहिम्म छोड़ दी।

6 फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों की भर्ती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठा कर ले जाएँ जिन से बाशा बादशाह रामा की क़िलाबन्दी करना चाहता था। इस सामान से आसा ने जिबा और मिस्फ़ाह शहरों की क़िलाबन्दी की।

आसा के आख़िरी साल और मौत

7 उस वक़्त हनानी ग़ैबबीन यहूदाह के बादशाह आसा को मिलने आया। उस ने कहा, “अफ़्सोस कि आप ने रब अपने ख़ुदा पर एतिमाद न किया बल्कि अराम के बादशाह पर, क्यूँकि इस का बुरा नतीजा निकला है। रब शाम के बादशाह की फ़ौज को आप के हवाले करने के लिए तय्यार था, लेकिन अब यह मौक़ा जाता रहा है। 8 क्या आप भूल गए हैं कि एथोपिया और लिबिया की कितनी बड़ी फ़ौज आप से लड़ने आई थी? उन के साथ कस्रत के रथ और घुड़सवार भी थे। लेकिन उस वक़्त आप ने रब पर एतिमाद किया, और जवाब में उस ने उन्हें आप के हवाले कर दिया। 9 रब तो अपनी नज़र पूरी रू-ए-ज़मीन पर दौड़ाता रहता है ताकि उन की तक़वियत करे जो पूरी वफ़ादारी से उस से लिपटे रहते हैं। आप की अहमक़ाना हरकत की वजह से आप को अब से मुतवातिर जंगें तंग करती रहेंगी।” 10 यह सुन कर आसा ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया। आपे से बाहर हो कर उस ने हुक्म दिया कि नबी को गिरिफ़्तार करके उस के पाँओ काठ में ठोंको। उस वक़्त से आसा अपनी क़ौम के कई लोगों पर ज़ुल्म करने लगा।

11 बाक़ी जो कुछ शुरू से ले कर आख़िर तक आसा की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहान-ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है। 12 हुकूमत के 39वें साल में उस के पाँओ को बीमारी लग गई। गो उस की बुरी हालत थी तो भी उस ने रब को तलाश न किया बल्कि सिर्फ़ डाक्टरों के पीछे पड़ गया। 13 हुकूमत के 41वें साल में आसा मर कर अपने बापदादा से जा मिला। 14 उस ने यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है अपने लिए चटान में क़ब्र तराशी थी। अब उसे इस में दफ़न किया गया। जनाज़े के वक़्त लोगों ने लाश को एक पलंग पर लिटा दिया जो बल्सान के तेल और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ख़ुशबूदार मर्हमों से ढाँपा गया

था। फिर उस के एहतिराम में लकड़ी का ज़बरदस्त ढेर जलाया गया।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

17 1 आसा के बाद उस का बेटा यहूसफ़त तख़्तनशीन हुआ। उस ने यहूदाह की ताक़त बढ़ाई ताकि वह इस्राईल का मुक़ाबला कर सके। 2 यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों में उस ने दस्ते बिठाए। यहूदाह के पूरे क़बाइली इलाक़े में उस ने चौकियाँ तय्यार कर रखीं और इसी तरह इफ़्राईम के उन शहरों में भी जो उस के बाप आसा ने इस्राईल से छीन लिए थे। 3 रब यहूसफ़त के साथ था, क्यूँकि वह दाऊद के नमूने पर चलता था और बाल देवताओं के पीछे न लगा। 4 इस्राईल के बादशाहों के बरअक्स वह अपने बाप के ख़ुदा का तालिब रहा और उस के अह्काम पर अमल करता रहा। 5 इसी लिए रब ने यहूदाह पर यहूसफ़त की हुकूमत को ताक़तवर बना दिया। लोग तमाम यहूदाह से आ कर उसे तुह्फ़े देते रहे, और उसे बड़ी दौलत और इज़्ज़त मिली। 6 रब की राहों पर चलते चलते उसे बड़ा हौसला हुआ और नतीजे में उस ने ऊँची जगहों के मन्दिरों और यसीरत देवी के खम्बों को यहूदाह से दूर कर दिया।

7 अपनी हुकूमत के तीसरे साल के दौरान यहूसफ़त ने अपने मुलाज़िमों को यहूदाह के तमाम शहरों में भेजा ताकि वह लोगों को रब की शरीअत की तालीम दें। इन अफ़्सरों में बिन-ख़ैल, अबदियाह, ज़करियाह, नतनीएल और मीकायाह शामिल थे। 8 उन के साथ 9 लावी बनाम समायाह, नतनियाह, ज़बदियाह, असाहेल, समीरामोत, यहूनतन, अदूनियाह, तूबियाह, और तूब-अदूनियाह थे। इमामों की तरफ़ से इलीसमा और यहूराम साथ गए। 9 रब की शरीअत की किताब अपने साथ ले कर इन आदमियों ने यहूदाह में शहर-ब-शहर जा कर लोगों को तालीम दी।

10 उस वक़्त यहूदाह के पड़ोसी ममालिक पर रब का ख़ौफ़ छा गया, और उन्हों ने यहूसफ़त से जंग करने की जुरअत न की। 11 ख़राज के तौर पर उसे फ़िलिस्तियों से हदिए और चाँदी मिलती थी, जबकि अरब उसे 7,700 मेंढे और 7,700 बकरे दिया करते थे। 12 यूँ यहूसफ़त की ताक़त बढ़ती गई। यहूदाह की कई जगहों पर उस ने क़िले और शाही गोदाम के शहर तामीर किए। 13 साथ साथ उस ने यहूदाह के शहरों में ज़रूरियात-ए-ज़िन्दगी के बड़े ज़ख़ीरे जमा किए और यरूशलम में तजरिबाकार फ़ौजी रखे।

14 यहूसफ़त की फ़ौज को कुंबों के मुताबिक़ तर्तीब दिया गया था। यहूदाह के क़बीले का कमाँडर अदना था। उस के तहत 3,00,000 तजरिबाकार फ़ौजी थे। 15 उस के इलावा यूहनान था जिस के तहत 2,80,000 अफ़राद थे 16 और अमसियाह बिन ज़िक्री जिस के तहत 2,00,000 अफ़राद थे। अमसियाह ने अपने आप को रज़ाकाराना तौर पर रब की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया था। 17 बिनयमीन के क़बीले का कमाँडर इल्यदा था जो ज़बरदस्त फ़ौजी था। उस के तहत कमान और ढालों से लेस 2,00,000 फ़ौजी थे। 18 उस के इलावा यहूज़बद था जिस के 1,80,000 मुसल्लह आदमी थे।

19 सब फ़ौज में बादशाह की ख़िदमत सरअन्जाम देते थे। उन में वह फ़ौजी नहीं शुमार किए जाते थे जिन्हें बादशाह ने पूरे यहूदाह के क़िलाबन्द शहरों में रखा हुआ था।

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

18 1 ग़रज़ यहूसफ़त को बड़ी दौलत और इज़्ज़त हासिल हुई। उस ने अपने पहलौठे की शादी इस्राईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से कराई।

2 कुछ साल के बाद वह अख़ियब से मिलने के लिए सामरिया गया। इस्राईल के बादशाह ने यहूसफ़त और उस के साथियों के लिए बहुत सी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल ज़बह किए। फिर उस ने यहूसफ़त को अपने साथ रामात-जिलिआद से जंग करने पर उकसाया। 3 अख़ियब ने यहूसफ़त से सवाल किया,

“क्या आप मेरे साथ रामात-जिलिआद जाएंगे ताकि
उस पर क़ब्ज़ा करें?” उस ने जवाब दिया, “जी
ज़रूर, हम तो भाई हैं, मेरी क़ौम को अपनी क़ौम
समझें! हम आप के साथ मिल कर लड़ने के लिए
निकलेंगे। 4 लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की
मर्ज़ी मालूम कर लें।”
5 इस्राईल के बादशाह ने 400 नबियों को बुला कर
उन से पूछा, “क्या हम रामात-जिलिआद पर हम्ला करें
या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया,
“जी, करें, क्यूँकि अल्लाह उसे बादशाह के हवाले कर
देगा।”
6 लेकिन यहूसफ़त मुत्मइन न हुआ। उस ने पूछा,
“क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिस से हम
दरयाफ़्त कर सकें?” 7 इस्राईल का बादशाह बोला,
“हाँ, एक तो है जिस के ज़रीए हम रब की मर्ज़ी मालूम
कर सकते हैं। लेकिन मैं उस से नफ़रत करता हूँ,
क्यूँकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं
करता। वह हमेशा बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उस का
नाम मीकायाह बिन इम्ला है।” यहूसफ़त ने एतिराज़
किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!” 8 तब इस्राईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुला कर हुक्म
दिया, “मीकायाह बिन इम्ला को फ़ौरन हमारे पास
पहुँचा देना!”
9 अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास पहने
हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने अपने तख़्त
पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ अनाज
गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उन के सामने
अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे। 10 एक नबी बनाम
सिदक़ियाह बिन कनआना ने अपने लिए लोहे के
सींग बना कर एलान किया, “रब फ़रमाता है कि इन
सींगों से तू शाम के फ़ौजियों को मार मार कर हलाक
कर देगा।”
11 दूसरे नबी भी इस क़िस्म की पेशगोइयाँ कर रहे
थे, “रामात-जिलिआद पर हम्ला करें, क्यूँकि आप
ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को आप के
हवाले कर देगा।”
12 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए
भेजा गया था उस ने रास्ते में उसे समझाया, “देखें,
बाक़ी तमाम नबी मिल कर कह रहे हैं कि बादशाह
को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें
करें, आप भी फ़त्ह की पेशगोई करें!” 13 लेकिन
मीकायाह ने एतिराज़ किया, “रब की हयात की
क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो
मेरा ख़ुदा फ़रमाएगा।”
14 जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा हुआ
तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-
जिलिआद पर हम्ला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?”
मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हम्ला करें,
क्यूँकि उन्हें आप के हवाले कर दिया जाएगा,
और आप को कामयाबी हासिल होगी।” 15 बादशाह
नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा आप को समझाना
पड़ेगा कि आप क़सम खा कर मुझे रब के नाम में
सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हक़ीक़त है।”
16 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम
इस्राईल गल्लाबान से महरूम भेड़-बकरियों की तरह
पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझ से
हमकलाम हुआ, ‘इन का कोई मालिक नहीं है। हर
एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए’।”
17 इस्राईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा, “लो,
क्या मैं ने आप को नहीं बताया था कि यह शख़्स
हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”
18 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब
का फ़रमान सुनें! मैं ने रब को उस के तख़्त पर
बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उस के दाएँ
और बाएँ हाथ खड़ी थी। 19 रब ने पूछा, ‘कौन
इस्राईल के बादशाह अख़ियब को रामात-जिलिआद
पर हम्ला करने पर अकसाएगा ताकि वह वहाँ जा
कर मर जाए?’ एक ने यह मश्वरा दिया, दूसरे ने
वह। 20 आख़िरकार एक रूह रब के सामने खड़ी
हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी’। रब ने
सवाल किया, ‘किस तरह?’ 21 रूह ने जवाब दिया,
‘मैं निकल कर उस के तमाम नबियों पर यूँ क़ाबू

पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।' रब ने फ़रमाया, 'तू
कामयाब होगी। जा और यूँ ही कर!' 22 ऐ बादशाह,
रब ने आप पर आफ़त लाने का फ़ैसला कर लिया
है, इस लिए उस ने झूटी रूह को आप के इन तमाम
नबियों के मुँह में डाल दिया है।"
23 तब सिदक़ियाह बिन कनआना ने आगे बढ़ कर
मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, "रब
का रूह किस तरह मुझ से निकल गया ताकि तुझ
से बात करे?" 24 मीकायाह ने जवाब दिया, "जिस
दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उस में खिसक
कर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आप को पता
चलेगा।"
25 तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया, "मीकायाह
को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे
यूआस के पास वापस भेज दो! 26 उन्हें बता देना,
'इस आदमी को जेल में डाल कर मेरे सहीह-सलामत
वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया
करें'।" 27 मीकायाह बोला, "अगर आप सहीह-
सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी
मारिफ़त बात नहीं की।" फिर वह साथ खड़े लोगों
से मुख़ातिब हुआ, "तमाम लोग ध्यान दें!"

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

28 इस के बाद इस्राईल का बादशाह अख़ियब और
यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त मिल कर रामात-
जिलिआद पर हम्ला करने के लिए रवाना हुए। 29 जंग
से पहले अख़ियब ने यहूसफ़त से कहा, "मैं अपना
भेस बदल कर मैदान-ए-जंग में जाऊँगा। लेकिन
आप अपना शाही लिबास न उतारें।" चुनाँचे इस्राईल
का बादशाह अपना भेस बदल कर मैदान-ए-जंग
में आया। 30 शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर
अपने अफ़सरों को हुक्म दिया था, "सिर्फ़ और सिर्फ़
बादशाह पर हम्ला करें। किसी और से मत लड़ना,
ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा।"
31 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर
यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्यूँकि उन्हों ने कहा, "यही
इस्राईल का बादशाह है!" लेकिन जब यहूसफ़त मदद
के लिए चिल्ला उठा तो रब ने उस की सुनी। उस ने
उन का ध्यान यहूसफ़त से खैंच लिया, 32 क्यूँकि जब
दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अख़ियब बादशाह
नहीं है तो वह उस का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आए।
33 लेकिन किसी ने ख़ास निशाना बांधे बग़ैर अपना
तीर चलाया तो वह अख़ियब को ऐसी जगह जा
लगा जहाँ ज़िराबक्तर का जोड़ था। बादशाह ने अपने
रथबान को हुक्म दिया, "रथ को मोड़ कर मुझे मैदान-
ए-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।"
34 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई
जारी रही, इस लिए बादशाह अपने रथ में टेक लगा
कर दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा रहा। जब सूरज ग़ुरूब
होने लगा तो वह मर गया।

19 1 लेकिन यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त
सहीह-सलामत यरूशलम और अपने महल
में पहुँचा। 2 उस वक़्त याहू बिन हनानी जो ग़ैबबीन था
उसे मिलने के लिए निकला और बादशाह से कहा,
"क्या यह ठीक है कि आप शरीर की मदद करें? आप
क्यूँ उन को प्यार करते हैं जो रब से नफ़रत करते हैं?
यह देख कर रब का ग़ज़ब आप पर नाज़िल हुआ है।
3 तो भी आप में अच्छी बातें भी पाई जाती हैं। आप ने
यसीरत देवी के खम्बों को मुल्क से दूर करके अल्लाह
के तालिब होने का पक्का इरादा कर रखा है।"

यहूसफ़त क़ानूनी कार-रवाई की इस्लाह करता है

4 इस के बाद यहूसफ़त यरूशलम में रहा। लेकिन
एक दिन वह दुबारा निकला। इस बार उस ने जुनूब
में बैर-सबा से ले कर शिमाल में इफ़्राईम के पहाड़ी
इलाक़े तक पूरे यहूदाह का दौरा किया। हर जगह
वह लोगों को रब उन के बापदादा के ख़ुदा के पास
वापस लाया। 5 उस ने यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द
शहरों में क़ाज़ी भी मुक़र्रर किए। 6 उन्हें समझाते हुए
उस ने कहा, "अपनी रविश पर ध्यान दें! याद रहे
कि आप इन्सान के जवाबदिह नहीं हैं बल्कि रब
के। वही आप के साथ होगा जब आप फ़ैसले करेंगे।

7 चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मान कर एहतियात से लोगों
का इन्साफ़ करें। क्यूँकि जहाँ रब हमारा ख़ुदा है वहाँ
बेइन्साफ़ी, जानिबदारी और रिश्वतख़ोरी हो ही नहीं
सकती।”
8 यरूशलम में यहूसफ़त ने कुछ लावियों, इमामों
और ख़ानदानी सरपरस्तों को इन्साफ़ करने की
ज़िम्मादारी दी। रब की शरीअत से मुताल्लिक़ किसी
मुआमले या यरूशलम के बाशिन्दों के दरमियान
झगड़े की सूरत में उन्हें फ़ैसला करना था। 9 यहूसफ़त
ने उन्हें समझाते हुए कहा, “रब का ख़ौफ़ मान
कर अपनी ख़िदमत को वफ़ादारी और पूरे दिल से
सरअन्जाम दें। 10 आप के भाई शहरों से आ कर
आप के सामने अपने झगड़े पेश करेंगे ताकि आप
उन का फ़ैसला करें। आप को क़त्ल के मुक़द्दमों का
फ़ैसला करना पड़ेगा। ऐसे मुआमलात भी होंगे जो
रब की शरीअत, किसी हुक्म, हिदायत या उसूल से
ताल्लुक़ रखेंगे। जो भी हो, लाज़िम है कि आप उन्हें
समझाएँ ताकि वह रब का गुनाह न करें। वर्ना उस का
ग़ज़ब आप और आप के भाइयों पर नाज़िल होगा।
अगर आप यह करें तो आप बेक़ुसूर रहेंगे। 11 इमाम-
ए-आज़म अमरियाह रब की शरीअत से ताल्लुक़
रखने वाले मुआमलात का हत्मी फ़ैसला करेगा। जो
मुक़द्दमे बादशाह से ताल्लुक़ रखते हैं उन का हत्मी
फ़ैसला यहूदाह के क़बीले का सरबराह ज़बदियाह
बिन इस्माईल करेगा। अदालत का इन्तिज़ाम चलाने
में लावी आप की मदद करेंगे। अब हौसला रख कर
अपनी ख़िदमत सरअन्जाम दें। जो भी सहीह काम
करेगा उस के साथ रब होगा।”

अम्मोनियों का यहूदाह पर हम्ला

20 1 कुछ देर के बाद मोआबी, अम्मोनी और
कुछ मऊनी यहूसफ़त से जंग करने के
लिए निकले। 2 एक क़ासिद ने आ कर बादशाह को
इत्तिला दी, “मुल्क-ए-अदोम से एक बड़ी फ़ौज आप
से लड़ने के लिए आ रही है। वह बहीरा-ए-मुर्दार के
दूसरे किनारे से बढ़ती बढ़ती इस वक़्त हससून-तमर
पहुँच चुकी है” (हससून ऐन-जदी का दूसरा नाम है)।
3 यह सुन कर यहूसफ़त घबरा गया। उस ने रब से
राहनुमाई माँगने का फ़ैसला करके एलान किया कि
तमाम यहूदाह रोज़ा रखे। 4 यहूदाह के तमाम शहरों
से लोग यरूशलम आए ताकि मिल कर मदद के लिए
रब से दुआ माँगें। 5 वह रब के घर के नए सहन में
जमा हुए और यहूसफ़त ने सामने आ कर 6 दुआ की,
“ऐ रब, हमारे बापदादा के ख़ुदा! तू ही आसमान
पर तख़्तनशीन ख़ुदा है, और तू ही दुनिया के तमाम
ममालिक पर हुकूमत करता है। तेरे हाथ में क़ुदरत
और ताक़त है। कोई भी तेरा मुक़ाबला नहीं कर
सकता। 7 ऐ हमारे ख़ुदा, तू ने इस मुल्क के पुराने
बाशिन्दों को अपनी क़ौम इस्राईल के आगे से
निकाल दिया। इब्राहीम तेरा दोस्त था, और उस की
औलाद को तू ने यह मुल्क हमेशा के लिए दे दिया।
8 इस में तेरी क़ौम आबाद हुई। तेरे नाम की ताज़ीम
में मक़्दिस बना कर उन्हों ने कहा, 9 ‘जब भी आफ़त
हम पर आए तो हम यहाँ तेरे हुज़ूर आ सकेंगे, चाहे
जंग, वबा, काल या कोई और सज़ा हो। अगर हम
उस वक़्त इस घर के सामने खड़े हो कर मदद के
लिए तुझे पुकारें तो तू हमारी सुन कर हमें बचाएगा,
क्यूँकि इस इमारत पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।’
10 अब अम्मोन, मोआब और पहाड़ी मुल्क सईर
की हरकतों को देख! जब इस्राईल मिस्र से निकला
तो तू ने उसे इन क़ौमों पर हम्ला करने और इन के
इलाक़े में से गुज़रने की इजाज़त न दी। इस्राईल को
मुतबादिल रास्ता इख़तियार करना पड़ा, क्यूँकि उसे
इन्हें हलाक करने की इजाज़त न मिली। 11 अब ध्यान
दे कि यह बदले में क्या कर रहे हैं। यह हमें उस
मौरूसी ज़मीन से निकालना चाहते हैं जो तू ने हमें दी
थी। 12 ऐ हमारे ख़ुदा, क्या तू उन की अदालत नहीं
करेगा? हम तो इस बड़ी फ़ौज के मुक़ाबले में बेबस
हैं। इस के हमले से बचने का रास्ता हमें नज़र नहीं
आता, लेकिन हमारी आँखें मदद के लिए तुझ पर
लगी हैं।”

13 यहूदाह के तमाम मर्द, औरतें और बच्चे वहाँ
रब के हुज़ूर खड़े रहे। 14 तब रब का रूह एक
लावी बनाम यहज़ीएल पर नाज़िल हुआ जब वह
जमाअत के दरमियान खड़ा था। यह आदमी आसफ़
के ख़ानदान का था, और उस का पूरा नाम
यहज़ीएल बिन ज़करियाह बिन बिनायाह बिन यईएल
बिन मत्तनियाह था। 15 उस ने कहा, “यहूदाह और
यरूशलम के लोगो, मेरी बात सुनें! ऐ बादशाह, आप
भी इस पर ध्यान दें। रब फ़रमाता है कि डरो मत, और
इस बड़ी फ़ौज को देख कर मत घबराना। क्यूँकि यह
जंग तुम्हारा नहीं बल्कि मेरा मुआमला है। 16 कल उन
के मुक़ाबले के लिए निकलो। उस वक़्त वह दर्रा-ए-
सीस से हो कर तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहे होंगे। तुम्हारा
उन से मुक़ाबला उस वादी के सिरे पर होगा जहाँ
यरूएल का रेगिस्तान शुरू होता है। 17 लेकिन तुम्हें
लड़ने की ज़रूरत नहीं होगी। बस दुश्मन के आमने-
सामने खड़े हो कर रुक जाओ और देखो कि रब
किस तरह तुम्हें छुटकारा देगा। लिहाज़ा मत डरो,
ऐ यहूदाह और यरूशलम, और दहशत मत खाओ।
कल उन का सामना करने के लिए निकलो, क्यूँकि
रब तुम्हारे साथ होगा।”
18 यह सुन कर यहूसफ़त मुँह के बल झुक गया।
यहूदाह और यरूशलम के तमाम लोगों ने भी औंधे
मुँह झुक कर रब की परस्तिश की। 19 फिर क़िहात
और क़ोरह के ख़ानदानों के कुछ लावी खड़े हो कर
बुलन्द आवाज़ से रब इस्राईल के ख़ुदा की हम्द-ओ-
सना करने लगे।

अम्मोनियों पर फ़त्ह

20 अगले दिन सुब्ह-सवेरे यहूदाह की फ़ौज तक़ूअ
के रेगिस्तान के लिए रवाना हुई। निकलते वक़्त
यहूसफ़त ने उन के सामने खड़े हो कर कहा, “यहूदाह
और यरूशलम के मर्दो, मेरी बात सुनें! रब अपने
ख़ुदा पर भरोसा रखें तो आप क़ाइम रहेंगे। उस
के नबियों की बातों का यक़ीन करें तो आप को
कामयाबी हासिल होगी।” 21 लोगों से मश्वरा करके
यहूसफ़त ने कुछ मर्दों को रब की ताज़ीम में गीत गाने
के लिए मुक़र्रर किया। मुक़द्दस लिबास पहने हुए वह
फ़ौज के आगे आगे चल कर हम्द-ओ-सना का यह
गीत गाते रहे, “रब की सताइश करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।”
22 उस वक़्त रब हम्लाआवर फ़ौज के मुख़ालिफ़ों
को खड़ा कर चुका था। अब जब यहूदाह के मर्द
हम्द के गीत गाने लगे तो वह ताक में से निकल
कर बढ़ती हुई फ़ौज पर टूट पड़े और उसे शिकस्त
दी। 23 फिर अम्मोनियों और मोआबियों ने मिल कर
पहाड़ी मुल्क सईर के मर्दों पर हम्ला किया ताकि उन्हें
मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दें। जब यह हलाक हुए
तो अम्मोनी और मोआबी एक दूसरे को मौत के घाट
उतारने लगे। 24 यहूदाह के फ़ौजियों को इस का इल्म
नहीं था। चलते चलते वह उस मक़ाम तक पहुँच गए
जहाँ से रेगिस्तान नज़र आता है। वहाँ वह दुश्मन
को तलाश करने लगे, लेकिन लाशें ही लाशें ज़मीन
पर बिखरी नज़र आईं। एक भी दुश्मन नहीं बचा था।
25 यहूसफ़त और उस के लोगों के लिए सिर्फ़ दुश्मन
को लूटने का काम बाक़ी रह गया था। कस्रत के
जानवर, क़िस्म क़िस्म का सामान, कपड़े और कई
क़ीमती चीज़ें थीं। इतना सामान था कि वह उसे एक
वक़्त में उठा कर अपने साथ ले जा नहीं सकते थे।
सारा माल जमा करने में तीन दिन लगे।
26 चौथे दिन वह क़रीब की एक वादी में जमा हुए
ताकि रब की तारीफ़ करें। उस वक़्त से वादी का नाम
‘तारीफ़ की वादी’ पड़ गया। 27 इस के बाद यहूदाह
और यरूशलम के तमाम मर्द यहूसफ़त की राहनुमाई
में ख़ुशी मनाते हुए यरूशलम वापस आए। क्यूँकि रब
ने उन्हें दुश्मन की शिकस्त से ख़ुशी का सुनहरा मौक़ा
अता किया था। 28 सितार, सरोद और तुरम बजाते
हुए वह यरूशलम में दाख़िल हुए और रब के घर के
पास जा पहुँचे। 29 जब इर्दगिर्द के ममालिक ने सुना
कि किस तरह रब इस्राईल के दुश्मनों से लड़ा है तो
उन में अल्लाह की दहशत फैल गई। 30 उस वक़्त से
यहूसफ़त सुकून से हुकूमत कर सका, क्यूँकि अल्लाह

ने उसे चारों तरफ़ के ममालिक के हम्लों से महफ़ूज़ रखा था।

यहूसफ़त के आख़िरी साल और मौत

31 यहूसफ़त 35 साल की उम्र में बादशाह बना, और
वह यरूशलम में रह कर 25 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ अज़ूबा बिन्त सिल्ही थी। 32 वह
अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ
करता रहा जो रब को पसन्द था। 33 लेकिन उस ने
भी ऊँचे मक़ामों के मन्दिरों को ख़त्म न किया, और
लोगों के दिल अपने बापदादा के ख़ुदा की तरफ़
माइल न हुए।

34 बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के दौरान
हुआ वह शुरू से ले कर आख़िर तक याहू बिन हनानी
की तारीख़ में बयान किया गया है। बाद में सब कुछ
'शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़' की किताब में दर्ज
किया गया।

35 बाद में यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त ने इस्राईल
के बादशाह अख़ज़ियाह से इत्तिहाद किया, गो उस
का रवय्या बेदीनी का था। 36 दोनों ने मिल कर
तिजारती जहाज़ों का ऐसा बेड़ा बनवाया जो तरसीस
तक पहुँच सके। जब यह जहाज़ बन्दरगाह अस्यून-
जाबर में तय्यार हुए 37 तो मरेसा का रहने वाला
इलीअज़र बिन दूदावाहू ने यहूसफ़त के ख़िलाफ़
पेशगोई की, "चूँकि आप अख़ज़ियाह के साथ
मुत्तहिद हो गए हैं इस लिए रब आप का काम तबाह
कर देगा!" और वाक़ई, यह जहाज़ कभी अपनी
मन्ज़िल-ए-मक़सूद तरसीस तक पहुँच न सके, क्यूँकि
वह पहले ही टुकड़े टुकड़े हो गए।

21 1 जब यहूसफ़त मर कर अपने बापदादा से
जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से
में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र
में दफ़न किया गया। फिर उस का बेटा यहूराम
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

2 यहूसफ़त के बाक़ी बेटे अज़रियाह, यहीएल,
ज़करियाह, अज़रियाहू, मीकाएल और सफ़तियाह
थे। 3 यहूसफ़त ने उन्हें बहुत सोना-चाँदी और दीगर
क़ीमती चीज़ें दे कर यहूदाह के क़िलाबन्द शहरों पर
मुक़र्रर किया था। लेकिन यहूराम को उस ने पहलौठा
होने के बाइस अपना जानशीन बनाया था। 4 बादशाह
बनने के बाद जब यहूदाह की हुकूमत मज़बूती से उस
के हाथ में थी तो यहूराम ने अपने तमाम भाइयों को
यहूदाह के कुछ राहनुमाओं समेत क़त्ल कर दिया।

5 यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और
वह यरूशलम में रह कर 8 साल तक हुकूमत करता
रहा। 6 उस की शादी इस्राईल के बादशाह अख़ियब
की बेटी से हुई थी, और वह इस्राईल के बादशाहों
और ख़ासकर अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर
चलता रहा। उस का चाल-चलन रब को नापसन्द
था। 7 तो भी वह दाऊद के घराने को तबाह नहीं
करना चाहता था, क्यूँकि उस ने दाऊद से अह्द बांध
कर वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का
चराग़ हमेशा तक जलता रहेगा।

8 यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने बग़ावत
की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके अपना
बादशाह मुक़र्रर किया। 9 तब यहूराम अपने अफ़सरों
और तमाम रथों को ले कर उन के पास पहुँचा। जब
जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उस के रथों
पर मुक़र्रर अफ़सरों को घेर लिया, लेकिन रात को
बादशाह घेरने वालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब
हो गया। 10 तो भी मुल्क-ए-अदोम आज तक दुबारा
यहूदाह की हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त
लिब्ना शहर भी सरकश हो कर ख़ुदमुख़्तार हो गया।
यह सब कुछ इस लिए हुआ कि यहूराम ने रब अपने
बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया था, 11 यहाँ तक
कि उस ने यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में कई ऊँची
जगहों पर मन्दिर बनवाए और यरूशलम के बाशिन्दों

को रब से बेवफ़ा हो जाने पर उकसाया। पूरे यहूदाह को वह बुतपरस्ती की ग़लत राह पर ले आया।

12 तब यहूराम को इल्यास नबी से ख़त मिला जिस में लिखा था, “रब आप के बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘तू अपने बाप यहूसफ़त और अपने दादा आसा बादशाह के अच्छे नमूने पर नहीं चला 13 बल्कि इस्राईल के बादशाहों की ग़लत राहों पर। बिलकुल अख़ियब के ख़ानदान की तरह तू यरूशलम और पूरे यहूदाह के बाशिन्दों को बुतपरस्ती की राह पर लाया है। और यह तेरे लिए काफ़ी नहीं था, बल्कि तू ने अपने सगे भाइयों को भी जो तुझ से बेहतर थे क़त्ल कर दिया। 14 इस लिए रब तेरी क़ौम, तेरे बेटों और तेरी बीवियों को तेरी पूरी मिलकियत समेत बड़ी मुसीबत में डालने को है। 15 तू ख़ुद बीमार हो जाएगा। लाइलाज मर्ज़ की ज़द में आ कर तुझे बड़ी देर तक तक्लीफ़ होगी। आख़िरकार तेरी अंतड़ियाँ जिस्म से निकलेंगी’।”

16 उन दिनों में रब ने फ़िलिस्तियों और एथोपिया के पड़ोस में रहने वाले अरब क़बीलों को यहूराम पर हम्ला करने की तहरीक दी। 17 यहूदाह में घुस कर वह यरूशलम तक पहुँच गए और बादशाह के महल को लूटने में कामयाब हुए। तमाम माल-ओ-अस्बाब के इलावा उन्हों ने बादशाह के बेटों और बीवियों को भी छीन लिया। सिर्फ़ सब से छोटा बेटा यहूआख़ज़ यानी अख़ज़ियाह बच निकला।

18 इस के बाद रब का ग़ज़ब बादशाह पर नाज़िल हुआ। उसे लाइलाज बीमारी लग गई जिस से उस की अंतड़ियाँ मुतअस्सिर हुईं। 19 बादशाह की हालत बहुत ख़राब होती गई। दो साल के बाद अंतड़ियाँ जिस्म से निकल गईं। यहूराम शदीद दर्द की हालत में कूच कर गया। जनाज़े पर उस की क़ौम ने उस के एहतिराम में लकड़ी का बड़ा ढेर न जलाया, गो उन्हों ने यह उस के बापदादा के लिए किया था।

20 यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रह कर 8 साल तक हुकूमत करता रहा था। जब फ़ौत हुआ तो किसी को भी अफ़सोस न हुआ। उसे यरूशलम शहर के उस हिस्से में दफ़न तो किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है, लेकिन शाही क़ब्रों में नहीं।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

22 1 यरूशलम के बाशिन्दों ने यहूराम के सब से छोटे बेटे अख़ज़ियाह को तख़्त पर बिठा दिया। बाक़ी तमाम बेटों को उन लुटेरों ने क़त्ल किया था जो अरबों के साथ शाही लश्करगाह में घुस आए थे। यही वजह थी कि यहूदाह के बादशाह यहूराम का बेटा अख़ज़ियाह बादशाह बना। 2 वह 22 साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रह कर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह इस्राईल के बादशाह उम्री की पोती थी। 3 अख़ज़ियाह भी अख़ियब के ख़ानदान के ग़लत नमूने पर चल पड़ा, क्यूँकि उस की माँ उसे बेदीन राहों पर चलने पर उभारती रही। 4 बाप की वफ़ात पर वह अख़ियब के घराने के मश्वरे पर चलने लगा। नतीजे में उस का चाल-चलन रब को नापसन्द था। आख़िरकार यही लोग उस की हलाकत का सबब बन गए।

5 इन ही के मश्वरे पर वह इस्राईल के बादशाह यूराम बिन अख़ियब के साथ मिल कर शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़ने के लिए निकला। जब रामात-जिलिआद के क़रीब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़्मी हुआ 6 और मैदान-ए-जंग को छोड़ कर यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़्म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह बिन यहूराम उस का हाल पूछने के लिए यज़्रएल आया। 7 लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी थी कि यह मुलाक़ात अख़ज़ियाह की हलाकत का बाइस बने। वहाँ पहुँच कर वह यूराम के साथ याहू बिन निम्सी से मिलने के लिए निकला, वही याहू जिसे रब ने मसह करके अख़ियब के ख़ानदान को नेस्त-ओ-नाबूद करने के लिए मख़्सूस किया था। 8 अख़ियब के ख़ानदान की अदालत करते करते याहू की मुलाक़ात यहूदाह के कुछ अफ़सरों और

अख़ज़ियाह के बाज़ रिश्तेदारों से हुई जो अख़ज़ियाह
की ख़िदमत में उस के साथ आए थे। इन्हें क़त्ल
करके 9 याहू अख़ज़ियाह को ढूँडने लगा। पता चला
कि वह सामरिया शहर में छुप गया है। उसे याहू के
पास लाया गया जिस ने उसे क़त्ल कर दिया। तो भी
उसे इज़्ज़त के साथ दफ़न किया गया, क्यूँकि लोगों
ने कहा, “आख़िर वह यहूसफ़त का पोता है जो पूरे
दिल से रब का तालिब रहा।” उस वक़्त अख़ज़ियाह
के ख़ानदान में कोई न पाया गया जो बादशाह का
काम सँभाल सकता।

अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

10 जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम
हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह यहूदाह के
पूरे शाही ख़ानदान को क़त्ल करने लगी। 11 लेकिन
अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा ने अख़ज़ियाह
के छोटे बेटे यूआस को चुपके से उन शहज़ादों में
से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था और उसे
उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिस
में बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते थे। वहाँ वह
अतलियाह की गिरिफ़्त से महफ़ूज़ रहा। यहूसबा
यहोयदा इमाम की बीवी थी। 12 बाद में यूआस को
रब के घर में मुन्तक़िल किया गया जहाँ वह उन
के साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब
अतलियाह मलिका थी।

अतलियाह का अन्जाम और यूआस की हुकूमत

23 1 अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में
यहोयदा ने जुरअत करके सौ सौ फ़ौजियों
पर मुक़र्रर पाँच अफ़सरों से अह्द बांधा। उन के
नाम अज़रियाह बिन यरोहाम, इस्माईल बिन यूहनान,
अज़रियाह बिन ओबेद, मासियाह बिन अदायाह और
इलीसाफ़त बिन ज़िक्री थे। 2 इन आदमियों ने चुपके
से यहूदाह के तमाम शहरों में से गुज़र कर लावियों
और इस्राईली ख़ानदानों के सरपरस्तों को जमा किया
और फिर उन के साथ मिल कर यरूशलम आए।
3 अल्लाह के घर में पूरी जमाअत ने जवान बादशाह
यूआस के साथ अह्द बांधा।

यहोयदा उन से मुख़ातिब हुआ, “हमारे बादशाह
का बेटा ही हम पर हुकूमत करे, क्यूँकि रब ने
मुक़र्रर किया है कि दाऊद की औलाद यह ज़िम्मादारी
सँभाले। 4 चुनाँचे अगले सबत के दिन आप इमामों
और लावियों में से जितने डयूटी पर आएँगे वह तीन
हिस्सों में तक़्सीम हो जाएँ। एक हिस्सा रब के घर
के दरवाज़ों पर पहरा दे, 5 दूसरा शाही महल पर और
तीसरा बुन्याद नामी दरवाज़े पर। बाक़ी सब आदमी
रब के घर के सहनों में जमा हो जाएँ। 6 ख़िदमत करने
वाले इमामों और लावियों के सिवा कोई और रब के
घर में दाख़िल न हो। सिर्फ़ यही अन्दर जा सकते
हैं, क्यूँकि रब ने उन्हें इस ख़िदमत के लिए मख़्सूस
किया है। लाज़िम है कि पूरी क़ौम रब की हिदायात
पर अमल करे। 7 बाक़ी लावी बादशाह के इर्दगिर्द
दाइरा बना कर अपने हथियारों को पकड़े रखें और
जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी रब के घर में
घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।”

8 लावी और यहूदाह के इन तमाम मर्दों ने ऐसा ही
किया। अगले सबत के दिन सब अपने बन्दों समेत
उस के पास आए, वह भी जिन की डयूटी थी और
वह भी जिन की अब छुट्टी थी। क्यूँकि यहोयदा ने
ख़िदमत करने वालों में से किसी को भी जाने की
इजाज़त नहीं दी थी। 9 इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़सरों को दाऊद बादशाह के वह नेज़े और
छोटी और बड़ी ढालें दीं जो अब तक रब के घर
में महफ़ूज़ रखी हुई थीं। 10 फिर उस ने फ़ौजियों
को बादशाह के इर्दगिर्द खड़ा किया। हर एक अपने
हथियार पकड़े तय्यार था। क़ुर्बानगाह और रब के
घर के दरमियान उन का दाइरा रब के घर की जुनूबी
दीवार से ले कर उस की शिमाली दीवार तक फैला
हुआ था। 11 फिर वह यूआस को बाहर लाए और उस
के सर पर ताज रख कर उसे क़वानीन की किताब दे
दी। यूँ यूआस को बादशाह बना दिया गया। उन्हों ने

उसे मसह किया और बुलन्द आवाज़ से नारा लगाने लगे, “बादशाह ज़िन्दाबाद!”

12 लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा, क्यूँकि सब दौड़ कर जमा हो रहे और बादशाह की ख़ुशी में नारे लगा रहे थे। वह रब के घर के सहन में उन के पास आई 13 तो क्या देखती है कि नया बादशाह दरवाज़े के क़रीब उस सतून के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है, और वह अफ़सरों और तुरम बजाने वालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजा कर ख़ुशी मना रही है। साथ साथ गुलूकार अपने साज़ बजा कर हम्द के गीत गाने में राहनुमाई कर रहे हैं। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़ कर चीख़ उठी, “ग़द्दारी, ग़द्दारी!”

14 यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर उन अफ़सरों को बुलाया जिन के सपुर्द फ़ौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, “उसे बाहर ले जाएँ, क्यूँकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए। और जो भी उस के पीछे आए उसे तलवार से मार देना।” 15 वह अतलियाह को पकड़ कर वहाँ से बाहर ले गए और उसे घोड़ों के दरवाज़े पर मार दिया जो शाही महल के पास था।

16 फिर यहोयदा ने क़ौम और बादशाह के साथ मिल कर रब से अह्द बांध कर वादा किया कि हम रब की क़ौम रहेंगे। 17 इस के बाद सब बाल के मन्दिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की क़ुर्बानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्हों ने बाल के पुजारी मत्तान को क़ुर्बानगाहों के सामने ही मार डाला।

18 यहोयदा ने इमामों और लावियों को दुबारा रब के घर को सँभालने की ज़िम्मादारी दी। दाऊद ने उन्हें ख़िदमत के लिए गुरोहों में तक़्सीम किया था। उस की हिदायात के मुताबिक़ उन ही को ख़ुशी मनाते और गीत गाते हुए भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करनी थीं, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। 19 रब के घर के दरवाज़ों पर यहोयदा ने दरबान खड़े किए ताकि ऐसे लोगों को अन्दर आने से रोका जाए जो किसी भी वजह से नापाक हों।

20 फिर वह सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों, असर-ओ-रसूख़ वालों, क़ौम के हुक्मरानों और बाक़ी पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकाल कर बादशाह को बालाई दरवाज़े से हो कर शाही महल में ले गया। वहाँ उन्हों ने बादशाह को तख़्त पर बिठा दिया, 21 और तमाम उम्मत ख़ुशी मनाती रही। यूँ यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्यूँकि अतलियाह को तलवार से मार दिया गया था।

यूआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

24 1 यूआस 7 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ ज़िबियाह बैर-सबा की रहने वाली थी। 2 यहोयदा के जीते जी यूआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसन्द था। 3 यहोयदा ने उस की शादी दो ख़वातीन से कराई जिन के बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

4 कुछ देर के बाद यूआस ने रब के घर की मरम्मत कराने का फ़ैसला किया। 5 इमामों और लावियों को अपने पास बुला कर उस ने उन्हें हुक्म दिया, “यहूदाह के शहरों में से गुज़र कर तमाम लोगों से पैसे जमा करें ताकि आप साल-ब-साल अपने ख़ुदा के घर की मरम्मत करवाएँ। अब जा कर जल्दी करें।” लेकिन लावियों ने बड़ी देर लगाई।

6 तब बादशाह ने इमाम-ए-आज़म यहोयदा को बुला कर पूछा, “आप ने लावियों से मुतालबा क्यूँ नहीं किया कि वह यहूदाह के शहरों और यरूशलम से रब के घर की मरम्मत के पैसे जमा करें? यह तो कोई नई बात नहीं है, क्यूँकि रब का ख़ादिम मूसा भी मुलाक़ात का ख़ैमा ठीक रखने के लिए इस्राईली जमाअत से टैक्स लेता रहा। 7 आप को ख़ुद मालूम है कि उस बेदीन औरत अतलियाह ने अपने पैरोकारों के साथ रब के घर में नक़ब लगा कर रब के लिए

मख़्सूस हदिए छीन लिए और बाल के अपने बुतों की
ख़िदमत के लिए इस्तेमाल किए थे।”
8 बादशाह के हुक्म पर एक सन्दूक़ बनवाया गया
जो बाहर, रब के घर के सहन के दरवाज़े पर रखा
गया। 9 पूरे यहूदाह और यरूशलम में एलान किया
गया कि रब के लिए वह टैक्स अदा किया जाए जिस
का ख़ुदा के ख़ादिम मूसा ने रेगिस्तान में इस्राईलियों
से मुतालबा किया था। 10 यह सुन कर तमाम राहनुमा
बल्कि पूरी क़ौम ख़ुश हुई। अपने हदिए रब के घर
के पास ला कर वह उन्हें सन्दूक़ में डालते रहे।
जब कभी वह भर जाता 11 तो लावी उसे उठा कर
बादशाह के अफ़्सरों के पास ले जाते। अगर उस
में वाक़ई बहुत पैसे होते तो बादशाह का मीरमुन्शी
और इमाम-ए-आज़म का एक अफ़्सर आ कर उसे
ख़ाली कर देते। फिर लावी उसे उस की जगह वापस
रख देते थे। यह सिलसिला रोज़ाना जारी रहा, और
आख़िरकार बहुत बड़ी रक़म इकट्ठी हो गई।
12 बादशाह और यहोयदा यह पैसे उन ठेकेदारों को
दिया करते थे जो रब के घर की मरम्मत करवाते
थे। यह पैसे पत्थर तराशने वालों, बढ़इयों और उन
कारीगरों की उजरत के लिए सर्फ़ हुए जो लोहे और
पीतल का काम करते थे। 13 रब के घर की मरम्मत
के निगरानों ने मेहनत से काम किया, और उन के ज़ेर-
ए-निगरानी तरक़्क़ी होती गई। आख़िर में रब के घर
की हालत पहले की सी हो गई थी बल्कि उन्हों ने उसे
मज़ीद मज़बूत बना दिया। 14 काम के इख़्तिताम पर
ठेकेदार बाक़ी पैसे यूआस बादशाह और यहोयदा के
पास लाए। इन से उन्हों ने रब के घर की ख़िदमत
के लिए दरकार प्याले, सोने और चाँदी के बर्तन
और दीगर कई चीज़ें जो क़ुर्बानियाँ चढ़ाने के लिए
इस्तेमाल होती थीं बनवाईं। यहोयदा के जीते जी रब
के घर में बाक़ाइदगी से भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ
पेश की जाती रहीं।
15 यहोयदा निहायत बूढ़ा हो गया। 130 साल की
उम्र में वह फ़ौत हुआ। 16 उसे यरूशलम के उस हिस्से
में शाही क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का
शहर’ कहलाता है, क्यूँकि उस ने इस्राईल में अल्लाह
और उस के घर की अच्छी ख़िदमत की थी।

यूआस बादशाह रब को तर्क करता है

17 यहोयदा की मौत के बाद यहूदाह के बुज़ुर्ग
यूआस के पास आ कर मुँह के बल झुक गए। उस
वक़्त से वह उन के मश्वरों पर अमल करने लगा।
18 इस का एक नतीजा यह निकला कि वह उन के
साथ मिल कर रब अपने बाप के ख़ुदा के घर को
छोड़ कर यसीरत देवी के खम्बों और बुतों की पूजा
करने लगा। इस गुनाह की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब
यहूदाह और यरूशलम पर नाज़िल हुआ। 19 उस ने
अपने नबियों को लोगों के पास भेजा ताकि वह उन्हें
समझा कर रब के पास वापस लाएँ। लेकिन कोई भी
उन की बात सुनने के लिए तय्यार न हुआ। 20 फिर
अल्लाह का रूह यहोयदा इमाम के बेटे ज़करियाह पर
नाज़िल हुआ, और उस ने क़ौम के सामने खड़े हो कर
कहा, “अल्लाह फ़रमाता है, ‘तुम रब के अह्काम की
ख़िलाफ़वरज़ी क्यूँ करते हो? तुम्हें कामयाबी हासिल
नहीं होगी। चूँकि तुम ने रब को तर्क कर दिया है इस
लिए उस ने तुम्हें तर्क कर दिया है’!”
21 जवाब में लोगों ने ज़करियाह के ख़िलाफ़
साज़िश करके उसे बादशाह के हुक्म पर रब के घर
के सहन में संगसार कर दिया। 22 यूँ यूआस बादशाह
ने उस मेहरबानी का ख़याल न किया जो यहोयदा ने
उस पर की थी बल्कि उसे नज़रअन्दाज़ करके उस के
बेटे को क़त्ल किया। मरते वक़्त ज़करियाह बोला,
“रब ध्यान दे कर मेरा बदला ले!”
23 अगले साल के आग़ाज़ में शाम की फ़ौज यूआस
से लड़ने आई। यहूदाह में घुस कर उन्हों ने यरूशलम
पर फ़त्ह पाई और क़ौम के तमाम बुज़ुर्गों को मार
डाला। सारा लूटा हुआ माल दमिश्क़ को भेजा गया
जहाँ बादशाह था। 24 अगरचे शाम की फ़ौज यहूदाह
की फ़ौज की निस्बत बहुत छोटी थी तो भी रब ने उसे
फ़त्ह बख़्शी। चूँकि यहूदाह ने रब अपने बापदादा
के ख़ुदा को तर्क कर दिया था इस लिए यूआस

को शाम के हाथों सज़ा मिली। 25 जंग के दौरान
यहूदाह का बादशाह शदीद ज़ख़्मी हुआ। जब दुश्मन
ने मुल्क को छोड़ दिया तो यूआस के अफ़सरों ने
उस के ख़िलाफ़ साज़िश की। यहोयदा इमाम के बेटे
के क़त्ल का इन्तिक़ाम ले कर उन्हों ने उसे मार
डाला जब वह बीमार हालत में बिस्तर पर पड़ा था।
बादशाह को यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया
गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। लेकिन शाही
क़ब्रिस्तान में नहीं दफ़नाया गया। 26 साज़िश करने
वालों के नाम ज़बद और यहूज़बद थे। पहले की माँ
सिमआत अम्मोनी थी जबकि दूसरे की माँ सिमरीत
मोआबी थी।

27 यूआस के बेटों, उस के ख़िलाफ़ नबियों के
फ़रमानों और अल्लाह के घर की मरम्मत के बारे
में मज़ीद मालूमात 'शाहान की किताब' में दर्ज हैं।
यूआस के बाद उस का बेटा अमसियाह तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

25 1 अमसियाह 25 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में उस की हुकूमत
का दौरानिया 29 साल था। उस की माँ यहूअद्दान
यरूशलम की रहने वाली थी। 2 जो कुछ अमसियाह
ने किया वह रब को पसन्द था, लेकिन वह पूरे दिल
से रब की पैरवी नहीं करता था। 3 जूँ ही उस के
पाँओ मज़बूती से जम गए उस ने उन अफ़सरों को
सज़ा-ए-मौत दी जिन्हों ने बाप को क़त्ल कर दिया
था। 4 लेकिन उन के बेटों को उस ने ज़िन्दा रहने
दिया और यूँ मूसवी शरीअत के ताबे रहा जिस में रब
फ़रमाता है, "वालिदैन को उन के बच्चों के जराइम के
सबब से सज़ा-ए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उन के
वालिदैन के जराइम के सबब से। अगर किसी को
सज़ा-ए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो
उस ने ख़ुद किया है।"

अदोम से जंग

5 अमसियाह ने यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों
के तमाम मर्दों को बुला कर उन्हें ख़ानदानों के
मुताबिक़ तर्तीब दिया। उस ने हज़ार हज़ार और सौ
सौ फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए। जितने भी मर्द
20 या इस से ज़ाइद साल के थे उन सब की भर्ती हुई।
इस तरह 3,00,000 फ़ौजी जमा हुए। सब बड़ी ढालों
और नेज़ों से लेस थे। 6 इस के इलावा अमसियाह
ने इस्राईल के 1,00,000 तजरिबाकार फ़ौजियों को
उजरत पर भर्ती किया ताकि वह जंग में मदद करें।
उन्हें उस ने चाँदी के तक़रीबन 3,400 किलोग्राम
दिए।

7 लेकिन एक मर्द-ए-ख़ुदा ने अमसियाह के पास
आ कर उसे समझाया, "बादशाह सलामत, लाज़िम
है कि यह इस्राईली फ़ौजी आप के साथ मिल कर
लड़ने के लिए न निकलें। क्यूँकि रब उन के साथ
नहीं है, वह इफ़्राईम के किसी भी रहने वाले के साथ
नहीं है। 8 अगर आप उन के साथ मिल कर निकलें
ताकि मज़बूती से दुश्मन से लड़ीं तो अल्लाह आप
को दुश्मन के सामने गिरा देगा। क्यूँकि अल्लाह को
आप की मदद करने और आप को गिराने की क़ुदरत
हासिल है।" 9 अमसियाह ने एतिराज़ किया, "लेकिन
मैं इस्राईलियों को चाँदी के 3,400 किलोग्राम अदा
कर चुका हूँ। इन पैसों का क्या बनेगा?" मर्द-ए-
ख़ुदा ने जवाब दिया, "रब आप को इस से कहीं
ज़्यादा अता कर सकता है।" 10 चुनाँचे अमसियाह ने
इफ़्राईम से आए हुए तमाम फ़ौजियों को फ़ारिग़ करके
वापस भेज दिया, और वह यहूदाह से बहुत नाराज़
हुए। हर एक बड़े तैश में अपने अपने घर चला गया।

11 तो भी अमसियाह जुरअत करके जंग के लिए
निकला। अपनी फ़ौज को नमक की वादी में ले जा
कर उस ने अदोमियों पर फ़त्ह पाई। उन के 10,000
मर्द मैदान-ए-जंग में मारे गए। 12 दुश्मन के मज़ीद
10,000 आदमियों को गिरिफ़्तार कर लिया गया।
यहूदाह के फ़ौजियों ने क़ैदियों को एक ऊँची चटान

की चोटी पर ले जा कर नीचे गिरा दिया। इस तरह सब पाश पाश हो कर हलाक हुए।

13 इतने में फ़ारिग़ किए गए इस्राईली फ़ौजियों ने सामरिया और बैत-हौरून के बीच में वाक़े यहूदाह के शहरों पर हम्ला किया था। लड़ते लड़ते उन्हों ने 3,000 मर्दों को मौत के घाट उतार दिया और बहुत सा माल लूट लिया था।

अमसियाह की बुतपरस्ती

14 अदोमियों को शिकस्त देने के बाद अमसियाह सईर के बाशिन्दों के बुतों को लूट कर अपने घर वापस लाया। वहाँ उस ने उन्हें खड़ा किया और उन के सामने औंधे मुँह झुक कर उन्हें क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 15 यह देख कर रब उस से बहुत नाराज़ हुआ। उस ने एक नबी को उस के पास भेजा जिस ने कहा, “तू इन देवताओं की तरफ़ क्यूँ रुजू कर रहा है? यह तो अपनी क़ौम को तुझ से नजात न दिला सके।” 16 अमसियाह ने नबी की बात काट कर कहा, “हम ने कब से तुझे बादशाह का मुशीर बना दिया है? ख़ामोश, वर्ना तुझे मार दिया जाएगा।” नबी ने ख़ामोश हो कर इतना ही कहा, “मुझे मालूम है कि अल्लाह ने आप को आप की इन हरकतों की वजह से और इस लिए कि आप ने मेरा मश्वरा क़बूल नहीं किया तबाह करने का फ़ैसला कर लिया है।”

अमसियाह इस्राईल के बादशाह यूआस से लड़ता है

17 एक दिन यहूदाह के बादशाह अमसियाह ने अपने मुशीरों से मश्वरा करने के बाद यूआस बिन यहूआख़ज़ बिन याहू को पैग़ाम भेजा, “आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!” 18 लेकिन इस्राईल के बादशाह यूआस ने जवाब दिया, “लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली जानवरों ने उस के ऊपर से गुज़र कर उसे पाँओ तले कुचल डाला। 19 अदोम पर फ़त्ह पाने के सबब से आप का दिल मग़रूर हो कर मज़ीद शुहरत हासिल करना चाहता है। लेकिन मेरा मश्वरा है कि आप अपने घर में रहें। आप ऐसी मुसीबत को क्यूँ दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?” 20 लेकिन अमसियाह मानने के लिए तय्यार नहीं था। अल्लाह उसे और उस की क़ौम को इस्राईलियों के हवाले करना चाहता था, क्यूँकि उन्हों ने अदोमियों के देवताओं की तरफ़ रुजू किया था।

21 तब इस्राईल का बादशाह यूआस अपनी फ़ौज ले कर यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उस का यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ मुक़ाबला हुआ। 22 इस्राईली फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। 23 इस्राईल के बादशाह यूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन यूआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह उसे यरूशलम लाया और शहर की फ़सील इफ़्राईम नामी दरवाज़े से ले कर कोने के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लम्बाई तक़रीबन 600 फ़ुट थी। 24 जितना भी सोना, चाँदी और क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में था उसे उस ने पूरे का पूरा छीन लिया। उस वक़्त ओबेद-अदोम रब के घर के ख़ज़ाने सँभालता था। यूआस लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को ले कर सामरिया वापस चला गया।

अमसियाह की मौत

25 इस्राईल के बादशाह यूआस बिन यहूआख़ज़ की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह अमसियाह बिन यूआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। 26 बाक़ी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह शुरू से ले कर आख़िर तक ‘शाहान-ए-इस्राईल-ओ-यहूदाह’ की किताब में दर्ज है। 27 जब से वह रब की पैरवी करने से बाज़ आया उस वक़्त से लोग यरूशलम में उस के ख़िलाफ़ साज़िश करने लगे। आख़िरकार उस ने फ़रार हो कर लकीस में पनाह ली, लेकिन

साज़िश करने वालों ने अपने लोगों को उस के पीछे
भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में कामयाब हो
गए। 28 उस की लाश घोड़े पर उठा कर यहूदाह के
शहर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे ख़ानदानी क़ब्र में
दफ़नाया गया।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

26 1 यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह की
जगह उस के बेटे उज़्ज़ियाह को तख़्त पर
बिठा दिया। उस की उम्र 16 साल थी 2 जब उस का
बाप मर कर अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह
बनने के बाद उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा
करके उसे दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उस
ने शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

3 उज़्ज़ियाह 16 साल की उम्र में बादशाह बना
और यरूशलम में रह कर 52 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहने
वाली थी। 4 अपने बाप अमसियाह की तरह उस
का चाल-चलन रब को पसन्द था। 5 इमाम-ए-आज़म
ज़करियाह के जीते जी उज़्ज़ियाह रब का तालिब रहा,
क्यूँकि ज़करियाह उसे अल्लाह का ख़ौफ़ मानने की
तालीम देता रहा। जब तक बादशाह रब का तालिब
रहा उस वक़्त तक अल्लाह उसे कामयाबी बख़्शता
रहा।

6 उज़्ज़ियाह ने फ़िलिस्तियों से जंग करके जात,
यब्ना और अश्दूद की फ़सीलों को ढा दिया। दीगर
कई शहरों को उस ने नए सिरे से तामीर किया जो
अश्दूद के क़रीब और फ़िलिस्तियों के बाक़ी इलाक़े
में थे। 7 लेकिन अल्लाह ने न सिर्फ़ फ़िलिस्तियों से
लड़ते वक़्त उज़्ज़ियाह की मदद की बल्कि उस वक़्त
भी जब जूर-बाल में रहने वाले अरबों और मऊनियों
से जंग छिड़ गई। 8 अम्मोनियों को उज़्ज़ियाह को
ख़राज अदा करना पड़ा, और वह इतना ताक़तवर
बना कि उस की शुहरत मिस्र तक फैल गई।

9 यरूशलम में उज़्ज़ियाह ने कोने के दरवाज़े, वादी
के दरवाज़े और फ़सील के मोड़ पर मज़बूत बुर्ज
बनवाए। 10 उस ने बयाबान में भी बुर्ज तामीर किए
और साथ साथ पत्थर के बेशुमार हौज़ तराशे, क्यूँकि
मग़रिबी यहूदाह के नशेबी पहाड़ी इलाक़े और मैदानी
इलाक़े में उस के बड़े बड़े रेवड़ चरते थे। बादशाह
को काश्तकारी का काम ख़ास पसन्द था। बहुत लोग
पहाड़ी इलाक़ों और ज़रख़ेज़ वादियों में उस के खेतों
और अंगूर के बाग़ों की निगरानी करते थे।

11 उज़्ज़ियाह की ताक़तवर फ़ौज थी। बादशाह के
आला अफ़्सर हननियाह की राहनुमाई में मीरमुन्शी
यईएल ने अफ़्सर मासियाह के साथ फ़ौज की भर्ती
करके उसे तर्तीब दिया था। 12 इन दस्तों पर कुंबों
के 2,600 सरपरस्त मुक़र्रर थे। 13 फ़ौज 3,07,500
जंग लड़ने के क़ाबिल मर्दों पर मुश्तमिल थी। जंग
में बादशाह उन पर पूरा भरोसा कर सकता था।
14 उज़्ज़ियाह ने अपने तमाम फ़ौजियों को ढालों,
नेज़ों, ख़ोदों, ज़िराबक्तरों, कमानों और फ़लाख़न के
सामान से मुसल्लह किया। 15 और यरूशलम के बुर्जों
और फ़सील के कोनों पर उस ने ऐसी मशीनें लगाएँ
जो तीर चला सकती और बड़े बड़े पत्थर फैंक सकती
थीं।

उज़्ज़ियाह मग़रूर हो जाता है

ग़रज़, अल्लाह की मदद से उज़्ज़ियाह की शुहरत दूर
दूर तक फैल गई, और उस की ताक़त बढ़ती गई।

16 लेकिन इस ताक़त ने उसे मग़रूर कर दिया, और
नतीजे में वह ग़लत राह पर आ गया। रब अपने ख़ुदा
का बेवफ़ा हो कर वह एक दिन रब के घर में घुस
गया ताकि बख़ूर की क़ुर्बानगाह पर बख़ूर जलाए।
17 लेकिन इमाम-ए-आज़म अज़रियाह रब के मज़ीद
80 बहादुर इमामों को अपने साथ ले कर उस के पीछे
पीछे गया। 18 उन्हों ने बादशाह उज़्ज़ियाह का सामना
करके कहा, “मुनासिब नहीं कि आप रब को बख़ूर
की क़ुर्बानी पेश करें। यह हारून की औलाद यानी
इमामों की ज़िम्मादारी है जिन्हें इस के लिए मख़्सूस
किया गया है। मक़्दिस से निकल जाएँ, क्यूँकि आप
अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं, और आप की यह हरकत

रब ख़ुदा के सामने इज़्ज़त का बाइस नहीं बनेगी।”
19 उज़्ज़ियाह बख़ूरदान को पकड़े बख़ूर को पेश करने
को था कि इमामों की बातें सुन कर आग-बगूला हो
गया। लेकिन उसी लम्हे उस के माथे पर कोढ़ फूट
निकला। 20 यह देख कर इमाम-ए-आज़म अज़रियाह
और दीगर इमामों ने उसे जल्दी से रब के घर से
निकाल दिया। उज़्ज़ियाह ने ख़ुद भी वहाँ से निकलने
की जल्दी की, क्यूँकि रब ही ने उसे सज़ा दी थी।
21 उज़्ज़ियाह जीते जी इस बीमारी से शिफ़ा न पा
सका। उसे अलाहिदा घर में रहना पड़ा, और उसे
रब के घर में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं थी। उस
के बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया, और
वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।
22 बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के दौरान
शुरू से ले कर आख़िर तक हुआ वह आमूस के
बेटे यसायाह नबी ने क़लमबन्द किया है। 23 जब
उज़्ज़ियाह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो
उसे कोढ़ की वजह से दूसरे बादशाहों के साथ नहीं
दफ़नाया गया बल्कि क़रीब के एक खेत में जो शाही
ख़ानदान का था। फिर उस का बेटा यूताम तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूताम

27 1 यूताम 25 साल की उम्र में बादशाह बना
और यरूशलम में रह कर 16 साल तक
हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बिन्त सदोक़
थी। 2 यूताम ने वह कुछ किया जो रब को पसन्द था।
वह अपने बाप उज़्ज़ियाह के नमूने पर चलता रहा,
अगरचे उस ने कभी भी बाप की तरह रब के घर
में घुस जाने की कोशिश न की। लेकिन आम लोग
अपनी ग़लत राहों से न हटे।
3 यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाज़ा तामीर
किया। ओफ़ल पहाड़ी जिस पर रब का घर था उस
की दीवार को उस ने बहुत जगहों पर मज़बूत बना
दिया। 4 यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में उस ने शहर
तामीर किए और जंगली इलाक़ों में क़िले और बुर्ज
बनाए। 5 जब अम्मोनी बादशाह के साथ जंग छिड़ गई
तो उस ने अम्मोनियों को शिकस्त दी। तीन साल तक
उन्हें उसे सालाना ख़राज के तौर पर तक़रीबन 3,400
किलोग्राम चाँदी, 16,00,000 किलोग्राम गन्दुम और
13,50,000 किलोग्राम जौ अदा करना पड़ा। 6 यूँ
यूताम की ताक़त बढ़ती गई। और वजह यह थी कि
वह साबितक़दमी से रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर चलता
रहा।
7 बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ
वह ‘शाहान-ए-इस्राईल-ओ-यहूदाह’ की किताब में
क़लमबन्द है। उस में उस की तमाम जंगों और बाक़ी
कामों का ज़िक्र है। 8 वह 25 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रह कर 16 साल हुकूमत
करता रहा। 9 जब वह मर कर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद
का शहर’ कहलाता है दफ़नाया गया। फिर उस का
बेटा आख़ज़ तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

28 1 आख़ज़ 20 साल की उम्र में बादशाह बना
और यरूशलम में रह कर 16 साल हुकूमत
करता रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला
बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसन्द था।
2 क्यूँकि उस ने इस्राईल के बादशाहों का चाल-चलन
अपनाया। बाल के बुत ढलवा कर 3 उस ने न सिर्फ़
वादी-ए-बिन-हिन्नूम में बुतों को क़ुर्बानियाँ पेश कीं
बल्कि अपने बेटों को भी क़ुर्बानी के तौर पर जला
दिया। यूँ वह उन क़ौमों के घिनौने रस्म-ओ-रिवाज
अदा करने लगा जिन्हें रब ने इस्राईलियों के आगे
मुल्क से निकाल दिया था। 4 आख़ज़ बख़ूर जला कर
अपनी क़ुर्बानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों
और हर घने दरख़्त के साय में चढ़ाता था।
5 इसी लिए रब उस के ख़ुदा ने उसे शाम के बादशाह
के हवाले कर दिया। शाम की फ़ौज ने उसे शिकस्त
दी और यहूदाह के बहुत से लोगों को क़ैदी बना कर
दमिश्क़ ले गई। आख़ज़ को इस्राईल के बादशाह

फ़िक़्रह बिन रमलियाह के हवाले भी कर दिया गया जिस ने उसे शदीद नुक़्सान पहुँचाया। 6 एक ही दिन में यहूदाह के 1,20,000 तजरिबाकार फ़ौजी शहीद हुए। यह सब कुछ इस लिए हुआ कि क़ौम ने रब अपने बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया था। 7 उस वक़्त इफ़्राईम के क़बीले के पहलवान ज़िक्री ने आख़ज़ के बेटे मासियाह, महल के इंचार्ज अज़्रीक़ाम और बादशाह के बाद सब से आला अफ़्सर इल्क़ाना को मार डाला। 8 इस्राईलियों ने यहूदाह की 2,00,000 औरतें और बच्चे छीन लिए और कस्रत का माल लूट कर सामरिया ले गए।

इस्राईल क़ैदियों को रिहा कर देता है

9 सामरिया में रब का एक नबी बनाम ओदीद रहता था। जब इस्राईली फ़ौजी मैदान-ए-जंग से वापस आए तो ओदीद उन से मिलने के लिए निकला। उस ने उन से कहा, “देखें, रब आप के बापदादा का ख़ुदा यहूदाह से नाराज़ था, इस लिए उस ने उन्हें आप के हवाले कर दिया। लेकिन आप लोग तैश में आ कर उन पर यूँ टूट पड़े कि उन का क़त्ल-ए-आम आसमान तक पहुँच गया है। 10 लेकिन यह काफ़ी नहीं था। अब आप यहूदाह और यरूशलम के बचे हुओं को अपने ग़ुलाम बनाना चाहते हैं। क्या आप समझते हैं कि हम उन से अच्छे हैं? नहीं, आप से भी रब अपने ख़ुदा के ख़िलाफ़ गुनाह सरज़द हुए हैं। 11 चुनाँचे मेरी बात सुनें! इन क़ैदियों को वापस करें जो आप ने अपने भाइयों से छीन लिए हैं। क्यूँकि रब का सख़्त ग़ज़ब आप पर नाज़िल होने वाला है।”

12 इफ़्राईम के क़बीले के कुछ सरपरस्तों ने भी फ़ौजियों का सामना किया। उन के नाम अज़रियाह बिन यूहनान, बरकियाह बिन मसिल्लमोत, यहिज़क़ियाह बिन सल्लूम और अमासा बिन ख़द्ली थे। 13 उन्हों ने कहा, “इन क़ैदियों को यहाँ मत ले आएँ, वर्ना हम रब के सामने क़ुसूरवार ठहरेंगे। क्या आप चाहते हैं कि हम अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करें? हमारा क़ुसूर पहले ही बहुत बड़ा है। हाँ, रब इस्राईल पर सख़्त ग़ुस्से है।”

14 तब फ़ौजियों ने अपने क़ैदियों को आज़ाद करके उन्हें लूटे हुए माल के साथ बुज़ुर्गों और पूरी जमाअत के हवाले कर दिया। 15 मज़कूरा चार आदमियों ने सामने आ कर क़ैदियों को अपने पास मह्फ़ूज़ रखा। लूटे हुए माल में से कपड़े निकाल कर उन्हों ने उन्हें उन में तक़्सीम किया जो बरहना थे। इस के बाद उन्हों ने तमाम क़ैदियों को कपड़े और जूते दे दिए, उन्हें खाना खिलाया, पानी पिलाया और उन के ज़ख़्मों की मर्हम-पट्टी की। जितने थकावट की वजह से चल न सकते थे उन्हें उन्हों ने गधों पर बिठाया, फिर चलते चलते सब को खजूर के शहर यरीहू तक पहुँचाया जहाँ उन के अपने लोग थे। फिर वह सामरिया लौट आए।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

16 उस वक़्त आख़ज़ बादशाह ने असूर के बादशाह से इल्तिमास की, “हमारी मदद करने आएँ।” 17 क्यूँकि अदोमी यहूदाह में घुस कर कुछ लोगों को गिरिफ़्तार करके अपने साथ ले गए थे। 18 साथ साथ फ़िलिस्ती मग़रिबी यहूदाह के नशेबी पहाड़ी इलाक़े और जुनूबी इलाक़े में घुस आए थे और ज़ैल के शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में रहने लगे थे : बैत-शम्स, अय्यालोन, जदीरोत, नीज़ सोका, तिम्नत और जिम्ज़ू गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों समेत। 19 इस तरह रब ने यहूदाह को आख़ज़ की वजह से ज़ेर कर दिया, क्यूँकि बादशाह ने यहूदाह में बेलगाम बेराहरवी फैलने दी और रब से अपनी बेवफ़ाई का साफ़ इज़हार किया था।

20 असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर अपनी फ़ौज ले कर मुल्क में आया, लेकिन आख़ज़ की मदद करने के बजाय उस ने उसे तंग किया। 21 आख़ज़ ने रब के घर, शाही महल और अपने आला अफ़्सरों के ख़ज़ानों को लूट कर सारा माल असूर के बादशाह

को भेज दिया, लेकिन बेफ़ाइदा। इस से उसे सहीह मदद न मिली।

22 गो वह उस वक़्त बड़ी मुसीबत में था तो भी रब से और दूर हो गया। 23 वह शाम के देवताओं को क़ुर्बानियाँ पेश करने लगा, क्यूँकि उस का ख़याल था कि इन ही ने मुझे शिकस्त दी है। उस ने सोचा, “शाम के देवता अपने बादशाहों की मदद करते हैं! अब से मैं उन्हें क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा ताकि वह मेरी भी मदद करें।” लेकिन यह देवता बादशाह आख़ज़ और पूरी क़ौम के लिए तबाही का बाइस बन गए। 24 आख़ज़ ने हुक्म दिया कि अल्लाह के घर का सारा सामान निकाल कर टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए। फिर उस ने रब के घर के दरवाज़ों पर ताला लगा दिया। उस की जगह उस ने यरूशलम के कोने कोने में क़ुर्बानगाहें खड़ी कर दीं। 25 साथ साथ उस ने दीगर माबूदों को क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए यहूदाह के हर शहर की ऊँची जगहों पर मन्दिर तामीर किए। ऐसी हरकतों से वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा को तैश दिलाता रहा।

26 बाक़ी जो कुछ उस की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उस ने किया वह शुरू से ले कर आख़िर तक ‘शाहान-ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल’ की किताब में दर्ज है। 27 जब आख़ज़ मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम में दफ़न किया गया, लेकिन शाही क़ब्रिस्तान में नहीं। फिर उस का बेटा हिज़क़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

हिज़क़ियाह बादशाह रब के घर को दुबारा खोल देता है

29 1 जब हिज़क़ियाह बादशाह बना तो उस की उम्र 25 साल थी। यरूशलम में रह कर वह 29 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ अबियाह बिन्त ज़करियाह थी।

2 अपने बाप दाऊद की तरह उस ने ऐसा काम किया जो रब को पसन्द था। 3 अपनी हुकूमत के पहले साल के पहले महीने में उस ने रब के घर के दरवाज़ों को खोल कर उन की मरम्मत करवाई। 4 लावियों और इमामों को बुला कर उस ने उन्हें रब के घर के मशरिक़ी सहन में जमा किया 5 और कहा,

“ऐ लावियो, मेरी बात सुनें! अपने आप को ख़िदमत के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें, और रब अपने बापदादा के ख़ुदा के घर को भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें। तमाम नापाक चीज़ें मक़्दिस से निकालें! 6 हमारे बापदादा बेवफ़ा हो कर वह कुछ करते गए जो रब हमारे ख़ुदा को नापसन्द था। उन्हों ने उसे छोड़ दिया, अपने मुँह को रब की सुकूनतगाह से फेर कर दूसरी तरफ़ चल पड़े। 7 रब के घर के सामने वाले बरामदे के दरवाज़ों पर उन्हों ने ताला लगा कर चराग़ों को बुझा दिया। न इस्राईल के ख़ुदा के लिए बख़ूर जलाया जाता, न भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ मक़्दिस में पेश की जाती थीं। 8 इसी वजह से रब का ग़ज़ब यहूदाह और यरूशलम पर नाज़िल हुआ है। हमारी हालत को देख कर लोग घबरा गए, उन के रोंगटे खड़े हो गए हैं। हम दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गए हैं। आप ख़ुद इस के गवाह हैं। 9 हमारी बेवफ़ाई की वजह से हमारे बाप तलवार की ज़द में आ कर मारे गए और हमारे बेटे-बेटियाँ और बीवियाँ हम से छीन ली गई हैं। 10 लेकिन अब मैं रब इस्राईल के ख़ुदा के साथ अह्द बांधना चाहता हूँ ताकि उस का सख़्त क़हर हम से टल जाए। 11 मेरे बेटो, अब सुस्ती न दिखाएँ, क्यूँकि रब ने आप को चुन कर अपने ख़ादिम बनाया है। आप को उस के हुज़ूर खड़े हो कर उस की ख़िदमत करने और बख़ूर जलाने की ज़िम्मादारी दी गई है।”

12 फिर ज़ैल के लावी ख़िदमत के लिए तय्यार हुए :

क़िहात के ख़ानदान का महत बिन अमासी और योएल बिन अज़रियाह,

मिरारी के ख़ानदान का क़ीस बिन अब्दी और अज़रियाह बिन यहल्लल-एल,

जैर्सोन के ख़ानदान का यूआख़ बिन ज़िम्मा और अदन बिन यूआख़,

13 इलीसफ़न के ख़ानदान का सिम्री और यईएल,
आसफ़ के ख़ानदान का ज़करियाह और मत्तनियाह,
14 हैमान के ख़ानदान का यहीएल और सिमई,
यदूतून के ख़ानदान का समायाह और उज़्ज़ीएल।
15 बाक़ी लावियों को बुला कर उन्हों ने अपने आप
को रब की ख़िदमत के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
किया। फिर वह बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ रब
के घर को पाक-साफ़ करने लगे। काम करते करते
उन्हों ने इस का ख़याल किया कि सब कुछ रब की
हिदायात के मुताबिक़ हो रहा हो। 16 इमाम रब के
घर में दाख़िल हुए और उस में से हर नापाक चीज़
निकाल कर उसे सहन में लाए। वहाँ से लावियों ने
सब कुछ उठा कर शहर से बाहर वादी-ए-क़िद्रोन
में फैंक दिया। 17 रब के घर की क़ुद्दूसियत बहाल
करने का काम पहले महीने के पहले दिन शुरू हुआ,
और एक हफ़्ते के बाद वह सामने वाले बरामदे तक
पहुँच गए थे। एक और हफ़्ता पूरे घर को मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करने में लग गया।

पहले महीने के 16वें दिन काम मुकम्मल हुआ।
18 हिज़क़ियाह बादशाह के पास जा कर उन्हों ने
कहा, “हम ने रब के पूरे घर को पाक-साफ़ कर दिया
है। इस में जानवरों को जलाने की क़ुर्बानगाह उस
के सामान समेत और वह मेज़ जिस पर रब के लिए
मख़्सूस रोटियाँ रखी जाती हैं उस के सामान समेत
शामिल है। 19 और जितनी चीज़ें आख़ज़ ने बेवफ़ा बन
कर अपनी हुकूमत के दौरान रद्द कर दी थीं उन सब
को हम ने ठीक करके दुबारा मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
कर दिया है। अब वह रब की क़ुर्बानगाह के सामने
पड़ी हैं।”

रब के घर की दुबारा मख़्सूसियत

20 अगले दिन हिज़क़ियाह बादशाह सुब्ह-सवेरे
शहर के तमाम बुज़ुर्गों को बुला कर उन के साथ
रब के घर के पास गया। 21 सात जवान बैल, सात
मेंढे और भेड़ के सात बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी
के लिए सहन में लाए गए, नीज़ सात बकरे जिन्हें
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर शाही ख़ानदान, मक़्दिस
और यहूदाह के लिए पेश करना था। हिज़क़ियाह
ने हारून की औलाद यानी इमामों को हुक्म दिया
कि इन जानवरों को रब की क़ुर्बानगाह पर चढ़ाएँ।
22 पहले बैलों को ज़बह किया गया। इमामों ने उन
का ख़ून जमा करके उसे क़ुर्बानगाह पर छिड़का।
इस के बाद मेंढों को ज़बह किया गया। इस बार
भी इमामों ने उन का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़का।
भेड़ के बच्चों के ख़ून के साथ भी यही कुछ किया
गया। 23 आख़िर में गुनाह की क़ुर्बानी के लिए मख़्सूस
बकरों को बादशाह और जमाअत के सामने लाया
गया, और उन्हों ने अपने हाथों को बकरों के सरों
पर रख दिया। 24 फिर इमामों ने उन्हें ज़बह करके
उन का ख़ून गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर क़ुर्बानगाह
पर छिड़का ताकि इस्राईल का कफ़्फ़ारा दिया जाए।
क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि भस्म होने वाली
और गुनाह की क़ुर्बानी तमाम इस्राईल के लिए पेश
की जाए।

25 हिज़क़ियाह ने लावियों को झाँझ, सितार और
सरोद थमा कर उन्हें रब के घर में खड़ा किया। सब
कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ हुआ जो रब ने दाऊद
बादशाह, उस के ग़ैबबीन जाद और नातन नबी की
मारिफ़त दी थीं। 26 लावी उन साज़ों के साथ खड़े हो
गए जो दाऊद ने बनवाए थे, और इमाम अपने तुरमों
को थामे उन के साथ खड़े हुए। 27 फिर हिज़क़ियाह ने
हुक्म दिया कि भस्म होने वाली क़ुर्बानी क़ुर्बानगाह
पर पेश की जाए। जब इमाम यह काम करने लगे
तो लावी रब की तारीफ़ में गीत गाने लगे। साथ
साथ तुरम और दाऊद बादशाह के बनवाए हुए साज़
बजने लगे। 28 तमाम जमाअत औंधे मुँह झुक गई
जबकि लावी गीत गाते और इमाम तुरम बजाते रहे।
यह सिलसिला इस क़ुर्बानी की तक्मील तक जारी
रहा। 29 इस के बाद हिज़क़ियाह और तमाम हाज़िरीन
दुबारा मुँह के बल झुक गए। 30 बादशाह और बुज़ुर्गों
ने लावियों को कहा, “दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के
ज़बूर गा कर रब की सताइश करें।” चुनाँचे लावियों

ने बड़ी ख़ुशी से हम्द-ओ-सना के गीत गाए । वह भी औंधे मुँह झुक गए।

31 फिर हिज़क़ियाह लोगों से मुख़ातिब हुआ, “आज आप ने अपने आप को रब के लिए वक़्फ़ कर दिया है। अब वह कुछ रब के घर के पास ले आएँ जो आप ज़बह और सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना चाहते हैं।” तब लोग ज़बह और सलामती की अपनी क़ुर्बानियाँ ले आए। नीज़, जिस का भी दिल चाहता था वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ लाया। 32 इस तरह भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए 70 बैल, 100 मेंढे और भेड़ के 200 बच्चे जमा करके रब को पेश किए गए। 33 उन के इलावा 600 बैल और 3,000 भेड़-बकरियाँ रब के घर के लिए मख़्सूस की गईं। 34 लेकिन इतने जानवरों की खालों को उतारने के लिए इमाम कम थे, इस लिए लावियों को उन की मदद करनी पड़ी। इस काम के इख़तिताम तक बल्कि जब तक मज़ीद इमाम ख़िदमत के लिए तय्यार और पाक नहीं हो गए थे लावी मदद करते रहे। इमामों की निस्बत ज़्यादा लावी पाक-साफ़ हो गए थे, क्यूँकि उन्हों ने ज़्यादा लगन से अपने आप को रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया था। 35 भस्म होने वाली बेशुमार क़ुर्बानियों के इलावा इमामों ने सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी भी जलाई। साथ साथ उन्हों ने मै की नज़रें पेश कीं।

यूँ रब के घर में ख़िदमत का नए सिरे से आग़ाज़ हुआ। 36 हिज़क़ियाह और पूरी क़ौम ने ख़ुशी मनाई कि अल्लाह ने यह सब कुछ इतनी जल्दी से हमें मुहय्या किया है।

फ़सह की ईद के लिए दावत

30 1 हिज़क़ियाह ने इस्राईल और यहूदाह की हर जगह अपने क़ासिदों को भेज कर लोगों को रब के घर में आने की दावत दी, क्यूँकि वह उन के साथ रब इस्राईल के ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना चाहता था। उस ने इफ़्राईम और मनस्सी के क़बीलों को भी दावतनामे भेजे। 2 बादशाह ने अपने अफ़सरों और यरूशलम की पूरी जमाअत के साथ मिल कर फ़ैसला किया कि हम यह ईद दूसरे महीने में मनाएँगे। 3 आम तौर पर यह पहले महीने में मनाई जाती थी, लेकिन उस वक़्त तक ख़िदमत के लिए तय्यार इमाम काफ़ी नहीं थे। क्यूँकि अब तक सब अपने आप को पाक-साफ़ न कर सके। दूसरी बात यह थी कि लोग इतनी जल्दी से यरूशलम में जमा न हो सके। 4 इन बातों के पेश-ए-नज़र बादशाह और तमाम हाज़िरीन इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि फ़सह की ईद मुल्तवी की जाए। 5 उन्हों ने फ़ैसला किया कि हम तमाम इस्राईलियों को जुनूब में बैर-सबा से ले कर शिमाल में दान तक दावत देंगे। सब यरूशलम आएँ ताकि हम मिल कर रब इस्राईल के ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाएँ। असल में यह ईद बड़ी देर से हिदायात के मुताबिक़ नहीं मनाई गई थी।

6 बादशाह के हुक्म पर क़ासिद इस्राईल और यहूदाह में से गुज़रे। हर जगह उन्हों ने लोगों को बादशाह और उस के अफ़सरों के ख़त पहुँचा दिए। ख़त में लिखा था,

“ऐ इस्राईलियो, रब इब्राहीम, इस्हाक़ और इस्राईल के ख़ुदा के पास वापस आएँ! फिर वह भी आप के पास जो असूरी बादशाहों के हाथ से बच निकले हैं वापस आएगा। 7 अपने बापदादा और भाइयों की तरह न बनें जो रब अपने बापदादा के ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए थे। यही वजह है कि उस ने उन्हें ऐसी हालत में छोड़ दिया कि जिस ने भी उन्हें देखा उस के रोंगटे खड़े हो गए। आप ख़ुद इस के गवाह हैं। 8 उन की तरह अड़े न रहें बल्कि रब के ताबे हो जाएँ। उस के मक़्दिस में आएँ, जो उस ने हमेशा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर दिया है। रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करें ताकि आप उस के सख़्त ग़ज़ब का निशाना न रहें। 9 अगर आप रब के पास लौट आएँ तो जिन्हों ने आप के भाइयों और उन के बाल-बच्चों को क़ैद कर लिया है वह उन पर रहम करके उन्हें इस मुल्क में वापस आने देंगे। क्यूँकि रब आप का ख़ुदा मेहरबान

और रहीम है। अगर आप उस के पास वापस आएँ तो वह अपना मुँह आप से नहीं फेरेगा।”

10 क़ासिद इफ़्राईम और मनस्सी के पूरे क़बाइली इलाक़े में से गुज़रे और हर शहर को यह पैग़ाम पहुँचाया। फिर चलते चलते वह ज़बूलून तक पहुँच गए। लेकिन अक्सर लोग उन की बात सुन कर हंस पड़े और उन का मज़ाक़ उड़ाने लगे। 11 सिर्फ़ आशर, मनस्सी और ज़बूलून के चन्द एक आदमी फ़रोतनी का इज़हार करके मान गए और यरूशलम आए। 12 यहूदाह में अल्लाह ने लोगों को तहरीक दी कि उन्हों ने यकदिली से उस हुक्म पर अमल किया जो बादशाह और बुज़ुर्गों ने रब के फ़रमान के मुताबिक़ दिया था।

हिज़क़ियाह और क़ौम फ़सह की ईद मनाते हैं

13 दूसरे महीने में बहुत ज़्यादा लोग बेख़मीरी रोटी की ईद मनाने के लिए यरूशलम पहुँचे। 14 पहले उन्हों ने शहर से बुतों की तमाम क़ुर्बानगाहों को दूर कर दिया। बख़ूर जलाने की छोटी क़ुर्बानगाहों को भी उन्हों ने उठा कर वादी-ए-क़िद्रोन में फैंक दिया। 15 दूसरे महीने के 14वें दिन फ़सह के लेलों को ज़बह किया गया। इमामों और लावियों ने शर्मिन्दा हो कर अपने आप को ख़िदमत के लिए पाक-साफ़ कर रखा था, और अब उन्हों ने भस्म होने वाली क़ुर्बानियों को रब के घर में पेश किया। 16 वह ख़िदमत के लिए यूँ खड़े हो गए जिस तरह मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की शरीअत में फ़रमाया गया है। लावी क़ुर्बानियों का ख़ून इमामों के पास लाए जिन्हों ने उसे क़ुर्बानगाह पर छिड़का।

17 लेकिन हाज़िरीन में से बहुत से लोगों ने अपने आप को सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। उन के लिए लावियों ने फ़सह के लेलों को ज़बह किया ताकि उन की क़ुर्बानियों को भी रब के लिए मख़्सूस किया जा सके। 18 ख़ासकर इफ़्राईम, मनस्सी, ज़बूलून और इश्कार के अक्सर लोगों ने अपने आप को सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। चुनाँचे वह फ़सह के खाने में उस हालत में शरीक न हुए जिस का तक़ाज़ा शरीअत करती है। लेकिन हिज़क़ियाह ने उन की शफ़ाअत करके दुआ की, “रब जो मेहरबान है हर एक को मुआफ़ करे 19 जो पूरे दिल से रब अपने बापदादा के ख़ुदा का तालिब रहने का इरादा रखता है, ख़्वाह उसे मक़्दिस के लिए दरकार पाकीज़गी हासिल न भी हो।” 20 रब ने हिज़क़ियाह की दुआ सुन कर लोगों को बहाल कर दिया।

21 यरूशलम में जमाशुदा इस्राईलियों ने बड़ी ख़ुशी से सात दिन तक बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। हर दिन लावी और इमाम अपने साज़ बजा कर बुलन्द आवाज़ से रब की सताइश करते रहे। 22 लावियों ने रब की ख़िदमत करते वक़्त बड़ी समझदारी दिखाई, और हिज़क़ियाह ने इस में उन की हौसलाअफ़ज़ाई की।

पूरे हफ़्ते के दौरान इस्राईली रब को सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करके क़ुर्बानी का अपना हिस्सा खाते और रब अपने बापदादा के ख़ुदा की तम्जीद करते रहे।

23 इस हफ़्ते के बाद पूरी जमाअत ने फ़ैसला किया कि ईद को मज़ीद सात दिन मनाया जाए। चुनाँचे उन्हों ने ख़ुशी से एक और हफ़्ते के दौरान ईद मनाई। 24 तब यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह ने जमाअत के लिए 1,000 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ पेश कीं जबकि बुज़ुर्गों ने जमाअत के लिए 1,000 बैल और 10,000 भेड़-बकरियाँ चढ़ाईं। इतने में मज़ीद बहुत से इमामों ने अपने आप को रब की ख़िदमत के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर लिया था।

25 जितने भी आए थे ख़ुशी मना रहे थे, ख़्वाह वह यहूदाह के बाशिन्दे थे, ख़्वाह इमाम, लावी, इस्राईली या इस्राईल और यहूदाह में रहने वाले परदेसी मेहमान। 26 यरूशलम में बड़ी शादमानी थी, क्यूँकि ऐसी ईद दाऊद बादशाह के बेटे सुलेमान के ज़माने से ले कर उस वक़्त तक यरूशलम में मनाई नहीं गई थी।

27 ईद के इख़तिताम पर इमामों और लावियों ने खड़े हो कर क़ौम को बरकत दी। और अल्लाह ने उन

की सुनी, उन की दुआ आसमान पर उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँची।

पूरे यहूदाह में बुतपरस्ती का ख़ातमा

31 1 ईद के बाद जमाअत के तमाम इस्राईलियों ने यहूदाह के शहरों में जा कर पत्थर के बुतों को टुकड़े टुकड़े कर दिया, यसीरत देवी के खम्बों को काट डाला, ऊँची जगहों के मन्दिरों को ढा दिया और ग़लत क़ुर्बानगाहों को ख़त्म कर दिया। जब तक उन्हों ने यह काम यहूदाह, बिनयमीन, इफ़्राईम और मनस्सी के पूरे इलाक़ों में तक्मील तक नहीं पहुँचाया था उन्हों ने आराम न किया। इस के बाद वह सब अपने अपने शहरों और घरों को चले गए।

रब के घर में इन्तिज़ाम की इस्लाह

2 हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों को दुबारा ख़िदमत के वैसे ही गुरोहों में तक़्सीम किया जैसे पहले थे। उन की ज़िम्मादारियाँ भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाना, रब के घर में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ख़िदमात अन्जाम देना और हम्द-ओ-सना के गीत गाना थीं।

3 जो जानवर बादशाह अपनी मिलकियत से रब के घर को देता रहा वह भस्म होने वाली उन क़ुर्बानियों के लिए मुक़र्रर थे जिन को रब की शरीअत के मुताबिक़ हर सुब्ह-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और दीगर ईदों पर रब के घर में पेश की जाती थीं।

4 हिज़क़ियाह ने यरूशलम के बाशिन्दों को हुक्म दिया कि अपनी मिलकियत में से इमामों और लावियों को कुछ दें ताकि वह अपना वक़्त रब की शरीअत की तक्मील के लिए वक़्फ़ कर सकें। 5 बादशाह का यह एलान सुनते ही इस्राईली फ़राख़दिली से ग़ल्ला, अंगूर के रस, ज़ैतून के तेल, शहद और खेतों की बाक़ी पैदावार का पहला फल रब के घर में लाए। बहुत कुछ इकट्ठा हुआ, क्यूँकि लोगों ने अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा वहाँ पहुँचाया। 6 यहूदाह के बाक़ी शहरों के बाशिन्दे भी साथ रहने वाले इस्राईलियों समेत अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के घर में लाए। जो भी बैल, भेड़-बकरियाँ और बाक़ी चीज़ें उन्हों ने रब अपने ख़ुदा के लिए वक़्फ़ की थीं वह रब के घर में पहुँचीं जहाँ लोगों ने उन्हें बड़े ढेर लगा कर इकट्ठा किया। 7 चीज़ें जमा करने का यह सिलसिला तीसरे महीने में शुरू हुआ और सातवें महीने में इख़्तिताम को पहुँचा। 8 जब हिज़क़ियाह और उस के अफ़सरों ने आ कर देखा कि कितनी चीज़ें इकट्ठी हो गई हैं तो उन्हों ने रब और उस की क़ौम इस्राईल को मुबारक कहा।

9 जब हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों से इन ढेरों के बारे में पूछा 10 तो सदोक़ के ख़ानदान का इमाम-ए-आज़म अज़रियाह ने जवाब दिया, “जब से लोग अपने हदिए यहाँ ले आते हैं उस वक़्त से हम जी भर कर खा सकते हैं बल्कि काफ़ी कुछ बच भी जाता है। क्यूँकि रब ने अपनी क़ौम को इतनी बरकत दी है कि यह सब कुछ बाक़ी रह गया है।”

11 तब हिज़क़ियाह ने हुक्म दिया कि रब के घर में गोदाम बनाए जाएँ। जब ऐसा किया गया 12 तो रज़ाकाराना हदिए, पैदावार का दसवाँ हिस्सा और रब के लिए मख़्सूस किए गए अतियात उन में रखे गए। कूननियाह लावी इन चीज़ों का इंचार्ज बना जबकि उस का भाई सिमई उस का मददगार मुक़र्रर हुआ। 13 इमाम-ए-आज़म अज़रियाह रब के घर के पूरे इन्तिज़ाम का इंचार्ज था, इस लिए हिज़क़ियाह बादशाह ने उस के साथ मिल कर दस निगरान मुक़र्रर किए जो कूननियाह और सिमई के तहत ख़िदमत अन्जाम दें। उन के नाम यहीएल, अज़ज़ियाह, नहत, असाहेल, यरीमोत, यूज़बद, इलीएल, इस्माकियाह, महत और बिनायाह थे।

14 जो लावी मशरिक़ी दरवाज़े का दरबान था उस का नाम क़ोरे बिन यिम्ना था। अब उसे रब को रज़ाकाराना तौर पर दिए गए हदिए और उस के लिए मख़्सूस किए गए अतीए तक़्सीम करने का निगरान

बनाया गया। 15 अदन, मिन्यमीन, यशूअ, समायाह,
अमरियाह और सकनियाह उस के मददगार थे। उन
की ज़िम्मादारी लावियों के शहरों में रहने वाले इमामों
को उन का हिस्सा देना थी। बड़ी वफ़ादारी से वह
ख़याल रखते थे कि ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों के
तमाम इमामों को वह हिस्सा मिल जाए जो उन का
हक़ बनता था, ख़्वाह वह बड़े थे या छोटे। 16 जो
अपने गुरोह के साथ रब के घर में ख़िदमत करता
था उसे उस का हिस्सा बराह-ए-रास्त मिलता था।
इस सिलसिले में लावी के क़बीले के जितने मर्दों
और लड़कों की उम्र तीन साल या इस से ज़ाइद
थी उन की फ़हरिस्त बनाई गई। 17 इन फ़हरिस्तों में
इमामों को उन के कुंबों के मुताबिक़ दर्ज किया गया।
इसी तरह 20 साल या इस से ज़ाइद के लावियों को
उन ज़िम्मादारियों और ख़िदमत के मुताबिक़ जो वह
अपने गुरोहों में सँभालते थे फ़हरिस्तों में दर्ज किया
गया। 18 ख़ानदानों की औरतें और बेटे-बेटियाँ छोटे
बच्चों समेत भी इन फ़हरिस्तों में दर्ज थीं। चूँकि उन
के मर्द वफ़ादारी से रब के घर में ख़िदमत करते थे,
इस लिए यह दीगर अफ़राद भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
समझे जाते थे। 19 जो इमाम शहरों से बाहर उन
चरागाहों में रहते थे जो उन्हें हारून की औलाद की
हैसियत से मिली थीं उन्हें भी हिस्सा मिलता था। हर
शहर के लिए आदमी चुने गए जो इमामों के ख़ानदानों
के मर्दों और फ़हरिस्त में दर्ज तमाम लावियों को वह
हिस्सा दिया करें जो उन का हक़ था।

20 हिज़क़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि पूरे
यहूदाह में ऐसा ही किया जाए। उस का काम रब
के नज़दीक अच्छा, मुन्सिफ़ाना और वफ़ादाराना था।
21 जो कुछ उस ने अल्लाह के घर में इन्तिज़ाम दुबारा
चलाने और शरीअत को क़ाइम करने के सिलसिले
में किया उस के लिए वह पूरे दिल से अपने ख़ुदा का
तालिब रहा। नतीजे में उसे कामयाबी हासिल हुई।

असूरी यहूदाह में घुस आते हैं

32 1 हिज़क़ियाह ने वफ़ादारी से यह तमाम
मन्सूबे तक्मील तक पहुँचाए। फिर एक
दिन असूर का बादशाह सन्हेरिब अपनी फ़ौज के
साथ यहूदाह में घुस आया और क़िलाबन्द शहरों
का मुहासरा करने लगा ताकि उन पर क़ब्ज़ा करे।
2 जब हिज़क़ियाह को इत्तिला मिली कि सन्हेरिब आ
कर यरूशलम पर हम्ला करने की तय्यारियाँ कर रहा
है 3 तो उस ने अपने सरकारी और फ़ौजी अफ़सरों
से मश्वरा किया। ख़याल यह पेश किया गया कि
यरूशलम शहर के बाहर तमाम चश्मों को मल्बे से
बन्द किया जाए। सब मुत्तफ़िक़ हो गए, 4 क्यूँकि
उन्हों ने कहा, “असूर के बादशाह को यहाँ आ कर
कस्रत का पानी क्यूँ मिले?” बहुत से आदमी जमा
हुए और मिल कर चश्मों को मल्बे से बन्द कर दिया।
उन्हों ने उस ज़मीनदोज़ नाले का मुँह भी बन्द कर
दिया जिस के ज़रीए पानी शहर में पहुँचता था।

5 इस के इलावा हिज़क़ियाह ने बड़ी मेहनत से
फ़सील के टूटे-फूटे हिस्सों की मरम्मत करवा कर
उस पर बुर्ज बनवाए। फ़सील के बाहर उस ने एक
और चारदीवारी तामीर की जबकि यरूशलम के
उस हिस्से के चबूतरे मज़ीद मज़बूत करवाए जो
‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। साथ साथ उस ने बड़ी
मिक़्दार में हथियार और ढालें बनवाईं। 6 हिज़क़ियाह
ने लोगों पर फ़ौजी अफ़सर मुक़र्रर किए।

फिर उस ने सब को दरवाज़े के साथ वाले चौक पर
इकट्ठा करके उन की हौसलाअफ़ज़ाई की, 7 “मज़बूत
और दिलेर हों! असूर के बादशाह और उस की बड़ी
फ़ौज को देख कर मत डरें, क्यूँकि जो ताक़त हमारे
साथ है वह उसे हासिल नहीं है। 8 असूर के बादशाह
के लिए सिर्फ़ ख़ाकी आदमी लड़ रहे हैं जबकि रब
हमारा ख़ुदा हमारे साथ है। वही हमारी मदद करके
हमारे लिए लड़ेगा!” हिज़क़ियाह बादशाह के इन
अल्फ़ाज़ से लोगों की बड़ी हौसलाअफ़ज़ाई हुई।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

9 जब असूर का बादशाह सन्हेरिब अपनी पूरी फ़ौज
के साथ लकीस का मुहासरा कर रहा था तो उस ने
वहाँ से यरूशलम को वफ़द भेजा ताकि यहूदाह के
बादशाह हिज़क़ियाह और यहूदाह के तमाम बाशिन्दों
को पैग़ाम पहुँचाए,
10 “शाह-ए-असूर सन्हेरिब फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है कि तुम मुहासरे के
वक़्त यरूशलम को छोड़ना नहीं चाहते? 11 जब
हिज़क़ियाह कहता है, ‘रब हमारा ख़ुदा हमें असूर
के बादशाह से बचाएगा’ तो वह तुम्हें ग़लत राह पर
ला रहा है। इस का सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि
तुम भूके और प्यासे मर जाओगे। 12 हिज़क़ियाह ने
तो इस ख़ुदा की बेहुरमती की है। क्यूँकि उस ने
उस की ऊँची जगहों के मन्दिरों और क़ुर्बानगाहों
को ढा कर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि
एक ही क़ुर्बानगाह के सामने परस्तिश करें, एक ही
क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ। 13 क्या तुम्हें इल्म
नहीं कि मैं और मेरे बापदादा ने दीगर ममालिक की
तमाम क़ौमों के साथ क्या कुछ किया? क्या इन
क़ौमों के देवता अपने मुल्कों को मुझ से बचाने के
क़ाबिल रहे हैं? हरगिज़ नहीं! 14 मेरे बापदादा ने इन
सब को तबाह कर दिया, और कोई भी देवता अपनी
क़ौम को मुझ से बचा न सका। तो फिर तुम्हारा देवता
तुम्हें किस तरह मुझ से बचाएगा? 15 हिज़क़ियाह से
फ़रेब न खाओ! वह इस तरह तुम्हें ग़लत राह पर न
लाए। उस की बात पर एतिमाद मत करना, क्यूँकि
अब तक किसी भी क़ौम या सल्तनत का देवता
अपनी क़ौम को मेरे या मेरे बापदादा के क़ब्ज़े से
छुटकारा न दिला सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें
मेरे क़ब्ज़े से किस तरह बचाएगा?”
16 ऐसी बातें करते करते सन्हेरिब के अफ़सर रब
इस्राईल के ख़ुदा और उस के ख़ादिम हिज़क़ियाह
पर कुफ़्र बकते गए।
17 असूर के बादशाह ने वफ़द के हाथ ख़त भी भेजा
जिस में उस ने रब इस्राईल के ख़ुदा की इहानत की।
ख़त में लिखा था, “जिस तरह दीगर ममालिक के
देवता अपनी क़ौमों को मुझ से महफ़ूज़ न रख सके
उसी तरह हिज़क़ियाह का देवता भी अपनी क़ौम को
मेरे क़ब्ज़े से नहीं बचाएगा।”
18 असूरी अफ़सरों ने बुलन्द आवाज़ से इब्रानी
ज़बान में बादशाह का पैग़ाम फ़सील पर खड़े
यरूशलम के बाशिन्दों तक पहुँचाया ताकि उन
में ख़ौफ़-ओ-हिरास फैल जाए और यूँ शहर पर
क़ब्ज़ा करने में आसानी हो जाए। 19 इन अफ़सरों
ने यरूशलम के ख़ुदा का यूँ तमस्ख़ुर उड़ाया जैसा
वह दुनिया की दीगर क़ौमों के देवताओं का उड़ाया
करते थे, हालाँकि दीगर माबूद सिर्फ़ इन्सानी हाथों
की पैदावार थे।

रब सन्हेरिब को सज़ा देता है

20 फिर हिज़क़ियाह बादशाह और आमूस के बेटे
यसायाह नबी ने चिल्लाते हुए आसमान पर तख़्तनशीन
ख़ुदा से इल्तिमास की। 21 जवाब में रब ने असूरियों
की लश्करगाह में एक फ़रिश्ता भेजा जिस ने तमाम
बेहतरीन फ़ौजियों को अफ़सरों और कमाँडरों समेत
मौत के घाट उतार दिया। चुनाँचे सन्हेरिब शर्मिन्दा
हो कर अपने मुल्क लौट गया। वहाँ एक दिन जब
वह अपने देवता के मन्दिर में दाख़िल हुआ तो उस
के कुछ बेटों ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया।
22 इस तरह रब ने हिज़क़ियाह और यरूशलम के
बाशिन्दों को शाह-ए-असूर सन्हेरिब से छुटकारा
दिलाया। उस ने उन्हें दूसरी क़ौमों के हमलों से भी
महफ़ूज़ रखा, और चारों तरफ़ अम्न-ओ-अमान फैल
गया। 23 बेशुमार लोग यरूशलम आए ताकि रब को
क़ुर्बानियाँ पेश करें और हिज़क़ियाह बादशाह को
क़ीमती तुहफ़े दें। उस वक़्त से तमाम क़ौमें उस का
बड़ा एहतिराम करने लगीं।

हिज़क़ियाह के आख़िरी साल

24 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार हुआ कि
मरने की नौबत आ पहुँची। तब उस ने रब से दुआ की,
और रब ने उस की सुन कर एक इलाही निशान से
इस की तस्दीक़ की। 25 लेकिन हिज़क़ियाह मग़रूर
हुआ, और उस ने इस मेहरबानी का मुनासिब जवाब
न दिया। नतीजे में रब उस से और यहूदाह और
यरूशलम से नाराज़ हुआ। 26 फिर हिज़क़ियाह और
यरूशलम के बाशिन्दों ने पछता कर अपना ग़ुरूर
छोड़ दिया, इस लिए रब का ग़ज़ब हिज़क़ियाह के
जीते जी उन पर नाज़िल न हुआ।

27 हिज़क़ियाह को बहुत दौलत और इज़्ज़त हासिल
हुई, और उस ने अपनी सोने-चाँदी, जवाहिर, बल्सान
के क़ीमती तेल, ढालों और बाक़ी क़ीमती चीज़ों के
लिए ख़ास ख़ज़ाने बनवाए। 28 उस ने ग़ल्ला, अंगूर
का रस और ज़ैतून का तेल महफ़ूज़ रखने के लिए
गोदाम तामीर किए और अपने गाय-बैलों और भेड़-
बकरियों को रखने की बहुत सी जगहें भी बनवा लीं।
29 उस के गाय-बैलों और भेड़-बकरियों में इज़ाफ़ा
होता गया, और उस ने कई नए शहरों की बुन्याद
रखी, क्यूँकि अल्लाह ने उसे निहायत ही अमीर बना
दिया था। 30 हिज़क़ियाह ही ने जैहून चश्मे का मुँह
बन्द करके उस का पानी सुरंग के ज़रीए मग़रिब की
तरफ़ यरूशलम के उस हिस्से में पहुँचाया जो 'दाऊद
का शहर' कहलाता है। जो भी काम उस ने शुरू
किया उस में वह कामयाब रहा। 31 एक दिन बाबल
के हुक्मरानों ने उस के पास वफ़द भेजा ताकि उस
इलाही निशान के बारे में मालूमात हासिल करें जो
यहूदाह में हुआ था। उस वक़्त अल्लाह ने उसे अकेला
छोड़ दिया ताकि उस के दिल की हक़ीक़ी हालत
जाँच ले।

32 बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो नेक काम उस ने किया वह 'आमूस
के बेटे यसायाह नबी की रोया' में क़लमबन्द है जो
'शाहान-ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल' की किताब में दर्ज
है। 33 जब वह मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो
उसे शाही क़ब्रिस्तान की एक ऊँची जगह पर दफ़नाया
गया। जब जनाज़ा निकला तो यहूदाह और यरूशलम
के तमाम बाशिन्दों ने उस का एहतिराम किया। फिर
उस का बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

33 1 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया 55 साल था। 2 मनस्सी का चाल-चलन रब
को नापसन्द था। उस ने उन क़ौमों के क़ाबिल-ए-घिन
रस्म-ओ-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इस्राईलियों
के आगे से निकाल दिया था। 3 ऊँची जगहों के जिन
मन्दिरों को उस के बाप हिज़क़ियाह ने ढा दिया था
उन्हें उस ने नए सिरे से तामीर किया। उस ने बाल
देवताओं की क़ुर्बानगाहें बनवाईं और यसीरत देवी
के खम्बे खड़े किए। इन के इलावा वह सूरज, चाँद
बल्कि आसमान के पूरे लश्कर को सिज्दा करके
उन की ख़िदमत करता था। 4 उस ने रब के घर में
भी अपनी क़ुर्बानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस
मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, "यरूशलम में मेरा नाम
अबद तक क़ाइम रहेगा।" 5 लेकिन मनस्सी ने पर्वा
न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान
के पूरे लश्कर के लिए क़ुर्बानगाहें बनवाईं। 6 यहाँ
तक कि उस ने वादी-ए-बिन-हिन्नूम में अपने बेटों
को भी क़ुर्बान करके जला दिया। जादूगरी, ग़ैबदानी
और अफ़्सूँगरी करने के इलावा वह मुर्दों की रूहों से
राबिता करने वालों और रम्मालों से भी मश्वरा करता
था।

ग़रज़ उस ने बहुत कुछ किया जो रब को नापसन्द
था और उसे तैश दिलाया। 7 देवी का बुत बनवा कर
उस ने उसे अल्लाह के घर में खड़ा किया, हालाँकि
रब ने दाऊद और उस के बेटे सुलेमान से कहा था,
"इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैं ने तमाम
इस्राईली क़बीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम
अबद तक क़ाइम रखूँगा। 8 अगर इस्राईली एहतियात

से मेरे उन तमाम अह्काम और हिदायात की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इस्राईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैं ने उन के बापदादा को अता किया था।” 9 लेकिन मनस्सी ने यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों को ऐसे ग़लत काम करने पर उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त उन के आगे से तबाह कर दिया था।

10 गो रब ने मनस्सी और अपनी क़ौम को समझाया, लेकिन उन्हों ने पर्वा न की। 11 तब रब ने असूरी बादशाह के कमाँडरों को यहूदाह पर हम्ला करने दिया। उन्हों ने मनस्सी को पकड़ कर उस की नाक में नकेल डाली और उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ कर बाबल ले गए। 12 जब वह यूँ मुसीबत में फंस गया तो मनस्सी रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा करने की कोशिश करने लगा और अपने आप को अपने बापदादा के ख़ुदा के हुज़ूर पस्त कर दिया।

13 और रब ने उस की इल्तिमास पर ध्यान दे कर उस की सुनी। उसे यरूशलम वापस ला कर उस ने उस की हुकूमत बहाल कर दी। तब मनस्सी ने जान लिया कि रब ही ख़ुदा है।

14 इस के बाद उस ने ‘दाऊद के शहर’ की बैरूनी फ़सील नए सिरे से बनवाई। यह फ़सील जैहून चश्मे के मग़रिब से शुरू हुई और वादी-ए-क़िद्रोन में से गुज़र कर मछली के दरवाज़े तक पहुँच गई। इस दीवार ने रब के घर की पूरी पहाड़ी बनाम ओफ़ल का इहाता कर लिया और बहुत बुलन्द थी। इस के इलावा बादशाह ने यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों पर फ़ौजी अफ़सर मुक़र्रर किए। 15 उस ने अजनबी माबूदों को बुत समेत रब के घर से निकाल दिया। जो क़ुर्बानगाहें उस ने रब के घर की पहाड़ी और बाक़ी यरूशलम में खड़ी की थीं उन्हें भी उस ने ढा कर शहर से बाहर फैंक दिया। 16 फिर उस ने रब की क़ुर्बानगाह को नए सिरे से तामीर करके उस पर सलामती और शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। साथ साथ उस ने यहूदाह के बाशिन्दों से कहा कि रब इस्राईल के ख़ुदा की ख़िदमत करें। 17 गो लोग इस के बाद भी ऊँची जगहों पर अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करते थे, लेकिन अब से वह इन्हें सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा को पेश करते थे।

18 बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहान-ए-इस्राईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। वहाँ उस की अपने ख़ुदा से दुआ भी बयान की गई है और वह बातें भी जो ग़ैबबीनों ने रब इस्राईल के ख़ुदा के नाम में उसे बताई थीं। 19 ग़ैबबीनों की किताब में भी मनस्सी की दुआ बयान की गई है और यह कि अल्लाह ने किस तरह उस की सुनी। वहाँ उस के तमाम गुनाहों और बेवफ़ाई का ज़िक्र है, नीज़ उन ऊँची जगहों की फ़हरिस्त दर्ज है जहाँ उस ने अल्लाह के ताबे हो जाने से पहले मन्दिर बना कर यसीरत देवी के खम्बे और बुत खड़े किए थे। 20 जब मनस्सी मर कर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उस के महल में दफ़न किया गया। फिर उस का बेटा अमून तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

21 अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता रहा। 22 अपने बाप मनस्सी की तरह वह ऐसा ग़लत काम करता रहा जो रब को नापसन्द था। जो बुत उस के बाप ने बनवाए थे उन ही की पूजा वह करता और उन ही को क़ुर्बानियाँ पेश करता था। 23 लेकिन उस में और मनस्सी में यह फ़र्क़ था कि बेटे ने अपने आप को रब के सामने पस्त न किया बल्कि उस का क़ुसूर मज़ीद संगीन होता गया। 24 एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने उस के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल कर दिया। 25 लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश करने वालों को मार डाला और अमून की जगह उस के बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

यूसियाह बादशाह बुतपरस्ती की मुख़ालफ़त करता है

34 1 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में रह कर उस की हुकूमत
का दौरानिया 31 साल था। 2 यूसियाह वह कुछ
करता रहा जो रब को पसन्द था। वह अपने बाप
दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा और उस से न
दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।
3 अपनी हुकूमत के आठवें साल में वह अपने बाप
दाऊद के ख़ुदा की मर्ज़ी तलाश करने लगा, गो उस
वक़्त वह जवान ही था। अपनी हुकूमत के 12वें साल
में वह ऊँची जगहों के मन्दिरों, यसीरत देवी के खम्बों
और तमाम तराशे और ढाले हुए बुतों को पूरे मुल्क
से दूर करने लगा। यूँ तमाम यरूशलम और यहूदाह
इन चीज़ों से पाक-साफ़ हो गया। 4 बादशाह के ज़ेर-
ए-निगरानी बाल देवताओं की क़ुर्बानगाहों को ढा
दिया गया। बख़ूर की जो क़ुर्बानगाहें उन के ऊपर
थीं उन्हें उस ने टुकड़े टुकड़े कर दिया। यसीरत देवी
के खम्बों और तराशे और ढाले हुए बुतों को ज़मीन
पर पटख़ कर उस ने उन्हें पीस कर उन की क़ब्रों
पर बिखेर दिया जिन्हों ने जीते जी उन को क़ुर्बानियाँ
पेश की थीं। 5 बुतपरस्त पुजारियों की हड्डियों को उन
की अपनी क़ुर्बानगाहों पर जलाया गया। इस तरह से
यूसियाह ने यरूशलम और यहूदाह को पाक-साफ़
कर दिया। 6–7 यह उस ने न सिर्फ़ यहूदाह बल्कि
मनस्सी, इफ़्राईम, शमाऊन और नफ़्ताली तक के
शहरों में इर्दगिर्द के खंडरात समेत भी किया। उस
ने क़ुर्बानगाहों को गिरा कर यसीरत देवी के खम्बों
और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके चिकनाचूर कर
दिया। तमाम इस्राईल की बख़ूर की क़ुर्बानगाहों को
उस ने ढा दिया। इस के बाद वह यरूशलम वापस
चला गया।

रब के घर की मरम्मत

8 अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह ने साफ़न
बिन असलियाह, यरूशलम पर मुक़र्रर अफ़्सर
मासियाह और बादशाह के मुशीर-ए-ख़ास यूआख़
बिन यूआख़ज़ को रब अपने ख़ुदा के घर के पास भेजा
ताकि उस की मरम्मत करवाएँ। उस वक़्त मुल्क और
रब के घर को पाक-साफ़ करने की मुहिम्म जारी थी।
9 इमाम-ए-आज़म ख़िलक़ियाह के पास जा कर उन्हों
ने उसे वह पैसे दिए जो लावी के दरबानों ने रब के
घर में जमा किए थे। यह हदिए मनस्सी और इफ़्राईम
के बाशिन्दों, इस्राईल के तमाम बचे हुए लोगों और
यहूदाह, बिनयमीन और यरूशलम के रहने वालों की
तरफ़ से पेश किए गए थे।
10 अब यह पैसे उन ठेकेदारों के हवाले कर दिए
गए जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे थे। इन
पैसों से ठेकेदारों ने उन कारीगरों की उजरत अदा
की जो रब के घर की मरम्मत करके उसे मज़बूत कर
रहे थे। 11 कारीगरों और तामीर करने वालों ने इन
पैसों से तराशे हुए पत्थर और शहतीरों की लकड़ी भी
ख़रीदी। इमारतों में शहतीरों को बदलने की ज़रूरत
थी, क्यूँकि यहूदाह के बादशाहों ने उन पर ध्यान नहीं
दिया था, लिहाज़ा वह गल गए थे। 12 इन आदमियों ने
वफ़ादारी से ख़िदमत सरअन्जाम दी। चार लावी इन
की निगरानी करते थे जिन में यहत और अबदियाह
मिरारी के ख़ानदान के थे जबकि ज़करियाह और
मसुल्लाम क़िहात के ख़ानदान के थे। जितने लावी
साज़ बजाने में माहिर थे 13 वह मज़दूरों और तमाम
दीगर कारीगरों पर मुक़र्रर थे। कुछ और लावी मुन्शी,
निगरान और दरबान थे।

रब के घर में शरीअत की किताब मिल जाती है

14 जब वह पैसे बाहर लाए गए जो रब के घर में जमा
हुए थे तो ख़िलक़ियाह को शरीअत की वह किताब
मिली जो रब ने मूसा की मारिफ़त दी थी। 15 उसे
मीरमुन्शी साफ़न को दे कर उस ने कहा, “मुझे रब के
घर में शरीअत की किताब मिली है।” 16 तब साफ़न
किताब को ले कर बादशाह के पास गया और उसे
इत्तिला दी, “जो भी ज़िम्मादारी आप के मुलाज़िमों
को दी गई उन्हें वह अच्छी तरह पूरा कर रहे हैं।

17 उन्हों ने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर
मुक़र्ररर ठेकेदारों और बाक़ी काम करने वालों को
दे दिए हैं।” 18 फिर साफ़न ने बादशाह को बताया,
“ख़िलक़ियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब
को खोल कर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की
तिलावत करने लगा।
19 किताब की बातें सुन कर बादशाह ने रंजीदा हो
कर अपने कपड़े फाड़ लिए। 20 उस ने ख़िलक़ियाह,
अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अब्दोन बिन मीकाह,
मीरमुन्शी साफ़न और अपने ख़ास ख़ादिम असायाह
को बुला कर उन्हें हुक्म दिया, 21 “जा कर मेरी और
इस्राईल और यहूदाह के बचे हुए अफ़राद की ख़ातिर
रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरयाफ़्त
करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होने वाला है
वह निहायत सख़्त है, क्यूँकि हमारे बापदादा न रब
के फ़रमान के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारी है जो किताब में दर्ज की गई हैं।”
22 चुनाँचे ख़िलक़ियाह बादशाह के भेजे हुए चन्द
आदमियों के साथ ख़ुल्दा नबिया को मिलने गया।
ख़ुल्दा का शौहर सल्लूम बिन तोक़हत बिन ख़स्रा रब
के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए
इलाक़े में रहते थे। 23–24 ख़ुल्दा ने उन्हें जवाब दिया,
“रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी
ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है
कि मैं इस शहर और इस के बाशिन्दों पर आफ़त
नाज़िल करूँगा। वह तमाम लानतें पूरी हो जाएँगी
जो बादशाह के हुज़ूर पढ़ी गई किताब में बयान की
गई हैं। 25 क्यूँकि मेरी क़ौम ने मुझे तर्क करके दीगर
माबूदों को क़ुर्बानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों
से बुत बना कर मुझे तैश दिलाया है। मेरा ग़ज़ब इस
मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं
होगा।’ 26 लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ
जिस ने आप को रब से दरयाफ़्त करने के लिए भेजा
है और उसे बता दें कि रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘मेरी बातें सुन कर 27 तेरा दिल नर्म हो गया है।
जब तुझे पता चला कि मैं ने इस मक़ाम और इस
के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ बात की है तो तू ने अपने
आप को अल्लाह के सामने पस्त कर दिया। तू ने बड़ी
इनकिसारी से रंजीदा हो कर अपने कपड़े फाड़ लिए
और मेरे हुज़ूर फूट फूट कर रोया। रब फ़रमाता है कि
यह देख कर मैं ने तेरी सुनी है। 28 जब तू मेरे कहने पर
मर कर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से
दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर और उस के बाशिन्दों
पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा’।”
अफ़्सर बादशाह के पास वापस गए और उसे
ख़ुल्दा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अह्द बांधता है

29 तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के तमाम
बुज़ुर्गों को बुला कर 30 रब के घर में गया। सब लोग
छोटे से ले कर बड़े तक उस के साथ गए यानी यहूदाह
के आदमी, यरूशलम के बाशिन्दे, इमाम और लावी।
वहाँ पहुँच कर जमाअत के सामने अह्द की उस पूरी
किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली
थी।
31 फिर बादशाह ने अपने सतून के पास खड़े हो
कर रब के हुज़ूर अह्द बांधा और वादा किया, “हम
रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिल-ओ-जान से उस
के अह्काम और हिदायात पूरी करके इस किताब
में दर्ज अह्द की बातें क़ाइम रखेंगे।” 32 यूसियाह
ने मुतालबा किया कि यरूशलम और यहूदाह के
तमाम बाशिन्दे अह्द में शरीक हो जाएँ। उस वक़्त
से यरूशलम के बाशिन्दे अपने बापदादा के ख़ुदा के
अह्द के साथ लिपटे रहे।
33 यूसियाह ने इस्राईल के पूरे मुल्क से तमाम घिनौने
बुतों को दूर कर दिया। इस्राईल के तमाम बाशिन्दों
को उस ने ताकीद की, “रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत
करें।” चुनाँचे यूसियाह के जीते जी वह रब अपने
बापदादा की राह से दूर न हुए।

यूसियाह फ़सह की ईद मनाता है

35 1 फिर यूसियाह ने रब की ताज़ीम में फ़सह
की ईद मनाई। पहले महीने के 14वें दिन
फ़सह का लेला ज़बह किया गया। 2 बादशाह ने
इमामों को काम पर लगा कर उन की हौसलाअफ़ज़ाई
की कि वह रब के घर में अपनी ख़िदमत अच्छी
तरह अन्जाम दें। 3 लावियों को तमाम इस्राईलियों
को शरीअत की तालीम देने की ज़िम्मादारी दी गई
थी, और साथ साथ उन्हें रब की ख़िदमत के लिए
मख़्सूस किया गया था। उन से यूसियाह ने कहा,
“मुक़द्दस सन्दूक़ को उस इमारत में रखें जो
इस्राईल के बादशाह दाऊद के बेटे सुलेमान ने तामीर
किया। उसे अपने कंधों पर उठा कर इधर उधर
ले जाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अब से अपना
वक़्त रब अपने ख़ुदा और उस की क़ौम इस्राईल
की ख़िदमत में सर्फ़ करें। 4 उन ख़ानदानी गुरोहों के
मुताबिक़ ख़िदमत के लिए तय्यार रहें जिन की तर्तीब
दाऊद बादशाह और उस के बेटे सुलेमान ने लिख
कर मुक़र्रर की थी। 5 फिर मक़्दिस में उस जगह खड़े
हो जाएँ जो आप के ख़ानदानी गुरोह के लिए मुक़र्रर
है और उन ख़ानदानों की मदद करें जो क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने के लिए आते हैं और जिन की ख़िदमत करने
की ज़िम्मादारी आप को दी गई है। 6 अपने आप को
ख़िदमत के लिए मख़्सूस करें और फ़सह के लेले
ज़बह करके अपने हमवतनों के लिए इस तरह तय्यार
करें जिस तरह रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया
था।”
7 ईद की ख़ुशी में यूसियाह ने ईद मनाने वालों को
अपनी मिलकियत में से 30,000 भेड़-बकरियों के
बच्चे दिए। यह जानवर फ़सह की क़ुर्बानी के तौर
पर चढ़ाए गए जबकि बादशाह की तरफ़ से 3,000
बैल दीगर क़ुर्बानियों के लिए इस्तेमाल हुए। 8 इस
के इलावा बादशाह के अफ़्सरों ने भी अपनी ख़ुशी
से क़ौम, इमामों और लावियों को जानवर दिए।
अल्लाह के घर के सब से आला अफ़्सरों ख़िलक़ियाह,
ज़करियाह और यहीएल ने दीगर इमामों को फ़सह
की क़ुर्बानी के लिए 2,600 भेड़-बकरियों के बच्चे
दिए, नीज़ 300 बैल। 9 इसी तरह लावियों के
राहनुमाओं ने दीगर लावियों को फ़सह की क़ुर्बानी
के लिए 5,000 भेड़-बकरियों के बच्चे दिए, नीज़ 500
बैल। उन में से तीन भाई बनाम कूननियाह, समायाह
और नतनीएल थे जबकि दूसरों के नाम हसबियाह,
यईएल और यूज़बद थे। 10 जब हर एक ख़िदमत के
लिए तय्यार था तो इमाम अपनी अपनी जगह पर और
लावी अपने अपने गुरोहों के मुताबिक़ खड़े हो गए
जिस तरह बादशाह ने हिदायत दी थी। 11 लावियों ने
फ़सह के लेलों को ज़बह करके उन की खालें उतारीं
जबकि इमामों ने लावियों से जानवरों का ख़ून ले कर
क़ुर्बानगाह पर छिड़का। 12 जो कुछ भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों के लिए मुक़र्रर था उसे क़ौम के मुख़्तलिफ़
ख़ानदानों के लिए एक तरफ़ रख दिया गया ताकि
वह उसे बाद में रब को क़ुर्बानी के तौर पर पेश कर
सकें, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। बैलों
के साथ भी ऐसा ही किया गया। 13 फ़सह के लेलों
को हिदायात के मुताबिक़ आग पर भूना गया जबकि
बाक़ी गोश्त को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की देगों में उबाला
गया। जूँ ही गोश्त पक गया तो लावियों ने उसे जल्दी
से हाज़िरीन में तक़्सीम किया। 14 इस के बाद उन्हों
ने अपने और इमामों के लिए फ़सह के लेले तय्यार
किए, क्यूँकि हारून की औलाद यानी इमाम भस्म
होने वाली क़ुर्बानियों और चर्बी को चढ़ाने में रात
तक मसरूफ़ रहे।
15 ईद के पूरे दौरान आसफ़ के ख़ानदान के गुलूकार
अपनी अपनी जगह पर खड़े रहे, जिस तरह दाऊद,
आसफ़, हैमान और बादशाह के ग़ैबबीन यदूतून ने
हिदायत दी थी। दरबान भी रब के घर के दरवाज़ों
पर मुसलसल खड़े रहे। उन्हें अपनी जगहों को छोड़ने
की ज़रूरत भी नहीं थी, क्यूँकि बाक़ी लावियों ने उन
के लिए भी फ़सह के लेले तय्यार कर रखे। 16 यूँ उस
दिन यूसियाह के हुक्म पर क़ुर्बानियों के पूरे इन्तिज़ाम
को तर्तीब दिया गया ताकि आइन्दा फ़सह की ईद

मनाई जाए और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ रब की क़ुर्बानगाह पर पेश की जाएँ।

17 यरूशलम में जमा हुए इस्राईलियों ने फ़सह की
ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद एक हफ़्ते के दौरान
मनाई। 18 फ़सह की ईद इस्राईल में समूएल नबी के
ज़माने से ले कर उस वक़्त तक इस तरह नहीं मनाई
गई थी। इस्राईल के किसी भी बादशाह ने उसे यूँ
नहीं मनाया था जिस तरह यूसियाह ने उसे उस वक़्त
इमामों, लावियों, यरूशलम और तमाम यहूदाह और
इस्राईल से आए हुए लोगों के साथ मिल कर मनाई।
19 यूसियाह बादशाह की हुकूमत के 18वें साल में
पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद मनाई गई।

यूसियाह की मौत

20 रब के घर की बहाली की तक्मील के बाद
एक दिन मिस्र का बादशाह निकोह दरया-ए-फ़ुरात
पर के शहर कर्किमीस के लिए रवाना हुआ ताकि
वहाँ दुश्मन से लड़े। लेकिन रास्ते में यूसियाह उस
का मुक़ाबला करने के लिए निकला। 21 निकोह ने
अपने क़ासिदों को यूसियाह के पास भेज कर उसे
इत्तिला दी, “ऐ यहूदाह के बादशाह, मेरा आप से क्या
वास्ता? इस वक़्त मैं आप पर हम्ला करने के लिए नहीं
निकला बल्कि उस शाही ख़ानदान पर जिस के साथ
मेरा झगड़ा है। अल्लाह ने फ़रमाया है कि मैं जल्दी
करूँ। वह तो मेरे साथ है। चुनाँचे उस का मुक़ाबला
करने से बाज़ आएँ, वर्ना वह आप को हलाक कर
देगा।”

22 लेकिन यूसियाह बाज़ न आया बल्कि लड़ने के
लिए तय्यार हुआ। उस ने निकोह की बात न मानी गो
अल्लाह ने उसे उस की मारिफ़त आगाह किया था।
चुनाँचे वह भेस बदल कर फ़िरऔन से लड़ने के लिए
मजिद्दो के मैदान में पहुँचा। 23 जब लड़ाई छिड़ गई
तो यूसियाह तीरों से ज़ख़्मी हुआ, और उस ने अपने
मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “मुझे यहाँ से ले जाओ,
क्यूँकि मैं सख़्त ज़ख़्मी हो गया हूँ।” 24 लोगों ने उसे
उस के अपने रथ पर से उठा कर उस के एक और
रथ में रखा जो उसे यरूशलम ले गया। लेकिन उस ने
वफ़ात पाई, और उसे अपने बापदादा के ख़ानदानी
क़ब्रिस्तान में दफ़न किया गया। पूरे यहूदाह और
यरूशलम ने उस का मातम किया।

25 यरमियाह ने यूसियाह की याद में मातमी गीत
लिखे, और आज तक गीत गाने वाले मर्द-ओ-
ख़वातीन यूसियाह की याद में मातमी गीत गाते हैं,
यह पक्का दस्तूर बन गया है। यह गीत ‘नोहा की
किताब’ में दर्ज हैं।

26–27 बाक़ी जो कुछ शुरू से ले कर आख़िर तक
यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहान-
ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल’ की किताब में बयान किया
गया है। वहाँ उस के नेक कामों का ज़िक्र है और
यह कि उस ने किस तरह शरीअत के अह्काम पर
अमल किया।

यहूदाह का बादशाह यहूआख़ज़

36 1 उम्मत ने यूसियाह के बेटे यहूआख़ज़ को
बाप के तख़्त पर बिठा दिया। 2 यहूआख़ज़
23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में
उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। 3 फिर
मिस्र के बादशाह ने उसे तख़्त से उतार दिया, और
मुल्क-ए-यहूदाह को तक़रीबन 3,400 किलोग्राम
चाँदी और 34 किलोग्राम सोना ख़राज के तौर पर
अदा करना पड़ा। 4 मिस्र के बादशाह ने यहूआख़ज़
के सगे भाई इलियाक़ीम को यहूदाह और यरूशलम
का नया बादशाह बना कर उस का नाम यहूयक़ीम
में बदल दिया। यहूआख़ज़ को वह क़ैद करके अपने
साथ मिस्र ले गया।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

5 यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में रह कर वह 11 साल तक हुकूमत
करता रहा। उस का चाल-चलन रब उस के ख़ुदा
को नापसन्द था। 6 एक दिन बाबल के नबूकद्नज़्ज़र
ने यहूदाह पर हम्ला किया और यहूयक़ीम को

पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ कर बाबल ले गया।
7 नबूकद्नज़्ज़र रब के घर की कई क़ीमती चीज़ें भी
छीन कर अपने साथ बाबल ले गया और वहाँ अपने
मन्दिर में रख दीं।

8 बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के
दौरान हुआ वह 'शाहान-ए-यहूदाह-ओ-इस्राईल' की
किताब में दर्ज है। वहाँ यह बयान किया गया है
कि उस ने कैसी घिनौनी हरकतें कीं और कि क्या
कुछ उस के साथ हुआ। उस के बाद उस का बेटा
यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ।

यहूयाकीन की हुकूमत

9 यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना,
और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन
माह और दस दिन था। उस का चाल-चलन रब को
नापसन्द था। 10 बहार के मौसम में नबूकद्नज़्ज़र
बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे गिरिफ़्तार करके
बाबल ले जाया जाए। साथ साथ फ़ौजियों ने रब के
घर की क़ीमती चीज़ें भी छीन कर बाबल पहुँचाईं।
यहूयाकीन की जगह नबूकद्नज़्ज़र ने यहूयाकीन के
चचा सिदक़ियाह को यहूदाह और यरूशलम का
बादशाह बना दिया।

सिदक़ियाह बादशाह और यरूशलम की तबाही

11 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में तख़्तनशीन
हुआ, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया 11 साल था। 12 उस का चाल-चलन रब
उस के ख़ुदा को नापसन्द था। जब यरमियाह नबी ने
उसे रब की तरफ़ से आगाह किया तो उस ने अपने
आप को नबी के सामने पस्त न किया। 13 सिदक़ियाह
को अल्लाह की क़सम खा कर नबूकद्नज़्ज़र बादशाह
का वफ़ादार रहने का वादा करना पड़ा। तो भी वह
कुछ देर के बाद सरकश हो गया। वह अड़ गया,
और उस का दिल इतना सख़्त हो गया कि वह रब
इस्राईल के ख़ुदा की तरफ़ दुबारा रुजू करने के लिए
तय्यार नहीं था।

14 लेकिन यहूदाह के राहनुमाओं, इमामों और क़ौम
की बेवफ़ाई भी बढ़ती गई। पड़ोसी क़ौमों के घिनौने
रस्म-ओ-रिवाज अपना कर उन्हों ने रब के घर को
नापाक कर दिया, गो उस ने यरूशलम में यह इमारत
अपने लिए मख़्सूस की थी।

15 बार बार रब उन के बापदादा का ख़ुदा अपने
पैग़म्बरों को उन के पास भेज कर उन्हें समझाता रहा,
क्यूँकि उसे अपनी क़ौम और सुकूनतगाह पर तरस
आता था। 16 लेकिन लोगों ने अल्लाह के पैग़म्बरों
का मज़ाक़ उड़ाया, उन के पैग़ाम हक़ीर जाने और
नबियों को लान-तान की। आख़िरकार रब का ग़ज़ब
उन पर नाज़िल हुआ, और बचने का कोई रास्ता न
रहा। 17 उस ने बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र को
उन के ख़िलाफ़ भेजा तो दुश्मन यहूदाह के जवानों
को तलवार से क़त्ल करने के लिए मक़्दिस में घुसने
से भी न झिजके। किसी पर भी रहम न किया गया,
ख़्वाह जवान मर्द या जवान ख़ातून, ख़्वाह बुज़ुर्ग या
उम्ररसीदा हो। रब ने सब को नबूकद्नज़्ज़र के हवाले
कर दिया। 18 नबूकद्नज़्ज़र ने अल्लाह के घर की
तमाम चीज़ें छीन लीं, ख़्वाह वह बड़ी थीं या छोटी।
वह रब के घर, बादशाह और उस के आला अफ़्सरों
के तमाम ख़ज़ाने भी बाबल ले गया। 19 फ़ौजियों ने
रब के घर और तमाम महलों को जला कर यरूशलम
की फ़सील को गिरा दिया। जितनी भी क़ीमती चीज़ें
रह गई थीं वह तबाह हुईं। 20 और जो तलवार से बच
गए थे उन्हें बाबल का बादशाह क़ैद करके अपने
साथ बाबल ले गया। वहाँ उन्हें उस की और उस
की औलाद की ख़िदमत करनी पड़ी। उन की यह
हालत उस वक़्त तक जारी रही जब तक फ़ार्सी क़ौम
की सल्तनत शुरू न हुई।

21 यूँ वह कुछ पूरा हुआ जिस की पेशगोई रब ने
यरमियाह नबी की मारिफ़त की थी, क्यूँकि ज़मीन
को आख़िरकार सबत का वह आराम मिल गया जो
बादशाहों ने उसे नहीं दिया था। जिस तरह नबी ने
कहा था, अब ज़मीन 70 साल तक तबाह और वीरान
रही।

जिलावतनी से वापसी

22 फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के पहले
साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिस की
पेशगोई उस ने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उस ने
ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह
एलान ज़बानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में
किया गया।

23 “फ़ार्स का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब
आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे
हवाले कर दिए हैं। उस ने मुझे यहूदाह के शहर
यरूशलम में उस के लिए घर बनाने की ज़िम्मादारी
दी है। आप में से जितने उस की क़ौम के हैं यरूशलम
के लिए रवाना हो जाएँ। रब आप का ख़ुदा आप के
साथ हो।”

अज़्रा

जिलावतनी से वापसी

1 [1] फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के पहले
साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिस की
पेशगोई उस ने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उस ने
ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह
एलान ज़बानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में
किया गया।

[2] "फ़ार्स का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब
आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे
हवाले कर दिए हैं। उस ने मुझे यहूदाह के शहर
यरूशलम में उस के लिए घर बनाने की ज़िम्मादारी दी
है। [3] आप में से जितने उस की क़ौम के हैं यरूशलम
के लिए रवाना हो जाएँ ताकि वहाँ रब इस्राईल
के ख़ुदा के लिए घर बनाएँ, उस ख़ुदा के लिए जो
यरूशलम में सुकूनत करता है। आप का ख़ुदा आप
के साथ हो। [4] जहाँ भी इस्राईली क़ौम के बचे हुए
लोग रहते हैं, वहाँ उन के पड़ोसियों का फ़र्ज़ है
कि वह सोने-चाँदी और माल-मवेशी से उन की मदद
करें। इस के इलावा वह अपनी ख़ुशी से यरूशलम
में अल्लाह के घर के लिए हदिए भी दें।"

[5] तब कुछ इस्राईली रवाना हो कर यरूशलम में रब
के घर को तामीर करने की तय्यारियाँ करने लगे। उन
में यहूदाह और बिनयमीन के ख़ानदानी सरपरस्त,
इमाम और लावी शामिल थे यानी जितने लोगों को
अल्लाह ने तहरीक दी थी। [6] उन के तमाम पड़ोसियों
ने उन्हें सोना-चाँदी और माल-मवेशी दे कर उन की
मदद की। इस के इलावा उन्हों ने अपनी ख़ुशी से भी
रब के घर के लिए हदिए दिए।

[7] ख़ोरस बादशाह ने वह चीज़ें वापस कर दीं जो
नबूकद्नज़्ज़र ने यरूशलम में रब के घर से लूट कर
अपने देवता के मन्दिर में रख दी थीं। [8] उन्हें निकाल
कर फ़ार्स के बादशाह ने मित्रदात ख़ज़ान्ची के हवाले
कर दिया जिस ने सब कुछ गिन कर यहूदाह के बुज़ुर्ग
शेस्बज़्ज़र को दे दिया। [9] जो फ़हरिस्त उस ने लिखी
उस में ज़ैल की चीज़ें थीं :

सोने के 30 बासन,
चाँदी के 1,000 बासन,
29 छुरियाँ,
[10] सोने के 30 प्याले,
चाँदी के 410 प्याले,
बाक़ी चीज़ें 1,000 अदद।

[11] सोने और चाँदी की कुल 5,400 चीज़ें थीं।
शेस्बज़्ज़र यह सब कुछ अपने साथ ले गया जब वह
जिलावतनों के साथ बाबल से यरूशलम के लिए
रवाना हुआ।

वापस आए हुए इस्राईलियों की फ़हरिस्त

2 [1] ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त
है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का
बादशाह नबूकद्नज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल ले
गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहूदाह
के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ उन के ख़ानदान
पहले रहते थे। [2] उन के राहनुमा ज़रुब्बाबल, यशूअ,
नहमियाह, सिरायाह, रालायाह, मर्दकी, बिल्शान,
मिस्फ़ार, बिग्वई, रहूम और बाना थे। ज़ैल की
फ़हरिस्त में वापस आए हुए ख़ानदानों के मर्द बयान
किए गए हैं।

[3] परऊस का ख़ानदान : 2,172,
[4] सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,
[5] अरख़ का ख़ानदान : 775,
[6] पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशूअ और
योआब की औलाद : 2,812,
[7] ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,

[8] ज़त्तू का ख़ानदान : 945,
[9] ज़क्कई का ख़ानदान : 760,
[10] बानी का ख़ानदान : 642,
[11] बबी का ख़ानदान : 623,
[12] अज़्जाद का ख़ानदान : 1,222,
[13] अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 666,
[14] बिग्वई का ख़ानदान : 2,056,
[15] अदीन का ख़ानदान : 454,
[16] अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की औलाद : 98,
[17] बज़ी का ख़ानदान : 323,
[18] यूरा का ख़ानदान : 112,
[19] हाशूम का ख़ानदान : 223,
[20] जिब्बार का ख़ानदान : 95,
[21] बैत-लहम के बाशिन्दे : 123,
[22] नतूफ़ा के 56 बाशिन्दे,
[23] अनतोत के बाशिन्दे : 128,
[24] अज़्मावत के बाशिन्दे : 42,
[25] क़िर्यत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिन्दे : 743,
[26] रामा और जिबा के बाशिन्दे : 621,
[27] मिक्मास के बाशिन्दे : 122,
[28] बैत-एल और अई के बाशिन्दे : 223,
[29] नबू के बाशिन्दे : 52,
[30] मज्बीस के बाशिन्दे : 156,
[31] दूसरे ऐलाम के बाशिन्दे : 1,254,
[32] हारिम के बाशिन्दे : 320,
[33] लूद, हादीद और ओनू के बाशिन्दे : 725,
[34] यरीहू के बाशिन्दे : 345,
[35] सनाआह के बाशिन्दे : 3,630।
[36] ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।
यदायाह का ख़ानदान जो यशूअ की नस्ल का था : 973,
[37] इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,
[38] फ़श्हूर का ख़ानदान : 1,247,
[39] हारिम का ख़ानदान : 1,017,
[40] ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए। यशूअ और क़दमीएल का ख़ानदान यानी हूदावियाह की औलाद : 74,
[41] गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 128 आदमी,
[42] रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तल्मून, अक़्क़ूब, ख़तीता और सोबी के ख़ानदानों के 139 आदमी।
[43] रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, [44] क़रूस, सीआहा, फ़दून, [45] लिबाना, हजाबा, अक़्क़ूब, [46] हजाब, शल्मी, हनान, [47] जिद्देल, जहर, रियायाह, [48] रज़ीन, नक़ूदा, जज़्ज़ाम, [49] उज़्ज़ा, फ़ासिह, बसी, [50] अस्ना, मऊनीम, नफ़ूसीम, [51] बक़्बूक़, हक़ूफ़ा, हर्हूर, [52] बज़्लूत, महीदा, हर्शा, [53] बर्क़ूस, सीसरा, तामह, [54] नज़ियाह और ख़तीफ़ा।
[55] सुलेमान के ख़ादिमों के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, [56] याला, दर्क़ून, जिद्देल, [57] सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-ज़बाइम और अमी।
[58] रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी। [59–60] वापस आए हुए ख़ानदानों दिलायाह, तूबियाह और नक़ूदा के 652 मर्द साबित न कर सके कि इस्राईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहने वाले थे।
[61–62] हबायाह, हक़्क़ूज़ और बर्ज़िल्लै के ख़ानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्यूँकि गो उन्हों ने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए उन का कहीं ज़िक्र न मिला, इस लिए उन्हें नापाक क़रार दिया गया। (बर्ज़िल्लै के ख़ानदान के बानी ने बर्ज़िल्लै जिलिआदी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) [63] यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम फ़िलहाल

क़ुर्बानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरआ डाल कर मुआमला हल करे।

64 कुल 42,360 इस्राईली अपने वतन लौट आए,
65 नीज़ उन के 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 200
गुलूकार जिन में मर्द-ओ-ख़वातीन शामिल थे।
66 इस्राईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर,
67 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।
68 जब वह यरूशलम में रब के घर के पास पहुँचे
तो कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने अपनी ख़ुशी से हदिए
दिए ताकि अल्लाह का घर नए सिरे से उस जगह
तामीर किया जा सके जहाँ पहले था। 69 हर एक ने
उतना दे दिया जितना दे सका। उस वक़्त सोने के
कुल 61,000 सिक्के, चाँदी के 2,800 किलोग्राम और
इमामों के 100 लिबास जमा हुए।
70 इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर के दरबान
और ख़िदमतगार, और अवाम के कुछ लोग अपनी
अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यूँ तमाम
इस्राईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।

नई क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बानियाँ

3 1 सातवें महीने की इब्तिदा में पूरी क़ौम
यरूशलम में जमा हुई। उस वक़्त इस्राईली
अपनी आबादियों में दुबारा आबाद हो गए थे। 2 जमा
होने का मक़्सद इस्राईल के ख़ुदा की क़ुर्बानगाह
को नए सिरे से तामीर करना था ताकि मर्द-ए-ख़ुदा
मूसा की शरीअत के मुताबिक़ उस पर भस्म होने
वाली क़ुर्बानियाँ पेश की जा सकें। चुनाँचे यशूअ बिन
यूसदक़ और ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल काम में
लग गए। यशूअ के इमाम भाइयों और ज़रुब्बाबल
के भाइयों ने उन की मदद की। 3 गो वह मुल्क में
रहने वाली दीगर क़ौमों से सहमे हुए थे ताहम उन्हों
ने क़ुर्बानगाह को उस की पुरानी बुन्याद पर तामीर
किया और सुब्ह-शाम उस पर रब को भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश करने लगे। 4 झोंपड़ियों की ईद उन्हों
ने शरीअत की हिदायत के मुताबिक़ मनाई। उस हफ़्ते
के हर दिन उन्हों ने भस्म होने वाली उतनी क़ुर्बानियाँ
चढ़ाईं जितनी ज़रूरी थीं।
5 उस वक़्त से इमाम भस्म होने वाली तमाम दरकार
क़ुर्बानियाँ बाक़ाइदगी से पेश करने लगे, नीज़ नए
चाँद की ईदों और रब की बाक़ी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
ईदों की क़ुर्बानियाँ। क़ौम अपनी ख़ुशी से भी रब को
क़ुर्बानियाँ पेश करती थी। 6 गो रब के घर की बुन्याद
अभी डाली नहीं गई थी तो भी इस्राईली सातवें महीने
के पहले दिन से रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ
पेश करने लगे। 7 फिर उन्हों ने राजों और कारीगरों
को पैसे दे कर काम पर लगाया और सूर और सैदा के
बाशिन्दों से देवदार की लकड़ी मंगवाई। यह लकड़ी
लुबनान के पहाड़ी इलाक़े से समुन्दर तक लाई गई
और वहाँ से समुन्दर के रास्ते याफ़ा पहुँचाई गई।
इस्राईलियों ने मुआवज़े में खाने-पीने की चीज़ें और
ज़ैतून का तेल दे दिया। फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस ने
उन्हें यह करवाने की इजाज़त दी थी।

रब के घर की तामीर-ए-नौ

8 जिलावतनी से वापस आने के दूसरे साल के दूसरे
महीने में रब के घर की नए सिरे से तामीर शुरू हुई।
इस काम में ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल, यशूअ
बिन यूसदक़, दीगर इमाम और लावी और वतन में
वापस आए हुए बाक़ी तमाम इस्राईली शरीक हुए।
तामीरी काम की निगरानी उन लावियों के ज़िम्मे लगा
दी गई जिन की उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद थी।
9 ज़ैल के लोग मिल कर रब का घर बनाने वालों
की निगरानी करते थे : यशूअ अपने बेटों और भाइयों
समेत, क़दमीएल और उस के बेटे जो हूदावियाह की
औलाद थे और हनदाद के ख़ानदान के लावी।
10 रब के घर की बुन्याद रखते वक़्त इमाम अपने
मुक़द्दस लिबास पहने हुए साथ खड़े हो गए और तुरम
बजाने लगे। आसफ़ के ख़ानदान के लावी साथ साथ
झाँझ बजाने और रब की सताइश करने लगे। सब
कुछ इस्राईल के बादशाह दाऊद की हिदायात के

मुताबिक़ हुआ। 11 वह हम्द-ओ-सना के गीत से रब
की तारीफ़ करने लगे, “वह भला है, और इस्राईल पर
उस की शफ़क़त अबदी है!” जब हाज़िरीन ने देखा कि
रब के घर की बुन्याद रखी जा रही है तो सब रब की
ख़ुशी में ज़ोरदार नारे लगाने लगे।
12 लेकिन बहुत से इमाम, लावी और ख़ानदानी
सरपरस्त हाज़िर थे जिन्हों ने रब का पहला घर देखा
हुआ था। जब उन के देखते देखते रब के नए घर की
बुन्याद रखी गई तो वह बुलन्द आवाज़ से रोने लगे
जबकि बाक़ी बहुत सारे लोग ख़ुशी के नारे लगा रहे
थे। 13 इतना शोर था कि ख़ुशी के नारों और रोने की
आवाज़ों में इम्तियाज़ न किया जा सका। शोर दूर दूर
तक सुनाई दिया।

रब के घर की तामीर की मुख़ालफ़त

4 1 यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों को पता
चला कि वतन में वापस आए हुए इस्राईली
रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए घर तामीर कर रहे
हैं। 2 ज़रुब्बाबल और ख़ानदानी सरपरस्तों के पास
आ कर उन्हों ने दरख़्वास्त की, “हम भी आप के
साथ मिल कर रब के घर को तामीर करना चाहते
हैं। क्यूँकि जब से असूर के बादशाह असर्हद्दून ने हमें
यहाँ ला कर बसाया है उस वक़्त से हम आप के ख़ुदा
के तालिब रहे और उसे क़ुर्बानियाँ पेश करते आए
हैं।” 3 लेकिन ज़रुब्बाबल, यशूअ और इस्राईल के
बाक़ी ख़ानदानी सरपरस्तों ने इन्कार किया, “नहीं,
इस में आप का हमारे साथ कोई वास्ता नहीं। हम
अकेले ही रब इस्राईल के ख़ुदा के लिए घर बनाएँगे,
जिस तरह फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस ने हमें हुक्म दिया
है।”
4 यह सुन कर मुल्क की दूसरी क़ौमें यहूदाह
के लोगों की हौसलाशिकनी और उन्हें डराने की
कोशिश करने लगीं ताकि वह इमारत बनाने से बाज़
आएँ। 5 यहाँ तक कि वह फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस के
कुछ मुशीरों को रिश्वत दे कर काम रोकने में कामयाब
हो गए। यूँ रब के घर की तामीर ख़ोरस बादशाह के
दौर-ए-हुकूमत से ले कर दारा बादशाह की हुकूमत
तक रुकी रही।
6 बाद में जब अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत शुरू
हुई तो इस्राईल के दुश्मनों ने यहूदाह और यरूशलम
के बाशिन्दों पर इल्ज़ाम लगा कर शिकायती ख़त
लिखा।
7 फिर अर्तख़्शस्ता बादशाह के दौर-ए-हुकूमत में
उसे यहूदाह के दुश्मनों की तरफ़ से शिकायती ख़त
भेजा गया। ख़त के पीछे ख़ासकर बिश्लाम, मित्रदात
और ताबिएल थे। पहले उसे अरामी ज़बान में लिखा
गया, और बाद में उस का तर्जुमा हुआ। 8 सामरिया के
गवर्नर रहूम और उस के मीरमुन्शी शम्सी ने शहन्शाह
को ख़त लिख दिया जिस में उन्हों ने यरूशलम पर
इल्ज़ामात लगाए। पते में लिखा था,
9 अज़ : रहूम गवर्नर और मीरमुन्शी शम्सी, नीज़ उन
के हमख़िदमत क़ाज़ी, सफ़ीर और तर्पल, सिप्पर,
अरक, बाबल और सोसन यानी ऐलाम के मर्द,
10 नीज़ बाक़ी तमाम क़ौमें जिन को अज़ीम और
अज़ीज़ बादशाह अशूर्बनीपाल ने उठा कर सामरिया
और दरया-ए-फ़ुरात के बाक़ीमान्दा मग़रिबी इलाक़े
में बसा दिया था।
11 ख़त में लिखा था,
“शहन्शाह अर्तख़्शस्ता के नाम,
अज़ : आप के ख़ादिम जो दरया-ए-फ़ुरात के
मग़रिब में रहते हैं।
12 शहन्शाह को इल्म हो कि जो यहूदी आप के
हुज़ूर से हमारे पास यरूशलम पहुँचे हैं वह इस वक़्त
उस बाग़ी और शरीर शहर को नए सिरे से तामीर
कर रहे हैं। वह फ़सील को बहाल करके बुन्यादों
की मरम्मत कर रहे हैं। 13 शहन्शाह को इल्म हो कि
अगर शहर नए सिरे से तामीर हो जाए और उस की
फ़सील तक्मील तक पहुँचे तो यह लोग टैक्स, ख़राज
और महसूल अदा करने से इन्कार कर देंगे। तब
बादशाह को नुक़्सान पहुँचेगा। 14 हम तो नमकहराम
नहीं हैं, न शहन्शाह की तौहीन बर्दाश्त कर सकते
हैं। इस लिए हम गुज़ारिश करते हैं 15 कि आप अपने

बापदादा की तारीख़ी दस्तावेज़ात से यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल करें, क्यूँकि उन में इस बात की तस्दीक़ मिलेगी कि यह शहर माज़ी में सरकश रहा। हक़ीक़त में शहर को इसी लिए तबाह किया गया कि वह बादशाहों और सूबों को तंग करता रहा और क़दीम ज़माने से ही बग़ावत का मम्बा रहा है। 16 ग़रज़ हम शहन्शाह को इत्तिला देते हैं कि अगर यरूशलम को दुबारा तामीर किया जाए और उस की फ़सील तक्मील तक पहुँचे तो दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े पर आप का क़ाबू जाता रहेगा।”

17 शहन्शाह ने जवाब में लिखा,

“मैं यह ख़त रहूम गवर्नर, शम्सी मीरमुन्शी और सामरिया और दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिब में रहने वाले उन के हमख़िदमत अफ़सरों को लिख रहा हूँ।

आप को सलाम! 18 आप के ख़त का तर्जुमा मेरी मौजूदगी में हुआ है और उसे मेरे सामने पढ़ा गया है। 19 मेरे हुक्म पर यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल की गई हैं। मालूम हुआ कि वाक़ई यह शहर क़दीम ज़माने से बादशाहों की मुख़ालफ़त करके सरकशी और बग़ावत का मम्बा रहा है। 20 नीज़, यरूशलम ताक़तवर बादशाहों का दार-उल-हकूमत रहा है। उन की इतनी ताक़त थी कि दरया-ए-फ़ुरात के पूरे मग़रिबी इलाक़े को उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टैक्स और ख़राज अदा करना पड़ा। 21 चुनाँचे अब हुक्म दें कि यह आदमी शहर की तामीर करने से बाज़ आएँ। जब तक मैं ख़ुद हुक्म न दूँ उस वक़्त तक शहर को नए सिरे से तामीर करने की इजाज़त नहीं है। 22 ध्यान दें कि इस हुक्म की तक्मील में सुस्ती न की जाए, ऐसा न हो कि शहन्शाह को बड़ा नुक़्सान पहुँचे।”

23 जूँ ही ख़त की कापी रहूम, शम्सी और उन के हमख़िदमत अफ़सरों को पढ़ कर सुनाई गई तो वह यरूशलम के लिए रवाना हुए और यहूदियों को ज़बरदस्ती काम जारी रखने से रोक दिया।

24 चुनाँचे यरूशलम में अल्लाह के घर का तामीरी काम रुक गया, और वह फ़ार्स के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे साल तक रुका रहा।

रब के घर की तामीर दुबारा शुरू होती है

5 1 एक दिन दो नबी बनाम हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू उठ कर इस्राईल के ख़ुदा के नाम में जो उन के ऊपर था यहूदाह और यरूशलम के यहूदियों के सामने नबुव्वत करने लगे। 2 उन के हौसलाअफ़ज़ा अल्फ़ाज़ सुन कर ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल और यशूअ बिन यूसदक़ ने फ़ैसला किया कि हम दुबारा यरूशलम में अल्लाह के घर की तामीर शुरू करेंगे। दोनों नबी इस में उन के साथ थे और उन की मदद करते रहे।

3 लेकिन जूँ ही काम शुरू हुआ तो दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी और शतर-बोज़नी अपने हमख़िदमत अफ़सरों समेत यरूशलम पहुँचे। उन्हों ने पूछा, “किस ने आप को यह घर बनाने और इस का ढाँचा तक्मील तक पहुँचाने की इजाज़त दी? 4 इस काम के लिए ज़िम्मादार आदमियों के नाम हमें बताएँ!” 5 लेकिन उन का ख़ुदा यहूदाह के बुज़ुर्गों की निगरानी कर रहा था, इस लिए उन्हें रोका न गया। क्यूँकि लोगों ने सोचा कि पहले दारा बादशाह को इत्तिला दी जाए। जब तक वह फ़ैसला न करे उस वक़्त तक काम रोका न जाए।

6 फिर दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उन के हमख़िदमत अफ़सरों ने दारा बादशाह को ज़ैल का ख़त भेजा,

7 “दारा बादशाह को दिल की गहराइयों से सलाम कहते हैं! 8 शहन्शाह को इल्म हो कि सूबा यहूदाह में जा कर हम ने देखा कि वहाँ अज़ीम ख़ुदा का घर बनाया जा रहा है। उस के लिए बड़े तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल हो रहे हैं और दीवारों में शहतीर लगाए जा रहे हैं। लोग बड़ी जाँफ़िशानी से काम कर रहे हैं, और मकान उन की मेहनत के बाइस तेज़ी से बन रहा है। 9 हम ने बुज़ुर्गों से पूछा, ‘किस ने आप को यह घर

बनाने और इस का ढाँचा तक्मील तक पहुँचाने की
इजाज़त दी है?' 10 हम ने उन के नाम भी मालूम किए
ताकि लिख कर आप को भेज सकें। 11 उन्हों ने हमें
जवाब दिया,

'हम आसमान-ओ-ज़मीन के ख़ुदा के ख़ादिम हैं,
और हम उस घर को अज़ सर-ए-नौ तामीर कर रहे
हैं जो बहुत साल पहले यहाँ क़ाइम था। इस्राईल के
एक अज़ीम बादशाह ने उसे क़दीम ज़माने में बना कर
तक्मील तक पहुँचाया था। 12 लेकिन हमारे बापदादा
ने आसमान के ख़ुदा को तैश दिलाया, और नतीजे
में उस ने उन्हें बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र के
हवाले कर दिया जिस ने रब के घर को तबाह कर
दिया और क़ौम को क़ैद करके बाबल में बसा दिया।
13 लेकिन बाद में जब ख़ोरस बादशाह बन गया तो
उस ने अपनी हुकूमत के पहले साल में हुक्म दिया
कि अल्लाह के इस घर को दुबारा तामीर किया जाए।
14 साथ साथ उस ने सोने-चाँदी की वह चीज़ें वापस
कर दीं जो नबूकद्नज़्ज़र ने यरूशलम में अल्लाह के
घर से लूट कर बाबल के मन्दिर में रख दी थीं।
ख़ोरस ने यह चीज़ें एक आदमी के सपुर्द कर दीं जिस
का नाम शेस्बज़्ज़र था और जिसे उस ने यहूदाह का
गवर्नर मुक़र्रर किया था। 15 उस ने उसे हुक्म दिया कि
सामान को यरूशलम ले जाओ और रब के घर को
पुरानी जगह पर अज़ सर-ए-नौ तामीर करके यह चीज़ें
उस में महफ़ूज़ रखो। 16 तब शेस्बज़्ज़र ने यरूशलम
आ कर अल्लाह के घर की बुन्याद रखी। उसी वक़्त
से यह इमारत ज़ेर-ए-तामीर है, अगरचे यह आज तक
मुकम्मल नहीं हुई।'

17 चुनाँचे अगर शहन्शाह को मन्ज़ूर हो तो वह
तफ़्तीश करें कि क्या बाबल के शाही दफ़्तर में कोई
ऐसी दस्तावेज़ मौजूद है जो इस बात की तस्दीक़ करे
कि ख़ोरस बादशाह ने यरूशलम में रब के घर को
अज़ सर-ए-नौ तामीर करने का हुक्म दिया। गुज़ारिश
है कि शहन्शाह हमें अपना फ़ैसला पहुँचा दें।"

दारा बादशाह यहूदियों की मदद करता है

6 1 तब दारा बादशाह ने हुक्म दिया कि बाबल
के ख़ज़ाने के दफ़्तर में तफ़्तीश की जाए। इस
का खोज लगाते लगाते 2 आख़िरकार मादी शहर
इक्बताना के क़िले में तूमार मिल गया जिस में लिखा
था,

3 "ख़ोरस बादशाह की हुकूमत के पहले साल में
शहन्शाह ने हुक्म दिया कि यरूशलम में अल्लाह के घर
को उस की पुरानी जगह पर नए सिरे से तामीर किया
जाए ताकि वहाँ दुबारा क़ुर्बानियाँ पेश की जा सकें।
उस की बुन्याद रखने के बाद उस की ऊँचाई 90 और
चौड़ाई 90 फ़ुट हो। 4 दीवारों को यूँ बनाया जाए कि
तराशे हुए पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के
शहतीरों का एक रद्दा लगाया जाए। अख़राजात शाही
ख़ज़ाने से पूरे किए जाएँ। 5 नीज़ सोने-चाँदी की जो
चीज़ें नबूकद्नज़्ज़र यरूशलम के इस घर से निकाल
कर बाबल लाया वह वापस पहुँचाई जाएँ। हर चीज़
अल्लाह के घर में उस की अपनी जगह पर वापस रख
दी जाए।"

6 यह ख़बर पढ़ कर दारा ने दरया-ए-फ़ुरात के
मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और
उन के हमख़िदमत अफ़्सरों को ज़ैल का जवाब भेज
दिया,

"अल्लाह के इस घर की तामीर में मुदाख़लत मत
करना! 7 लोगों को काम जारी रखने दें। यहूदियों का
गवर्नर और उन के बुज़ुर्ग अल्लाह का यह घर उस की
पुरानी जगह पर तामीर करें।

8 न सिर्फ़ यह बल्कि मैं हुक्म देता हूँ कि आप
इस काम में बुज़ुर्गों की मदद करें। तामीर के तमाम
अख़राजात वक़्त पर मुहय्या करें ताकि काम न रुके।
यह पैसे शाही ख़ज़ाने यानी दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी
इलाक़े से जमा किए गए टैक्सों में से अदा किए जाएँ।
9 रोज़-ब-रोज़ इमामों को भस्म होने वाली क़ुर्बानियों
के लिए दरकार तमाम चीज़ें मुहय्या करते रहें, ख़्वाह
वह जवान बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे, गन्दुम, नमक,

मै या ज़ैतून का तेल क्यूँ न माँगें। इस में सुस्ती न
करें 10 ताकि वह आसमान के ख़ुदा को पसन्दीदा
क़ुर्बानियाँ पेश करके शहन्शाह और उस के बेटों की
सलामती के लिए दुआ कर सकें।
11 इस के इलावा मैं हुक्म देता हूँ कि जो भी इस
फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी करे उस के घर से शहतीर
निकाल कर खड़ा किया जाए और उसे उस पर
मस्लूब किया जाए। साथ साथ उस के घर को मल्बे
का ढेर बनाया जाए। 12 जिस ख़ुदा ने वहाँ अपना नाम
बसाया है वह हर बादशाह और क़ौम को हलाक करे
जो मेरे इस हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके यरूशलम
के घर को तबाह करने की जुरअत करे। मैं, दारा ने
यह हुक्म दिया है। इसे हर तरह से पूरा किया जाए।”

रब के घर की मख़्सूसियत

13 दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर
तत्तनी, शतर-बोज़नी और उन के हमख़िदमत अफ़्सरों
ने हर तरह से दारा बादशाह के हुक्म की तामील
की। 14 चुनाँचे यहूदी बुज़ुर्ग रब के घर पर काम जारी
रख सके। दोनों नबी हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू
अपनी नबुव्वतों से उन की हौसलाअफ़ज़ाई करते रहे,
और यूँ सारा काम इस्राईल के ख़ुदा और फ़ार्स के
बादशाहों ख़ोरस, दारा और अर्तख़्शस्ता के हुक्म के
मुताबिक़ ही मुकम्मल हुआ।
15 रब का घर दारा बादशाह की हुकूमत के छटे
साल में तक्मील तक पहुँचा। अदार के महीने का
तीसरा दिन [q]था। 16 इस्राईलियों ने इमामों, लावियों
और जिलावतनी से वापस आए हुए इस्राईलियों
समेत बड़ी ख़ुशी से रब के घर की मख़्सूसियत की ईद
मनाई। 17 उन्हों ने 100 बैल, 200 मेंढे और भेड़ के
400 बच्चे क़ुर्बान किए। पूरे इस्राईल के लिए गुनाह
की क़ुर्बानी भी पेश की गई, और इस के लिए फ़ी
क़बीला एक बकरा यानी मिल कर 12 बकरे चढ़ाए
गए। 18 फिर इमामों और लावियों को रब के घर की
ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़्सीम किया गया,
जिस तरह मूसा की शरीअत हिदायत देती है।

इस्राईली फ़सह की ईद मनाते हैं

19 पहले महीने के 14वें दिन [r]जिलावतनी से वापस
आए हुए इस्राईलियों ने फ़सह की ईद मनाई। 20 तमाम
इमामों और लावियों ने अपने आप को पाक-साफ़
कर रखा था। सब के सब पाक थे। लावियों ने फ़सह
के लेले जिलावतनी से वापस आए हुए इस्राईलियों,
उन के भाइयों यानी इमामों और अपने लिए ज़बह
किए। 21 लेकिन न सिर्फ़ जिलावतनी से वापस आए
हुए इस्राईली इस खाने में शरीक हुए बल्कि मुल्क के
वह तमाम लोग भी जो ग़ैरयहूदी क़ौमों की नापाक
राहों से अलग हो कर उन के साथ रब इस्राईल के
ख़ुदा के तालिब हुए थे। 22 उन्हों ने सात दिन बड़ी
ख़ुशी से बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। रब ने उन के
दिलों को ख़ुशी से भर दिया था, क्यूँकि उस ने फ़ार्स
के बादशाह का दिल उन की तरफ़ माइल कर दिया
था ताकि उन्हें इस्राईल के ख़ुदा के घर को तामीर
करने में मदद मिले।

अज़्रा इमाम को यरूशलम भेजा जाता है

7 1 इन वाक़िआत के काफ़ी अर्से बाद एक
आदमी बनाम अज़्रा बाबल को छोड़ कर
यरूशलम आया। उस वक़्त फ़ार्स के बादशाह
अर्तख़्शस्ता की हुकूमत थी। आदमी का पूरा
नाम अज़्रा बिन सिरायाह बिन अज़रियाह बिन
ख़िलक़ियाह 2 बिन सल्लूम बिन सदोक़ बिन अख़ीतूब
3 बिन अमरियाह बिन अज़रियाह बिन मिरायोत 4 बिन
ज़रख़ियाह बिन उज़्ज़ी बिन बुक़्क़ी 5 बिन अबीसूअ
बिन फ़ीन्हास बिन इलीअज़र बिन हारून था। (हारून
इमाम-ए-आज़म था)।
6 अज़्रा पाक नविश्तों का उस्ताद और उस शरीअत
का आलिम था जो रब इस्राईल के ख़ुदा ने मूसा

[q]12 मार्च।

[r]21 अप्रैल।

की मारिफ़त दी थी। जब अज़्रा बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुआ तो शहन्शाह ने उस की हर ख़्वाहिश पूरी की, क्यूँकि रब उस के ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ उस पर था। 7 कई इस्राईली उस के साथ गए। इमाम, लावी, गुलूकार और रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार भी उन में शामिल थे। यह अर्तख़्शस्ता बादशाह की हुकूमत के सातवें साल में हुआ। 8–9 क़ाफ़िला पहले महीने के पहले दिन [s]बाबल से रवाना हुआ और पाँचवें महीने के पहले दिन [s]सहीह-सलामत यरूशलम पहुँचा, क्यूँकि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ अज़्रा पर था। 10 वजह यह थी कि अज़्रा ने अपने आप को रब की शरीअत की तफ़्तीश करने, उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने और इस्राईलियों को उस के अह्काम और हिदायात की तालीम देने के लिए वक़्फ़ किया था।

शहन्शाह अज़्रा को मुख्तारनामा देता है

11 अर्तख़्शस्ता बादशाह ने अज़्रा इमाम को ज़ैल का मुख्तारनामा दे दिया, उसी अज़्रा को जो पाक नविश्तों का उस्ताद और उन अह्काम और हिदायात का आलिम था जो रब ने इस्राईल को दी थीं। मुख़्तारनामे में लिखा था,

12 “अज़्र : शहन्शाह अर्तख़्शस्ता

अज़्रा इमाम को जो आसमान के ख़ुदा की शरीअत का आलिम है, सलाम! 13 मैं हुक्म देता हूँ कि अगर मेरी सल्तनत में मौजूद कोई भी इस्राईली आप के साथ यरूशलम जा कर वहाँ रहना चाहे तो वह जा सकता है। इस में इमाम और लावी भी शामिल हैं, 14 शहन्शाह और उस के सात मुशीर आप को यहूदाह और यरूशलम भेज रहे हैं ताकि आप अल्लाह की उस शरीअत की रौशनी में जो आप के हाथ में है यहूदाह और यरूशलम का हाल जाँच लें। 15 जो सोना-चाँदी शहन्शाह और उस के मुशीरों ने अपनी ख़ुशी से यरूशलम में सुकूनत करने वाले इस्राईल के ख़ुदा के लिए क़ुर्बान की है उसे अपने साथ ले जाएँ। 16 नीज़, जितनी भी सोना-चाँदी आप को सूबा बाबल से मिल जाएगी और जितने भी हदिए क़ौम और इमाम अपनी ख़ुशी से अपने ख़ुदा के घर के लिए जमा करें उन्हें अपने साथ ले जाएँ। 17 उन पैसों से बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे और उन की क़ुर्बानियों के लिए दरकार ग़ल्ला और मै की नज़रें ख़रीद लें, और उन्हें यरूशलम में अपने ख़ुदा के घर की क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बान करें। 18 जो पैसे बच जाएँ उन को आप और आप के भाई वैसे ख़र्च कर सकते हैं जैसे आप को मुनासिब लगे। शर्त यह है कि आप के ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ हो। 19 यरूशलम में अपने ख़ुदा को वह तमाम चीज़ें पहुँचाएँ जो आप को रब के घर में ख़िदमत के लिए दी जाएँगी। 20 बाक़ी जो कुछ भी आप को अपने ख़ुदा के घर के लिए ख़रीदना पड़े उस के पैसे शाही ख़ज़ाना अदा करेगा।

21 मैं, अर्तख़्शस्ता बादशाह दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिब में रहने वाले तमाम ख़ज़ानचियों को हुक्म देता हूँ कि हर तरह से अज़्रा इमाम की माली मदद करें। जो भी आसमान के ख़ुदा की शरीअत का यह उस्ताद माँगे वह उसे दिया जाए। 22 उसे 3,400 किलोग्राम चाँदी, 16,000 किलोग्राम गन्दुम, 2,200 लिटर मै और 2,200 लिटर ज़ैतून का तेल तक देना। नमक उसे उतना मिले जितना वह चाहे। 23 ध्यान से सब कुछ मुहय्या करें जो आसमान का ख़ुदा अपने घर के लिए माँगे। ऐसा न हो कि शहन्शाह और उस के बेटों की सल्तनत उस के ग़ज़ब का निशाना बन जाए। 24 नीज़, आप को इल्म हो कि आप को अल्लाह के इस घर में ख़िदमत करने वाले किसी शख़्स से भी ख़राज या किसी क़िस्म का टैक्स लेने की इजाज़त नहीं है, ख़्वाह वह इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर का दरबान या उस का ख़िदमतगार हो।

25 ऐ अज़्रा, जो हिक्मत आप के ख़ुदा ने आप को अता की है उस के मुताबिक़ मजिस्ट्रेट और क़ाज़ी

---

[s]8 अप्रैल।

[t]4 अगस्त।

मुक़र्रर करें जो आप की क़ौम के उन लोगों का इन्साफ़ करें जो दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिब में रहते हैं। जितने भी आप के ख़ुदा के अह्काम जानते हैं वह इस में शामिल हैं। और जितने इन अह्काम से वाक़िफ़ नहीं हैं उन्हें आप को तालीम देनी है। 26 जो भी आप के ख़ुदा की शरीअत और शहन्शाह के क़ानून की ख़िलाफ़वरज़ी करे उसे सख़्ती से सज़ा दी जाए। जुर्म की सन्जीदगी का लिहाज़ करके उसे या तो सज़ा-ए-मौत दी जाए या जिलावतन किया जाए, उस की मिलकियत ज़ब्त की जाए या उसे जेल में डाला जाए।”

अज़्रा की सताइश

27 रब हमारे बापदादा के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस ने शहन्शाह के दिल को यरूशलम में रब के घर को शानदार बनाने की तहरीक दी है। 28 उसी ने शहन्शाह, उस के मुशीरों और तमाम असर-ओ-रसूख़ रखने वाले अफ़्सरों के दिलों को मेरी तरफ़ माइल कर दिया है। चूँकि रब मेरे ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था इस लिए मेरा हौसला बढ़ गया, और मैं ने इस्राईल के ख़ानदानी सरपरस्तों को अपने साथ इस्राईल वापस जाने के लिए जमा किया।

अज़्रा के साथ जिलावतनी से वापस आने वालों की फ़हरिस्त

8 1 दर्ज-ए-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों की फ़हरिस्त है जो अर्तख़्शस्ता बादशाह की हुकूमत के दौरान मेरे साथ बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुए। हर ख़ानदान के मर्दों की तादाद भी दर्ज है :

2–3 फ़ीन्हास के ख़ानदान का जैर्सोम,

इतमर के ख़ानदान का दान्याल,

दाऊद के ख़ानदान का हत्तूश बिन सकनियाह,

परऊस के ख़ानदान का ज़करियाह। 150 मर्द उस के साथ नसबनामे में दर्ज थे।

4 पख़त-मोआब के ख़ानदान का इलीहूऐनी बिन ज़रख़ियाह 200 मर्दों के साथ,

5 ज़त्तू के ख़ानदान का सकनियाह बिन यहज़ीएल 300 मर्दों के साथ,

6 अदीन के ख़ानदान का अबद बिन यूनतन 50 मर्दों के साथ,

7 ऐलाम के ख़ानदान का यसायाह बिन अतलियाह 70 मर्दों के साथ,

8 सफ़तियाह के ख़ानदान का ज़बदियाह बिन मीकाएल 80 मर्दों के साथ,

9 योआब के ख़ानदान का अबदियाह बिन यहीएल 218 मर्दों के साथ,

10 बानी के ख़ानदान का सलूमीत बिन यूसिफ़याह 160 मर्दों के साथ,

11 बबी के ख़ानदान का ज़करियाह बिन बबी 28 मर्दों के साथ,

12 अज़्जाद के ख़ानदान का यूहनान बिन हक़्क़ातान 110 मर्दों के साथ,

13 अदूनिक़ाम के ख़ानदान के आख़िरी लोग इलीफ़लत, यईएल और समायाह 60 मर्दों के साथ,

14 बिग्वई का ख़ानदान का ऊती और ज़बूद 70 मर्दों के साथ।

15 मैं यानी अज़्रा ने मज़कूरा लोगों को उस नहर के पास जमा किया जो अहावा की तरफ़ बहती है। वहाँ हम ख़ैमे लगा कर तीन दिन ठहरे रहे। इस दौरान मुझे पता चला कि गो आम लोग और इमाम आ गए हैं लेकिन एक भी लावी हाज़िर नहीं है। 16 चुनाँचे मैं ने इलीअज़र, अरीएल, समायाह, इल्नातन, यरीब, इल्नातन, नातन, ज़करियाह और मसुल्लाम को अपने पास बुला लिया। यह सब ख़ानदानी सरपरस्त थे जबकि शरीअत के दो उस्ताद बनाम यूयारीब और इल्नातन भी साथ थे। 17 मैं ने उन्हें लावियों की आबादी कासिफ़ियाह के बुज़ुर्ग इद्दू के पास भेज कर वह कुछ बताया जो उन्हें इद्दू, उस के भाइयों और

रब के घर के ख़िदमतगारों को बताना था ताकि वह हमारे ख़ुदा के घर के लिए ख़िदमतगार भेजें।

18 अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ हम पर था, इस लिए उन्हों ने हमें महली बिन लावी बिन इस्राईल के ख़ानदान का समझदार आदमी सरिबियाह भेज दिया। सरिबियाह अपने बेटों और भाइयों के साथ पहुँचा। कुल 18 मर्द थे। 19 इन के इलावा मिरारी के ख़ानदान के हसबियाह और यसायाह को भी उन के बेटों और भाइयों के साथ हमारे पास भेजा गया। कुल 20 मर्द थे। 20 उन के साथ रब के घर के 220 ख़िदमतगार थे। इन के तमाम नाम नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और उस के मुलाज़िमों ने उन के बापदादा को लावियों की ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी दी थी।

यरूशलम के लिए रवानगी की तय्यारियाँ

21 वहीं अहावा की नहर के पास ही मैं ने एलान किया कि हम सब रोज़ा रख कर अपने आप को अपने ख़ुदा के सामने पस्त करें और दुआ करें कि वह हमें हमारे बाल-बच्चों और सामान के साथ सलामती से यरूशलम पहुँचाए। 22 क्यूँकि हमारे साथ फ़ौजी और घुड़सवार नहीं थे जो हमें रास्ते में डाकुओं से महफ़ूज़ रखते। बात यह थी कि मैं शहन्शाह से यह माँगने से शर्म महसूस कर रहा था, क्यूँकि हम ने उसे बताया था, “हमारे ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ हर एक पर ठहरता है जो उस का तालिब रहता है। लेकिन जो भी उसे तर्क करे उस पर उस का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल होता है।” 23 चुनाँचे हम ने रोज़ा रख कर अपने ख़ुदा से इल्तिमास की कि वह हमारी हिफ़ाज़त करे, और उस ने हमारी सुनी।

24 फिर मैं ने इमामों के 12 राहनुमाओं को चुन लिया, नीज़ सरिबियाह, हसबियाह और मज़ीद 10 लावियों को। 25 उन की मौजूदगी में मैं ने सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम सामान तोल लिया जो शहन्शाह, उस के मुशीरों और अफ़सरों और वहाँ के तमाम इस्राईलियों ने हमारे ख़ुदा के घर के लिए अता किया था।

26 मैं ने तोल कर ज़ैल का सामान उन के हवाले कर दिया : तक़रीबन 22,000 किलोग्राम चाँदी, चाँदी का कुछ सामान जिस का कुल वज़न तकरीन 3,400 किलोग्राम था, 3,400 किलोग्राम सोना, 27 सोने के 20 प्याले जिन का कुल वज़न तक़रीबन साढ़े 8 किलोग्राम था, और पीतल के दो पालिश किए हुए प्याले जो सोने के प्यालों जैसे क़ीमती थे।

28 मैं ने आदमियों से कहा, “आप और यह तमाम चीज़ें रब के लिए मख़्सूस हैं। लोगों ने अपनी ख़ुशी से यह सोना-चाँदी रब आप के बापदादा के ख़ुदा के लिए क़ुर्बान की है। 29 सब कुछ एहतियात से महफ़ूज़ रखें, और जब आप यरूशलम पहुँचेंगे तो इसे रब के घर के ख़ज़ाने तक पहुँचा कर राहनुमा इमामों, लावियों और ख़ानदानी सरपरस्तों की मौजूदगी में दुबारा तोलना।”

30 फिर इमामों और लावियों ने सोना-चाँदी और बाक़ी सामान ले कर उसे यरूशलम में हमारे ख़ुदा के घर में पहुँचाने के लिए महफ़ूज़ रखा।

यरूशलम तक सफ़र

31 हम पहले महीने के 12वें दिन [u]अहावा नहर से यरूशलम के लिए रवाना हुए। अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ हम पर था, और उस ने हमें रास्ते में दुश्मनों और डाकुओं से महफ़ूज़ रखा। 32 हम यरूशलम पहुँचे तो पहले तीन दिन आराम किया। 33 चौथे दिन हम ने अपने ख़ुदा के घर में सोना-चाँदी और बाक़ी मख़्सूस सामान तोल कर इमाम मरीमोत बिन ऊरियाह के हवाले कर दिया। उस वक़्त इलीअज़र बिन फ़ीन्हास और दो लावी बनाम यूज़बद बिन यशूअ और नौअदियाह बिन बिन्नूई उस के साथ थे। 34 हर चीज़ गिनी और तोली गई, फिर उस का पूरा वज़न फ़हरिस्त में दर्ज किया गया।

---

[u]19 अप्रैल।

35 इस के बाद जिलावतनी से वापस आए हुए
तमाम लोगों ने इस्राईल के ख़ुदा को भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ पेश कीं। इस नाते से उन्हों ने पूरे इस्राईल
के लिए 12 बैल, 96 मेंढे, भेड़ के 77 बच्चे और गुनाह
की क़ुर्बानी के 12 बकरे क़ुर्बान किए।
36 मुसाफ़िरों ने दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े
के गवर्नरों और हाकिमों को शहन्शाह की हिदायात
पहुँचाईं। इन को पढ़ कर उन्हों ने इस्राईली क़ौम और
अल्लाह के घर की हिमायत की।

ग़ैरयहूदी बीवियों पर अफ़्सोस

9 1–2 कुछ देर बाद क़ौम के राहनुमा मेरे पास
आए और कहने लगे, “क़ौम के आम लोगों,
इमामों और लावियों ने अपने आप को मुल्क की
दीगर क़ौमों से अलग नहीं रखा, गो यह घिनौने
रस्म-ओ-रिवाज के पैरोकार हैं। उन की औरतों से
शादी करके उन्हों ने अपने बेटों की भी शादी उन
की बेटियों से कराई है। यूँ अल्लाह की मुक़द्दस
क़ौम कनआनियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों, यबूसियों,
अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों और अमोरियों से
आलूदा हो गई है। और बुज़ुर्गों और अफ़्सरों ने इस
बेवफ़ाई में पहल की है!”
3 यह सुन कर मैं ने रंजीदा हो कर अपने कपड़ों को
फाड़ लिया और सर और दाढ़ी के बाल नोच नोच कर
नंगे फ़र्श पर बैठ गया। 4 वहाँ मैं शाम की क़ुर्बानी तक
बेहिस्स-ओ-हरकत बैठा रहा। इतने में बहुत से लोग
मेरे इर्दगिर्द जमा हो गए। वह जिलावतनी से वापस
आए हुए लोगों की बेवफ़ाई के बाइस थरथरा रहे थे,
क्यूँकि वह इस्राईल के ख़ुदा के जवाब से निहायत
ख़ौफ़ज़दा थे। 5 शाम की क़ुर्बानी के वक़्त मैं वहाँ से
उठ खड़ा हुआ जहाँ मैं तौबा की हालत में बैठा हुआ
था। वही फटे हुए कपड़े पहने हुए मैं घुटने टेक कर
झुक गया और अपने हाथों को आसमान की तरफ़
उठाए हुए रब अपने ख़ुदा से दुआ करने लगा,
6 “ऐ मेरे ख़ुदा, मैं निहायत शर्मिन्दा हूँ। अपना मुँह
तेरी तरफ़ उठाने की मुझ में जुरअत नहीं रही। क्यूँकि
हमारे गुनाहों का इतना बड़ा ढेर लग गया है कि वह
हम से ऊँचा है, बल्कि हमारा क़ुसूर आसमान तक
पहुँच गया है। 7 हमारे बापदादा के ज़माने से ले कर
आज तक हमारा क़ुसूर सन्जीदा रहा है। इसी वजह
से हम बार बार परदेसी हुक्मरानों के क़ब्ज़े में आए
हैं जिन्हों ने हमें और हमारे बादशाहों और इमामों
को क़त्ल किया, गिरिफ़्तार किया, लूट लिया और
हमारी बेहुरमती की। बल्कि आज तक हमारी हालत
यही रही है।
8 लेकिन इस वक़्त रब हमारे ख़ुदा ने थोड़ी देर के
लिए हम पर मेहरबानी की है। हमारी क़ौम के बचे-
खुचे हिस्से को उस ने रिहाई दे कर अपने मुक़द्दस
मक़ाम पर महफ़ूज़ रखा है। यूँ हमारे ख़ुदा ने हमारी
आँखों में दुबारा चमक पैदा की और हमें कुछ सुकून
मुहय्या किया है, गो हम अब तक ग़ुलामी में हैं।
9 बेशक हम ग़ुलाम हैं, तो भी अल्लाह ने हमें तर्क नहीं
किया बल्कि फ़ार्स के बादशाह को हम पर मेहरबानी
करने की तहरीक दी है। उस ने हमें अज़ सर-ए-नौ
ज़िन्दगी अता की है ताकि हम अपने ख़ुदा का घर
दुबारा तामीर और उस के खंडरात बहाल कर सकें।
अल्लाह ने हमें यहूदाह और यरूशलम में एक महफ़ूज़
चारदीवारी से घेर रखा है।
10 लेकिन ऐ हमारे ख़ुदा, अब हम क्या कहें? अपनी
इन हरकतों के बाद हम क्या जवाब दें? हम ने तेरे
उन अह्काम को नज़रअन्दाज़ किया है 11 जो तू ने
अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए थे।
तू ने फ़रमाया, ‘जिस मुल्क में तुम दाख़िल हो रहे
हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो वह उस में रहने वाली
क़ौमों के घिनौने रस्म-ओ-रिवाज के सबब से नापाक
है। मुल्क एक सिरे से दूसरे सिरे तक उन की नापाकी
से भर गया है। 12 लिहाज़ा अपनी बेटियों की उन
के बेटों के साथ शादी मत करवाना, न अपने बेटों
का उन की बेटियों के साथ रिश्ता बांधना। कुछ न
करो जिस से उन की सलामती और कामयाबी बढ़ती
जाए। तब ही तुम ताक़तवर हो कर मुल्क की अच्छी

पैदावार खाओगे, और तुम्हारी औलाद हमेशा तक
मुल्क की अच्छी चीज़ें विरासत में पाती रहेगी।'
13 अब हम अपनी शरीर हरकतों और बड़े क़ुसूर
की सज़ा भुगत रहे हैं, गो ऐ अल्लाह, तू ने हमें इतनी
सख़्त सज़ा नहीं दी जितनी हमें मिलनी चाहिए थी।
तू ने हमारा यह बचा-खुचा हिस्सा ज़िन्दा छोड़ा है।
14 तो क्या यह ठीक है कि हम तेरे अह्कास की
ख़िलाफ़वरज़ी करके ऐसी क़ौमों से रिश्ता बांधें जो
इस क़िस्म की घिनौनी हरकतें करती हैं? हरगिज़
नहीं! क्या इस का यह नतीजा नहीं निकलेगा कि
तेरा ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो कर सब कुछ तबाह
कर देगा और यह बचा-खुचा हिस्सा भी ख़त्म हो
जाएगा? 15 ऐ रब इस्राईल के ख़ुदा, तू ही आदिल है।
आज हम बचे हुए हिस्से की हैसियत से तेरे हुज़ूर खड़े
हैं। हम क़ुसूरवार हैं और तेरे सामने क़ाइम नहीं रह
सकते।"

बुतपरस्त बीवियों को तलाक़

10 1 जब अज़्रा इस तरह दुआ कर रहा और
अल्लाह के घर के सामने पड़े हुए और रोते
हुए क़ौम के क़ुसूर का इक़्रार कर रहा था तो उस
के इर्दगिर्द इस्राईली मर्दों, औरतों और बच्चों का बड़ा
हुजूम जमा हो गया। वह भी फूट फूट कर रोने लगे।
2 फिर ऐलाम के ख़ानदान के सकनियाह बिन
यहीएल ने अज़्रा से कहा,
"वाक़ई हम ने पड़ोसी क़ौमों की औरतों से शादी
करके अपने ख़ुदा से बेवफ़ाई की है। तो भी अब तक
इस्राईल के लिए उम्मीद की किरन बाक़ी है। 3 आएँ,
हम अपने ख़ुदा से अह्द बांध कर वादा करें कि हम
उन तमाम औरतों को उन के बच्चों समेत वापस भेज
देंगे। जो भी मश्वरा आप और अल्लाह के अह्कास का
ख़ौफ़ मानने वाले दीगर लोग हमें देंगे वह हम करेंगे।
सब कुछ शरीअत के मुताबिक़ किया जाए। 4 अब
उठें! क्यूँकि यह मुआमला दुरुस्त करना आप ही का
फ़र्ज़ है। हम आप के साथ हैं, इस लिए हौसला रखें
और वह कुछ करें जो ज़रूरी है।"
5 तब अज़्रा उठा और राहनुमा इमामों, लावियों और
तमाम क़ौम को क़सम खिलाई कि हम सकनियाह के
मश्वरे पर अमल करेंगे। 6 फिर अज़्रा अल्लाह के घर के
सामने से चला गया और यूहनान बिन इलियासिब के
कमरे में दाख़िल हुआ। वहाँ उस ने पूरी रात कुछ
खाए पिए बग़ैर गुज़ारी। अब तक वह जिलावतनी से
वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई पर मातम कर
रहा था।
7–8 सरकारी अफ़्सरों और बुज़ुर्गों ने फ़ैसला किया
कि यरूशलम और पूरे यहूदाह में एलान किया जाए,
"लाज़िम है कि जितने भी इस्राईली जिलावतनी से
वापस आए हैं वह सब तीन दिन के अन्दर अन्दर
यरूशलम में जमा हो जाएँ। जो भी इस दौरान
हाज़िर न हो उसे जिलावतनों की जमाअत से ख़ारिज
कर दिया जाएगा और उस की तमाम मिलकियत
ज़ब्त हो जाएगी।" 9 तब यहूदाह और बिनयमीन के
क़बीलों के तमाम आदमी तीन दिन के अन्दर अन्दर
यरूशलम पहुँचे। नवें महीने के बीसवें दिन [v]सब लोग
अल्लाह के घर के सहन में जमा हुए। सब मुआमले
की सन्जीदगी और मौसम के सबब से काँप रहे थे,
क्यूँकि बारिश हो रही थी।
10 अज़्रा इमाम खड़े हो कर कहने लगा, "आप
अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं। ग़ैरयहूदी औरतों से रिश्ता
बांधने से आप ने इस्राईल के क़ुसूर में इज़ाफ़ा कर
दिया है। 11 अब रब अपने बापदादा के ख़ुदा के हुज़ूर
अपने गुनाहों का इक़्रार करके उस की मर्ज़ी पूरी करें।
पड़ोसी क़ौमों और अपनी परदेसी बीवियों से अलग
हो जाएँ।"
12 पूरी जमाअत ने बुलन्द आवाज़ से जवाब दिया,
"आप ठीक कहते हैं! लाज़िम है कि हम आप की
हिदायत पर अमल करें। 13 लेकिन यह कोई ऐसा
मुआमला नहीं है जो एक या दो दिन में दुरुस्त

---

[v]19 सितम्बर।

किया जा सके। क्यूँकि हम बहुत लोग हैं और हम से सन्जीदा गुनाह सरज़द हुआ है। नीज़, इस वक़्त बरसात का मौसम है, और हम ज़्यादा देर तक बाहर नहीं ठहर सकते। 14 बेहतर है कि हमारे बुज़ुर्ग पूरी जमाअत की नुमाइन्दगी करें। फिर जितने भी आदमियों की ग़ैरयहूदी बीवियाँ हैं वह एक मुक़र्ररा दिन मक़ामी बुज़ुर्गों और क़ाज़ियों को साथ ले कर यहाँ आएँ और मुआमला दुरुस्त करें। और लाज़िम है कि यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहे जब तक रब का ग़ज़ब ठंडा न हो जाए।”

15 तमाम लोग मुत्तफ़िक़ हुए, सिर्फ़ यूनतन बिन असाहेल और यहज़ियाह बिन तिक़्वा ने फ़ैसले की मुख़ालफ़त की जबकि मसुल्लाम और सब्बती लावी उन के हक़ में थे। 16–17 तो भी इस्राईलियों ने मन्सूबे पर अमल किया। अज़्रा इमाम ने चन्द एक ख़ानदानी सरपरस्तों के नाम ले कर उन्हें यह ज़िम्मादारी दी कि जहाँ भी किसी यहूदी मर्द की ग़ैरयहूदी औरत से शादी हुई है वहाँ वह पूरे मुआमले की तहक़ीक़ करें। उन का काम दसवें महीने के पहले दिन [w]शुरू हुआ और पहले महीने के पहले दिन [x]तक्मील तक पहुँचा।

18–19 दर्ज-ए-ज़ैल उन आदमियों की फ़हरिस्त है जिन्हों ने ग़ैरयहूदी औरतों से शादी की थी। उन्हों ने क़सम खा कर वादा किया कि हम अपनी बीवियों से अलग हो जाएंगे। साथ साथ हर एक ने क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर मेंढा क़ुर्बान किया।

इमामों में से क़ुसूरवार :

यशूअ बिन यूसदक़ और उस के भाई मासियाह, इलीअज़र, यरीब और जिदलियाह,

20 इम्मेर के ख़ानदान का हनानी और ज़बदियाह,

21 हारिम के ख़ानदान का मासियाह, इल्यास, समायाह, यहीएल और उज़्ज़ियाह,

22 फ़श्हूर के ख़ानदान का इलियूऐनी, मासियाह, इस्माईल, नतनीएल, यूज़बद और इलिआसा।

23 लावियों में से क़ुसूरवार :

यूज़बद, सिमई, क़िलायाह यानी क़लीता, फ़तहियाह, यहूदाह और इलीअज़र।

24 गुलूकारों में से क़ुसूरवार :

इलियासिब।

रब के घर के दरबानों में से क़ुसूरवार :

सल्लूम, तलम और ऊरी।

25 बाक़ी क़ुसूरवार इस्राईली :

परऊस के ख़ानदान का रमियाह, यज़्ज़ियाह, मल्कियाह, मियामीन, इलीअज़र, मल्कियाह और बिनायाह।

26 ऐलाम के ख़ानदान का मत्तनियाह, ज़करियाह, यहीएल, अब्दी, यरीमोत और इल्यास,

27 ज़त्तू के ख़ानदान का इलियूऐनी, इलियासिब, मत्तनियाह, यरीमोत, ज़बद और अज़ीज़ा।

28 बबी के ख़ानदान का यूहनान, हननियाह, ज़ब्बी और अत्ली।

29 बानी के ख़ानदान का मसुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, यसूब, सियाल और यरीमोत।

30 पख़त-मोआब के ख़ानदान का अदना, किलाल, बिनायाह, मासियाह, मत्तनियाह, बज़लीएल, बिन्नूई और मनस्सी।

31 हारिम के ख़ानदान का इलीअज़र, यिस्सियाह, मल्कियाह, समायाह, शमाऊन, 32 बिनयमीन, मल्लूक और समरियाह।

33 हाशूम के ख़ानदान का मत्तनी, मत्तत्ताह, ज़बद, इलीफ़लत, यरेमी, मनस्सी और सिमई।

34 बानी के ख़ानदान का मादी, अम्राम, ऊएल, 35 बिनायाह, बदियाह, कलूही, 36 वनियाह, मरीमोत, इलियासिब, 37 मत्तनियाह, मत्तनी और यासी।

38 बिन्नूई के ख़ानदान का सिमई, 39 सलमियाह, नातन, अदायाह, 40 मक्नदबी, सासी, सारी, 41 अज़रेल, सलमियाह, समरियाह, 42 सल्लूम, अमरियाह और यूसुफ़।

---

[w]29 दिसम्बर।

[x]27 मार्च।

43 नबू के ख़ानदान का यईएल, मत्तितियाह, ज़बद,
ज़बीना, यद्दी, योएल और बिनायाह।
44 इन तमाम आदमियों की ग़ैरयहूदी औरतों से
शादी हुई थी, और उन के हाँ बच्चे पैदा हुए थे।

नहमियाह

नहमियाह यरूशलम के लिए दुआ करता है

1 1 ज़ैल में नहमियाह बिन हकलियाह की रिपोर्ट
दर्ज है।
मैं अर्तख़्शस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल
किस्लेव के महीने में सोसन के क़िले में था 2 कि
एक दिन मेरा भाई हनानी मुझ से मिलने आया। उस
के साथ यहूदाह के चन्द एक आदमी थे। मैं ने उन
से पूछा, “जो यहूदी बच कर जिलावतनी से यहूदाह
वापस गए हैं उन का क्या हाल है? और यरूशलम
शहर का क्या हाल है?” 3 उन्हों ने जवाब दिया,
“जो यहूदी बच कर जिलावतनी से यहूदाह वापस
गए हैं उन का बहुत बुरा और ज़िल्लतआमेज़ हाल है।
यरूशलम की फ़सील अब तक ज़मीनबोस है, और
उस के तमाम दरवाज़े राख हो गए हैं।”
4 यह सुन कर मैं बैठ कर रोने लगा। कई दिन मैं
रोज़ा रख कर मातम करता और आसमान के ख़ुदा
से दुआ करता रहा,
5 “ऐ रब, आसमान के ख़ुदा, तू कितना अज़ीम और
महीब ख़ुदा है! जो तुझे प्यार और तेरे अह्काम की
पैरवी करते हैं उन के साथ तू अपना अह्द क़ाइम
रखता और उन पर मेहरबानी करता है। 6 मेरी बात
सुन कर ध्यान दे कि तेरा ख़ादिम किस तरह तुझ
से इल्तिमास कर रहा है। दिन रात मैं इस्राईलियों
के लिए जो तेरे ख़ादिम हैं दुआ करता हूँ। मैं इक़्रार
करता हूँ कि हम ने तेरा गुनाह किया है। इस में मैं
और मेरे बाप का घराना भी शामिल है। 7 हम ने तेरे
ख़िलाफ़ निहायत शरीर क़दम उठाए हैं, क्यूँकि जो
अह्काम और हिदायात तू ने अपने ख़ादिम मूसा को
दी थीं हम उन के ताबे न रहे। 8 लेकिन अब वह कुछ
याद कर जो तू ने अपने ख़ादिम को फ़रमाया, ‘अगर
तुम बेवफ़ा हो जाओ तो मैं तुम्हें मुख़्तलिफ़ क़ौमों
में मुन्तशिर कर दूँगा, 9 लेकिन अगर तुम मेरे पास
वापस आ कर दुबारा मेरे अह्काम के ताबे हो जाओ
तो मैं तुम्हें तुम्हारे वतन में वापस लाऊँगा, ख़्वाह
तुम ज़मीन की इन्तिहा तक क्यूँ न पहुँच गए हो। मैं
तुम्हें उस जगह वापस लाऊँगा जिसे मैं ने चुन लिया
है ताकि मेरा नाम वहाँ सुकूनत करे।’ 10 ऐ रब, यह
लोग तो तेरे अपने ख़ादिम हैं, तेरी अपनी क़ौम जिसे
तू ने अपनी अज़ीम क़ुदरत और क़वी हाथ से फ़िद्या
दे कर छुड़ाया है। 11 ऐ रब, अपने ख़ादिम और उन
तमाम ख़ादिमों की इल्तिमास सुन जो पूरे दिल से
तेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हैं। जब तेरा ख़ादिम आज
शहन्शाह के पास होगा तो उसे कामयाबी अता कर।
बख़्श दे कि वह मुझ पर रहम करे।”
मैं ने यह इस लिए कहा कि मैं शहन्शाह का साक़ी
था।

नहमियाह को यरूशलम जाने की इजाज़त मिलती है

2 1 चार महीने गुज़र गए। नीसान के महीने के एक
दिन जब मैं शहन्शाह अर्तख़्शस्ता को मै पिला
रहा था तो मेरी मायूसी उसे नज़र आई। पहले उस
ने मुझे कभी उदास नहीं देखा था, 2 इस लिए उस ने
पूछा, “आप इतने ग़मगीन क्यूँ दिखाई दे रहे हैं? आप
बीमार तो नहीं लगते बल्कि कोई बात आप के दिल
को तंग कर रही है।”
मैं सख़्त घबरा गया 3 और कहा, “शहन्शाह अबद
तक जीता रहे! मैं किस तरह ख़ुश हो सकता हूँ? जिस
शहर में मेरे बापदादा को दफ़नाया गया है वह मल्बे
का ढेर है, और उस के दरवाज़े राख हो गए हैं।”
4 शहन्शाह ने पूछा, “तो फिर मैं किस तरह आप
की मदद करूँ?” ख़ामोशी से आसमान के ख़ुदा से
दुआ करके 5 मैं ने शहन्शाह से कहा, “अगर बात
आप को मन्ज़ूर हो और आप अपने ख़ादिम से ख़ुश

हों तो फिर बराह-ए-करम मुझे यहूदाह के उस शहर
भेज दीजिए जिस में मेरे बापदादा दफ़न हुए हैं ताकि
मैं उसे दुबारा तामीर करूँ।”
6 उस वक़्त मलिका भी साथ बैठी थी। शहन्शाह ने
सवाल किया, “सफ़र के लिए कितना वक़्त दरकार
है? आप कब तक वापस आ सकते हैं?” मैं ने
उसे बताया कि मैं कब तक वापस आऊँगा तो वह
मुत्तफ़िक़ हुआ। 7 फिर मैं ने गुज़ारिश की, “अगर बात
आप को मन्ज़ूर हो तो मुझे दरया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी
इलाक़े के गवर्नरों के लिए ख़त दीजिए ताकि वह
मुझे अपने इलाक़ों में से गुज़रने दें और मैं सलामती
से यहूदाह तक पहुँच सकूँ। 8 इस के इलावा शाही
जंगलात के निगरान आसफ़ के लिए ख़त लिखवाएँ
ताकि वह मुझे लकड़ी दे। जब मैं रब के घर के
साथ वाले क़िले के दरवाज़े, फ़सील और अपना घर
बनाऊँगा तो मुझे शहतीरों की ज़रूरत होगी।” अल्लाह
का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था, इस लिए शहन्शाह ने
मुझे यह ख़त दे दिए।
9 शहन्शाह ने फ़ौजी अफ़सर और घुड़सवार भी
मेरे साथ भेजे। यूँ रवाना हो कर मैं दरया-ए-फ़ुरात
के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नरों के पास पहुँचा और
उन्हें शहन्शाह के ख़त दिए। 10 जब गवर्नर सन्बल्लत
हौरूनी और अम्मोनी अफ़सर तूबियाह को मालूम
हुआ कि कोई इस्राईलियों की बहबूदी के लिए आ
गया है तो वह निहायत नाख़ुश हुए।

नहमियाह फ़सील का मुआइना करता है

11 सफ़र करते करते मैं यरूशलम पहुँच गया। तीन
दिन के बाद 12 मैं रात के वक़्त शहर से निकला।
मेरे साथ चन्द एक आदमी थे, और हमारे पास सिर्फ़
वही जानवर था जिस पर मैं सवार था। अब तक मैं ने
किसी को भी उस बोझ के बारे में नहीं बताया था जो
मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल पर यरूशलम के लिए डाल दिया
था। 13 चुनाँचे मैं अंधेरे में वादी के दरवाज़े से शहर
से निकला और जुनूब की तरफ़ अज़दहे के चश्मे
से हो कर कचरे के दरवाज़े तक पहुँचा। हर जगह
मैं ने गिरी हुई फ़सील और भस्म हुए दरवाज़ों का
मुआइना किया। 14 फिर मैं शिमाल यानी चश्मे के
दरवाज़े और शाही तालाब की तरफ़ बढ़ा, लेकिन
मल्बे की कस्रत की वजह से मेरे जानवर को गुज़रने
का रास्ता न मिला, 15 इस लिए मैं वादी-ए-क़िद्रोन में
से गुज़रा। अब तक अंधेरा ही अंधेरा था। वहाँ भी मैं
फ़सील का मुआइना करता गया। फिर मैं मुड़ा और
वादी के दरवाज़े में से दुबारा शहर में दाख़िल हुआ।

फ़सील को तामीर करने का फ़ैसला

16 यरूशलम के अफ़सरों को मालूम नहीं था कि मैं
कहाँ गया और क्या कर रहा था। अब तक मैं ने न
उन्हें और न इमामों या दीगर उन लोगों को अपने
मन्सूबे से आगाह किया था जिन्हें तामीर का यह
काम करना था। 17 लेकिन अब मैं उन से मुख़ातिब
हुआ, “आप को ख़ुद हमारी मुसीबत नज़र आती है।
यरूशलम मल्बे का ढेर बन गया है, और उस के
दरवाज़े राख हो गए हैं। आएँ, हम फ़सील को नए
सिरे से तामीर करें ताकि हम दूसरों के मज़ाक़ का
निशाना न बने रहें।” 18 मैं ने उन्हें बताया कि अल्लाह
का शफ़ीक़ हाथ किस तरह मुझ पर रहा था और
कि शहन्शाह ने मुझ से किस क़िस्म का वादा किया
था। यह सुन कर उन्हों ने जवाब दिया, “ठीक है,
आएँ हम तामीर का काम शुरू करें!” चुनाँचे वह इस
अच्छे काम में लग गए।
19 जब सन्बल्लत हौरूनी, अम्मोनी अफ़सर तूबियाह
और जशम अरबी को इस की ख़बर मिली तो उन्हों
ने हमारा मज़ाक़ उड़ा कर हिक़ारतआमेज़ लहजे
में कहा, “यह तुम लोग क्या कर रहे हो? क्या
तुम शहन्शाह से ग़द्दारी करना चाहते हो?” 20 मैं ने
जवाब दिया, “आसमान का ख़ुदा हमें कामयाबी
अता करेगा। हम जो उस के ख़ादिम हैं तामीर का
काम शुरू करेंगे। जहाँ तक यरूशलम का ताल्लुक़ है,
न आज और न माज़ी में आप का कभी कोई हिस्सा
या हक़ था।”

फ़सील की तामीर-ए-नौ

3 1 इमाम-ए-आज़म इलियासिब बाक़ी इमामों के
साथ मिल कर तामीरी काम में लग गया। उन्हों
ने भेड़ के दरवाज़े को नए सिरे से बना दिया और उसे
मख़्सूस करके उस के किवाड़ लगा दिए। उन्हों ने
फ़सील के साथ वाले हिस्से को भी मिया बुर्ज और
हनन-एल के बुर्ज तक बना कर मख़्सूस किया।
2 यरीहू के आदमियों ने फ़सील के अगले हिस्से को
खड़ा किया जबकि ज़क्कूर बिन इम्री ने उन के हिस्से
से मुल्हिक़ हिस्से को तामीर किया।
3 मछली का दरवाज़ा सनाआह के ख़ानदान की
ज़िम्मादारी थी। उसे शहतीरों से बना कर उन्हों ने
किवाड़, चटख़्नियाँ और कुंडे लगा दिए।
4 अगले हिस्से की मरम्मत मरीमोत बिन ऊरियाह
बिन हक़्क़ूज़ ने की। अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन
बरकियाह बिन मशेज़ब-एल की ज़िम्मादारी थी।
सदोक़ बिन बाना ने अगले हिस्से को तामीर किया।
5 अगला हिस्सा तक़ूअ के बाशिन्दों ने बनाया।
लेकिन शहर के बड़े लोग अपने बुज़ुर्गों के तहत काम
करने के लिए तय्यार न थे।
6 यसाना का दरवाज़ा योयदा बिन फ़ासिह और
मसुल्लाम बिन बसूदियाह की ज़िम्मादारी थी। उसे
शहतीरों से बना कर उन्हों ने किवाड़, चटख़्नियाँ
और कुंडे लगा दिए।
7 अगला हिस्सा मलतियाह जिबऊनी और यदून
मरूनोती ने खड़ा किया। यह लोग जिबऊन और
मिस्फ़ाह के थे, वही मिस्फ़ाह जहाँ दरया-ए-फ़ुरात
के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर का दार-उल-हकूमत
था।
8 अगले हिस्से की मरम्मत एक सुनार बनाम
उज़्ज़ीएल बिन हर्हियाह के हाथ में थी।
अगले हिस्से पर एक इत्रसाज़ बनाम हननियाह
मुक़र्रर था। इन लोगों ने फ़सील की मरम्मत 'मोटी
दीवार' तक की।
9 अगले हिस्से को रिफ़ायाह बिन हूर ने खड़ा
किया। यह आदमी ज़िला यरूशलम के आधे हिस्से
का अफ़्सर था।
10 यदायाह बिन हरूमफ़ ने अगले हिस्से की
मरम्मत की जो उस के घर के मुक़ाबिल था।
अगले हिस्से को हत्तूश बिन हसब्नियाह ने तामीर
किया।
11 अगले हिस्से को तनूरों के बुर्ज तक मल्कियाह
बिन हारिम और हस्सूब बिन पख़त-मोआब ने खड़ा
किया।
12 अगला हिस्सा सल्लूम बिन हल्लूहेश की ज़िम्मादारी
थी। यह आदमी ज़िला यरूशलम के दूसरे आधे
हिस्से का अफ़्सर था। उस की बेटियों ने उस की
मदद की।
13 हनून ने ज़नूह के बाशिन्दों समेत वादी के दरवाज़े
को तामीर किया। शहतीरों से उसे बना कर उन्हों
ने किवाड़, चटख़्नियाँ और कुंडे लगाए। इस के
इलावा उन्हों ने फ़सील को वहाँ से कचरे के दरवाज़े
तक खड़ा किया। इस हिस्से का फ़ासिला तक़रीबन
1,500 फ़ुट यानी आधा किलोमीटर था।
14 कचरे का दरवाज़ा मल्कियाह बिन रैकाब की
ज़िम्मादारी थी। यह आदमी ज़िला बैत-करम का
अफ़्सर था। उस ने उसे बना कर किवाड़, चटख़्नियाँ
और कुंडे लगाए।
15 चश्मे के दरवाज़े की तामीर सल्लून बिन कुल्होज़ा
के हाथ में थी जो ज़िला मिस्फ़ाह का अफ़्सर था।
उस ने दरवाज़े पर छत बना कर उस के किवाड़,
चटख़्नियाँ और कुंडे लगा दिए। साथ साथ उस ने
फ़सील के उस हिस्से की मरम्मत की जो शाही बाग़
के पास वाले तालाब से गुज़रता है। यह वही तालाब
है जिस में पानी नाले के ज़रीए पहुँचता है। सल्लून ने
फ़सील को उस सीढ़ी तक तामीर किया जो यरूशलम
के उस हिस्से से उतरती है जो 'दाऊद का शहर'
कहलाता है।
16 अगला हिस्सा नहमियाह बिन अज़्बुक की
ज़िम्मादारी थी जो ज़िला बैत-सूर के आधे हिस्से का

अफ़सर था। फ़सील का यह हिस्सा दाऊद बादशाह के क़ब्रिस्तान के मुक़ाबिल था और मस्नूई तालाब और सूरमाओं के कमरों पर ख़त्म हुआ।

17 ज़ैल के लावियों ने अगले हिस्सों को खड़ा किया : पहले रहूम बिन बानी का हिस्सा था।

ज़िला क़ईला के आधे हिस्से के अफ़सर हसबियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। 18 अगले हिस्से को लावियों ने बिन्नूई बिन हनदाद के ज़ेर-ए-निगरानी खड़ा किया जो ज़िला क़ईला के दूसरे आधे हिस्से पर मुक़र्रर था।

19 अगला हिस्सा मिस्फ़ाह के सरदार अज़र बिन यशूअ की ज़िम्मादारी थी। यह हिस्सा फ़सील के उस मोड़ पर था जहाँ रास्ता असलिहाख़ाने की तरफ़ चढ़ता है।

20 अगले हिस्से को बारूक बिन ज़ब्बी ने बड़ी मेहनत से तामीर किया। यह हिस्सा फ़सील के मोड़ से शुरू हो कर इमाम-ए-आज़म इलियासिब के घर के दरवाज़े पर ख़त्म हुआ।

21 अगला हिस्सा मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक़्क़ूज़ की ज़िम्मादारी थी और इलियासिब के घर के दरवाज़े से शुरू हो कर उस के कोने पर ख़त्म हुआ।

22 ज़ैल के हिस्से उन इमामों ने तामीर किए जो शहर के गिर्द-ओ-नवाह में रहते थे।

23 अगले हिस्से की तामीर बिनयमीन और हस्सूब के ज़ेर-ए-निगरानी थी। यह हिस्सा उन के घरों के सामने था।

अज़रियाह बिन मासियाह बिन अननियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा उस के घर के पास ही था।

24 अगला हिस्सा बिन्नूई बिन हनदाद की ज़िम्मादारी थी। यह अज़रियाह के घर से शुरू हुआ और मुड़ते मुड़ते कोने पर ख़त्म हुआ।

25 अगला हिस्सा फ़ालाल बिन ऊज़ी की ज़िम्मादारी थी। यह हिस्सा मोड़ से शुरू हुआ, और ऊपर का जो बुर्ज शाही महल से उस जगह निकलता है जहाँ मुहाफ़िज़ों का सहन है वह भी इस में शामिल था।

अगला हिस्सा फ़िदायाह बिन परऊस 26 और ओफ़ल पहाड़ी पर रहने वाले रब के घर के ख़िदमतगारों के ज़िम्मे था। यह हिस्सा पानी के दरवाज़े और वहाँ से निकले हुए बुर्ज पर ख़त्म हुआ।

27 अगला हिस्सा इस बुर्ज से ले कर ओफ़ल पहाड़ी की दीवार तक था। तक़ूअ के बाशिन्दों ने उसे तामीर किया।

28 घोड़े के दरवाज़े से आगे इमामों ने फ़सील की मरम्मत की। हर एक ने अपने घर के सामने का हिस्सा खड़ा किया।

29 उन के बाद सदोक़ बिन इम्मेर का हिस्सा आया। यह भी उस के घर के मुक़ाबिल था।

अगला हिस्सा समायाह बिन सकनियाह ने खड़ा किया। यह आदमी मशरिक़ी दरवाज़े का पहरेदार था।

30 अगला हिस्सा हननियाह बिन सलमियाह और सलफ़ के छटे बेटे हनून के ज़िम्मे था।

अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह ने तामीर किया जो उस के घर के मुक़ाबिल था।

31 एक सुनार बनाम मल्कियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा रब के घर के ख़िदमतगारों और ताजिरों के उस मकान पर ख़त्म हुआ जो पहरे के दरवाज़े के सामने था। फ़सील के कोने पर वाक़े बालाख़ाना भी इस में शामिल था।

32 आख़िरी हिस्सा भेड़ के दरवाज़े पर ख़त्म हुआ। सुनारों और ताजिरों ने उसे खड़ा किया।

सन्बल्लत यहूदियों का मज़ाक़ उड़ाता है

4 1 जब सन्बल्लत को पता चला कि हम फ़सील को दुबारा तामीर कर रहे हैं तो वह आग-बगूला हो गया। हमारा मज़ाक़ उड़ा उड़ा कर 2 उस ने अपने हमख़िदमत अफ़सरों और सामरिया के फ़ौजियों की मौजूदगी में कहा, “यह ज़ईफ़ यहूदी क्या कर रहे हैं? क्या यह वाक़ई यरूशलम की

क़िलाबन्दी करना चाहते हैं? क्या यह समझते हैं कि
चन्द एक क़ुर्बानियाँ पेश करके हम फ़सील को आज
ही खड़ा करेंगे? वह इन जले हुए पत्थरों और मल्बे
के इस ढेर से किस तरह नई दीवार बना सकते हैं?”
3 अम्मोनी अफ़सर तूबियाह उस के साथ खड़ा था।
वह बोला, “उन्हें करने दो! दीवार इतनी कमज़ोर
होगी कि अगर लोमड़ी भी उस पर छलाँग लगाए तो
गिर जाएगी।”

4 ऐ हमारे ख़ुदा, हमारी सुन, क्यूँकि लोग हमें हक़ीर
जानते हैं। जिन बातों से उन्हों ने हमें ज़लील किया है
वह उन की ज़िल्लत का बाइस बन जाएँ। बख़्श दे कि
लोग उन्हें लूट लें और उन्हें क़ैद करके जिलावतन
कर दें। 5 उन का क़ुसूर नज़रअन्दाज़ न कर बल्कि
उन के गुनाह तुझे याद रहें। क्यूँकि उन्हों ने फ़सील
को तामीर करने वालों को ज़लील करने से तुझे तैश
दिलाया है।

6 मुख़ालफ़त के बावुजूद हम फ़सील की मरम्मत
करते रहे, और होते होते पूरी दीवार की आधी ऊँचाई
खड़ी हुई, क्यूँकि लोग पूरी लगन से काम कर रहे थे।

दुश्मन के हम्लों की मुदाफ़अत

7 जब सन्बल्लत, तूबियाह, अरबों, अम्मोनियों और
अश्दूद के बाशिन्दों को इत्तिला मिली कि यरूशलम
की फ़सील की तामीर में तरक़्क़ी हो रही है बल्कि जो
हिस्से अब तक खड़े न हो सके थे वह भी बन्द होने
लगे हैं तो वह बड़े ग़ुस्से में आ गए। 8 सब मुत्तहिद
हो कर यरूशलम पर हम्ला करने और उस में गड़बड़
पैदा करने की साज़िशें करने लगे। 9 लेकिन हम ने
अपने ख़ुदा से इल्तिमास करके पहरेदार लगाए जो
हमें दिन रात उन से बचाए रखें।

10 उस वक़्त यहूदाह के लोग कराहने लगे,
“मज़दूरों की ताक़त ख़त्म हो रही है, और अभी तक
मल्बे के बड़े ढेर बाक़ी हैं। फ़सील को बनाना हमारे
बस की बात नहीं है।”

11 दूसरी तरफ़ दुश्मन कह रहे थे, “हम अचानक
उन पर टूट पड़ेंगे। उन को उस वक़्त पता चलेगा जब
हम उन के बीच में होंगे। तब हम उन्हें मार देंगे और
काम रुक जाएगा।”

12 जो यहूदी उन के क़रीब रहते थे वह बार बार
हमारे पास आ कर हमें इत्तिला देते रहे, “दुश्मन चारों
तरफ़ से आप पर हम्ला करने के लिए तय्यार खड़ा है।”

13 तब मैं ने लोगों को फ़सील के पीछे एक जगह
खड़ा कर दिया जहाँ दीवार सब से नीची थी, और वह
तलवारों, नेज़ों और कमानों से लेस अपने ख़ानदानों
के मुताबिक़ खुले मैदान में खड़े हो गए। 14 लोगों का
जाइज़ा ले कर मैं खड़ा हुआ और कहने लगा, “उन
से मत डरें! रब को याद करें जो अज़ीम और महीब
है। ज़हन में रखें कि हम अपने भाइयों, बेटों बेटियों,
बीवियों और घरों के लिए लड़ रहे हैं।”

15 जब हमारे दुश्मनों को मालूम हुआ कि उन की
साज़िशों की ख़बर हम तक पहुँच गई है और कि
अल्लाह ने उन के मन्सूबे को नाकाम होने दिया तो हम
सब अपनी अपनी जगह पर दुबारा तामीर के काम
में लग गए। 16 लेकिन उस दिन से मेरे जवानों का
सिर्फ़ आधा हिस्सा तामीरी काम में लगा रहा। बाक़ी
लोग नेज़ों, ढालों, कमानों और ज़िराबक्तर से लेस
पहरा देते रहे। अफ़सर यहूदाह के उन तमाम लोगों
के पीछे खड़े रहे 17 जो दीवार को तामीर कर रहे थे।
सामान उठाने वाले एक हाथ से हथियार पकड़े काम
करते थे। 18 और जो भी दीवार को खड़ा कर रहा
था उस की तलवार कमर में बंधी रहती थी। जिस
आदमी को तुरम बजा कर ख़तरे का एलान करना
था वह हमेशा मेरे साथ रहा। 19 मैं ने शुरफ़ा, बुज़ुर्गों
और बाक़ी लोगों से कहा, “यह काम बहुत ही बड़ा
और वसी है, इस लिए हम एक दूसरे से दूर और
बिखरे हुए काम कर रहे हैं। 20 जूँ ही आप को तुरम
की आवाज़ सुनाई दे तो भाग कर आवाज़ की तरफ़
चले आएँ। हमारा ख़ुदा हमारे लिए लड़ेगा!”

21 हम पौ फटने से ले कर उस वक़्त तक काम में
मसरूफ़ रहते जब तक सितारे नज़र न आते, और हर
वक़्त आदमियों का आधा हिस्सा नेज़े पकड़े पहरा
देता था। 22 उस वक़्त मैं ने सब को यह हुक्म भी

दिया, “हर आदमी अपने मददगारों के साथ रात का
वक़्त यरूशलम में गुज़ारे। फिर आप रात के वक़्त
पहरादारी में भी मदद करेंगे और दिन के वक़्त तामीरी
काम में भी।” 23 उन तमाम दिनों के दौरान न मैं, न मेरे
भाइयों, न मेरे जवानों और न मेरे पहरेदारों ने कभी
अपने कपड़े उतारे। नीज़, हर एक अपना हथियार
पकड़े रहा।

ग़रीबों का क़र्ज़ा मन्सूख़

5 1 कुछ देर बाद कुछ मर्द-ओ-ख़वातीन मेरे पास
आ कर अपने यहूदी भाइयों की शिकायत करने
लगे। 2 बाज़ ने कहा, “हमारे बहुत ज़्यादा बेटे-बेटियाँ
हैं, इस लिए हमें मज़ीद अनाज मिलना चाहिए, वर्ना
हम ज़िन्दा नहीं रहेंगे।” 3 दूसरों ने शिकायत की,
“काल के दौरान हमें अपने खेतों, अंगूर के बाग़ों
और घरों को गिरवी रखना पड़ा ताकि अनाज मिल
जाए।” 4 कुछ और बोले, “हमें अपने खेतों और अंगूर
के बाग़ों पर बादशाह का टैक्स अदा करने के लिए
उधार लेना पड़ा। 5 हम भी दूसरों की तरह यहूदी क़ौम
के हैं, और हमारे बच्चे उन से कम हैसियत नहीं रखते।
तो भी हमें अपने बच्चों को ग़ुलामी में बेचना पड़ता है
ताकि गुज़ारा हो सके। हमारी कुछ बेटियाँ लौंडियाँ
बन चुकी हैं। लेकिन हम ख़ुद बेबस हैं, क्यूँकि हमारे
खेत और अंगूर के बाग़ दूसरों के क़ब्ज़े में हैं।”

6 उन का वावैला और शिकायतें सुन कर मुझे
बड़ा ग़ुस्सा आया। 7 बहुत सोच-बिचार के बाद मैं
ने शुरफ़ा और अफ़सरों पर इल्ज़ाम लगाया, “आप
अपने हमवतन भाइयों से ग़ैरमुनासिब सूद ले रहे
हैं!” मैं ने उन से निपटने के लिए एक बड़ी जमाअत
इकट्ठी करके 8 कहा, “हमारे कई हमवतन भाइयों
को ग़ैरयहूदियों को बेचा गया था। जहाँ तक मुमकिन
था हम ने उन्हें वापस ख़रीद कर आज़ाद करने की
कोशिश की। और अब आप ख़ुद अपने हमवतन
भाइयों को बेच रहे हैं। क्या हम अब उन्हें दुबारा
वापस ख़रीदें?” वह ख़ामोश रहे और कोई जवाब न
दे सके।

9 मैं ने बात जारी रखी, “आप का यह सुलूक ठीक
नहीं। आप को हमारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मान कर ज़िन्दगी
गुज़ारना चाहिए ताकि हम अपने ग़ैरयहूदी दुश्मनों की
लान-तान का निशाना न बनें। 10 मैं, मेरे भाइयों और
मुलाज़िमों ने भी दूसरों को उधार के तौर पर पैसे और
अनाज दिया है। लेकिन आएँ, हम उन से सूद न लें!
11 आज ही अपने क़र्ज़दारों को उन के खेत, घर और
अंगूर और ज़ैतून के बाग़ वापस कर दें। जितना सूद
आप ने लगाया था उसे भी वापस कर दें, ख़्वाह उसे
पैसों, अनाज, ताज़ा मै या ज़ैतून के तेल की सूरत में
अदा करना हो।” 12 उन्हों ने जवाब दिया, “हम उसे
वापस कर देंगे और आइन्दा उन से कुछ नहीं माँगेंगे।
जो कुछ आप ने कहा वह हम करेंगे।”

तब मैं ने इमामों को अपने पास बुलाया ताकि
शुरफ़ा और बुज़ुर्ग उन की मौजूदगी में कस्म खाएँ
कि हम ऐसा ही करेंगे। 13 फिर मैं ने अपने लिबास
की तहें झाड़ झाड़कर कहा, “जो भी अपनी क़सम
तोड़े उसे अल्लाह इसी तरह झाड़ कर उस के घर और
मिलकियत से महरूम कर दे!”

तमाम जमाशुदा लोग बोले, “आमीन, ऐसा ही हो!”
और रब की तारीफ़ करने लगे। सब ने अपने वादे पूरे
किए। 14

नहमियाह का अच्छा नमूना

मैं कुल बारह साल सूबा यहूदाह का गवर्नर रहा
यानी अर्तख़्शस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल
से उस के 32वें साल तक। इस पूरे अर्से में न मैं ने
और न मेरे भाइयों ने वह आम्दनी ली जो हमारे लिए
मुक़र्रर की गई थी। 15 असल में माज़ी के गवर्नरों ने
क़ौम पर बड़ा बोझ डाल दिया था। उन्हों ने रआया
से न सिर्फ़ रोटी और मै बल्कि फ़ी दिन चाँदी के 40
सिक्के भी लिए थे। उन के अफ़सरों ने भी आम लोगों से
ग़लत फ़ाइदा उठाया था। लेकिन चूँकि मैं अल्लाह का
ख़ौफ़ मानता था, इस लिए मैं ने उन से ऐसा सुलूक
न किया। 16 मेरी पूरी ताक़त फ़सील की तक्मील में
सर्फ़ हुई, और मेरे तमाम मुलाज़िम भी इस काम में

शरीक रहे। हम में से किसी ने भी ज़मीन न ख़रीदी।
17 मैं ने कुछ न माँगा हालाँकि मुझे रोज़ाना यहूदाह के
150 अफ़सरों की मेहमान-नवाज़ी करनी पड़ती थी।
उन में वह तमाम मेहमान शामिल नहीं हैं जो गाहे-ब-
गाहे पड़ोसी ममालिक से आते रहे। 18 रोज़ाना एक
बैल, छः बेहतरीन भेड़-बकरियाँ और बहुत से परिन्दे
मेरे लिए ज़बह करके तय्यार किए जाते, और दस दस
दिन के बाद हमें कई क़िस्म की बहुत सी मै ख़रीदनी
पड़ती थी। इन अख़राजात के बावुजूद मैं ने गवर्नर के
लिए मुक़र्ररा वज़ीफ़ा न माँगा, क्यूँकि क़ौम पर बोझ
वैसे भी बहुत ज़्यादा था।
19 ऐ मेरे ख़ुदा, जो कुछ मैं ने इस क़ौम के लिए
किया है उस के बाइस मुझ पर मेहरबानी कर।

नहमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

6 1 सन्बल्लत, तूबियाह, जशम अरबी और हमारे
बाक़ी दुश्मनों को पता चला कि मैं ने फ़सील
को तक्मील तक पहुँचाया है और दीवार में कहीं
भी ख़ाली जगह नज़र नहीं आती। सिर्फ़ दरवाज़ों के
किवाड़ अब तक लगाए नहीं गए थे। 2 तब सन्बल्लत
और जशम ने मुझे पैग़ाम भेजा, “हम वादी-ए-ओनू के
शहर कफ़ीरीम में आप से मिलना चाहते हैं।” लेकिन
मुझे मालूम था कि वह मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहते
हैं। 3 इस लिए मैं ने क़ासिदों के हाथ जवाब भेजा, “मैं
इस वक़्त एक बड़ा काम तक्मील तक पहुँचा रहा हूँ,
इस लिए मैं आ नहीं सकता। अगर मैं आप से मिलने
आऊँ तो पूरा काम रुक जाएगा।”
4 चार दफ़ा उन्हों ने मुझे यही पैग़ाम भेजा और हर
बार मैं ने वही जवाब दिया। 5 पाँचवें मर्तबा जब
सन्बल्लत ने अपने मुलाज़िम को मेरे पास भेजा तो
उस के हाथ में एक खुला ख़त था। 6 ख़त में लिखा
था, “पड़ोसी ममालिक में अफ़्वाह फैल गई है कि
आप और बाक़ी यहूदी बग़ावत की तय्यारियाँ कर
रहे हैं। जशम ने इस बात की तस्दीक़ की है। लोग
कहते हैं कि इसी वजह से आप फ़सील बना रहे हैं।
इन रिपोर्टों के मुताबिक़ आप उन के बादशाह बनेंगे।
7 कहा जाता है कि आप ने नबियों को मुक़र्ररर किया
है जो यरूशलम में एलान करें कि आप यहूदाह के
बादशाह हैं। बेशक ऐसी अफ़्वाहें शहन्शाह तक भी
पहुँचेंगी। इस लिए आएँ, हम मिल कर एक दूसरे से
मश्वरा करें कि क्या करना चाहिए।”
8 मैं ने उसे जवाब भेजा, “जो कुछ आप कह रहे हैं
वह झूट ही झूट है। कुछ नहीं हो रहा, बल्कि आप
ने फ़र्ज़ी कहानी घड़ ली है!” 9 असल में दुश्मन हमें
डराना चाहते थे। उन्हों ने सोचा, “अगर हम ऐसी बातें
कहें तो वह हिम्मत हार कर काम से बाज़ आएँगे।”
लेकिन अब मैं ने ज़्यादा अज़्म के साथ काम जारी
रखा।
10 एक दिन मैं समायाह बिन दिलायाह बिन महेतब-
एल से मिलने गया जो ताला लगा कर घर में बैठा
था। उस ने मुझ से कहा, “आएँ, हम अल्लाह के घर
में जमा हो जाएँ और दरवाज़ों को अपने पीछे बन्द
करके कुंडी लगाएँ। क्यूँकि लोग इसी रात आप को
क़त्ल करने के लिए आएँगे।”
11 मैं ने एतिराज़ किया, “क्या यह ठीक है कि मुझ
जैसा आदमी भाग जाए? या क्या मुझ जैसा शख़्स जो
इमाम नहीं है रब के घर में दाख़िल हो कर ज़िन्दा रह
सकता है? हरगिज़ नहीं! मैं ऐसा नहीं करूँगा!” 12 मैं
ने जान लिया कि समायाह की यह बात अल्लाह की
तरफ़ से नहीं है। सन्बल्लत और तूबियाह ने उसे रिश्वत
दी थी, इसी लिए उस ने मेरे बारे में ऐसी पेशगोई
की थी। 13 इस से वह मुझे डरा कर गुनाह करने पर
उकसाना चाहते थे ताकि वह मेरी बदनामी करके
मुझे मज़ाक़ का निशाना बना सकें।
14 ऐ मेरे ख़ुदा, तूबियाह और सन्बल्लत की यह बुरी
हरकतें मत भूलना! नौअदियाह नबिया और बाक़ी
उन नबियों को याद रख जिन्हों ने मुझे डराने की
कोशिश की है।

फ़सील की तक्मील

15 फ़सील इलूल के महीने के 25वें दिन [y]यानी 52
दिनों में मुकम्मल हुई। 16 जब हमारे दुश्मनों को यह
ख़बर मिली तो पड़ोसी ममालिक सहम गए, और
वह एहसास-ए-कमतरी का शिकार हो गए। उन्हों ने
जान लिया कि अल्लाह ने ख़ुद यह काम तक्मील तक
पहुँचाया है।
17 उन 52 दिनों के दौरान यहूदाह के शुरफ़ा तूबियाह
को ख़त भेजते रहे और उस से जवाब मिलते रहे थे।
18 असल में यहूदाह के बहुत से लोगों ने क़सम खा
कर उस की मदद करने का वादा किया था। वजह
यह थी कि वह सकनियाह बिन अरख़ का दामाद
था, और उस के बेटे यूहनान की शादी मसुल्लाम बिन
बरकियाह की बेटी से हुई थी। 19 तूबियाह के यह
मददगार मेरे सामने उस के नेक कामों की तारीफ़
करते रहे और साथ साथ मेरी हर बात उसे बताते
रहे। फिर तूबियाह मुझे ख़त भेजता ताकि मैं डर कर
काम से बाज़ आऊँ।

7 1 फ़सील की तक्मील पर मैं ने दरवाज़ों के
किवाड़ लगवाए। फिर रब के घर के दरबान,
गुलूकार और ख़िदमतगुज़ार लावी मुक़र्रर किए गए।
2 मैं ने दो आदमियों को यरूशलम के हुक्मरान
बनाया। एक मेरा भाई हनानी और दूसरा क़िले का
कमाँडर हननियाह था। हननियाह को मैं ने इस लिए
चुन लिया कि वह वफ़ादार था और अक्सर लोगों
की निस्बत अल्लाह का ज़्यादा ख़ौफ़ मानता था। 3 मैं
ने दोनों से कहा, “यरूशलम के दरवाज़े दोपहर के
वक़्त जब धूप की शिद्दत है खुले न रहें, और पहरा
देते वक़्त भी उन्हें बन्द करके कुंडे लगाएँ। यरूशलम
के आदमियों को पहरादारी के लिए मुक़र्रर करें जिन
में से कुछ फ़सील पर और कुछ अपने घरों के सामने
ही पहरा दें।”

जिलावतनी से वापस आए हुओं की फ़हरिस्त

4 गो यरूशलम शहर बड़ा और वसी था, लेकिन
उस में आबादी थोड़ी थी। ढाए गए मकान अब तक
दुबारा तामीर नहीं हुए थे। 5 चुनाँचे मेरे ख़ुदा ने मेरे
दिल को शुरफ़ा, अफ़सरों और अवाम को इकट्ठा
करने की तहरीक दी ताकि ख़ानदानों की रजिस्ट्री
तय्यार करूँ। इस सिलसिले में मुझे एक किताब मिल
गई जिस में उन लोगों की फ़हरिस्त दर्ज थी जो हम से
पहले जिलावतनी से वापस आए थे। उस में लिखा
था,
6 “ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त है
जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल ले गया था,
लेकिन अब वह यरूशलम और यहूदाह के उन शहरों
में फिर जा बसे जहाँ पहले रहते थे।
7 उन के राहनुमा ज़रुब्बाबल, यशूअ, नहमियाह,
अज़रियाह, रामियाह, नहमानी, मर्दकी, बिल्शान,
मिस्फ़रत, बिग्वई, नहूम और बाना थे।
ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस आए हुए ख़ानदानों के
मर्द बयान किए गए हैं।
8 परऊस का ख़ानदान : 2,172,
9 सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,
10 अरख़ का ख़ानदान : 652,
11 पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशूअ और
योआब की औलाद : 2,818,
12 ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,
13 ज़त्तू का ख़ानदान : 845,
14 ज़क्कई का ख़ानदान : 760,
15 बिन्नूई का ख़ानदान : 648,
16 बबी का ख़ानदान : 628,
17 अज़्जाद का ख़ानदान : 2,322,
18 अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 667,
19 बिग्वई का ख़ानदान : 2,067,

---

[y] 2 अक्तूबर।

20 अदीन का ख़ानदान : 655,
21 अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की
औलाद : 98,
22 हाशूम का ख़ानदान : 328,
23 बज़ी का ख़ानदान : 324,
24 ख़ारिफ़ का ख़ानदान : 112,
25 जिबऊन का ख़ानदान : 95,
26 बैत-लहम और नतूफ़ा के बाशिन्दे : 188,
27 अनतोत के बाशिन्दे : 128,
28 बैत-अज़्मावत के बाशिन्दे : 42,
29 क़िर्यत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिन्दे :
743,
30 रामा और जिबा के बाशिन्दे : 621,
31 मिक्मास के बाशिन्दे : 122,
32 बैत-एल और अई के बाशिन्दे : 123,
33 दूसरे नबू के बाशिन्दे : 52,
34 दूसरे ऐलाम के बाशिन्दे : 1,254,
35 हारिम के बाशिन्दे : 320,
36 यरीहू के बाशिन्दे : 345,
37 लूद, हादीद और ओनू के बाशिन्दे : 721,
38 सनाआह के बाशिन्दे : 3,930,
39 ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।
यदायाह का ख़ानदान जो यशूअ की नस्ल का था :
973,
40 इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,
41 फ़श्हूर का ख़ानदान : 1,247,
42 हारिम का ख़ानदान : 1,017,
43 ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।
यशूअ और क़दमीएल का ख़ानदान यानी
हूदावियाह की औलाद : 74,
44 गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 148 आदमी,
45 रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तल्मून,
अक़्कूब, ख़तीता और सोबी के ख़ानदानों के 138
आदमी।
46 रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्ज-ए-ज़ैल
ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 47 क़रूस, सीआ, फ़दून,
48 लिबाना, हजाबा, शल्मी, 49 हनान, जिद्देल, जहर,
50 रियायाह, रज़ीन, नक़ूदा, 51 जज़्ज़ाम, उज़्ज़ा,
फ़ासिह, 52 बसी, मऊनीम, नफ़ूसीम, 53 बक़्बूक़,
हक़ूफ़ा, हर्हूर, 54 बज़्लूत, महीदा, हर्शा, 55 बर्क़ूस,
सीसरा, तामह, 56 नज़ियाह और ख़तीफ़ा।
57 सुलेमान के ख़ादिमों के दर्ज-ए-ज़ैल ख़ानदान
जिलावतनी से वापस आए।
सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 58 याला, दर्क़ून, जिद्देल,
59 सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-ज़बाइम और
अमून।
60 रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के
ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की
तादाद 392 थी।

61–62 वापस आए हुए ख़ानदानों में से दिलायाह,
तूबियाह और नक़ूदा के 642 मर्द साबित न कर सके
कि इस्राईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-
हर्शा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहने वाले थे।
63–64 हबायाह, हक़्क़ूज़ और बर्ज़िल्लै के ख़ानदानों
के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के
घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्यूँकि
गो उन्हों ने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए
लेकिन उन का कहीं ज़िक्र न मिला, इस लिए उन्हें
नापाक क़रार दिया गया। (बर्ज़िल्लै के ख़ानदान के
बानी ने बर्ज़िल्लै जिलिआदी की बेटी से शादी करके
अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 65 यहूदाह के
गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम
फ़िलहाल क़ुर्बानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न
हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमाम-ए-
आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम
नामी क़ुरआ डाल कर मुआमला हल करे।
66 कुल 42,360 इस्राईली अपने वतन लौट आए,
67 नीज़ उन के 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 245
गुलूकार जिन में मर्द-ओ-ख़वातीन शामिल थे।

68 इस्राईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर,
69 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।
70 कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने रब के घर की
तामीर-ए-नौ के लिए अपनी ख़ुशी से हदिए दिए।
गवर्नर ने सोने के 1,000 सिक्के, 50 कटोरे और इमामों
के 530 लिबास दिए। 71 कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों
ने ख़ज़ाने में सोने के 20,000 सिक्के और चाँदी के
1,200 किलोग्राम डाल दिए। 72 बाक़ी लोगों ने सोने
के 20,000 सिक्के, चाँदी के 1,100 किलोग्राम और
इमामों के 67 लिबास अता किए।
73 इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और
ख़िदमतगार, गुलूकार और अवाम के कुछ लोग
अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे।
यूँ तमाम इस्राईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने
लगे।”

अज़्रा शरीअत की तिलावत करता है

8 सातवें महीने यानी अक्तूबर में जब इस्राईली अपने
अपने शहरों में दुबारा आबाद हो गए थे 1 तो
सब लोग मिल कर पानी के दरवाज़े के चौक
में जमा हो गए। उन्हों ने शरीअत के आलिम अज़्रा
से दरख़्वास्त की कि वह शरीअत ले आएँ जो रब
ने मूसा की मारिफ़त इस्राईली क़ौम को दे दी थी।
2 चुनाँचे अज़्रा ने हाज़िरीन के सामने शरीअत की
तिलावत की। सातवें महीने का पहला दिन [z]था।
न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें और शरीअत की बातें
समझने के क़ाबिल तमाम बच्चे भी जमा हुए थे।
3 सुब्ह-सवेरे से ले कर दोपहर तक अज़्रा पानी के
दरवाज़े के चौक में पढ़ता रहा, और तमाम जमाअत
ध्यान से शरीअत की बातें सुनती रही।
4 अज़्रा लकड़ी के एक चबूतरे पर खड़ा था
जो ख़ासकर इस मौक़े के लिए बनाया गया था।
उस के दाएँ हाथ मत्तितियाह, समा, अनायाह,
ऊरियाह, ख़िलक़ियाह और मासियाह खड़े थे।
उस के बाएँ हाथ फ़िदायाह, मीसाएल, मल्कियाह,
हाशूम, हस्बद्दाना, ज़करियाह और मसुल्लाम खड़े थे।
5 चूँकि अज़्रा ऊँची जगह पर खड़ा था इस लिए वह
सब को नज़र आया। चुनाँचे जब उस ने किताब को
खोल दिया तो सब लोग खड़े हो गए। 6 अज़्रा ने रब
अज़ीम ख़ुदा की सताइश की, और सब ने अपने हाथ
उठा कर जवाब में कहा, “आमीन, आमीन।” फिर
उन्हों ने झुक कर रब को सिज्दा किया।
7 कुछ लावी हाज़िर थे जिन्हों ने लोगों के लिए
शरीअत की तश्रीह की। उन के नाम यशूअ, बानी,
सरिबियाह, यमीन, अक़्कूब, सब्बती, हूदियाह,
मासियाह, क़लीता, अज़रियाह, यूज़बद, हनान और
फ़िलायाह थे। हाज़िरीन अब तक खड़े थे। 8 शरीअत
की तिलावत के साथ साथ मज़कूरा लावी क़दम-
ब-क़दम उस की तश्रीह यूँ करते गए कि लोग उसे
अच्छी तरह समझ सके।
9 शरीअत की बातें सुन सुन कर वह रोने लगे।
लेकिन नहमियाह गवर्नर, शरीअत के आलिम अज़्रा
इमाम और शरीअत की तश्रीह करने वाले लावियों
ने उन्हें तसल्ली दे कर कहा, “उदास न हों और मत
रोएँ! आज रब आप के ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस ईद है। 10 अब जाएँ, उम्दा खाना खा कर
और पीने की मीठी चीज़ें पी कर ख़ुशी मनाएँ। जो
अपने लिए कुछ तय्यार न कर सकें उन्हें अपनी ख़ुशी
में शरीक करें। यह दिन हमारे रब के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस है। उदास न हों, क्यूँकि रब की ख़ुशी
आप की पनाहगाह है।”
11 लावियों ने भी तमाम लोगों को सुकून दिला कर
कहा, “उदास न हों, क्यूँकि यह दिन रब के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।”
12 फिर सब अपने अपने घर चले गए। वहाँ उन्हों
ने बड़ी ख़ुशी से खा पी कर जश्न मनाया। साथ साथ
उन्हों ने दूसरों को भी अपनी ख़ुशी में शरीक किया।

---

[z]8 अक्तूबर।

उन की बड़ी ख़ुशी का सबब यह था कि अब उन्हें उन बातों की समझ आई थी जो उन्हें सुनाई गई थीं।

झोंपड़ियों की ईद

13 अगले दिन [a]ख़ानदानी सरपरस्त, इमाम और
लावी दुबारा शरीअत के आलिम अज़्रा के पास जमा
हुए ताकि शरीअत की मज़ीद तालीम पाएँ। 14 जब
वह शरीअत का मुतालआ कर रहे थे तो उन्हें पता
चला कि रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था कि
इस्राईली सातवें महीने की ईद के दौरान झोंपड़ियों में
रहें। 15 चुनाँचे उन्हों ने यरूशलम और बाक़ी तमाम
शहरों में एलान किया, “पहाड़ों पर से ज़ैतून, आस,
[b]खजूर और बाक़ी सायादार दरख़्तों की शाख़ें तोड़
कर अपने घर ले जाएँ। वहाँ उन से झोंपड़ियाँ बनाएँ,
जिस तरह शरीअत ने हिदायत दी है।”
16 लोगों ने ऐसा ही किया। वह घरों से निकले और
दरख़्तों की शाख़ें तोड़ कर ले आए। उन से उन्हों
ने अपने घरों की छतों पर और सहनों में झोंपड़ियाँ
बना लीं। बाज़ ने अपनी झोंपड़ियों को रब के घर
के सहनों, पानी के दरवाज़े के चौक और इफ़्राईम
के दरवाज़े के चौक में भी बनाया। 17 जितने भी
जिलावतनी से वापस आए थे वह सब झोंपड़ियाँ बना
कर उन में रहने लगे। यशूअ बिन नून के ज़माने से ले
कर उस वक़्त तक यह ईद इस तरह नहीं मनाई गई
थी। सब निहायत ही ख़ुश थे। 18 ईद के हर दिन अज़्रा
ने अल्लाह की शरीअत की तिलावत की। सात दिन
इस्राईलियों ने ईद मनाई, और आठवें दिन सब लोग
इजतिमा के लिए इकट्ठे हुए, बिलकुल उन हिदायात
के मुताबिक़ जो शरीअत में दी गई हैं।

इस्राईली अपने गुनाहों का इक़्रार करते हैं

9 1 [c]उसी महीने के 24वें दिन इस्राईली रोज़ा रखने
के लिए जमा हुए। टाट के लिबास पहने हुए और
सर पर ख़ाक डाल कर वह यरूशलम आए। 2 अब
वह तमाम ग़ैरयहूदियों से अलग हो कर उन गुनाहों
का इक़्रार करने के लिए हाज़िर हुए जो उन से और
उन के बापदादा से सरज़द हुए थे। 3 तीन घंटे वह खड़े
रहे, और उस दौरान रब उन के ख़ुदा की शरीअत की
तिलावत की गई। फिर वह रब अपने ख़ुदा के सामने
मुँह के बल झुक कर मज़ीद तीन घंटे अपने गुनाहों
का इक़्रार करते रहे।
4 यशूअ, बानी, क़दमीएल, सबनियाह, बुन्नी,
सरिबियाह, बानी और कनानी जो लावी थे एक
चबूतरे पर खड़े हुए और बुलन्द आवाज़ से रब अपने
ख़ुदा से दुआ की।
5 फिर यशूअ, क़दमीएल, बानी, हसब्नियाह,
सरिबियाह, हूदियाह, सबनियाह और फ़तहियाह जो
लावी थे बोल उठे, “खड़े हो कर रब अपने ख़ुदा की
जो अज़ल से अबद तक है सताइश करें!”
उन्हों दुआ की,
“तेरे जलाली नाम की तम्जीद हो, जो हर
मुबारकबादी और तारीफ़ से कहीं बढ़ कर है। 6 ऐ
रब, तू ही वाहिद ख़ुदा है! तू ने आसमान को एक
सिरे से दूसरे सिरे तक उस के लश्कर समेत ख़ल्क़
किया। ज़मीन और जो कुछ उस पर है, समुन्दर और
जो कुछ उस में है सब कुछ तू ही ने बनाया है। तू ने
सब को ज़िन्दगी बख़्शी है, और आसमानी लश्कर
तुझे सिज्दा करता है।

7 तू ही रब और वह ख़ुदा है जिस ने अब्राम को
चुन लिया और कस्दियों के शहर ऊर से बाहर ला
कर इब्राहीम का नाम रखा। 8 तू ने उस का दिल
वफ़ादार पाया और उस से अह्द बांध कर वादा
किया, ‘मैं तेरी औलाद को कनआनियों, हित्तियों,
अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, यबूसियों और जिर्जासियों का

---

[a] 9 अक्तूबर।

[b] myrtle।

[c] 31 अक्तूबर।

मुल्क अता करूँगा।' और तू अपने वादे पर पूरा उतरा, क्यूँकि तू क़ाबिल-ए-एतिमाद और आदिल है।

9 तू ने हमारे बापदादा के मिस्र में बुरे हाल पर ध्यान
दिया, और बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के किनारे पर मदद के
लिए उन की चीख़ें सुनीं। 10 तू ने इलाही निशानों और
मोजिज़ों से फ़िरऔन, उस के अफ़सरों और उस के
मुल्क की क़ौम को सज़ा दी, क्यूँकि तू जानता था
कि मिस्री हमारे बापदादा से कैसा गुस्ताखाना सुलूक
करते रहे हैं। यूँ तेरा नाम मश्हूर हुआ और आज तक
याद रहा है। 11 क़ौम के देखते देखते तू ने समुन्दर
को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया, और वह ख़ुश्क
ज़मीन पर चल कर उस में से गुज़र सके। लेकिन उन
का ताक़्क़ुब करने वालों को तू ने मुतलातिम पानी
में फैंक दिया, और वह पत्थरों की तरह समुन्दर की
गहराइयों में डूब गए।

12 दिन के वक़्त तू ने बादल के सतून से और
रात के वक़्त आग के सतून से अपनी क़ौम की
राहनुमाई की। यूँ वह रास्ता अंधेरे में भी रौशन रहा
जिस पर उन्हें चलना था। 13 तू कोह-ए-सीना पर
उतर आया और आसमान से उन से हमकलाम हुआ।
तू ने उन्हें साफ़ हिदायात और क़ाबिल-ए-एतिमाद
अह्काम दिए, ऐसे क़वाइद जो अच्छे हैं। 14 तू ने
उन्हें सबत के दिन के बारे में आगाह किया, उस
दिन के बारे में जो तेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।
अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त तू ने उन्हें अह्काम
और हिदायात दीं। 15 जब वह भूके थे तो तू ने उन्हें
आसमान से रोटी खिलाई, और जब प्यासे थे तो तू
ने उन्हें चटान से पानी पिलाया। तू ने हुक्म दिया,
'जाओ, मुल्क में दाख़िल हो कर उस पर क़ब्ज़ा कर
लो, क्यूँकि मैं ने हाथ उठा कर क़सम खाई है कि
तुम्हें यह मुल्क दूँगा।'

16 अफ़सोस, हमारे बापदादा मग़रूर और ज़िद्दी हो
गए। वह तेरे अह्काम के ताबे न रहे। 17 उन्हों ने तेरी
सुनने से इन्कार किया और वह मोजिज़ात याद न
रखे जो तू ने उन के दरमियान किए थे। वह यहाँ तक
अड़ गए कि उन्हों ने एक राहनुमा को मुक़र्रर किया
जो उन्हें मिस्र की ग़ुलामी में वापस ले जाए। लेकिन तू
मुआफ़ करने वाला ख़ुदा है जो मेहरबान और रहीम,
तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है। तू ने उन्हें तर्क न
किया, 18 उस वक़्त भी नहीं जब उन्हों ने अपने लिए
सोने का बछड़ा ढाल कर कहा, 'यह तेरा ख़ुदा है जो
तुझे मिस्र से निकाल लाया।' इस क़िस्म का सन्जीदा
कुफ़्र वह बकते रहे। 19 लेकिन तू बहुत रहमदिल है,
इस लिए तू ने उन्हें रेगिस्तान में न छोड़ा। दिन के
वक़्त बादल का सतून उन की राहनुमाई करता रहा,
और रात के वक़्त आग का सतून वह रास्ता रौशन
करता रहा जिस पर उन्हें चलना था। 20 न सिर्फ़ यह
बल्कि तू ने उन्हें अपना नेक रूह अता किया जो
उन्हें तालीम दे। जब उन्हें भूक और प्यास थी तो तू
उन्हें मन खिलाने और पानी पिलाने से बाज़ न आया।
21 चालीस साल वह रेगिस्तान में फिरते रहे, और उस
पूरे अर्से में तू उन की ज़रूरियात को पूरा करता रहा।
उन्हें कोई भी कमी नहीं थी। न उन के कपड़े घिस
कर फटे और न उन के पाँओ सूजे।

22 तू ने ममालिक और क़ौमें उन के हवाले कर दीं,
मुख़्तलिफ़ इलाक़े यके बाद दीगरे उन के क़ब्ज़े में
आए। यूँ वह सीहोन बादशाह के मुल्क हस्बोन और
ओज बादशाह के मुल्क बसन पर फ़त्ह पा सके।
23 उन की औलाद तेरी मर्ज़ी से आसमान पर के
सितारों जैसी बेशुमार हुई, और तू उन्हें उस मुल्क में
लाया जिस का वादा तू ने उन के बापदादा से किया
था। 24 वह मुल्क में दाख़िल हो कर उस के मालिक
बन गए। तू ने कनआन के बाशिन्दों को उन के आगे
आगे ज़ेर कर दिया। मुल्क के बादशाह और क़ौमें
उन के क़ब्ज़े में आ गईं, और वह अपनी मर्ज़ी के
मुताबिक़ उन से निपट सके। 25 क़िलाबन्द शहर और
ज़रख़ेज़ ज़मीनें तेरी क़ौम के क़ाबू में आ गईं, नीज़
हर क़िस्म की अच्छी चीज़ों से भरे घर, तय्यारशुदा

हौज़, अंगूर के बाग़ और कस्रत के ज़ैतून और दीगर फलदार दरख़्त। वह जी भर कर खाना खा कर मोटे हो गए और तेरी बरकतों से लुत्फ़अन्दोज़ होते रहे।

26 इस के बावुजूद वह ताबे न रहे बल्कि सरकश
हुए। उन्हों ने अपना मुँह तेरी शरीअत से फेर लिया।
और जब तेरे नबी उन्हें समझा समझा कर तेरे पास
वापस लाना चाहते थे तो उन्हों ने बड़े कुफ़्र बक कर
उन्हें क़त्ल कर दिया। 27 यह देख कर तू ने उन्हें उन
के दुश्मनों के हवाले कर दिया जो उन्हें तंग करते
रहे। जब वह मुसीबत में फंस गए तो वह चीख़ें मार
मार कर तुझ से फ़र्याद करने लगे। और तू ने आसमान
पर से उन की सुनी। बड़ा तरस खा कर तू ने उन के
पास ऐसे लोगों को भेज दिया जिन्हों ने उन्हें दुश्मनों
के हाथ से छुड़ाया। 28 लेकिन जूँ ही इस्राईलियों को
सुकून मिलता वह दुबारा ऐसी हरकतें करने लगते
जो तुझे नापसन्द थीं। नतीजे में तू उन्हें दुबारा उन
के दुश्मनों के हाथ में छोड़ देता। जब वह उन की
हुकूमत के तहत पिसने लगते तो वह एक बार फिर
चिल्ला चिल्ला कर तुझ से इल्तिमास करने लगते। इस
बार भी तू आसमान पर से उन की सुनता। हाँ, तू
इतना रहमदिल है कि तू उन्हें बार बार छुटकारा
देता रहा! 29 तू उन्हें समझाता रहा ताकि वह दुबारा
तेरी शरीअत की तरफ़ रुजू करें, लेकिन वह मग़रूर
थे और तेरे अह्काम के ताबे न हुए। उन्हों ने तेरी
हिदायात की ख़िलाफ़वरज़ी की, हालाँकि इन ही पर
चलने से इन्सान को ज़िन्दगी हासिल होती है। लेकिन
उन्हों ने पर्वा न की बल्कि अपना मुँह तुझ से फेर कर
अड़ गए और सुनने के लिए तय्यार न हुए।

30 उन की हरकतों के बावुजूद तू बहुत सालों तक
सब्र करता रहा। तेरा रूह उन्हें नबियों के ज़रीए
समझाता रहा, लेकिन उन्हों ने ध्यान न दिया। तब तू
ने उन्हें ग़ैरक़ौमों के हवाले कर दिया। 31 ताहम तेरा
रहम से भरा दिल उन्हें तर्क करके तबाह नहीं करना
चाहता था। तू कितना मेहरबान और रहीम ख़ुदा है!
32 ऐ हमारे ख़ुदा, ऐ अज़ीम, क़वी और महीब ख़ुदा
जो अपना अह्द और अपनी शफ़क़त क़ाइम रखता है,
इस वक़्त हमारी मुसीबत पर ध्यान दे और उसे कम
न समझ! क्यूँकि हमारे बादशाह, बुज़ुर्ग, इमाम और
नबी बल्कि हमारे बापदादा और पूरी क़ौम असूरी
बादशाहों के पहले हम्लों से ले कर आज तक सख़्त
मुसीबत बर्दाश्त करते रहे हैं। 33 हक़ीक़त तो यह है
कि जो भी मुसीबत हम पर आई है उस में तू रास्त
साबित हुआ है। तू वफ़ादार रहा है, गो हम क़ुसूरवार
ठहरे हैं। 34 हमारे बादशाह और बुज़ुर्ग, हमारे इमाम
और बापदादा, उन सब ने तेरी शरीअत की पैरवी
न की। जो अह्काम और तम्बीह तू ने उन्हें दी उस
पर उन्हों ने ध्यान ही न दिया। 35 तू ने उन्हें उन की
अपनी बादशाही, कस्रत की अच्छी चीज़ों और एक
वसी और ज़रख़ेज़ मुल्क से नवाज़ा था। तो भी वह
तेरी ख़िदमत करने के लिए तय्यार न थे और अपनी
ग़लत राहों से बाज़ न आए।

36 इस का अन्जाम यह हुआ है कि आज हम उस
मुल्क में ग़ुलाम हैं जो तू ने हमारे बापदादा को अता
किया था ताकि वह उस की पैदावार और दौलत से
लुत्फ़अन्दोज़ हो जाएँ। 37 मुल्क की वाफ़िर पैदावार
उन बादशाहों तक पहुँचती है जिन्हें तू ने हमारे गुनाहों
की वजह से हम पर मुक़र्रर किया है। अब वही हम
पर और हमारे मवेशियों पर हुकूमत करते हैं। उन ही
की मर्ज़ी चलती है। चुनाँचे हम बड़ी मुसीबत में फंसे
हैं।

क़ौम का अह्दनामा

38 यह तमाम बातें मद्द-ए-नज़र रख कर हम अहद
बांध कर उसे क़लमबन्द कर रहे हैं। हमारे बुज़ुर्ग,
लावी और इमाम दस्तख़त करके अह्दनामे पर मुहर
लगा रहे हैं।”

10 1 ज़ैल के लोगों ने दस्तख़त किए।
गवर्नर नहमियाह बिन हकलियाह,
सिदक़ियाह, 2 सिरायाह, अज़रियाह, यरमियाह,

3 फ़श्हूर, अमरियाह, मल्कियाह, 4 हत्तूश,
सबनियाह, मल्लूक, 5 हारिम, मरीमोत, अबदियाह,
6 दान्याल, जिन्नतून, बारूक, 7 मसुल्लाम, अबियाह,
मियामीन, 8 माज़ियाह, बिल्जी और समायाह।
सिरायाह से ले कर समायाह तक इमाम थे।
9 फिर ज़ैल के लावियों ने दस्तख़त किए।
यशूअ बिन अज़नियाह, हनदाद के ख़ानदान
का बिन्नूई, क़दमीएल, 10 उन के भाई सबनियाह,
हूदियाह, क़लीता, फ़िलायाह, हनान, 11 मीका,
रहोब, हसबियाह, 12 ज़क्कूर, सरिबियाह, सबनियाह,
13 हूदियाह, बानी और बनीनू।
14 इन के बाद ज़ैल के क़ौमी बुज़ुर्गों ने दस्तख़त
किए।
परऊस, पख़त-मोआब, ऐलाम, ज़त्तू, बानी 15 बुन्नी,
अज़्जाद, बबी, 16 अदूनियाह, बिग्वई, अदीन,
17 अतीर, हिज़क़ियाह, अज़्ज़ूर, 18 हूदियाह, हाशूम,
बज़ी, 19 ख़ारिफ़, अनतोत, नेबी, 20 मग्फ़ीआस,
मसुल्लाम, हिज़ीर 21 मशेज़ब-एल, सदोक़, यद्दू,
22 फ़लतियाह, हनान, अनायाह, 23 होसेअ,
हननियाह, हस्सूब, 24 हल्लूहेश, फ़िल्हा, सोबेक़,
25 रहूम, हसब्नाह, मासियाह, 26 अख़ियाह, हनान,
अनान, 27 मल्लूक, हारिम और बाना।
28 क़ौम के बाक़ी लोग भी अह्द में शरीक हुए
यानी बाक़ी इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और
ख़िदमतगार, गुलूकार, नीज़ सब जो ग़ैरयहूदी क़ौमों
से अलग हो गए थे ताकि रब की शरीअत की पैरवी
करें। उन की बीवियाँ और वह बेटे-बेटियाँ भी शरीक
हुए जो अह्द को समझ सकते थे। 29 अपने बुज़ुर्ग
भाइयों के साथ मिल कर उन्हों ने क़सम खा कर
वादा किया, “हम उस शरीअत की पैरवी करेंगे जो
अल्लाह ने हमें अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त दी है।
हम एहतियात से रब अपने आक़ा के तमाम अह्काम
और हिदायात पर अमल करेंगे।”
30 नीज़, उन्हों ने क़सम खा कर वादा किया,
“हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरयहूदियों से
नहीं कराएँगे ।
31 जब ग़ैरयहूदी हमें सबत के दिन या रब के लिए
मख़्सूस किसी और दिन अनाज या कोई और माल
बेचने की कोशिश करें तो हम कुछ नहीं ख़रीदेंगे।
हर सातवें साल हम ज़मीन की खेतीबाड़ी नहीं
करेंगे और तमाम कर्ज़े मन्सूख़ करेंगे।
32 हम सालाना रब के घर की ख़िदमत के लिए
चाँदी का छोटा सिक्का [d]देंगे। इस ख़िदमत में ज़ैल की
चीज़ें शामिल हैं : 33 अल्लाह के लिए मख़्सूस रोटी,
ग़ल्ला की नज़र और भस्म होने वाली वह क़ुर्बानियाँ जो
रोज़ाना पेश की जाती हैं, सबत के दिन, नए चाँद की
ईद और बाक़ी ईदों पर पेश की जाने वाली क़ुर्बानियाँ,
ख़ास मुक़द्दस क़ुर्बानियाँ, इस्राईल का कफ़्फ़ारा देने
वाली गुनाह की क़ुर्बानियाँ, और हमारे ख़ुदा के घर
का हर काम।
34 हम ने क़ुरआ डाल कर मुक़र्रर किया है कि
इमामों, लावियों और बाक़ी क़ौम के कौन कौन से
ख़ानदान साल में किन किन मुक़र्ररा मौक़ों पर रब के
घर में लकड़ी पहुँचाएँ। यह लकड़ी हमारे ख़ुदा की
क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बानियाँ जलाने के लिए इस्तेमाल
की जाएगी, जिस तरह शरीअत में लिखा है।
35 हम सालाना अपने खेतों और दरख़्तों का पहला
फल रब के घर में पहुँचाएँगे।
36 जिस तरह शरीअत में दर्ज है, हम अपने पहलौठों
को रब के घर में ला कर अल्लाह के लिए मख़्सूस
करेंगे। गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चे
हम ख़िदमतगुज़ार इमामों को क़ुर्बान करने के लिए
देंगे। 37 उन्हें हम साल के पहले ग़ल्ला से गूँधा हुआ
आटा, अपने दरख़्तों का पहला फल, अपनी नई मै
और ज़ैतून के नए तेल का पहला हिस्सा दे कर रब
के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे।
दीहात में हम लावियों को अपनी फ़सलों का दसवाँ
हिस्सा देंगे, क्यूँकि वही दीहात में यह हिस्सा जमा

---

[d]चाँदी के तक़रीबन 4 ग्राम।

करते हैं। 38 दसवाँ हिस्सा मिलते वक़्त कोई इमाम
यानी हारून के ख़ानदान का कोई मर्द लावियों के
साथ होगा, और लावी माल का दसवाँ हिस्सा हमारे
ख़ुदा के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे। 39 आम लोग
और लावी वहाँ ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून का तेल
लाएँगे। इन कमरों में मक़्दिस की ख़िदमत के लिए
दरकार तमाम सामान महफ़ूज़ रखा जाएगा। इस के
इलावा वहाँ इमामों, दरबानों और गुलूकारों के कमरे
होंगे।

हम अपने ख़ुदा के घर में तमाम फ़राइज़ सरअन्जाम
देने में ग़फ़लत नहीं बरतेंगे।”

यरूशलम और यहूदाह के बाशिन्दे

11 1 क़ौम के बुज़ुर्ग यरूशलम में आबाद हुए
थे। फ़ैसला किया गया कि बाक़ी लोगों के
हर दसवें ख़ानदान को मुक़द्दस शहर यरूशलम में
बसना है। यह ख़ानदान क़ुरआ डाल कर मुक़र्रर किए
गए। बाक़ी ख़ानदानों को उन की मक़ामी जगहों में
रहने की इजाज़त थी। 2 लेकिन जितने लोग अपनी
ख़ुशी से यरूशलम जा बसे उन्हें दूसरों ने मुबारकबाद
दी।

3 ज़ैल में सूबे के उन बुज़ुर्गों की फ़हरिस्त है जो
यरूशलम में आबाद हुए। (अक्सर लोग यहूदाह के
बाक़ी शहरों और दीहात में अपनी मौरूसी ज़मीन पर
बसते थे। इन में आम इस्राईली, इमाम, लावी, रब
के घर के ख़िदमतगार और सुलेमान के ख़ादिमों की
औलाद शामिल थे। 4 लेकिन यहूदाह और बिनयमीन
के चन्द एक लोग यरूशलम में जा बसे।)

यहूदाह का क़बीला :

फ़ारस के ख़ानदान का अतायाह बिन उज़्ज़ियाह
बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन
महलल-एल,

5 सिलोनी के ख़ानदान का मासियाह बिन बारूक
बिन कुल्होज़ा बिन हज़ायाह बिन अदायाह बिन
यूयारीब बिन ज़करियाह।

6 फ़ारस के ख़ानदान के 468 असर-ओ-रसूख़ रखने
वाले आदमी अपने ख़ानदानों समेत यरूशलम में
रिहाइशपज़ीर थे।

7 बिनयमीन का क़बीला :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन योएद बिन फ़िदायाह
बिन क़ौलायाह बिन मासियाह बिन ईतीएल बिन
यसायाह।

8 सल्लू के साथ जब्बी और सल्ली थे। कुल 928
आदमी थे। 9 इन पर योएल बिन ज़िक्री मुक़र्रर था
जबकि यहूदाह बिन सनूआह शहर की इन्तिज़ामिया
में दूसरे नम्बर पर आता था।

10 यरूशलम में ज़ैल के इमाम रहते थे।

यदायाह, यूयारीब, यकीन 11 और सिरायाह बिन
ख़िलक़ियाह बिन मसुल्लाम बिन सदोक़ बिन मिरायोत
बिन अख़ीतूब। सिरायाह अल्लाह के घर का मुन्तज़िम
था।

12 इन इमामों के 822 भाई रब के घर में ख़िदमत
करते थे।

नीज़, अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़िललियाह बिन
अम्सी बिन ज़करियाह बिन फ़श्हूर बिन मल्कियाह।
13 उस के साथ 242 भाई थे जो अपने अपने ख़ानदानों
के सरपरस्त थे।

इन के इलावा अमश्सी बिन अज़रेल बिन अख़्ज़ी
बिन मसिल्लमोत बिन इम्मेर। 14 उस के साथ 128
असर-ओ-रसूख़ रखने वाले भाई थे। ज़ब्दीएल बिन
हज्जदूलीम उन का इंचार्ज था।

15 ज़ैल के लावी यरूशलम में रिहाइशपज़ीर थे।
समायाह बिन हस्सूब बिन अज़्रीक़ाम बिन हसबियाह
बिन बुन्नी,

16 नीज़ सब्बती और यूज़बद जो अल्लाह के घर से
बाहर के काम पर मुक़र्रर थे,

17 नीज़ शुक्रगुज़ारी का राहनुमा मत्तनियाह बिन
मीका बिन ज़ब्दी बिन आसफ़ था जो दुआ करते
वक़्त हम्द-ओ-सना की राहनुमाई करता था,

नीज़ उस का मददगार मत्तनियाह का भाई
बक़्बूक़ियाह,

और आख़िर में अब्दा बिन सम्मूअ बिन जलाल
बिन यदूतून।
18 लावियों के कुल 284 मर्द मुक़द्दस शहर में रहते
थे।
19 रब के घर के दरबानों के दर्ज-ए-ज़ैल मर्द
यरूशलम में रहते थे।
अक़्क़ूब और तल्मून अपने भाइयों समेत दरवाज़ों
के पहरेदार थे। कुल 172 मर्द थे।

20 क़ौम के बाक़ी लोग, इमाम और लावी यरूशलम
से बाहर यहूदाह के दूसरे शहरों में आबाद थे। हर एक
अपनी आबाई ज़मीन पर रहता था।
21 रब के घर के ख़िदमतगार ओफ़ल पहाड़ी पर
बसते थे। ज़ीहा और जिस्फ़ा उन पर मुक़र्रर थे।
22 यरूशलम में रहने वाले लावियों का निगरान
उज़्ज़ी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह बिन
मीका था। वह आसफ़ के ख़ानदान का था, उस
ख़ानदान का जिस के गुलूकार अल्लाह के घर में
ख़िदमत करते थे। 23 बादशाह ने मुक़र्रर किया था
कि आसफ़ के ख़ानदान के किन किन आदमियों को
किस किस दिन रब के घर में गीत गाने की ख़िदमत
करनी है।
24 फ़तहियाह बिन मशेज़ब-एल इस्राईली मुआमलों
में फ़ार्स के बादशाह की नुमाइन्दगी करता था। वह
ज़ारह बिन यहूदाह के ख़ानदान का था।
25 यहूदाह के क़बीले के अफ़राद ज़ैल के शहरों में
आबाद थे।
क़िर्यत-अर्बा, दीबोन और क़ब्ज़िएल गिर्द-ओ-
नवाह की आबादियों समेत, 26 यशूअ, मोलादा, बैत-
फ़लत, 27 हसार-सूआल, बैर-सबा गिर्द-ओ-नवाह
की आबादियों समेत, 28 सिक़्लाज, मकूनाह गिर्द-
ओ-नवाह की आबादियों समेत, 29 ऐन-रिम्मोन,
सुरआ, यर्मूत, 30 ज़नूह, अदुल्लाम गिर्द-ओ-नवाह की
हवेलियों समेत, लकीस गिर्द-ओ-नवाह के खेतों
समेत और अज़ीक़ा गिर्द-ओ-नवाह की आबादियों
समेत। ग़रज़, वह जुनूब में बैर-सबा से ले कर शिमाल
में वादी-ए-हिन्नूम तक आबाद थे।
31 बिनयमीन के क़बीले की रिहाइश ज़ैल के
मक़ामों में थी।
जिबा, मिक्मास, अय्याह, बैत-एल गिर्द-ओ-नवाह
की आबादियों समेत, 32 अनतोत, नोब, अननियाह,
33 हसूर, रामा, जित्तैम, 34 हादीद, ज़बोईम, नबल्लात,
35 लूद, ओनू और कारीगरों की वादी।
36 लावी क़बीले के कुछ ख़ानदान जो पहले यहूदाह
में रहते थे अब बिनयमीन के क़बाइली इलाक़े में
आबाद हुए।

इमामों और लावियों की फ़हरिस्त

12 1 दर्ज-ए-ज़ैल उन इमामों और लावियों
की फ़हरिस्त है जो ज़रुब्बाबल बिन
सियाल्तीएल और यशूअ के साथ जिलावतनी से
वापस आए।
इमाम :
सिरायाह, यरमियाह, अज़्रा,
2 अमरियाह, मल्लूक, हत्तूश, 3 सकनियाह, रहूम,
मरीमोत, 4 इद्दू, जिन्नतून, अबियाह, 5 मियामीन,
मुअदियाह, बिल्जा, 6 समायाह, यूयारीब, यदायाह,
7 सल्लू, अमूक़, ख़िलक़ियाह, और यदायाह। यह
यशूअ के ज़माने में इमामों और उन के भाइयों के
राहनुमा थे।
8 लावी :
यशूअ, बिन्नूई, क़दमीएल, सरिबियाह, यहूदाह और
मत्तनियाह। मत्तनियाह अपने भाइयों के साथ रब के
घर में हम्द-ओ-सना के गीत गाने में राहनुमाई करता
था। 9 बक़्बूक़ियाह और उन्नी अपने भाइयों के साथ
इबादत के दौरान उन के मुक़ाबिल खड़े होते थे।
10 इमाम-ए-आज़म यशूअ की औलाद :
यशूअ यूयक़ीम का बाप था, यूयक़ीम इलियासिब
का, इलियासिब योयदा का, 11 योयदा यूनतन का,
यूनतन यद्दू का।

12 जब यूयक़ीम इमाम-ए-आज़म था तो ज़ैल के
इमाम अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे।
सिरायाह के ख़ानदान का मिरायाह,
यरमियाह के ख़ानदान का हननियाह,
13 अज्रा के ख़ानदान का मसुल्लाम,
अमरियाह के ख़ानदान का यूहनान,
14 मल्लूक के ख़ानदान का यूनतन,
सबनियाह के ख़ानदान का यूसुफ़,
15 हारिम के ख़ानदान का अदना,
मिरायोत के ख़ानदान का ख़िल्क़ी,
16 इद्दू के ख़ानदान का ज़करियाह,
जिन्नतून के ख़ानदान का मसुल्लाम,
17 अबियाह के ख़ानदान का ज़िक्री,
मिन्यमीन के ख़ानदान का एक आदमी,
मुअदियाह के ख़ानदान का फ़िल्ती,
18 बिल्जा के ख़ानदान का सम्मूअ,
समायाह के ख़ानदान का यहूनतन,
19 यूयारीब के ख़ानदान का मत्तनी,
यदायाह के ख़ानदान का उज़्ज़ी,
20 सल्ली के ख़ानदान का क़ल्ली,
अमूक़ के ख़ानदान का इबर,
21 ख़िलक़ियाह के ख़ानदान का हसबियाह,
यदायाह के ख़ानदान का नतनीएल।

22 जब इलियासिब, योयदा, यूहनान और यद्दू
इमाम-ए-आज़म थे तो लावी के सरपरस्तों की
फ़हरिस्त तय्यार की गई और इसी तरह फ़ार्स के
बादशाह दारा के ज़माने में इमामों के ख़ानदानी
सरपरस्तों की फ़हरिस्त।
23 लावी के ख़ानदानी सरपरस्तों के नाम इमाम-
ए-आज़म यूहनान बिन इलियासिब के ज़माने तक
तारीख़ की किताब में दर्ज किए गए।
24–25 लावी के ख़ानदानी सरपरस्त हसबियाह,
सरिबियाह, यशूअ, बिन्नूई और क़दमीएल ख़िदमत
के उन गुरोहों की राहनुमाई करते थे जो रब के
घर में हम्द-ओ-सना के गीत गाते थे। उन के
मुक़ाबिल मत्तनियाह, बक़्बूक़ियाह और अबदियाह
अपने गुरोहों के साथ खड़े होते थे। गीत गाते वक़्त
कभी यह गुरोह और कभी उस के मुक़ाबिल का गुरोह
गाता था। सब कुछ उस तर्तीब से हुआ जो मर्द-ए-
ख़ुदा दाऊद ने मुक़र्रर की थी।
मसुल्लाम, तल्मून और अक़्क़ूब दरबान थे जो रब के
घर के दरवाज़ों के साथ वाक़े गोदामों की पहरादारी
करते थे।
26 यह आदमी इमाम-ए-आज़म यूयक़ीम बिन यशूअ
बिन यूसदक़, नहमियाह गवर्नर और शरीअत के
आलिम अज्रा इमाम के ज़माने में अपनी ख़िदमत
सरअन्जाम देते थे।

फ़सील की मख़्सूसियत

27 फ़सील की मख़्सूसियत के लिए पूरे मुल्क के
लावियों को यरूशलम बुलाया गया ताकि वह ख़ुशी
मनाने में मदद करके हम्द-ओ-सना के गीत गाएँ
और झाँझ, सितार और सरोद बजाएँ। 28 गुलूकार
यरूशलम के गिर्द-ओ-नवाह से, नतूफ़ातियों के
दीहात, 29 बैत-जिल्जाल और जिबा और अज़्मावत
के इलाक़े से आए। क्यूँकि गुलूकारों ने अपनी अपनी
आबादियाँ यरूशलम के इर्दगिर्द बनाई थीं। 30 पहले
इमामों और लावियों ने अपने आप को जश्न के लिए
पाक-साफ़ किया, फिर उन्हों ने आम लोगों, दरवाज़ों
और फ़सील को भी पाक-साफ़ कर दिया।
31 इस के बाद मैं ने यहूदाह के क़बीले के बुज़ुर्गों को
फ़सील पर चढ़ने दिया और गुलूकारों को शुक्रगुज़ारी
के दो बड़े गुरोहों में तक़्सीम किया। पहला गुरोह
फ़सील पर चलते चलते जुनूब में वाक़े कचरे के
दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया। 32 इन गुलूकारों के
पीछे हूसायाह यहूदाह के आधे बुज़ुर्गों के साथ चला
33 जबकि इन के पीछे अज़रियाह, अज्रा, मसुल्लाम,
34 यहूदाह, बिनयमीन, समायाह और यरमियाह चले।
35 आख़िरी गुरोह इमाम थे जो तुरम बजाते रहे। इन
के पीछे ज़ैल के मौसीक़ार आए : ज़करियाह बिन
यूनतन बिन समायाह बिन मत्तनियाह बिन मीकायाह

बिन ज़क्कूर बिन आसफ़ 36 और उस के भाई समायाह,
अज़रेल, मिललै, जिललै, माई, नतनीएल, यहूदाह
और हनानी। यह आदमी मर्द-ए-ख़ुदा दाऊद के साज़
बजाते रहे। शरीअत के आलिम अज़्रा ने जुलूस की
राहनुमाई की। 37 चश्मे के दरवाज़े के पास आ कर
वह सीधे उस सीढ़ी पर चढ़ गए जो यरूशलम के उस
हिस्से तक पहुँचाती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता
है। फिर दाऊद के महल के पीछे से गुज़र कर वह
शहर के मग़रिब में वाक़े पानी के दरवाज़े तक पहुँच
गए।

38 शुक्रगुज़ारी का दूसरा गुरोह फ़सील पर चलते
चलते शिमाल में वाक़े तनूरों के बुर्ज और 'मोटी
दीवार' की तरफ़ बढ़ गया, और मैं बाक़ी लोगों
के साथ उस के पीछे हो लिया। 39 हम इफ़्राईम
के दरवाज़े, यसाना के दरवाज़े, मछली के दरवाज़े,
हनन-एल के बुर्ज, मिया बुर्ज और भेड़ के दरवाज़े से
हो कर मुहाफ़िज़ों के दरवाज़े तक पहुँच गए जहाँ हम
रुक गए।

40 फिर शुक्रगुज़ारी के दोनों गुरोह रब के घर
के पास खड़े हो गए। मैं भी बुज़ुर्गों के आधे
हिस्से 41 और ज़ैल के तुरम बजाने वाले इमामों
के साथ रब के घर के सहन में खड़ा हुआ
: इलियाक़ीम, मासियाह, मिन्यमीन, मीकायाह,
इलियूऐनी, ज़करियाह और हननियाह। 42 मासियाह,
समायाह, इलीअज़र, उज़्ज़ी, यूहनान, मल्कियाह,
ऐलाम और अज़र भी हमारे साथ थे। गुलूकार
इज़्रख़ियाह की राहनुमाई में हम्द-ओ-सना के गीत
गाते रहे।

43 उस दिन ज़बह की बड़ी बड़ी क़ुर्बानियाँ पेश की
गईं, क्यूँकि अल्लाह ने हम सब को बाल-बच्चों समेत
बड़ी ख़ुशी दिलाई थी। ख़ुशियों का इतना शोर मच
गया कि उस की आवाज़ दूरदराज़ इलाक़ों तक पहुँच
गई।

रब के घर के गोदामों की ज़िम्मादारी

44 उस वक़्त कुछ आदमियों को उन गोदामों के
निगरान बनाया गया जिन में हदिए, फ़सलों का पहला
फल और पैदावार का दसवाँ हिस्सा महफ़ूज़ रखा
जाता था। उन में शहरों की फ़सलों का वह हिस्सा
जमा करना था जो शरीअत ने इमामों और लावियों
के लिए मुक़र्रर किया था। क्यूँकि यहूदाह के बाशिन्दे
ख़िदमत करने वाले इमामों और लावियों से ख़ुश थे
45 जो अपने ख़ुदा की ख़िदमत तहारत के रस्म-ओ-
रिवाज समेत अच्छी तरह अन्जाम देते थे। रब के
घर के गुलूकार और दरबान भी दाऊद और उस के
बेटे सुलेमान की हिदायात के मुताबिक़ ही ख़िदमत
करते थे। 46 क्यूँकि दाऊद और आसफ़ के ज़माने से
ही गुलूकारों के लीडर अल्लाह की हम्द-ओ-सना के
गीतों में राहनुमाई करते थे।

47 चुनाँचे ज़रुब्बाबल और नहमियाह के दिनों में
तमाम इस्राईल रब के घर के गुलूकारों और दरबानों
की रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करता था। लावियों को
वह हिस्सा दिया जाता जो उन के लिए मख़्सूस था,
और लावी उस में से इमामों को वह हिस्सा दिया
करते थे जो उन के लिए मख़्सूस था।

मोआबियों और अम्मोनियों से अलाहिदगी

13 1 उस दिन क़ौम के सामने मूसा की शरीअत
की तिलावत की गई। पढ़ते पढ़ते मालूम
हुआ कि अम्मोनियों और मोआबियों को कभी भी
अल्लाह की क़ौम में शरीक होने की इजाज़त नहीं।
2 वजह यह है कि इन क़ौमों ने मिस्र से निकलते वक़्त
इस्राईलियों को खाना खिलाने और पानी पिलाने
से इन्कार किया था। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्हों ने
बलआम को पैसे दिए थे ताकि वह इस्राईली क़ौम पर
लानत भेजे, अगरचे हमारे ख़ुदा ने लानत को बरकत
में तब्दील किया। 3 जब हाज़िरीन ने यह हुक्म सुना
तो उन्हों ने तमाम ग़ैरयहूदियों को जमाअत से ख़ारिज
कर दिया।

रब के घर के इन्तिज़ाम की इस्लाह

4 इस वाक़िए से पहले रब के घर के गोदामों पर
मुक़र्रर इमाम इलियासिब ने अपने रिश्तेदार तूबियाह
5 के लिए एक बड़ा कमरा ख़ाली कर दिया था जिस
में पहले ग़ल्ला की नज़रें, बख़ूर और कुछ आलात रखे
जाते थे। नीज़, ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून के तेल का जो
दसवाँ हिस्सा लावियों, गुलूकारों और दरबानों के
लिए मुक़र्रर था वह भी उस कमरे में रखा जाता था
और साथ साथ इमामों के लिए मुक़र्रर हिस्सा भी।
6 उस वक़्त मैं यरूशलम में नहीं था, क्यूँकि बाबल
के बादशाह अर्तख़्शस्ता की हुकूमत के 32वें साल में
मैं उस के दरबार में वापस आ गया था। कुछ देर बाद
मैं शहन्शाह से इजाज़त ले कर दुबारा यरूशलम के
लिए रवाना हुआ। 7 वहाँ पहुँच कर मुझे पता चला
कि इलियासिब ने कितनी बुरी हरकत की है, कि
उस ने अपने रिश्तेदार तूबियाह के लिए रब के घर
के सहन में कमरा ख़ाली कर दिया है। 8 यह बात मुझे
निहायत ही बुरी लगी, और मैं ने तूबियाह का सारा
सामान कमरे से निकाल कर फैंक दिया। 9 फिर मैं ने
हुक्म दिया कि कमरे नए सिरे से पाक-साफ़ कर दिए
जाएँ। जब ऐसा हुआ तो मैं ने रब के घर का सामान,
ग़ल्ला की नज़रें और बख़ूर दुबारा वहाँ रख दिया।

10 मुझे यह भी मालूम हुआ कि लावी और गुलूकार
रब के घर में अपनी ख़िदमत को छोड़ कर अपने
खेतों में काम कर रहे हैं। वजह यह थी कि उन्हें
वह हिस्सा नहीं मिल रहा था जो उन का हक़ था।
11 तब मैं ने ज़िम्मादार अफ़सरों को झिड़क कर कहा,
“आप अल्लाह के घर का इन्तिज़ाम इतनी बेपर्वाई
से क्यूँ चला रहे हैं?” मैं ने लावियों और गुलूकारों
को वापस बुला कर दुबारा उन की ज़िम्मादारियों पर
लगाया। 12 यह देख कर तमाम यहूदाह ग़ल्ला, नई मै
और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा गोदामों में लाने
लगा। 13 गोदामों की निगरानी मैं ने सलमियाह इमाम,
सदोक़ मुन्शी और फ़िदायाह लावी के सपुर्द करके
हनान बिन ज़क्कूर बिन मत्तनियाह को उन का मददगार
मुक़र्रर किया, क्यूँकि चारों को क़ाबिल-ए-एतिमाद
समझा जाता था। उन ही को इमामों और लावियों में
उन के मुक़र्ररा हिस्से तक़्सीम करने की ज़िम्मादारी
दी गई।

14 ऐ मेरे ख़ुदा, इस काम के बाइस मुझे याद कर!
वह सब कुछ न भूल जो मैं ने वफ़ादारी से अपने ख़ुदा
के घर और उस के इन्तिज़ाम के लिए किया है।

सबत की बहाली

15 उस वक़्त मैं ने यहूदाह में कुछ लोगों को देखा
जो सबत के दिन अंगूर का रस निचोड़ कर मै बना
रहे थे। दूसरे ग़ल्ला ला कर मै, अंगूर, अन्जीर और
दीगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की पैदावार के साथ गधों
पर लाद रहे और यरूशलम पहुँचा रहे थे। यह सब
कुछ सबत के दिन हो रहा था। मैं ने उन्हें तम्बीह की
कि सबत के दिन ख़ुराक फ़रोख़्त न करना। 16 सूर
के कुछ आदमी भी जो यरूशलम में रहते थे सबत
के दिन मछली और दीगर कई चीज़ें यरूशलम में ला
कर यहूदाह के लोगों को बेचते थे। 17 यह देख कर मैं
ने यहूदाह के शुरफ़ा को डाँट कर कहा, “यह कितनी
बुरी बात है! आप तो सबत के दिन की बेहुरमती कर
रहे हैं। 18 जब आप के बापदादा ने ऐसा किया तो
अल्लाह यह सारी आफ़त हम पर और इस शहर पर
लाया। अब आप सबत के दिन की बेहुरमती करने
से अल्लाह का इस्राईल पर ग़ज़ब मज़ीद बढ़ा रहे हैं।”

19 मैं ने हुक्म दिया कि जुमए को यरूशलम के
दरवाज़े शाम के उस वक़्त बन्द किए जाएँ जब
दरवाज़े साइयों में डूब जाएँ, और कि वह सबत
के पूरे दिन बन्द रहें। सबत के इख़तिताम तक उन्हें
खोलने की इजाज़त नहीं थी। मैं ने अपने कुछ लोगों
को दरवाज़ों पर खड़ा भी किया ताकि कोई भी अपना
सामान सबत के दिन शहर में न लाए। 20 यह देख
कर ताजिरों और बेचने वालों ने कई मर्तबा सबत
की रात शहर से बाहर गुज़ारी और वहाँ अपना माल
बेचने की कोशिश की। 21 तब मैं ने उन्हें तम्बीह की,
“आप सबत की रात क्यूँ फ़सील के पास गुज़ारते

हैं? अगर आप दुबारा ऐसा करें तो आप को हवाला-ए-पुलिस किया जाएगा।” उस वक़्त से वह सबत के दिन आने से बाज़ आए। 22 लावियों को मैं ने हुक्म दिया कि अपने आप को पाक-साफ़ करके शहर के दरवाज़ों की पहरादारी करें ताकि अब से सबत का दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहे।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे इस नेकी के बाइस याद करके अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।

ग़ैरयहूदियों से रिश्ता बांधना मना है

23 उस वक़्त मुझे यह भी मालूम हुआ कि बहुत से यहूदी मर्दों की शादी अश्दूद, अम्मोन और मोआब की औरतों से हुई है। 24 उन के आधे बच्चे सिर्फ़ अश्दूद की ज़बान या कोई और ग़ैरमुल्की ज़बान बोल लेते थे। हमारी ज़बान से वह नावाक़िफ़ ही थे। 25 तब मैं ने उन्हें झिड़का और उन पर लानत भेजी। बाज़ एक के बाल नोच नोच कर मैं ने उन की पिटाई की। मैं ने उन्हें अल्लाह की क़सम खिलाने पर मज्बूर किया कि हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरमुल्कियों से नहीं कराएँगे । 26 मैं ने कहा, “इस्राईल के बादशाह सुलेमान को याद करें। ऐसी ही शादियों ने उसे गुनाह करने पर उकसाया। उस वक़्त उस के बराबर कोई बादशाह नहीं था। अल्लाह उसे प्यार करता था और उसे पूरे इस्राईल का बादशाह बनाया। लेकिन उसे भी ग़ैरमुल्की बीवियों की तरफ़ से गुनाह करने पर उकसाया गया। 27 अब आप के बारे में भी यही कुछ सुनना पड़ता है! आप से भी यही बड़ा गुनाह सरज़द हो रहा है। ग़ैरमुल्की औरतों से शादी करने से आप हमारे ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए हैं!”

28 इमाम-ए-आज़म इलियासिब के बेटे योयदा के एक बेटे की शादी सन्बल्लत हौरूनी की बेटी से हुई थी, इस लिए मैं ने बेटे को यरूशलम से भगा दिया।

29 ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें याद कर, क्यूँकि उन्हों ने इमाम के उह्दे और इमामों और लावियों के अह्द की बेहुरमती की है।

30 चुनाँचे मैं ने इमामों और लावियों को हर ग़ैरमुल्की चीज़ से पाक-साफ़ करके उन्हें उन की ख़िदमत और मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियों के लिए हिदायात दीं।

31 नीज़, मैं ने ध्यान दिया कि फ़सल की पहली पैदावार और क़ुर्बानियों को जलाने की लकड़ी वक़्त पर रब के घर में पहुँचाई जाए।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे याद करके मुझ पर मेहरबानी कर!।

आस्तर

अख़स्वेरुस जश्न मनाता है

1 1 अख़स्वेरुस बादशाह की सल्तनत भारत से
ले कर एथोपिया तक 127 सूबों पर मुश्तमिल
थी। 2 जिन वाक़िआत का ज़िक्र है वह उस वक़्त
हुए जब वह सोसन शहर के क़िले से हुकूमत करता
था। 3 अपनी हुकूमत के तीसरे साल में उस ने अपने
तमाम बुज़ुर्गों और अफ़सरों की ज़ियाफ़त की। फ़ार्स
और मादी के फ़ौजी अफ़सर और सूबों के शुरफ़ा और
रईस सब शरीक हुए। 4 शहन्शाह ने पूरे 180 दिन
तक अपनी सल्तनत की ज़बरदस्त दौलत और अपनी
क़ुव्वत की शान-ओ-शौकत का मुज़ाहरा किया।
5 इस के बाद उस ने सोसन के क़िले में रहने वाले
तमाम लोगों की छोटे से ले कर बड़े तक ज़ियाफ़त
की। यह जश्न सात दिन तक शाही बाग़ के सहन में
मनाया गया। 6 मरमर [e]के सतूनों के दरमियान कतान
के सफ़ेद और क़िर्मिज़ी रंग के क़ीमती पर्दे लटकाए
गए थे, और वह सफ़ेद और अर्ग़वानी रंग की डोरियों
के ज़रीए सतूनों में लगे चाँदी के छल्लों के साथ बंधे
हुए थे। मेहमानों के लिए सोने और चाँदी के सोफ़े
पच्चीकारी के ऐसे फ़र्श पर रखे हुए थे जिस में मरमर
के इलावा मज़ीद तीन क़ीमती पत्थर इस्तेमाल हुए
थे। 7 मै सोने के प्यालों में पिलाई गई। हर प्याला
फ़र्क़ और लासानी था, और बादशाह की फ़य्याज़ी के
मुताबिक़ शाही मै की कस्रत थी। 8 हर कोई जितनी
जी चाहे पी सकता था, क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया
था कि साक़ी मेहमानों की हर ख़्वाहिश पूरी करें।

वश्ती मलिका की बरतरफ़ी

9 इस दौरान वश्ती मलिका ने महल के अन्दर
ख़वातीन की ज़ियाफ़त की। 10 सातवें दिन जब
बादशाह का दिल मै पी पी कर बहल गया था तो उस
ने उन सात ख़्वाजासराओं को बुलाया जो ख़ास उस
की ख़िदमत करते थे। उन के नाम महूमान, बिज़्ज़ता,
ख़र्बूना, बिग्ता, अबग्ता, ज़ितार और कर्कस थे।
11 उस ने हुक्म दिया, “वश्ती मलिका को शाही ताज
पहना कर मेरे हुज़ूर ले आओ ताकि शुरफ़ा और बाक़ी
मेहमानों को उस की ख़ूबसूरती मालूम हो जाए।”
क्यूँकि वश्ती निहायत ख़ूबसूरत थी। 12 लेकिन जब
ख़्वाजासरा मलिका के पास गए तो उस ने आने से
इन्कार कर दिया।
यह सुन कर बादशाह आग-बगूला हो गया 13 और
दानाओं से बात की जो औक़ात के आलिम थे,
क्यूँकि दस्तूर यह था कि बादशाह क़ानूनी मुआमलों
में उलमा से मश्वरा करे। 14 आलिमों के नाम का
कार्शीना, सितार, अदमाता, तरसीस, मरस, मर्सिना
और ममूकान थे। फ़ार्स और मादी के यह सात शुरफ़ा
आज़ादी से बादशाह के हुज़ूर आ सकते थे और
सल्तनत में सब से आला उह्दा रखते थे।
15 अख़स्वेरुस ने पूछा, “क़ानून के लिहाज़ से वश्ती
मलिका के साथ क्या सुलूक किया जाए? क्यूँकि उस
ने ख़्वाजासराओं के हाथ भेजे हुए शाही हुक्म को नहीं
माना।”
16 ममूकान ने बादशाह और दीगर शुरफ़ा की
मौजूदगी में जवाब दिया, “वश्ती मलिका ने इस से
न सिर्फ़ बादशाह का बल्कि उस के तमाम शुरफ़ा
और सल्तनत के तमाम सूबों में रहने वाली क़ौमों का

---

[e]लफ़्ज़ी तर्जुमा : संग-ए-जर्राहत, alabaster।

भी गुनाह किया है। 17 क्यूँकि जो कुछ उस ने किया
है वह तमाम ख़वातीन को मालूम हो जाएगा। फिर
वह अपने शौहरों को हक़ीर जान कर कहेंगी, 'गो
बादशाह ने वश्ती मलिका को अपने हुज़ूर आने का
हुक्म दिया तो भी उस ने उस के हुज़ूर आने से इन्कार
किया।' 18 आज ही फ़ार्स और मादी के शुरफ़ा की
बीवियाँ मलिका की यह बात सुन कर अपने शौहरों
से ऐसा ही सुलूक करेंगी। तब हम ज़िल्लत और ग़ुस्से
के जाल में उलझ जाएंगे। 19 अगर बादशाह को मन्ज़ूर
हो तो वह एलान करें कि वश्ती मलिका को फिर
कभी अख़स्वेरुस बादशाह के हुज़ूर आने की इजाज़त
नहीं। और लाज़िम है कि यह एलान फ़ार्स और मादी
के क़वानीन में दर्ज किया जाए ताकि उसे मन्सूख़ न
किया जा सके। फिर बादशाह किसी और को मलिका
का उह्दा दें, ऐसी औरत को जो ज़्यादा लाइक़ हो।
20 जब एलान पूरी सल्तनत में किया जाएगा तो तमाम
औरतें अपने शौहरों की इज़्ज़त करेंगी, ख़्वाह वह
छोटे हों या बड़े।"

21 यह बात बादशाह और उस के शुरफ़ा को पसन्द
आई। ममूकान के मश्वरे के मुताबिक़ 22 अख़स्वेरुस
ने सल्तनत के तमाम सूबों में ख़त भेजे। हर सूबे को
उस के अपने तर्ज़-ए-तहरीर में और हर क़ौम को उस
की अपनी ज़बान में ख़त मिल गया कि हर मर्द अपने
घर का सरपरस्त है और कि हर ख़ानदान में शौहर
की ज़बान बोली जाए।

नई मलिका की तलाश

2 1 बाद में जब बादशाह का ग़ुस्सा ठंडा हो गया
तो मलिका उसे दुबारा याद आने लगी। जो कुछ
वश्ती ने किया था और जो फ़ैसला उस के बारे में
हुआ था वह भी उस के ज़हन में घूमता रहा। 2 फिर
उस के मुलाज़िमों ने ख़याल पेश किया, "क्यूँ न पूरी
सल्तनत में शहन्शाह के लिए ख़ूबसूरत कुंवारियाँ
तलाश की जाएँ? 3 बादशाह अपनी सल्तनत के हर
सूबे में अफ़्सर मुक़र्रर करें जो यह ख़ूबसूरत कुंवारियाँ
चुन कर सोसन के क़िले के ज़नानख़ाने में लाएँ। उन्हें
ज़नानख़ाने के इंचार्ज हैजा ख़्वाजासरा की निगरानी में
दे दिया जाए और उन की ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिए
रंग निखारने का हर ज़रूरी तरीक़ा इस्तेमाल किया
जाए। 4 फिर जो लड़की बादशाह को सब से ज़्यादा
पसन्द आए वह वश्ती की जगह मलिका बन जाए।"

यह मन्सूबा बादशाह को अच्छा लगा, और उस ने
ऐसा ही किया।

5 उस वक़्त सोसन के क़िले में बिनयमीन के
क़बीले का एक यहूदी रहता था जिस का नाम
मर्दकी बिन याईर बिन सिमई बिन क़ीस था। 6 मर्दकी
का ख़ानदान उन इस्राईलियों में शामिल था जिन
को बाबल का बादशाह नबूकद्नज़्ज़र यहूदाह के
बादशाह यहूयाकीन [f]के साथ जिलावतन करके
अपने साथ ले गया था। 7 मर्दकी के चचा की
एक निहायत ख़ूबसूरत बेटी बनाम हदस्साह थी जो
आस्तर भी कहलाती थी। उस के वालिदैन के मरने
पर मर्दकी ने उसे ले कर अपनी बेटी की हैसियत से
पाल लिया था।

8 जब बादशाह का हुक्म सादिर हुआ तो बहुत सी
लड़कियों को सोसन के क़िले में ला कर ज़नानख़ाने
के इंचार्ज हैजा के सपुर्द कर दिया गया। आस्तर
भी उन लड़कियों में शामिल थी। 9 वह हैजा को
पसन्द आई बल्कि उसे उस की ख़ास मेहरबानी
हासिल हुई। ख़्वाजासरा ने जल्दी जल्दी बनाओ-
सिंगार का सिलसिला शुरू किया, खाने-पीने का
मुनासिब इन्तिज़ाम करवाया और शाही महल की
सात चुनीदा नौकरानियाँ आस्तर के हवाले कर दीं।
रिहाइश के लिए आस्तर और उस की लड़कियों को
ज़नानख़ाने के सब से अच्छे कमरे दिए गए।

10 आस्तर ने किसी को नहीं बताया था कि मैं यहूदी
औरत हूँ, क्यूँकि मर्दकी ने उसे हुक्म दिया था कि इस
के बारे में ख़ामोश रहे। 11 हर दिन मर्दकी ज़नानख़ाने

[f]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

के सहन से गुज़रता ताकि आस्तर के हाल का पता करे और यह कि उस के साथ क्या क्या हो रहा है।

12–13 अख़स्वेरुस बादशाह से मिलने से पहले हर कुंवारी को बारह महीनों का मुक़र्ररा बनाओ-सिंगार करवाना था, छः माह मुर के तेल से और छः माह बल्सान के तेल और रंग निखारने के दीगर तरीक़ों से। जब उसे बादशाह के महल में जाना था तो ज़नानख़ाने की जो भी चीज़ वह अपने साथ लेना चाहती उसे दी जाती।

14 शाम के वक़्त वह महल में जाती और अगले दिन उसे सुब्ह के वक़्त दूसरे ज़नानख़ाने में लाया जाता जहाँ बादशाह की दाश्ताएँ शाशजज़ ख़्वाजासरा की निगरानी में रहती थीं। इस के बाद वह फिर कभी बादशाह के पास न आती। उसे सिर्फ़ इसी सूरत में वापस लाया जाता कि वह बादशाह को ख़ास पसन्द आती और वह उस का नाम ले कर उसे बुलाता।

आस्तर मलिका बन जाती है

15 होते होते आस्तर बिन्त अबीख़ैल की बारी आई (अबीख़ैल मर्दकी का चचा था, और मर्दकी ने उस की बेटी को लेपालक बना लिया था)। जब आस्तर से पूछा गया कि आप ज़नानख़ाने की क्या चीज़ें अपने साथ ले जाना चाहती हैं तो उस ने सिर्फ़ वह कुछ ले लिया जो हैजा ख़्वाजासरा ने उस के लिए चुना। और जिस ने भी उसे देखा उस ने उसे सराहा। 16 चुनाँचे उसे बादशाह की हुकूमत के सातवें साल के दसवें महीने बनाम तेबत में अख़स्वेरुस के पास महल में लाया गया।

17 बादशाह को आस्तर दूसरी लड़कियों की निस्बत कहीं ज़्यादा प्यारी लगी। दीगर तमाम कुंवारियों की निस्बत उसे उस की ख़ास क़बूलियत और मेहरबानी हासिल हुई। चुनाँचे बादशाह ने उस के सर पर ताज रख कर उसे वश्ती की जगह मलिका बना दिया। 18 इस मौक़े की ख़ुशी में उस ने आस्तर के एज़ाज़ में बड़ी ज़ियाफ़त की। तमाम शुरफ़ा और अफ़सरों को दावत दी गई। साथ साथ सूबों में कुछ टैक्सों की मुआफ़ी का एलान किया गया और फ़य्याज़ी से तुह्फ़े तक़्सीम किए गए।

मर्दकी बादशाह को बचाता है

19 जब कुंवारियों को एक बार फिर जमा किया गया तो मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था।[g] 20 आस्तर ने अब तक किसी को नहीं बताया था कि मैं यहूदी हूँ, क्यूँकि मर्दकी ने यह बताने से मना किया था। पहले की तरह जब वह उस के घर में रहती थी अब भी आस्तर उस की हर बात मानती थी।

21 एक दिन जब मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था तो दो ख़्वाजासरा बनाम बिग्तान और तरश ग़ुस्से में आ कर अख़स्वेरुस को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। दोनों शाही कमरों के पहरेदार थे। 22 मर्दकी को पता चला तो उस ने आस्तर को ख़बर पहुँचाई जिस ने मर्दकी का नाम ले कर बादशाह को इत्तिला दी। 23 मुआमले की तफ़्तीश की गई तो दुरुस्त साबित हुआ, और दोनों मुलाज़िमों को फाँसी दे दी गई। यह वाक़िआ बादशाह की मौजूदगी में उस किताब में दर्ज किया गया जिस में रोज़ाना उस की हुकूमत के अहम वाक़िआत लिखे जाते थे।

हामान यहूदी क़ौम को हलाक करना चाहता है

3 1 कुछ देर के बाद बादशाह ने हामान बिन हम्मदाता अजाजी को सरफ़राज़ करके दरबार में सब से आला उह्दा दिया। 2 जब कभी हामान आ मौजूद होता तो शाही सहन के दरवाज़े के तमाम शाही अफ़सर मुँह के बल झुक जाते, क्यूँकि बादशाह ने ऐसा करने का हुक्म दिया था। लेकिन मर्दकी ऐसा नहीं करता था।

---

[g] शाही सहन के दरवाज़े में शाही इन्तिज़ामिया थी, इस लिए ऐन मुमकिन है कि मर्दकी शाही मुलाज़िम हो।

3 यह देख कर दीगर शाही मुलाज़िमों ने उस से पूछा,
“आप बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी क्यूँ कर
रहे हैं?”
4 उस ने जवाब दिया, “मैं तो यहूदी हूँ।” रोज़-ब-
रोज़ दूसरे उसे समझाते रहे, लेकिन वह न माना।
आख़िरकार उन्हों ने हामान को इत्तिला दी, क्यूँकि
वह देखना चाहते थे कि क्या वह मर्दकी का जवाब
क़बूल करेगा या नहीं।
5 जब हामान ने ख़ुद देखा कि मर्दकी मेरे सामने मुँह
के बल नहीं झुकता तो वह आग-बगूला हो गया।
6 वह फ़ौरन मर्दकी को क़त्ल करने के मन्सूबे बनाने
लगा। लेकिन यह उस के लिए काफ़ी नहीं था। चूँकि
उसे बताया गया था कि मर्दकी यहूदी है इस लिए
वह फ़ार्सी सल्तनत में रहने वाले तमाम यहूदियों को
हलाक करने का रास्ता ढूँडने लगा।
7 चुनाँचे अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत के 12वें
साल के पहले महीने नीसान [h]में हामान की मौजूदगी
में क़ुरआ डाला गया। क़ुरआ डालने से हामान
यहूदियों को क़त्ल करने की सब से मुबारक तारीख़
मालूम करना चाहता था। (क़ुरआ के लिए ‘पूर’ कहा
जाता था।) इस तरीक़े से 12वें महीने अदार का 13वाँ
दिन [i]निकला। 8 तब हामान ने बादशाह से बात की,
“आप की सल्तनत के तमाम सूबों में एक क़ौम
बिखरी हुई है जो अपने आप को दीगर क़ौमों से
अलग रखती है। उस के क़वानीन दूसरी तमाम क़ौमों
से मुख़्तलिफ़ हैं, और उस के अफ़राद बादशाह के
क़वानीन को नहीं मानते। मुनासिब नहीं कि बादशाह
उन्हें बर्दाश्त करें!
9 अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो तो एलान करें कि
इस क़ौम को हलाक कर दिया जाए। तब मैं शाही
ख़ज़ानों में 3,35,000 किलोग्राम चाँदी जमा करा
दूँगा।”
10 बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी उतारी
जो शाही मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और
उसे यहूदियों के दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी
को दे कर 11 कहा, “चाँदी और क़ौम आप ही की हैं,
उस के साथ वह कुछ करें जो आप को अच्छा लगे।”
12 पहले महीने के 13वें दिन [j]हामान ने शाही मुहर्रिरों
को बुलाया ताकि वह उस की तमाम हिदायात के
मुताबिक़ ख़त लिख कर बादशाह के गवर्नरों, सूबों
के दीगर हाकिमों और तमाम क़ौमों के बुज़ुर्गों को
भेजें। यह ख़त हर क़ौम के अपने तर्ज़-ए-तहरीर और
अपनी ज़बान में क़लमबन्द हुए। उन्हें बादशाह का
नाम ले कर लिखा गया, फिर शाही अंगूठी की मुहर
उन पर लगाई गई। उन में ज़ैल का एलान किया गया।
13 “एक ही दिन में तमाम यहूदियों को हलाक और
पूरे तौर पर तबाह करना है, ख़्वाह छोटे हों या बड़े,
बच्चे हों या औरतें। साथ साथ उन की मिलकियत भी
ज़ब्त कर ली जाए।” इस के लिए 12वें महीने अदार
का 13वाँ दिन [k]मुक़र्रर किया गया।
यह एलान तेज़रौ क़ासिदों के ज़रीए सल्तनत के
तमाम सूबों में पहुँचाया गया 14 ताकि उस की
तस्दीक़ क़ानूनी तौर पर की जाए और तमाम क़ौमें
मुक़र्ररा दिन के लिए तय्यार हों।
15 बादशाह के हुक्म पर क़ासिद चल निकले। यह
एलान सोसन के क़िले में भी किया गया। फिर
बादशाह और हामान खाने-पीने के लिए बैठ गए।
लेकिन पूरे शहर में हलचल मच गई।

मर्दकी आस्तर से मदद माँगता है

4 1 जब मर्दकी को मालूम हुआ कि क्या हुआ है
तो उस ने रंजिश से अपने कपड़ों को फाड़ कर
टाट का लिबास पहन लिया और सर पर राख डाल
ली। फिर वह निकल कर बुलन्द आवाज़ से गिर्या-

[h]अप्रैल ता मई।
[i]7 मार्च, 473 क़ म।
[j]17 अप्रैल।
[k]7 मार्च।

ओ-ज़ारी करते करते शहर में से गुज़रा। 2 वह शाही
सहन के दरवाज़े तक पहुँच गया लेकिन दाख़िल न
हुआ, क्यूँकि मातमी कपड़े पहन कर दाख़िल होने
की इजाज़त नहीं थी। 3 सल्तनत के तमाम सूबों में
जहाँ जहाँ बादशाह का एलान पहुँचा वहाँ यहूदी ख़ूब
मातम करने और रोज़ा रख कर रोने और गिर्या-ओ-
ज़ारी करने लगे। बहुत से लोग टाट का लिबास पहन
कर राख में लेट गए।

4 जब आस्तर की नौकरानियों और ख़्वाजासराओं
ने आ कर उसे इत्तिला दी तो वह सख़्त घबरा गई।
उस ने मर्दकी को कपड़े भेज दिए जो वह अपने
मातमी कपड़ों के बदले पहन ले, लेकिन उस ने उन्हें
क़बूल न किया। 5 तब आस्तर ने हताक ख़्वाजासरा
को मर्दकी के पास भेजा ताकि वह मालूम करे कि
क्या हुआ है, मर्दकी ऐसी हरकतें क्यूँ कर रहा है।
(बादशाह ने हताक को आस्तर की ख़िदमत करने
की ज़िम्मादारी दी थी।)

6 हताक शाही सहन के दरवाज़े से निकल कर
मर्दकी के पास आया जो अब तक साथ वाले चौक में
था। 7 मर्दकी ने उसे हामान का पूरा मन्सूबा सुना कर
यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों को हलाक करने
के लिए शाही ख़ज़ाने को कितने पैसे देने का वादा
किया है। 8 इस के इलावा मर्दकी ने ख़्वाजासरा को
उस शाही फ़रमान की कापी दी जो सोसन में सादिर
हुआ था और जिस में यहूदियों को नेस्त-ओ-नाबूद
करने का एलान किया गया था। उस ने गुज़ारिश की,
“यह एलान आस्तर को दिखा कर उन्हें तमाम हालात
से बाख़बर कर दें। उन्हें हिदायत दें कि बादशाह के
हुज़ूर जाएँ और उस से इल्तिजा करके अपनी क़ौम
की सिफ़ारिश करें।”

9 हताक वापस आया और मर्दकी की बातों की
ख़बर दी। 10 यह सुन कर आस्तर ने उसे दुबारा मर्दकी
के पास भेजा ताकि उसे बताए, 11 “बादशाह के
तमाम मुलाज़िम बल्कि सूबों के तमाम बाशिन्दे जानते
हैं कि जो भी बुलाए बग़ैर महल के अन्दरूनी सहन में
बादशाह के पास आए उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी,
ख़्वाह वह मर्द हो या औरत। वह सिर्फ़ इस सूरत में
बच जाएगा कि बादशाह सोने का अपना असा उस
की तरफ़ बढ़ाए। बात यह भी है कि बादशाह को मुझे
बुलाए 30 दिन हो गए हैं।”

12 आस्तर का पैग़ाम सुन कर 13 मर्दकी ने जवाब
वापस भेजा, “यह न सोचना कि मैं शाही महल में
रहती हूँ, इस लिए गो दीगर तमाम यहूदी हलाक हो
जाएँ मैं बच जाऊँगी। 14 अगर आप इस वक़्त ख़ामोश
रहेंगी तो यहूदी कहीं और से रिहाई और छुटकारा
पा लेंगे जबकि आप और आप के बाप का घराना
हलाक हो जाएंगे। क्या पता है, शायद आप इसी लिए
मलिका बन गई हैं कि ऐसे मौक़े पर यहूदियों की मदद
करें।”

15 आस्तर ने मर्दकी को जवाब भेजा, 16 “ठीक है,
फिर जाएँ और सोसन में रहने वाले तमाम यहूदियों
को जमा करें। मेरे लिए रोज़ा रख कर तीन दिन
और तीन रात न कुछ खाएँ, न पिएँ। मैं भी अपनी
नौकरानियों के साथ मिल कर रोज़ा रखूँगी। इस के
बाद बादशाह के पास जाऊँगी, गो यह क़ानून के
ख़िलाफ़ है। अगर मरना है तो मर ही जाऊँगी।”

17 तब मर्दकी चला गया और वैसा ही किया जैसा
आस्तर ने उसे हिदायत की थी।

आस्तर बादशाह और हामान को दावत देती है

5 1 तीसरे दिन आस्तर मलिका अपना शाही
लिबास पहने हुए महल के अन्दरूनी सहन में
दाख़िल हुई। यह सहन उस हाल के सामने था जिस
में तख़्त लगा था। उस वक़्त बादशाह दरवाज़े के
मुक़ाबिल अपने तख़्त पर बैठा था। 2 आस्तर को
सहन में खड़ी देख कर वह ख़ुश हुआ और सोने
के शाही असा को उस की तरफ़ बढ़ा दिया। तब
आस्तर क़रीब आई और असा के सिरे को छू दिया।
3 बादशाह ने उस से पूछा, “आस्तर मलिका, क्या
बात है? आप क्या चाहती हैं? मैं उसे देने के लिए
तय्यार हूँ, ख़्वाह सल्तनत का आधा हिस्सा क्यूँ न
हो!”

4 आस्तर ने जवाब दिया, “मैं ने आज के लिए
ज़ियाफ़त की तय्यारियाँ की हैं। अगर बादशाह को
मन्ज़ूर हो तो वह हामान को अपने साथ ले कर उस
में शिर्कत करें।”
5 बादशाह ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया,
“जल्दी करो! हामान को बुलाओ ताकि हम आस्तर
की ख़्वाहिश पूरी कर सकें।” चुनाँचे बादशाह और
हामान आस्तर की तय्यारशुदा ज़ियाफ़त में शरीक
हुए। 6 मै पी पी कर बादशाह ने आस्तर से पूछा,
“अब मुझे बताएँ, आप क्या चाहती हैं? वह आप
को दिया जाएगा। अपनी दरख़्वास्त पेश करें, क्यूँकि
मैं सल्तनत के आधे हिस्से तक आप को देने के लिए
तय्यार हूँ।”
7 आस्तर ने जवाब दिया, “मेरी दरख़्वास्त और
आर्ज़ू यह है, 8 अगर बादशाह मुझ से ख़ुश हों और
उन्हें मेरी गुज़ारिश और दरख़्वास्त पूरी करना मन्ज़ूर
हो तो वह कल एक बार फिर हामान के साथ एक
ज़ियाफ़त में शिर्कत करें जो मैं आप के लिए तय्यार
करूँ। फिर मैं बादशाह को जवाब दूँगी।”

मर्दकी को क़त्ल करने के लिए हामान की तय्यारियाँ

9 उस दिन जब हामान महल से निकला तो वह बड़ा
ख़ुश और ज़िन्दादिल था। लेकिन फिर उस की नज़र
मर्दकी पर पड़ गई जो शाही सहन के दरवाज़े के
पास बैठा था। न वह खड़ा हुआ, न हामान को देख
कर काँप गया। हामान लाल-पीला हो गया, 10 लेकिन
अपने आप पर क़ाबू रख कर वह चला गया।
घर पहुँच कर वह अपने दोस्तों और अपनी बीवी
ज़रिश को अपने पास बुला कर 11 उन के सामने
अपनी ज़बरदस्त दौलत और मुतअद्दिद बेटों पर शेख़ी
मारने लगा। उस ने उन्हें उन सारे मौक़ों की फ़हरिस्त
सुनाई जिन पर बादशाह ने उस की इज़्ज़त की थी
और फ़ख़र किया कि बादशाह ने मुझे तमाम बाक़ी
शुरफ़ा और अफ़सरों से ज़्यादा ऊँचा उह्दा दिया है।
12 हामान ने कहा, “न सिर्फ़ यह, बल्कि आज आस्तर
मलिका ने ऐसी ज़ियाफ़त की जिस में बादशाह के
इलावा सिर्फ़ मैं ही शरीक था। और मुझे मलिका से
कल के लिए भी दावत मिली है कि बादशाह के साथ
ज़ियाफ़त में शिर्कत करूँ। 13 लेकिन जब तक मर्दकी
यहूदी शाही महल के सहन के दरवाज़े पर बैठा नज़र
आता है मैं चैन का साँस नहीं लूँगा।”
14 उस की बीवी ज़रिश और बाक़ी अज़ीज़ों ने
मश्वरा दिया, “सूली बनवाएँ जिस की ऊँचाई 75 फ़ुट
हो। फिर कल सुब्ह-सवेरे बादशाह के पास जा कर
गुज़ारिश करें कि मर्दकी को उस से लटकाया जाए।
इस के बाद आप तसल्ली से बादशाह के साथ जा कर
ज़ियाफ़त के मज़े ले सकते हैं।” यह मन्सूबा हामान
को अच्छा लगा, और उस ने सूली तय्यार करवाई।

बादशाह मर्दकी की इज़्ज़त करता है

6 1 उस रात बादशाह को नींद न आई, इस लिए
उस ने हुक्म दिया कि वह किताब लाई जाए
जिस में रोज़ाना हुकूमत के अहम वाक़िआत लिखे
जाते हैं। उस में से पढ़ा गया 2 तो इस का भी
ज़िक्र हुआ कि मर्दकी ने किस तरह बादशाह को
दोनों ख़्वाजासराओं बिग्ताना और तरश के हाथ से
बचाया था, कि जब शाही कमरों के इन पहरेदारों
ने अख़स्वेरुस को क़त्ल करने की साज़िश की तो
मर्दकी ने बादशाह को इत्तिला दी थी। 3 जब यह
वाक़िआ पढ़ा गया तो बादशाह ने पूछा, “इस के
इवज़ मर्दकी को क्या एज़ाज़ दिया गया?” मुलाज़िमों
ने जवाब दिया, “कुछ भी नहीं दिया गया।”
4 उसी लम्हे हामान महल के बैरूनी सहन में आ
पहुँचा था ताकि बादशाह से मर्दकी को उस सूली से
लटकाने की इजाज़त माँगे जो उस ने उस के लिए
बनवाई थी। बादशाह ने सवाल किया, “बाहर सहन
में कौन है?” 5 मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “हामान
है।” बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अन्दर आने दो।”
6 हामान दाख़िल हुआ तो बादशाह ने उस से पूछा,
“उस आदमी के लिए क्या किया जाए जिस की
बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहे?” हामान ने सोचा,
“वह मेरी ही बात कर रहा है! क्यूँकि मेरी निस्बत

कौन है जिस की बादशाह ज़्यादा इज़्ज़त करना चाहता है?” 7 चुनाँचे उस ने जवाब दिया, “जिस आदमी की बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहें 8 उस के लिए शाही लिबास चुना जाए जो बादशाह ख़ुद पहन चुके हों। एक घोड़ा भी लाया जाए जिस का सर शाही सजावट से सजा हुआ हो और जिस पर बादशाह ख़ुद सवार हो चुके हों। 9 यह लिबास और घोड़ा बादशाह के आलातरीन अफ़सरों में से एक के सपुर्द किया जाए। वही उस शख़्स को जिस की बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहते हैं कपड़े पहनाए और उसे घोड़े पर बिठा कर शहर के चौक में से गुज़ारे। साथ साथ वह उस के आगे आगे चल कर एलान करे, ‘यही उस के साथ किया जाता है जिस की इज़्ज़त बादशाह करना चाहते हैं’।”

10 अख़स्वेरुस ने हामान से कहा, “फिर जल्दी करें, मर्दकी यहूदी शाही सहन के दरवाज़े के पास बैठा है। शाही लिबास और घोड़ा मंगवा कर उस के साथ ऐसा ही सुलूक करें। जो भी करने का मश्वरा आप ने दिया वही कुछ करें, और ध्यान दें कि इस में किसी भी चीज़ की कमी न हो!”

11 हामान को ऐसा ही करना पड़ा। शाही लिबास को चुन कर उस ने उसे मर्दकी को पहना दिया। फिर उसे बादशाह के अपने घोड़े पर बिठा कर उस ने उसे शहर के चौक में से गुज़ारा। साथ साथ वह उस के आगे आगे चल कर एलान करता रहा, “यही उस शख़्स के साथ किया जाता है जिस की इज़्ज़त बादशाह करना चाहता है।” 12 फिर मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े के पास वापस आया।

लेकिन हामान उदास हो कर जल्दी से अपने घर चला गया। शर्म के मारे उस ने मुँह पर कपड़ा डाल लिया था। 13 उस ने अपनी बीवी ज़रिश और अपने दोस्तों को सब कुछ सुनाया जो उस के साथ हुआ था। तब उस के मुशीरों और बीवी ने उस से कहा, “आप का बेड़ा ग़र्क़ हो गया है, क्यूँकि मर्दकी यहूदी है और आप उस के सामने शिकस्त खाने लगे हैं। आप उस का मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे।”

14 वह अभी उस से बात कर ही रहे थे कि बादशाह के ख़्वाजासरा पहुँच गए और उसे ले कर जल्दी जल्दी आस्तर के पास पहुँचाया। ज़ियाफ़त तय्यार थी।

हामान का सत्यानास

7 1 चुनाँचे बादशाह और हामान आस्तर मलिका की ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 2 मै पीते वक़्त बादशाह ने पहले दिन की तरह अब भी पूछा, “आस्तर मलिका, अब बताएँ, आप क्या चाहती हैं? वह आप को दिया जाएगा। अपनी दरख़्वास्त पेश करें, क्यूँकि मैं सल्तनत के आधे हिस्से तक आप को देने के लिए तय्यार हूँ।”

3 मलिका ने जवाब दिया, “अगर बादशाह मुझ से ख़ुश हों और उन्हें मेरी बात मन्ज़ूर हो तो मेरी गुज़ारिश पूरी करें कि मेरी और मेरी क़ौम की जान बची रहे। 4 क्यूँकि मुझे और मेरी क़ौम को उन के हाथ बेच डाला गया है जो हमें तबाह और हलाक करके नेस्त-ओ-नाबूद करना चाहते हैं। अगर हम बिक कर ग़ुलाम और लौंडियाँ बन जाते तो मैं ख़ामोश रहती। ऐसी कोई मुसीबत बादशाह को तंग करने के लिए काफ़ी न होती।”

5 यह सुन कर अख़स्वेरुस ने आस्तर से सवाल किया, “कौन ऐसी हरकत करने की जुरअत करता है? वह कहाँ है?” 6 आस्तर ने जवाब दिया, “हमारा दुश्मन और मुख़ालिफ़ यह शरीर आदमी हामान है!”

तब हामान बादशाह और मलिका से दहशत खाने लगा। 7 बादशाह आग-बगूला हो कर खड़ा हो गया और मै को छोड़ कर महल के बाग़ में टहलने लगा। हामान पीछे रह कर आस्तर से इल्तिजा करने लगा, “मेरी जान बचाएँ” क्यूँकि उसे अन्दाज़ा हो गया था कि बादशाह ने मुझे सज़ा-ए-मौत देने का फ़ैसला कर लिया है।

8 जब बादशाह वापस आया तो क्या देखता है कि हामान उस सोफ़े पर गिर गया है जिस पर आस्तर टेक लगाए बैठी है। बादशाह गरजा, “क्या यह

आदमी यहीं महल में मेरे हुज़ूर मलिका की इस्मतदरी करना चाहता है?” जूँ ही बादशाह ने यह अल्फ़ाज़ कहे मुलाज़िमों ने हामान के मुँह पर कपड़ा डाल दिया। 9 बादशाह का ख़्वाजासरा ख़र्बूनाह बोल उठा, “हामान ने अपने घर के क़रीब सूली तय्यार करवाई है जिस की ऊँचाई 75 फ़ुट है। वह मर्दकी के लिए बनवाई गई है, उस शख़्स के लिए जिस ने बादशाह की जान बचाई।” बादशाह ने हुक्म दिया, “हामान को उस से लटका दो।”

10 चुनाँचे हामान को उसी सूली से लटका दिया गया जो उस ने मर्दकी के लिए बनवाई थी। तब बादशाह का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

अख़स्वेरुस यहूदियों की मदद करता है

8 1 उसी दिन अख़स्वेरुस ने आस्तर मलिका को यहूदियों के दुश्मन हामान का घर दे दिया। फिर मर्दकी को बादशाह के सामने लाया गया, क्यूँकि आस्तर ने उसे बता दिया था कि वह मेरा रिश्तेदार है। 2 बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी उतारी जो मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और जिसे उस ने हामान से वापस ले लिया था। अब उस ने उसे मर्दकी के हवाले कर दिया। उस वक़्त आस्तर ने उसे हामान की मिलकियत का निगरान भी बना दिया।

3 एक बार फिर आस्तर बादशाह के सामने गिर गई और रो रो कर इल्तिमास करने लगी, “जो शरीर मन्सूबा हामान अजाजी ने यहूदियों के ख़िलाफ़ बांध लिया है उसे रोक दें।” 4 बादशाह ने सोने का अपना असा आस्तर की तरफ़ बढ़ाया, तो वह उठ कर उस के सामने खड़ी हो गई। 5 उस ने कहा, “अगर बादशाह को बात अच्छी और मुनासिब लगे, अगर मुझे उन की मेहरबानी हासिल हो और वह मुझ से ख़ुश हों तो वह हामान बिन हम्मदाता अजाजी के उस फ़रमान को मन्सूख़ करें जिस के मुताबिक़ सल्तनत के तमाम सूबों में रहने वाले यहूदियों को हलाक करना है। 6 अगर मेरी क़ौम और नस्ल मुसीबत में फंस कर हलाक हो जाए तो मैं यह किस तरह बर्दाश्त करूँगी?”

7 तब अख़स्वेरुस ने आस्तर और मर्दकी यहूदी से कहा, “मैं ने आस्तर को हामान का घर दे दिया। उसे ख़ुद मैं ने यहूदियों पर हम्ला करने की वजह से फाँसी दी है। 8 लेकिन जो भी फ़रमान बादशाह के नाम में सादिर हुआ है और जिस पर उस की अंगूठी की मुहर लगी है उसे मन्सूख़ नहीं किया जा सकता। लेकिन आप एक और काम कर सकते हैं। मेरे नाम में एक और फ़रमान जारी करें जिस पर मेरी मुहर लगी हो। उसे अपनी तसल्ली के मुताबिक़ यूँ लिखें कि यहूदी मह्फ़ूज़ हो जाएँ।”

9 उसी वक़्त बादशाह के मुहर्रिर बुलाए गए। तीसरे महीने सीवान का 23वाँ दिन [l]था। उन्हों ने मर्दकी की तमाम हिदायात के मुताबिक़ फ़रमान लिख दिया जिसे यहूदियों और तमाम 127 सूबों के गवर्नरों, हाकिमों और रईसों को भेजना था। भारत से ले कर एथोपिया तक यह फ़रमान हर सूबे के अपने तर्ज़-ए-तहरीर और हर क़ौम की अपनी ज़बान में क़लमबन्द था। यहूदी क़ौम को भी उस के अपने तर्ज़-ए-तहरीर और उस की अपनी ज़बान में फ़रमान मिल गया। 10 मर्दकी ने यह फ़रमान बादशाह के नाम में लिख कर उस पर शाही मुहर लगाई। फिर उस ने उसे शाही डाक के तेज़रफ़्तार घोड़ों पर सवार क़ासिदों के हवाले कर दिया। फ़रमान में लिखा था,

11 “बादशाह हर शहर के यहूदियों को अपने दिफ़ा के लिए जमा होने की इजाज़त देते हैं। अगर मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सूबों के दुश्मन उन पर हम्ला करें तो यहूदियों को उन्हें बाल-बच्चों समेत तबाह करने और हलाक करके नेस्त-ओ-नाबूद करने की इजाज़त है। नीज़, वह उन की मिलकियत पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं। 12 एक ही दिन यानी 12वें महीने अदार

---

[l] 25 जून।

के 13वें दिन [m]यहूदियों को बादशाह के तमाम सूबों में यह कुछ करने की इजाज़त है।”

13 हर सूबे में फ़रमान की क़ानूनी तस्दीक़ करनी थी
और हर क़ौम को इस की ख़बर पहुँचानी थी ताकि
मुक़र्ररा दिन यहूदी अपने दुश्मनों से इन्तिक़ाम लेने
के लिए तय्यार हों। 14 बादशाह के हुक्म पर तेज़रौ
क़ासिद शाही डाक के बेहतरीन घोड़ों पर सवार हो
कर चल पड़े। फ़रमान का एलान सोसन के क़िले में
भी हुआ।

15 मर्दकी क़िर्मिज़ी और सफ़ेद रंग का शाही
लिबास, नफ़ीस कतान और अर्ग़वानी रंग की चादर
और सर पर सोने का बड़ा ताज पहने हुए महल
से निकला। तब सोसन के बाशिन्दे नारे लगा लगा
कर ख़ुशी मनाने लगे। 16 यहूदियों के लिए आब-
ओ-ताब, ख़ुशी-ओ-शादमानी और इज़्ज़त-ओ-जलाल
का ज़माना शुरू हुआ। 17 हर सूबे और हर शहर में
जहाँ भी बादशाह का नया फ़रमान पहुँच गया, वहाँ
यहूदियों ने ख़ुशी के नारे लगा लगा कर एक दूसरे
की ज़ियाफ़त की और जश्न मनाया। उस वक़्त दूसरी
क़ौमों के बहुत से लोग यहूदी बन गए, क्यूँकि उन पर
यहूदियों का ख़ौफ़ छा गया था।

यहूदी बदला लेते हैं

9 1 फिर 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन [n]आ
गया जब बादशाह के फ़रमान पर अमल करना
था। दुश्मनों ने उस दिन यहूदियों पर ग़ालिब आने
की उम्मीद रखी थी, लेकिन अब इस के उलट हुआ,
यहूदी ख़ुद उन पर ग़ालिब आए जो उन से नफ़रत
रखते थे। 2 सल्तनत के तमाम सूबों में वह अपने
अपने शहरों में जमा हुए ताकि उन पर हम्ला करें
जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाना चाहते थे। कोई उन का
मुक़ाबला न कर सका, क्यूँकि दीगर तमाम क़ौमों
के लोग उन से डर गए थे। 3 साथ साथ सूबों के
शुरफ़ा, गवर्नरों, हाकिमों और दीगर शाही अफ़सरों
ने यहूदियों की मदद की, क्यूँकि मर्दकी का ख़ौफ़
उन पर तारी हो गया था, 4 और दरबार में उस के
ऊँचे उह्दे और उस के बढ़ते हुए असर-ओ-रसूख़
की ख़बर तमाम सूबों में फैल गई थी।

5 उस दिन यहूदियों ने अपने दुश्मनों को तलवार
से मार डाला और हलाक करके नेस्त-ओ-नाबूद कर
दिया। जो भी उन से नफ़रत रखता था उस के साथ
उन्हों ने जो जी चाहा सुलूक किया। 6 सोसन के क़िले
में उन्हों ने 500 आदमियों को मार डाला, 7–10 नीज़
यहूदियों के दुश्मन हामान के 10 बेटों को भी।
उन के नाम पर्शन्दाता, दल्फ़ून, अस्पाता, पोराता,
अदलियाह, अरीदाता, पर्मश्ता, अरीसी, अरिदी और
वैज़ाता थे। लेकिन यहूदियों ने उन का माल न लूटा।

11 उसी दिन बादशाह को इत्तिला दी गई कि सोसन
के क़िले में कितने अफ़राद हलाक हुए थे। 12 तब
उस ने आस्तर मलिका से कहा, “सिर्फ़ यहाँ सोसन
के क़िले में यहूदियों ने हामान के 10 बेटों के इलावा
500 आदमियों को मौत के घाट उतार दिया है। तो
फिर उन्हों ने दीगर सूबों में क्या कुछ न किया होगा!
अब मुझे बताएँ, आप मज़ीद क्या चाहती हैं? वह
आप को दिया जाएगा। अपनी दरख़्वास्त पेश करें,
क्यूँकि वह पूरी की जाएगी।” 13 आस्तर ने जवाब
दिया, “अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो तो सोसन के
यहूदियों को इजाज़त दी जाए कि वह आज की तरह
कल भी अपने दुश्मनों पर हम्ला करें। और हामान के
10 बेटों की लाशें सूली से लटकाई जाएँ।”

14 बादशाह ने इजाज़त दी तो सोसन में इस का
एलान किया गया। तब हामान के 10 बेटों को सूली
से लटका दिया गया, 15 और अगले दिन यानी महीने
के 14वें दिन [o]शहर के यहूदी दुबारा जमा हुए। इस
बार उन्हों ने 300 आदमियों को क़त्ल किया। लेकिन
उन्हों ने किसी का माल न लूटा।

---

[m] 7 मार्च।

[n] 7 मार्च।

[o] 8 मार्च।

16–17 सल्तनत के सूबों के बाक़ी यहूदी भी महीने
के 13वें दिन [p]अपने दिफ़ा के लिए जमा हुए थे। उन्हों
ने 75,000 दुश्मनों को क़त्ल किया लेकिन किसी का
माल न लूटा था। अब वह दुबारा चैन का साँस ले
कर आराम से ज़िन्दगी गुज़ार सकते थे। अगले दिन
उन्हों ने एक दूसरे की ज़ियाफ़त करके ख़ुशी का बड़ा
जश्न मनाया। 18 सोसन के यहूदियों ने महीने के 13वें
और 14वें दिन जमा हो कर अपने दुश्मनों पर हम्ला
किया था, इस लिए उन्हों ने 15वें दिन ख़ुशी का बड़ा
जश्न मनाया। 19 यही वजह है कि दीहात और खुले
शहरों में रहने वाले यहूदी आज तक 12वें महीने के
14वें दिन [q]जश्न मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त
करते और एक दूसरे को तुह्फ़े देते हैं।

ईद-ए-पूरीम की इब्तिदा

20 जो कुछ उस वक़्त हुआ था उसे मर्दकी ने
क़लमबन्द कर दिया। साथ साथ उस ने फ़ार्सी
सल्तनत के क़रीबी और दूरदराज़ के तमाम सूबों में
आबाद यहूदियों को ख़त लिख दिए 21 जिन में उस ने
एलान किया, “अब से सालाना अदार महीने के 14वें
और 15वें दिन जश्न मनाना है। 22 ख़ुशी मनाते हुए
एक दूसरे की ज़ियाफ़त करना, एक दूसरे को तुह्फ़े
देना और ग़रीबों में ख़ैरात तक़्सीम करना, क्यूँकि
इन दिनों के दौरान आप को अपने दुश्मनों से सुकून
हासिल हुआ है, आप का दुख सुख में और आप का
मातम शादमानी में बदल गया।”

23 मर्दकी की इन हिदायात के मुताबिक़ इन दो दिनों
का जश्न दस्तूर बन गया।

24–26 ईद का नाम ‘पूरीम’ पड़ गया, क्यूँकि जब
यहूदियों का दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी
उन सब को हलाक करने का मन्सूबा बांध रहा था
तो उस ने यहूदियों को मारने का सब से मुबारक दिन
मालूम करने के लिए क़ुरआ बनाम पूर डाल दिया।
जब अख़स्वेरुस को सब कुछ मालूम हुआ तो उस
ने हुक्म दिया कि हामान को वह सज़ा दी जाए जिस
की तय्यारियाँ उस ने यहूदियों के लिए की थीं। तब
उसे उस के बेटों समेत फाँसी से लटकाया गया।

चूँकि यहूदी इस तजरिबे से गुज़रे थे और मर्दकी
ने हिदायत दी थी 27 इस लिए वह मुत्तफ़िक़ हुए कि
हम सालाना इसी वक़्त यह दो दिन ऐन हिदायात के
मुताबिक़ मनाएँगे। यह दस्तूर न सिर्फ़ हमारा फ़र्ज़ है,
बल्कि हमारी औलाद और उन ग़ैरयहूदियों का भी
जो यहूदी मज़्हब में शरीक हो जाएंगे। 28 लाज़िम है
कि जो कुछ हुआ है हर नस्ल और हर ख़ानदान उसे
याद करके मनाता रहे, ख़्वाह वह किसी भी सूबे या
शहर में क्यूँ न हो। ज़रूरी है कि यहूदी पूरीम की ईद
मनाने का दस्तूर कभी न भूलें, कि उस की याद उन
की औलाद में से कभी भी मिट न जाए।

29 मलिका आस्तर बिन्त अबीख़ैल और मर्दकी
यहूदी ने पूरे इख़तियार के साथ पूरीम की ईद के बारे
में एक और ख़त लिख दिया ताकि उस की तस्दीक़
हो जाए। 30 यह ख़त फ़ार्सी सल्तनत के 127 सूबों
में आबाद तमाम यहूदियों को भेजा गया। सलामती
की दुआ और अपनी वफ़ादारी का इज़हार करने के
बाद 31 मलिका और मर्दकी ने उन्हें दुबारा हिदायत
की, “जिस तरह हम ने फ़रमाया है, यह ईद लाज़िमन
मुतअय्यिन औक़ात के ऐन मुताबिक़ मनानी है। इसे
मनाने के लिए यूँ मुत्तफ़िक़ हो जाएँ जिस तरह आप ने
अपने और अपनी औलाद के लिए रोज़ा रखने और
मातम करने के दिन मुक़र्रर किए हैं।” 32 अपने इस
फ़रमान से आस्तर ने पूरीम की ईद और उसे मनाने के
क़वाइद की तस्दीक़ की, और यह तारीख़ी किताब
में दर्ज किया गया।

मर्दकी अपनी क़ौम का सहारा बना रहता है

10 1 बादशाह ने पूरी सल्तनत के तमाम
ममालिक पर साहिली इलाक़ों तक टैक्स
लगाया। 2 उस की तमाम ज़बरदस्त कामयाबियों

---

[p]7 मार्च।

[q]फ़र्वरी ता मार्च।

का बयान ‘शाहान-ए-मादी-ओ-फ़ार्स की तारीख़’ की किताब में किया गया है। वहाँ इस का भी पूरा ज़िक्र है कि उस ने मर्दकी को किस ऊँचे उह्दे पर फ़ाइज़ किया था। 3मर्दकी बादशाह के बाद सल्तनत का सब से आला अफ़्सर था। यहूदियों में वह मुअज़्ज़ज़ था, और वह उस की बड़ी क़दर करते थे, क्यूँकि वह अपनी क़ौम की बहबूदी का तालिब रहता और तमाम यहूदियों के हक़ में बात करता था।